नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो

१

आगम-सागर-कोष:

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज]

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष–रचयिता

मुनिश्री दीपरत्नसागरजी महाराज

[M.com._M.Ed._Ph.D._श्रुतमहर्षि]

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो नमः

आगम-सागर-कोषः - १

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी

..पूज्यपाद् आचार्य श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज..

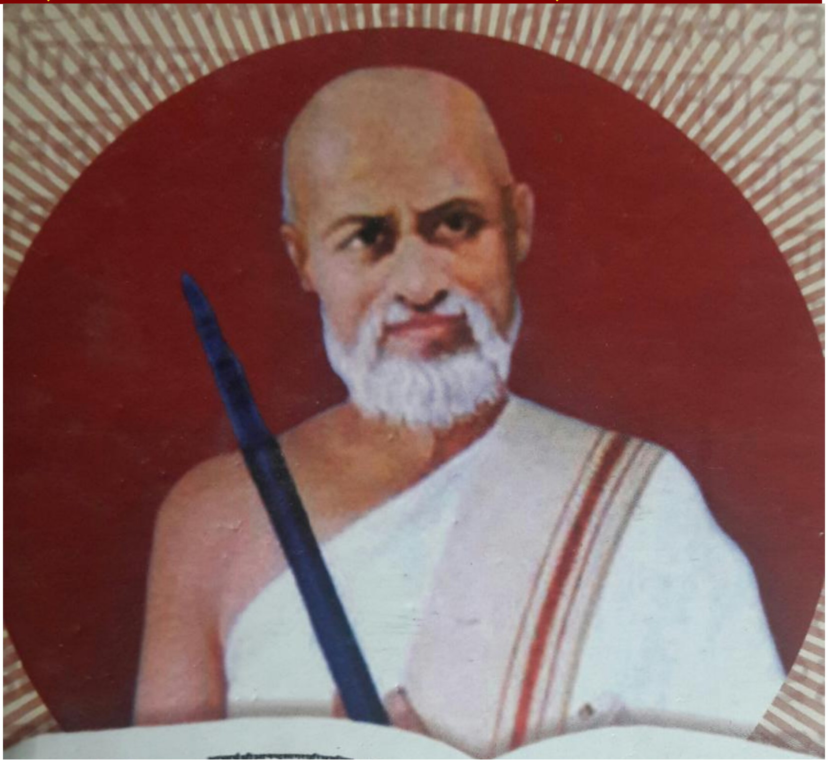

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष-रचयिता

मुनिश्री दीपरत्नसागरजी महाराज

[M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि]

12/11/2018 सोमवार, २०७५ कारतक सुद ५

Type Setting: - आशुतोष प्रिन्टर्स, जेतपुर Mobile: 9925146223

It's a Net publication of 'jainelibrary.org' [North America]

"आगम-सागर-कोष:" विषयक किञ्चित् स्पष्टीकरण

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने अपने युगमे आगमो के बहोत से शब्दो एवं उन की व्याखाओ का चयन किया था, किन्तु ईसे शब्दकोष के रुपमे संकलन और मुद्रण पूज्य आचार्यश्री कंचनसागरसूरिजी आदिने करवाया | ईस कोष का नाम 'अल्प-परिचित-सैद्धान्ति-शब्दकोष:' रक्खा. परन्तु इसमे शब्दार्थ भी है, बहोत स्थान पर शब्दो की आगमिक व्याख्याए भी है और शब्दो के बीच अनेक स्थान पर खास नाम भी है |

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य सूर्योदयसागरसूरिजी कि सूचना एवं उनसे हुए विचार-विमर्श अनुसार हमने ईस 'कोष' के अध्ययनमे देखा की –कई जगह पर सिर्फ़ शब्द है, कई जगह शब्द और संदर्भ है मगर अर्थ नहि है, कई जगह पर संदर्भ के नाम है मगर पृष्ठांक नहि है तो कहीं कहीं शब्दो के अ-कारादि क्रममे गलति दिखी है | ऐसी अनेक मर्यादाओ का उल्लेख स्वयम् आचार्यश्री कंचनसागरसूरिजीने 'अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष' भाग -१ मे किया है |

हमने ईस कोष की रचना करते वक्त सिर्फ़ पूज्यपाद आनन्दसागर सूरीश्वरजी महाराज द्वारा संचित शब्दो एवं व्याख्याओ को ध्यानमे ले कर ईस 'कोष' की रचना की है | रचना करते वक्त विशेषावश्यकभाष्य, उपदेशमाला, तत्त्वार्थसूत्र और पउमचरियं के शब्द निकाल कर सिर्फ़ आगमो के शब्दो को हि स्थान दिया है | अनेक स्थानो पर प्रत्यय या विभक्ति को हटा कर 'शब्दकोष' के नियमानुसार मूल शब्द रख दिये है, परिणाम स्वरुप जहा जहा समान शब्द प्राप्त हुए, उन शब्दो को एकसाथ रख कर उन के संदर्भ वहि नीचे जोड दिये है, कहीं कहीं एक हि शब्द की व्याख्या से पता चलता है की ये शब्द भले एक है मगर 'अर्थ' कि द्रष्टि से वे शब्द भिन्न भिन्न है, तो उन शब्दो को अलग अलग भी कर दिया है | जहा प्राकृत और संस्कृत दोनो शब्द है, वहा प्राकृत शब्द को पीछे से आगे ले कर बोल्ड टाईपमे रक्खे है | ऐसे अनेक परिवर्तन कर के कोष का उपोगिता मूल्य बढाकर हमने ईस कोष की रचना की है |

हमने ईस 'कोष' का नाम **"आगम-सागर-कोष:"** पसंद किया है | यहा सिर्फ़ आगमिक शब्दो को हि स्थान दिया है इसिलिए 'आगम' शब्द पसंद किया, सागरजी महाराज द्वारा शब्द संचित हुए इसिलिए 'सागर' शब्द लिया, ईस कोषमे शब्द, खासनाम और व्याखयाए तिनो का समावेश हुआ है इसिलिए शब्दकोष नाम कि जगह सिर्फ़ कोष [Dictionary] शब्द रक्खा है |

ईस 'कोष' को हमने पांच भागोमे प्रगट किया है, करीब 1200 पृष्ठोमें रहे हुए ईस ग्रन्थमे 41,000से ज्यादा शब्दो [+नामो+धातु]का समावेश हुआ है | अनेक शब्दो की व्याख्याए भी है और इन शब्दो या व्याख्याओ के आगमसंदर्भ भी दिये है | इस के साथ हम एक मर्यादा का भी स्वीकार कर लेते है- इस कोष के मूल संपादनमे बहोत से शब्द और अनेक व्याख्याए समाविष्ट नहीं हुइ है, इसिलिए यहा पर भी अनेक शब्द और व्याख्याए छूट गए है | शब्दो और खास-नामो के लिए आप हमारा [१] आगम सद्दकोसो भाग १ से ४ और [२] आगम नाम एवं कहाकोसो देख शकते है, और व्याख्याओ के लिए हम भविष्यमें **'जैन आगम कोष:'** बनाने का आयोजन कर रहे है | परमात्मा की कृपा हुइ तो मेरे पांच-सो नब्बे [590] प्रकाशनो की तरह 'जैन-आगम-कोष:' भी अवश्य आप के कर-कमलोमें समर्पित हो जायेगा |

...मुनि दीपरत्नसागर.....

← संक्षेप-सूचि →

क्रम	आगम का नाम	संक्षेप	क्रम	आगम का नाम	संक्षेप
०१	आचाराङ्ग	*आचा०*	२४	चतुःशरणप्रकीर्णक	*चतु०*
०२	सूत्रकृताङ्ग	*सूत्र०*	२५	आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	*आतु०*
०३	स्थानाङ्ग	*स्था०*	२६	महाप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	*महाप०*
०४	समवायाङ्ग	*सम०*	२७	भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णक	*भक्त०*
०५	भगवती(अङ्ग)	*भग०*	२८	तन्दुलवैचारिकप्रकीर्णक	*तन्दु०*
०६	ज्ञाताधर्मकथाङ्ग	*ज्ञाता०*	२९	संस्तारकप्रकीर्णक	*संस्ता०*
०७	उपासकदशाङ्ग	*उपा०*	३०	गच्छाचारप्रकीर्णक	*गच्छा०*
०८	अन्तकृद्दशाङ्ग	*अन्त०*	३१	गणिविद्याप्रकीर्णक	*गणि०*
०९	अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग	*अनुत्त०*	३२	देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	*देवे०*
१०	प्रश्नव्याकरणाङ्ग	*प्रश्न०*	३३	मरणसमाधिप्रकीर्णक	*मरण०*
११	विपाकश्रुताङ्ग	*विपा०*	३४	निशीथछेदसूत्र	*निशी०*
१२	औपपातिकोपाङ्ग	*औप०*	३५	बृहत्कल्पछेदसूत्र	*बृह०*
१३	राजप्रश्नीयोपाङ्ग	*राज०*	३६	व्यवहारछेदसूत्र	*व्यव०*
१४	जीवाजीवाभिगमोपाङ्ग	*जीवा०*	३७	दशाश्रुतस्कन्धछेदसूत्र	*दशाश्रु०*
१५	प्रज्ञापनोपाङ्ग	*प्रज्ञा०*	३८	जीतकल्पछेदसूत्र	*जीत०*
१६	सूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*सूर्य०*	३९	महानिशीथछेदसूत्र	*महानि०*
१७	चन्द्रप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*चन्द्र०*	४०	आवश्यकमूलसूत्र	*आव०*
१८	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*जम्बू०*	४१	ओघनिर्युक्तिमूलसूत्र	*ओघ०*
१९	निरयावलियकोपाङ्ग	*निर०*	४१	पिण्डनिर्युक्तिमूलसूत्र	*पिण्ड०*
२०	कल्पवतन्सिकोपाङ्ग	*कल्प०*	४२	दशवैकालिकमूलसूत्र	*दशवै०*
२१	पुष्पिकोपाङ्ग	*पुष्पि०*	४३	उत्तराध्ययनमूलसूत्र	*उत्त०*
२२	पुष्पचूलिकोपाङ्ग	*पुष्प०*	४४	नन्दीचूलिकासूत्र	*नन्दी०*
२३	वृष्णिदशोपाङ्ग	*वृष्णि०*	४५	अनुयोगद्वारचूलिकासूत्र	*अनुओ०*
---	देशीय शब्द	*दे०*	---	चूर्णि	*चू०*

सूचना- [१] उपरोक्त ४५ आगमो के जो शब्द या व्याख्या संदर्भ ईस कोषमे शामिल किये है, उसमें ६ छेदसूत्रो और चन्द्रप्रज्ञप्ति के अलावा बाकी सभी आगमो श्री सागरानन्दसुरिजी महाराज संपादित प्रतो से है, चन्द्रप्रज्ञप्ति के संदर्भ सूर्यप्रज्ञप्ति अनुसार है, सिर्फ़ ६ सूत्र के संदर्भ हस्तपोथी से लिए है

[२] यहां आगमो के जो संदर्भ दिये है, वे उन आगमो की प्रत या पोथी के पृष्ठ-अंक है |

[३] हमारा प्रकाशन "सवृत्तिक आगम सुत्ताणि" भाग १ से ४० मे ये सभी आगम मुद्रित है |

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथायनमः

पूज्यश्री आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्योनमः

अकारः

अंक– अङ्कः– लाञ्छनम् – *जीवा०* पृष्ठ *२७०*। अङ्कः, उत्सङ्गः। *ओघ० १४३*। रत्नविशेषः। *जम्बू० २३*

अंककरेलुग– अङ्ककरेलुगं–शाकविशेषः। *आचा० ३४८*। अंकण-अङ्कनं, तप्तायःशलाकादिना चिह्नकरणम्। *प्रश्न० २२*। लाञ्छनम् श्र्वशृगालचरणादिभिः। *आव० ५८८*।

अंकधाती– अंङ्कधातृ, धात्रीदोषे। *निशी० १३* आ।

अंकपतिता– अंङ्कपतिता दासी। *उत्त० २६२*।

अंकमुहसंठिया– अङ्कमुखसंस्थिता, पद्मासनोपविष्टोत्संगमुखवत् अर्धवलयाकारः। *सूर्य० ७१*।

अंकलिवि– अंङ्कलिपि लिपिविशेषः। *प्रज्ञा० ५६*।

अंकवडेंसए–अङ्कावतंसक-ईशानकल्पपूर्वदिगवतंसकः। *भग० २०३*।

अंकविज्जा– अंकविद्या गणितम्। *जम्बू० १३६*।

अंकहरो–अङ्कधरः, चन्द्रमाः।*जीवा० २७०*।

अंकावइ–अङ्कावती, वक्षस्कारपर्वतः। *जम्बू० ३५७*

अंकावई– अङ्कावती, रम्यविजये राजधानी नाम। *जम्बू० ३५२*। शीतोदादक्षिणकूले वक्षस्कारः। *स्था० ८०*। दक्षिणवर्ती वक्षस्कारः। *स्था० ३२६*।

अंकावईओ– अङ्कावती महाविदेहे विजयराजधानी। *स्था० ८०*।

अंकावडिंसए– अङ्कावतंसकः, ईशानस्यपूर्वस्यामवतंसकः। *जीवा० ३९१*।

अंकितो– अङ्कितः, चिह्नितः। *आव० ८२२*।

अंकिल्ल– अङ्किल्ल नर्त्तकः। *औप० ३*।

अंकुडिओ– अंकुटिकः, नागदत्तकः,। *जम्बू० ५०*। *जीवा० २०५*।

अंकुर– अंङ्कुरः, प्रवालः। *जम्बू० ३०*।

अंकुर– अंङ्कुरः, शाल्यादिबीजसूचिः। *भग० ३०६*। *जम्बू० १६८*।

अंकुल्ल– अङ्कोठः वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३१*।

अंकुसं– अङ्कुश महाशुक्रेविमानविशेषः। *सम० ३२*। अंकुशं, येनरजोहरणमङ्कुशवत्करद्वयेन गृहीत्वा वन्दते तत्। कृत-कर्माणिषष्ठदोषः। *आव० ५४३*।

अंकुस– अंकुशः, सृणिः। *प्रश्न० २२*।

अंकुसपलंबं– महाशुक्रे विमानविशेषः। *सम० ३२*।

अंकुसयं– अंकुशकम्, तरुपल्लवग्रहणार्थमंकुशाकृतिः। *भग० ११३*।

अंकुसये– अंकुशका, देवार्चनार्थवृक्षपल्लवाकर्षणार्थम्। *औप० ९५*।

अंकुसो– अंकुशः। अंकुशाकारो मुक्तादामावलम्बनाश्रयभूतः। *जीवा० २१०*।

अंके– अंककाण्डं खरकाण्डे चतुर्दशं काण्डम्। *जीवा० ८९*। अंकः। *प्रज्ञा० २७*। उत्सङ्गे। *जम्बू० ३८*। मणिभेदः *उत्त० ६८९*। श्र्वेतरत्नविशेषः। *प्रज्ञा० ३६१*। रत्नविशेषः। *जीवा० २३*।

अंकेल्लण– अंकेल्लण, तर्जनकविशेषः।*जम्बू० २३५*।

अंको– अङ्कः, पृथिवीभेदः। *आचा० २९*। रत्नविशेषः। *भग० ४७९*। एकोरुमैथुनं। *निशी० २५५* आ। रुढिगम्यः, शंखजातिविशेषः। *प्रश्न० ३७*। रत्नविशेषः। *जीवा० १८०, १९१*। पद्मासनोपविष्टस्योत्सङ्गरूपः आसनबन्धः। *सूर्य० ७१*। *जम्बू० ४५४*।

अंकोल– गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

अंकोल्ल– वृक्षविशेषः। *भग० ८०३*।

अंकोल्लाणं– गुल्मविशेषः। *भग० ८०३*।

अंगं– अङ्गम्, अङ्गविषयम्। *आव० ६६०*। कारणमवयवः। ठाणा० *०३*। कारणम्। *प्रश्न० १०३*। शरीरावयवप्रमाणस्प-न्दितादिविकारफलोद्भावकं शास्त्रम्। *सम० ४९*। समग्रं वपुः। *जीवा० २७०*। कारणम्। *जम्बू० ९१*। अज्यते व्यक्तीक्रि-यतेऽस्मिन्नित्यङ्गम्। *आचा० ५*। भेदः कारणं वा। *दशवै० ९०*। शिरःप्रभृति। *दशवै० २३७*। आंगं-अक्षिबाहुस्फुरणादिकम्। *सूत्र० ३१८*। शिरःस्फुरणादि। *स्था० ४२७*।

अंग– अङ्गानि। शिक्षादीनि षडङ्गानि। *भग० ११४*।

अंगओ– अङ्गकः, भद्रप्रकृतिकः। *आव० ७०४*।

अंगचूलिया– अंगचूलिका, अंगानामुपासकदशाप्रभृतीनां पंचानां चूलिका-निरयावलिका। *व्यव० ४५४* आ।

अंगणं– मंडवथाणं। *निशी० ११२* अ। अजिरम्। *प्रश्न० १३८*। अङ्गणं-षट्स्थंडिलभूमिस्थानम्। *ओघ० २००*।

अंगणेत्रिका– हस्तमालक आभरणविशेषः। *औप० ५५*।
अंगदं– बाहुशीर्षाभरणविशेषः। *जीवा० १६२*। केयूरम्। *जम्बू० १०६*।
अंगदे– केयूरे। *स्था० ४२१*। अङ्गनिका। *उत्त० ७८*।
अंगपडिहारिणि– अन्तः पुरप्रतिहारिणी। *आव० ७००*।
अंगपविट्ठे–गणधरकृतं मातृकापदत्रयप्रभवं वा ध्रुवश्रुतं वा। *स्था० ४९*। अङ्गप्रविष्टम्। *स्था० २००*।
अंगबाहिरे– अङ्गबाह्यम्, स्थविरकृतं मातृकापदत्रयव्यतिरिक्त-व्याकरणनिबद्धमध्रुवश्रुतं वा उत्तराध्ययनादि। *स्था० ५१*।
अंगमंगं– अङ्गमङ्गम्, गात्रम् । *औप० ११*।
अंगमंगो– अङ्गमङ्गम्, अङ्गप्रत्यङ्गम् । *जीवा० २७७*।
अंगमंदिरंमि– चंपाचैत्याभिधानम् ।*भग० ६७५*।
अंगमद्दियाओ– अंगस्वल्पमर्दनकारिकाः। *भग० ५४८*।
अंगयं– अङ्गदं, बाह्वाभरणविशेषः। *जीवा० २५३*। *प्रश्न० ७१*। बाहुशीर्षाभरणविशेषरूपम् । *प्रज्ञा० ८८*
अंगय– अङ्गके, मूर्द्धादौ। *जम्बू० १८९*। अङ्गदम्, बाह्वाभ-रणविशेषः। *भग० १३२*।
अंगरिसी– अङ्गर्षिः, आर्जवोदाहरणे भद्रकः कौशिकार्यज्येष्ठ-शिष्यः। *आव० ७०४*। येनोपशमेसत्यवाप्तं सामायिकम् । *आव० ३४७*।
अंगलोअं– अङ्गलोकं, म्लेच्छजातीयजनाश्रयस्थानम् । *जम्बू० २२०*।
अंगवंसो– अङ्गवंशः, अङ्गराजसन्तानस्य सम्बन्धिनः सप्तस-प्ततिराजानः प्रव्रजिताः। *सम० ८५*।
अंगविगारं– अङ्गविकारः, शिरःस्फुरणादिस्तच्छुभा शुभसूचकं शास्त्रमपि। *उत्त० ४१७*।
अंगविज्जं– अङ्गविद्याम्, शिरः प्रभृत्यंगस्फुरणतः शुभाशुभसू-चिकांविद्याम् । *उत्त० २९५*।
अंगविज्जा– अङ्गविद्या, अङ्गं-पादः विद्या-प्रासादपात-नात्मिका (सत्कारपुरस्कारपरिषहेदृष्टांतपदम्) । *उत्त० १२५*।
अंगहारिका– नृत्यकलाद्वितीयभेदः। *सम० ८४*।
अंगा– अंगाः, जनपदविशेषः। *प्रज्ञा० ५५*।
अंगाइं– अंगानि, शिरःप्रभृतीनि। *प्रज्ञा० ४६९*। एकादशांगानि। *प्रज्ञा० ५६*। अवयवाः। *स्था० १७०*। शिरःप्रभृतीनि। *उत्त० ४२८*।
अंगाणं– देशविशेषः। *भग० ६८०*।
अंगादाणं– मेढ्रम् । *निशी० ११६* अ।
अंगादानं– मेहनम्। *निशी० ३०* आ।
अंगारः– (इंगाल), विगतज्वालोऽग्निः। *भग० १२२*। विगतधू-मज्वालो दह्यमानेन्धनात्मकः। *उत्त० ६९४*। कृष्णवर्णवस्तु। *आचा० २९*।
अंगारओ– अंगारकः, महाग्रहः। *जीवा० ३३६, ३३७*।
अंगारकारिका– (इंगालकारिया), अग्निशकटिका। *भग० ६९७*।
अंगारदोषः– (इंगालदोष), आहाररागाद्गार्द्ध्यर्द्धुञ्जानस्यचा-रित्रांगारत्वापादनाद्। *आचा० ३५१*।
अंगारमद्दय– अंगारमर्द्दकः द्रव्यप्रव्रजितः। *दशवै० ११५*। *उत्त० ५६६*।
अंगारय– अंगारकः, मंगलः। *औप० ५२*।
अंगारवई– अंगारवती, संवेगोदाहरणे शिशुमारपुरपतिधुन्धुमा-रदुहिता श्राविका। *आव० ७०९*।
अंगारवई प०– अंगारवती । *आव० ६७*।
अंगारशकटिका– (इंगालकारिया)। *आचा० ३०९*।
अंगारा– (इंगाल), लघुतराग्निकणाः। *स्था० ४२०*।
अंगारियं– अंगारकितं, विवर्णीभूतम्। *आचा० ३४९*।
अंगिरसा– गौतमगोत्रोत्तरभेदः। *स्था० ३९०*।
अंगुट्ठं– अंगुष्टम्। *आव० ८४५*।
अंगुट्ठपसिणा– विद्याविशेषः। *निशी० १७७* अ।
अंगुट्ठिं– स्नानम्। *निशी० १९१* आ ।
अंगुट्ठी– अंगुष्टी, शिरोऽवगुण्ठनम्। आव ०९९।
अंगुलपुहुत्तिया– अंगुलपृथक्त्वम्। *जीवा० ३९*।
अंगुलिं– अंगुलिः, करशाखा। *आचा० ३८*।
अंगुलिको– चर्ममयोपकरणम्। *निशी० १३७* अ। नख-भंगादिक्खट्टा। *निशी० १८*अ। अंगुलिकोशः, श्रृङ्गमयो दारुमयो वंशमयो वा येनाङ्गुलिसंलग्नेन तन्त्री आहन्यते सः। *जीवा० १९५*। अंगुलिकोशकः, शृङ्गदारुदन्तादिमयः। *जम्बू० ४०*।
अंगुलिज्जं– अंगुलीयकम्, अंगुल्याभरणविशेषः। *औप० ५५*।
अंगुलिज्जग– अंगुलीयकम्, मुद्रिका। *जम्बू० १०६*।
अंगुलिज्जयं– अंगुलीयकम्। *आव० १७०*।
अंगुलिधणुहओ– अंगुलधनुः। *आव० ४८४*।

अंगुलिभमुहा– कार्योत्सर्गदोषः। *आव० ७९८*।
अंगुलिसत्थयं– शस्त्रकोशविशेषः। *निशी० १८*अ।
अंगुलीयगं– अंगुलीयकं, भूषणविधिविशेषः। *जीवा० २६९*।
अंगुले– प्रमाणभेदः। *भग० २७५*। अंगुष्ठ-प्रश्नभेदः। *स्था० ३०१*। अंगुष्ठप्रश्नः, शुभाशुभसूचकः प्रश्नः। *उत्त० ४४६*।
अंगोवंगाइं– अंगोपांगानि। *प्रज्ञा० ४६९*।
अंगोहलिं– अंगरूक्षणम्, देशस्नानम्। *आव० ४१७*। *व्यव० ४०५*अ।
अंचइ– अञ्चति, उत्पाटयति। *जम्बू० ४२१*। *जीवा० २५५*।
अंचिअं– अञ्चितं, नृत्यविशेषः। *जम्बू० ४१२*।
अंचिअंचियं– उत्पतनिपतां पार्श्र्वतः करोति। *स्था० ५२२*।
अंचिओ– अञ्चितः, व्याप्तः। *आव० १६७*। अञ्चितनामा पञ्च-विंशतितमो नाट्यविधिः। *जीवा० २४७*।
अंचितरिभितं–अञ्चितरिभितनामा सप्तविंशतितमो नाट्यविधिः। *जीवा० २४७*।
अंचितांचिं–गमागमः। *भग० ६८३*।
अंचिते- अञ्चिते सकृद्गते। *भग० ६८३*।
अञ्चियं– दुर्भिक्षः *निशी० १४८*आ। दात्रसंधी। *निशी० १८३*आ। नाट्यभेदः। *निशी० १*अ। अञ्चितं, नाट्यम् ।*जम्बू० ४१७*। *आव० ३९९*।
अंचेइ– आकुञ्चयति। *औप० २५*।
अंछंति– आकर्षन्ति। *आव० ४८*।
अंछणं–पण्हपसिरणं। *निशी० १९१*आ। अंगुल्यालिप्तस्यरंगितस्य। *ओघ० १४४*। आकर्षणं-समारणम्। *ओघ० १४४*।
अंछमाणाणं– आकर्षताम्। *आव० ४८*।
अंछवियंछियं– आकर्षविकर्षम्। *आव० ८३२*।
अंछिऊण– आकृष्य। *आव० ४२७*।
अंछित्ता– अपह्रियतां माया। *व्यव० ८४*आ।
अंछिय– आकृष्यते, प्रक्षाल्यते। *बृह० ८१*अ।
अंछियनयना– आकृष्टनेत्राः। *प्रश्न० २१*। (जिब्भिन्दियंछिय) आञ्छितम्-आकृष्टम्। (आकृष्टजिह्वेन्द्रियाः)। *प्रश्न० ६०*।
अंछिया– आकृष्टा। *आव० २२७*।
अंजणं– आणतकल्पे विमानविशेषः। *सम० ३५*। सौवीराञ्ज-नादि। *बृह० ९२*अ। सोवीरयं रसंजणं वा। *निशी० २१८*आ। अञ्जनम्, सौवरादि। *आव० ५३०*।

अंजण– अञ्जनं, तप्तायः शलाकया नेत्रयोः म्रक्षणम् वा देहस्य क्षारतैलादिना। *सम० १२६*। अञ्जनं, सौवीराञ्जनादि। *प्रज्ञा० २७*। सौवीराञ्जनम्। *जम्बू० ६०*। अञ्जनाः, अञ्जन-रत्नमयत्वात्। *जम्बू० १६३*।
अंजणई– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।
अंजणाए– अञ्जनकः, वनस्पतिविशेषः। *औप० १०*।
अंजणकेसिया– अञ्जनकेशिका, वनस्पतिविशेषः। *जम्बू० ३३*।
अंजणकेसियाकुसुमं– अञ्जनकेसिकाकुसुमम्, वनस्पतिविशेष-पुष्पम्। *प्रज्ञा० ३६१*।
अंजणगं– अञ्जनकः, पर्वतविशेषः। *आव० ८२७*।
अंजणगपव्वय– अञ्जनकपर्वतः। *आव० ३८९*। *सम० ९०*।
अंजणगा– अञ्जनकाः, नन्दीश्र्वरचक्रवालमध्यवर्त्तिनः पर्वताः। *प्रज्ञा० ९६*। *स्था० ४८०*।
अंजणगिरि– अञ्जनगिरिः। *जम्बू० १९६*।
अंजणपव्वय– अञ्जनपर्वतः, नन्दीश्र्वरद्वीपे पर्वतविशेषः। *जीवा० ३५८*।
अंजणपुलए– अञ्जनपुलककाण्डम्, एकादशं, अञ्जनपुलाकानां विशिष्टो भूभागः। *जीवा० ८९*।
अंजणप्पभा– अञ्जनप्रभा, पुष्करिणीनाम। *जम्बू० ३६०*।
अंजणमओ– अञ्जनमयः, अञ्जनरत्नात्मकः। *जीवा० ३५८*।
अंजणसमुग्गयं– अंजनसमुद्गकम्। *जीवा० २३४*।
अंजणसिज्झ– अंजनसिद्धः। *दशवै० १२८*।
अंजणा– पर्वतविशेषः। *स्था० ८०*। अंजना, पुष्करिणीनाम। *जम्बू० ३३५*। *जम्बू० ३६०*।
अंजणागिरि– अंजनागिरिः, दिग्हस्तिकूटनाम। *जम्बू० ३६०*।
अंजणिं– अंजनिका, कज्जलाधारभूता नलिका। *सूत्र० ११७*।
अंजणे– प्रभंजनेंद्रलोकपालः। *स्था० १९८*। सीतादक्षिणवर्ती तृतीयवक्षस्कारः। *स्था० ३२६*। अंजनः, वेलम्बाभिधान-वायुकुमारराजस्य लोकपालः, वरुणस्यपुत्रस्थानीयो देवः। *भग० ३९८*। राहवप्रलापीमते कृष्णपुद्गलविशेषाः। *सूर्य० २८७*। अंजनकाण्डं दशमं, अञ्जनानां विशिष्टो भूभागः। *जीवा० ८९*। कर्मजीवमालिन्ये हेतुत्वात्। *जम्बू० १४८*। अञ्जनो

वक्षस्कारः। *जम्बू० ३५२*। सौवीराञ्जनं रत्नविशेषो वा। *प्रज्ञा० ३६१*। रसाञ्जनादि। *दशवै० १७०*।

अंजणेइ– अञ्जनं, सौवीराञ्जनं रत्नविशेषो वा। *जम्बू० ३२*। अञ्जनं, कृष्णरत्नविशेषः। *स्था० २३२*। अञ्जनं सौवीरा-ञ्जनादि। *जीवा० २३*। कज्जलम्। *उत्त० ६५२*। समीरकम् *उत्त० ६८९*। रजोभेदः। *आचा० ३४२*।

अंजणगपव्वय– अंजनकपर्वतः। *सम० ९०*।

अंजलिं– अञ्जलिः, हस्तन्यासविशेषः। *सूर्य० ६*। *भग० १४*। अञ्जलिं, मुकुलितकमलाकारकरद्वयरूपम्। *जम्बू० १८७*।

अंजली– अञ्जलिः, हत्थुस्सेहो। *द० १२१*। *निशी० ७* अ। अञ्जलिः, द्वयोर्हस्तयोरन्योऽन्यान्तरितांगुलिकयोः सम्पुटरूपतया यदेकत्रमीलनं सा। *जीवा० २४३*। संयुतह-स्तमुद्राविशेषः। *जम्बू० १७*। प्रसृतिद्वयम्। *निशी० १२०* आ।

अंजु– ऋजुः, ऋजोः- संयमस्यानुष्ठानात्। *आचा० ३०३*। मायाप्रपञ्चरहितत्वादवक्रः। *सूत्र० १७७*।

अंजुया– शान्तिजिनप्रवर्तिनीनाम। *सम० १५२*। अंजुका, शक्रदेवेन्द्रस्याग्रमहिषी। *जीवा० ३६५*।

अंजुल– वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२*।

अंजू– प्रगुणोऽव्यभिचारी। *सूत्र० ५१*। अंजू, व्यक्तम्, प्रगुणेन न्यायेन स्वरसप्रवृत्त्या वा। *सूत्र० २९६*। अंजुः, व्यक्तः, निर्दोषत्वात्प्रकटः (ऋजुर्वा) वक्रैकान्तपरित्यागादकुटिलः। *सूत्र० ३९३*। अंजूः, सार्थवाहसुता। *विपा० ३५*। अञ्जुः, धनदेवसार्थवाहसुता। *विपा० ८८*। शक्रस्याग्रमहिषीनाम। *जम्बू० १५९*। *भग० ५०५*।

अंजूए–शक्राग्रमहिषीराजधानी। *स्था० २३१*।

अंड– अण्डम्, काष्ठनिश्रितो जीवविशेषः। *आचा० ५५*।

अंडए– अण्डजः, हंसादिः ममायमित्युल्लेखेन वा प्रतिबन्धः, अण्डजं-पट्टसूत्रजम्। *स्था० ४६५*। हंसादिः मयूराण्ड-कादिः वा अण्डजः, पक्षी कोशिकारकीटाण्डकप्रभवं वस्त्रं वा। *औप० ३६*।

अंडओ– अण्डकः, जन्तुयोनिविशेषः। *प्रश्न० ३३*।

अंडग– अण्डकम्, आहारः। *भग० २९२*। मुखं। *व्यव० ३३३* आ। अण्डजाः, अण्डाज्जाताः। *स्था० ११४*।

अंडय– अण्डजः, हंसादिः। *भग० ३०३*। अण्डजाः, पक्षि-गृहकोकिलादयः। *दशवै० १४१*।

अंडसुहुम– अण्डसूक्ष्मम्, मक्षिकाकीटिकागृहकोकिलिका-ब्राह्मणीकृकलासाद्यण्डम्। *दशवै० २३०*। अण्डसूक्ष्मम्, मक्षिकाकीटिकागृहकोकिलाब्राह्मणी-कृकलास्याद्यण्डकमिति। *स्था० ४३०*।

अंडु– अण्डु, अन्दुकं काष्ठमयं लोहमयं वा हस्तयोः पादयोर्वा। *औप० ८७*।

अंडे– विपाकश्रुताद्यश्रुतस्कंधतृतीयाध्ययनम्। *स्था० ५०७*। ज्ञातायां तृतीयाध्ययनम्। *आव० ६५३*। *सम० ३६*। अण्ड-म्, षष्ठांगेतृतीयं ज्ञातम्। *उत्त० ६१४*।

अन्तःकरणम्– मनः। *आव० ५८५*।

अंतोसल्ल– अन्तःशल्यः अन्तः-मध्ये मनसीत्यर्थः, शल्यमिव शल्यमपराधपदं यस्य सो अन्तः शल्योलज्जाभिमानादिभि-रनालोचितातिचारः। *सम० ३४*।

अंतं– अन्तः । परिजीर्णम्,। *बृह० १७५* आ। वस्त्रस्य दशान्तम्। *बृह० २३५* अ। अन्त्यम्, अन्ते भवम्, जघन्यधान्यम्। *औप० ४०*। अन्त्रम्-पुरीतत्। *प्रश्न० ८*। कुल्माषादिकम्। *बृह० २२०* आ।

अंतचरे– आन्तम्-अन्ते भवं-आन्तम्-भुक्तावशेषं वल्लादि (तच्चरति)। *स्था० २९८*।

अन्तयोः–अंचलयोः। *भग० ४७७*। भूभागः। *भग० १२२*। अवसानम्। *प्रज्ञा० ३९७*। भूमिभागः। *भग० ३२३*। *स्था० १३९*। समीपम्। *जम्बू० ४५५*। वल्लचणकादि। *प्रश्न० १०६*। समीपः। *स्था० ११७*। अधिकरणप्रधानमव्ययम्। *उत्त० २६१*। (अंतचरे)-आन्तम्, अन्तेभवं आन्तम्, भुक्तावशेषवल्लादि (तच्चरति)। *स्था० २९८*।

अंतंतं– पर्युषितं वल्लचणकादि। *ओघ० १८८*।

अंत– अन्तः, निश्चयः। *भग० २९०*। परिच्छेदः। *स्था० १७४*।

अंतओ– अन्तकः, विषयतृष्णायाः पर्यन्तवर्ती। *सूत्र० २५९*। अन्तकम्, पर्यन्तम्। *उत्त० ६२८*।

अंतकडे– अन्तकृत्।*भग० १११*। अन्तो भवस्य कृतो येन सः अन्तकृतः। *स्था० ३६*।

अंतकम्मं– अन्तकर्म, अञ्चलकर्मवानलक्षणम्। *औप० ५५*। अन्तकर्म्माणि, अञ्चलयोर्वा न लक्षणानि। *जम्बू० २७५*। अन्तकर्म, अञ्जलयोर्वा न लक्षणम्। *जीवा० २५३*।

अंतकम्मा– अन्तकर्मा, प्रान्तः। *औप० ११*।
अंतकरे– अन्तकरः, भवच्छेदकरः। *भग० २१९*।
अंतकरो– अन्तकरः, प्रशस्तभावकरविशेषः, कर्मणः संसारस्य वा अंतकरः। *आव० ४९९*।
अंतकिरिआ– अन्तक्रिया, निर्वाणलक्षणा। *आव० १३५*।
अंतकिरियं–अन्त्य(न्त)क्रिया, अन्त्या च सा पर्यन्तवर्तिनी-क्रिया चान्त्यक्रिया। अन्त्यस्य वा कर्मान्तस्य क्रिया अन्तक्रिया। कृत्स्नकर्मक्षयलक्षणां मोक्षप्राप्तिम्। *भग० ४९*।
अंतकिरिया– अन्तक्रिया, अन्तः-कर्मणामवसानं तस्य क्रिया-करणम्, कर्म्मान्तकरणं मोक्ष इति। *प्रज्ञा० ३९६*। निर्वाणम्। *भग० ९१*। प्रज्ञापनाया विंशतितमं पदम्। *प्रज्ञा० ६*। मोक्षः। *सम० ११८*। भवस्यान्तकरणम्। *स्था० १८०*।
अंतकुलाणि– अन्तकुलानि-वरुटछिम्पकादीनाम्। *स्था० ४२०*।
अंतक्खरिया– अंत्याक्षरिका लिपिविशेषः। *प्रज्ञा० ५६*।
अंतगडदसा– अन्तकृद्दशा, अन्तो-भवान्तः कृतो विहितो यैस्तेऽन्तकृताः, तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दशाः-दशाध्ययनरू-पाग्रन्थपद्धतय इति। *अन्त० १*।
अंतगडो– अन्तकृत्, ज्ञानावरणीयादिकर्म्मान्तकृत्। *आव० १६३*। तेनैव भवेनेति। *आव० ११७*। अन्तकृताः-तीर्थ-करादयः। *सम० १२१*।
अंतगतावधिः– (अंतगतावही)-आत्मान्तगतः, शरीरान्त-गतः, अवधिक्षेत्रान्तगतः (पुरःपृष्ठपार्श्वेषु)। *प्रज्ञा०५३७*।
अंतगो–अन्तकः, विनाशकारी, आत्मनि वा गच्छतीति, आन्तरः आत्मगोवा। *सूत्र० १७८*। अन्तगः अन्तं गच्छती, दुष्परित्यज्यः। *सूत्र० १७८*।
अंतचारी– अन्तचारी, पार्श्वचारीति। *स्था० ३४२*।
अंतदीवगं– सव्वेहिं अभिसवज्झात अमज्जमसासी भवेज्जा। *दशवै० १६३*।
अंतद्धाणं– अदृश्यः। *निशी० ७६* अ।
अंतद्धाणपिंडो–अप्पाणं अंतरहितं करेत्ता जो पिंडं गेण्हति सो अंतद्धाणपिंडो भण्णति। *निशी० १०२* अ।
अंतरं–उववासो। *निशी० १७४* आ। मज्झं। *निशी० १४०* अ। समुद्र-मध्यम्। *उत्त० ७००*। उत्तरम्। *आव० ४४२*। विशेषः। *उत्त० २१७*। अवसरः। *आचा० १०७*। अवकाशः। *प्रज्ञा० ६९*। मध्यः। *जीवा० ४६*। शैलान्तरम्-कन्दरान्तरम्, वनान्तरम् वा आश्रयरूपं। *प्रज्ञा० ६९*। अन्तरालम्। *आव० ३३*। विशेषोरूपनिर्म्माणादिभिः। *स्था० २०३*। पूर्वत्यागापरवस्त्रादानकाले-प्रतिमाविशेषः। *निशी० १६३* आ। पार्श्वरूपम्। *जम्बू० ३८७*। व्यवधानम्। *जीवा० १२२*। अन्तरायम्। *ओघ० १७६*। उपवासः। *आव० २०३*। राजगमनस्यान्तरम्। *विपा० ५३*। अवसरः। *विपा० ७३*। अपान्तरालम्। *सूर्य० ४९*। अवसरः। *प्रश्न० ४२*। ग्रामादीनामर्धपथः। *प्रश्न० ५२*। पृष्ठोदरयोरन्त-रालं पार्श्व इति। *जीवा० २७७*। विचालं। *व्यव० १२८*।
अंतरंजिया– अन्तरञ्जिका, नगरी यत्र त्रैराशिकदृष्टिरुत्पन्ना, बलश्रीराजधानी। *उत्त० १६८*। पुरी पत्र त्रैराशिकनिह्नवस्य-दृष्टिरुत्पन्ना। *आव० ३१८*।
अंतरंत– अंतरतो नाम असहा मूधा। *व्यव० १०* आ।
अंतरंतगो– गिलाणो। *निशी० ११८* अ।
अंतर–वस्त्रैषणाभेदः। *आचा० २७७*। अन्तरशब्दो मध्यवाची। *प्रज्ञा० ५०*। अन्तरे, पृष्ठोदरयोरन्तराले, पार्श्वे। *जम्बू० ११७*। अंतराणि-पार्श्वदेशः। *प्रश्न० ८३*।
अंतरकंदे–अन्तरकन्दः। जलजवनस्पतिविशेषकन्दः। *प्रज्ञा० ३७*।
अंतरकरणं– औपशमिककालः। *प्रज्ञा० ३८७*।
अंतरगए– अन्तरगतः,संस्पर्शी। *सूर्य० ७९*।
अंतरगामंमि- अंतरगामम्मि– अपान्तराल एव यो ग्रामस्तस्मिन्*ओघ० ७७*।
अंतरगिरिपरिरओ–अन्तर्गिरिपरिरयः, गिरेरन्तः परिक्षेपः। *जीवा० ३४३*।
अंतरजातम्– भावभाषाजातः तृतीयोभेदः।अन्तरे भाषाद्रव्य-मिश्रणं। *आचा० ३८५*।
अंतरतेणो– गामदेसंतरेसु हरंतो। *निशी० ३८* आ।
अंतरदीव– अन्तरद्वीपः। *भग० ४२५*।
अंतरदीवगा– अन्तरद्वीपगा, अन्तरे लवणसमुद्रस्य मध्ये द्वीपा अन्तरद्वीपाः, तद्गता अन्तरद्वीपगाः। *प्रज्ञा० ५०*।
अंतरदीवगो– अन्तरद्वीपः, लवणसमुद्रमध्ये अन्तरेऽन्तरे द्वीपः। *जीवा० १४४*।
अंतरदीविगा–आन्तरद्वीपजाः। *स्था० ११५*।
अंतरद्धा– अन्तर्द्धानम्,भ्रंशः। *आव० ८२७*।

अंतरद्धाए– अन्तरकालेऽर्धसंलिखितेदेहे। *आचा० २९१*।

अंतरद्वीपजाः– अन्तरद्वीपाः,अन्तरम्, इह समुद्रमध्यं तस्मिन्द्वीपास्तेषु। *उत्त० ७००*। अन्तरद्वीपजाः, *सम० १३५*। अन्तरद्वीपाः, अन्तरम्। इह समुद्रमध्यं तस्मिन् द्वीपाः। *उत्त० ७००*।

अंतरपल्ली- अन्तरपल्लीं– अन्तरपल्लिकावृषभग्रामयोरन्तरालम्। *बृह० ३०५*।

अंतरपल्ली–बहिः सन्निवेशः। *निशी० ३३६* अ। मूलग्रामादर्धतृतीयगव्यूतान्तर्गतो ग्रामः। *बृह० १२१* आ। तस्माद्ग्रामात्परतो योऽन्यआसन्नग्रामः। *ओघ० १०४*।

अंतरभासिल्ल– अन्तरभाषिल्ल, अन्तरभाषावान्, गुरुवचना- पान्तराल एव स्वाभिमतभाषकः। *उत्त० ५५२*।

अंतरभाषा– अन्तरभाषा, आचार्यस्य भाषमाणस्यान्ते यद्भाषते सा। *आव० ७९२*।

अंतरवीहिअं– अन्तरवीथी, अवान्तरमार्गः। *जम्बू० १८८*।

अंतरा– अन्तरा, अगृहीतवीप्सा। *जीवा० १९९*।

अंतराइयदोसो– अन्तरायिकदोषः, अन्तर्भवोदोषः। *आव० ८३८*।

अंतराए– अन्तरायः, शक्त्यभावः। *सूत्र० १८४*। अन्तरायिकः (मध्यभव)। *आचा० ३४०*।

अंतराणि– उत्कर्षापकर्षात्मकविशेषरूपाणि निवासभूतानि वा गिरिकन्दरविवरादीनि। *उत्त० ७०१*।

अंतरापहे– अन्तरापन्थाः, अन्तरालमार्गः। *भग० ११६*।

अंतरायं– अन्तरायः, असङ्खडास्वाध्यायादिभिः। *आव० ५८०*।

अंतरालं– अन्तरालं, अन्तरम्। *उत्त० ३८१*। *आव० ३३*।

अंतरावणं– अन्तरापणं। *उत्त० २२२*। आवणान्तरम्। *उत्त० २०९*। राजमार्गमध्यभागवर्त्तिहट्टम्। *विपा० ५८*।

अंतरावासं– वृष्टेरवसरः, वर्षाकालश्च। *भग० ६६*।

अंतरिए– लघ्वन्तररूपाः। *जम्बू० ४९*।

अंतरिओ– अन्तरितः। *आव० ४२९*।

अंतरिका– अन्तरस्य-विच्छेदस्य करणमन्तरिका। *जम्बू० १५०*।

अंतरिक्खं– अन्तरिक्षं, आकाशप्रभवग्रहयुद्धभेदादिभाव- फलनिवेदकशास्त्रम्। *सम० ४९*।

अंतरिक्खो– मेहो। *दशवै० ११४*।

अंतरिच्छा– अन्तरेच्छा, अन्तरा-मध्ये इच्छा-अभिमत- वस्त्वभिलाषा। *उत्त० ४७४*।

अंतरिज्जं– अंतरिज्जं णाम पाउरणं अथवा जं सिज्जाए हेट्ठिल्लापात्तं। *निशी० १६३* आ।

अंतरिया– अन्तरिका। *सूर्य०१४१*। लघ्वन्तररूपा। *जीवा० २०४*। विच्छेदकरणम्। *भग० २२०*।

अंतरीयं– परिघानं। *बृह० ९८* अ।

अंतरुच्छुअं– इक्षुपर्वमध्यम्। *आचा० ३५४*।

अन्तरे– पथि। *ओघ० ६६*। मध्ये परस्परविभागः। *स्था० २२७*। अन्तरे, अन्तराले। *उत्त० ३८१*। अन्तरे, अवसरः। *भग० ३८१*।

अंतरो– अन्तरः, बवसरः। *आव० ४२१*।

अंतरोमगाणं– अंन्तरोदकानाम्, जलान्तर्वर्त्तिसन्निवेशविशेषा-णाम्। *जम्बू० २७७*।

अंतर्मुहूर्त्तम्– मुहूर्तस्यान्तरं, मुहूर्त्तमपिन्यूनम्। *उत्त० ६९७*। भिन्नमुहूर्त्तम्। *जीवा० १३०*।

अंतर्हितः– (अंतद्धिओ) अदृश्यः। *स्था० ५१३*।

अंतलिक्खं– अन्तरिक्षं, ग्रहभेदादिविषयम्। *आव० ६६०*।

अंतलिक्खं– अन्तरिक्षम्, नभः। दशः २२३। अमोघादिकम्। *सूत्र० ३१८*।

अंतलिक्खं– अन्तरिक्षम्–गंधर्वनगरादि। *स्था० ४२७*।

अंतवाले– अन्तपालः, अन्तं–त्वदादेश्यमेशसम्बन्धिनं पाल-यति-रक्षयति उपद्रवादिभ्य इति। *जम्बू० २०३*।

अंतसो– अन्तशः, निरवशेषतः। *सूत्र० १७१*।

अंताः– अवयवाः। *उत्त० ४५९*। *उत्त० ५८५*।

अंता– अंते ठिता, ण अंता अणंता। *निशी० २५५* आ।

अंतक्खरिया- अंताक्षरिका क्रीडाविशेषः। *उत्त० ४७*।

अंतिए– अन्तिके, समीपे। *भग० ९०*। *उत्त० २७७*।

अंतिमधनं– अंतिमे–अंकस्थाने परिमाणं। *व्यव० ७६*।

अंतिमराइयंसि– रात्रेरवसाने। *स्था० ५०२*। *भग० ७११*।

अंतिमसरीर– अन्तिमशरीरम्, चरमशरीरम्। *भग० २१९*।

अंतियं– समीपम्। *भग० ६५९*। अत्यन्तरमरणं, मरणस्यतृतीयोभेदः। *उत्त० २३०*। आन्तिकं, सामीप्यम् । *आव० २६७*।

अंतिय– अन्तिकम्, आसन्नम् । *भग० २१७*। अत्यन्तमरणम्। *उत्त० २३०*।

अंतिया– आन्तिकी समीपाभ्युपगता। *उपा० १५*। अन्ते, अग्रे। *उत्त० ६०१*। परिसमाप्तिः। *बृह० १९९* आ।

अंतेउरे– (आंतःपुरिकी), आतुरस्य नाम गृहीत्वा आत्मनो-ऽ गंप्रमार्जयत्यातुरश्च प्रगुणो जायते। *व्यव० १३३* आ।

अंतेण– मार्गेण। *निशी० ६* आ।

अंतेणं– आन्त्रेण। *स्था० ५०२*।

अंतेवासि– भर्तृज्जुकाः। *निशी० २५०* अ।

अंतेवासी– शिष्यः। *जम्बू० १५*। *भग० ११*।

अंतेहि– अरतया सर्वधान्यान्तवर्तिभिर्वल्लचणकादिभिः। *भग० ४८४*। रागद्वेषौ। *आचा० १५८*। *आचा० १६६*।

अंतो– अन्तो, विभागः। *भग० ३९३*। विभागः। *स्था० ३८०*। अन्तः, परिच्छेदः। *प्रज्ञा० ५३२*। मार्गः। *आव० ४०२*। अन्तः निवेशनस्य। *आव० ७४५*। अन्तः, मध्यभागे। *जीवा० २०१*। मार्गः। *आव० ६८६*। विभागः। *जम्बू० ४५९*। भिन्नम्। *आव० ५८४*। मार्गः। *आव० ४८५*। *आव० १८९*। मध्ये। *प्रज्ञा० ४७*। इन्द्रियाननुकूलआश्रयः। *प्रश्न० १३८*। मध्यकरणम्। *आव० ५८३*। चतुर्दशभेदान्तरग्रन्थः। *उत्त० ३७१*।

अंतोजलगयपव्वय– जलान्तर्गतपर्वतः। *उत्त० २६४*।

अंतोधूमं– अभ्यन्तरधूमम्। *आव० ६६२*।

अंतोनायं– अन्तोनादं, हृदयमदुःखमारसन्। *आव० ६६१*।

अंतोनियंसणी– निर्ग्रंथ्युपकरणविशेषः। *ओघ० २०९*।

अंतोमुहुत्त– अन्तर्मुहूर्त्तम्, भिन्नमुहूर्तम्। *भग० २९*। *उत्त० ६९७*।

अंतोवणीते– आहरणतद्दोषविशेषः। *स्था० २५३*।

अंतोवाहिणी– अन्तर्वाहिनी नदी। *जम्बू० ३५७*। *स्था० ८०*।

अंतोवेइया– प्रतिलेखनादोषः। *निशी० १८२* अ।

अंतोसंबुक्कावट्टा– गोयरपिंडेसणाए कमेणं ति, तत्थ गोयरातिमे अभिग्गहविसेसतो जाणियव्वा। *निशी० १२* अ।

अंतोसल्ल– अन्तःशल्य मरणम्। मरणस्य षष्ठो भेदः *उत्त० २३०*।

अंतोसल्लमरणे– अन्तःशल्यमरणम्, अन्तः शल्यस्य द्रव्यत-ऽनुद्वृत्ततोमरादेः, भावतः सातिचारस्य यन्मरणं तत्। *भग० १२०*। *सम० ३३*।

अंतोहिंतो– गृहोदेर्मध्याद्बहिर्नयन्तः। *स्था० ३५३*।

अंत्य– आनुपूर्व्यन्त्यपंक्त्यंकाः। *सूत्र० १०*। विशेषम्। *स्था० ३९१*।

अंदुकम्– हस्तिबन्धनविशेषः। *उत्त० ४११*।

अंदेरे– गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

अंदोलगा– पक्ष्यन्दोलकाश्च तत्र यत्रागत्य २ मनुष्याआत्मान-मन्दोलयन्ति। *जम्बू० ४४*।

अंदोलगो– आन्दोलकः यत्रागत्य मनुष्या आत्मानमन्दोलयति सः। *जीवा० २००*।

अंध– अन्धः, अज्ञानः। *भग० ३१२*।

अंधकण्टकीयम्– अतर्कितसम्भवो न्यायविशेषः। *आचा० १८*।

अंधकारे– अन्धकारम्, तमोरूपम्। *भग० २७०*।

अंधकारेति– तमस्कायनाम। *स्था० २१७*।

अंधगवण्हिणो– अंह्रिपा–वृक्षास्तेषां वह्नयस्तमाश्रयत्वेने–त्यंह्रिपवह्नयो बारदरतेजस्कायिकाः। *भग० ७४६*।

अंधगवण्ही– अन्धकवृष्णिः, द्वारवत्यां राजा यादवविशेषः। *अन्त० २*। दश ०९७।

अंधतमसं– अन्धतमसम्। *आव० ३६६*।

अंधपुरं– नगरविशेषः। *बृह० १०८* आ०। *निशी०*। ४२ आ।

अंधपलितपलाणं- अंधप्रदीप्तपलायनम् । *दशवै० १५८*।

अंधमूढि– अविमर्शकारिता। *आचा० ६२*।

अंधयं– अन्धकम्, नयनयोरादित एवानिष्पत्तेः, कुत्सिताङ्गम्। *विपा० ३६*।

अंधलीभूय– अन्धीभूतः। *आव० ६८८*।

अंधिय– चतुरिन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा० ४२*।

अंधिया– चतुरिन्द्रियजीवभेदः।*उत्त० ६९६*। चतुरिन्द्रियज-न्तुविशेषः। *जीवा० ३२*।

अंधिल्लगो– अन्धिल्लकः, जात्यन्धः। *प्रश्न० १६२*।

अंधीयताम्– अन्धीभवतु। *दशवै० १०६*।

अंधो– अन्धः, चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४*।

अंधोपल- अन्धोपलः अन्धपाषाणः। *दशवै० ४०*।

अंध- अंध्र अंध्रादिदेशोद्भवाम्लेच्छप्राया, आर्यभाषामजानाना। *व्यव० २८* अ।

अंध्री– (अंधी), अन्ध्रदेशीयास्त्री, उत्कृष्टरूपा। *आव० ५८१*।

अंब– अम्लवचनयोगाद् परुषवचनव्यवहारः। *व्यव० २५६*।
अंब– आम्र। *प्रज्ञा० ३१*।
अंब– आम्रम्। *प्रज्ञा० ३२८*। फलविशेषः। *प्रज्ञा० ३६४*। थोवेण ऊणं अंबं भण्णति। *निशी० १२४* आ।
अंबए– अग्रप्रलंबविशेषः। *बृह० १४३* आ।
अंबकंजिय– सुगंधिकाञ्जिकम्। *ओघ० १६०*।
अंबकुज्जं– पादतलमध्यम्। *बृह० २२३* आ।
अंबकूणए– आम्रास्थिकम्। *भग० ६८१*।
अंबकूणगहत्थगए– आम्रफलहस्तगतः। *भग० ६८४*।
अंबक्खलगं– अम्बलखलम्। *आव० ३५३*।
अंबखुज्ज– आम्रकुब्जः, आम्रफलवत् कुब्जो वक्रः। *भग० ९०*। पादतलमध्यम्। *बृह० २२३* अ। *तन्दु०*।
अंबगपाणगं– पानकविशेषः। *आचा० ३४७*।
अंबगपिंडी– आम्रपिण्डी। *आव० ६९७*।
अंबचोयए– आम्रत्वक्। *भग० ६८१*।
अंबचोयगं– आम्रत्वक् आम्रछल्ली। *आचा० ४०५*।
अंबजुज्झं– पादतलमध्यम्। *निशी० १३७* अ।
अंबट्ठ– अम्बष्ठः, ब्रहमपुरुषेण वैश्यस्त्रियां जातो वर्णः। *आचा० ८*।
अंबट्ठ– अम्बष्ठः ब्राहमणेन वैश्यायां जातः। *उत्त० १८२*।
अंबडे– अम्बडः, माहणपरिव्राजकभेदः। *औप० ९१*। (अंमड) परिव्राजकविद्धाधरश्रमणोपासकः। *स्था० ४५७*। अम्बडः। *सम० १५४*।
अंबडो– अम्बडः, अमूढदृष्टित्वोदाहरणे लौकिकऋषिः। *दशवै० १०२*। सुलसाश्राविकापरीक्षकपरिव्राजकः। *व्यव० १८* आ। म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५*। अम्बडपरिव्राजकः। *प्रज्ञा० ६१*।
अंबपलंबं– फलविशेषः। *आचा० ३४८*।
अंबपेसी– आम्रफाली। *आचा० ४०५*।
अंबप्पहारो– प्रहारार्त्तः। *उत्त० १९३*।
अंबभित्तयं– आम्रार्द्धम्। *आचा० ४०५*।
अंबय– आम्रः। *आव० ४१७*।
अंबयरुक्खे– अष्टादशजिनचैत्यवृक्षः। *सम० १५२*।
अंबरतल- अम्बरतलम्। *सूर्य० २६४*।
अंबरवत्थं– अम्बरवस्त्रं, स्वच्छतयाऽऽकाशकल्पम्। *जम्बू० ४०६*। स्वच्छतयाऽऽकाशकल्पवसनम्। *भग० १७४*।
अंबरसे– अम्बा-पूर्वोक्तयुक्त्या जलं तद्रूपो रसो यस्मात् तन्निरुक्तितोऽम्बरसम्। *भग० ७७६*।
अंबरिस– अम्बरीषः, द्वितीयः, परमाधार्मिकः। *भग० १९८*।
अंबरिसी– नारकान् कल्पनिकाभिः खण्डशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति। *सम० २८*। अम्बर्षिः, द्वितीयः परमाधार्मिकः। *सूत्र० १२४*। पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु द्वितीयः। *उत्त० ६१४*। नरके द्वितीयः परमाधार्मिकः। *आव० ६५०*। विनयविषये उज्जयिन्यां ब्राहमणः श्रावकः। *आव० ७०८*।
अंबरिसे– अम्बरीषः, कोष्टकः। *जीवा० १२४*। अम्बरीषम्– भ्राष्ट्रम्। *प्रश्न० १७*। अम्बरीषा–भ्राष्ट्रा आकरणानि। *स्था० ४१९*।
अंबले– अम्बराणि। बृ.० *२८३* अ।
अंबसालवणं– आम्रशालवनं, आमलकल्पानगर्यां वनविशेषः। *उत्त० १५९*। चैत्यविशेषः। *आव० ७०७*। आम्रशालवनम्। *आव० ३१४*।
अंबा– विद्याविशेषः। *आव० ४११*। जलम्। *भग० ७७६*।
अंबाडगं– अम्बालकम्, फलविशेषः *अनुत्त० ६*। अंबाटकं– फलविशेषः, अधोगतिमत् । *प्रज्ञा० ३२८*।
अंबाडग– बहुबीजको वृक्षः। *भग० ८०३*। अंबाडकबहुबीज-विशेषः। *प्रज्ञा० ३२*। आम्रटकः– कापोतलेश्यारसे। *प्रज्ञा० ३६४*।
अंबाडगपलंबं– फलविशेषः। आभा० *३४८*।
अंबाडगपाणगं– पानकविशेषः। *आचा० ३४७*।
अंबाडिओ– तिरस्कृतः। *बृह० ३०* आ। तिरस्कृतः। *आव० ९१*। तर्जितः। *आव० १८७*। उपालब्धः। *आव० ३९८*।
अंबाडिय– निर्भर्त्सितः। *आव० ३०६*।
अंबाडिय– तिरस्कृता। *आव० २२४*।
अंबाडेइ– तिरस्कुरुते। *उत्त० १४७*। उपलभते। *आव० २२३*। *निशी० २११* आ।
अंबाण– गंधाम्रे, आम्राः। *बृह० १४३* आ।
अंबारेवई– अम्बारेवती, व्यन्तरीविशेषः। *आव० ६९१*।
अंबावल्ली– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।
अंबियपहारो– प्रहारार्त्तः। *आव० ६६६*।
अंबिया– प्राप्ता गवेषितलब्धा वा। *बृह० ८२* अ।

अंबिलं– अम्लम्। *आव० २००*। अम्लम्, तक्रारनालादि। *दशवै० १८०*। आचाम्लम्–अवश्यानम्। *आचा० ३४६*।

अंबिल– पर्वगवनस्पतिः। *भग० ८०२*। अम्बोऽम्लिकाद्या-श्रितः। *जम्बू० १७४*। हरितविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। रब्बा। *बृह० २९* अ।

अंबिलजवागू– अम्लयवागूः। *आव० ९१*।

अंबिला– आम्लिका। *ओघ० २१५*।

अंबिलि– आम्लभाजनम् चिञ्चिणिकापात्री। *आव० ६२४*। रब्बा। *बृह० २८* आ।

अंबिलिबीयं– अम्लिकाबीजम्, चिञ्चिणिकाबीजम्। *आव० ६२४*

अंबिलोदए– आम्लोदकम्, अतीवस्वभावत एवाम्लपरिणामम्। *जीवा० २५*। आम्लोदकम् स्वभावत एवाम्लपरिणामं कान्जि-कवत्। *प्रज्ञा० २८*।

अंबूखुज्जो– आम्रकुब्जः। *आव० ६४८* ।

अंबे– आम्लः। *निशी० ३५६* आ। प्रथमपरमाधार्मिकः। *सम० २८*। अम्बः, नरके प्रथमः परमाधार्मिकः। *आव० ६५०*। पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु प्रथमः। *उत्त० ६१४*। अम्बः, प्रथमः परमाधार्मिकः । *सूत्र० १२४*।

अंबेल्ली– (रब्बा) । *आव० ९१*।

अंबो– आम्रवृक्षः। भावुके दृष्टांतः। *ओघ० २२३*।

अंमिया– प्राप्त। *निशी० १०* आ।

अंमेउं– प्राप्तुम्। *निशी० २०२* अ।

अंवाडेति– खरंटेति। *निशी० २११* आ।

अंस– अस्रिः, पर्यङ्कासनोपविष्टस्य जानुनोरन्तरं, आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरं, दक्षिणस्कन्धस्य वामजानुन-श्चान्तरं, वामस्कन्धस्य दक्षिणजानुनश्चान्तरम्। चतुर्दि-ग्विभागोपलक्षितः शरीरावयवो वा। *भग० ११*। अस्रेषुकोणेषु। *जम्बू० ११५*। अंशः, सत्पर्यायोऽयं शब्दः। *उत्त० ४८९*।

अंसलग– अंसगतः। *तन्दु०*।

अंसहरा– अंशधरा, अंशं–प्रक्रमाज्जीवितव्यभागं धारयन्ति–मृत्युना नीयमानं रक्षन्ति । *उत्त० ३८८*। अंशः–दुःखभागस्तं हरन्ति अपनयन्ति ये ते। *उत्त० ३८९*।

अंसातो– एकस्मात्। *स्था० २३६*।

अंसिया– अविभक्तोऽ शः।*बृह० १९९* आ। गामततिय भागादि। *निशी० ७०* आ। अंशिका–यत्र ग्रामस्यार्द्धं, आदिशब्दात् त्रिभागो वा चतुर्भागो वा गत्वा स्थितः सा ग्रामस्यांश एव अंशिका । *बृ० १८१* आ।

अंसियालए– अंस्त्र्यालये। *दशवै० ३७*।

अंसी– अस्रिः, चतुर्दिग्विभागोपलक्षितः शरीरावयवः। *जीवा० ४२*। *प्रज्ञा० ४१२*। (अर्शांसि) रोगविशेषः। *निशी० १८९* अ।

अंसुए– श्लक्ष्णपट्टः। *बृह० २०१* आ।

अंसुयं– वस्त्रम्। *निशी० २५४* आ। दुकूल–विशेषरू-पम्। *जीवा० २६९*।

अंसुय– श्लक्ष्णपट्टः। *स्था० ३३८*।

अंसुयाणि– अंशुकानि, वस्त्राणि। *आचा० ३९३*।

अंसो– अंशः, अस्रिः, चतुर्दिग्विभा–गोपलक्षितः। *सूर्य० ४*। अस्रिः, पर्यङ्कासनोपविष्टस्य जानुनोरन्तरं *१*, आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरम् *२*, दक्षिणस्कन्धस्य वामजानु-नश्चान्तरम् *३*, वामस्कन्धस्य दक्षिणजानुनश्चान्तरं *४*, *सूर्य० ४*। अंशः-भागः। *आचा० १७७*।

अइं– अमुना। *बृह० २१३* अ।

अइंताणं– अतियतां–आगच्छतां। *व्यव० ३६६* आ।

अइंति– प्रविशन्ति। *ओघ० ६७*। आगच्छन्ति। *प्रश्न० १२०*।

अइंतु– प्रविशन्तु। *ओघ० ७९*।

अइंते– प्रविशति। *बृह० ६०* अ।

अइंतो– आगच्छन्। *आव० २६५*।

अइ– अयि, आमन्त्रणे। *उत्त० ३५४*।

अइअच्च– अतिगत्य, अत्येत्यतिक्रम्य। *आचा० २४१*। अविगणय्य। आभा० *३०३*।

अइआरो– अतिचारः, पापम्। *आव० ७७८*। अतिक्रमः। *आव० ५७५*। स्खलना। *ओघ० ३८*।

अइकाए– अतिकायः, दक्षिणनिकाये सप्तमो व्यन्तरेन्द्रः। *भग० १५८*।

अइकाय– अतिकायः, महोरगेन्द्रः। *जीवा० १७४*।

अइकुंडियं– अतिबाधितम्। *आव० ५७४*।

अइकोहग्गहघत्थं– अतिक्रोधग्रहग्रस्तम्, अतीवोत्कटरोषग्रहा-भिभूतम्। *आव० ५८८*।

अइक्कंतं– अतिक्रान्तम्, अतिक्रान्तकरणात् *आव० ८४०*।

अइक्कंत– अतिक्रान्तम्, अतिक्रान्तकरणादतिक्रान्तम्। *भग० २९६*।

अइक्कंता– अतिक्रान्ता, जाता। *उत्त० २१५*। अतीताः। *आचा० १७८*।

अइक्कंतो– अतिक्रान्तः, पर्यनावर्ती। *प्रज्ञा० ९१*।

अइक्कमे– अतिक्रामेत्, प्रविशेत्। *उत्त० ६०*।

अइक्कमो– अतिक्रमः, आधाकर्मनिमन्त्रणे प्रतिश्रृण्वति। साधुक्रियोल्लङ्घनरूपः दोषविशेषः यावदुपयोगकरणम् । *आव० ५७६*। अतिलङ्घनम्। *आव० ८२३*। पीडात्मको महाव्रता-तिक्रमो वा मनोऽवष्टब्धतया परतिरस्कारं वा। *सूत्र० १७३*।

अइगच्छिहिति– अतिगमिष्यति। *आव० ३६९*।

अइगतो– पविट्ठो। *निशी० १३*आ। अतिगतः। *आव० ३४९*।

अइगमणं– अतिगमनम्, अतिगमनकथा, राज्ञ आगमनसम्बन्धी विचारः, राजकथाया द्वितीयभेदः। *आव० ५८१*। उत्तरायणम्। *भग० १४७*।

अइगया– अतिगता। *ओघ० १५८*।

अइगुविलगव्वरा– अतिगुपिलगह्वरा। *आव० ३८४*।

अइचारो– अतिचारः, स्खलना। *ओघ० ३८*। मिथ्यात्व–मोहनीयकर्मोदयादात्मनोऽशुभः परिणामविशेषः। *आव० ८१३*।

अइचिराविओ– अतिचरायितः। *आव० ५१२*।

अइच्छ– अतीच्छ, अदाने सत्यतिगच्छेति वचनम्। *आव० ४७८*।

अइच्छओ– अतिक्राम्न्, भिन्दानः, *बृह० १७*आ।

अइण्णं– आकीर्णम्, सव्वलोगो आयरइ। *निशी० २७४*।

अइणा– गोरमिगादिणो। *निशी० २५५*अ।

अइनिद्धं– अतिस्निग्धम्, हविः प्रचुरम्। *आव० ५६८*।

अइपंडुकंबलसिला– अतिपाण्डुकम्बलशिला। *आव० १२४*।

अइपडागा– अतिपताका, एकां पताकामतिक्रम्य या पताका सा। *औप० ५*। पताकोपरिवर्तिनी। *भग० ४७६*।

अइ(णु)परियट्टित्ता– अति(नु)परिवर्त्त्य, सामस्त्येन परिभ्राम्य। *प्रज्ञा० ६००*।

अइपहाए– अतिप्रभाते। *आव० ६४१*।

अइप्पयं– अतिपरभाते। *ओघ० ९८*।

अइबले– आगामिन्यां पञ्चमो हरिः। *सम० १५४*। अतिबलः–भरतसंताने तृतीयः। *स्था० ४३०*।

अइभद्दा– अतिभद्रा, प्रभूसमाता। *आव० २५५*।

अइभारे– अतिभार, प्रभूतपूगफलादेः स्कन्धपृष्ठ्यादिष्वा–रोपणम्। *आव० ८१८*।

अइभूमि– अतिभूमिः, गृहस्थैरनुज्ञाता यत्रान्ये भिक्षाचरा न यान्ति। *दशवै० १६८*।

अइमत्तं– अतिमात्रः, अतिरिक्तम्, अतिक्रान्तमर्यादम्। *उत्त० ४२९*।

अइमत्ते– अतिमात्रे, बृहत्प्रमाणे। *ओघ० १७०*।

अइमुत्तग– पुष्पविशेषः। *निशी० ११८*आ।

अइमुत्तगचंदसंठाणसंठिते– अतिमुक्तकचन्द्रसंस्थान संस्थि-तम्, घ्राणेन्द्रियसंस्थानम्। *प्रज्ञा० २९३*।

अइमुत्तगणा– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

अइमुत्तय– लताविशेषः। *प्रज्ञा० ३८२*।

अइमुत्ते– अतिमुक्तः, महावीरस्वामिनः कुमारश्रमणः शिष्यः। *भग० २१९*। अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य पञ्चदशाध्ययनम्। *अन्त० १८*।

अइयंचिय– अतिक्रम्य। *स्था० ३००*।

अइयारो– अतिचारः, गृहीते आधाकर्मणि दोषविशेषः, यावद्वसतिं गत्वेर्यापथप्रतिक्रमणाद्युत्तरकालं लम्बनोत्क्षेपः। *आव० ५७६*। अतिचरणं–चारित्रस्खलनाविशेषः। *आव० ७८*। अपराधम्। *उत्त० २३३*।

अइर– अचिरा, शान्तिमाता। *आव० १६१*।

अइरत्त– अतिरात्रः, अधिकदिनं, दिनवृद्धिः। *स्था० ३७०*।

अईरत्तकंबलसिलाओ– मेरुमस्तकशिला। *स्था० ८०*।

अइरा– अचिरा, शान्तिजिनमाता। *आव० १६०*। *सम० १५२*। *सम० १५१*।

अइरित्तसिज्जआसणिए– अतिरिक्तशय्यासनिकः, चतुर्थमसमाधिस्थानम्। *आव० ६५३*।

अइरेगो– अतिरेकः, अतिशायिता। *जीवा० २७४*। अतिशयः। *जीवा० २६७*।

अइवत्तियं– पातकादतिपातिकां, निर्दोषाम्। *आचा० ३०५*।

अइवाइज्ज– अतिपातयेत्, व्यथेत। *आचा० १२८*।

अइवायंमि– अतिपाते। *स्था० ३२९*।

अइवाय– द्वादशशतके प्राणातिपातादिविषयः पञ्चमोद्देशकः। *भग० ५५२*। अतिपालः, हिंसादिदोषः। *ओघ० ३६*। वधः। *भग० २८९*।

अइवालग– अजापालकः, वाचकविशेषः। *बृह० २०*आ।
अइवेलं– अतिवेलं, स्वाध्यायादिवेलातिक्रमेण। *उत्त० ११०*। अतिवेला अन्यसमयातिशायिनी मर्यादा समतारूपा। *उत्त० ११०*।
अइसंधणपरो– अतिसन्धानपरः, परवञ्चनाप्रवृत्तः। *आव० ५८९*।
अइसंपओगो– अतिसम्प्रयोगः, गार्ध्यम्। *सूत्र० ३२९*।
अइसय– अतिशयः, आमर्षौषध्यादिः। *सम० १२४*। अर्थ-विशेषः। *बृह० १९२*आ।
अइसुहुमं– अतिसूक्ष्मम्। *आव० ५३६*।
अइसेस– अतिशयः, अतिशयनं, अवध्यादिप्रत्यक्षं ज्ञानं। ओध० *१४*। अतिशयी–अवध्यादिज्ञानयुक्तः। *दशवै० १०३*। सूत्रार्थसामाचारीविद्यायोगमंत्रातिशयः। *बृह० २०३*आ।
अइसेसी– अतिशायिनी, स्निग्धमधुरद्रव्याणि। *बृह० २४६*।
अइसेसो– अतिशेषः, अतिशायी, *जीवा० २७७*। शेषाणि–मत्यादिचक्षुर्दर्शनादीनि अतिक्रान्तं–सर्वावबोधादिगुणैर्यत्त-दतिशेषमतिशयवत्केवलम्। *स्था० २१३*।
अईइ– अतीति, आगच्छति, प्रविशति। *आव० २३२*।
अईतेआ– अतितेजाः–चतुर्दशरात्रिनाम। *जम्बू० ४९१*।
अईया– अतीताः, अतिक्रान्ताः। *आचा० १७८*।
अईह– अतियासीः। *आव० १७३*।
अउअंगाति– अयुतांगानि, संख्याविशेषः। *स्था० ८६*। *सूर्य० ९१*। *भग० ८८८*।
अउआति– अयुतानि, संख्याविशेषः। *स्था० ८६*। *सूर्य० ९१*। *भग० ८८८*। *भग० २९०*। *भग० २७५*।
अउज्झं– अयोध्यम्, अनभिभवनीयम्। *जम्बू० २१२*।
अउज्झा– अयोध्यानि, परैर्योद्धुमशक्यानि। *प्रज्ञा० ८६*।
अउज्झाओ– नगरविशेषः। *स्था० ८०*।
अए– अजः, बर्करः। *प्रज्ञा० २५२*। *उत्त० २७५*।
अओज्झा– अयोध्या, राजधानी। *जम्बू० ३५७*। अजितस्य प्रथमपारणकस्थानम्, *आव० १४६*।
अओमुहदीवे– अंतरद्वीपविशेषः। *स्था० २२६*।
अओमुहो– अयोमुखः, अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा० १४४*।
अकंटए– अकण्टकः, कण्टकरहितः। *जीवा० १८८*।
अकंठगमणाइं– अकण्ठगमनादि, कण्ठेन भक्तकवलो नोपक्रामति। *ओघ० ८०*।
अकंडूयते– अकण्डूयकः, न कण्डूयत इति। *स्था० २९९*।
अकंतं– सरोषभणितम्। *निशी० २७८*अ।
अकंतत्ता– अकान्तता, अकमनीयता। *भग० २३*। असुन्द-रता। *भग० २५३*। अकान्तता। *प्रज्ञा० ५०४*।
अकंतदुक्खी– अनभिप्रेताशातावेदनीया। *आचा० ४३०*।
अकंता– अकान्ताः, अकमनीया। *भग० ७२*।
अकंपिए– अकम्पितः, अष्टमगणधरः। *आव० २४०*।
अकक्कस– अकर्क्कशम्, सुखम्। *भग० ३०५*।
अकज्जं– अकार्यम्–मैथुनासेवालक्षणम्। *व्यव० २०५*आ।
अकडजोगी– यतनया योगमकृतवान्। *व्यव० १५१*।
अकडसामायारी– सामायारिं जो न करेति सो अकडसामा-यारी। *निशी० ८१*अ।
अकण्णा– अकर्णनामा अन्तरद्वीपाः। *प्रज्ञा० ५०*।
अकण्णो– अकर्णः अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा० १४४*।
अकति– असङ्ख्याता अनन्ता वा। *स्था० १०५*।
अकतिसञ्चिता– असङ्ख्याता, एकैकसमये उत्पन्नाः सन्तस्तथैव सञ्चितास्ते। *स्था० १०५*।
अकतिसंचया– कतिसंचिता न ये। *भग० ७९६*।
अकण्णदीवे– अकर्णद्वीपः, अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था० २२६*।
अकप्प– अकल्पः, शिक्षकस्थापनाकल्पादिः। *दशवै० १९६*।
अकप्पए– अकल्पिके, वसतिपालके। *व्यव० १३*अ।
अकप्पट्ठवणा– अयोग्यानीतपिंडवर्जनम्। *निशी० २४२*।
अकप्पणारुमणा– अकल्पनारुग्मनसः। *मरण०*।
अकप्पे– सामायिकसंयमः, अस्थितकल्पश्चतुर्यामधर्मो वा। *बृह० १२५*आ।
अकप्पो– अकल्पः, *आव० ७७८*। अकृत्यम्। *आव० ७६१*।
अकब्बरसुरत्राण– मोगलनृपः। *जम्बू० ८८*।
अकम्मंसे– अकर्मांशः। *आव० ६१५*।
अकम्मंसो– अकर्मांशः, अंशः-कर्मणोऽवयवास्तेऽपगता यस्य सः। *उत्त० २५७*।
अकम्म– आक्रम्य, बलात्कारेण। *आव० ६६२*।
अकम्मगं– अकर्मकं, अविद्यामानदुश्चेष्टितं। *सम० ५२*।

अकम्मभूमगा– अकर्मभूमकाः, अकर्मा-यथोक्तकर्मविकला भूमिर्येषां ते अकर्मभूमाः, ते एव अकर्मभूमकाः। *प्रज्ञा० ५०। सम० १३५*।

अकम्मभूमी– अकर्मभूमिः, हैमवतादिकभोगभूमिः। *प्रश्न० ९६। स्था० ११५*।

अकम्मयं– अकर्मकं, अप्रमादम्। *सूत्र० १६९। उत्त० ७००*।

अकम्मयारो– अकर्मकारी, स्वभूमिकानुचितकर्मकारी। *प्रश्न० ३६*।

अकम्मा– अकर्मा, न विद्यते कर्माऽस्येति, वीर्यान्तरायक्षय-जनितं जीवस्य सहजं वीर्यम्। *सूत्र० १६८*।

अकम्हा– अकस्मात्, बाह्यनिमित्तानपेक्षम्। *आव० ६४६*। अकस्मात् क्रिया, अकस्माद्यत्करणम्, क्रियायाश्र्चतुर्थो भेदः। *आव० ६४८*।

अकम्हादंडे– अकस्माद्दण्डः। *सम० २५*।

अकम्हाभयं– अकस्माद्भयम्, बाह्यनिमित्तानपेक्षं गृहादिष्वेवास्थितस्य रात्र्यादौ यद्भयम्। *आव० ६४६। सम० १३*। ठाण० *३८९*।

अकयकरणो– अकृतकरणः। अनभ्यस्तविद्य। *आव० ७०३*। अकृतकरणः। *आव० ३४४*।

अकयकिरिए– अकृतयोगोद्वहनः। *निशी० २१२*अ।

अकयपरलोयसंबलो– अकृतपरलोकशम्बलः। *आव० ३६७*।

अकयण्णुया– अकृतज्ञता। *आतु०*।

अकयपुण्णे– अकृतपुण्यः। *उत्त० ३२९*।

अकयपुण्णो– अकृतपुण्यः, अविहिताश्रवनिरोधलक्षणपवित्रा-नुष्ठानाः। *प्रज्ञा० ९८*।

अकयमुहो– अकृताक्षरसंस्कारमुखः। *बृह० २५*आ।

अकयरूवो– वक्कलपिंडठितो। *निशी० ८७*अ।

अकयागम– अकृतकर्म्मोदयः। *आव० २७४*।

अकरंडुअं– अकरण्डुकम्, अनुपलक्ष्यमाणपृष्ठवंशास्थिकम्। *औप० १९*।

अकरंडुयं– अविद्यमानपृष्ठिपार्श्वास्थिकम्। *प्रश्न० ८१*।

अकरंडुय– अकरण्डुकः, अनुपलक्ष्य पृष्ठास्थिकः। *प्रश्न० ८४*।

अकरणं– मैथुनम्। *व्यव० प्र० २५१*अ।

अकरण– अलेश्यस्य केवलिनः कृत्स्नयोर्ज्ञेयदृश्ययोरर्थयोः केवलं ज्ञानं दर्शनं चोपयुञ्जानस्य योऽसावपरिस्पन्दोऽप्रतिघो वीर्यविशेषः सः। *स्था० १०६। भग० ५७*।

अकरणतयैव– अक्रिययैव संयमानुष्ठानमन्तरेण। *आचा० १४९*।

अकरणयाइ– अकरणेन, अपूर्वानुपार्जनेन। *उत्त० ५८७*।

अकरणयाए– अव्यापारतयां। *आचा० ३०५*।

अकरणिज्जं– अकृत्यम्, असंयमं मन्दधमार्णः। *आव० ५३६*।

अकरणिज्जो– अकरणीयः *आव० ७७८*।

अकरिंतो– अकुर्वन्। *आव० ५०९*।

अकलिज्जंता– आज्ञायमाना। *ओघ० १६०*।

अकलुसे– अकलुषः, द्वेषवर्जितं। *अन्त० २२*।

अकलेवरसेणि– अकडेवरश्रेणिः, कलेवरं–शरीरं अविद्यमानं कडेवरमेषामकडेगराः सिद्धास्तेषां श्रेणिरिव श्रेणिः क्षपकश्रे-णिरिति। *उत्त० ३४१*।

अकप्पं- अकल्पम्–असमर्थं। *आचा० १०६*।

अकविल– अकपिला, श्यामा। *जम्बू० ११५*।

अकसिणपवत्तगो– अकृत्स्नप्रवर्त्तकः। *आव० ४९३*।

अकसिणा– आचारप्रकल्पस्य अष्टाविंशतितमो भेदः। *सम० ४७*। आकृत्स्ना–यत्र किंचित् झोष्यते। *व्यव० १२४*आ।

अकस्मात्– (आकस्मिकः), निर्युक्तिकः । *आचा० २६६*।

अकस्मात्– कस्मादिति हेतुर्न कस्माद् अकस्मात्। *आचा० २६७*।

अकस्माद्दण्डः– अनभिसन्धिना दण्डः। *प्रश्न० १४३*।

अकस्माद्भयम्– बाह्यनिमित्तानपेक्षम्। *प्रश्न० १४३*। ब्राह्मनि-मित्तमन्तरेणाहेतुकं भयम्। *आव० ४७२*।

अकहा– अकथा, मिथ्यात्वमोहनीयं कर्म वेदयन् विपाकेन यां काञ्चिदज्ञानी कथां कथयति सा। *दशवै० ११५*।

अकांडे– अकाले। *बृह० १५५*अ।

अकाऊण– अकृत्वा, अभणित्वा। *ओघ० १५५*।

अकाम– अकामः, मोक्षः। *उत्त० ४१४*। अकामः, उपरोधशीलता। *दशवै० १७७*। निरभिप्रायः। *भग० ३६*। निर्जराद्यनभिलाषी। *भग० ३६*।

अकामकामे– अकामकामः, कामान्–इच्छाकाममदनकाम-भेदान् कामयते–प्रार्थयते यः स कामकामो न तथा अका-मकामः, अकामो–मोक्षस्तत्र

सकलाभिलाषानिवृत्तेस्तं काम-यते यः स तथा। *उत्त० ४१४*।

अकामणिज्जराए– अकामनिर्जरया। *आव० ६५*।

अकामतण्हा– अकामतृष्णा। *औप० ८६*।

अकामनिकरणं– अकामनिकरणम्, अकामो वेदनानुभावेऽनि-च्छाऽमनस्कत्वात् स एव निकरणं–कारणं यत्र तदकामनि-करणं–अज्ञानप्रत्ययं, अनिच्छाप्रत्ययम्। *भग० ३१२*।

अकाममरणम्– बालमरणाद्यमप्रशस्तम्। *उत्त० २४१*। अकाममरणं–उत्तराध्ययनेषु पञ्चमाध्यनम्। *उत्त० ९*।

अकाममरणिज्जं– उत्तराध्ययनेषु पञ्चमाध्ययनम्। *सम० ६४*।

अकारए– अकारकः, अरोचकः। *विपा० ४०*।

अकारकम्– अपथ्यम्। *ओघ० १३९*। *ओघ० १८३*। शीत-लम्। *ओघ० १७६*।

अकारिजणो– अकारिजनः। *आव० १७६*।

अकारिणो– अकारिणः। आमोषाद्यविधायिनः। *उत्त० ३१३*।

अकाल– अकारिणः। *स्था० ३९९*।

अकालपडिबोधी– रातो चेव पडिबुज्झंति। *निशी० ४३ अ*। एषां न कश्चिदपर्यटनकालः। *आचा० ३७७*।

अकालपरिभोगी– रातो सव्वादरेण भुजंति। *निशी० ४३ अ*। एषां न कश्चिदभोजनकालः। *आचा० ३७७*।

अकालपरिहीणं– अविलम्बेन। *भग० ७३८*। निर्विलम्बम्। *जम्बू० ३९७*।

अकालसज्झायकारए– अकालस्वाध्यायकारकं। *सम० ३७*।

अकालसज्झायकारी– अकालस्वाध्यायकारी, यः कालिक-श्रुतमुद्घाटपौरुष्यां पठति, चतुर्दशमसमाधिस्थानम्। *आव० ६५४*। अकालस्वाध्यायकरणम्, पञ्चदशमसमाधिस्थानम्। *प्रश्न० १४४*।

अकालिचरिया– अकालचर्या, रात्रौ पथि गमनम्। *व्यव० १९ आ*।

अकालियं– आकालिकं, यथास्थित्यायुरुपरमादर्वागेव। *उत्त० ६३०*।

अकाले– अकालः, मध्याह्नादिः। *विपा० ६९*।

अकाहलं– अमन्मनाक्षरम्। *प्रश्न० १२०*।

अकिंचणे– अकिञ्चनः, न विद्यते किमप्यस्येत्यकिञ्चनः, निष्परिग्रहः। *आचा० ४०३*। अकिञ्चनं–निष्परिग्रहत्वम्। *उत्त० ५९०*।

अकिच्चं– अकृत्यम्, अकरणीयम्, प्राणवधस्य पञ्चमः पर्यायः। *प्रश्न० ५*। मेहुणं। *निशी० ७९ आ*। अनिर्वर्त्तनीयम्। *भग० १०४*।

अकिट्ठे– अकृष्टः। अक्लिष्टो वा, अविलिखितः, अबाधितो निर्वेदनमिति वा। *भग० १८०*।

अकित्तिम– अकृत्रिम, क्रमाद्रत्नखानिसम्भूतानुप्तसम्भूतैरुप–शोभितः। *जम्बू० ७०*।

अकित्ती– अवर्णवादभाषणम्। *बृह० ९९ आ*।

अकिरियं– अक्रिया, नास्तिवादः। *आव० ७६२*।

अकिरियवादी– अक्रियावादी, क्रियां–जीवादिपदार्थो नास्ती-त्यादिकां वदितुं शीलं यस्य सः। *सूत्र० २०८*।

अकिरिया– अक्रिया। *आव० ३६८*। योगनिरोधः। *भग० १३१*। अक्रिया। *आव० ४१२*। अवर्ण। *आव० ४२९*। *आव० ४१२*।

अकिरिया– दुष्टक्रिया मिथ्यात्वाद्युपहतस्यामोक्षसाधकमनु-ष्ठानम्। *स्था० १५३*। योगरोधः। *स्था० १५७*। योगनिरो-धलक्षणा नास्तिकत्वं वा। *सम० ५*। अविद्यमानक्रियं, व्यु-परतक्रियाख्यं शुक्लध्यानचतुर्थभेदः। *उत्त० ५८६*।

अकिरियाओ– अकप्पपडिसेवणं। *निशी० २० अ*।

अकिरियावाइ– क्रियाभाववादिनः, आत्माभाववादिनः, चित्त-शुद्धिवादिनः। *भग० ९४४*।

अकिरियावाती– एकात्मकवाद्यादयोऽष्टौ। *स्था० ४२५*। नास्तिकाः। *स्था० २६८*।

अकीयकडं– अक्रीतकृतः, न क्रीयते-न क्रयेण साध्वर्थ कृतः। *प्रश्न० १०८*।

अकित्ती– अकीर्तिः, एकदिग्गामिन्यप्रसिद्धिः। *स्था० ४१८*। *भग० ४९०*।

अकुऊहले– अकुतूहलः, कुहकादिष्वकौतुकवान्। *उत्त० ६५१*।

अकुओभय– अकुतोभयः, संयमः, अप्कायलोको वा। *आचा० ४४*।

अकुक्कुए– अकुक्कुचः, अशिष्टचेष्टारहितः। *उत्त० १०९*।

अकुत्कुचः, कुन्थ्वादिविराधनाभयात्कर्मबन्धहेतुत्वेन कुत्सितं हस्तपादादिभिरस्पन्दमानः। *उत्त० १०९*। अकौत्कुचः- मुखविकारादिरहितः। *आचा० ३१५*।

अकुक्कुयं– अकुक्कुचं, अस्पन्दमानम्। *उत्त० ५८*।

अकुक्कुय– कुत्सितं कूजति–पीडितः सन्नाक्रन्दति कुकूजो न तथेत्यकुकूजः। *उत्त० ४८६*।

अकुचो– निश्चलः। *निशी० १६७* अ।

अकुड्डिले– अणिहे। *दशवै० १५१*।

अकुड्डो– (आक्रुष्टः)। जारजातोतिवयणेण। *निशी० २१६* अ।

अकुसल– अकुशलः, अनिपुणः स्थूलमतिश्चरकादिः। *दशवै० ६४*।

अकुसलो– अप्रधानः बन्धाय संसाराय। *निशी० २५*।

अकुहए– कुहगं–इंदजालादी तं न करेइत्ति वाइत्तादि वा। *दशवै० १४०*।

अकेल्ला– राजस्तोत्रपाठकाः। *निशी० २७७* अ।

अकोवणिज्जो– अकप्पो अदूसणिज्जोत्ति वुत्तं भवति। नि *१३९* अ।

अकोसापंतं– विकाशीभवत् *औप० २०*।

अकोहणे– अक्रोधनः, अपराधिन्यनपराधिनि वा न कथंचित् क्रुध्यति। *उत्त० ३४५*।

अकोहे– अक्रोधः, स्वल्पक्रोधेण। *जम्बू० १४८*

अक्कंडे– अकाले (*आतु०*)

अक्कंता– आक्रान्ता। *आव० ५०४*। अवष्टब्धा। *आचा० २५७*।

अक्कंतितो– अडाडाए बला हरंतो। *निशी० ३८* आ।

अक्कंतिया– न कुतोऽपि बिभ्यति ये स्तेना। *बृह० ११८*।

अक्कंते– अचित्तस्य प्रथमो भेदः, *ओघ० १३३*। आक्रान्ते-पादादिना भूतलादौ यो भवति सः। *स्था० ३३६*।

अक्कंतो– आक्रान्तः, *आव० २२७*।

अक्कंदणं- आक्रन्दम् महता शब्देन विरवणम्। *आव० ५८७*।

अक्क– (अर्कतुलम्) *निशी० ६१* अ।

अक्कबोंदी– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

अक्कबोंदीणं– वल्लीविशेषः *भग० ८०३*।

अक्कम– आक्रमः, तदुच्छेद इतियावत्। *आव० ६०*।

अक्कमणं– आक्रमणं–पादेन पीडनं। *आव० ५७३*।

अक्कमइ– आक्रामति, अवष्टभ्नाति। *उत्त० १३४*।

अक्कमित्ता– हत्वा। *भग० ६३७*। आक्रम्य–मिश्रीकृत्य। *ओघ० १९५*।

अक्किट्ठा– अक्लिष्टाः, स्वशरीरोत्थक्लेशवर्जिताः। *जम्बू० १२६*।

अक्किट्ठो– अक्लिष्टः, स्वशरीरोत्थक्लेशरहितः। *जीवा० २८४*।

अक्कोडियाओ– प्रवेशिताः। *बृह० ३०* आ।

अक्कोस– आक्रोशः, अनिष्टवचनम्, द्वादशः परीषहः। *आव० ६५६*। यकारादिभिः। *दशवै० २६७*। दुर्वचन परीषहः। *सम० ४१*।

अक्कोसेज्ज– आक्रोशेत्, तिरस्कुर्यात्। *उत्त० १११*।

अक्कोसो– आक्रोशः, असभ्यभाषणम्। *उत्त० ६२*। आक्रो-शनं, असभ्यभाषात्मकः। *उत्त० ८३*। म्रियस्वेत्यादि वचनम्। *प्रश्न० १६०*।

अक्खं– अक्षम्, चन्दनकम्। *आव० ७६७*। अक्षाटकम्। *आव० ३४४*। वराटकाः। *आव० ८८*। आत्मा। *स्था० ४९*। इन्द्रियम्। *प्रज्ञा० ८८*। अश्रीते नवनीतादिकामित्यक्षोधूः। *उत्त० २४७*।

अक्ख– अक्षः, अक्षोपाङ्गदानवच्चेति साधोरुपमानम्। *दशवै० १८*। जीवः इन्द्रियं वा। *भग० २२२*। संखाणियप्पदोसो अण्णतरं इंदियजायं वा। *निशी० २५५* अ। अक्षं चक्रनाभिक्षेप्यकाष्ठम्। *जम्बू० १७१*।

अक्खए– अक्षयम्, अविनाशी। *भग० ११९*। सदाभावेन, अवयविद्रव्यापेक्षया अक्षतो वा परिपूर्णत्वात्। *स्था० ३३३*।

अक्खओदए– अक्षयोदकः, अक्षयसम्यग्ज्ञानोदकः। अक्षतो-दयः, अक्षत उदयः प्रादुर्भावो वा। *उत्त० ३५३*।

अक्षणिक–(अक्खणिए), व्यग्रः। *ओघ० १७५*।

अक्खणिओ– अक्षणिकः, निर्व्यापारः। *दशवै० ५८*।

अक्खति– आख्याति (*गणि०*)।

अक्खपडिय– अक्षपतितः, अक्षपातनिका। *आव० ४५३*।

अक्खपाडओ– अक्षपाटकः। *जीवा० २५७*। चतुरस्राकारः पाटकः। *जीवा० २२८*।

अक्खपाद– हेतुसत्थं। *निशी० ३०* आ।

अक्खमाते– अक्षमाय–अयुक्तत्वाय। *स्था० १४९*। अनु–चितत्वाय असमर्थत्वाय वा। *स्था० २९२*। असङ्गतत्वाय

अक्षान्त्यै वा। *स्था० ३५८*।

अक्खयं– अक्षयम्, साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् ततो नाशरहितः, महावीरः। *भग० ७*। विनाशकारणाभावात्। *जीवा० २५६*। अक्षयाः, अवयविद्रव्यस्यापरिहाणेः। *जम्बू० २५७*। अपुनरावृत्तिकं। *सम० १२०*। अनाशं-साद्यपर्यव-सितस्थितिकत्वात्, अक्षतं वा परिपूर्णत्वात् । *सम० ५*।

अक्खयणिहि– अक्षयनिधिः, देवभाण्डागारम्। *विपा० ७७*।

अक्खयणिही– अक्षयनिधिः। *आव० ३६०*।

अक्खया– अक्षया, अक्षयत्वात्। *जीवा० ९१*। न विद्यते क्षयो यथोक्तस्वरूपाकारपरिभ्रंशो यस्याः सा। *जम्बू० २७*।

अक्खयायारचरित्तो– अक्षताचारचारित्री, अक्षताचार एव चारित्रं तद्वान्। *आव० ७६३*

अक्खरं– अक्षरम्,। *आव० ७९३*।

अक्खर– अक्षरम्, न क्षरतीत्यक्षरं, तच्च ज्ञानं चेतनेत्यर्थः। *आव० २४*।

अक्खरडियत्ति– अखरंडितम्। *स्था० ३८६*।

अक्खरपुट्ठिया– लिपिविशेषः। *प्रज्ञा० ५६*।

अक्खरसंन्निवाति– अक्षरसंनिपातः, अकारादिसंयोगाः। *स्था० १७९*।

अक्खरसमं– तत्र दीर्घे अक्षरे दीर्घः स्वरः क्रियते, ह्रस्वे ह्रस्वः, प्लुते प्लुतः, सानुनासिके सानुनासिकः तदक्षरसमम्। *स्था० ३९६*।

अक्खराणि– लिपिज्ञानम्। *बृह० १६३ अ*।

अक्खसोय– अक्षश्रोतः, चक्रधुरः प्रवेशरन्ध्रम्। *भग० ३०९*।

अक्खा– अक्षाः, चंदनकाः। *निशी० १०६ अ*। अनुयोगे भङ्गचारणोपकरणम्। *बृह० २५३ आ*। आख्या, शब्द-प्रथा। *प्रज्ञा० ६००*।

अक्खाइं– अक्षाणि, इन्द्रियाणि। *प्रज्ञा० ६००*।

अक्खाइ– आख्याति प्रथमतो वाच्यमात्रकथनेन। *जम्बू० ५४०*।

अक्खाइउवक्खाइया– आख्यायिकोपाख्यायिका। *सम० ११९*।

अक्खाइयं– आख्यातिकम्, नामिकादिपंचसु पदेषु चतुर्थं। *आव० ३७९*।

अक्खाइयाणिस्सिया– आख्यायिकानिःसृता, यत्कथास्व-संभाव्याभिधानम्। *प्रज्ञा० २५६*।

अक्खाइया– आख्यायिका। *सम० ११९*।

अक्खाओ– आख्यायिका, कथानका। *सम० ११९*।

अक्खाग– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५*।

अक्खाडए– अक्खाटकः, मल्लयुद्धस्थानम्। *पिण्ड० १२९*।

अक्खाडगा– आखाटका, प्रेक्षाकारिजनासनभूताः। *स्था० २३०*।

अक्खाडगे– आखाटकः, प्रेक्षास्थाने आसनविशेषलक्षणः। *भग० २७१*।

अक्खाडगो– चतुरस्त्रः। *स्था० १४५*।

अक्खाणं– आख्यानं, समवसरणस्य। *आव० २६८*।

अक्खाणग– आख्यानकम्। *निशी० ७१ अ*।

अक्खाणयं– आख्यानकं। *निशी० ३४६ आ*।

अक्खातित– आख्यायिकानिश्रितं तत्प्रतिबद्धोऽसत्प्रलापः। *स्था० ४८९*।

अक्खायं– आख्यातं, सकलजन्तुभाषाभिव्याप्त्या कथितम्। *उत्त० ८०*।

अक्खाय– आख्यातम्, केवलज्ञानेनोपलभ्यावेदितम्। *दशवै० १३६*।

अक्खायगो– आख्यायकः, शुभाशुभमाख्याति सः। *जीवा० २८१*।

अक्खायपयं– आख्यातपदम्, साध्यक्रियापदम्। *प्रश्न० ११७*।

अक्खासुयं– आख्याश्रुतम्, आख्यानकप्रतिबद्धश्रुतम्। *प्रश्न० १०८*।

अक्खिंसंति– आख्यास्यन्ति। *निशी० ३५० आ*।

अक्खित्त– आक्षिप्तम्, आवर्जितम्। *दशवै० ११४*।

अक्खित्तनियंसणा– आक्षिप्तनिवसना, आकृष्टपरिधानवस्त्रा। *प्रश्न० ५६*।

अक्खित्ते– ठिता। *निशी० १८६ अ*।

अक्खित्तो– आक्षितः। *आव० १७५*।

अक्खिवणं– आक्षेपणम्, चित्तव्यग्रतापादनम्। *प्रश्न० ४३*।

अक्खीण– अक्षीण, अक्षीणायुष्कमप्रासुकम्। *भग० ३७२*।

अक्खीणझंझए– अक्षीणझञ्झः, अक्षीणकलहः। *आव० ६६१*।

अक्खीणमहाणसितो– अक्षीणमहानसिकः। *उत्त० ३३२*।

अक्खीणमहाणसियं– अक्षीणमहानसिकम्। *आव॰ २९१*। *स्था॰ ३३२*।
अक्खीणमहाणसी– अक्षीणमहानसी, अत्रुटितभिक्षालब्ध–भोजनवान्। *औप॰ २८*।
अक्खुडिय– आस्फालितः, स्खलितः। *आव॰ ५५५*।
अक्खुंदड– चक्खिउं चुंचति। *निशी॰ १२४* अ।
अक्खुन्नइ– आक्षुणत्ति, विलिखति। *बृह॰ ६६* अ।
अक्खुन्ना– अमर्दिताः। *बृह॰ ७८* अ।
अक्खे– अक्षः, शकटावयवविशेषः। *भग॰ २७७*। *सम॰ ९८*। आख्या–प्रसिद्धः। *जम्बू॰ ६२*।
अक्खेइ– षण्णवतिरङ्गुलानि एकोऽक्षः। *जम्बू॰ ९४*।
अक्खेव– आक्षेपः, प्रश्नः। *भग॰ ११४*। *आव॰ ९७*। *उत्त॰ ५२४*।
अक्खेवणि– आक्षेपणी, धर्मकथायाः प्रथमो भेदः आक्षिप्यन्ते मोहात्तत्त्वं प्रत्यनया भव्यप्राणिन इति। *दशवै॰ ११०*। धर्मकथाभेदः। *आचा॰ १४५*।
अक्खेवणी– आक्षिप्यते-मोहात्तत्त्वं प्रत्याकृष्यते श्रोताऽ-नयेत्याक्षेपणी। *स्था॰ २१०* । आक्षिप्यते–मोहात्तत्त्वं प्रत्याकृष्यते श्रोता यकाभिरिति। *औप॰ ४६*।
अक्खेवी– आक्षेपी, आक्षिपति वशीकरणादिना यः स ततो मुष्णाति सः। *प्रश्न॰ ४६*।
अक्खेवो– आक्षेपः, आक्षेपणम्, आशङ्का। *आव॰ ३७७*। पूर्वपक्षः। *बृह॰ १२५* अ। परद्रव्यस्य, अधर्मद्वारस्यैको-नविंशतितमं नाम। *प्रश्न॰ ४३*।
अक्खो– अक्षः, द्युतपासकः। *आव॰ ५०२*। फलविशेषः, *अनुत्त॰ ६*।
अक्खोडगा– क्रियाविशेषः। *निशी॰ १८२* अ।
अक्खोडभंगपरिहरणा– आस्कोटकभङ्गपरिहरणा, आस्फोट-कानां यो भङ्गस्तस्य प्रतिलेखनादिविधि-विराधनापरिहरणा। *आव॰ ५५२*।
अक्खोडयं– अक्षोटकम्, अक्षोडवृक्षफलम्। *प्रज्ञा॰ ३६४*।
अक्खोभे– अक्षोभः, अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्याष्टमाध्ययनम्। *अन्त॰ १*। अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य प्रथमाध्ययनम्। *अन्त॰ ३*।
अक्खोलं– फलविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२८*।
अक्खोवंगं– चक्रोंजनं। *गणि॰*।
अक्खोवंजण– अक्षोपाञ्जनम्, शकटधूर्म्रक्षणम्। *भग॰ २९४*।
अकिरियावाई- अक्रियावादिन क्रिया–अस्तीतिरूपा सकल-पदार्थसार्थव्यापिनी सैवायथावस्तुविषयतया कुत्सिता, अक्रिया नञः कुत्सार्थत्वात्तामक्रियां वदन्तीत्येवंशीलाः अक्रियावादिनः, यथावस्थितं हि वस्त्वनेकान्तात्मकं तन्नास्त्येकान्तात्मकमेव चास्तीति प्रतिपत्तिमन्त इत्यर्थः। *स्था॰ ४२५*। नियतकृष्णपाक्षिकाः। *दशाश्रु॰ १६*।
अक्षः– बिभीतकः। *प्रज्ञा॰ ३१*।
अक्षरः– घोलना स्वरविशेषः। *जीवा॰ १९५*।
अक्षरकोविदपरिषद्– (विद्वत्परिषद्)। *आचा॰ १४६*।
अक्षरश्रुतम्– ज्ञानं इन्द्रियमनोनिमित्तं श्रुतग्रन्थानुसारि तदा-वरणक्षयोपशमो वा। *आव॰ २४*।
अक्षि– नेत्रम्। *आचा॰ ३७*।
अक्खुवंजण– अक्षोपाङ्गन्यायः – चक्रोञ्जनं। *दशवै॰ १८०*।
अखंड– अखण्डः, सम्पूर्णावयवः। *आव॰ २३९*। अखण्डम्–अस्फुटितम्। *दशवै॰ १९५*।
अखमे– अक्षमा, परकृतापराधस्यासहनं। *भग॰ ५७२*।
अखित्तं– इन्द्रकीलादियुतं ग्रामादि। *बृह॰ ३६* अ।
अखुण्णा– अमर्द्दिता। *निशी॰ ३३५* अ।
अखेत्तं– छिण्णमंडवं। *निशी॰ ३४१* आ। सचित्तपृथ्व्यादिमदस्थण्डिलम्। *बृह॰ १४०* आ।
अगंथिमा– कयलआ मरहट्ठविसये फलाण कयलक्कपमाणाओ पेण्डीओ एक्कंमि डाले बहुक्कीओ भवन्ति ताणि फलाणि खंडाखडीकयाणि। *निशी॰ ४९* अ।
अगंधण– अगन्धनः, मानी सर्पः। *दशवै॰ ३७*।
अगंधणा– अगन्धना, सर्पजातिविशेषः। *उत्त॰ ४९५*।
अगंधिं– दुर्गन्धि। *बृह॰ ९९* अ।
अगइचरमे– अगतिचरमः, न गतिचरमः। *प्रज्ञा॰ २४५*।
अगड– कूपः। *बृह॰ १०९* आ। अवटः खड्डा *आव॰ ६९१*। *आव॰ २०४*। कूपः। *भग॰ २३८*। *जम्बू॰ १२३*।
अगडदत्तो– अगडदत्तः, अमोघरथरथिकपुत्रः। *उत्त॰ २१३*। रक्षकविशेषः। *व्यव॰ १७०* आ।
अगडमहेसु– कूपमहेषु। *आचा॰ ३२८*।
अगडाति– अवटा–कूपाः। *स्था॰ ८६*।

अगडेसु– अवटेषु, कूपेषु। *प्रज्ञा० ७२।*
अगडो– कूपः। *निशी० ४३* अ। अवटः, कूपः। *प्रज्ञा० २६७।*
अगणि– अग्निः, इन्धनस्य प्लोषक्रियाविशिष्टरूपस्तथा विद्युदुल्काशनिसङ्घर्षसमुत्थितः सूर्यमणिसंसृतादिरूपश्र्च। *आचा० ४९।* *आव० ६२१।* अयः पिण्डानुगतः। *दशवै० २२८।* *दशवै० १५४।* अग्निभयात्-प्रदीपनभयात्। *ओघ० ११८।*
अगणिज्झामिय– अग्निध्यामितम्, वह्निना ध्यामितं, श्यामी-कृतम्। *भग० २१३।*
अगणि–झूसिए– सेवितः, क्षपितः। *भग० ६८३।*
अगणिज्झूसिय– अग्निना शोषितं, पूर्वस्वभावक्षपणात्, अग्नि-नना सेवितां वा। *भग० २१३।*
अगणिपरिणामिय– अग्निपरिणामितम्, सञ्जाताग्निपरिणामम्। *भग० २१३।*
अगणी– अग्निः। *ओघ० १५६।* चतुर्दशशतके पञ्चमोद्देशकः। *भग० ६३०।*
अगतं– नकुलाज्जादि। *निशी० ७६* अ।
अगतो– अगदः, औषधिः। *आव० ८३५।*
अगत्थिओ– वृक्षविशेषः। *अनुत्त० ५।*
अगत्थिगुम्मा– अगस्त्यगुल्माः। *जम्बू० ९८।*
अगत्थी– अगस्तिः, ग्रहविशेषः। *जम्बू० ५३५।* *स्था० ७९।*
अगदो– अणेगदव्वेहि। *निशी० १८* आ।
अगमा– वृक्षाः। *बृह० १८३* आ। *निशी० १५२* आ, *१८३* अ।
अगमेत्त– ज्ञात्वा, आज्ञापयेदात्मानमनासेवनयेति। *आचा० २१९।*
अगम्मगामी– अगम्यगामी, भगिन्याद्यभिगन्ता। *प्रश्न० ३६।*
अगर– अगुरुः दारुविशेषः। *प्रश्न० १६२।*
अगरला– सुविभक्ताक्षरता। *औप० ७८।*
अगरिहिअं– अगर्हणीयम्, सामायिकनवमपर्यायः। *आव० ४७४।*
अगलदत्तो– अगडदत्तः। *उत्त० २१५।*
अगहणे– अग्रहणे–अकरणे। *ओघ० १४९।*
अगा– वृक्षाः। *निशी० १४०* अ।
अगामितं– अगामिकं, अकामिक–अनभिलषणीय। *स्था० ३१४।*
अगामियं– अगामिकां, अकामिकां वा अनभिलाषविषयभूताम्। *भग० ६७२।*
अगारं– अगैः कृतं गृहम्। *निशी० १४०* अ। गेहम्। *प्रश्न० ८।* गृहम्। *आव० ३२१।* अगारः, गृहस्थः। *आव० ३२१।*
अगार– अगारम्, गृहम्। *दशवै० ६२।*
अगारट्ठिय– अगारस्थितभाषा–गृहस्थभाषा। *व्यव० ५४।*
अगारधम्मं– अगारधर्मम्, गृहाचारं गार्हस्थ्यम्। *उत्त० ५७८।*
अगारबंधणं– गृहपाशं पुत्रकलत्रधनधान्यादिरूपम्। *आचा० ४२९।*
गारत्थेहिं– अगारस्थेभ्यः, अनुमतिवर्जसर्वोत्तमदेशविर–तिप्राप्तेभ्यः। *उत्त० २५०।*
अगारा– अगाराः, गृहिणः। *स्था० ५३*
अगाराओ– गृहवासात्। *जम्बू० १४५।*
अगारिसामाइयङ्गाइं– अगारिणो–गृहिणः सामायिकं–सम्य-क्त्वश्रुतदेशविरतिरूपं तस्याङ्गानि–निःशङ्कताकालाध्ययना-णुव्रतादिरूपाणि अगारिसामायिकाङ्गानि। *उत्त० २५१।*
अगारी– अगारी, क्षत्रियादिकः। *सूत्र० १४३।* गृही, असंयतः। *स्था० १८१।* *जम्बू० १४५।*
अगालिणो– अगारिणः। *बृह० २८२* अ।
अगाहा– अगाधा, अपरिमितजला। *आव० ८१९।* प्रायोगंभी-रम्। *दशवै० २२०।*
अगिण्हियव्वं– अग्रहीतव्यम्, अनुपादेयं, हेयम्। *दशवै० ८०।*
अगिला– अग्लानिः। नि० *१७* आ। अग्लानः–उचितक-र्तव्यसहिष्णुः। *आचा० २८१।*
अगिलाए– अग्लान्या, अखिन्नतया बहुमानेनेत्यर्थः। *स्था० २९१।*
अगिलायउ– अग्लान्यैव, शरीरश्रममविचिन्त्यैव। *उत्त० ५३६।*
अगीयत्थं– अपरीणामग, अतिपरिणामगाय। *निशी० ४५* आ।
अगीयत्थत्त– अगीतार्थत्वम्। *आव० ५२।*
अगीयत्थो– जेण आवस्सगादीयाण अत्थो ण सुतो। *निशी० २५* अ।
अगुण– अगुण, अविद्यमानगुणः। *दशवै० २६३।*
अगुणगुणे– वक्रता। *आचा० ८६।*

अगुणरिणं– अगुणा एव अणंतगुणाणं अणंति वा रिणंति वा एगट्ठा तं च। *दशवै० ८१*।

अगुणा– अगुणाः, मिथ्यात्वादयो दोषाः। *उत्त० ४३१*।

अगुत्ती– अगुप्तिः, इच्छाया अगोपनम्। परिग्रहस्य त्रयोविंश-तितमं नाम। *प्रश्न० ९२*।

अगुरु– अगुरुः, सुगन्धिद्रव्यः। *आव० १०१*। काष्ठविशेषः। *जीवा० १३६*।

अगुरुलहु– अगुरुकलघुकम्, अत्यन्तसूक्ष्मं भाषामनः–कर्मद्र-व्यादि। *स्था० ४७५*।

अगुरुलघु– यदुदयात् प्रणिनां शरीराणि न गुरूणि नापि लघूनि तत्। *प्रज्ञा० ४६३*। सूक्ष्मपुद्गलद्रव्याणि। *जम्बू० १३०*।

अगुरुलहुफासपरिणामे– स्पर्शविशेषः। *सम० ४१*।

अगेहि– अगृद्धिः–भोजनादिषु परिभोगकाले अनासक्तिः। *भग० ९७*।

अगो– अगः, विपाककालेऽपि जीवविपाकियतया शरीर-पुद्गलादिषु बहिःप्रवृत्तिरहितः, अनन्तानुबन्ध्यादिः। *उत्त० १९*।

अग्गं– अग्रम्, अपरिभुक्तम्। *जीवा० २५४*। अग्ग्रम् प्रधानम्। *प्रश्न० १३६*। अन्तः। *भग० ३५*। मूर्धा। *प्रज्ञा० १०८*। परिणामः। *सूर्य० २८०*। आलम्बनम्, *आव० २६५*। परिमाणम्। *भग० ३५*। संयमतपसी मोक्षो वा। *आचा० १६०*। भवोपग्राहिकर्म्मचतुष्टयं। *आचा० १६०*। प्रमाणम्। *स्था० ४६२*। कोटिः। *उत्त० २८३*। अग्रं, वरं प्रधानं अहवा जं पढमम्। *निशी० १४२* अ।

अग्ग– निर्वाणस्थानम्। *आव० १४८*। द्रव्यावगाहनाद्यग्रेषु। *आचा० ३१८*।

अग्गकूरमंडी– अग्रकूरमण्डी, ओदनस्योपरिभागः। *आव० ५७५*।

अग्गकोडीणं– अग्रकोटयः, प्रकृष्टा विभागाः। *जम्बू० ९५*।

अग्गजायाणि– अग्रजातानि, वनस्पतिविशेषः। *आचा० ३४९*।

अग्गजिब्भा– अग्रजिह्वा, जिह्वाग्रं। *स्था० ३९५*।

अग्गतावसगोत्ते– अग्रतापसगोत्रम्। *सूर्य० १५०*।

अग्गपलंबं– आम्रातकफलं। *बृह० १४३* आ। तलादिप्रलंबा। *निशी० १२४* आ।

अग्गपिंडो– जइ दिणे २ दाहिसि, अग्गपिंडो अग्गकूरो। *निशी० ९०* आ। अग्रपिण्डम्–निष्पन्नस्य शाल्योदनादेरा-हारस्य देवताद्यर्थं स्तोकस्तोकोद्धारं। *आचा० ३३६*। काक-पिण्ड्यां। *आचा० ३४०*। शाल्योदनामेः प्रथममुद्धृत्य भिक्षार्थं व्यवस्थाप्यते। *आचा० ३२६*। अप्रवृत्ते परिवेषणे आदावेव यो गृह्यते। *स्था० ५१५*।

अग्गबीए– अग्रबीजाः, अग्रे बीजं येषामुत्पद्यते ते तलताली–सहकारादयः शाल्यादयो वा, अग्राण्येवोत्पत्तौ कारणतां प्रतिपद्यन्ते येषां कोरण्टादीनां ते वा। *सूत्र० ३५०*।

अग्गबीय– अग्रबीजाः, कोरण्टकादयः। *दशवै० १३९*। *आचा० ५८*। व्रीह्यादयः। *स्था० १८६*। जपाकुसुमादि। *आचा० ३४९*।

अग्गभावे– अग्रभावम्, धनिष्टा गोत्रम्। *जम्बू० ५००*।

अग्गमहिसी– अग्रमहिषी, पट्टराज्ञी। *जीवा० १६२*। *स्था० ११७*।

अग्गरसो– अग्ग्रः रसश्र्च, प्रधानो मधुरादिकश्र्च, अग्ग्रो रसः शृङ्गारादिकः। *उत्त० ४०५*।

अग्गल– अर्गलम्, गोपुरकपाटादिसम्बन्धि। *दशवै० १८४*।

अग्गल– अर्गलः, षडशीतितमग्रहनाम। *जम्बू० ५३५*।

अग्गलपासाया– अर्गलाप्रासादाः, यत्रार्गला नियम्यन्ते। *जम्बू० ४८*। *जीवा० २०४*।

अग्गला– गोवाडादीहारेसु भवति। *दशवै० ८५*। अर्गला, प्रतीता। *जीवा० २०४*। *जीवा० ३५९*। अधिकं। *उत्त० ७, ६६०*।

अग्गलापासाय– अर्गलाप्रासादः, प्रासादे यत्रार्गला प्रविशति सः। *जीवा० ३५९*।

अग्गवपूरओ– परिधानविशेषः। *बृह० १०२* अ।

अग्गविडवं– अग्रविटपम्, शाखामध्यभागाग्रं, विस्ताराग्रं वा। *प्रश्न० ९२*।

अग्गसिरा- अग्रशिरः उष्णीषलक्षणम्। *जम्बू० ११३*।

अग्गसिंगं– अग्रशृङ्गम्। *आव० १७४*।

अग्गहणं– अनादरः। *ओघ० ९४*। *बृह० २४५* अ।

अग्गहत्था– अग्रहस्ता, बाहोरग्रभूताः शयाः। *अनुत्त० ६*। अग्रहस्तौ, भूजौ। *प्रज्ञा० ९१*।

अग्गहत्थो– अग्रहस्तः, बाहवग्रभागवर्ती हस्तः। *जीवा० २७५*।

अग्गाइं– अग्ग्राणि, सद्यस्कानि। *जम्बू० २१८*।

अग्गासणे कूरं– अग्रासनम्, प्रतिगृहं सदक्षिणं भोजनम्। *आव० ६७९*।

अग्गाहारो– अग्रासनम्। *आव० ३००*।

अग्गिंतेण– अग्न्यन्तेन, अग्निमार्गेण। *आव० ७१*।

अग्गि– तीर्थकरविशेषशिबिका। *सम० १५१*।

अग्गिउत्तं– ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः। *सम० १५३*।

अग्गिओ– अग्निकः उत्सन्नवंशज्ञो दारकः। *आव० ३९२*।

अग्गिकुमारा- अग्रिकुमाराः, सोमस्याज्ञोपपातवचन-निर्देशवर्त्तिनो देवाः। *भग० १९५*। भवनपतिभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ६९*।

अग्गिकुमारीओ– अग्निकुर्मायः, सोमस्याज्ञोपपातवचन–निर्देशवर्तिन्यो देव्यः। *भग० १९५*।

अग्गिघरं– अग्निगृहम्। *आव० २९५*।

अग्गिच्चा– कौशिकगोत्रभेदः। *स्था० ३९०*। सुप्रतिष्ठाभ-विमानवासी अष्टमो लोकान्तिकदेवः। *भग० २७१*। *स्था० ४३२*।

अग्गिच्चाभे– कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमानम्। *स्था० ४३२*। *सम० १४*।

अग्गिच्चो– अग्निः, मरुत्। *आव० १३५*।

अग्गिज्जोओ– अग्निद्योतः, पुष्पमित्रजीवः। *आव० १७१*।

अग्गिभीरू– अग्निभीरुः, प्रद्योतस्य रथः, द्वितीयं रत्नम्। *आव० ६७३*।

अग्गिभूई– अग्निभूतिः, अग्निद्योतजीवः। *आव० १७२*। द्वितीयगणधरः। *आव० २४०*। श्रीवीरस्य द्वितीयगणधरः। *भग० १५३*। *सम० ८४*।

अग्गिमाणव– अग्निमानवः, उत्तरनिकाये पञ्चम इन्द्रः। *भग० १५७*।

अग्गिमाणवे– अग्निमाणवः, उत्तरदिग्वर्तिनामग्निकुमाराणामधि-पतिः। *प्रज्ञा० ९४*। *स्था० ८४*। *जीवा० १७०*।

अग्गिमेह– अग्निमेघाः, अग्निवद्दाहकारिजला मेघाः। *भग० ३०६*।

अग्गिमो– प्रथमः। *ओघ० ३३*।

अग्गिय– व्याधिविशेषः। *निशी० ६०अ*।

अग्गियए– अग्निः, तितिक्षोदाहरणे प्रथमो दासचेटः। *आव० ७०२*। अग्निकः, भस्मकाभिधानो वायुविकारः। *विपा० ४२*।

अग्गियओ– अग्निः, दासचेटः। *आव० ३४३*।

अग्गियतो– अग्निकः, इन्द्रदत्तराजस्य दासचेटः। *उत्त० १४८*।

अग्गिल्लए– ग्रहविशेषः। *स्था० ७९*।

अग्गिवेससगोते– कृत्तिकानक्षत्रगोत्रनाम। *सूर्य० १५०*।

अग्गिवेसाणं– अग्निवेशस्यापत्यं वृद्धं अग्निवेश्यो 'गर्गादेर्य'–त्रिति यञ् प्रत्ययः तस्याप्यपत्यमाग्निवेश्यायनः। *नन्दी० ४८*।

अग्गिवेसायणे– गोशालनिशाचरः। *भग० ६५९*।

अग्गिवेसे– अग्निवेश्यः, शास्त्रीयचतुर्दशदिवसनाम। *सूर्य० १४७*। द्वाविंशतिमुहूर्तनाम। *सूर्य० १४६*। *जम्बू० ४९१*। अग्निवेश्म–शास्त्रीयचतुर्दशदिवसनाम। *जम्बू० ४९०*। अग्निवेश्यं– कृत्तिकागोत्रम्। *जम्बू० ५००*।

अग्गिसिहा– अग्निशिखम्, वनविशेषः। *दशवै० १०३*।

अग्गसिहे– अग्निसिंहः, दत्तवासुदेवपिता। *आव० १६३*।

अग्गिसीहे– अग्निसिंहः, दक्षिणदिग्वर्तिनामग्निकुमाराणामधि-पतिः। *जीवा० १७०*। *स्था० ८४*। *प्रज्ञा० ९४*। पञ्चमो दक्षिणनिकायेन्द्रः। *भग० १५७*।

अग्गिसेणं– ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः। *सम० १५३*।

अग्गिहोत्त– अग्निहोत्रः, अग्निकारिका। *उत्त० ५२५*।

अग्गिहोत्तसाला– अग्निहोत्रशाला। *आव० २२५*।

अग्गी– अग्निः, ग्रहविशेषः। *जम्बू० ५३५*। वह्निः। *आचा० ३३*। *आव० २७३*।

अग्गीसेणं– ऐरवतावसर्पिणी तीर्थकरः। *सम० १५३*।

अग्गुज्जाणं– अग्रोद्यानम्, अग्न्युद्यानम्। *आव० १९०*।

अग्गे– दसिकापर्यन्ते। *ओघ० २१४*।

अग्गेई– आग्नेयी, पूर्वदक्षिणमध्यवर्तिदिक्। *आव० २१५*।

अग्गेज्ज– आग्नेयः, मण्डलकोणः। *सूर्य० २२*।

अग्गेणियं– द्वितीयपूर्वम्। *सम० २६*।

अग्गेणीयं– अग्रायणीयम्, द्वितीयपूर्वनाम। *स्था० १९९*।

अग्गेया– वत्सगोत्रान्तर्गतं गोत्रम्। *स्था० ३९०*।

अग्गेयी– अग्निकोणः। *भग० ४९३*। *स्था० १३३*।

अग्गोदयं– अग्रोदकम्, देशोनयोजनार्धजलादुपरि वर्द्धमानं जलम्। *जीवा० ३०९*। षोडशसहस्रोच्छ्रिताया वेलाया यदु-

परि गव्यूतद्वयमानं वृद्धिहानिस्वभावं तदग्रोदकम्। *सम० ७५*।

अग्घं– अर्घम्। *आव० ३००*। महार्घ्यम्। *आव० ८२७*। *आव० २१४*। अर्घ्यम्–मूल्यम्। *आव० ८२६*।

अग्घंति– अर्घन्ति, महार्घन्ति। *आव० ८२१*।

अग्घविए– अर्घितम्, कृतमूल्यम्। *दशवै० ६१*।

अग्घाडग– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

अग्घियं– बहुमोल्लं। *निशी० १३१ अ*।

अग्घेइ– अर्हति। *उत्त० १४२*।

अग्घेऊणं– अर्घित्वा। *आव० ३६१*।

अग्घो– अर्घः, मत्स्यकच्छपविशेषः। *जीवा० ३२१*।

अग्निमानव– भवनपतीन्द्रविशेषः। *स्था० २०५*।

अग्निशर्मा– यो मिथ्यादृष्ट्युपदिष्टतपसाऽपि अनन्तं कालं संसारे पर्याटत्। *सूत्र० ५७*।

अग्निशिख– भवनपतीन्द्रविशेषः। *स्था० २०५*।

अग्निष्टोमः– यागविशेषः। *दशवै० २७६*।

अग्रश्रुतस्कन्धः– द्वितीयश्रुतस्कंधः। *आचा० ३१८*।

अग्राहय– अप्रमेयः। *जीवा० १८७*।

अघा– गर्ता ह्रदो। *बृह० १०१ आ*।

अघोर– मन्त्रविशेषः। *उत्त० २६७*।

अङ्कुसल– अंकुशयुक्तः। (*मरण०*)

अङ्गमंगो– अंगोपांगानि। (*मरण०*)

अचंड– अचण्डः, सौम्यः। *उत्त० ४७*।

अचंडो– अचण्डः, कारणविकलकोपविकलः। *प्रश्न० ७४*।

अचक्किय– अचकिताः, अत्रासिताः। *उत्त० ३५३*।

अचक्खुदंसणं– अचक्षुर्दर्शनम्, चक्षुर्वर्जशेषेन्द्रियमनोभि–र्दर्शनम्। *जीवा० १८*।

अचक्खुसे– अचाक्षुषम् चक्षुरिन्द्रियाग्राहयम्। *दशवै० २०२*।

अचक्खुस्सं- अनिष्टम्। *बृह० ४१ अ*।

अचक्षुषा– चक्षुर्वर्जेन्द्रियचतुष्टयेन मनसा वा। *स्था० ४४८*।

अचरम– अचरमः, यस्य चरमो भवो न भविष्यति सोऽचरमः। *भग० २५१*।

अचरमसमयनियंठो– अचरमसमयनिर्ग्रन्थः, अचरमा–आदिमध्यास्तेषु यो वर्तमानः सः। *उत्त० २५७*।

अचरिमं– अचरमम्। *प्रज्ञा० २३४*। अप्रान्तं, मध्यवर्ति। *प्रज्ञा० २२८*

अचरिमंतपएस– अचरमान्तप्रदेशः। *भग० ३६६*।

अचरिमो– अचरमः, अभव्यः सिद्धश्च। *प्रज्ञा० १४३*। *जीवा० ४४४*।

अचल– (अयलो) कलाशिक्षायामुदाहरणगतः पुरुषः। *दशवै० १०१*।

अचलेन्द्रः– मेरुः। *आव० ४७*।

अचले– अचलः, अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य पंचमाध्ययनम्। *अन्त० ३*।

अचवचवं– चवचवेतिशब्दरहितम्। *प्रश्न० ११२*। अचवचवम्। अनुकरणशब्दोऽयम्। *भग० २१४*। वल्कमिव चर्वयन् न चबचबावेइ। *ओघ० १८७*।

अचवलं– अचपलम्, मानसचापल्यरहितम्। *भग० १४०*।

अचवलो– अचपलः, कायिकादिचापल्यरहितः। *प्रश्न० ७४*। नाऽऽरब्धकार्यं प्रत्यस्थिरः, अथवा अचपलो–गतिस्थानभा-षाभावभेदतः चतुर्धा। *उत्त० ३४६*।

अचिअत्तं– अप्रीतिकरम्। *दशवै० २२१*।

अचिअत्तकुलं– अप्रीतिकुलम्, यत्र प्रविशद्भिः साधुभिर–प्रीतिरुत्पद्यते तत्कुलम्। *दशवै० १६६*।

अचिअत्ति– यः साधुभिरागच्छद्भिर्दुःखेनास्ते। *ओघ० ९३*।

अचिणित्तु– आचित्य, आत्मप्रदेशैः सहोपचित्य। *प्रश्न० ९८*।

अचित्तं– आयुःक्षयेणाचित्तं न परसंयतार्थम्। *बृह० १०६ अ*। अचित्तम्, दग्धदेशादि। *दशवै० १७८*।

अचित्तदव्वपरिज्जुण्ण– अचित्तद्रव्यपरिद्यूनः, जीर्णपटादिः। *आचा० ३५*।

अचित्त– अचित्तमहास्कन्धः। *आव० ३५*।

अचियत्तं– अचियत्तः, स्वचेतसि करोति वाचा न किमपि ब्रूते एष देशीभाषया। *बृह० २४६ अ*।

अचियत्तं– अदानशीलं। *ओघ० १५६*। अप्रतीतिः। *ओघ० १६१*। अप्रीतिकम्। *आव० ११*। *आव० ११८*।

अचियत्ता– न रोचते। *ओघ० १९४*।

अचियत्ते– अचियत्तः, अनभिमतः। *सूत्र० ३३७*। अप्रीति–करः। *उत्त० ३४६*। अप्रीतिकानि-नास्ति प्रीतिः साधुषु गृहमुपगतेषु येषां तानि। *बृह० २३५ अ*।

अचियत्तो– साधुन् प्रत्यप्रीतिमान्। *प्रश्न० १२४*। अप्रतीत्युत्पादकः। *प्रश्न० ६४*।

अचियत्तोग्गहो– अप्रीतिकावग्रहः। *आव० ३०४*। *आव० १८९*।

अचिरं– स्थानम्, स्थण्डिलम्। *आचा० २९४*।

अचिरकालकयं– अचिरकालकृतम्, द्विमासिके ऋतौ यदग्न्यादिना प्राशुकीकृतम्। *ओघ० १२३*।

अचिरवत्तवाहे– अचिरवृत्तवीवाहः। *सूर्य० २९२*।

अचुल्ला- चुल्लीए समीवे। *निशी० ३२८*।

अचेल– अचेलः, अल्पचेलो जिनकल्पिको वा। *आचा० २४२*। अपगतचेलोऽल्पचेलो वा अचलनस्वरुपो वा। *आचा० २४५*। यः साधुर्नास्य चेलं–वस्त्रमस्तीति अचेलः, अल्पचेल इत्यर्थः। *आचा० २४४*। षष्टः परीषहः। *आव० ६५६*।

अचेलकः– अवमानि, असाराणि लघुत्वजीर्णत्वादिना चेलानि–वस्त्राण्यस्येति। *उत्त० ३५९*। अविद्यमानचेलकः कुत्सितचेलको वा। *उत्त० ५००*।

अचोक्खं- अचोक्षम्, अपवित्रम्। *जीवा० २८२*।

अचोक्षाः– पिशाचभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ७०*।

अच्चंतत्थावरा– अत्यन्तस्थावरा, अनादिवनस्पतिकायादुद्-वृत्त्य। *आव० ३६५*।

अच्चंतिओ– आत्यन्तिकः, सर्वकालभावी। *सूत्र० ३९५*।

अच्चंतिया– तेन सह तत्रैवासितुकामाः। *बृह० १३२ अ*।

अच्चइओ– व्यथितः, पीडितः। *दशवै० ४४*।

अच्चणिज्जं– अर्चनीयम्। *सूर्य० २६७*। चन्दनगन्धामिभिः। *औप० ५*।

अच्चणिज्जाओ– चन्दनादिना। *भग० ३५०*।

अच्चणिय– अर्चनिका। *आव० ३५०*।

अच्चणियवावडा– अर्चनिकाव्यापृता। *आव० ८६३*।

अच्चंतो– विबुद्धोवि जं फुडं ण संभरति संभरतो वा जस्सत्थं ण वि बुज्झति सो अच्चंतो। *निशी० ८६ अ*। अन्त-मति-क्रान्तोऽत्यन्तः। *उत्त० ६२१*। अनादिः। *उत्त० ६२१*। अतिक्रान्तपर्यन्तम्। *उत्त० ६३९*।

अच्चल्लीणो– आसण्णं। *निशी० १७५ अ*।

अच्चल्लूढो– अतीव प्रज्वलिते। *निशी० १७५ अ*।

अच्चसणे– अत्यशनः, शास्त्रीयद्वादशदिवसनाम। *जम्बू० ४९०*।

अच्चा– प्रतिमा। *बृह० २६ आ*। *निशी० ११७ आ*। अर्चा, मनुष्यतनुर्भाविनी। *औप० ८१*। तनुः, शरीरं, पद्मादिका लेश्या वा। *सूत्र० २३८*। लेश्या चित्तवृत्तिः। *सूत्र० २३४*।

अच्चासणयाए– अत्यन्तं सततमासनं–उपवेशनं यस्य सोऽ-त्यासनस्तद्भावस्तत्ता तया। *स्था० ४४६*।

अच्चासणे– अत्यशनः, शास्त्रीयद्वादशदिवसनाम। *सूर्य० १४७*।

अच्चासाइत्तए– अत्याशातयितुम्, छायाया भ्रंशयितुम्। *भग० १७५*।

अच्चासायणा– अत्याशातना, किमेभिः कलहशास्त्रैरिति। *आव० ५८०*।

अच्चिं– ब्रह्मलोककल्पे विमानविशेषः। *सम० १४*।

अच्चि– अर्चिः, छिन्नज्वालम्। *दशवै० २२८*। मूलाग्निविच्छिन्ना ज्वाला। *दशवै० १५४*। अनलविच्छिन्ना ज्वाला। *जीवा० १०७*।

अच्चिकंतं– अर्चिःकान्तम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिकूडं– अर्चिःकूटम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिज्झयं– अर्चिर्ध्वजम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिप्पभं– अर्चिःप्रभम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिमालिं– कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमानः। *सम० १४*। *भग० २७१*।

अच्चिमाली– अर्चिर्मालिः, अर्चिषां माला। *प्रज्ञा० १०१*। अर्चिर्माली, चन्द्रस्य तृतीयाग्रमहिषी। *जम्बू० ५३२*। शक्राग्रमहिषीराजधानी। *स्था० २३१*। सूर्यस्य तृतीयाग्र-महिषी। *स्था० २०४, भग० ५०५*। चन्द्रस्याग्रमहिषी। *स्था० २०४, भग० ५०५*। दक्षिणपूर्वरतिकरपर्वतस्या-परस्यां शक्रदेवेन्द्रस्य शच्या अग्रमहिष्या राजधानी। *जीवा० ३६५*। अर्चीषि–किरणास्तेषां माला, साऽस्यास्तीति किर-णमालापरिवृत इति। *जीवा० ३८७*। चन्द्रस्य सूर्यस्य च ज्योतिषेन्द्रस्य तृतीयाग्रमहिषी। *जीवा० ३८४*। कृष्ण–राज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमानः। *स्था० ४३२*। द्वितीयं लोकान्तिकविमानम्। *भग० २७१*।

अच्चिरावत्तं– अर्चिरावर्त्तम्, विमानविशषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिरुत्तरावडिंसए– अर्चिरुत्तरावतंसकम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिलेस्सं– अर्चिर्लेश्यम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिवन्नं– अर्चिर्वर्णम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिसिंगारं– अर्चिःशृङ्गारम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्चिसिट्ठं– अर्चिःसृ(शि)ष्टम्, विमानविशेषः। *जीवा० १३८*।

अच्ची– अर्चिः, अनलाप्रतिबद्धा ज्वाला। *प्रज्ञा० २९, जीवा० २९*। प्रथमं लोकान्तिकविमानम्। *भग० २७१*। कृष्णराज्य-वकाशान्तरे लोकान्तिकविमानः। *स्था० ४३२*। अर्चिः, शरीरस्थरत्नादितेजोज्वाला। *औप० ५०, भग० १३२*। विमानविशेषः। *जीवा० १३८*। स्वशरीरगतरत्नादितेओ-ज्वाला। *जीवा० १६२*। अर्चिः, लेश्या। *सूत्र० १९०*। दाह्यप्रतिबद्धो ज्वालाविशेषोऽर्चिः। *आचा० ४९*।

अच्चीकरणं– गुणवण्णणं। *निशी० १९५* आ।

अच्चीसहस्समालिणीयं– चन्द्रप्रभाशिबिकाविशेषणम्। *आचा० ४२३*।

अच्चुओ– अच्युतः, देवलोकविशेषः। *आव० ११७*।

अच्चुत्तवडिंसगं– अच्युतकल्पगतविमानविशेषः। *सम० ४१*।

अच्चुदयं– अत्युदकम्, महान् वर्षः। *ओघ० ३१*।

अच्चुयवडिंसए– अच्युतावतंसकः, अच्युतदेवलोकस्य मध्ये-ऽवतंसकः। *जीवा० ३९३*।

अच्चुया– अच्युताः, कल्पोपपन्नवैमानिकभेदविशेषाः। *प्रज्ञा० ६९*। अच्युतः–आयातः। *ओघ० ५०*।

अच्चुव्वाया– परिश्रान्ताः। *बृह० २११* आ।

अच्चेइ– अत्येति, अतिक्रामति। *आचा० १४४*।

अच्छं– ऋक्षम्। *आचा० ३३८*। अतिस्वच्छम्। *जीवा० १६०*। स्फटिकवच्छुद्धम्। *प्रज्ञा० ८७*।

अच्छंद– अच्छन्दः, अस्ववशः। *दशवै० ९१*।

अच्छंदो– यथाछन्दः, पाषण्डस्थः। *आव० १९३*।

अच्छ– ऋक्षः, प्रसिद्धः। *भग० १९०, निशी० १३८* आ। ऋक्षः। *भग० ३०९*। ऋक्षाः, अच्छभल्लाः। *जम्बू० १२४*।

अच्छउ– तिष्ठतु। *दशवै० ३७*।

अच्छणं– अवस्थानम्। *बृह० २३६* अ। सन्निधौ आसनम् । *आव० ५२४*।

अच्छण– उपविश्यावस्थानम्। *बृह० ११०* अ।

अच्छणए– यत्र स्वाध्यायं कुर्वद्भिरास्यते। *ओघ० ९४*।

अच्छणघरं– अवस्थानगृहकम्, यत्र यदा तदा वाऽऽगत्य बहवः सुखासिकयाऽवतिष्ठन्ते। *जीवा० २००*।

अच्छणघरगा– अवस्थानगृहकाणि। *जम्बू० ४५*।

अच्छणिउपूरे– संख्याविशेषः। *भग० ८८८*।

अच्छणिउराति– संख्याविशेषः। *स्था० ८६*।

अच्छणिउरे– संख्याविशेषः। *भग० २१०*। *भग० २७५*।

अच्छणिकुरंगाति– संख्याविशेषः। *स्था० ८६*।

अच्छणे– आसने, प्रक्रमादाचार्यान्तरादिसन्निधौ अवस्थाने *उत्त०५३५*।

अच्छण्णपडिच्छण्णो– आच्छदितप्रत्याच्छादितः। *जीवा० १४५*।

अच्छते– तिष्ठिति। *आव० ८३२*।

अच्छभल्ल– ऋक्षः। *निशी० ५८* अ। वनजीवा (*मरण०*)

अच्छभल्लो– ऋक्षः। *निशी० १२९* अ।

अच्छरं– आस्तरकम्, आच्छादनम्। *जीवा० २१०*।

अच्छरसा– अच्छरसाः, अतिनिर्मलाः। *जम्बू० १९२*।

अच्छरा– अप्सरा, चप्पुटिका। *सूत्र० ३२५*। शक्रस्याग्र-महिषीनाम। *भग० ५०५*।

अच्छराणिवातो– अप्सरोनिपातः, चप्पुटिका। *प्रज्ञा० ६००*।

अच्छराते– शक्रस्याग्रमहिष्या राजधानीविशेषः। *स्था० २३१*।

अच्छरानिवाए– अप्सरोनिपातः, तिस्रश्चप्पुटिकाः। *औप० १०९*। चप्पुटिका। *भग० २६९*। *जीवा० १०९*।

अच्छरीयं– आश्चर्यम्। *आव० ३९५*।

अच्छवि– अक्षपि, अशरीरः, अव्यथकः। *भग० ८९२*।

अच्छवी– अच्चविः, अव्यथकः। *उत्त० २५७, स्था० ३३६*।

अच्छह– तिष्ठत। *ओघ० १५८*।

अच्छा– अच्छाः, आकाशस्फटिकवत्। *स्था० २३२*।

अच्छा– अच्छापुरी, वरणजनपदे आर्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा० ५५*। सनखपदविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*। आकाशस्फटिकवदति–स्वच्छा। *जम्बू० २०*।

अच्छाडेइ– आच्छादयति। *आव० ४३४*।

अच्छारियभत्तं– लावकभक्तम्। *आव० २०७*।

अच्छारिया– लावकम्। *आव० २०७*। मूल्यप्रदानेन शालिलवनाय कर्म्मकराः, अस्तारिकाक्षेत्रे क्षिप्यन्ते ते। *व्यव० १६९* आ।

अच्छाविज्जइ– स्थाप्यते। *आव० ६३३*।

अच्छावित्तो– स्थापितः। *आव॰ ३५२*।

अच्छावेइ– स्थापयति। *आव॰ ६३१*।

अच्छि– (रोडए), चतुरिन्द्रियजीवभेदः। *उत्त॰ ६९६*।

अच्छि– अक्षी। *आव॰ १९२*। बीजप्रदेशस्थानानि यस्याः सा निंदिता। *ओघ॰ २१८*।

अच्छिउं– स्थातुम्। *उत्त॰ १५३*।

अच्छिक्को– अस्पृष्टः। *व्यव॰ १८६* आ।

अच्छिचमढणं– चक्षुषोर्मीलनम्। *बृह॰ २०७* आ।

अच्छिज्जं– आच्छेद्यम्। *आचा॰ ३२९*।

अच्छिढोक्कणियं– अक्षिछादनम्। *आव॰ ५६१*।

अच्छिणिउपूरंगे– संख्याविशेषः। *भग॰ ८८८*।

अच्छिण्णे– अच्छिन्नः, अव्यवहितः, नान्यैः शब्दान्तरैर्वातादिकैर्वाऽप्रतिहतशक्तिकः। *प्रज्ञा॰ २९९*।

अच्छिद्द– अच्छिद्रम्, अविरलम्, निर्दूषणं वा। *भग॰ १३६*।

अच्छिद्दजालो– अच्छिद्रजालः, अङ्गुल्यन्तरालसमूहरहितः। *जीवा॰ २७२*।

अच्छिद्दे– गोशालकदिशाचरः। *भग॰ ६५९*।

अच्छिद्रपाणि– प्रतिमापन्नो जिनकल्पिको वा। *आचा॰ २७७*।

अच्छिन्न– अच्छिन्नः, अपृथग्भूतः। *स्था॰ ४७२*।

अच्छिपत्ताइं– अक्षिपत्राणि, नेत्ररोमाणि। *जम्बू॰ ८१*। *जीवा॰ २३४*।

अच्छिफुल्लयं– अक्षिपुष्पिका। *निशी॰ ७* अ।

अच्छियं– वृक्षविशेषफलम्। *आचा॰ ३४९*।

अच्छियाइओ– स्थितवान्। *आव॰ ६८३*।

अच्छिरे– चतुरिन्द्रियजीवभेदः। *उत्त॰ ६९६*।

अच्छिरोडा– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२*। चतुरिन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

अच्छिवेयणा– अक्षिवेदना, नेत्रपीडा। *भग॰ १९७*।

अच्छिवेहए– चतुरिन्द्रियजीवभेदः। *उत्त॰ ६९६*।

अच्छिवेहा– चतुरिन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

अच्छिवेहो– अक्षिवेधः, चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२*।

अच्छुत्ता– उद्धृत्य। *निशी॰ १४* आ।

अच्छुरंति– आस्तृण्वन्ति। *ओघ॰ ८३*।

अच्छुरलभे– प्रचुरलाभे। *निशी॰ १४* आ।

अच्छुढं– अक्षिप्तम्। *ओघ॰ १६५*।

अच्छे– अच्छः, सुनिर्मलः, जाम्बूनदरत्नबहुलत्वात् मेरुनाम। *जम्बू॰ ३७५*। ऋक्षः–अच्छभल्लः। *प्रज्ञा॰ २५३*।

अच्छेओ– अच्छेकः, अविकलः। *आव॰ ५२७*।

अच्छेज्ज– आसीत। *भग॰ ९०*। आच्छेद्य–षष्ठशबलदोषे। *प्रश्न॰ १४४*।

अच्छेज्जे– आच्छेद्य–बलाद् भृत्यादिसत्कमाच्छिद्य यत्स्वामी साधवे ददाति। *स्था॰ ४६०*।

अच्छेज्जेइ– भोजनदोषः। *भग॰ ४६६*।

अच्छेण्णं– आच्छेद्यं, यदाच्छिद्य भृत्यादिभ्यः स्वामी ददाति। *प्रश्न॰ १५५*।

अच्छेरं– आश्चर्यम्। *जीवा॰ २७७*।

अच्छेरगा– आश्चर्याणि, अद्भुतानि। *स्था॰ ५२३*।

अच्छेरियं– आश्चर्यम्, आश्चर्यवस्तु। *दशवै॰ ५५*।

अच्छो– अच्छः, स्वच्छः। *सूर्य॰ ७८*। ऋक्षः। *जीवा॰ ३८*। नाखरविशेषः। *प्रश्न॰ ७*।

अच्छोड– आच्छोटनम्। *ओघ॰ १३३*।

अच्छिन्नछेयनयाइं– अच्छिन्नच्छेदनयिका–सूत्रविशेषः। *सम॰ १२८*।

अजगर– अजगरः, शयुपर्यायः, उरःपरिसर्पविशेषः। *प्रश्न॰ ७*। *सम॰ १३५*।

अजज्जो– अज्य्यः, जेतुमशक्यः। *उत्त॰ १६९*।

अजताभासविवज्जी– अयताभाषाविवर्जी, दुष्टवाक्परिहर्त्ता। *आव॰ ७७५*।

अजयं– अयतम्, अनुपदेशेन। *दशवै॰ १५६*। अणुवएसेण। *दशवै॰ ७०*।

अजय– अयतः, अयत्नपरः। *ओघ॰ ३७*। तत्तत्पापस्थानेभ्योऽनुपरतः। *उत्त॰ १९४*।

अजरणं– अजीर्णम्। *आव॰ १३१*।

अजवणिज्जोदए– अयापनीयोदकाः, अयापनीयंनयापनाप्रयोजनमुदकं येषां ते। *भग॰ ३०६*।

अजसो– छायाघातः। *बृह॰ ९९* अ।

अजहण्णमणुक्कोसे– अजघन्योत्कृष्टः, अजघन्योत्कृष्ट–स्थितिः। *आव॰ ३३५*।

अजाकृपाणीयम्– अवितर्कितसम्भवो न्यायविशेषः। *आचा॰ १८*।

अजाणंतिया– अजानती पार्षत् जे होइ पगयसुद्धा। *बृह॰ ५८* अ।

अजाणू– अज्ञस्य अज्ञानात् वा व्यावृत्तिः। *स्था० १७४*।
अजाता– उत्तरगुणैश्चाधाकर्मादिभिरशुद्धा। *ओघ० १९३*।
अजायकप्पिओ– अजातकल्पिको, अगीतार्थः। *बृह० ११२* आ।
अजाया– अजाता, याऽतिरिक्तनिरवद्याहारपरित्यागविषया। *आव० ६४१*
अजिओ– अजितः, परीषहोपसर्गादिभिर्न जितः, द्वितीयजिनः, यस्मिन् गर्भे सति माता राज्ञाऽजिताऽतः। *आव० ५०२*।
अजिणं– अजिनं, चर्म। *सूत्र० ३०७, आचा० ७१*।
अजिण्णओ– अजीर्णम्। *आव० ३५२*।
अजिम्हं– अमन्दम्। *प्रश्न० ८४*।
अजिम्ह– अमन्दे, भद्रभावतया निर्विकारचपले। *जम्बू० ११५*।
अजियसंतित्थयं– अजितशान्तिस्तवः। *आव० ६३८*।
अजियसेणं– ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः। *सम० १५३*।
अजियसेणे– अजितसेनः, अज्ञातोदाहरणे कौशाम्बीराजा। *आव० ६९९*। अतीतोत्सर्पिणीकुलकरः। *सम० १५०*। अलोभोदाहरणे श्रावस्त्यामाचार्यः। *आव० ७०१*। वसंतपुरे नृपः खड्गप्रमादिसैनिकशिक्षकः। *प्रज्ञा० ४४१*।
अजियं– अपराजितां (आज्ञां)। *आव० ५९६*।
अजिरं– अङ्गणम्। *प्रश्न० १३८*।
अजीरं– अजरणम्। *ओघ० ६३*।
अजीरगं– अजीर्णत्वम्। *आव० ६५५*।
अजीरय– अजीर्णम्। *भग० १९७*।
अजीर्णम्– रोगविशेषः। *जीवा० २८४*।
अजीव– अजीवाः, जीवविपरीतस्वरूपाः। *प्रज्ञा० ७*।
अजीवअपच्चक्खाणकिरया– यदजीवेषु–मद्यादिष्वप्रत्या-ख्यानात् कर्मबन्धनं सा अजीवाप्रत्याख्यानक्रिया। *स्था० ४१*।
अजीवकरणं– अजीवभावकरणं, परप्रयोगमन्तरेणाभ्रादेर्नानाव-र्णान्तरगमनम्। *आव० ४६४*।
अजीवकिरिया– अजीवक्रिया, अजीवस्य–पुद् गलसमुदायस्य यत्कर्म्मतया परिणमनं सा अजीवक्रिया। *स्था० ४०*।
अजीवणेसत्थिया– अजीवनैसृष्टिकी, यत्तु काण्डादीनां धनुरा-दिभिः निसर्जनम्। *स्था० ४३*।
अजीवपासिया– अजीवप्राद्वेषिकी, अजीवस्योपरि प्रद्वेषाद्या क्रिया प्राद्वेषकरणमेव वा। *भग० १८२*। अजीवे पाषाणादौ स्खलितस्य प्रेद्वेषाद् अजीव प्रादेषिकी। *स्था० ४१*।
अजीवपाओगिअं– अजीवप्रायोगिकम्, अजीवप्रयोगेन निर्वृत्तं, जीवप्रायोगिकद्वितीयभेदः। *आव० ४५७*।
अजीवपारिग्गहिया– अजीवपारिग्रहिकी, पारिग्रहिकी–क्रियाया द्वितीयो भेदः। *आव० ६१२*।
अजीवमिस्सिया– अजीवमिश्रिता, प्रभूतेषु मृतेषु स्तोकेषु जीवत्सु एकत्र राशीकृतेषु–अहो महानयं मृतो जीवराशिरिति भाषा। *प्रज्ञा० २५६*।
अजीवमीसए– अजीवानाश्रित्य मिश्रमजीवमिश्रं। *स्था० ४९०*।
अजीवमीसग– अजीवमिश्रा, सत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै० २०९*।
अजीववेयारणिया– पुरुषादिविप्रतारणबुद्ध्यैक्वाऽजीवं भणत्येतादृशमेतदिति। *स्था० ४३*।
अजीवसामंतोवणिवाइया– अजीवसामन्तोपनिपातिकी, सामन्तोपनिपातिकीक्रियाया द्वितीयो भेदः। *आव० ६१३*।
अजीवसाहत्थिया– यच्च स्वहस्तगृहीतेनैवाजीवेन-खड्गादिना जीवं मारयति सा अजीवस्वाहस्तिकी। *स्था० ४२*।
अजीवारंभिया– जीवकडेवराणि पिष्टादिमयजीवाकृतींश्चवस्त्रा-दीन् वा आरभमाणस्य सा अजीवारंभिकी। *स्था० ४१*।
अजुतं– अयुतम्, चतुरशीतिरयुताङ्गशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५*।
अजुतंगं– अयुताङ्गम्, चतुरशीतिरर्थनिकुरशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५*।
अजुत्तं– अयुक्तम्, अनुपपत्तिक्षमम्, सूत्रदोषविशेषः। *आव० ३७५*।
अजुत्तो– अनुपयुक्तः। *बृह० ६* आ।
अजुरणया– शरीरापचयकारिशोकानुत्पादनेन। *भग० ३०५*।
अजो– अजः, छगलको द्विखुरश्चतुष्पदः। *जीवा० ३८*।

अजोगवं– अयोगवम्, वैश्याशूद्राभ्यां जातो वर्णः। *आचा० ८*।

अजोगी– अयोगी, निरुद्धयोगः, शैलेश्यां गतो ह्रस्वपञ्चाक्षरोद्गिरणमात्रकालं यावत्, भूतग्रामस्य चतुर्दशं गुणस्थानम्। *आव० ६५०*।

अजोणिब्भूए- अयोनिभूतम् विध्वस्तयोनि, प्ररोहा–समर्थम्। *दशवै० १४०*।

अजोसिया– अजुष्टा, असेविता, क्षयं वा अवसायलक्षणमतीता। *सूत्र० ७०*।

अज्जंहिज्जो– अद्यश्र्वः। *आव० ७१५*।

अज्ज– अद्य, आरब्धः, *उत्त० ३६३*। आर्यः–आरात्सर्वहेय-धर्मेभ्यो यातः– प्राप्तो गुणैरित्यार्यः। *प्रज्ञा० ५*। भावाराधन-योगादाराद्यातः सर्वहेयधर्मेभ्य इत्यार्यः। *दशवै० २८४*। आर्या –प्रशान्तरुपा चण्डिका। *भग० १६४*। अद्य–सान्प्रतम्। *जम्बू० २४६, आचा० १५८*। आर्यः–(गौतमः)। *आचा० १५८*। पापकर्मबहिर्भूतत्वेनापापः (क्षेत्रादिभेदेन नवधा)। *स्था० २०८*।

अज्जए– हरितविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

अज्जकण्हा– आर्यकृष्णाः, आचार्या। *उत्त० १७८*।

अज्जकण्हो– आर्यकृष्णः, आचार्यः *आव० ३२३*।

अज्जकालका– नाम आयरिया। *बृह० ३९* अ।

अज्जकालगायरिए– चतुर्थीप्रवर्तको युगप्रधानः। *निशी० ३३९* आ।

अज्जकालगो– आर्यकालकः। *आव० ३६९*।

अज्जकालय– प्रज्ञादृष्टान्तः। (*मरण०*)

अज्जखउडो– विद्यासिद्ध आचार्यः। *निशी० ३०४* अ, *निशी० २७६* अ, *निशी० १६* अ। आर्यखपुटः, विद्यासिद्ध आचार्यविशेषः। *आव० ४११*।

अज्जगो– आर्यकः, वनस्पतिविशेषः लोके आजओ। *जम्बू० ४२४*। प्रत्येकवनस्पतिविशेषः। *निशी० ६०* अ।

अज्जगोविंदो– आर्यगोविन्दः, मिथ्योपस्थितायामुदाहरणम्। *आव० ८६१*।

अज्जचंदणा– आर्यचन्दना, आर्याविशेषः, यस्याः पार्श्र्वे मृगावत्याः केवलोत्पत्तिः। *आव० ४८५, निशी० १३४* आ।

अज्जत्ताए– आर्यतया, पापकर्मबहिर्भूतया अद्यतया वा अधुनातनतया वर्त्तमानकालतया। *भग० ६५६*।

अज्जपयं– आर्यपदम्, शुद्धधर्मपदम्। *दशवै० २६९*।

अज्जप्पभिई– अद्यप्रभृति, सम्यक्त्वप्रतिपत्तिकालादारभ्याद्य यावत्। *आव० ८११*।

अज्जभावे– आर्यभावः क्षायिकादिज्ञानादियुक्तः। *स्था० २०९*।

अज्जमंगू– आर्यमङ्गुः, ऋद्धिरससातगौरवदृष्टान्ते मथुरायामाचार्यः। *आव० ५७९*। अवसन्नाचार्यः। *निशी० ३५१* अ। आचार्यातिसेवकः दुर्बलाऽऽचार्यः *व्यव० १७४* आ।

अज्जमणग– आर्यमणकः, आर्यश्र्चासौ मणकश्र्चेति विग्रहः, षण्मासैर्दशवैकालिकस्याध्येता। *दशवै० २८४*।

अज्जमहागिरि– स्थूलभद्रदत्तगणधारकाचार्यः। *निशी० २४३* अ।

अज्जमहागिरी– आयरिओ। *निशी० ४४* आ।

अज्जमूलं– आर्यमूलम्, मातामहपादमूलम्। *आव० ६८४*।

अज्जय– आर्यकः, पिता। *उत्त० ९८*। *आव० ३०५*। *भग० ४७०*। *आव० ३५७*।

अज्जयमंजरी– आर्यमञ्जरी। *आव० १२५*।

अज्जरक्खितो– मातृकानुज्ञाकृदाचार्यः। *निशी० १०९*।

अज्जरक्खिय– आर्यरक्षित गोष्ठामाहिलप्रेषकाचार्यः। *निशी० ३३५* आ, *१०१* आ। उज्जयिन्यामचेलकत्वे। (*मरण०*)। आचार्यविशेषः। *व्यव० ३१९* आ।

अज्जव– आर्जवम्, परस्मिन्निकृतिपरेऽपि मायापरित्यागः। *दशवै० २६३*।

अज्जवइरा– आर्यवज्रः, वात्सल्योदाहरणे आर्यः। *दशवै० १०३*।

अज्जवइरो– आर्यवैरः। *आव० २८५*। आर्यवज्रः, युगप्रधानः। *आव० ३०२*। आर्यवैरः, चैत्यभक्तिद्वारे आचार्यः। *आव० ५३६*।

अज्जवट्ठाणा– आर्जवम्, ऋजोः रागद्वेषवक्रत्ववर्जितस्य सामायिकवतः कर्म भावो वा आर्जवः संवर इत्यर्थः, तस्य स्थानानि–भेदा आर्जवस्थानानि संवरभेदाः। *स्था० ३०२*।

अज्जवे– आर्जवम्, ऋजुता योगसङ्ग्रहे दशमो योगः। *आव० ६६४*।

अज्जसमिओ– आर्यसमितः, सुनन्दाभ्राता। *आव० २८९*। आर्यसमितः। *उत्त० ३३३*।

अज्जसमिया– आर्यसमिताः, वज्रस्वामिनो मातुलाः। *आव० ४१२*।

अज्जसमुद्दा– आचार्यातिशेषानतिसेवि। *व्यव० १४७* अ। *निशी० १५१* अ।

अज्जसामस्य– आरात्सर्वहेयधर्मेभ्यो यातः–प्राप्तो गुणैरित्यार्यः स चासौ श्यामश्र्च आर्यश्यामः, तस्मै। *प्रज्ञा० ५*।

अज्जसुहत्थी– आर्यसुहस्ती, योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते आर्यस्थूलभद्रस्य लघुः शिष्यः। *आव० ६६८*। स्थूलभद्र-दत्तगणधारकाचार्यः *निशी० २४३* अ। आयरिओ। *निशी० ४४*, *बृह० १५३* आ।

अज्जसुहम्मे– आर्यसुधर्मा, महावीरस्यान्तेवासी स्थविरः। *प्रश्न० १*।

अज्जहिज्जो– अद्यहृयः (श्र्वः)। *आव० ६९१*।

अज्जा– तुलसीसमो वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२*। मुनिसु-व्रतजिनप्रवर्तिनीनाम। *१५२*। आर्या, सप्तचतुःकलगणादि-व्यवस्थानिबद्धा मात्राछन्दोरूपा। *जम्बू० १३८*।

अज्जाकल्पं– आर्यानीतम्। (*गणि०*)

अज्जाघरे– आर्यागृहे। *स्था० ३७२*।

अज्जावेयव्वा– आज्ञापयितव्याः। *आचा० १७८*।

अज्जासाढो– आर्याषाढः, स्थिरीकरणोदाहरणे उज्जयि–न्यामार्याषाढः। *दशवै० १०३*। वत्सभूम्यामाचार्यविशेषः। *उत्त० १३३*। आचार्यः। *आव० ३१५*।

अज्जिए– आर्जिका, आर्यिका मातुः पितुर्वा माता। *दशवै० २१६*।

अज्जिया– पितामही मातामही वा। *बृह० ५८* आ। माउ पिउ वा जा माता सा। *दशवै० १०९*।

अज्जिया– आर्यिका। *आव० ७९३*।

अज्जियालाभो– आर्यिकालाभः, आर्यिकाभ्यो लाभः। *आव० ५३५*।

अज्जुण– अर्जुन, वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३१*। अर्जुनाभिधानं यत्पाण्डुरस्वर्णम्। *जम्बू० २४१*। बहुबीजविशेषः। *भग० ८०३*। चौरविशेषः। *व्यव० १७०* आ। तृणविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

अज्जुणए– अर्जुनकः, राजगृहे मालाकारविशेषः। *अन्त० १८*।

अज्जुणओ– अर्जुनकः, गोशालपरावर्तिस्थानम्। *भग० ६७४*।

अज्जुणमालार– अर्जुनमालाकारः, आक्रोशसहः। (*मरण०*)

अज्जुणसुवण्णं– अर्जुनसुवर्णं, श्र्वेतकाञ्चनम्। *औप० ११५*।

अज्जुणस्स– गौतमगोत्रो गोशालगृहीतत्यक्तशरीरः। *भग० ६७३*।

अज्जुण्णो– अर्जुनः, सुघोषनगरनृपतिः। *विपा० ९५*।

अज्जुन्ने– गोशालकदिशाचरः। *भग० ६५९*।

अज्जे– आर्यः। *उत्त० २८६*। अद्य, आर्य, स्वामिन्। *भग० १७६*।

अज्जो– आर्यः, पितामहः, तीर्थकराणाम् प्रथमः। *आव० १६८*। आर्यः। *आव० ७९३*। श्रीवर्द्धमानस्वामी। *जम्बू० ५४१*।

अज्जोत्ति– आरात्पापकर्मभ्यो याता आर्यास्तदामन्त्रणं हे आर्या। *स्था० १३५*।

अज्जोरुह– हरितविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

अज्झत्त– अध्यात्मम्, चेतः। *दशवै० १६*।

अज्झत्थं– अध्यात्मम्, सुखदुःखादि। *आचा० ७६*। आत्म-विषयः। *जीवा० २४१*। आत्मस्था मिथ्यात्वादयः। *उत्त० ४०२*। अन्तःकरणम्। *आचा० २९०*। अध्यात्मम्। *आचा० २०८*। आध्यात्मक्रियायत्केनापि कथञ्चनाप्यपरिभूतस्य दौर्मनस्यकरणम्। *स्था० ३१६*। अध्यात्मः–परिणामः। *व्यव० १८१* आ। अध्यात्मम्–मनः। *स्था० ५*।

अज्झत्थदंडे– अध्यात्मनिष्पन्नम्, शोकाद्यभिभवः। *प्रश्न० १४३*।

अज्झत्थनिप्फन्नं– अध्यात्मनिष्पन्नम्, अध्यवसानोद्गतम्। *दशवै० २२६*।

अज्झत्थवयणं– अध्यात्मवचनम्, अभिप्रेतमर्थं गोपयि–तुकामस्य सहसा तस्यैव भणनम्। *प्रश्न० ११८*। यदन्य-च्चेतसि निधाय विप्रतारकबुद्ध्याऽन्यद्भिभणिषुरपि सहसा यच्चेतसि तदेव ब्रूते तत्। *प्रज्ञा० २६७*, *आचा० ३८७*।

अज्झत्थिए– अध्यात्मिकः, अभ्यर्थितः। *विपा॰ ३८*। अध्यात्मिकः–आत्माश्रितः। *भग॰ ४६३*। आध्यात्मिकः–क्रियास्थानविशेषः। *सम॰ २५*।

अज्झत्थिओ– आध्यात्मिकः, आत्मविषयः, सङ्कल्प–विशेषः। *जीवा॰ २४२*।

अज्झत्थियं– अध्यवसितं, सङ्कल्पम्। *आव॰ ६६९*। आध्यात्मिकं–अन्तःकरणोद्भवम्। *सूत्र॰ ३११*।

अज्झत्थीओ– अध्यात्मस्थः। *आव॰ ३४९*।

अज्झत्थेव– अध्यात्मन्येव, ब्रह्मचर्ये व्यवस्थितः। *आचा॰ २०८*।

अज्झत्थो– आध्यात्मिकः, आत्मन्यध्यध्यात्मं–तत्रभवः दण्डविशेषः। *सूत्र॰ ३०६*।

अज्झप्पं– अध्यात्मं, सद्भावनारूढं चित्तमेव। *प्रश्न॰ १३४*। आध्यात्मिकं, आत्मन्यधीत्यध्यात्मं तत्र भवम्। आन्तर–शक्तिजनितं सात्त्विकं। *सूत्र॰ १६७*। आत्मानमधिकृत्यात्मा-लम्बनम्। *प्रश्न॰ १२८*। मनः। *सूत्र॰ ६५*। अधि आत्मनि वर्त्तत इति अध्यात्मं–ध्यानम्। *आव॰ ७७४*। रूढितो मनः। *उत्त॰ ७*। आत्मनि। *उत्त॰ ६१८*। चेतः। *आव॰ ५२५*। धर्मध्यानादिकम्। *सूत्र॰ २६९*। मनः। *आचा॰ २१९*। आत्मनि। *उत्त॰ ४६५*। मनः *उत्त॰ ५९१*।

अज्झप्पजोग– अध्यात्मयोगः। (*महाप्र॰*)

अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते– अध्यात्मयोगसाधनयुक्तः, अध्या-त्मं–मनस्तस्य योगा–व्यापारा धर्मध्यानादयस्तेषां साधनानि एकाग्रतादीनि तैर्युक्तः। *उत्त॰ ५९१*।

अज्झप्पज्झाणं– अध्यात्मध्यानं, अमुकोऽहं अमुककुले अमु-गसिस्से अमुगधम्मट्ठाणठिइए न य तव्विराहणेत्यादिरूपम्। *प्रश्न॰ १२८*।

अज्झप्परए– अध्यात्मरतः, प्रशस्तध्यानासक्तः। *दशवै॰ २६७*।

अज्झप्पसंवुडे– अध्यात्मसंवृतः, स्त्रीभोगादत्तमनाः सूत्रार्थोप-युक्तनिरुद्धमनोयोगः। *आचा॰ २१९*।

अज्झप्पे– अध्यात्मनि, आन्तरम्। *सूत्र॰ २३०*।

अज्झयणं– अध्ययनम्। विशिष्टार्थध्वनिसन्दर्भरूपम्। *जीवा॰ ४*। *स्था॰ ६*। पाठः। *आव॰ ७३२*। सज्झाओ। *दशवै॰ १२५*। स्वस्वभावे आनीयतेऽनेनेति आनयनं प्रस्तावादा-त्मनः, निरुक्तविधिना। *उत्त॰ ६*। निरुक्तविधिनाऽर्थनिर्देश-परत्वाद्वाऽस्य अयतेरेतेर्वाऽधिपूर्वस्य। *उत्त॰ ७*। नाम। *सूर्य॰ ९, १४६*। *आव॰ ७१५*। अध्यात्मानयनाच्चेतसो विशुद्ध्यापादनात् । *दशवै॰ १३८*। अनेन करणभूतेन साधुर्बोधसंय-ममोक्षान्। प्रत्यधिकं गच्छति यस्मादेवं तस्मादध्ययनम्। *दशवै॰ २६*। अध्यात्मानयनं, अधिगम्यते परिच्छिद्यन्ते वा अर्था अनेनेत्यधिगमनमेव प्राकृतशैल्या तथाविधार्थप्रदर्श-कत्वाच्चास्य वचसोऽध्ययनमिति, अधिकं नयनमधिकन-यनं चाध्ययनम्। *दशवै॰ १६*। अध्यात्मानयनं–अध्ययनश्रु-तनाम। *दशवै॰ १६*। शास्त्रम्। *दशवै॰ २८४*।

अज्झल– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

अज्झवसाए– अध्यवसायः, सूक्ष्मो मनःपरिणामसमुत्थः। *आचा॰ ६८*। सूक्ष्म आत्मनः परिणामविशेषः। *आचा॰ ३१*।

अज्झवसाणं– अध्यवसानं, अन्तःकरणप्रवृत्तिः। *सूत्र॰ ३४०*। मनोविशेषः। *औप॰ ९९*। *जीवा॰ १३०*। अन्तःकरणसव्य-पेक्षम्। *आव॰ १८४*। रागस्नेहभयभेदानि अध्यवसानानि। *आव॰ २७२*। अध्यवसायाः। *प्रज्ञा॰ ५४३*। श्रवणविधिक्रि-याप्रयत्नविशेषरूपम्। *औप॰ ६०*। मन एकाग्रतालम्बनम् । *आव॰ ५८३*। रागस्नेहभयात्मकोऽध्यवसायः। *स्था॰ ४००*।

अज्झवसाणावरणिज्जाणं– भावचारित्रावरणीयानि। *भग॰ ४३३*।

अज्झवसाणेहिं– अध्यवसानैः, मनःपरिणामैः। *जम्बू॰ २७९*।

अज्झवसिए– अध्यवसितम्, परिभोगक्रियासंपादनविषयम्। *भग॰ ८९*। अध्यवसानम् , प्रयत्नविशेषः। *भग॰ ८९*।

अज्झवसियं– अध्यवसितं, क्रियासंपादनविषयम्। *औप॰ ६०*।

अज्झाइतं– अधीतम्। *आव॰ ३४७*।

अज्झाय–अध्यायः *भग॰ ४*। कुबुद्धीनां मनःपीडानां वा आयः। *भग॰ ४*। पाठः। *उत्त॰ ७१३*। शास्त्रोऽशविशेषः।

आव० ६८। अध्ययनानि। *उत्त० ७१२*।

अज्झारुहो– अध्यारुहः, वृक्षयोनिकेषु वृक्षेषु कर्मोपादाननि-ष्पादितेषु उपर्युपरि अध्यारोहतीति, वृक्षोपरिजातो वृक्षः, वल्लीवृक्षाभिधानः कामवृक्षाभिधानो वा वृक्षः। *सूत्र० ३५२*।

अज्झावसित्त– अध्युष्येति। *स्था० ३५१*।

अज्झियगं– उपयाचितकं। *बृह० ७४* आ।

अज्झीणं– अक्षीणम्। अक्षीणश्रुतनाम। *दशवै० १६*। यद्दीयमानं न क्षीयते स्म तद् अक्षीणम्। *स्था० ६*।

अज्झुववातो– अगमगमणासवणे वि (आसक्तिः)। *निशी० ७१* आ।

अज्झुसिरं– अशुषिरम्–अग्गंथिला दशिका निषद्या च। *ओघ० २१४*।

अज्झुसिरे– तृणादिच्छन्नं न। *ओघ० १२३*।

अज्झुसिरो– गृहिसीवनिकारहितः प्रतिथिग्गलरहितो वा। *बृह० २५२* आ।

अज्झोअर– अध्यवपूरकम्, स्वार्थमूलाद्ग्रहणप्रक्षेपरूपम्। *दशवै० १७४*। *निशी० १४२* आ।

अज्झोयरए इ– भोजनदोषः। *भग० ४६६*। स्वार्थमूलाद्ग्रहणे साध्वाद्यर्थं कणप्रक्षेपणमध्यवपूरकः। *स्था० ४६०*।

अज्झोवगमियाए– आभ्युपगमिकी, प्रव्रज्याप्रतिपत्तितो ब्रह्मचर्यभूमिशयनकेशलुञ्चनादीनामङ्गीकारेण निर्वृता वेदना। *भग० ६५*।

अज्झोववज्जंति– अध्युपपद्यन्ते–तदेकचित्ता भवन्तीति तदर्जनाय वादिक्येनोपपद्यन्ते उपपन्ना घटमानाः। *स्था० २९२*।

अज्झोववज्जणं– अध्युपपादनं, क्वचिदिन्द्रियार्थेऽध्युप–पत्तिरभिष्वङ्गः। *स्था० १७४*।

अज्झोवज्जिज्ज– अभ्युपपद्येत, अभिष्वङ्गं कुर्यात्। *दशवै० ४५*।

अज्झोववण्णं– अध्युपपन्नः, विषयपरिभोगायत्तजीवितः। *आचा० ७८*।

अज्झोववण्णो– अध्युपपन्नः, आसक्तः। *ओघ० १९४*। अध्युपपन्नः। *आव० ३५१, ९२*।

अज्झोववन्नं– अध्युपपन्नः, आसक्तः। *दशवै० ४५*। अप्राप्ताहारचिन्तामाधिक्येनोपपन्नः। *भग० ६५०*।

अज्झोववन्ने– अध्युपपन्नः तदेकाग्रतां गतः। *भग० २९२*। मूर्च्छितः। *विपा० ३८*।

अज्झोववन्नो– अध्युपपन्न। *आव० ३९९*।

अज्झोववाय– अध्युपपातः, ग्रहणैकाग्रचित्तता। *प्रश्न० १५३*।

अज्झोवात– अध्युपपातः–श्रद्धा। *व्यव० २१७* आ।

अझंझपत्ते– अझञ्झाप्राप्तः, अकलहप्राप्तः सम्यग्दृष्टिर्वा। *सूत्र० २३४*। वीतरागः। *सूत्र० २३५*।

अन्नाउञ्छवित्ती– अज्ञातोञ्छवृत्ति, कुले कुले भिक्षणम् । *उत्त० ४०४*।

अज्ञानम्– अनाभोगः, अननुस्मरणं वा। *दशवै० १७९*।

अट्टं– आर्त्तम्, संक्लिष्टाध्यवसायः। *दशवै० १४*। ऋतस्य पीडितस्येदं वचनमिति कृत्वा। अधर्मद्वारस्य षोडशनाम। *प्रश्न० २६*। आर्त्तध्यानं–शोकाक्रन्दनविलपनादिलक्षणं ध्यानम्। *आव० ५८२*।

अट्टट्टहासं– अट्टाट्टहास्यम्। *आव० १९१*।

अट्टट्टहासो– अट्टट्टहासः *आव० ८३०*।

अट्टणसाला– व्यायामशाला। *भग० ५४२*। अट्टनशाला। *औप० ६५*।

अट्टणे– अट्टनः, योगसङ्ग्रहे आलोचनादृष्टान्ते उज्जयिन्यां मल्लविशेषः। *आव० ६६४*।

अट्टणो– अट्टनः, उज्जयिन्यां जितशत्रुराजमल्लः। *उत्त० १९२*।

अट्टदुहट्टवसट्टे– आर्त्तदुःखार्त्तवशार्त्तः। *उत्त० ३३१*।

अट्टदुहट्टा– आर्त्तदुःखस्थिताः, आर्त्तदुःखार्त्ताः। *आव० ३९५*।

अट्टदुहट्टो– आर्त्तदुःखार्त्तः। *आव० २८८*।

अट्टनियट्टियचित्ता– आर्त्तनिर्वर्त्तितचित्ताः, आर्त्तं निर्वर्त्तितं चित्ते यैस्ते तथा, आर्त्तादवा। निर्वर्त्तितं चित्तं यैस्ते। *भग० १२१*।

अट्टमगा– अभिमारकाः। *निशी० ११* अ।

अट्टवसट्टा– आर्त्तवशार्त्ताः। *आव० ३८८*।

अट्टहासं– अट्टट्टहासम्। *आव० ६३४*।

अट्टाः– आर्ताः, दुखिनः रागद्वेषोदयेन। *आचा० १८३*।

अट्टाल– प्राकारसम्बन्धिन्यट्टालादौ। *आचा० ४११*।

अट्टालकं– प्राकारकोष्ठकोपरिवर्त्ति आयोधनस्थानम्। *उत्त० ३११*।

अट्टालक– अट्टालकः, प्राकारस्योपरि भृत्याश्रयविशेषः। *जीवा० १५९*।

अट्टालका– प्राकारस्योपर्याश्रयविशेषाः। *सम० १३७*।

अट्टालगं– अट्टालकं। *जीवा० १६९*।

अट्टालग– अट्टालकः, प्राकारोपरिवर्त्ती आश्रयविशेषः। *प्रश्न० ८*। अट्टालकम्, प्राकारोपर्याश्रयविशेषः। *भग० २३८*।

अट्टालगा– पागारस्स अहे अट्ठहत्थो मग्गो। *निशी० २६५ अ*।

अट्टालगो– अट्टालकः, प्राकारस्योपरि भृत्याश्रयविशेषः। *जीवा० २५८*।

अट्टालयं– अट्टालकं। *आव० ३७५*।

अट्टालय– अट्टालकाः, प्राकारस्योपरिवर्त्त्याश्रयविशेषाः। *जम्बू० ७६, १०६*। *औप० ३*। प्राकारस्योपरि भृत्याश्रयविशेषाः। *प्रज्ञा० ८६*। प्राकारस्योपर्याश्रयविशेषः। *जीवा० २७९*।

अट्टालयसंठिओ– अट्टालकसंस्थितः। *जीवा० २७९*।

अट्टे झाणे– ध्यानस्य प्रथमो भेदः। *भग० ९२३*।

अट्टो– आर्त्तः, मनसा। *विपा० ४१*।

अट्ठं– अर्थः। *आव० ७९३*।

अट्ठ– अर्थान्, वर्णादीन्। *जम्बू० ९८* अर्थाय। *उत्त० ३६०*।

अट्ठकरणं– अर्थकरणं, अर्थाभिनिर्वर्त्तकमधिकरण्यादि येन द्रम्मादि निष्पाद्यते। अर्थार्थं वा करणं, यत्र राज्ञोऽर्थाश्चि-न्त्यन्ते। अर्थ एव वा तैस्तैरूपायैः क्रियत इति। *उत्त० १९५*।

अट्ठखंभसतसंनिविट्ठा– अष्टोत्तरस्तम्भशतसन्निविष्टा, सभा-विशेषः। *आव० ३४२*।

अट्ठग– अष्टकः। *ओघ० १४४*। अष्टकम्–चतुर्विंशत्यधि–कशतसत्कभागाष्टकप्रमाणम्। *सूर्य० २३८*।

अट्ठगुणाए– अष्टगुणया। *आव० ६३*।

अट्ठगुणे– अष्टगुणाः। ठाणाः *३९४*।

अट्ठजायं– अर्थकार्यां अर्थिकार्यां अर्थप्रयोजनां वा। *बृह० २४२* अ।

अट्ठजुत्तं– अर्थयुक्तं–अर्थते–गम्यत इत्यर्थस्तेन युक्तमन्वितम्। *उत्त० ४६*।

अट्ठट्ठमियं– अष्टाष्टमिका, भिक्षुप्रतिमाविशेषः। *अन्त० २९*।

अट्ठट्ठमिया– अष्टावष्टमानि। *सम० ७७*। अष्टावष्टमम्। *स्था० ४४०*।

अट्ठपयंति– अनुभागसंक्रमस्वरूपनिर्द्धारणम्। *स्था० २२२*।

अट्ठपिट्ठपुट्ठा(निट्ठिया)– अष्टवारपिष्टप्रदाननिष्पन्ना। *जीवा० ३५१*।

अट्ठपिट्ठणिट्ठिया– अष्टपिष्टनिष्ठिता, अष्टभिः शास्त्रप्रसिद्धैः पिष्टैर्निष्ठिता। *प्रज्ञा० ३६४*।

अट्ठफास– अष्टस्पर्शम्, बादरपरिणामम्। *भग० ९६*।

अट्ठभाइया– अष्टमभागमात्रो मानविशेषः। *भग० ३१३*।

अट्ठमंगलए– अष्टमङ्गलकानि, अष्टेति संख्याशब्दः, अष्टमङ्गलकानीति चाखण्डः संज्ञाशब्दः। *जम्बू० १९२*।

अट्ठमभत्तं– अष्टमभक्तम्, त्रिरात्रोपवासः। *आव० २२८*। समयपरिभाषयोपवासत्रयं, यद्वाऽष्टमभक्तमिति सान्वयं नाम, तच्चैवम्–एकैकस्मिन् दिने द्विवारभोजनौचित्येन दिनत्रयस्य षण्णां भक्तानामुत्तरपारणकदिनयोरेकैकस्य भक्तस्य च त्या-गेनाष्टमं भक्तं त्याज्यं यत्र। *जम्बू० १९७*। उपवासत्रयस्य संज्ञा। *जम्बू० ११८*।

अट्ठमभत्तिआ– अष्टमभक्तिका, दिनत्रयमनाहारिणः। *जम्बू० २३९*।

अट्ठमेणं– अष्टमेन, उपवासत्रयलक्षणेन। *जम्बू० १५१*।

अट्ठय– तलं। अव० *६४३*।

अट्ठरससंपउत्त– अष्टभी रसैः शृङ्गारादिभिः सम्यक् प्रकर्षेण युक्तम्। *जम्बू० ३९*।

अट्ठसइआहिं– अर्थशतानि यासु सन्ति ता अर्थशतिका-स्ताभिः, अथवा अर्थानां–इष्टकार्याणां शतानि याभ्यस्ता अर्थशतास्ता एवार्थशतिकाः। *जम्बू० १४३, भग० ४८२*।

अट्ठसते– अष्टशतं। *आव० ३४२*।

अट्ठसयं– अष्टाधिकं शतम्। *जम्बू० ६०*।

अट्ठसयंसिओ– अष्टशतांस्रिकः। *आव० ३४२*।

अट्ठसहस्सं– अष्टसहस्रम्, अष्टोत्तरं सहस्रम्। *जम्बू० ४१०*।

अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा– अष्टौ सहस्राणि–अष्ट सहस्रस-ङ्ख्याका वरकाञ्चनशलाका–वरकाञ्चनमय्यः शलाका येषु तानि। *जम्बू० ५९*।

अट्ठसिरे– अष्टाशिराः, अष्टकोणः। *औप० १०*।

अट्ठसोवण्णिअं– अष्टसुवर्णा मानमस्येत्यष्टसौवर्णिकं, सुवर्णमानमिदम्–चत्वारि मधुरतृणफलान्येकः श्वेतसर्षपः, षोडश श्वेसर्षपा एकं धान्यमाषफलं, द्वे धान्माषफले एका गुञ्जा एकः कर्ममाषकः, षोडश कर्ममाषकाः एकः सुवर्णः। *जम्बू० २२६*।

अट्ठा– अर्थक्रिया, अर्थाय यत्करणम्, क्रियायाः, प्रथमो भेदः। *आव० ६४८*।

अट्ठाणं– अस्थानम्, अयुक्तं, असाम्प्रतं वा। *सूत्र० १६०*। शब्दप्रतिबद्धावसतिः। *बृह० १९७* आ।

अट्ठाणट्ठवणा– अस्थानस्थापना–गुर्ववग्रहादिके अस्थाने प्रत्युपेक्षितोपधेः स्थातनं–निक्षेपः। *स्था० ३६२*।

अट्ठादंडे– अर्थाय–शरीरस्वजनधर्मादिप्रयोजनाय दण्डः–त्रसस्थावरहिंसा। *सम० २५*।

अट्ठावय– (अष्टापदः) पर्वतविशेषः। *आव० ७२७*।

अट्ठापदं– अर्थात्पदम्। *आव० ३५२*।

अट्ठारसवंको– अष्टादशवङ्कः, अष्टादशसरिको हारः। *आव० ६८१*।

अट्ठारसवंजणाउलं– अष्टादशव्यञ्जनाकुलम्। *सूर्य० २९३*। *स्था० ११७*।

अट्ठावए– अष्टापदम्, द्युतम्, अर्थपदं वा। *दशवै० ११७*।

अट्ठावओ– पर्वतविशेषः। *आव० १४८*।

अट्ठावयं– अष्टापदम्। *जीवा० २७६*। अर्थपदम्। *आव० ४१२*। शारिफलकद्यूतं तद्विषयकलाम्। *जम्बू० १३७*। द्युतफलकम्। पश्न० ८४। पर्वतविशेषः। *आव० १५१*। द्यूतक्रीडाविशेषः। *सूत्र० १८१*। द्यूतफलकं, कैलाशः–पर्वतविशेषो वा। *प्रश्न० ७०*। अष्टापदः, पर्वतविशेषः। *आव० ८२७*। द्यूतफलकम्। *जम्बू० ११४*।

अट्ठावयसेलसिहरंसि– अष्टापदशैलशिखरे। *जम्बू० १५८*।

अट्ठाहिअं– अष्टाहिकाम्, अष्टानामहनां–दिवसानां समाहारोऽष्टाहं तदस्ति यस्यां महिमायां सा अष्टाहिका ताम्। *जम्बू० १६३*।

अट्ठाहिया– अष्टाहिका, महामहिमाविशेषः। *जीवा० ३६५*। *जम्बू० ४२३*।

अट्ठि– अस्थि, कीकशम्। *प्रश्न० ८, भग० १३५*।

अट्ठिकच्छभा– ये अस्थिबहुलाः। कच्छपास्ते अस्थिकच्छपाः। *प्रज्ञा० ४४*।

अट्ठिकच्छमो– अस्थिकच्छपः, कच्छपविशेषः। *जीवा० ३६*।

अट्ठिकरकम्– तन्दुलोदकम्। *दशवै० १७७*।

अट्ठिखंडं– अस्थिखण्डं। *आव० ३६९*।

अट्ठिग– अस्थिकम्–कीकसम्। *भग० ३०८*।

अट्ठिचम्मावणद्धे– अस्थिचर्मावनद्धम्, अस्थीनि चर्मावन–द्धानि यस्य। *भग० १२५*।

अट्ठिज्झामे– अस्थिध्यामम्, अस्थि च तद्ध्यामं च–अग्निना ध्यामलीकृतं–आपादितपर्यायान्तरम्। *भग० २१३*।

अट्ठितग्गामं– अस्थिकग्रामम्, पूर्वं वर्द्धमानकनामकम्। *आव० १८९*।

अट्ठिभंजणं– अस्थिञ्जनम्, कीकसामर्द्दनम्। *प्रश्न० २२*।

अट्ठिमिंज– अस्थिमिञ्जः–त्रीन्द्रियजीवविशेषः। *उत्त० ६९५*।

अट्ठिमिंजा– अस्थिमिञ्जा, अस्थिमध्यम्। *सूत्र० ४०८*। *भग० ५२६*।

अट्ठिय– आर्थिकः, अर्यत इत्यर्थः–मोक्षः, स प्रयोजनमस्येति अर्थः स एव प्रयोजनरूपोऽस्यास्तीति। *उत्त० ६५*।

अट्ठियकट्ठुट्ठियं– अस्थिकाष्ठोत्थितम्। *उत्त० ३२९*।

अट्ठियगामं– अस्थिकग्रामं–श्रीवीरस्य प्रथमचातुर्मासग्रामः। *भग० ६६१*।

अट्ठिलग्गो– मुष्टिं कृत्वा। *आव० ६९०*।

अट्ठिल्लगो– अस्थि (बीजम्)। *निशी० ५६* आ।

अट्ठिसरक्खा– अस्थिसरजस्का–कापालिकाः। *व्यव० २७३* आ।

अट्ठिसेणा– वत्सगोत्रान्तर्गतं गोत्रम्। *स्था० ३९०*।

अट्ठि– अस्थि–मज्जा। *अनुत्त० ५*। एड्डसरक्खा। *निशी० १७२* अ।

अट्ठुप्पत्ती– ववहारो। *निशी० १०१* अ।

अट्ठे– अर्थः, भावः। *भग० ३४*।

अट्ठेति– निवसति। *निशी० ६२* आ।

अट्ठो– अर्थित्वं च धर्मः। *आव० ३४१*। अर्थः विज्ञानम्। *सूत्र० ३९८*। अर्यत इत्यर्थो मोक्षः। *उत्त० ६५*।

अट्ठियकप्पा– मध्यमजिनानां महाविदेहजिनानां वा साधवः। *बृह० २५४* आ।

अडंडिमकुदंडिमं– अदण्डिमकुदण्डिमम्, दण्डो

निग्रहस्तेन निर्वृत्तं राजदेयतया व्यवस्थापितं दण्डिमं, कुदण्डः–अस-म्यग्निग्रहस्तेन निर्वृत्तं द्रव्यं कुदण्डिमं, ते अविद्यमाने यत्र प्रमोदे सः। *विपा० ६३*।

अडडं– चतुरशीतिरडडाङ्गशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५*।

अडडंगं– अडडाङ्ग, चतुरशीतिस्त्रुटितशतसहस्राणि। *जीवा० ३४६*। संख्याविशेषः। *स्था० ८६*। *भग० ८८८*। अड-डाङ्गः, संख्याविशेषः। *सूर्य० ९१*।

अडडाति– संख्याविशेषः। *स्था० ८६*।

अडडे– अडडः, संख्याविशेषः। *सूर्य० ९१*। *भग० २१०, २७५, ८८८*।

अडयालं– अष्टचत्वारिंशत्, प्रशस्तं वा। *जीवा० १६०*। अडयालशब्दो देशीवचनत्वात् प्रशंसावाची। *प्रज्ञा० ८६*। देशीशब्दः प्रशंसावाची अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविच्छित्तयः कृता वनमाला येषु तानि। *जम्बू० ७६*।

अडयालकोट्ठगरइय– अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रच्छन्दगो-पुररचितानि। *सम० १३८*।

अडयालकोट्ठरइयं– अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितम्, अष्टचत्वा-रिंशद्भेदभिन्नविच्छित्तिकलिताः कोष्ठकाः–अपवरका रचिताः–स्वयमेव रचनां प्राप्ता येषु तत्। प्रशस्तकोष्ठकरचितं वा। *जीवा० १६०*।

अडयालिय(ल)– शब्दः किल प्रशंसावाचकः। *सम० १३८*।

अडविंगतो– देसं देसेण हिंडइ। *व्यव० १६२अ*।

अडविणीहुत्तं– अटवीनिःसृतम्, अरण्यान्निष्क्रान्तम्, *उत्त० ३७५*।

अडविमिगी– अटवीमृगी। *आव० ३९२*।

अडवी– अटवी, अटव्यो–दूरतरजननिवासस्थाना भूमयः। *जम्बू० ६६*।

अडिला– चर्मपक्षिविशेषः। *जीवा० ४१*। अडिल्ला, चर्मपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा० ४९*।

अडुयालित्ता– आश्रित्य, बलात्कारं कृत्वा। *दशवै० ३८*।

अडेइ– चढापयति, लगयति। *आव० ३९०*।

अडो– लोमपक्षिविशेषः। *जीवा० ४१*।

अडोलिया– यवोनाम राजा तस्य दुहिता। *बृह० १९१अ*। उंदोइयाए। *बृह० १९१अ*।

अड्डं– तिर्यग्वलितम्। *जीवा० २०७*। तिर्यक्। *आव० ३६७*।

अड्डपल्लाणं– आटविषये प्रसिद्धम्, यदन्यविषये थिल्लीरिति रूढम्। *जीवा० २८२*।

अड्डया– कंबिका। *निशी० १६७अ*। थिल्ली। *भग० ३९९*।

अड्डवियड्डं– अर्दवितर्दम्–क्रमहीनम्। *ओघ० १७७*। विप्रकीर्णम्। *निशी० १३अ*।

अड्डवियड्डा– अक्रमम्। ओघ० १७६।

अड्डिया– अड्डिका, द्वात्रिंशत्, लौकिकमबद्धकरणम्। *आव० ४५६*।

अड्ढ– आढ्य्यम्, परिपूर्णम्। *औप० १०१*।

अड्ढ– आढ्यः, धनधान्यादिभिः । परिपूर्णः। *भग० १३४*।

अड्ढग– आढ्य्यः, सम्पन्नः। *आव० २६४*।

अड्ढरत्त– अर्द्धरात्रः, निशीथः। *दशवै० १०४*। आर्धरात्रिकः। *व्यव० २५५आ*।

अड्ढाइं– धनवन्ति। *स्था० ४२१*।

अड्ढाइज्जा– अर्द्धतृतीयानि। *आव० ३९*।

अड्ढायति– आद्रियते। *आव० ८४८*।

अड्ढेऊण– अवष्टम्य। *आव० ६२०*।

अड्ढेज्ज– आढ्य्यत्वं–धनपतित्वं सुखकारणत्वात्सुखं अथवा आढ्यै क्रियमाणा इज्या–पूज्या आढ्यैज्या। *स्था० ४८८*।

अड्ढोकंति– अर्धापक्रान्त्या। *निशी० ११७आ*।

अड्ढोक्कंती– अर्धापक्रान्तिः। *बृह० १९अ*।

अड्ढोरुगो– कटिविभागाच्छादकं निर्ग्रन्थ्युपकरणम्। *ओघ० २०९*। निर्ग्रन्थ्युपकरणविशेषः। *निशी० १७९आ*।

अणं– कम्मं। *दशवै० १४५*। अणं–अणति–गच्छति तासु तासु जीवो योनिष्वनेनेति पापम्, सावद्ययोगं वा। *आव० ३७३*। कर्म्म। *आचा० १४७*। ऋणम्, कर्म्म। *दशवै० २६२*।

अणंगकीडा– अनङ्गक्रीडा, अनङ्गं–कुचकक्षोरुवदनादि, मोहो-दयोद्भुतस्तीव्रो मैथुनाध्यवसायाख्यः कामो वा, तेन तस्मिन् वा क्रीडा कृतकृत्यस्यापि स्वलिङ्गेनाहार्यैः काष्ठफलपुस्तमृ-त्तिकाचर्मादिघटितप्रजननैर्योषिदवाच्यप्रदेशासेवनम्। *आव० ८२५*। कुचकक्षोरुवदनादिमोहोदयोद्भुतस्तीव्रो मैथुनाध्यव-सायाख्यः कामः। *आव० ८२५*। मैथुनादावर्थक्रियासम्प्रा-प्तकामस्य चतुर्दशो भेदः। *दशवै० १९४*।

अणंगपडिसेवणी– मैथुने प्रधानमङ्गं मेहनं भगश्च तत्प्रतिषेधो-ऽनङ्गं तेनानङ्गेनाहार्यलिंगादिना अनङ्गे वा–मुखादौ प्रतिसेवा-ऽस्ति यस्याः अनङ्गं वा–काममपरापरपुरुषसंपर्कतोऽतिशयेन प्रतिषेवत इत्येवंशीलाऽनङ्गप्रतिषेविणी। *स्था० ३१३*।

अणंगसेना– अनङ्गसेना, गणिकामुख्या। *अन्त० २*।

अणंगसेन- सुवण्णगार, भद्रविमर्शे दृष्टान्तः *निशी० ५*।

अणंगसेनो– चम्पावास्तव्यः स्वर्णकृत्, हासाप्रहासालुब्धः। *बृह० ४४*अ।

अणंगरति– अनङ्गक्रीडा। *बृह० १०७*आ।

अणंतं– अनन्तम्। केवलात्मनाऽनन्तत्वात्। *जीवा० २५६*। अनन्तः, अनन्तार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वादन्तरहितः। *भग० ७, सम० ५*। अपरिमाणम्। *भग० ६६*। अनन्तकर्मपुद्गल-निर्वृत्तत्वात्तदनन्तमिति अनन्तानां वा भवानां हेतुर्यत्तदन-न्तम्। *ओघ० १२८*।

अणंतकायं– मूलकादिकम्। *प्रज्ञा० २५९*।

अणंतकिरिया– अनन्तक्रिया, परम्परामुक्तिफला। *उत्त० ५७३*।

अणंतखुत्तो– अनन्तकृत्वः, अनन्तवारान्। *भग० १३०*।

अणंतगं– कम्बलादिवस्त्रम्। *ओघ० ३४*।

अणंतगमजुत्त– अनन्ता–अपर्यवसिता गम्यते वस्तुस्वरूप-मेभिरिति गमा–वस्तुपरिच्छेदप्रकाराः नामादयस्तैयुक्तानि अन्वितान्यनन्त गमयुक्तानि। *उत्त० ३४२*।

अणंतगुणपरिहाणीए– अनन्तगुणपरिहाणिः, अनन्तगुणानां परिहाणिः। *जम्बू० १२९*।

अणंतगुणविसिट्ठतरा– अनन्तगुणविशिष्टतरा। *सूर्य० २९४*।

अणंतघाई– अनन्तघातिन्–अनन्ते ज्ञानदर्शने हन्तुं शीलं येषां ते । *उत्त० ५८०*।

अणंतजिणेण– रागद्वेषजेता, ज्ञानी नित्यश्च। *आचा० ४३०*।

अणंतजीविया– अनंतजीविका–पनकादयः। *स्था० १२२*।

अणंतनाणी– अनन्तज्ञानी, केवली। *आव० ६६२*।

अणंतते– अनन्तकमत्–एकश्रेणिकं क्षेत्रम्। *स्था० १४७*।

अणंतमिस्सिया– अनन्तमिश्रिता, मूलकादिकमनन्तकायं तस्यैव सत्कैः परिपाण्डुपत्रैरन्येन वा केनचित्प्रत्येक–वनस्पतिना मिश्रमवलोक्य सर्वोऽप्येषोऽनन्तकायिक इति वदतो भाषा। *प्रज्ञा० २५९*। *स्था० ४९०*।

अणंतमीसग– अनन्तमिश्रा, सत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै० २०९*।

अणंतयं– अनंतकम्–जिनम्। *सम० १५३*।

अणंतरं– अनन्तरम्, बहिर्भूतम्। *सूर्य० ३४*। *सम० १२८*।

अणंतरगढिया– अनन्तरग्रथिता, अनन्तरं–व्यवस्थापितैः ग्रन्थिभिः सह ग्रथिता (जालिका)। *भग० २१४*।

अणंतरपज्जत्ता– अनन्तरपर्याप्तकाः–प्रथमसमयपर्याप्तकाः। *स्था० ५१४*।

अणंतरपुरक्खडे– अनन्तरपुरस्कृतः, अनन्तरं अव्यवधानेन पुरस्कृतः–अग्रेकृतो यः सः। *सूर्य० ९०*।

अणंतरबंधे– येषां पुद्गलानां बद्धानां सतामनन्तरः समयो वर्तते तेषामनन्तरबन्धः। *भग० ७९१*।

अणंतरहिता– अंते ठिता–अंता न अंता–अनंता सचित्ता। *निशी० २५५*आ। *निशी० ८२*आ।

अणंतरहियाए– अनन्तर्हि (रहि) तया–अव्यवहितया। *आचा० ३३७*।

अणंतरा– अनन्तरौ, एष्यातीतौ। *आव० ७६९*।

अणंतरिया– अनन्तरिका, अन्तरस्य विच्छेदस्य करणम्। *भग० २२०*।

अणंतरो– अनन्तरः–वर्तमानः समयः। *स्था० ५१४*।

अणंतरोगाढं– अनन्तरावगाढम्, येषु प्रदेशेष्वात्मावगाढ–स्तेष्वेव यदवगाढं तदन्तराभावेनावगाढत्वादनन्तरावगाढम्। *भग० २१*। अव्यवधानेनावगाढम्। *जीवा० २०*।

अणंतरोगाढे– उत्पत्त्यनन्तरसमयावगाढत्वम्। *भग० ९३७*।

अणंतरोववण्णगा– उपपत्तिप्रथमसमयवर्तिनः। *प्रज्ञा० ३०४*।

अणंतवत्तियाणुप्पेहा– अनन्तवर्त्तितानुप्रेक्षा। *स्था० १९२*। भवसन्तानस्यानन्तवृत्तितानुचिन्तनम्। *औप० ४५*।

अणंतविजए– आगामिन्यां उत्सर्पिण्यां भरते चतुर्विंशे जिन-नाम। *सम० १५४*। ऐरवते भविष्यज्जिनः। *सम० १५४*।

अणंतवीरिय– अनन्तवीर्यः। *आव० ३९२*।

अणंतसंजयं– एकेन्द्रियादिषु सम्यग् यतः। *आचा० ४२९*।

अणंतसंसारा– अपर्यवसितसंसारा अभव्याः। *उत्त० ७१३*।

अणंतसंसारवड्ढणा– अनन्तससारवर्द्धनः। *उत्त० ३३०*।

अणंतसेणे– अनन्तसेनः, अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य द्वितीयाध्ययनम्। *अन्त० ३*। भरतेऽतीतोत्सर्पिणीकुलकरः। *सम० १५०*। *स्था० ५१८*।

अणंतसो– अनन्तशः, अविच्छेदेन। *सूत्र० ३४*।

अणंतहिअ– अनन्तहितम्–मोक्षः। *दशवै० २५०*।

अणंता– तित्थकरा। *बृह० २२४* आ।

अणंताणुबंधी– अनन्तानुबन्धी, अनन्तं संसारमनुबध्धन्तीत्वे-वंशीलः। *प्रज्ञा० ४६८*। षोडशकषाये प्रथमो भेदः। *सम० ३१*, *आचा० ९१*। अनन्तं भवं अविच्छिन्नं करोति, अनन्तो वाऽनुबन्धो यस्य। *स्था० १९४*।

अणंतियं- अनन्तिकम् नञोऽल्पार्थत्वान्नात्यन्तमन्तिकम- दूरासन्न मित्यर्थः। *भग० २१७*। अनासन्नम्। *भग० २१७*।

अणंतेहिं– अनादित्वात् अनन्ताः। *भग० ६१०*।

अणंतो– अनन्तः अनन्तकर्मांशजयात्, अनन्तानि वा ज्ञानादीन्यस्येति, चतुर्दशो जिनः, रत्नखचितमनन्तं दामस्वप्ने जनन्या दृष्टमतः। *आव० ५०४*। अपर्यवसितः। *उत्त० २१३*। अनन्तानामेकैकं शरीरम्। *ओघ० ३४*।

अणंधो– राजविशेषः। *निशी० ४२* आ।

अणंबिलं– अनाम्लम्–स्वस्वादादचलितम्। *आचा० ३४६*।

अण– अणाः, अणन्ति–शब्दयन्ति अविकलहेतुत्वेनासातवेद्यं नारकाद्यायुष्कमिति, अनन्तानुबन्धिनः क्रोधादयो वा। *आव० ८१*।

अणइक्कमणाइ– अनतिक्रमणं, संयमयोगानामनुल्लङ्घनम्। *उत्त० ५४३*।

अणइक्खा– अनाख्याता। (*गणि०*)

अणइवत्तियं– अनतिपत्य–यथावस्थितं वस्त्वागमाभिहितं तथाऽनतिक्रम्य। *आचा० २५६*।

अणइवरं– अनतिवरं, अविद्यमानह्रासतया प्रधानं न विद्य-तेऽतिवरं यस्मात्तत्। *औप० ५४*।

अणईइपत्तो– अनीतिपत्रः, न विद्यते ईतिः–गड्डरिकादिरूपेति रहितपत्रः। *जीवा० १८८*।

अणकारो– ऋणकरः, ऋणं–पापं करोतीति, प्राणवधस्य चतुर्विंशतितमः पर्यायः। *प्रश्न० ६*।

अणक्को– अणक्कः, चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४*।

अणक्खित– परीक्षितः। *निशी० ८१* आ।

अणगार– अनगारः, सूत्रकृताङ्गे पञ्चममध्ययनम्। *आव० ६५८*। साधुः। *दशवै० ६२*। सूत्रकृताङ्गस्यैकविंशमध्ययनम्। *उत्त० ६१६*। चतुर्दशशतके नवमोद्देशकः। *भग० ६३०*। द्रव्यतो भावतश्चाविद्यमानागारः। *दशवै० १५९*। न विद्य-तेऽगारं गृहमेषामित्यनगाराः–यतयः। *आचा० ३६*। तीर्थि-कप्रव्रजिताः। *आचा० ३०९*। अनगारी–यतिः। *उत्त० ५७८*। साधुः *आव० ३२९*।

अणगारमग्गे– उत्तराध्ययने पञ्जत्रिंशत्तमाध्ययनम्। *सम० ६४*।

अणगारसुयं– सूत्रकृताङ्गे एकविंशतितमाध्ययनम्। *सम० ४२*।

अणगारस्सभिक्खू– अनगारास्वभिक्षुः, अस्वेषु भिक्षुरस्व–भिक्षुः–जात्याद्यनाजीवनादनात्मीकृत्वेनानात्मीयानेव गृहि-णोऽन्नादि भिक्षत इतिकृत्वा, स च यतिरेव, ततोऽनगारश्चा-सावस्वभिक्षुश्च। *उत्त० १९*।

अणगारियं– अनगारिकं (अनगारितं वा), अनगारेषु–भाव–भिक्षुषु भवं अनुष्ठानम्। *उत्त० ३३९*।

अणगारे– अनगारः, न विद्यते अगारं–गृहं यस्यासौ साधुः। *जीवा० १४२*। भावितात्मा लब्धिसामर्थ्यात्। *भग० ५९६*। न विद्यते अगारं–गृहं द्रव्यतो भावतश्च यस्यासौ संयत इति। *प्रज्ञा० ३०३*। न विद्यते अगारं–गृहं यस्य सः। *सूर्य० ४*। अगाः–वृक्षास्तैर्निष्पन्नमगारं तन्न विद्यते त्यक्तगृहपाशः। *आचा० ४०३*।

अणगारो– ऋणकारः, ऋणमिव कालान्तरक्लेशानुभवहेतुतया ऋणम्–अष्टप्रकारं कर्म तत् करोतीति, तथा तथा गुरुवचन-विपरीतप्रवृत्तिभिरुपचिनोतीति। *उत्त० २०*।

अणगालो– दुष्कालः। *बृह० २३* अ।

अणघा– णिरोगा। *निशी० ८०* अ।

अणच्चाविअं– अनर्त्तायितम्। *ओघ० १०९*।

अणच्चावितं– वस्त्रमात्मा वा यत्र न नर्तितः। *स्था० ३६१*। प्रस्फोटनं प्रमार्जनं वा। *उत्त० ५४०*।

अणच्चासादणाविणए– आशातना तन्निषेधरूपो विनयोऽन-त्याशातनाविनयः। *भग० ९२२*।

अणज्जं– अनार्यम्, अनार्यवचनत्वात् अधर्मद्वारस्य तृतीयं नाम। *प्रश्न० २६*।

अणज्जधम्मे– अनार्यधर्मः, क्रूरकर्मकारी। *सूत्र० १५८*।

अणज्जभावे– अनार्यभावः। क्रोधादिमान्। *स्था० २०९*।

अणज्जे– अन्याय्यः, न न्यायोपेतः। *प्रश्न० ५*।

अणज्जो– अनार्यः, म्लेच्छचेष्टितः। *दशवै० २७५*। पापकर्मा। *प्रश्न० ४०*।

अणज्झाए– अकाले, अस्वाध्यायिके वा। *निशी० १०*।

अणट्टा– अनार्तः आर्तध्यानविकलः। *उत्त० ४४८*। सकल-दोषविगमतोऽबाधिता। *उत्त० ४४९*।

अणट्ठा– अनर्थक्रिया, अनर्थाय यत्करणम्, क्रियाया द्वितीयो भेदः। *आव० ६४८*।

अणट्ठादंडे– अर्थविलक्षणो दण्डः। *सम० २५*।

अणणुगामी– अननुगामुकः–स्थितप्रदीपवत्। *आव० ४२*।

अणण्णं– अनन्यः–ज्ञानादिकः। *आचा० १६३*।

अणण्हकर– 'स्नु–प्रश्रवण' इति वचनात् आस्नवः–आश्रवः कर्म्मोपादानं तत्करणशील आस्नवकरस्तन्निषेधादनास्न-वकरः–प्राणातिपाताद्याश्रववर्जित इत्यर्थः। *स्था० ४०९*।

अणण्हय– अनाश्रवः। *आव० २८०*।

अणण्हयत्तं– अनंहस्कत्वम्–अविद्यमानकर्मत्वं। *उत्त० ५८३*।

अणण्हयफले– अनाश्रवफलः, संयमः। *भग० १३८*।

अणति– प्रज्ञापयति। *उत्त० १२८*। शब्दयति। *निशी० ९ आ*।

अणतिक्कमणिज्ज– अनतिक्रमणीयम्, अचालनीयम्। *भग० १३५*।

अणत्तट्ठिए– अनात्मार्थिकः, नात्मार्थ एव यस्यास्त्यसौ परमा-र्थकारी। *प्रश्न० १११*।

अणत्तट्ठियं– अस्वीकृतम्। *आचा० ३२५*।

अणत्तपन्ने– अनात्मप्रज्ञाः–नात्मने हिता प्रज्ञा येषां ते। *आचा० २३४*।

अणत्ते– ऋणपीडितः। *स्था० १६५*।

अणत्थको– अनर्थकः, परमार्थवृत्त्या निरर्थकः, परिग्रहस्या-ष्टाविंशतितमं नाम। *प्रश्न० ९३*।

अणत्थदंडे– अनर्थदण्डः, अप्रयोजनदण्डः। *आव० ८३०*।

अणत्थमियसंकप्पे– सूर्यानस्तसमयभोजनसंकल्पवान्। *बृह० १७९ अ*।

अणत्थो– अनर्थः अपायः। *प्रश्न० ६२*। अनर्थहेतुत्वात् परिग्रहस्यैकविंशतितमं नाम। *प्रश्न० ९२*।

अणदिट्ठं– अनादिष्टं–अविशेषितम्। *बृह० ६६ अ*।

अणन्नदंसी– अनन्यदर्शी–यथावस्थितपदार्थदृष्टा, भगव-दुपदेशादन्यत्र न रमते। *आचा० १४५*।

अणन्नपरमं– अनन्यपरमः–संयमः। *आचा० १६६*।

अणन्नारामे– अनन्यारामो–मोक्षमार्गादन्यत्र न रमते। *आचा० १४५*।

अणपज्झो– अजाणमाणो। *निशी० ११९ अ*।

अणपन्निय– अवान्तरव्यन्तरभेदः। *जीवा० १७२*।

अणप्पगंथो– अनल्पग्रन्थः (अनर्घ्यग्रन्थः) बहवागमः अविद्यमानो वाऽऽत्मनः सम्बन्धी ग्रन्थो–हिरण्यादिर्यस्य सः। भावधनयुक्तः। *औप० ३७*।

अणप्पज्झ– (देशी) अनात्मवशः। *बृह० २०९ आ*।

अणप्पज्झो– अनात्मवशः। *बृह० २५८ अ*।

अणप्पियं– अनर्पितविषयविभागम्। *बृह० ११० अ*। अविशेषितम्। *स्था० ४८१*।

अणप्फिडंतं– उचलत्। *निशी० २२ अ*।

अणबलो– ऋणबलः, बलवानुत्तमर्णः। *प्रश्न० ३०*।

अणभञ्जकः– ऋणं–देयं द्रव्यं भञ्जति–न ददाति यः सः। *प्रश्न० ४६*।

अणभिक्कंत– अनभिक्रान्तः, अनतिलङ्घतः। *आचा० १९३*। नाभिक्रान्ता जीवितादनभिक्रान्ता सचेतनेत्यर्थः। *आचा० ३२३*।

अणभिगताणं– अपरिणताणं। *बृह० १३० अ*।

अणभिग्गहिओ– अविद्यमानमभीति–आभिमुख्येन गृहीतं ग्रहणं–ज्ञानमस्येत्यनभिगृहीतः– अनभिज्ञः। *उत्त० ५६५*। अनङ्गीकृता। *उत्त० ५६५*।

अणभिग्गहिय– न विद्यते आभिमुख्येनोपादेयतयागृहीतं ग्रहणमस्येत्यनभिगृहीतः। *प्रज्ञा० ६०*। अनिश्चितमशिवा-दिभिर्निर्गमभावात्। *स्था० ३०९*।

अणभिग्गहियमिच्छादंसणवत्तिया– अनभिगृहीतमिथ्या–दर्शनप्रत्ययिकी, जेहिं न किंचि कुतित्थियमयं पडिवण्णं। *आव० ६१२*।

अणभिग्गहिया– अनभिगृहीता, अनभिग्रहा यत्र न प्रतिनियता-र्थावधारणं सा भाषा। *प्रज्ञा० २५६*। असत्यमृषाभाषाभेदः। *दशवै० २१०*। अर्थानभिग्रहेण योच्यते। *भग० ५००*।

अणभिजोए– अनभियोगः, इच्छा। *आव० ६६८*।

अणभिहियं– अनभिहितं, अनुपदिष्टं स्वसिद्धान्ते सूत्रदोष–विशेषः। *आव० ३७५*।

अणभिज्जय– अच्छिद्रे, अभिन्ने। (*मरण०*)

अणराए– रण्णो कालगते–णिब्भए वि जाव णो राया ठवि-ज्जति। *निशी० ७१* अ।

अणरायं– राजयुवराजोभयाभिषेकरहितं राज्यम्। *बृह० ८२* अ। मते रायाणे जाव मूलराया युवराया य एते दोवि अणभिसित्ता। *निशी० १०* आ।

अणलगिरि– अनलगिरिः। *आव० २९९*।

अणला– अपर्याप्ताः, दीक्षापालनेऽसमर्थाः। *बृह० २८७*।

अणलो– अनलः, असमर्थः। *आव० २५१*। वेयावच्च प्रति सुत्ते अत्थे अभिगमे परिहरणे। *निशी० ४९* आ।

अणल्लिअंता– अनाश्रयन्तः। *ओघ० ९७*।

अणवः– स्वल्पाः *उत्त० ४२०*।

अणवं– ऋणवान्। *सूर्य० १४६*। *जम्बू० ४९१*।

अणवकंखवत्तिया– अनवकाङ्क्षाप्रत्ययिकी, विंशति–क्रियामध्ये पञ्चदशी। *आव० ६१२*। अनवकांक्षा–स्वशरीराद्यनपेक्षत्वं सैव प्रत्ययो यस्याः सा। *स्था० ४३*। इहलोकपरलोकापा-यानपेक्षस्येति। *स्था० ३१७*।

अणवगल्ल– अनवकल्पः, जरसा अनभिभूतः। *भग० २७६*। *जम्बू० ९०*।

अणवज्जं– अनवद्यम्, सामायिकदशमपर्यायः। *आव० ४७४*। सामायिकम्। *आव० ३६४*। पापानुबन्धरहितम्। *दशवै० ११५*।

अणज्जय– अणवज्र्यता। *आव० ३७३*।

अणवज्जुत्तो– तत्रस्थः, अपृथग्भूतः। *आव० ७५८*।

अणवट्ठप्पा– अनवस्थाप्यः–नावस्थाप्यते–नाधिक्रियते। *स्था० १६४*। कृततपसो व्रतारोपणम्। *भग० ९२०*।

अणवट्ठप्पारिहे– कृततपसो व्रतारोपणम्। *भग० ९२०*।

अणवट्ठया– अनवस्थाप्यता, हस्ततालादिप्रदानदोषादुष्टत-रपरिणामत्वाद् व्रतेषु नावस्थाप्यते इति अनवस्थाप्यः, तद्भावः। *आव० ७६४*। *स्था० २००*।

अणवट्ठिओ– अनवस्थितः। *बृह० १२५* अ।

अणवट्ठियं– अनवस्थितं, सन्ततम्। *जीवा० ३४५*। अनियतप्रमाणम्। *सूर्य० ८७*।

अणवट्ठिया– नावश्यंभाविनः। *स्था० ३७४*।

अणवट्ठिया– अनवस्थिता–येन पुनःप्रतिसेवितेनोत्थापनाया अप्ययोग्यः सन् कंचित्कालं न व्रतेषु स्थाप्यते यावन्नाद्यापि विशिष्टं तपश्चीर्णं भवति पश्चाच्च चीर्णतपास्तद्दोषोपरतो व्रतेषु स्थाप्यते। *व्यव० १४* आ।

अणवत्था– अनवस्था, यद्यकार्यसमाचरणात्प्रायश्चित्तं न दीयते क्रियते वा सा। *ओघ० २२७*।

अणवदग्गं– अनवदग्रम्, अनन्तम्। *प्रश्न० ६३*। *स्था० १२०*। *औप० ४८*। अपर्यवसानम्। *सूत्र० ३६२*।

अणवन्निय– अणपन्निकाः, व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्तिनो व्यन्तरजातिविशेषाः। *प्रश्न० ६९*। वाणमन्तरविशेषः। *प्रज्ञा० ९५*।

अणवयक्खित्ता– अनवेक्ष्य पश्चाद्भागमनवलोक्य। *भग० ३१२*।

अणवयग्गं– अनवनताग्रं–अपर्यन्तम्। *स्था० ४४*। अनन्तं, अपारं, अनवनताग्रं–अनवनतं–अनासन्नं अग्रं–अन्तो यस्य तत्। अनवगताग्रं–अनवगतं–अपरिच्छिन्नं अग्रं–परिमाणं यस्य तत्। *भग० ३५*। कालतोऽपरिमाणम्। *व्यव० २५५*।

अणवयग्ग– अनवदत्, अनपगच्छत्। *उत्त० ५८५*।

अणविक्खया– अप्रेक्षणा (*गणि०*)

अणसणं– अनशनं, भोजननिवृत्तिः। *औप० ३७*। बाहयत-पोऽ शः।*उत्त० ६००*।

अणसण– अनशनम्, आहारत्यागः। *दशवै० २६*। *भग० ९१२*।

अणसणा– अनशनम्, व्रतविशेषः, उपवासः। *भग० १२८*।

अणसायणा– अनाशातना, अहीलना। *दशवै० २४१*। मनोवा-क्कायैरप्रतीपप्रवर्तनम्। *उत्त० १७*।

अणसिओ– अनशितः, न अशितः–भिक्षाप्रदानानभिज्ञेन

लोकेनाभ्यर्हितः। *आव० १४४*।
अणहं– अनघं, अक्षतम्। *सूर्य० २९२*। अणहशब्दोऽक्षतपर्यायो देशश्यस्तेनाणहं–अक्षतं। *जम्बू० २२१*।
अणहवीया– अविणट्ठवीया। *निशी० ८०*अ।
अणहारए– ऋणधारकः। *विपा० ७२*।
अणहारेणं– स्वदेशजाहाराभावेनेति। *स्था० ५४*।
अणहिअपरमत्था– अनधिगतपरमार्थाः। (*गणि०*)
अणहिकडा– अनधिकृता–तल्लक्षणायोगतस्तत्रानन्तर्भाविनी। *प्रज्ञा० २४८*।
अणहियासिया– अनध्यासिनी। *आव० ४२८*।
अणहियासी– अनधिकासिकाः, सञ्ज्ञावेगोत्पीडितः सन् या याति सा। *ओघ० २००*।
अणहे– अनघः, नास्याघमस्तीति, निरवद्यानुष्ठायी। *सूत्र० ६९*।
अणहो– अनघः, अक्षतशरीरः। *प्रश्न० ११५*।
अणाइण्णं– पणगपरिहाणीक्रमेण पत्तं। *निशी० १५७*।
अणाइण्णा– अणासेविय। नि० *१४४*आ।
अणाइन्नं– अनाकीर्णः–असंकुलः। *उत्त० ४२८*।
अणाइयं– अणातीतं, अनादिकं, अज्ञातिकं, ऋणातीतं अणातीतं वा, अविद्यमानादिकं, अविद्यमानस्वजनं, ऋणं वाऽतीतं ऋणजन्यदुःस्थतातिक्रान्तम्, दुःस्थतानिमित्ततयेति ऋणातीतं, अणं वा अणकं–पापमतिशयेनेतं–गतमणातीतम्। *भग० ३५*। आ–समन्तादतीव इतो–गतोऽनाद्यन्ते संसारे आतीतः, न आतीतः अनातीतः, अनादत्तो वा संसारो येन स तथा, संसारार्णवपारगामी। *आचा० २८६*।
अणाइत्तो– अनुपयुक्तः। (*महाप्र०*)
अणाइयंतो– विवादानतिक्रामन्। *व्यव० १०*अ।
अणाइले– अनाविलः, अदीनस्य चतुर्थं नाम। *अन्त० २२*। अकलुषः। *प्रश्न० १११*। अकलुषः, शुद्धस्वभावः। *प्रश्न० १३६*।
अणाइसेसि– अनतिशयी, अवध्याद्यतिशयरहितः। *आव० २४०*।
अणाई– अनादिः, नास्यादिरस्तीति संसारः। *सूत्र० ३४१*।
अणाउट्टी– अनाकुट्टिः। *आव० ३७३*।
अणाउत्तं– असावधानता। *औप० ४२*। अनुपयुक्तः। *स्था० ४३*।
अणाउत्तआइयणया– अनायुक्तवस्त्रादिग्रहणता। *स्था० ४३*।
अणाउत्तमज्जणया– अनायुक्तपात्रादिप्रमार्जनता। *स्था० ४३*।
अणाउत्तो– अनाकुलः–अक्षणिकता। *बृह० ४४*आ।
अणाउल– अनाकुलः, क्रोधादिरहितः। *दशवै० १६६*।
अणाउले– अनाकुलः, *आचा० ४२४*।
अणाउलो– अनाकुलः। *आव० ४०४*।
अणाए– अनया। *आव० ३९९*।
अणाएसे– अनादेशः, न आदेशः, सामान्यम्। *उत्त० ३२*।
अणागई– अनागतिः, सिद्धिः, अशेषकर्मच्युतिरूपा लोकाग्राकाशदेशस्थानरूपा वा। *सूत्र० २२३*।
अणागतं– अनागतम्, अनागतकरणात्, पर्युषणादावाचार्यादि-वैयावृत्त्यकरणान्तरायसद्भावादारत एव तत्तपःकरणम्। *आव० ८४०, स्था० ४९८*।
अणागमणधम्मिणो– अनागमनधर्म्माणः–यस्मिन् मनुष्यलोके अनागमनं धर्मो येषां ते, न पुनर्गृहं प्रत्यागमनेप्सवः। *आचा० २४३*।
अणागमो– अनागमः–अनवसरः। *आचा० १२२*।
अणागयं– अनागतम्, एष्यत्कालम्। *आव० ५०९*।
अणागय– अनागताम्, आयत्याम्। *आव० ५०९*। अनागतं, अनागतकरणादनागतम्। *भग० २९६*।
अणागलिय– अनिर्गलतः–अनिवारितोऽनाकलितः। *भग० ६७३*।
अणागारं– अनाकारम्, अविद्यमानाकारम्। *आव० ८४०*। *स्था० ४९८*। अविद्यमानाकारं–यद्विशिष्टप्रयोजनसम्भवा-भावे कान्तारदुर्भिक्षादौ महत्तराद्याकारमनुच्चारयद्भिर्विधीयते तदनाकारम्। *भग० २९६*।
अणागारपासणया– अनाकारपश्यत्ता–चिन्त्यमानायां प्रकृष्टं परिस्फुटरूपमीक्षणमवसेयम्। *प्रज्ञा० ४३०*।
अणागारो– अनाकारः, यथोक्ताकारविकलः। *जीवा० १८*। सामान्यग्राही। *भग० ७३*।
अणाजीवी– अनाशंसी। *निशी० १८*अ। अनाजीविको निःस्पृहः। *दशवै० १०६*।

अणाडिया– अनादृतिः। *आव० १५*। अपराधः। *बृह० ३०* आ।

अणाढायमाणे– अनाद्रियमाणः–संखडिमनादरयन्। *आचा० ३२९*।

अणाढिअस्स– अनादृतनाम्नः जम्बूद्वीपाधिपतेः। *जम्बू० ३३४, जीवा० ३२६*।

अणाढिउ– जम्बूवृक्षस्थो देवः। *स्था० ६१*।

अणाढियं– अनादृतम्, अनादरं सम्भ्रमरहितम्, कृतिकर्मणि प्रथमदोषः। *आव० ५४३*।

अणाढिय– अनादृतः, जम्बूद्वीपाधिपतिर्व्यन्तरसुरः। *उत्त० ३५२*। अनादृताद्–अनादराद्या सा अनादृता, शिथिलस्य या सा। *स्था० ४७४*।

अणाणत्ता– अनानात्वाः–नानात्ववर्जिता येष्वेवाधारभूता–काशप्रदेशेष्वेके तेष्वेवेतरेऽपि। *भग० ९६१*। नानात्ववर्जिताः देशभेदेनालक्षितनानात्वाः। *प्रज्ञा० ७४*।

अणाणाए– अनाज्ञया, स्वैरिण्या बुद्ध्या।*आचा० ११३*। स्वमनीषिकाचरितोऽनाचारः। *आचा० २२७*।

अणाणुकित्ती– जो एवं ण कथयति। *निशी० ३३३* आ।

अणाणुगामिते– अवधिज्ञानस्य द्वितीयो भेदः। *स्था० ३७०*।

अणाणुगामियत्ताते– अननुगामिकत्वाय–अशुभानुबन्धाय। *स्था० १४९, ३५८*।

अणाणुपुव्वी– अनानुपूर्वी, यत्र पूर्वपश्चाद्विभागो नास्ति। *भग० ८०*। अत्थाग्गहणाईए पदे अप्पत्तो। *निशी० ५३* अ। अनियतक्रमानुपूर्वी। *स्था० ४*। यथोक्तप्रकारद्वयातिरिक्त-स्वरूपा। *अनुयो० ७३*।

अणाणुबंधि– न विद्यतेऽनुबन्धः–सातत्यप्रस्फोटकादीनां यत्र तदननुबन्धि। *स्था० ३६१*।

अणादिट्ठी– अनादृष्टिः, अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य त्रयोदश-मध्ययनम्। *अन्त० ३*।

अणादीओ– अणादिकः, अणं–पापं कर्म आदिः–कारणं यस्य सः। ऋणातीतः, ऋणं–अधर्मेण न देयं द्रव्यं तदतीतोऽति-दुरन्तत्वेनातिक्रान्तः। *प्रश्न० ४*। अनादिकः, प्रवाहापेक्षया-ऽऽदिविरहितः। *प्रश्न० ४*।

अणादीयं– नास्त्यादिरस्येत्यनादिकं। *स्था० ४४*।

अणादेज्ज– अनादेयम्–यदुदयवशादुपपन्नमपि ब्रुवाणो नोपा-देयवचनो भवति, नाप्युपक्रियमाणोऽपि जनस्तस्याभ्युत्था-नादि समाचरति। *प्रज्ञा० ४७५*।

अणापुच्छा– अनापृच्छा। *आव० १९८*।

अणाबाहं– अनाबाधकत्वं वेदनाभावत्ववत्। *उत्त० ५१०*।

अणाबाहि– अनाबाधः–मोक्षसुखम्। *स्था० ४८८*।

अणाभिगता– अगहियसुत्तत्था। *निशी० १४३* अ।

अणाभिडंतो– अस्पृशन्। *निशी० १८७* आ।

अणाभोगं– अनाभोगम्, अतिचारविशेषः। *आव० ५६४*। विस्मृतिः। *स्था० ४८५*।

अणाभोगनिव्वत्तिए– अनाभोगनिर्वर्तितः, यदा त्वेवमेव तथा-विधमुहूर्तवशाद्गुणदोषविचारणाशून्यः, परवशीभूय कोपं कुरुते तदा सकोपः। *प्रज्ञा० २९१*।

अणाभोगबकुसो– अनाभोगबकुशः, योऽनाभोगेनाजानन् करोति सः, बकुशस्य द्वितीयो भेदः। *उत्त० २५६*। सहसाकारी। *स्था० ३३७*।

अणाभोगवत्तिया– अनाभोगप्रत्ययिकी, विंशतिक्रियामध्ये चतुर्दशी। *आव० ६१२*। अनाभोगेन पात्राद्याददतो निक्षिपतो वा। *स्था० ३१७*। अनाभोग–अज्ञानं प्रत्ययो–निमित्तं यस्याः सा। *स्था० ४३*।

अणाभोगे– अनाभोग–अज्ञानम्। *भग० ९११*। एकान्त–विस्मरणम्। *व्यव० ३३२* आ।

अणाभोगो– अनाभोगः, अत्यन्तविस्मृतिः। *आव० ८५०*। *निशी० २९* आ। आज्ञानं। *निशी० १४७* आ। विस्मृतिः। *आव० ८४८*।

अणायगे– अनायकः, अन्यो विद्यते नायकोऽस्येति अनायकः–स्वयम्प्रभुश्चक्रवर्त्यादिः। *सूत्र० ६१*। अविद्यामाननायको राजा। *सम० ५३*।

अणायण– अनायतनम्, विरुद्धस्थानम्। *दशवै० २२६*। अस्थानम्, वेश्यासामन्तादि। *दशवै० १६५*।

अणायतणं– अनायतनं, साधूनामनाश्रयः। *प्रश्न० १३८*। *निशी० ११६* अ। स्त्रीपशुपण्डकसंसक्तं स्थानम्। *ओघ० १२*।

अणाययणं– पशुपक्षिमद्गृहं। *बृह० १९५* आ।

अणाययण– स्त्रीपशुपण्डकसंसक्तगृहवज्जणं। *निशी० २५* आ।

अणायरिया– अनार्या–अर्द्धषड्विंशजनपदबाह्यानि। *आचा० ३७७*।

अणायवेतियं– छायायाम्। *निशी० ७६* आ।

अणाया– अनात्मा घटादिपदार्थः। *सम० ५*।

अणायार– अनाचारः, सावद्ययोगः। *दशवै० २३३*।

अणायारो– अनाचारः। *आव० ७७८*। गिलिते सति आधाकर्मणि दोषविशेषः, यावल्लम्बनोत्क्षेपोत्तरकालम्। *आव० ५७६*। व्यभिचारः। *आव० ५७८*। आचारस्य साध्वाचारस्याभावः परिभोगतो ध्वंसः। *व्यव० १०* अ।

अणारद्धं– अनारब्धम्, अनाचीर्णम्। *आचा० १४८*।

अणारिओ– अनार्यः म्लेच्छादिः। *प्रश्न० ५*। क्रुरकर्म्माणः। *आचा० १८६*।

अणारिय– आचार्यं मुक्त्त्वा। *बृह० २४५* अ। म्लेच्छाः। *स्था० ३०१*।

अणारिया– कामकहा। *निशी० २५८* अ। अनार्यः–क्षेत्रभाषाकर्मभिर्बहिष्कृतः। *सूत्र० ३९६*। *उत्त० ३५८*। अनार्यः–न आर्यः, अज्ञानावृतत्वादसदनुष्ठायी। *सूत्र० ३३*।

अणारोहए– अनारोहकः, योधवर्जितः। *भग० ३२२*।

अणालावे– अनालापः कुत्सित आलापः। *स्था० ४०७*।

अणालिओ– अचेष्टा। *आव० ३७०*।

अणावडंतो– अस्पृशन्। *निशी० १८७* अ।

अणावसं– अवशम्। (*मरण०*)

अणावाय– अनापातः। *आचा० ३३५*। अनापात–आपातादिरहिता उच्चारभूमी। *दशवै० २३१*। *उत्त० ५१८*। विजनम्। *आचा० ३३९*। स्त्र्याद्यापातरहितः। *उत्त० ६०८*।

अणावायमसंलोए– अनापातासंलोकम्। *ओघ० १२२*।

अणाबाहो– मोक्खो। *दशवै० १३*।

अणासगं– परिज्ञा। *निशी० ३५२* आ। अनशनं। *निशी० २५८* अ।

अणासए– अनश्र्वः, अश्र्वरहितः। *भग० ३२२*।

अणासन्नं– अनासन्नं, यद्द्रव्यासन्नं भावासन्नं वा न भवति। *ओघ० १२३*।

अणासवो– अनाश्रवः, मध्यस्थो रागद्वेषरहितः। *सूत्र० २४४*। कर्मबन्धनिरोधोपायत्वात्, अहिंसायाः पञ्चत्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९*। अनास्रवा–व्रतविशेषाः। *आचा० १८२*।

अणासायणाविणअ– अनाशातनाविनयः, उपचारविनयभेदः। *दशवै० २४९*।

अणासेवियं– अनास्वादितम्। *आचा० ३२५*।

अणाहपव्वज्जा– उत्तराध्ययनस्य विंशतितमाध्ययननाम। *सम० ६४*।

अणाहप्पाओ– अनाथात्मानौ। *आव० ७१*।

अणाहसाला– अनाघशाला–आरोग्यशाला। *व्यव० ५७* आ। *निशी० ३८* आ।

अणाहसालालओ– अनाथशालालयः *आचा० ११९*।

अणाहारो– अनिष्टं शोभनमपि न रोचते परि अणाहारो भवति। *निशी० ५१* अ।

अणाहूय– अनाहूतः, अनित्यपिण्डः, अनभ्याहृतो वा, स्पर्धा-रहितः। *भग० २९३*। *भग० २९४*।

अणिंगालं– रागपरिहारेणेत्यर्थः। *प्रश्न० ११२*।

अणिंत– अनिर्गच्छन्। *निशी० २५८* आ।

अणिंदियं– अनिन्दितं–शिष्टनिन्द्येन–स्वपरप्रशंसादिहे–तुनाऽनुत्पादितम्। *उत्त० ६६७*।

अणिंदिआ– अनिन्दिता, अष्टमी दिक्कुमारी। *जम्बू० ३८३*।

अणिंदिया– अनिन्दिता, अधोलोकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव० १२१*।

अणिंदिया– अनिन्द्रियाः अपर्याप्ताः, केवलिनः, सिद्धाः उपयोगतः। *स्था० ३५५, ५१९*।

अणिगणा– अनग्ना, अनग्ना नाम द्रुमगणाः। *जम्बू० ९९*।

अणिगामसुक्खा– अनिकामसौख्याः–अप्रकृष्टसुखाः। *उत्त० ४००*।

अणिगिण– अनग्नत्वम्, सवस्त्रत्वं तद्धेतुत्वादनग्ना इति। *सम० १८*।

अणिगूहंतो– अनिगूहन्, प्रकटयन्। *आव० ५३४*।

अणिगूहियबलविरिए– अनिगूहितबलवीर्यः, न निगूहिते बलवीर्ये येन सः बलं–शारीरं वीर्यं–आन्तरः शक्तिविशेषः। *आव० २५१*।

अणिग्गहो– अनिग्रहः, अनिषेधो मनसो विषयेषु प्रवर्त्तमानस्य, अब्रह्मण एकादशं नाम। *प्रश्न० ६६*। स्वैरः। *प्रश्न० ३१*।

अणिच्चं– अनित्यम्, न नित्यमस्थिरत्वात्। *प्रश्न० ९६*।

अणिच्चमावासं– अनित्यावासः–

मनुष्यादिभवस्तच्छरीरम्। *आचा० ४२१*।
अणिच्चाणुप्पेहा– अनित्यानुप्रेक्षा– जीवितादेरनित्यस्यानुप्रेक्षा। *स्था० १९०*।
अणिच्चेऊण– अ(न) चयित्वा। *आव० १४६*।
अणिच्छियत्ता– अनीप्सितता, आप्तुमनिष्टता। *भग० २३*। प्राप्तुमनभिवाञ्छितत्वम्। *भग० २५३*। *प्रज्ञा० ५०४*।
अणिच्छियव्वो– अनेष्टव्यः, मनागपि मनसाऽपि न प्रार्थनीयः। *आव० ५७२, ७७८*।
अणिज्जिण्णा– अनिर्जीणः, सामस्त्येनात्मप्रदेशेभ्यऽपरिशा-टितः। *प्रज्ञा० ६०२*।
अणिज्जुहियाअंसी– अनिर्यूढा–कृतविभागापि नान्यत्र नीतां-शिका। *बृह० १९९* आ।
अणिज्झाएत्ता– अनिद्ध्याय् चक्षुरव्यापार्य। *भग० ३१२*।
अणिट्ठं– अनिष्टम्, सतामनभिलषणीयम्। *आव० ५८१*।
अणिट्ठत्ता– अनिष्टता, इष्टा–मनसा इच्छाविषयीकृता तद्विपरीता अनिष्टा तस्या भावः। *प्रज्ञा० ५०४*। अनिष्टता, इच्छाया अविषयता। *भग० २५३*।
अणिण्हवणं– अनपलापः। *निशी० ९* अ।
अणितणा– वस्त्रदायिनः। *स्था० ५१७*।
अणितिए– अनितिकः–अविद्यमाननियतस्वरूपः। *भग० ४६१*।
अणित्थंत्थं– अनित्थंस्थम्, इतीदंप्रकारमापन्नमित्थं, इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थं, न इत्थंस्थं अनिंत्थस्थमिति, केनचित्प्रकारेण लौकिकेनास्थितमिति। *आव० ४४५*। नेत्थं तिष्ठतीति, अनियताकारम्। *जीवा० २५*।
अणित्थंथे– अनित्थंस्थं परिमण्डलादिव्यतिरिक्तम्। *भग० ८५८, ८५९*।
अणिदा– अनिदा–अनिर्द्धारणा। *भग० ४४*। चित्तविकला सम्यग्विवेकविकला वा। *प्रज्ञा० ५५७*।
अणिदाणो– अनिदानः, देवेन्द्राद्यैश्वर्याप्रार्थकः। *प्रश्न० १४७*।
अणिज्जंतं- अणिद्यत्तियं कम्मं ण कारविज्जति। *निशी० १०६* अ।
अणिमिसच्छो– अनिमेषाक्षः, निश्र्चलनयनः। *आव० ७८४*।
अणिमिसनयणे– अनिमिषनयनम्, विकसितं नयनम्। *भग० १७१*।
अणिमिसा– अनिमेषा। *आव० १२४*।
अणिमिसे– अनिमिषाः, मत्स्याः। *दशवै० १०२*।
अणियं– अणिकं, अग्रम्–तुण्डम्। *प्रश्न० ११५*। अनीकं–कटकम्। *उत्त० ४३८*।
अणियट्ट– अनिवर्त्तः, मोक्षः। *आचा० १९३*।
अणियट्टिबायरो– अनिवृत्तिबादरः, निवृत्तिबादरादूर्ध्वं लोभाणुवेदनं यावत् भूतग्रामस्य नवमं गुणस्थानम्। *आव० ६५०*।
अणिअट्टी– भरते भविष्यज्जितः। *सम० १५४*।
अणियण– अनग्नकारणत्वादनग्न–विशिष्ट वस्त्रदायिनः, संज्ञाशब्दो वाऽयमिति। *स्था० ३९९*।
अणियणो– अनग्नः। *आव० १११*।
अणियतो– अनियतः, अनियमवान, अनवस्थित। पश्र्न० २८।
अणियत्तो- अनिवृतः। *आव० ८२३*।
अणियदरिसणं– हयगजरथपदात्यनीकदर्शनम्। *निशी० ७१* अ।
अणियया– अनियता–अनिर्धारिता। *प्रज्ञा० ३३९*।
अणिया– अनिदा, अकारणम्। *आचा० ३४*। मेधाधारणेन्द्रिय-पाटवदेहायुर्वर्धनकारी। *निशी० २५४* अ। अनाभो-गतः। *सम० १४६*।
अणियाणे– प्रार्थनारहितः। *भग० १२३*।
अणियाहिवई– अनीकाधिपतयः–गजादिसैन्यप्रधाना एरावता-दयः। *स्था० ११७*।
अणिलामयी– वातरोगिणी– *बृह० २१९* अ।
अणिलो– निलओ जस्स नत्थि। *दशवै० ९८*।
अणिवारिए– अनिवारितः, निषेधकरहितः। *विपा० ५२*।
अणिविद्धं– कम्मं ए कारविज्जति। *निशी० १०६* अ।
अणिव्वणं– सचित्तं। *निशी० ४३* आ।
अणिसिट्ठिं– अनिसृष्टं, बहुसाधारणे सत् यदेक एव ददाति। *प्रश्न० १५५*। परिहारिकम्। *निशी० १६१* आ। मदुकर्तव्यं। *ओघ० २१४*। *स्था० ४६०*। *भग० ४६६*। *निशी० १६* अ, *४८* आ। तत्स्वामिनानुऽनुत्संकलिम। *आचा० ३२५*। दोषविशेषः। *आचा० ३२९*। साधारणं बहू-नामेकादिना अननुज्ञातं दीयमानम्। *स्था० ४६७*। दोष-विशेषः। *प्रश्न० १४४*।
अणिसिद्धो– अनिषिद्धः, अनुपयुक्तः। *आव० २६७*।

अणिस्सि(ब्भि) अप्पा– अनिभृतात्मा, अनिदानः। *आव० ८४३*।

अणिस्सिए– अनिश्रितः, द्रव्यभावनिश्रारहितः प्रतिबन्धवि-मुक्तः। *दशवै० २२३*।

अणिस्सिओवहाणे– अनिश्रितोपधानं, ऐहिकामुष्मिकापेक्षा-विकलं तपः, योगसंग्रहे चतुर्थो योगः। *आव० ६६४*। अनिश्रितं तपः। *प्रश्न० १४६*।

अणिस्सितं– अनिश्रितम्। *आव० ३५८*। सर्वाशंसारहितः। *भग० ३८५*।

अणिस्सियं– अनिश्रितम्, कीर्त्यादिनिरपेक्षम्। *प्रश्न० १२६*।

अणिस्सिय– अनिश्रितम्, कुलादिष्वप्रतिबद्धम्। *दशवै० ७२*।

अणिस्सेयस– अनिश्रेयसः–अमोक्षाय। *स्था० १४९*। अकल्याणाय, अमोक्षाय। *स्था० २९२*। अकल्याणाय। *स्था० ३८५*।

अणिस्सो– अनिश्रः–कस्यचित्संबन्धिनाऽवष्टम्भेन रहितः। *उत्त० ६३३*।

अणिहय– अनिहतः, अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य तृतीयम-ध्ययनम्। *अन्त० ३*।

अणिहे– अनिभः, अमायः। *दशवै० २६८*। अनिहः, परीषहोपसर्गैर्निहन्यत इति निहः, न निहः अनिहः-उपस-र्गैरपराजित इति। *सूत्र० ६९*। अस्निहः–अष्टकर्म्मरहितः, अरागः–रागद्वेषरहितः, भावरिपुभिरनिहतः। *आचा० १९०*। स्निह्यत इति स्निहः, न स्निहः–सर्वत्र ममत्वरहित इति। *सूत्र० ६९*। अकुट्टिले। *दशवै० १५१*।

अणीए– अनीकम्, सैन्यम्। *भग० ८९*।

अणीयजसे– अनीकयशाः, नागस्य गाथापतेः कुमारः। *अन्त० ४*।

अणीयसे– अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *अन्त० ३*।

अणीसट्ठं– हस्तमानावग्रहादस्फिटितम्। *बृह० २३९* अ।

अणीहारि– अनिर्हारि, तपोभेदः। *उत्त० ६००*।

अणीहारिमे– अनिर्हरणाद् गिरिकन्दरादौ अनशनम्। *स्था० ९४*। जइ बहिं पडिवज्जइ। *निशी० ५८* अ।

अणु– अनु–प्रतिदिवसम्। *सूर्य० १३६, १३३*। थेवे *दशवै० ८९*। स्तोकप्रदेशम्। *प्रज्ञा० २६३*। पश्चाद्भावे स्तोके च। *बृह० ३३*अ। स्तोकम्। *प्रज्ञा० ५०२*। प्रमाणतो वज्रादि। *दशवै० १४७*। लघुः, हीन। *सूर्य० २६१ जम्बू० ५२२*।

अणुअतणुअ– अनुकतनुकानां–अतिसूक्ष्माणाम्। *जम्बू० २३७*।

अणुओग– अनुयोगः, अर्थकथनम् सूत्रादनुपश्चादर्थस्य योगोऽनुयोगः सूत्राध्ययनात्पश्चादर्थकथनम्। अणोर्वा लघी-यसः सूत्रस्य महताऽर्थेन योगोऽनुयोगः। *आचा० २*। व्याख्यानः। *ओघ० ८१*।

अणुओगत्थो– अनुयोगार्थः, व्याख्यानभूतोऽर्थः। *आचा० ७*।

अणुओगदारं– अनुयोगद्वारम्, सूत्रविशेषः। *आव० ७४०*। अस्वाध्याये परिहर्तव्यसूत्रविशेषः। *निशी० ७१* आ०।

अणुओगदारे– अनुयोगद्वारम्, अनुयोगद्वारसूत्रम्। *भग० २२१*।

अणुओगो– अनुयोगः, सूत्रस्यार्थेनानुयोजनम्, अभिधेये व्यापारः सूत्रस्य योगो वा, अनुकूलोऽनुरूपो वा योगः। *आव० ८६, स्था० ४८१*।

सूत्रपाठानन्तरमनुपश्चामत्सूत्रस्यार्थेन सह योगो–घटना। *जीवा० २*। अनुकूलःअविरोधी सूत्रस्या-र्थेन सह योगो वा। *जीवा० २*। सूत्रस्यार्थेन सह सम्बन्धनं, अनुरूपोऽनुकूलो वा योगो व्यापारः सूत्रस्यार्थ–प्रतिपादन-रूपः। अणोः–लघोः पश्चाज्जाततया वाऽनुशब्दवाच्यस्य योऽभिधेयो योगो–व्यापारस्तस्तत्सम्बन्धो वाऽणुयोगो अनु-योगो वा। *जम्बू० ४*। दृष्टिवादचतुर्थो भेदः। *सम० १२८*। नियोगः। *आव० ६९४*। अनुयोजनम्, अनुकूलो वा योगः। अणु–सूत्रं, महान् अर्थस्ततो महतोऽर्थस्याणुना सूत्रेण योगो वा। *ओघ० ४*। विचारः। *स्था० ४८१, ४९५*। अनुरूपोऽ-नुकूलो वा योगः। *सम० १३१*। अध्ययनार्थः। *आव० ५४*। सूत्रस्पर्शकनिर्युक्तिः सूत्रानुगमश्च। *आव० ८६*। परीक्षा। *आव० १५७*।

अणुकंपं– अनुकम्पां–उपष्टम्भम्। *स्था० १७०*।

अणुकंपओ– अनुकम्पकः–अनुरूपक्रियाप्रवृत्तिः। *उत्त० ३५१*।

अणुकंपा– अनुकम्पा, अनुग्रहः। *दशवै० ६७*। भक्तिः। *ओघ० १९६*। *आव० ३४८*। सम्यक्त्वगुणविशेषः। *आव०*

५९१। अनुक्रोशः। *सम० १२७*। दीनानाथविषयं दानम्। *स्था० ४९६*।

अणुकंपाए– अनुकम्पया–अनुग्रहेण। *व्यव० १७२* आ।

अणुकंपे– अनुकम्पते, उपकुरूते। *उत्त० ४१९*।

अणुकड्ढइ– अनुकर्षयति। *आव० २१८*।

अणुकुएति– प्रच्छादयति, अणुक्षिप्ता। *निशी० १८०* अ

अणुकूला– संजमविग्घकरा (राज्यार्पणादिकाः) *निशी० ११४* आ।

अणुक्कंतो– अनुक्रान्तः–अनुचीर्णः। *आचा० ३०६*।

अणुक्कमं– अनुक्रमः। *आव० ३४२*। पारम्पर्यम्। *उत्त० १४७*।

अणुक्कमंतो– अनुक्रम्यमाणः, प्रेर्यमाणः। *सूत्र० १३६*।

अणुक्कसाई– अनुत्कशायी, अणुकषायी, उत्कण्ठितः सत्कारादिषु शेत इत्येवं शील उत्कषायी, न तथा। यो न सत्कारादिकमकुर्वते कुप्यति, तत्सम्पात्तौ वा नाहङ्कारवान् भवति सः। *उत्त० १२४*। अणवः–स्वल्पाः संज्वलननामान इतियावत् कषायाः–कोधादयो यस्य। *उत्त० ४२०*।

अणुगच्छइ– अनुगच्छति, आसन्नो भवति। *जम्बू० १८७*।

अणुगच्छण– अनुगमनम्, आगच्छतः प्रत्युद्गमनम्। *दशवै० २४१*।

अणुगच्छमाणो– अनुगच्छन्–अवगच्छन्–बुद्ध्यमानः सन्। *आचा० २२२*।

अणुगम– अनुगमः, अनुगमनमनेनास्मादस्मिन्निति वा अर्थक-थनम्। *आचा० ३*।

अणुगमणं– अनुगमनम्, आगच्छतः प्रत्युद्गमनम्। *उत्त० १७*।

अणुगमिओ– अनुगमितः, अनुनीतः। *आव० ५५*।

अणुगमो– अनुगमः निक्षिप्तसूत्रस्यानुकूलः परिच्छेदोऽर्थकथ-नम्। *जम्बू० ५*।

अणुगयं– अनुगतं, अनवच्छिन्नम्। *प्रश्न० ६६*। युक्तम। *दशवै० २०७*। अभिप्रायानुवर्तिनमात्मानम्। *उत्त० ३२२*। युक्त। *उत्त० ६३१*।

अणुगामं– अनुग्रामः, ग्राममार्गानुकूलः लघुर्वा ग्रामः, रूढित एकस्माद्वा ग्रामादन्यो ग्रामः। *उत्त० ९१*।

अणुगामियत्ताए– अनुगामिकता–परम्परया शुभानुबन्धो सुखाय भविष्यति। *जीवा० २४२*।

अणुगीया– अनुगीता तीर्थकरादिभ्यः श्रुत्वा प्रतिपादिता। *उत्त० ३८५*।

अणुग्गह– अनुग्रहः, अनुग्रहपरिहरणा अक्खोडभंग–परिहरणा, (अकृष्टभूशुल्कपरिहारः) *आव० ५५२*। ज्ञानाद्युपकारः। *स्था० १५५*।

अणुग्गहकसिणं– छण्हं मासाणं आरोवियाणं छद्दिवसा गता, ताहे अण्णो छम्मासो आवण्णो, ताहे जं तेण अद्धवूढं तं ज्झोसितं जं पच्छाआवण्णं छम्मासितं तं वहति एत्थ पंच-मासा चउव्वीसं च दिवसा तेण ज्झोसिया। *निशी० १३५* अ।

अणुग्गहत्थं– अनुग्रहार्थं–अनुग्रहः–उपकारोऽभिधीयते, अर्थशब्दः प्रयोजनवचनः। औघ० ४।

अणुग्गहपरिहारो– अनुग्रहपरिहारः–राजकृतानुग्रहवशेन एकद्वित्र्यादिवर्षमर्यादया यथोक्तरूपं खोटादिभंजन् एक द्वै त्रीणिवर्षाणि यावत् वसति, यावन्तं वा कालं राज्ञानुग्रहः कृतस्तावन्तं कालं वसति, न च हिरण्यादि प्रददाति, नापि वेष्टिं करोति, न चापि चारभटादीनां भोजनादि प्रदानं विधत्ते, एष खोटादिभंगो। *व्यव० ४५* अ। तत्तियं कालं सो दव्वादिसु परिहरिज्जति तावत्कालं न दप्पतेत्यर्थः। *निशी० ८९* आ।

अणुग्गहो– अनुग्रहः, उपकारः। ओध० ४

अणुग्गामो– अनुग्रामः, विवक्षितग्रामानन्तरो ग्रामः। *औप० २२*।

अणुग्घाई– अनुद्घातिकं–यत्र गुरूमासादि प्रायश्चितं वर्ण्यते। *प्रश्न० १४५*।

अणुग्घाडिया– अनुद्घाटिता, अस्पृष्टा। *दशवै० ४१*।

अणुग्घाता– गुरवः। *निशी० ८७* अ।

अणुग्घातियं– जं णिरंतरं वहति गुरुं। *निशी० ३०५* आ। गुरुगं। *निशी० २५७* अ।

अणुग्घायं– आचारप्रकल्पस्य सप्तविंशतितमो भेदः। *आव० ६६०*।

अणुग्घायकसिणं– जं कालगं जहा मासगुरूगादि अहवा जं णिरंतरं दाणं एस मासलहुगापि णिरंतरं दिज्जमाणं अणुग्घातं भवति। *निशी० १३५* आ।

अणुग्घायण– अणोद्घातन–अणत्यनेन जन्तुगणश्चतुर्गतिकं संसारमित्यणं–कर्म्म तस्योत्–प्राबल्येन घातनम्–अपनय-नम्। *आचा० १४७*।

अणुग्घायाणि– गुरूणि प्रायश्चित्तानि। *बृह० ६७* अ।
अणुघट्टंता– अतृप्यन्तः। *ओघ० ७८*।
अणुघाईय– अणुद्घातं, न विद्यते उद्घातो–लघुकरणलक्षणो यस्य तपोविशेषस्य तत् यथाश्रुतदानं, तद्येषां प्रतिषेवाविशे-षतोऽस्ति ते। *स्था० ३११*।
अणुचरिया– चरिका, नगरप्राकारयोरपान्तराले। *बृह० ५३* अ।
अणुचिण्णो– अनुचीर्णम्, आचरितम्। *आव० २२७*। अनुष्टितः। *ओघ० १०३*।
अणुचिंतणं– अनुचिन्तनम्, पर्यालोचनम्। *आव० ५८९*।
अणुचिन्नं– अनुचीर्णम् सम्यक् तदर्थावगमासंगशक्तिग–र्भानिवर्तकसमभावप्राप्त्या धर्ममेघनामकसमाधिरूपेण परिणमितम्। *जीवा० ४*। अनुचीर्णाः–कायसंगमागताः सम्पातिमादयः। *आचा० २१७*।
अणुचिय– अनुचितः–भावितःशैक्षो वा। *बृह० २३८* अ।
अणुजत्तं– अनुयात्रम्। *उत्त० ३०४*। अनुयात्रा, राजपाटिका। *आव० ७२०*।
अणुजत्ता– अनुयात्रा। *आव० ३६५*।
अणुजाए– अनुजातः, तद्दशः। *सूर्य० २३३*।
अणुजाणं– रथयात्रा। *बृह० १५५* अ। *बृह० २५८* आ। *व्यव० १७* आ।
अणुजाणपेक्खओ– अनुयानप्रेक्षकः। *आव० ५७७*।
अणुजाणे– अनुजानन्। *उत्त० २९३*।
अणुजाते– पितृसमः। *स्था० १८४*।
अणुजायं– अनुयातं, भृतम्। *जम्बू० २१२*।
अणुजीवंति– अनुजीवन्ति–तदुपार्जितवित्ताद्युपभोगतः उप-जीवन्ति। *उत्त० ४४१*।
अणुजोगगत– तीर्थंकरादिपूर्वभवादिव्याख्यानग्रंथो गण्डिका-नुयोगश्च भरतनरपतिवंशजानां निर्वाणगमनानुत्तरविमानवक्त-व्यताव्याख्यानग्रन्थ इति द्विरूपेनुयोगे गतोऽनुयोगगतः। *स्था० ४९१*।
अणुजोगी– अनुयोगी–अनुयोगो–व्याख्यानं प्ररूपणं वा। *स्था० ३७५*।
अणुजोगो– अणोः–लघोः पश्चाज्जाततया वा अनुशब्दवाच्यस्य सूत्रस्य योऽभिधेये योगो–व्यापारस्तेन सम्बन्धो वा सोऽणु-योगोऽनुयोगो वेति। *स्था० ३*। अणुपच्छाभावओ य थेवे य। *बृह० ३३* अ। विचारः। *सम० ५०*। सूत्रस्यार्थेन सह सम्बन्धनम्, सूत्रस्यार्थप्रतिपादनरूपः। *स्था० ३*।
अणुज्जंगी– अनवद्याङ्गी, शिवादेवीविशेषणम्। *उत्त० ४१६*। श्रीमहावीरस्वामिनः सुता जमालेर्भार्या, प्रियदर्शनाऽपरनाम। *उत्त० १५३*।
अणुज्जइज्जमाणाइं– एकं स्वरूपतोऽनृजूनि अपरं च तेषां क्वचित्कार्येऽनुपयोगात्केनचिदनृजूक्रियमाणानि। *उत्त० ५४९*।
अणुज्जता– ऋजुभावविरहितः। *निशी० २८९* आ।
अणुज्जा– अनवद्याङ्गी, श्रीमहावीरस्वामिनो ज्येष्ठा भगिनी, सुदर्शनाऽपरनाम। *उत्त० १५३*। महावीरस्वामिनः पुत्रीनाम। *आचा० ४२२*।
अणुज्जियत्तं– वराकत्वम्। *बृह० २* आ।
अणुज्जुए- अनृजुकः, कश्चिदृजूकर्तुमशक्यतया। *उत्त० ६५६*।
अणुज्जुकं– अनृजुकम्, वक्रम्, अधर्मद्वारस्य नवमं नाम। *प्रश्न० २६*।
अणुट्ठाणे– अनुत्थाने। *स्था० ३३०*।
अणुट्ठिएसु– अनुत्थितेषु–श्रावकादिषु। *आचा० २५६*।
अणुट्ठिया– अनुत्थिता, निविष्टा। *आव० ७२७*।
अणुट्ठिहंतो– अनुत्तिष्ठन्तः। *बृह० ४* अ।
अणुण्णवण– अनुज्ञापयति। *ओघ० १९९*।
अणुण्णवणाजयणा– वसत्याद्यनुज्ञापनदोषगुणाः। *निशी० १२* आ।
अणुण्णवेंति– अनुज्ञापयन्ति। *आव० ११७*।
अणुण्णासं– नासिकाविनिर्गतस्वरानुगतम्। *जम्बू० ४०*।
अणुण्णेत्ता– अनुनीय–प्राप्य ध्यात्वा। *सम० १२३*।
अणुतडियभेय– अनुतटिकाभेदः, अवटतटभेदवद् यो भेदः। *भग० २२४*।
अणुतडियाभेदे– अनुतटिकाभेदः, इक्षुत्वगादिकः। *प्रज्ञा० २६७*।
अणुत्तपत्तो– लज्जनीय। *निशी० २६६* आ।
अणुत्तरं– अनुत्तरम्, सम्यक्। *दशवै० १५९*। अनन्यसदृशः। *आव० ६०*। अनुत्तरं–सर्वसंयमस्थानोपरिवर्त्तिनं। *उत्त० ३९३*।
अनुत्तरां– सर्वलोकाकाशोपरिवर्त्तिनीमतिप्रधानां वा।

उत्त० ३९३।
अणुत्तर– अनुत्तरम्, वृद्धिरहितम्। *आचा० १४*।
अणुत्तरणवासो– अनुत्तरणपाशः, आत्मनः पारतन्त्र्यहेतुतया पाशवत्पाशः, अनुत्तरणश्चासौ पाशश्च। *उत्त० ४३*। अनुत्तरणवासः–न विद्यते उत्तरणं–पारगमनमस्मिन् सती-त्यनुत्तरणः, स चासौ वासश्च–अवस्थानम्। *उत्त० ४३*।
अणुत्तरनाणी– केवलज्ञानवान्। *उत्त० २७०*।
अणुत्तरधरे– न विद्यते उत्तरमन्यत्प्रधानमेषामिति। *उत्त० ३५७*।
अणुत्तरधरो– अनुत्तरधरः, न विद्यते उत्तरं अन्यत्प्रधानमेषा-मित्यनुत्तराः, ते च प्रक्रमात्प्रकर्षप्राप्ता ज्ञानादय एव गुणा-स्तान् धारयतीति। अनुत्तरान् गुणान् धारयतीति वा। *उत्त० २५७*।
अणुत्तरविमाणे– नैषामन्यान्युत्तराणि विमानानि सन्ति इति अनुत्तरविमानानि। *अनुयो० ९२*।
अणुत्तरे– स्थित्यादिभिः सकलनरकज्येष्ठेऽप्रतिष्ठान इति। *उत्त० ३९२*।
अणुत्तरो– अनुत्तरः–न विद्यन्ते उत्तराः–प्रधानाः स्थितिप्र-भावसुखद्युतिलेश्यादिभिरेभ्योऽन्ये देवाः। *उत्त० ७०२*।
अणुत्तरो– अनुत्तरः, कृष्णवासुदेवागमनम्। *आव० १६३*। अचल *१* विजयभद्र *२* बलदेवत्रयागमनम्। *आव० १६३*।
अणुत्तरोववाइय– अनुत्तरोपपातिकम्। *भग० २२२*।
अणुत्तरोववाइया– अनुत्तरोपपातिकाः *प्रज्ञा० ६९*।
अणुदिन्नं– (अनुदीर्णम्)। *भग० ५८*।
अणुदिसा– अनुदिशः, प्रतिदिशः। *दशवै० २०१*। एकप्रदेशा अनुत्तराः (दिक्कोणाः)। *स्था० १३३*।
अणुद्दिट्ठो– अनुद्दिष्टः, यावन्तिकादिभेदवर्जितः। *प्रश्न० १०८*।
अणुद्धरी– अनुद्धरी, आत्मदोषोपसंहारविषये द्वारवत्याम–मर्हमित्रश्रेष्ठिभार्या। *आव० ७१४*।
अणुदुअ– अनुद्धताम्, आनुरूप्येण यथामार्दङ्गिकविधि उद्धता–वादनार्थमुत्क्षिप्ता। *जम्बू० १९४*।
अणुधम्मो– अनुधर्मः। *सूत्र० ३९९*।
अणुनई– अनुनदि, नदीं नदीं प्रति। *आव० ४५३*।
अणुनवनं– अनुज्ञातम्। *ओघ० १६०*।
अणुनाओ– अनुज्ञातः। *ओघ० २१५*।
अणुनासं– सानुनासिकं नासिकाकृतस्वरम्। *स्था० ३९६*।
अणुन्नया– अनुन्नया–नोर्ध्वमुखा। *व्यव० २३७* आ।
अणुन्नवणा– अनुज्ञापना, वन्दनके द्वितीयं स्थानम्। *आव० ५४८*।
अणुन्नविय– अनुज्ञापितः। *आचा० ४२६*। अनुज्ञाप्ययाचित्वा। *आचा० ३३८*।
अणुन्नवेमाण– तत्स्वजनादींस्तत्परिष्ठापनायानुज्ञापयन्तः। *स्था० ३५४*।
अणुन्ना– अनुज्ञा, अनुमोदनम्। *सूत्र० ३२९*। सूत्रार्थयोरन्यप्रदानम्। *व्यव० २६* अ। अधिकारदानं। *स्था० १३९*।
अणुन्नायं– अनुज्ञातम्, भोग्यतयैव वितीर्णम्। *प्रश्न० १०२*।
अणुपभु– जुवराया, सेणावति। *निशी० १७४* आ। सेनाधिपतिः। *बृह० ९०* आ।
अणुपरियन्ति– अनुपरियन्ति, सातत्येन पर्यटन्ति। *उत्त० २९६*।
अणुपरिवट्टइ– अनुपरिवर्त्तयते, आत्मनश्चावयते। *सूर्य० १०७*।
अणुपरिवट्टिय– अनुपरिवर्त्त्य, प्रादक्षिण्येन परिभ्रम्य। *जीवा० ३७५, ३९९*।
अणुपरिहारी– जतो जतो परिहारी गच्छति ततो ततो अणुपिट्ठतो गच्छति। अणु–थोवं पडिलेहणादि साहेज्जं करेतीति। *निशी० १३२* आ।
अणुपविट्ठे– अनुप्रविष्टः–तदुदयवर्ती। *स्था० २१९*।
अणुपस्सओ– अनुपश्यतः–पर्यालोचयतः। *उत्त० ३१०*।
अणुपात्तं– कम्मं ण कारविज्जतितित्ति। *निशी० १०६*।
अणुपालइत्ता– अनुपाल्य–सततमासेव्य। *उत्त० ५७२*।
अणुपालणा– अनुपालना, *अनुयो०* विशुद्धिः, प्रत्याख्यानशुद्ध्याःपञ्चमो भेदः। *आव० ८४७*।
अणुपालणासुद्धे– अनुपालनाशुद्धं–कान्तारादिषु न भग्नं यत्प्रत्याख्यानम्। *स्था० ३४९*।
अणुपालियं– अनुपालितं, पूर्वकालसाधुभिः पालितत्वाद्विव-क्षितसाधुभिश्चानु–

पश्र्चात्पालितमिति। *प्रश्न० ११३*।

अणुपालिया– आत्मसंयमानुकूलतया पालिता। *स्था० ४४०*।

अणुपालेइ– अनुपालयति। *भग० १२५*।

अणुपालेमि– अनुपालयामि, पौनःपुन्यकरणेन। *आव० ७६१*।

अणुपिट्टिं– आनुपूर्व्या। *सम० ६८*।

अणुपुव्वसो– अनुपूर्वतः, क्रमेण। *उत्त० २५२*। आनुपूर्व्याक्रमेण। *उत्त० ५१८*।

अणुपुव्वि– आनुपूर्वी, मूलादिपरिपाटी। *जम्बू० २९*। शास्त्रीयोपक्रमभेदः। *आचा० ३*।

अणुपुव्विविहारीणं– अनुपूर्वविहारिणां–प्रतिपालितदीर्घ–संयमानां शास्त्रार्थग्रहणप्रतिपादनोत्तरकालमवसीदत्–संयमाध्ययनाध्यापनकियाणां निष्पादितशिष्याणामुत्सर्ग्गतः द्वादशसंवत्सरसंलेखनाक्रमसंलिखितदेहानां। *आचा० २६०*।

अणुपुव्वेणं– आनुपूर्व्या–यथेष्टकालावश्यकक्रियारूपया चतुर्थषष्ठाचाम्लादिकया। *आचा० २८४*। अनुक्रमेणपरि-पाट्या यौगपद्येन। *आचा० २४१*।

अणुपुव्वो– अनुपूर्वः, पूर्वस्याः पूर्वस्याः अनु। *जीवा० २७०*।

अणुपेहा– अनुप्रेक्षा, अनु–पश्र्चाद्भावे प्रेक्षणं, स्मृतिः, ध्यानादभ्रष्टस्य चितचेष्टा। *आचा० ५८३*।

अणुपेहे– अनुगुणनं करोति। *ओघ० ८४*।

अणुप्प– अनर्प्यः–अनर्प्पणीयः, अढौकनीयः। *स्था० ४६५*।

अणुप्पग्गंथे– अनुरूपतया–औचित्येनं विरतेर्नत्वपुण्योदया-दणुरपि वा–सूक्ष्मोऽप्यल्पोऽपि प्रगतो ग्रन्थो–धनादिर्यस्य यस्माद्वा। *स्था० ३६५*।

अणुप्पयाउं– अनुप्रदातु–परंपरकेण प्रदातुम्। *व्यव० २१७*।

अणुप्पवाए– अनुप्रवादः, पूर्वविशेषः। *उत्त० १६३*।

अणुप्पवादपुव्वं– अनुप्रवादपूर्वम्। *आव० ३१६*।

अणुप्पविसे– अनुप्रविशेत्, मनसि लब्धास्पदो भवेत्। *उत्त० ९९*।

अणुप्पसूयाइं– अनुप्रसूता–आश्रिता। *आचा० ३४८*।

अणुप्पियं– अनुमतम्। *बृह० ३* अ।

अणुप्पेह– धर्म्मध्यानस्य पश्र्चात्प्रेक्षणानि–पर्यालोचनान्यनु-प्रेक्षा। *भग० ९२६*।

अणुप्पेहा– मनसा। *बृह० ५४* आ। अनुप्रेक्षा, अर्हद्गुणानां मुहुर्मुहुः सततमनुचिन्तना। *आव० ७८६*। यो मनसा परि-वर्त्तयति, न वाचा। *दशवै० ३२*। ध्यानोपरमकालभाविनी अनित्यत्वाद्यालोचनारूपा। *आव० ५९०*। सूत्रार्थानुस्मरणं ध्यानस्य पश्र्चात् पर्यालोचनानि, भावना। *स्था० १९०*। सूत्रवदर्थेऽपि सम्भवति विस्मरणमतः सोऽपि परिभावनीय इत्यनुप्रेक्षणं, चिन्तनिका। *स्था० ३४९*। ग्रंथार्थयोः चिन्त-नम्। *ओघ० १८९*।

अणुप्फासे– अनुस्पर्शः, अनुभावः। *दशवै० १९८*।

अणुफासो– अणुभवो। *दशवै० ९६*।

अणुबंध– अनुबन्धः, निरन्तरम्। *ओघ० १०८*। सन्तानभावेन प्रवृत्तिः। *जम्बू० १२५*।

अणुबंधो– विवक्षितपर्यायेणाव्यवच्छिन्नेनावस्थानम्। *भग० ८०८*। सातत्येन भवनं तन्मरणानाम्। *उत्त० २३९*।

अणुबद्धं– अनुबद्धमं, सन्ततम् *आव० २२८*। *स्था० ४३०*।

अणुबद्धरोसपसरो– अनुबद्धः–सन्ततः, कोऽर्थः– अव्य–वच्छिन्नो रोषस्य–क्रोधस्य प्रसरो–विस्तारोऽस्येति अनुबद्ध-रोषप्रसारः। *उत्त० ७११*।

अणुबद्धा– सन्ततमालिंगिता। *सम० १२६*।

अणुबलं– अनुबलम्। *उत्त० १७८*।

अणुब्भडो– अनुद्भटः, अनुल्बणः। *जीवा० २७५*। *उत्त० ५८७*।

अणुभवणसण्णा– अनुभवनसंज्ञाः, आहाराद्याः। *आचा० १२*।

अणुभाग– अणुभागः, आयुर्द्रव्याणामेव विपाकः। *भग० २८०*। अचिन्त्या शक्तिर्वैक्रियकरणादिका। *स्था० ६९, १४४*।

अणुभागकम्मे– अनुभागकर्म–कर्मप्रदेशानां संवेद्यमानताविषयो रसस्तद्रूपं कर्म। *भग० ६५*।

अणुभागो– अनुभागः, विशिष्टवैक्रियादिकरणविषयाऽचिन्त्या-शक्तिः *जीवा० १०९*। सामर्थ्यम्। *प्रज्ञा० ८८*।

अणुभावकम्मे– अथाबद्धरसो वेद्यते तदनुभावतो वेद्य कर्मानु-भावकर्मेति। *स्था० ६६*।

अणुभावनामनिहत्ताउए– अनुभावनामनिधत्तायुः–अनु–भावः– प्रकर्षप्राप्तो विपाकः, तत्प्रधानं नाम,

यद्यस्मिन् भवे तीव्रवि-पाकं नामकर्मानुभूयते त(य) था नारकायुषि अशुभवर्ण-गन्धरस्पर्शोपघातानादेयदुःस्वरायशःकीर्त्यादिनामानि तदनुभावनाम तेन सह निधत्तमायुरनुभावनामनिधत्तायुः। *प्रज्ञा० २१८*।

अणुभावे– अनुभावः, विपाको रसविशेषः। *भग० ३५*। तीव्रतमदुःखादिः। *आव० ४९६*। अनुभावः सूर्य *२७९*। विपाकः। उदयो रस इत्यर्थः। *स्था० ४२४*।

अनुभावो– अनुभावः, माहात्म्यम् *सूत्र० १२६*। विपाकः। *प्रज्ञा० २१८*। स्वभावः, स्वरूपाम्। *जम्बू० २११*। तीव्रादिभेदो रसः *सम० १०*। शापानुग्रहसामर्थ्यम्। *उत्त० ३६५*। प्रभावः। *जम्बू० २४६*। कारणम्। *जीवा० ३३१*। विपाकोदयः। *जीवा० १३०*। सामर्थ्यादिलक्षणः। *आव० ५९६*। विपाकः। *आव० ५९८*। रसः। *उत्त० २३०*।

अणुभासइ– अणुभाषते। *आव० ३११*।

अणुभासणा– अनुभाषणा, प्रत्याख्यानशुद्धिः। *आव० ८४७*।

अणुमए– अनुमतम्, मानितम्। *भग० १२२*। कार्य्यव्याघातस्य पश्र्चादपि मतः। *भग० ४६८*।

अणुमओ– अनुमतः, अभिष्टो मोक्षाङ्गता। *आव० ३२६*। अभिप्रेता। *बृह० २८९* आ।

अणुमगा– शीघ्रम्। (*आतु०*)

अणुमतं– अनुमतं, वैगुण्यदर्शनस्यापि पश्र्चान्मतम्। *औप० ९६*।

अणुमन्ना– अनुमतिः। *बृह० १२८* अ।

अणुमयं– अनुमतम्, अभिरुचितम्। *ओघ० ६४*। अनुमतः–सम्मतः। *जीवा० २७६*।

अणुमया– अनुमता, अनुज्ञाता। *प्रज्ञा० २५७*। विप्रियदर्शनस्य पश्र्चादपि मता। *विपा० ४२*।

अणुमहत्तरो– मूलमहत्तरे असण्णिहिते जो पुच्छणिज्जो धुरे ठायति सो। नि०चु० *१५८* आ।

अणुमहयरो– मूलमहत्तराभावे प्रष्टव्यः। पुरःस्थानश्र्च। *बृह० १९०* आ।

अणुमाणं– अनुमानम्, स्वार्थम्। *आव० ४२७*। दृष्टान्तः। *दशवै० १३०, १२६*।

अणुमाणइत्ता– लघुतरापराधनिवेदनेन मृदुदण्डादित्व–माचार्यस्याकलय्य यदालोचनम्। *भग० ९१९*। अनुमानं कृत्वा। *स्था० ४८४*।

अणुमाणे– अनुमानम्, अनु–लिङ्गग्रहणसम्बन्धस्मरणादेः पश्र्चान्मीयतेऽनेनेत्यनुमानम्। *भग० २२२*। अन्वितिलिंग-दर्शनसम्बन्धानुस्मरणयोः पश्र्चान्मानं – ज्ञानमनुमानम्। *स्था० २५४*।

अणुमाणेउं– अनुमान्य, सम्यक् क्षमयित्वा। *व्यव० २५४*।

अणुमोदणे– साइज्जणाभेओ। *निशी० १०३* आ।

अणुम्मुअंतो– अनुम्मुञ्चन्, अपरित्यजन्। *आव० ४०७*।

अणुयत्तंतं– अनुवर्त्तयन्। *आव० ३०५*।

अणुया– अणुकाः। *दशवै० १९३*।

अणुयाणं– रथयात्रा। *बृह० ६१* आ। पडिमातिमहिमा। *निशी० २३९* आ।

अणुरंगा– गड्डीए। *निशी० ३२४* अ। घंसिका, यान-विशेषः। *बृह० १२५* आ।

अणुरंगिणी– अनुरङ्गिनी, अनुरज्यते–अनुकारं विदधाती–त्येवंशीला। *जम्बू० ५१८*। *सूर्य० १३६*।

अणुरंगो– घंसिओ। *निशी० ३७* आ।

अणुरत्ता– अनुरागः – भावतः प्रतिबन्धः। *उत्त० ३९४*। आन्तरप्रतियोगतः परस्परस्नेहवन्तौ। *उत्त० ५२१*। अनुरक्ताः–सततं प्रतिबद्धाः। *उत्त० ७०८*।

अणुराओ– अनुरागः। *आव० ३०४*।

अणुरागयं– अन्वागतम्, अनुरूपमागमनम्। *भग० ११७*।

अणुराधा– अनुराधा, नक्षत्रविशेषः। *सूर्य० १३०*।

अणुराहा– नक्षत्रविशेषः। *स्था० ७७*।

अणुलिंपइ– अनुलिम्पति *जीवा० २५४*।

अणुलिंपणं– अनुलिम्पनं–सकृल्लिप्ताया भूमेः पुनर्लेपनम्। *प्रश्न० १२७*।

अणुलिहंतं– अनुलिखत्, अभिलङ्घयत्। *सूर्य० २६४, जीवा० ३७९, जम्बू० २९७*। अनुलिखत्–अतिलङ्घयत्। *प्रज्ञा० ९९*।

अणुलिहति– अनुलिखति, अभिलङ्घयति। *जीवा० २०१*।

अणुलेवणं– अनुलेपनम्, सकृल्लिप्तस्य पुनः पुनरुपलेपनम्। *प्रज्ञा० ८०*।

अणुलोमं– अनुलोमम्, अनुकूलमनुगुणं वा। *जीवा० ३*। अनुकूलकरणम्०। *स्था० ३७६*।

अणुलोमछाया– अनुलोमच्छाया, सूर्यच्छायाविशेषः। *सूर्य० ९५*।

अणुलोमणा– अनुलोमना–प्रज्ञापना। *बृह० १२३* आ।

अणुलोमवाउवेगो– अनुलोमवायुवेगः। अनुलोमः–अनुकूलो वायुवेगः, शरीरान्तर्वर्त्तिवातजवो यस्य सः। वायुगुल्मरहितो-दरमध्यप्रदेशः। *जीवा० २७७*।

अणुलोमिअ– अनुलोमम्, मनोहारि। *दशवै० २२३*।

अणुलोमियं– कटुगफरिसादिदोसवज्जियं जं भासमाणो अभासओ लभइ। *दशवै० ११५*।

अणुल्लय– द्वीन्द्रियविशेषः। *उत्त० ६९५*।

अणुल्लसिओ– असिच्यमानः। *आव० ६२१*।

अणुल्लावे– अनुलाप–पौनःपुन्यभाषणम्। *स्था० ४०८*।

अणुवउत्तो– अनुपयुक्तः, साधुं प्रत्यदत्तावधानः। *ओघ० २३*।

अणुवकयं– अनुपकृतम्, परैरवर्तितम्। *आव० ५९७*।

अणुवघाइए– अनुपघातिके–उपघातश्च यत्र न भवति। उड्डाहादि तस्मिन्। *ओघ० १२२*।

अणुवघाइया– आचारप्रकल्पस्य षड्विंशतितमो भेदः। *सम० ४७*।

अणुवचओ– अनुपचयः, अनुपचीयमानता, अनुपादानमिति। *उत्त० ६*।

अणुवट्टंते– अनुपतिष्ठति, अरुह्यमाणे अरुज्झंते। *ओघ० १४५*।

अणुवट्टावणीया– अनुवर्तनीया। *ओघ० १३४*।

अणुवट्टेति– करोति। *भग० ३२०*।

अणुवत्त– अनुवृत्तः–भूयः प्रवृतो वारद्वयं प्रवृतः। *व्यव० ४४१* अ।

अणुवत्तइ– अनुवर्त्तते। *आव० ५६१*।

अणुवत्ति– अनुवृत्तिः–सर्वेषु अर्थेषु अप्रतिकूलता। *बृह० ४३* अ।

अणुवत्तिओ– अनुवर्त्तितः। *आव० १११*। परिगृहीतो महाजनेन। *व्यव० ४४१* आ।

अणुवत्तिया– परिवेष्टिता। *निशी० १८४* आ।

अणुवत्ती– अनुवृत्तिः। *आव० ५१५*।

अणुवत्ते– अनुवर्तमानः–साम्प्रतकालभावी। *दशवै० ६२*।

अणुवदिट्ठं– जं नो आयरियपरंपरागयं मुत्कलव्याकरणवत्। *निशी० २३* आ।

अणुवदेसा– अनुपदेशः–गुरुणाऽनुक्तः। *ओघ० १५१*।

अणुवभुज्जो– संसक्तासवपिशितादिराहारः, शुषिरतृणवल्क-लादिरुपधिः। *बृह० ४७* अ।

अणुवमा– अनुपमा। *जीवा० २७८*।

अणुवयमाणा– अनुवदतः–अनु–पश्चाद्वदतः पृष्ठतो वदतोऽन्येन वा मिथ्यादृष्ट्यादिना कुशीला इत्येवमुक्तः। *आचा० २५१*।

अणुवयारं– निट्ठुरं। *नि०चु० २७८* अ।

अणुवरय– अनुपरतम्, अविरतम् । *भग० १८१*।

अणुवरयकाइया– अनुपरतकायिकी–देशतः सर्वतो वा सावद्ययोगाद्विरतः नोपरतोऽनुपरतः कुतश्चिदप्यनिवृत्त इत्यर्थः तस्य कायिकी। *प्रज्ञा० ४३६*।

अणुवरयकायकिरिया– अनुपरतस्य–अविरतस्य सावद्यात् मिथ्यादृष्टेः सम्यग्दृष्टेर्वा कायक्रिया–उत्क्षेपादिलक्षणा कर्म्म-बन्धनिबन्धनम्। *स्था० ४१*।

अणुवसंते– अनुपशान्तः, उदयावस्थः। *प्रज्ञा० २९१*।

अणुवसंपज्जमाणगती– अनुपसम्पद्यमानगतिः, परस्परमुपष्ट-म्भरहितानां पथि गमनं, विहायोगतेश्चतुर्थो भेदः। *प्रज्ञा० ३२७*।

अणुवसु– अनुवसु–सरागः श्रावकश्च। *आचा० २४०*।

अणुवाए– अनुपातः, अनुसारः। *प्रज्ञा० १४४*। अनुगमनं–अनुरागः। *उत्त० ६३१*।

अणुवायगइए– अनुपातगतिः–अनुसारगतिः। *सूर्य० १६*।

अणुवालए– गोशालकश्रावकविशेषः। *भग० ३७०*।

अणुवासग– अनुपासकः, मिथ्यादृष्टिः। *निशी० २५*।

अणुवासणा– अनुवासना, अपानेन जठरे तैलप्रवेशनम्। *विपा० ४१*।

अणुविद्धं– अनुविद्धं–मिश्राः व्याप्ताः। *जम्बू० १९३*।

अणुवीइ– अनुवीचि, आनुकूल्यम्, मैथुनाभिलाषम्। *सूत्र० १११*। अनुचिन्त्य, विचार्य सम्यग्निश्चित्य। *आचा० ३८६*। आलोच्य। *दशवै० २२१*।

अणुवीइनिट्ठाभासी– अनुविचिन्त्य निष्ठाभाषी–विचार्य निश्चि-तभाषकः। *आचा० ३९२*।

अणुवीइभासए– अनुविचिन्त्यभाषकः पर्यालोच्य भाषकः, द्वितीयव्रतस्य द्वितीया भावना। *आव० ६५८*।

अणुवीति– चिंतेऊण। *निशी० १००* अ।

अणुवीयि– पुव्विं बुद्धीए अणुचिंतियं। *दशवै० ११५*।

अणुवूहेत्ता– अणुबृंहयिता–परेण स्वस्य क्रियमाणस्य

तस्या-नुमोदयिता, तद्भावे हर्षकारी। *स्था० ३८९*।
अणुवेलंधर– लवणसमुद्रशिखारक्षकः। *सम० ३३*।
अणुवेलंधरराया– अनुवेलन्धरराजा, भुजगेन्द्रः। *जीवा० ३१३*।
अणुवेलंधरनागरातीणं– अनुवेलंधरनागराजा–नागजाति–विशेषः। *स्था० २२८*।
अणुवेहसलागा– शस्त्रकोशविशेषः। *निशी० १८* आ।
अणुव्वट्टे– अनुद्वर्त्तयन्, तत्रस्थ एव। *आव० ३३९*।
अणुव्वणो– अगर्वितः। *बृह० ४* अ।
अणुव्वतं– अनुव्रतम्। *आव० ८२३*।
अणुव्वत्ता– अनुव्रतानि–अनु–महाव्रतकथनस्य पश्चात्तद–प्रतिपत्तौ यानि व्रतानि कथ्यन्ते तानि अथवा सर्वविरता-पेक्षया अणोः–लघोर्गुणिनो व्रतानि। *स्था० २९१*।
अणुव्वय– अनुवर्त्तिनी, परिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते भार्या। *आव० ४३५*। अन्विति–कुलानुरूपं व्रतम्–आचारोऽस्या अनुव्रता पतिव्रता इति, वयोऽनुरूपा वा। *उत्त० ४७६*। अनुव्रतं–स्थूलप्राणातिपातनिवृत्तिः। *दशवै० १९२*।
अणुव्वाणं– अनाव्या(स्या)नं–स्निग्धम्। *ओघ० १७१*।
अणुव्विग्गो– अनुद्विग्नः–प्रशान्तः परीषहादिभ्योऽबिभ्यत्। *दशवै० १६३, १७९*।
अणुसंचरे– अनुसञ्चरेः, अन्विति–लक्षीकृत्य सञ्चरेः–त्वं सम्यक् संयमाध्वनि यायाः। *उत्त० ४४६*।
अणुसंसरइ– अनुसंसरति, दिग्विदिशां गमनं भावदिगागमनं वा स्मरति, अनुसंस्मरति वा। *आचा० २०*।
अणुसजइ– अनुसजति, सन्तानेनानुवर्त्तते। *जीवा० २८४*।
अणुसज्जणा– अनुसर्जना। *आव० १५७*। अव्यवच्छेदं करोति। *उत्त० ५८४*। अनुवर्त्तना। *बृह० २८९* अ।
अणुसज्जमाणा– अनुषञ्जन्तः, सन्तानेनानुवर्तमाना। *जम्बू० ३५५*।
अणुसज्जित्था– अनुसक्तवन्तः, पूर्वकालात्कालान्तरमनु-वृत्तवन्तः। *भग० २७८*।
अणुसज्जित्था– अनुषक्तवन्तः, कालात्कालान्तरमनुवृत्तवन्तः सन्ततिभावेन भवन्ति स्म। *जम्बू० १२८*।
अणुसट्टं– अनुशिष्टं–उत्कलनम्। *व्यव० ११९* अ।
अणुसट्ठि– अनुशासनम्–अनुशास्तिः सद्गुणोत्कीर्त्तनेनो–पबृंहणम्। *दशवै० ४६*। धम्मकहा। *निशी० १७०* अ।
अणुसट्ठी– उवदेसपदाणं, थुतिकरणं वा। *निशी० १३४* आ। सद्भावपुरस्सरं प्रज्ञापना। *बृह० ८७* आ। उवदेसो। *निशी० २०७* आ। *५१* अ। इहलोकापायदर्शनम्। *बृह० १०३* अ। अनुशासनम्। *स्था० १५५*।
अणुसम– अनुसमा–अनुरूपा, अविषमा। *स्था० ४५०*।
अणुसमयं– समयमाश्रित्य। *उत्त० २३१*। अनुसमयं, प्रतिक्षणम्। *सूर्य० ८०*। *भग० २०*। सततम्। *उत्त० २३९*।
अणुसया– अनुशयः–पश्चात्तापः। *जम्बू० १२३*।
अणुसारं– अनक्षरमपि यदनुस्वारवदुच्चार्यते हुंकारकरणादित् तत्। *आव० २५*। अलाक्षणिकः सुखमुखोच्चारणार्थः। *दशवै० ८६*।
अणुसासणाणि– अनुशासनानि–दुःस्थस्य सुस्थता-संपादनानि। *सम० ११८*। शिक्षणम्। *उत्त० २६७*।
अणुसासम्मि– अनुशास्ति। *उत्त० ५५२*।
अणुसासिज्जंतो– अनुशास्यमानः, तत्र तत्र चोद्यमानः। *दशवै० २५६*।
अणुसिट्ठी– अनुशासनमनुशास्तिः–सद्गुणोत्कीर्त्तनेनोपबृहणं सा विधेयेति यत्रोपदिश्यते सा। *स्था० २५३*। अनुशिष्टिः उपदेशप्रदानम्। *व्यव० ११७* अ। शिक्षाम्। *उत्त० ३२३*। धर्मकथाम्। *ओघ० ७३*।
अणुसूयगा– अनुसूचकाः–नगराभ्यंतरे चारमुपलभन्ते, सर्वमनुसूचकेभ्यः कथयंति। *व्यव० १७०* आ।
अणुसूयत्तं– अपरशरीराश्रितता, परनिश्रा। *सूत्र० ३५७*। अनुस्यूतत्वं–परनिश्रया कृम्यादित्वम्। *सूत्र० ३५७*।
अणुसोयचारी– अनुश्रोतश्चारि–प्रतिश्रयादारभ्य भिक्षाचारी। *स्था० ३४२*। नद्यादिप्रवाहगामी। *स्था० २७२*।
अणुस्सासिय– अनुच्छ्वसत्। *दशवै० १९*।
अणुस्सियत्त– अनुत्सिक्ततत्वम्–अनुद्धतत्वम्। *उत्त० ५९१*।
अणुस्सुयं– अनुश्रुतम्–अवधारितम्। *उत्त० २४७*।
अणुस्सुयत्तं– अनुत्सुकत्वम्–विषयसुखं प्रति निःस्पृहत्वम्। *उत्त० ५८६*।
अणेगचित्ते– अनेकचित्तः, अनेकानि चित्तानि

कृषिवाणिज्या-वलगनादीनि यस्यासौ, खलुरवधारणे, संसारसुखाभिलाष्य-नेकचित्त एव भवति। *आचा० १६३।* अनेकसंख्यानि चञ्च-लतया चित्तानि–मनांसि यासां सा। *उत्त० २९७।*

अणेगगुणा– अनेकगुणाः–अनेकप्रकाराः। *बृह० ७५* अ।

अणेगतालाचराणुचरियं– नानाविधप्रेक्षाचारिसेविताम्। *भग० ५४४।*

अणेगपत्ती– अनेकपत्नी। *आव० ९५।*

अणेगरूवधुणा– बहूनि वस्त्राणि एकीकृत्य धुनाति। *ओघ० ११०।*

अणेगरूवधुणे– अनेकरूपा चासौ सङ्ख्यात्रयातिक्रमणतो युगपदनेकवस्त्रग्रहणतो वा धूनना च प्रकम्पनात्मिका अनेकरूपधूनना। *उत्त० ५४२।*

अणेगवासानउयं– अनेक वर्षनयुतं, अनेकवर्षाणां–असङ्ख्येयवत्सराणां नयुतं–सङ्ख्याविशेषम्। *उत्त० २७७।*

अणेगावाती– परस्परविलक्षणा एव भावाः इति वादिनः। *स्था० ४२५।*

अणेलिसं– अनीदृशं–अनन्यसदृशम्। *आचा० ४२९।*

अणेव्वाणी– जाहे ताणि सुरादीणि ण लब्भंति ताहे तेसिं अभावे परमं दुक्खं समुप्पज्जतितित्ति, मोक्खऽभावो वा। *दशवै० ८८।*

अणेसणा– अनेषणा–भिक्षादोषविशेषः। *आव० ५७५।*

अणेसणिज्जं– अनेषणीयम्–आधाकर्मादिदोषदुष्टम्। *आचा० ३२१।*

अणोक्कंता– अनुपक्रान्ता–अनिराकृता। *औप० ३४।*

अणोग्घसिअ– अनिर्मार्जनम्। *जम्बू० ५७।*

अणोज्जा– अनवद्या, स्वामिदुहिता। *आव० ३१२।*

अणोतप्पया– अलज्जनीयता। *बृह० ३०९* आ।

अणोमदंसी– अवमं–हीनं मिथ्यादर्शनाविरत्यादि तद्विपर्य-स्तमनवमं तद्दृष्टुं शीलमस्येत्यनवमदर्शी, सम्यग्दर्शनज्ञा-नचारित्रवान्। *आचा० १६४।*

अणोमाणं– अपमानं अनादरकृतं न भवति। *ओघ० १०३।*

अणोरपारं– अनर्वाक्पारम्–विस्तीर्णस्वरूपम्। *प्रश्न० ६२।* अनाद्यपर्यवसितम्। *आव० ६०१।* अर्वाग्भागपरभागवर्जित-मनाद्यनन्तम्। *सूत्र० ४०३।* अनर्वाक्पारमिव महत्त्वादनर्वाक्पारम्। *प्रश्न० ५१।* देशीवचनं, प्रचुरार्थे, आराद्भागपरभाग -रहिते। *आव० ३४५। (भक्त०)*

अणोल्हविज्जंतो– अविध्यापितः। *आव० ३८४।*

अणोवणिहिआ– अनौपनिधिकी–वक्ष्यमाणपूर्वानुपूर्व्यादि–क्रमेणाविरचनं प्रयोजनं यस्या इति। *अनुयो० ७२।*

अणोवमा– अनुपमा। *प्रज्ञा० ३६४।*

अणोवमाइ– खाद्यविशेषः। *जम्बू० ११८।*

अणोहट्टं– अजाजियं, कोंटलाति उवकारेण विरहियं। *निशी० १८३* अ।

अणोहंतरा– संसारतरणासमर्थाः। *आचा० १२३।*

अणोहट्टिए– अनपघट्टकः, यो बलाद्धस्तादौ गृहीत्वा प्रवर्त्तमानं निवारयति सोऽपघट्टकस्तदभावात्। *विपा० ५२।*

अणोहियं– अविद्यमानजलौधिकामतिगहनत्वेनाविद्यमानोहां वा। *भग० ६७२।*

अण्णउत्थिए– अन्ययूथिकाः अन्ययूथं–विवक्षितसंघादपरः संघस्तदस्ति येषां तेऽन्ययूथिकाः तीर्थान्तरीयाः। *भग० ९८।* अन्यतीर्थिकाः। *जीवा० १४३।*

अण्णउत्थिया– तच्चण्णियादि बंभणा खत्तिया गारत्था। *निशी०।*

अण्णओमुहो– अन्यतोमुखः। *आव० ६४०।*

अण्णओहुत्तं– अन्यतोभूतम्। *आव० २०५।*

अण्णगच्छेल्लय– अन्यगच्छीयः। *आव० ३२३।*

अण्णगिलायं– अन्नग्लानः–पर्युषितमन्नं मया भोक्तव्यमित्येवं प्रतिपन्नाभिग्रहः। *बृह० ३१२* अ।

अण्णगिलायए– अन्नग्लायकः। *औप० ३९। बृह० ११२।*

अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे– अन्यतीर्थिकेभ्यः–कपिलादिभ्यः सकाशाद्यः प्रवृत्तः–स्वकीयाचारवस्तुतत्त्वानामनुयोगो–विचारः तत्पुरस्करणार्थः शास्त्रसंदर्भ इत्यर्थः सोऽन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोगः। *सम० ४९।*

अण्णतित्थिया– रक्तपटादयः। *निशी० ७६* अ। अन्तीर्थिका–चरकपरिव्राजकशाक्याजीवकवृद्धश्रावकप्र–भृतयः। *निशी० १४७* आ।

अण्णत्थ– अन्यत्र, परिवर्जनार्थे। *आव० ८५०।*

अण्णदत्तहरे– अन्यदत्तहरः–अन्येभ्यो दत्तं–राजादिना

वितीर्ण हरति अपान्तराल एवाच्छिनत्ति। *उत्त० २७४*। अन्यादत्तहरः–ग्रामनगरादिषु चौर्यकृत्। *उत्त० २७४*।

अण्णमण्णघडत्ता– अन्योऽन्यघटता, अन्योऽन्यं घटासमुदाय-रचना यत्र तदन्योऽन्यघटं तद्भावस्तत्ता, जालिका। *भग० २१५*।

अण्णवं– अर्णवः–अर्णो–जलं विद्यते यत्रासावर्णवः। *उत्त० २४१*।

अण्णसंभोइय– अन्यसाम्भोगिकः। *आव० ८४७*।

अण्णहम्मिणी– परतीर्थिका अगारस्था अविरतिका। *बृह० ४७* आ।

अण्णाइट्ठसरीरं– अन्याविष्टशरीरम्, व्यन्तराधिष्ठितशरीरम्। *आव० ६३३*।

अण्णाइट्ठो– अन्याविष्टः, परायत्तः, यक्षाविष्टो वा। *उत्त० ११३*। आविष्टः। *अन्त० २०*।

अण्णाइत्तो– अपराद्धः। *निशी० १०१* अ।

अण्णाएसि– अज्ञातैषी, अज्ञातो जातिश्रुतादिभिः एषति–उञ्छति पिण्डादीति। *उत्त० १२४*।

अण्णाणं– अज्ञानम्। चतुर्थः कुडङ्गः। *आव० ८५६*। एकविंशतितमः परिषहः, कर्मविपाकजादज्ञानान्नोद्विजेत। *आव० ६५७*।

अण्णाणदोसे– अज्ञानदोषः। *औप० ४४*।

अण्णाणिय– अज्ञानिकः, कुत्सितं ज्ञानमस्यास्तीति। *आव० ८१७*।

अण्णाणियवाई– सप्तषष्टिभेदा अज्ञानवादिनः। *सम० १११*।

अण्णाणो– अज्ञानः, कुदृष्टिमोहितः। *आव० ३४६*।

अण्णातचज्जा– अज्ञातचर्या। *आव० ८२२*।

अण्णातपिंडे– अज्ञातपिण्डः, अन्तप्रान्तः, अज्ञातेभ्यो वा पूर्वापरासंस्तुतेभ्यो वा पिण्डोऽज्ञातोञ्छवृत्त्या लब्धः। *सूत्र० १६४*।

अण्णायं– अज्ञातोञ्छं। *बृह० १८६* आ।

अण्णाय– अज्ञातम्, अनुमानतः अज्ञातम्। *भग० १९७, २००*।

अण्णायया– अज्ञानता, तपसोऽप्रकाशनम्। *प्रश्न० १४६*। अज्ञातता, तपस्यज्ञातता, योगसङ्ग्रहे सप्तमो योगः। *आव० ६६४*।

अण्णावदेसो– अदंसियभावो। *निशी० ७२* आ।

अण्णियपुत्तो– अर्णिकापुत्रः। *निशी० ११४* आ।

अण्णिया– अर्णिका, दक्षिणमथुरायां वणिक्पुत्री। *आव० ६८८*।

अण्णियापुत्ते– अर्णिकापुत्रः। *बृह० २३५* आ।

अण्णोयत्ता– ईषदवनता। *व्यव० १२४* आ।

अण्हयंति– क्षरति (*तन्दु०*)

अण्हय– आस्नवः, आ–अभिविधिना स्नौति–श्रवति कर्म यस्मात् स आश्रवः प्राणातिपातादिः। *प्रश्न० २*।

अण्हयकरं– आश्रवकरं। *औप० ४२*।

अण्हयकरिं– कर्माश्रवकरीं। *आचा० ३८८*।

अण्हयकरे– कर्माश्रवकारी। *आचा० ४२५*।

अण्हाणं– अस्नानम्। *आव० १५४*।

अण्हायगो– अस्नायकः। *आव० ८३१*।

अतज्जाय– अतज्जातपारिस्थापनिकी, पारिस्थापनिक्या द्वितीयो भेदः। *आव० ६१९*।

अतज्जायं– अतज्जातीयं, भिन्नजातीयम्। *आव० ६२३*।

अतडं– अतीर्थं, अन्यतीर्थं वा। *बृह० ३१* अ। अतित्थं। *निशी० १७* अ।

अतति– सततमवगच्छति। *स्था० १०*।

अतन्त्रम्– शास्त्रलक्षणरहितम्। *आव० १२०*।

अतरं– तरीतुमशक्यं, विषयगणं भवं वा। *उत्त० २१२*।

अतरंतं– ग्लानम्। *बृह० २२१* आ। अतरन्त–अतिग्लानः। *ओघ० १८३*।

अतरंत– ग्लानाः। *स्था० १३८*।

अतरंते– अतरत्–असहः। *व्यव० ३७* अ।

अतरंतो– अतरन्, अशक्नुवन्। *आव० ८४७*। अशक्नुवन्–असमर्थः। *दशवै० ८१*। अशक्नुवान्। *आव० ६३७*। ग्लानः। *ओघ० ४५*। यदाऽऽकाशव्यवस्थिताभ्यां पादाभ्यां न शक्नोति स्थातुं तदा। ओध० ८४। गिलाणी। *निशी० ४३* अ, *३०* आ, *३६०* अ। ग्लानः। *बृह० ५* आ, *निशी० ८४* अ।

अतरण– अतरणः, अशक्तः, ग्लानः। *ओघ० ६७, बृह० २३४* आ।

अतरो– ग्लानः। *बृह० २२४* अ। रत्नाकरः। *बृह० ३७*।

अतसी– अयसी, धान्यविशेषः। *स्था० ४०६*। गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*। धान्यविशेषः। *निशी० १४४* आ।

अतहणाणे– अतथाज्ञानम्। *स्था० ४८१*।

अतारं– अतारम्, तरितुमशक्यम्। *भग॰ ८२*।
अतारिमा– दुस्तराः। *सूत्र॰ ८६*।
अतिः– अतिशयवान्। *स्था॰ ४७३*।
अतिंति– प्रविशन्ति। *निशी॰ २०३* अ।
अतिंतिणः– अतिन्तिणः, अलाभेऽपि नेषद्यत्किञ्चनभाषी। *दशवै॰ २३३*। अतिन्तिनः, न सकृत्किञ्चिदुक्तः सन्नसूयया भूयो भूयो वक्ता, प्रतिपूर्णः सूत्रादिना। *दशवै॰ २५८*।
अतिअत्तिय– आदियात्रिकाः, सार्थरक्षकाः। *बृह॰ १२५*।
अतिउच्चाओ– अतिश्रान्तः, प्राघूर्णकादिः। *ओघ॰ १८६*।
अतिउव्वरिए– अत्युद्धरिते। *ओघ॰ १३८*।
अपिकाए– महोरगेन्द्रः। *स्था॰ ८५*। अतिकायः–महोरग–भेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।
अतिक्कमा– अतिक्रमः–अतिलङ्घनं, विनाशः। *आचा॰ १३५*। प्रतिश्रवणतो मर्यादाया उल्लंघनम्। *व्यव॰ १०* अ।
अतिक्कीलावासो– अतिक्रीडावासः, सुस्थितलवणाधिपस्य भौमेयविहारविशेषः। *जीवा॰ ३१५*।
अतिक्खतुंडो– अतीक्ष्णतुण्डम्–अतीक्ष्णमुखम्। *आव॰ ७६४*।
अतिक्रान्ता– अतीता। *आचा॰ १७८*।
अतिखद्धं– प्रभूतम्। *बृह॰ १८७* अ।
अतिखद्ध– गुरोरालोके भोक्तव्यम्, अतिप्रचूरं भक्षयेत्। *ओघ॰ १८२*।
अतिगए– अतिगतः। *आव॰ १७३*।
अतिगओ– अतिगतः। *दशवै॰ ४१*।
अतिगता– प्रविष्टाः। *बृह॰ १८४* अ।
अतिगमणं– प्रवेशः। *बृह॰ १६३* आ। अतिगमनं, प्रवेशनम्। *बृह॰ २७५* आ।
अतिगुपिल– अतिगूढम्। *आव॰ २९६*।
अइगुलिया- अतिगुलिका– कुक्कुसा। *बृह॰ ११५* अ।
अतिघरं– संजतिपडिस्सतो। *निशी॰ २३७* आ।
अतिच्छिए– अतिक्रान्तायाम्। *ओघ॰ १५२*।
अतिजाति– पविसति। *निशी॰ ३४* आ।
अतिजाते– समृद्धतरः। *स्था॰ १८४*।
अतिज्जाणं– अतियानम्। *आव॰ ३६६*।
अतिज्जाहि– अतियास्यति–प्रवेक्ष्यति। *स्था॰ ४६३*।
अतिणिओ– आनीतः। *आव॰ २०४*।
अतिणीओ– अतिनीतः, प्रापितः। *आव॰ ८००*।
अतिणेउं– प्रवेश्य। *बृह॰ ७४* आ।
अतिण्णो– ग्लानः। *बृह॰ २८८* आ।
अतिंतणिंत– आगच्छद्गच्छत्। *निशी॰ १२०* आ।
अतिताणकहा– अतियानकथा–नगरादौ प्रवेशकथा। *स्था॰ २१०*।
अतिताणगिहाति– अतियानगृहाणि–नगरादिप्रवेशे यानि गृहाणि। *स्था॰ ८६*।
अतितेया– अतितेजा, रात्रिनामविशेषः। *सूर्य॰ १४७*।
अतित्थ– अतीर्थम्, तीर्थस्याभावोऽतीर्थम्, तीर्थस्याभाव–श्चानुत्पादोऽपान्तराले व्यवच्छेदो वा। *प्रज्ञा॰ १९*।
अतित्थसिद्धा– अतीर्थे–तीर्थान्तरे साधुव्यवच्छेदे जाति–स्मरणादिना प्राप्तापवर्गमार्गा मरुदेवीवत् सिद्धा अतीर्थसिद्धाः। *स्था॰ ३३*।
अतित्थाविते– प्रत्याख्यातः, निषिद्धः। *निशी॰ १८५*।
अतित्थिओ– अस्तमितो। *निशी॰ ३१२* अ। समाप्ते-त्यर्थः। *निशी॰ १२६* अ।
अतिददाति– (अइए) प्रकरोति अतिगच्छति वेति। *स्था॰ २९८*।
अतिधाडिय– अतिध्राडितः–भ्रमितः। *प्रश्न॰ ५३*।
अतिपरिणामकं– अपवादैकमतिः। *बृह॰ १३२* अ।
अतिपरिणामा– अतिपरिणामाः, अतिव्याप्त्या परिणामो यथोक्तस्वरूपो यस्य सः। *व्यव॰ ७२* अ।
अतिपात– प्राणिनः विभ्रंशः। *स्था॰ २९०*।
अतिपातनम्– प्राणवता सह वियोजनम्। *स्था॰ २६*।
अतिपासं– अतिपार्श्वं–एरवतावसर्पिणीतीर्थंकरः। *सम॰ १५३*।
अतिपुरुष– किंपुरुषभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।
अतिप्पणया– अश्रुलालादिक्षरणकारणशोकानुत्पादनेन। *भग॰ ३०५*।
अतिबलराया– अतिबलराजा। *आव॰ ११६*।
अतिमन्द्र– गम्भीरः। *जम्बू॰ ५२९*।
अतिम(मु)त्तकुमारो– राजर्षिनाम। *निशी॰ २७* आ।
अतिमुक्तकः– षड्वर्षप्रव्रजितः। *भग॰ ५८६*। अतिमुक्तकः–नालबद्धपुष्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३७*।

अतिमुक्तकचन्द्र– (अइमुत्तचंदए) पुष्पविशेषदलम्। *भग० १३१*।

अतिमुत्तग– अतिमुक्तकलता–लताविशेषः। *जीवा० १८२*।

अतिमुत्ते– अतिमुक्तः, कुमारश्रवणः। *अन्त० ६*। विजयराज्ञः श्रीदेव्याः सुतः। *अन्त० २३*।

अतियाण– अतियानं–नगरप्रवेशः। *स्था० १७३*। प्रवेशः। *निशी० २७३* अ।

अतियातो– अतियातः, गतः। *उत्त० ४८१*।

अतियारे– अतिचारः–अतिचरणं ग्रहणतो व्रतस्यातिकरणम्। *व्यव० ९०* अ।

अतिराउले– स्वामिकुलम्। *प्रज्ञा० २५३*।

अतिरायितं– अताडितम्। *ओघ० ११०*।

अतिरिच्छच्छिन्नं– अतिरश्चीनच्छिन्नं–तिरश्चीनमपाटितं। *आचा० ४०५*।

अतिरित्तं– अतिरिक्तम्, कुक्षिपूराहारप्रमाणातिक्रान्तम्। *प्रश्न० १५४*।

अतिरित्तसज्जासणिए– अतिरिक्ता–अतिप्रमाणा शय्याव-सतिरासनानि च पीठकादीनि यस्य सन्ति सोऽतिरिक्तश-य्यासनिकः। *सम० ३७*।

अतिरित्ता– घंघशाला। *निशी० १०६* आ।

अतिरूपः– भूतभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ७०*।

अतिरेगं– अतिरेकः, आधिक्यम्। *भग० १८६*। अतिरेकम् अत्यर्थम्। *ओघ० २२७*।

अतिलोलुपः– अतीव रसलम्पटः। *उत्त० ३४५*।

अतिवट्टमाणे– अतिवर्तमानः–सर्वबाहमात् सर्वाभ्यन्तरं प्रतिगच्छन्। *सम० ९७*।

अतिवट्टिय– अतिवर्त्तितः–भ्रामितः। *प्रश्न० ५६*।

अतिवतित्ताणं– अतिव्रज्य–अतिशयेन गत्वा। *प्रज्ञा० ५१०*।

अतिवयती– अतिव्रजति, बाहुल्येन गच्छति। *जीवा० १२९*।

अतिवासा– अतिवर्षा, अतिशयवर्षा वेगवद्वर्षणम्। *भग० १९९*।

अतिवाहयति– प्रेरयति, विनयति च। *प्रश्न० ६४*।

अतिविज्जे– अतिविद्यः, तत्त्वपरिच्छेत्री विद्या यस्य। *आचा० १५९*।

अतिविद्वान्– विदितागमसद्भावः सन्। *आचा० १९२*।

अतिवेगो– अतिवेगः–अतिक्रान्ताशेषवेगः। *प्रश्न० ५१*।

अतिशुक्लो– शुक्लशुक्लो। *स्था० ३७४*।

अतिसेसे– शेषाण्यतिक्रान्तं सातिशयम्। *स्था० ३८४*। अतिशेषाः–अतिशयाः। *स्था० ३२१*। अतिशेषे–अतिशये। *उत्त० २८७*।

अतिसंधेइ– अतिसन्दधाति। *आव० ११०*।

अतिसओ– मनःपर्यवावधिज्ञाने अतिशयवन्त्यध्ययनानि च। *निशी० १६* अ।

अतिसाहसिकः– आत्मवत् प्रसाधितमग्निलोकं यः प्रत्याचक्षीत सः। *आचा० ५२*।

अतिसेसि– स्फीतानि। *ओघ० ९६*। मनःपर्यवाद्यतिशयवान्। *निशी० २००* अ।

अतिसेसी– पात्रभूतः, प्रवचनाधारः। *बृह० २१* आ।

अतिस्निग्धमधुरम्– वाण्यतिशयः। *सम० ६३*।

अतिहिपूआ– अतिथिपूजा आहारादिदानेन। *दशवै० २४०*।

अतिहिवणीमते– भोजनकालोपस्थायी प्राघूर्णकोऽतिथिस्तद्दानप्रशंसनेन तद्भक्तात् यो लिप्सति सोऽतिथिमाश्रित्य वनीपकोऽतिथिवनीपकः। *स्था० ३४१*।

अतिहिसंविभागो– अतिथिसंविभागः–साधुसंविभागः। *आव० ८३७*।

अतिही– अतिथिः–भोजनार्थं भोजनकालोपस्थायी, आत्मार्थं निष्पादिताहारस्य गृहव्रतिनः साधुरेव। *आव० ८३७*। निःस्पृहोऽभ्यागतः। *आचा० ११५*। भोजनकालोपस्थाय्य-पूर्वो वा। *आचा० ३२५*। आगन्तुकम्। *आचा० ३१४, भग० ५२०*। विशिष्टतिथ्यभावे। *बृह० ९०* अ।

अतीओ– आगतः। *आव० १४५*।

अतीय– अतीतम्–उत्तीर्णम्। *भग० २९३*।

अतीति– एति। *उत्त० ३०२*।

अतीमि– अटामि। *आव० २२०*।

अतीरंगमा– अतीरङ्गमाः, तीरं गच्छन्तीति तीरङ्गमाः, न तीरङ्गमा अतीरङ्गमाः। *आचा० १२४*।

अतुक्कोसे– आत्मनः परेभ्यः सकाशाद्गुणैरुत्कर्षणम्–उत्कृष्टताभिधानम्। *भग० ५७२*।

अतुरियं– अत्वरितम्, कायिकत्वरारहितम्। *भग० १४०*।

स्तिमितम्। *ओघ० १०८*।

अतुरियगति– अत्वरितगतिः–मन्दगतिः। *उत्त० ७११*।

अतुरियभासी– अत्वरितभाषी। *आचा० ३९२*।

अतोया– शीतोदकविरहिताः संपत्यः काञ्जिकेनाचा–मनकारिणी। *बृह० १८०* अ।

अत्त– आत्मा, सिद्धिः। *उत्त० १०४*। आप्तः, अप्रतारकः। *दशवै० ७५*।

अत्तए– आत्मजः–पुत्रः। *भग० ४६०*।

अत्तगवेसए– आत्मगवेषकः–आत्मानं गवेषयति–कथं मया ऽऽत्मा भवान्निस्तारणीयः इत्यन्वेषयते। *उत्त० १०४*। आत्मानं–चारित्रात्मानं गवेषयति–मार्गयति। *उत्त० १२०*।

अत्तगवेसी– आत्मगवेषी, आत्महितान्वेषणपरः। *दशवै० २३७*।

अत्तचिंतओ– अभ्युद्यतजिनकल्पयथालन्दकल्पानामेकतरं विहारं प्रतिपत्स्य इत्यात्मचिन्तकः, गणे वा तिष्ठन् न वहति तप्तिमन्येषां साधूनाम्। *व्यव० २३२* आ।

अत्तट्ठागुरुओ– आत्मार्थगुरुः, आत्मार्थ एव जघन्यो गुरुः–पापप्रधानो यस्य सः। *दशवै० १८७*।

अत्तट्ठियं– स्वीकृतम्। *आचा० ३२५*।

अत्तट्ठेति– आत्मार्थयन्ति–परिभुञ्जते। *बृह० २७८* अ।

अत्तट्ठो– अप्पणो अट्ठो भत्तादिउ। *निशी० १३२* आ।

अत्तणा– आत्मना कृतं। *स्था० ४९२*।

अत्तणिस्सेसकारए– आत्मनिःशेषकारकः, आत्मनो निः–शेषमिति–शेषाभाव प्रक्रमात् कर्मणः करोति–विधत्त इत्या-त्मनिःशेषकारकः। *उत्त० ३०५*।

अत्तणोउवन्नासं– आत्मन उपन्यासः। *दशवै० ५२*।

अत्तते– आत्मजः। *स्था० ५१६*।

अत्तत्ता– आत्मता–जीवास्तिता स्वकृतकर्मपरिणतिर्वा। *आचा० २३८*।

अत्तत्तासंवुड– आत्मात्मसंवृतः आत्मन्यात्मना संवृतः–प्रतिसंलीनः। *भग० १८४*।

अत्तदोस– आत्मापराधम्। *स्था० ४२४*।

अत्तदोसोवसंहार– आत्मदोषोपसंहारः, योगसङ्ग्रहे एकविंशतितमो योगः। *आव० ६६४*।

अत्तपण्हहा– आत्मनि प्रश्नः आत्मप्रश्नस्तं हन्त्यात्मप्रश्नहा। *उत्त० ४३४*।

अत्तभासिओ– अण्णस्य संतियलाभं णो भुंजति। *निशी० ३३४* अ।

अत्तमाया– आत्मना आदाय। *भग० २८६*।

अत्त(त)रंतस्स– अशक्नुवतः ग्लानादेः। *ओघ० १२७*।

अत्तलद्धिउ– यदात्मना लभते तदाहारयति। *ओघ० १५०*।

अत्तवं– आत्मवान्, सचेतनः। *दशवै० २३६*।

अत्तसंपग्गहिए– आत्मसम्प्रगृहीतः, आत्मैव सम्यक् प्रकर्षेण गृहीतो येन। *दशवै० २५६*।

अत्तसमाहिए– आत्मसमाहितः, आत्मना समाहितः ज्ञानदर्श-नचारित्रोपयोगेन सदोपयुक्त इत्यर्थः। आत्मा वा समाहितोऽ-स्येत्मसमासहितः। सदा शुभव्यापारवानित्यर्थः। *आचा० १९१*।

अत्तसरिसो– आत्मसदृशः, कुलानुरूपः *उत्त० ४०*।

अत्तहिय– आत्महितः, मोक्षः। *दशवै० १५०*। मोक्खो। *दशवै० ६८*।

अत्ता– आत्मा। *आव० २९८*। मोक्षः, संयमो वा। *सूत्र० ९०*। आत्ताः–गृहीताः, स्वीकृताः। *स्था० ६३*। आ अभिविधिना त्रायन्ते–दुःखात् संरक्षन्ति सुखं चोत्पादयन्तीति आत्राः आप्ता वा एकान्तहिताः। *भग० ६५६*। आर्ताः–क्षुत्तृड्भ्यां पीडिताः, आप्ताः–रागद्वेषरहिताः, आत्ताः–गीतार्थाः। *बृह० १४३* अ।

अत्ताणओ– अत्राणः। *आव० २११*।

अत्ताणा– यष्टिद्वितीयाः पान्थाः, कार्पटिकाः, संयता वा। *बृह० ८२* आ।

अत्ताणो– अत्राणः, अनर्थप्रतिघातवर्जितः। *प्रश्न० १९*। त्राण-रहितः, अनर्थप्रतिघातकाभावात्। *प्रश्न० ११*। गवादिहारिणो। *निशी० ११* अ।

अत्ताहिट्ठिय– आत्माधिष्ठितः। *ओघ० १५०*।

अत्ति(ति)मुत्तय– अतिमुक्तकः, पुष्पप्रधानवनस्पतिविशेषः। *जम्बू० ४६*।

अत्तुक्कोसे– आत्मोत्कर्षः। *सम० ७१*। आत्मगुणाभिमानः। *स्था० २७५*।

अत्तेय– आत्रेय ऋषिनाम। *आव० ३७२*।

अत्तो– आप्तः, मोक्षमार्गः, प्रक्षीणदोषः, सर्वज्ञः। *सूत्र० १९५*। रागादिरहितः। *दशवै० १२८*।

अत्तोवणीए– आत्मैवोपनीतः–तथा निवेदितो–नियोजितो

यस्मिन्। *स्था० २५९।*
अत्थं– अस्त्रम्, नाराचादि क्षेप्यायुधम्। *प्रश्न० ११६।* अर्थः, विषयः। *आव० २८३।* अर्थः–ज्ञेयत्वात् सर्व्वमेव वस्तु, अभिधेयः। *उत्त० ३६८।* अभिधेयः, जीवादितत्त्वरूपो वा। *उत्त० २८५।* अर्थ्यत इत्यर्थः–स्वर्गापवर्गादिः। *उत्त० ४४८।* व्याख्यानं। *स्था० ५२।* सूत्रस्य व्याख्यानं। *स्था० १७०।*
अत्थंगओ– अत्थे पव्वए गतो, अचक्खुविसयपंथे वा गतो। *दशवै० १२३।*
अत्थंतमयम्मि– अस्तमयति। *उत्त० ४३५।*
अत्थंतरं– अर्थान्तरम्, पृथग्भूतम्। *आव० ६०१।*
अत्थंतरभावे– अर्थान्तरभावः–भेदः। *आव० ४७६।*
अत्थ– (अत्थपुरिसे) अर्थपुरुषः, अर्थार्जनपरः। *आव० २७७।* अर्थः, निरुपमसुखरूपमोक्षः। *दशवै० १८९।* अर्थनम्, असम्प्राप्तकामभेदः, तदभिप्रायमात्रम्। *दशवै० १९४।* अस्तः, अस्तपर्वतः अदर्शनं वा। *दशवै० २३२।* आदेशः। *बृह० २२* आ।
अत्थअवगमो– अर्थावगमः, अर्थपरिच्छेदः। *दशवै० १२५।*
अत्थई– गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ३२।*
अत्थकंखिया– प्राप्तेऽप्यर्थेऽविच्छिन्नेच्छाः। *भग० ६७१।*
अत्थकरो– अर्थकरः, विद्याद्यर्थकरणशीलः, भावकरविशेषः। *आव० ४९९।*
अत्थकहा– अर्थकथा, विद्या शिल्पमुपायोऽनिर्वेदः सञ्चयश्च दक्षत्वं साम दण्डो भेद उपप्रदानम्। *दशवै० १०७।*
अत्थक्के– अकाण्डः। अनवसरः। *दशवै० ९३।*
अत्थगवेसणया– अर्थगवेषणया, अर्थगवेषणनिमित्तम्। *सूर्य० २९२।*
अत्थग्घं– अस्ताघः। *ओघ० ३२।* अस्ताघम्। *आव० ४१९।*
अत्थजुत्ती– अर्थयुक्तिः, हेयेतररूपा अर्थयोजना। *दशवै० १६२।*
अत्थजुत्तो– अर्थयुक्तः, अर्थसारः, अपुनरुक्तो, महावृत्तः। *जीवा० २५५।*
अत्थदूसणं– अर्थदूषणव्यसनम्। अर्थोत्पत्तिहेतवो ये सामाद्यु-पायचतुष्टयप्रभृतयः प्रकारास्तेषां दूषणम्। *व्यव० १५७।*
अत्थधम्मगइं– अर्थश्च धर्मश्चार्थधर्मौ यदि वाऽथ्र्यतेहितार्थि-भिरभिलष्यते, गतिः–गत्यर्थानां ज्ञानार्थतया हिताहितलक्षणा स्वरूपपरिच्छित्तिः। *उत्त० ४७२।*
अत्थनिउरंगे– संख्याविशेषः। *सूर्य० ९१।*
अत्थनिउरे– संख्याविशेषः। *सूर्य० ९१।*
अत्थनिकुरं– अर्थनिकुरं, चतुरशीतिरर्थनिकुराङ्गशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५।*
अत्थनिकुरंगं– अर्थनिकुराङ्गम्, चतुरशीतिर्नलिनशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५।*
अत्थपयं– अर्थपदम, युक्तिर्हेतुर्वा। *सूत्र० १५३।*
अत्थपिवासिय– अप्राप्तार्थविषयसंजाततृष्णाः। *भग० ६७१।*
अत्थपुहुत्त– अर्थपृथक्त्व–श्रुताभिधेयोऽर्थोः तस्मात् सूत्रं पृथक्, अर्थेन वा पृथु अर्थपृथु तद्भावः अर्थपृथुत्वं। *आव० ६१।*
अत्थमणमुहुत्तं– अस्तमनमुहूर्त्तम्, अस्तोपलक्षितं मुहूर्तम्। *जम्बू० ३५९।*
अत्थमंत– अर्थवताम्, प्रयोजनवताम्। भक्षणाद्यर्हाणाम्। *जम्बू० २४३।*
अत्थमंतमेत्त– अस्तमयति मित्रे–सूर्ये, सायम्। *जम्बू० २४३।*
अत्थरणं– आस्तरणम्, आस्तरणं करोति। *ओघ० ४१।*
अत्थरय– आच्छादनम्। *जम्बू० ५५।* आस्तरकेण, अस्तरजसा वा। *भग० ५४२।*
अत्थलोला– अर्थे लोलाः–अर्थलोलाः–लम्पटाः–चौरादयः। *उत्त० ५९०।*
अत्थविगप्पणा– अर्थविकल्पना। *आव० ४८४।*
अत्थविणिच्छय– अर्थविनिश्चयः–अपायरक्षकं कल्याणावहं वा अर्थावितथभावम्। *दशवै० २३५।*
अत्थसंजुत्तं– सब्भावसंजुत्तं। *दशवै० ८९।*
अत्थसंपयाणं– सांवत्सरिकार्थदानम्। *आचा० ४२२।*
अत्थसत्थं– अर्थशास्त्रम्। *आव० ४२२।* अर्थोपायप्रतिपादनं शास्त्रम्। *प्रश्न० ९७।* नीतिशास्त्रादि। *जम्बू० २१९।*
अत्थसिद्धे– अर्थसिद्धः, शास्त्रीयदशमदिवसनाम। *सूर्य० १४७, जम्बू० ४९०।*
अत्थस्स– अस्तो मेरुर्यतस्तेनान्तरतो रविरस्तं गत इति व्यपदिश्यते तस्य पर्वतराजस्य गिरिप्रधानस्य। *सम०*

६५।

अत्था– अर्थाः, द्रव्याणि। *उत्त० ३८४*। अर्थ्याः, प्रार्थनीया वा। *उत्त० ३८४*। अर्यन्त–गम्यन्त इत्यर्थाः। *ओघ० ५*। शब्दादयः। *स्था० २५३, आचा० २०१*। फलानि, वस्तूनि। *स्था० ३३*। अर्थ्यन्ते–अभिलष्यन्ते क्रिया-र्थिभिरर्यन्ते वा अधिगम्यन्ते। *स्था० ३३५*। निर्युक्तिभा-ष्यसंग्रहणिवृत्तिचूर्णिपञ्जिकादिरूपाः। *सम० १११*।

अत्थाणं– देशविशेषः। *भग० ६८०*।

अत्थाणमंडविया– आस्थानमण्डपिका। *आव० ८१*।

अत्थाणि– आस्थानिका। *उत्त० ११५*।

अत्थाणिमंडवो– आस्थानमण्डपः। *निशी० २७४* आ।

अत्थाणियं– आस्थानम्। *उत्त० १४६*।

अत्थाणियमंडविया– आस्थानमण्डपिका। *बृह० २७* आ।

अत्थाणी– आस्थानी। *आव० ६७२*। आस्थानिका। *आव० १४५, २९८*।

अत्थाणीवरगओ– आस्थानीवरगतः। *आव० २१६*।

अत्थामा– अस्थामानः, सामान्यतः शक्तिविकलाः। *जम्बू० २३९*। अस्थामा, सामान्यतः शक्तिविकलः। *भग० ३२३*।

अत्थायणयं– आस्थानिका। *आव० ३४२*।

अत्थायाणं– अर्थादानं–द्रव्योपादानकारणमष्टांगनिमित्तं तद्द-दत्–प्रयुञ्जानः। *स्था० १६४*।

अत्थावत्ती– सामर्थ्यगम्या। *बृह० १२१* आ।

अत्थावत्तीदोसो– अर्थापत्तिदोषः, यत्रार्थादनिष्टापत्तिः, सूत्र-दोषविशेषः। *आव० ३७४*।

अत्थाहं– अस्ताघम्, अविद्यमानस्ताघम्, अगाधम्। *भग० ८२*। अस्ताधः। निरस्ताधस्तलम्। *भग० ८२*। अप्रमाणम्। *आव० ३७४*।

अत्थि– येन येन यदा यदा प्रयोजनं तत्तत्तदा तदाऽस्ति भवति जायते इति सुखमानन्ददहेतुत्वादिति। *स्था० ४८८*। अस्ति, विद्यन्ते, सन्तीत्यर्थः, अथवाऽस्ति अयं पक्षो यदुत। *भग० ३२*। प्रदेशः। *भग० १४९, जीवा० ६*। अस्ति, निपातः सर्वलिङ्गवचनः। *प्रज्ञा० ५६३*। प्रदेशः। *आव० ६००*। त्रिकालवचनो निपातः। अभूत्, भवति, भविष्यति च। *आव० ७६८*। अस्तिद्वारम्, अस्त्यन्यश्चैतन्यरूपः। *दशवै० १२५*।

अत्थिकाए– अस्तिकायः प्रदेशराशिः। *भग० ३२४*।

अत्थिकाय– अस्तिकायः, प्रदेशराशिः, अस्तीति सन्ति आसन् भविष्यन्ति च ये कायाः प्रदेशराशयस्ते अस्तिकायाः। *भग० १४८*। प्रदेशसङ्घातः। *जीवा० ६*। धर्मास्तिकायादिः। *दशवै० १३४*।

अत्थिकायउद्देसए– गवतीद्वितीयशतकस्य दशमोद्देशकनाम। *भग० ६०८*।

अत्थिकायधम्म– अस्तिकायधर्मः। *दशवै० २१*।

अत्थिकायधम्मे– अस्तयः–प्रदेशास्तेषां कायो–राशिरस्ति–कायः स एव धर्मो–गतिपर्याये जीवपुद् गलयोर्द्धारणात्। *स्था० ५१५*।

अत्थिक्क– आस्तिक्यम्–जीवस्यास्तित्वनित्यत्वकर्तृत्व–भोक्तृत्वमोक्षतत्साधनश्रद्धानम्। *आव० ५९१*।

अत्थिनत्थि– अस्तिनास्तिनामपूर्वः। *स्था० १९१*।

अत्थिय– अस्थिक–बहुबीजवृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*। अस्ति-कायः। *भग० ८१*। अत्थिकम्, अस्थिकवृक्षफलम्। *दशवै० १७६*।

अत्थिया– बहुबीजकवृक्षः। *भग० ८०३*।

अत्थी– अर्थज्ञाता। *बृह० ११२* अ।

अत्थीनत्थिपवायं– यद्यथा लोके अस्ति नास्ति च तद्यत्र तथोच्यते चतुर्थपूर्वनाम। *सम० २६*।

अत्थुआ– आस्तृता। *आव० १७३*।

अत्थुरणं– आउरणं। *निशी० ६१* अ।

अत्थुव्वइ– (अत्थुरइ) आस्तीर्यते। *ओघ० ८३*।

अत्थे– अनेन ह्यन्तरितः सूर्यादिरस्त इत्यभिधीयते। मेरु नाम। *जम्बू० ३७५*।

अत्थेगइया– सन्त्येकके। *प्रज्ञा० ५४५*।

अत्थो– अर्थः, अभिधेयः, प्रयोजनं वा। *प्रश्न० ११५*। कारणं, तात्त्विकः पदार्थो वा। *जीवा० ९८*। अर्यते–गम्यत इति अर्थः। *आव० १०*। पव्वओ, अचक्खुविसयपयत्थो वा। *दशवै० १२३*। अर्यते गम्यत इति, विवृतं प्रबोधितं विकचकल्पम्। *आव० ८६*। अभिप्रेतपदार्थः। *आव० ४१५*। द्रव्यम्। *आव० ६०७*। अर्थ्यत इति। *उत्त० ६८*। विद्यादिः। *दशवै० ११४*।

अत्थोग्गहणं– फलनिश्चयम्। *भग० ५४१*।

अत्थोग्गहे– अर्थावग्रहः, अर्थस्यावग्रहणम्, अनिर्देश्य–सामान्यरूपाद्यर्थग्रहणम्।

व्यञ्जनावग्रहोत्तरकालमेकसा-
मायिकमनिर्देश्यंसामान्यमात्रार्थं ग्रहणम्। *प्रज्ञा० ३११*। अर्थस्य सामान्यनिर्देश्यस्वरूपस्य शब्दादेः अवेति-प्रथमं व्यञ्जनावग्रहानन्तरं ग्रहणं परिच्छेदनमर्थावग्रहः। *सम० १२*। *भग० ३४४*। व्यञ्जनावग्रहचरमसमयोपात्तशब्दाद्यर्थावग्रहण–लक्षणः। *आव० १०*। अर्यते–अधिगम्यतेऽर्थ्यते वा अन्वि-ष्यत इत्यर्थः–सामान्यरूपादेः प्रथमपरिच्छेदनमर्थावग्रहः। *स्था० ५१*।

अत्थोभं– अस्तोभकं, वैहिहकारादिपदच्छिद्रपूरणस्तोभक-निपातशून्यम्, सूत्रगुणः। *आव० ३७६*।

अथंडिलं– सचित्तभूमी। *निशी० ३८* आ।

अथ– अथशब्दः प्रक्रियाप्रश्नानन्तर्यमङ्गलोपन्यासप्रति-वचनसमुच्चयेष्वित्यानन्तर्यार्थः। *स्था० ४९५*। वाक्योप-न्यासार्थः परिप्रश्नार्थो वा। *भग० १४*। प्रक्रियाप्रश्नानन्त-र्यमङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयेषु। *प्रज्ञा० २४७*।

अथक्क– अप्रस्तावः। *बृह० ५५* आ।

अथक्कागओ– अकाण्डागतः। *आव० ८००*।

अथक्को– अविश्रान्तः। *आव० १०२*।

अथालंदोग्गहो– यथालन्दिकावग्रहः। *निशी० २३९* अ।

अथाहं– जत्थ पुण बुड्डति नासिता तं। *निशी० ७८*।

अथिरो– अस्थिरः, क्षणावस्थायी। *सूत्र० ६*।

अदंडे– अदण्डः, प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्रं वा। *सम० ५*।

अदंसणो– अन्धः। *स्था० १६५*।

अदक्खु – अदक्षः, अनिपुणः। *सूत्र० ७४*। अदृष्टः, अर्वा-ग्दर्शनः। *सूत्र० ७४*।

अदक्खुदंसणो– अचक्षुर्दर्शनः अचक्षुर्दर्शनमस्यासौ, केवल-दर्शनः, सर्वज्ञः। *सूत्र० ७४*।

अदक्खेयव्वं– ग्राह्यम्। *ओघ० १६३*।

अदट्ठुमेव– अदृष्टवै। *उत्त० २१३*।

अदढो– विणावि गेलण्णएण जो दुब्बलो। *निशी० १९८*।

अदण्णा– विषादीकृता। *निशी० ३२१* अ।

अदत्तं– अदत्तम्, अदत्तद्रव्यग्रहणम्। *प्रश्न० ४*। अवितीर्णम्, अधर्मद्वारस्य तृतीयं नाम। *प्रश्न० ४३*।

अदन्न– आत्मरक्षणपरा। *बृह० १९०* आ।

अदसा– अदशा–दशिकारहिता क्षौमा। *ओघ० २१७*।

अदसी– अलसी। *आव० ८५४*।

अदिच्छाविज्जिहिह– अदित्सिष्येथे, निषेत्स्येथे। *दशवै० १०*।

अदिट्ठ– अदृष्टम्, प्रत्यक्षापेक्षया अदृष्टम्। *भग० १९७, २००*।

अदिट्ठलाभिय– अदृष्टिपूर्वेण दीयमानं गृह्णाति सः। प्रश्नः *१०६*।

अदिट्ठहडा– अदृष्टाहृता अदृष्टोत्क्षेपमानीता, प्राभृतिका। *आव० ५७६*।

अदिट्ठि– अदृष्टे–तिरोहिते। *ओघ० १६७*।

अदिण्णे– अदत्तादानक्रिया, अदत्तादानाय यत्करणम्, क्रियायाः सप्तमो भेदः। *आव० ६४८*।

अदिन्नादाणवत्तिए– अदत्तादानप्रत्ययः। *सम० २५*।

अदिन्ने– अदत्तादानक्रिया–आत्माद्यर्थमदत्तग्रहणम्। *स्था० ३१६*।

अदिस्समाणे– अदृश्यमानः, अनपदिश्यमानः। *आचा० १३१*।

अदीणवं– अदीनवन्तम्, अदीनं, दैन्यरहितम्। *उत्त० २८२*।

अदीणो– पसण्णमणो। *निशी० १८९* अ। अदीनः, अविक्लवः। *उत्त० १२०*। अदीनाकारयुक्तः। *अनुत्त० ४*। शोकाभावः। *अन्त० २२*।

अदु– अथ, 'अतः' इत्यर्थे *सूत्र० ६१*। अथवा। *उत्त० २९५*।

अदुअक्खरिय– जुगुप्सिता, अद्वट्यक्षरिका। *निशी० १८* अ।

अदुआलिआ– मथिका, मन्थनकारिणी। *दशवै० ६०*।

अदुक्खणया– अदुःखनता, दुःखस्य करणं दुःखनं तदविद्य-मानं यस्यासावदुःखन, तद्भावस्तत्ता अदुःखकरणमित्यर्थः। *भग० ३०५*।

अदुगुंछिअं– अजुगुप्सनीयम्, सामायिकाष्टमपर्यायः। *आव० ४७४*।

अदुट्ठो– अद्विष्टः अदुष्टो वा दायके आहारे वा। *प्रश्न० १०९*।

अदुतं– अद्रुतं, अनुत्सुकम्। *प्रश्न० ११२*।

अदुत्तरं– अथोत्तरम्, अथवपरम्। *भग० १५५, ३०६*। अथान्यत्। *जीवा० १६६*। अथापरं। *औप० ३७*।

अदुयं– अशीघ्रम्। *भग० २९४*।

अ(अं)दुयबंधणं– अन्दुकबन्धनम्। *सूत्र० ३२८*।

अदुवं– अथवा। *उत्त० ११०*।

अदुव– अथवा। *भग० १३०*।

अदुवा– अथवा, पक्षान्तरोपन्यासद्वारेणाभ्युच्चयोपदर्शनार्थः। *आचा० ४७*।

अदूयालियं– उन्मिश्रितम्। *उत्त० १४६*।

अदूरं– प्रत्यासन्नम्। *आव० २३२*।

अदूरसामंते– अदूरसामन्तम्, नातिदूरे नातिनिकटे। *सूर्य० ५*।

अदेसकालप्पलावी– जहा भायणं पडिक्कमियं अट्टकरणंपि से कयं लेवितं, रूढ ततो पमाणतं भग्गं ताहे सो अदेसकालप्प-लावी मए पुव्वं चेव णायं एयं भज्जिहिति। *निशी० ८०* आ। अदेशकालप्रलाती, अतीते कार्ये यो वक्ति-यदिदं तत्र देशे काले वाऽकरिष्यत् ततः सुन्दरमभविष्यदिति। *उत्त० ३४७*।

अद्द– आर्द्रम, सरसम्। *प्रज्ञा० ९१*। सूत्रकृताङ्गस्य षष्ठमध्य-यनम्। *उत्त० ६१६*। *आव० ६५८*। गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

अद्दइज्जं– आर्द्रकीयम्, सूत्रकृताङ्गस्य षष्ठमध्ययनम्। *सूत्र० २८५*। सूत्रकृताङ्गाध्ययननामविशेषः। *सम० ४२*।

अद्दए– आर्द्रकम्, अनन्तकायभेदः। *भग० ३००*।

अद्दकुमारिज्जं– आर्द्रककुमारीयम् (महाध्ययनम्)। *स्था० ३८७*।

अद्दक्खु– अद्राक्षुः, दृष्टवन्तः। *भग० २१९*।

अद्दण्णो– पीडितः। *आव० ७००*। अधृतिमापन्नः, कातरः। *आव० ८००*। अधृतिमुपगतः। *आव० ४१६*। अधृति-मापन्नः। *दशवै० ४८*। अक्षणिकः। *बृह० ४६* अ। अधृति-मुपगतः। *आव० १९०*।

अद्द(द्द)न– माषविशेषनामः। *व्यव० ३५७* अ।

अद्दन्ना– आकुलीभूताः। *बृह० २९०* आ।

अद्दपुरं– आर्द्रपुरं, आर्द्रकराजधानी। *सूत्र० ३८५*।

अद्दया– आर्द्रका, हरिद्रा। उत० २१८।

अद्दवदवं– आर्द्रवद्रवम्, निगालितम्। *आव० ८५४*।

अद्दसुतो– आर्द्रसुतः, आर्द्रकराजकुमारः। *सूत्र० ३८५*।

अद्दहिज्जति– आद्रहति। *निशी० ३१७* अ।

अद्दहिया– आद्रहणम्। *आव० ८५४*।

अद्दा– आर्द्रानामनक्षत्रम्। *स्था० ७७*।

अद्दाए– आदर्शः। *निशी० ३८७* अ।

अद्दाओ– आदर्शः। *आव० २९८, ४१६*।

अद्दागं– आर्द्रकं। *ओघ० १७२*। दर्पणः। *बृह० १३६* आ। आदर्शः। *स्था० २४३, सम० १२४*। *ओघ० १४८*।

अद्दागो– आदर्शः। *स्था० ५१२*।

अद्दाणक्खत्ते– आर्द्रानक्षत्रम्। *सूर्य० १३०*।

अद्दामलगमेत्तं– आर्द्रामलकमात्रं। *आव० ८५७*।

अद्दायं– आदर्शः। *आव० ६५*।

अद्दाय– आदर्शः। *प्रज्ञा० २९३*।

अद्दारिट्ठे– आर्द्रारिष्ठः, कोमलकाकः। *जम्बू० ३२*।

अद्दिज्जमाणेहिं– आर्द्रैः-पुत्रकलत्राद्यनुषङ्गजनितस्नेहादार्द्री-क्रियमाणैः। *आचा० २१२*।

अद्दी– अर्दिः, याञ्चा। *प्रश्न० ९३*।

अद्दीण– अद्रीणः, अश्रुमिनः। *प्रश्न० १०१*।

अद्दीणमाणसे– अदीनमनसा। *आचा० ४२४*।

अद्दीणा– अदीनाः, कथं वयममुत्र भविष्याम इति वैकलव्य-रहिताः परिषहोपसर्गादिसम्भवे वा न दैन्यभाजः। *उत्त० २८२*।

अद्धं– अर्द्धम्। *सूत्र० १६*।

अद्धंसं– उत्तरासङ्गः। *बृह० २५४* अ। *निशी० ११*१ अ।

अद्ध– अद्धाकालः-चन्द्रसूर्यादिक्रियाविशिष्टोऽर्द्धतृतीयद्वीप-समुद्रानार्वर्त्ती समयादिलक्षणः। *आव० २५७*। कालो। *निशी० ३३७* अ। अर्द्धम्, भागमात्रा। *भग० २०८*। तिर्यग्व-लितम्। *जम्बू० ५२*।

अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिते– अर्द्धकपित्थसंस्थानसंस्थितम् चन्द्रविमानस्वरूपम्। *सूर्य० २६२*।

अद्धकवित्थसंठाणसंठियं– अर्द्धकपित्थसंस्थानसंस्थितम् उत्तानीकृतमर्द्धकपित्थं तस्येव यत्स्थानं तेन संस्थितम् । *जीवा० ३७८*।

अद्धकायसमाणा– आलोककव्यन्तरादिकार्यार्धप्रमाण। *जम्बू० ५७*।

अद्धखल्लया– पादार्धाच्छादकं चर्म। *बृह० २२२* आ।

अद्धखल्ला– अद्धं जाव खल्लया जीए उवाणहा। *निशी० १३६* आ।

अद्धखित्तं– अर्द्धक्षेत्रम्। यदहोरात्रप्रमितस्य क्षेत्रस्यार्द्धं चन्द्रेण सह योगमश्नुते तन्नक्षत्रम्। *सूर्य० १७७। जम्बू० ४७८।*

अद्धचंदं– अर्द्धचन्द्रः, बाणविशेषः। *आव० ६९७।*

अद्धचंदा– अर्द्धचन्द्राः, खण्डचन्द्रप्रतिबिम्बानि चित्ररूपाणि। *जम्बू० २०१।*

अद्धचंदो– अर्द्धचन्द्रः, सोपानविशेषः। *प्रश्न० ८।* द्वारादिषु रत्नमयश्चिह्नविशेषः। *प्रज्ञा० ९९। सूर्य० २६४। आव० ४२५। जीवा० १७५।*

अद्धचक्कवाला– चक्रवालार्धरूपा। *भग० ८६६।* अर्धवलयाकारः। *स्था० ४०७।*

अद्धजंघा– जङ्घार्धपिधायि चर्म। *बृह० २२२* आ।

अद्धजंघमेत्तो– अद्धजङ्घा। *निशी० ७९* आ।

अद्धद्धामीसग– अद्धद्धमिश्रा, सत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै० २०९।*

अद्धद्धामीसए– अद्धद्धामिश्रकं, अद्धा-दिवसो रजनी वा तदेकदेशः प्रहरादिः अद्धद्धा तद्विषयं मिश्रकं-सत्यासत्यं। *स्था० ४९१।* अद्धाद्धा, दिवसस्य रात्रेर्वा एकदेशः। *प्रज्ञा० २५९।* अद्धद्धा, दिवसरजन्येकदेशः। *दशवै० २०९।*

अद्धद्धामिस्सिया– अद्धाद्धामिश्रिता, दिवसस्य रात्रेर्वा एकदेशोऽद्धाद्धा सा मिश्रिता यया सा भाषा। *प्रज्ञा० २५६।*

अद्धनारायं- अर्द्धनाराचम्, यत्रैकपार्श्वे मर्कटबन्धो द्वितीये च पार्श्वे कीलिका तत्। *जीवा० १५, ४२। प्रज्ञा० ४७२।*

अद्धपत्थए- मानविशेषः। *भग० ३१३।*

अद्धपलितंका- अर्द्धपर्यङ्का-ऊरावेकपादनिवेशनलक्षणा। *स्था० २९९, ३०२।*

अद्धपलियंकसंठिते- अर्द्धपल्यङ्कसंस्थितम्। *सूर्य० १३०।*

अद्धपल्लंका- एकं जानुमुत्पाट्योपवेशनम्। *बृह० २००* अ।

अद्धपेडा- गोचरचर्याभिग्रहविशेषः। *उत्त० ६०५। स्था० ३६६।*

अद्धपेला- गोचरचर्याभिग्रहविशेषः। *निशी० १२* अ।

अद्धमंडलं- अर्द्धमण्डलम्। *जम्बू० ४७८।*

अद्धमंडलसंठिती- अर्द्धमण्डलसंस्थितिः, अर्द्धमण्डलव्यवस्था। *सूर्य० १६।*

अद्धमागहविब्भमं- अर्द्धमागधविभ्रमम्, गृहविशेषः। *जीवा० २६९। जम्बू० १०७।*

अद्धमागहा- अर्द्धमागधी, अर्द्धं मागध्या इत्यर्द्धमागधी भाषा। *भग० २२१।* मागधभाषालक्षणं किञ्चित्किञ्चिच्च प्राकृतभाषा-लक्षणं यस्यां सा, अर्द्ध मागध्या इत्यर्द्धमागधी। *भग० २२१।* मगहद्धविसयभासानिबद्धं, अट्ठारसदेसीभासाणियतं। *निशी० ३६* अ।

अद्धमासिएसु- अर्धमासिका। *आचा० ३२७।*

अद्धरत्तकालसमओ- अर्द्धरात्रकालसमयः। *आव० १२१।*

अद्धसंकासा- अर्द्धसङ्काशा, सर्वकामविरक्तत्ताविषये देवला-सुतराजस्य तापसावस्थायामुत्पन्ना पुत्री। *आव० ७१४।*

अद्धसम- अर्द्धसमम्, पद्यविशेषः। *दशवै० ८८।* एकतरसमम्। *स्था० ६९७।*

अद्धसेलसुत्थियं- अर्द्धशैलसुस्थितम्। *जीवा० २६९।*

अद्धहारा- अर्धहारा, नवसरिकः। *जम्बू० २४, १०५।*

अद्धहारभद्दो- अर्धहारभद्रः, अर्द्धहारे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारमहाभद्दो- अर्द्धहारमहाभद्रः, अर्द्धहारे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारमहावरो- अर्द्धहारमहावरः, अर्द्धहारे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरभद्दो- अर्द्धहारवरभद्रः, अर्द्धहारवरे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरमहाभद्दो- अर्द्धहारवरमहाभद्रः अर्द्धहारवरे समुद्रेऽ–परार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरमहावरो- अर्द्धहारवरमहावरः, अर्द्धहारवरे समुद्रेऽ–परार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरावभासभद्दो- अर्द्धहारवरावभासभद्रः, अर्द्धहारावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरावभासमहाभद्दो- अर्द्धहारवरावभासमहाभद्रः, अर्द्धहारावभासे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरावभासमहावरो- अर्द्धहारवरावभासमहावरः, अर्द्ध-हारवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरावभासवरो- अर्द्धहारवरावभासवरः, अर्द्धहार-वरावभासे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरावभासो- अर्द्धहारवरावभासः, द्वीपविशेषः। समुद्र-विशेषश्च। *जीवा० ३६९।*

अद्धहारवरो- अर्द्धहारवरः, अर्द्धहारवरे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९*। द्वीपविशेषः, समुद्रविशेषश्च। *जीवा० ३६८*।

अद्धहारो- अर्द्धहारः, नवसरिकः। *औप० ५५*। *जीवा० १८१*। भूषणविधिविशेषः। *जीवा० २६८*। द्वीपविशेषः। समुद्रविशेषश्च। *जीवा० ३६८*। *प्रज्ञा० ३०७*।

अद्धा- अध्वा, पन्थाः। *आव० ६६२*। समयः। विशे० ९६१। कालः, अर्धतृतीयद्वीपसमुद्रान्तर्वती समयादिलक्षणः। विशे० *८३७*। कालम्। *स्था० ४४*। कालस्याख्या। *प्रज्ञा० ९*। अवधिलब्धिकालः। *आव० ४३*। अध्वा-मार्गः। *आव० ६१७*। कालः। *आव० ८४०*। दिवसो रात्रिर्वा। *प्रज्ञा० २५१*। अद्धा, षट्षष्ट्यधिकरात्रिन्दिवशतत्रयपरिमाणा। *सूर्य० ११*। जङ्घाए अद्धं जाव कोसो। *निशी० १३६* आ।

अद्धाउए- अद्धा-कालः तत्प्रधानमायुः-कर्मविशेषोऽद्धायुः, भवात्ययेऽपि कालान्तरानुगामी। *स्था० ६६*।

अद्धाए– कालस्य पौरुष्यादिकालमानमाश्रित्य इति। *स्था० ४९८*। काले अर्थादागामिन्याम्। *उत्त० २८०*।

अद्धाकालः– अद्धैव कालः, कालशब्दो हि वर्णप्रमाणका–लादिष्वपि वर्त्तते, ततोऽद्धाशब्देन विशिष्यत इति। *स्था० २०१*। चन्द्रसूर्यादिक्रियाविशिष्टोऽर्द्धतृतीयद्वीप–समुद्रान्त-वर्त्यद्धाकालः। *दशवै० ९*।

अद्धाकाले– चन्द्रसूर्यादिक्रियाविशिष्टोऽर्द्धतृतीयद्वीप–समुद्रा-न्तर्वर्ती समयादिः। *भग० ५३३*।

अद्धाढए– अर्द्धाढकः, मानविशेषः। *भग० ३१३*।

अद्धाणं– पहो। *निशी० ५१* आ। महदरण्यं। *बृह० १७४* आ। अघ्वा–पन्थाः। *बृह० १२२* अ। महंता अडवी। *निशी० ५०* आ। छिन्नापातं महदरण्यम्। *बृह० २१* आ। उत्पत्तिप्रलयरूपम्। *उत्त० २६८*।

अद्धाण– अध्वनः। *आव० ५३५*। अध्वा–विप्रकृष्टो मार्गः। *बृह० २३८* आ।

अद्धाणतेणो– पंथे मुसंतो। *निशी० ३८* आ।

अद्धाणपडिवन्ने– अध्वप्रतिपन्नः, मार्गप्रतिपन्नः। *भग० ११६*।

अद्धाणपरिस्संतो– अद्धानपरिश्रान्तः। *ओघ० १०७*।

अद्धाणपवण्णगो– अध्वप्रपन्नकः। *आव० ५७८*।

अद्धाणसीसए– यतः परं समुदायेन गन्तव्यं सम्यग्मार्गावहनात्। *बृह० ६१* आ।

अद्धाणसुत्ते– अद्धाणविहिजयणाविदंसणसुत्तगं। *निशी० १४८* अ।

अद्धामिस्सिया– अद्धामिश्रिता, अद्धा–कालः स चेह प्रस्तावाद्दिवसो रात्रिर्वा, स मिश्रितो यया सा भाषा। *प्रज्ञा० २५६*।

अद्धामीसए– कालविषयं सत्यासत्यम्। *स्था० ४९०*।

अद्धामीसग– अद्धामिश्रा, सत्यामृषाभेदः। *दशवै० २०९*।

अद्धासमय– कालसमयः, अद्धाया निर्विभागो भागो वा। *जीवा० ६*।

अद्धिती– अधृतिः। *आव० ३५३*।

अद्धुट्ठाइं– अर्द्धचतुर्थानि। *आव० ३९*।

अद्धुट्ठाण– अध्युष्टानाम्, अर्द्धाधिकतिसृणाम्। *प्रश्न० ७३*।

अद्धोवमिए– अद्धौपमिकम्–यत्कालप्रमाणमनतिशयिना ग्रहीतुं न शक्यते तत्। *स्था० ९०*।

अद्धुतम् – वाण्यतिशयः। *सम० ६३*।

अधम्मजुत्ते– येन उक्तेन प्रतिपाद्यस्याधर्म्मबुद्धिरुपजन्यते तदधर्म्मयुक्तम्। *स्था० २५३*।

अधम्मपलज्जणो– अधर्मप्ररक्तः, अधर्मप्रायेषु कर्मसु प्रकर्षेण रज्यत इति। *सूत्र० ३२९*।

अधम्मपलोई– अधर्मप्रलोकी, अधर्मानेव–परसम्बन्धि दोषानेव प्रलोकयति–प्रेक्षते इत्येवंशीलः। *विपा० ४८*।

अधम्मो– अधर्मः, अचारित्ररूपत्वात्। अब्रह्मणः षोडशं नाम। *प्रश्न० ६६*। अधर्मास्तिकायः स्थित्युपष्टम्भगुणः। *स्था० ४०*। अधर्म्मे–श्रुतलक्षणविहीनत्वादनागमे अपौरुषेयादौ। *स्था० ४८७*। अधर्मास्तिकायः। *सम० ६*। अविद्यमान-सदाचारः। *उत्त० ४३४*।

अधरं– आत्यन्तिकं कारणम्। *बृह० १९* अ।

अधरफाणू– पार्ष्णिका। *व्यव० २९९* अ।

अधरिमं– अविद्यमानधारणीयद्रव्यम् ऋणमुत्कलनात्। *भग० ५४४*।

अधरो– अधरः, अधरतनौष्ठः। *प्रश्न० १४०*। अधीरः। *उत्त० १५३*।

अधरोट्ठा– अधरोष्ठः, अधस्तनो दन्तच्छदः। *जम्बू० ११२*। *प्रश्न० ८१*।

अधस्तनकाय– पादपाणिशिरोग्रीवमुच्यते। *स्था० ३५७*।

अधस्तारका– पिशाचभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ७०*।

अधारणिज्जं– अधारणीयं, धारयितुमशक्यम्, स्थातुं वाऽशक्यम्। *विपा० ६२*। अविद्यमानधमर्णम्। *विपा० ६३*। अप्रशस्तप्रदेशखञ्जनादिकलङ्काङ्कितत्वात्। *आचा० ३९६*।

अधिकरणं– अधिकं–अतिरिक्तं उत्सूत्रं करणं, अवरा अधमा जघन्या गतिः तामात्मानं ग्राहयति। कषाय–भावः। *निशी० २९४* अ। अधोकरणं, अधितिकरणं, अबुद्धिकरणम्। *निशी० २१३* आ। कलहो। *निशी० ३४४* आ, *२३९* अ।

अधिकरणनिर्वर्त्तिनी– खड्गादिनिर्वर्त्तिनी, अधिकरणिकी–क्रियाया द्वितीयो भेदः। *आव० ६११*।

अधिकरणप्रवर्त्तिनी– चक्रमहः पशुबन्धादिप्रवर्त्तिनी क्रिया, अधिकरणिकीक्रियायाः प्रथमो भेदः। *आव० ६११*।

अधिकरणसाला– अधिकरणशाला, लोहपरिकर्मगृहम्। *भग० ६९७*।

अधिकरणाणं– अधिकरणानां–कलहानां यन्त्रादीनां वोत्पा-दयिता। *सम० ३७*।

अधिकरणिखोडी– अधिकरणिखोडी–यत्र काष्ठेऽधिकरणी निवेश्यते। *भग० ६९७*।

अधिकरणिसंठिते– अधिकरणीसंस्थितम्। *स्था० ४३४*।

अधिकरणीतो– चुल्ली। *निशी० १०१* अ।

अधिकासिका– याः सञ्ज्ञावेगेनापीडितः सुखेनैव गन्तुं शक्नोति ताः। *ओघ० १९९*।

अधिके– अर्गले। *उत्त० ६६०*।

अधिक्खाउ– अधिकतरं खाए सो। *निशी० १५१* अ।

अधिगमजं– दर्शनभेदः। *आव० ५२७*।

अधिगरणं– अधिकरणं, अधिक्रियते–स्थाप्यते–नरकादिष्वा-त्माऽनेनेति, अनुष्ठानविशेषः। *प्रज्ञा० ४३५*।

अधिगरणंसि– विरोधे। *स्था० ४४१*।

अधिगरणिया– अधिकरणिकी, अधिकरणेन निर्वृत्ता। *प्रज्ञा० ४३५*।

अधिगारो– अधिकारः, नियोगः। *प्रश्न० ६६*।

अधिघटिकया– कपिलदरिद्रदृष्टान्तविशेषः। *आचा० १६३*।

अधिट्ठणं– संणिसेज्जवेढिए चेव उपवेसणं। *निशी० २४६* आ।

अधिट्ठाणं– अधिष्ठानम्। *ओघ० १४८*।

अधिट्ठिज्जा– अधितिष्ठेत्–योन्याकर्षणेन संगृह्णीयात्। *स्था० ३१३*।

अधिट्ठेति– परिभुञ्जति। *निशी० २२५* आ।

अधिमरगा– अहिवत्। अनपकृतेऽप्यपकारे मारका। *निशी० ११* अ।

अधियं– अधिकम्, वर्णादिभिरभ्यधिकं, सूत्रदोषविशेषः। *आव० ३७४*।

अधियासितो– अध्यासितः, अधिवासितः। *आव० ३४३*।

अधिशय– आश्रयतः। *आचा० २५५*।

अधिष्ठानम्– गुदास्थानम्। *दशवै० ११८*।

अधीकारो– प्रयोजनम्। *बृह० २२५* अ।

अधीकारवशः– प्रसङ्गः। *आचा० २४१*।

अधीता– अधीता, श्रुतनिबद्धा सती पठिता। *प्रश्न० २४१*।

अधीतान्वीक्षिकीकस्य– दुर्गृहीतहेतुदृष्टान्तलेशस्य। *आचा० २२३*।

अधुवं– अध्रुवं–नावश्यभाविनम्। *प्रश्न० ९६*। प्रातिहारिकम्। *निशी० ११७* अ।

अधुवे– न ध्रुवः, सूर्योदयवन्न प्रतिनियतकालेऽवश्यंभावी। *भग० ४३९*। अध्रुवं–स्वल्पकालानुज्ञापनात्। *आचा० ३९६*। नित्यो न। *उत्त० २८९*।

अधो– भूमौ। *ओघ० १६२*।

अधेणू– सुक्का वञ्झा वा। *निशी० ३२७* अ।

अधोघट्टना– अधो भुवं घट्टयति। *ओघ० १०९*।

अधोणता– गजदंतवत् अवनता। *निशी० ४९* आ।

अधोदृष्टिता– दोषविशेषः। *उत्त० ४९०*।

अधोभागा– भूमिभागः। *जम्बू० ३२१*।

अधोभावो– अधोभावः, तिरस्कारबुद्धिः। *आव० ६९९*।

अधोविवृतम्– अनाच्छादितममालगृहम्। *स्था० १५७*।

अधोवेदिका– जानुनोरधो हस्तयोर्निवेशः। *स्था० ३६२*।

अध्यसनं– अजीर्णे भोजनम्। *स्था० ४४७*।

अध्यास्यन्ते– सह्यन्ते। *प्रज्ञा० ८०*।

अध्याहार– व्याख्याङ्गम्। *आचा० ५५*।

अध्येष्टया– यदृच्छया। *सम० ३७*।

अध्वर– यज्ञः। *उत्त० ५२५*।

अनक्कभिन्नेहिं– अनस्तितैः। *भग० ३७२*।

अनग्गओ– अनग्नकः, द्रुमविशेषः। *जीवा० ३६९*।

अनङ्गसेन– चंपावासिसुवर्णकारः। *बृह० १०८* आ।

अनतिचारम्– छेदोपस्थापनीयभेदविशेषः। *स्था॰ ३२३*।

अनतिविलम्बितम्– वाण्यतिशयविशेषः। *सम॰ ६३*।

अनध्यवसायः– संशयो विपर्ययो वा। *आचा॰ १५०*।

अनन्तकम्– समयभाषया वस्त्रमिति। *स्था॰ ३४६*।

अनन्तरवल्ली– मात्रादयः षट्। *बृह॰ ४२*आ।

अनन्यत्वद्रव्यशुद्धि– आदेशतो द्रव्यशुद्धेर्भेदः, यथा शुद्ध–दन्तः। *दशवै॰ २११*।

अनपनीतम्– वाण्यतिशयविशेषः। *सम॰ ६३*।

अनब्भुवगओ– अनभ्युपगतः, श्रुतोपसम्पदानुपसम्पन्नः। *आव॰ १००*।

अनभिग्रहिकः– मिथ्यात्वविशेषः। *स्था॰ २७*।

अनममाणे– अनममानान्, निर्घृणतया सावद्यानुष्ठायिनः। *आचा॰ २५४*।

अनर्गलितकपाटम्– उद्घाटकपाटम्। *ओघ॰ १६६*।

अनर्थकम्– अर्थशून्यम्। *आव॰ ५१*।

अनलं– अनलम्–अभिष्टकार्यासमर्थं हीनादित्वात्। *आचा॰ ३९६*। न अलो अनलः–अपच्चलः। *निशी॰ २५*।

अनलगिरी– अनलगिरिः, प्रद्योतस्य हस्ती, तृतीयं रत्नम्। *आव॰ ६७३*।

अनलसा– उत्साहवन्तः। *ओघ॰ १००*।

अनवत्राप्यता– अविद्यमानमवत्राप्यं–अवत्रपणं लज्जनं यस्य सः, अवत्रापयितुं–लज्जयितुमर्हः, शक्यो वाऽवत्राप्यो लज्जनीयः न तथा तद्भावः। *उत्त॰ ३१*।

अनवयग्ग– अनवदग्रम्, अनन्तम्। *भग॰ २४८*।

अनवसर– अनागमः। *आचा॰ १२२*।

अनाकारा– सामान्यांशग्रहणशक्तिः। *भग॰ ७३*।

अणाघायं- अनाघात अमारिघोषणा। *आचा॰ २६०*।

अनाचारश्रुतम्– सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चममध्ययननाम। *स्था॰ ३८७*।

अनाचीर्णम्– अनारब्धम्। *आचा॰ १४८*।

अणाजुत्ता- अनायुक्ता–लोपकृता। *ओघ॰ १८६*।

अनाद्यन्तं– आद्यन्तरहितम्। *स्था॰ १२०*।

अनानुगामिकः– अनानुगामिकः–शृङ्खलाप्रतिबद्धदीप इव यो गच्छन्तं पुरुषं नानुगच्छति। *प्रज्ञा॰ ५३९*।

अनाभवद्व्यहार– अस्वामित्वव्यवहार। *आव॰ ८२१*।

अनाभोगिक– मिथ्यात्वविशेषः। *स्था॰ २७*।

अणालीढं– अनालीढं–अनवबुद्धः। *ओघ॰ २२७*।

अनाहो– अनाथः, नाथरहितः, योगक्षेमकारिनायकाभावात्। *प्रश्न॰ ११*। योगक्षेमकारिविरहितः। *प्रश्न॰ १९*।

अनिंदं– अनिन्द्यम्, सामायिकसप्तमपर्यायः। *आव॰ ४७४*।

अनिन्द्रियं– मनः। *बृह॰ ९*अ।

अनिकामं– परिमितम्। *बृह॰ ४*अ।

अनिन्दितः– किन्नरभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।

अनिउणमई– अनिपुणमतिः। *आव॰ ४९२*।

अनिग्गहे– अनिग्रहः–न विद्यते इन्द्रियनिग्रहः–इन्द्रियनिय-मात्मकोऽस्येति। *उत्त॰ ३४४*।

अनिज्जूहित्ता– अदत्त्वा। *भग॰ ७०१*।

अनिट्ठं– अनिष्टम्, इष्यन्ते स्मेतीष्टास्तन्निषेधादनिष्टाः। *भग॰ ७२*।

अनिट्ठता– अनिष्टता, अवल्लभता। *भग॰ २३*।

अनिट्ठुभओ– अनिष्ठीवकः, मुखश्लेष्मणोऽपरिष्ठापकः। *प्रश्न॰ १०७*।

अनित्थंत्थं– अनित्थंस्थं, इदं प्रकारमापन्नमित्थं, इत्थं तिष्ठ-तीति इत्थंस्थं, न इत्थंस्थं अनित्थंस्थं–वदनादिशुषिरप्रति-पूरणेन पूर्वाकारान्यभाभावतोऽनियताकारमिति। *प्रज्ञा॰ १०९*।

अनित्यत्वम्– अतावदवस्थ्यम्। *जम्बू॰ २६*।

अनिद्देस– अनिर्देशदोषः, यत्रोद्देश्यपदानामेकवाक्यभावो न क्रियते, एतादृशः सूत्रदोषविशेषः। *आव॰ ३७४*।

अनिभृता– निष्ठुरवक्रोक्त्यादिरूपा। *बृह॰ २१३*अ।

अनिदोज्जं– अनिर्भयं, अस्वस्थम्। *व्यव॰ २४३*आ।

अनियट्टिं– अनिवृत्ति–शुक्लध्यानचतुर्थभेदरूपम्। *उत्त॰ ५८९*।

अनियट्टी– ग्रहविशेषः। *स्था॰ ७९*। *जम्बू॰ ५३५*।

अनियओ– अनियतः, अनियतवृत्तिः। *उत्त॰ २६९*।

अनियतवृत्ति– अनियतविहाररूपा। *उत्त॰ ३१*। अनियत–विहारः। *स्था॰ ४२३*।

अनियाओ– अनियता। *ओघ॰ ७३*।

अनियाणे– अनिदानः, न विद्यते निदानमस्येति निराकाङ्क्षो-ऽशेषकर्मक्षयार्थी संयमानुष्ठाने प्रवर्तेत। *सूत्र॰ २६४*।

अनिरक्खिय– क्षिप्तः। *आव॰ ६८१*।

अनिरुद्दे– अनिरुद्धः, अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्याष्टमाध्य-यनम्। *अन्त० १४*।
अनिरुद्धो– अनिरुद्धः, कृष्णवासुदेवापत्यनाम। *प्रश्न० ७३*।
अनिर्विष्टं– न दत्तफलम्। *बृह० ५०* आ।
अनिव्वुइ– अनिर्वृतिः, अस्वास्थ्यनिबद्धना कायादिचेष्टा। *आव० ४९९*।
अनिलः– अनिलनरेन्द्रः यवराजर्षिपिता। *बृह० १९०* आ।
अनिलसुओ– अनिलसुतः यवराजा। *बृह० १९१* अ।
अनिल्लंछिएहिं– अवर्द्धितकैः। *भग० ३७२*।
अनिवृत्तिकरण– सम्यक्त्वप्राप्तौ करणविशेषः। *स्था० ३१*। अनिवृत्तिकरणं, न निवर्त्तनशीलम्। *आव० ७५*।
अनिवृत्तिबादरः– दर्शनसप्तकलोभोपशमयोरन्तरम्। *आव० ८२*।
अनिव्वाणि– अनिर्वाणिः–असुखम्। *व्यव० ६२* अ। खेदः (*गणि०*)
अनिव्वुइकरो– अनिवृतिकरः, अस्वास्थ्यनिबद्धनकायादिचे-ष्टाकरः। *आव० ४९९*।
अनिव्वुडं– अचित्तभोजी त्रिदण्डोद्वृत्तभोजी। *दशवै० ५१*।
अनिश्रितवचनता– रागाद्यकलुषितवचनता। *उत्त० ३९*।
अणिप्फण्णायावणा– अनिष्पन्नातापना–आतापनाया भेदः। *औप० ४०*।
अनिसाइ– अनिशादी। *सम० २०*।
अनिसीहं– अनिशीथम्, निशीथाद्विपरीतम्। *उत्त० २०४*। बद्धश्रुतम्। *आव० ४६४*।
अनिहुआ– त्रिदण्डिनः। *बृह० २३५* आ। कन्दर्पबहुला मायिनश्च। *बृह० १९५* आ।
अनिहो– अनिहः–अमायः, न निहन्यत इति वा परीषहै-रपीडितः, अस्निहः–स्नेहरूपबन्धनरहितः। *सूत्र० ४००*।
अनीहडं– अनिर्गतम्। *आचा० ३२५*।
अनीहारिमे– अनिर्हारितम्। अटव्यादिकृतमनशनम्। *भग० १२०*। गिरिकन्दरादौ अनशनम्। *स्था० ९४*। *भग० ६२५*।
अनु– पश्चात्। *आव० २४२*। सातत्यम्। *उत्त० ६२७*।
अनुकूलं– अनुगुणं, अनुलोमं च। *जीवा० ३*।
अनुगमः सूत्रस्य न्यासानुकूलः परिच्छेदः। *स्था० ४*। संहितादिव्याख्यानप्रकाररूपः, उद्देशनिर्देशनिर्गमादिद्वार-कलापात्मको वा। *सम० ११५*। अनुगमनम्, अनुपातः। *उत्त० ६३१*।
अनुगामि– यन्मोक्षाय अनुगच्छति। *व्यव० ३१८* अ।
अनुगामिकता– परम्परया शुभानुबन्धसुखम्। *जीवा० २४२*।
अनुगुणं– अनुकूलमनुलोमं च। *जीवा० ३*।
अनुग्गहे– अनुग्रहकृत्स्नं, यत् षण्णां मासानामारोपितं षट् दिवसा गतास्तदनन्तरमन्यत् षण्मासान् आपन्नस्ततो यत् अव्यूढं तत्समस्तं झोषितं पश्चात् यदन्यत् षाण्मासिकमापन्नं तद्वहति। *व्यव० ११८* आ।
अनुज्ञा– विधिः। *आव० ७१३*।
अनुज्ञातभक्तादिभोजनम्– अदत्तादानविरमणचतुर्थभावना। *प्रश्न० १२८*।
अनुज्ञातसंस्तारकग्रहणम्– अदत्तादानविरमणद्वितीयभावना। *प्रश्न० १२७*।
अनुज्ञापनाय– अनुमत्यै। *आव० ५४२*।
अनुतटभेदः– वंशवत् तटभेदः। *स्था० ४७५*।
अनुत्संकलितम्– अवितीर्णम्। *आचा० ३६*।
अनुदिशं– उपाध्यायप्रवर्त्तिनीलक्षणम्। *व्यव० २००* अ। अनुदिक्। *व्यव० १९६* आ। *व्यव० २०४* आ।
अनुद्घातकृत्सन– कालगुरु निरन्तरं वा। *व्यव० ११८* आ।
अनुद्धरिः– कुन्थुविशेषः, त्रीन्द्रियजीवभेदः। *उत्त० ६१५*। चलन्नेव कुन्थुः स विभाव्यते। *स्था० ४३०*।
अनुनादि– वाण्यतिशयविशेषः। *सम० ६३*।
अनुपथ– मार्गमध्यः। अचा० २६५।
अनुपरतम्– उत्सन्नं, बाहुल्येन। *आव० ५९०*।
अनुपरिहारकाः– पारिहारकवैयावृत्त्यकराः। *स्था० ३२४*।
अनुपयाएइ- अनुप्रवाचयति अनु–परिपाट्या प्रकर्षेण विशिष्टार्थावगमरूपेण वाचयति। *जीवा० २५४*।
अनुप्रास– अलङ्कारविशेषः। *जम्बू० १४३*।
अनुप्रेक्षितम्– ध्यातम्। *स्था० १७३*।
अनुभवसञ्ज्ञा– स्वकृतासातवेदनीयादिकर्मविपाकोदयसमुत्था। *जीवा० १५*।
अनुमतं– कामम्। *आव० ५२७*।
अनुमानं– साधनधर्म्ममात्रात् साध्यमात्रनिर्णयात्मकम्।

स्था॰ ४९२।

अनुयोगद्वाराणि– व्याख्याङ्गानि। *आचा॰ ३।*

अनुलिखन्– अभिलङ्घयन्। *जीवा॰ १७५।*

अनुलेपनेन– सकृल्लिप्तस्य पुनः पुनरुपलेपनेन। *सम॰ १३६।*

अनुलोम– उत्सर्गः। *ओघ॰ ६५।*

अनुलोमवचनसहितत्वं– प्रतिरूपविनयविशेषः। *व्यव॰ २२।*

अनुल्बण– अनुद्भटः। *जीवा॰ २७५।*

अनुपातनम्– उच्चारणम्। *आव॰ ८३५।*

अनृतम्– असत्यम्। *स्था॰ ५००।*

अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम्– वाण्यतिशयविशेषः। *सम॰ ६३।*

अनैकान्तिकः– हेतुदोषविशेषः। *स्था॰ ४९३।*

अनुशयः– क्रोधः। *उत्त॰ ३७७।*

अनुश्रेणि– ऋजुश्रेणिः। *उत्त॰ ५९७।*

अणुट्ठाणं– अनुष्ठानं–विहितम्। *आव॰ ६१९।*

अनुसारगतिः– अनुपातगतिः। *सूर्य॰ १६।*

अन्नं– अन्यत्। *उत्त॰ १३७।* मण्डकखण्डखाद्यादिसमस्तमपि भोजनम्। *उत्त॰ ३६९।*

अन्नंति– अनुयन्ति, आगच्छन्ति। *ओघ॰ १२६।*

अन्नंदाइं– असूया, अन्यामिदानीं वा। *आव॰ ५०९।*

अन्न– अन्यः। *भग॰ ३१७।* अन्न–भर्त्तः। *दशवै॰ २१६।*

अन्नइलाय– अन्नतिलाए, दोषान्नभोजी। *प्रश्न॰ १०६।*

अन्नइलायए– अन्नं विना ग्लानो भवति। *भग॰ ७०५।*

अन्नइलायचरए– अन्नग्लानको दोषान्नभुगिति, अथवा अन्नं विना ग्लायकः–समुत्पन्नवेदनादिकारण एव, अन्यस्मै वा ग्लायकाय भोजनार्थं चरतीति अन्नग्लानकचरकोऽन्नग्लाय–कचरकोऽन्यग्लायकचरको वा। *स्था॰ २९८।*

अन्नउत्थिए– अन्यतीर्थिकः, चरकपरिव्राजकभिक्षुभौता–दिकः। *आव॰ ८११।*

अन्नउत्थिता– अन्ययूथिकाः–अन्यतीर्थिकाः। *स्था॰ १३५।*

अन्नउत्थिय– अन्ययूथिकः, अन्यतीर्थिकः, चरकादिकः। *जीवा॰ १४३।*

अन्नकाले– अन्नकालः, सूत्रार्थपौरुष्युत्तरकालं भिक्षाकालः। *सूत्र॰ ३०१।*

अन्नकिच्चकरो– अन्यतृप्तिकरः। *आव॰ ७२०।*

अन्नगिलाय– पर्युषितम्। *आचा॰ ३१३।*

अन्नत्थ– अन्यत्र, परिवर्जनार्थे। *प्रज्ञा॰ २५३। व्यव॰ १६४* आ।

अन्नधम्मिय– अन्यधार्मिकः, मिथ्यादृष्टिः। *ओघ॰ २४।*

अन्नपर– अन्यपरं–अन्यरुपतया परमन्यत्। *आचा॰ ४१५।*

अन्नपाणं– अन्नपानम्, ओदनकाञ्जिकादि। *उत्त॰ ३६३।*

अन्नभयं– परचक्कभयं। *निशी॰ २१* अ।

अन्नभावेणं– अन्यभावः–योऽसौ गन्ता सोऽन्यभावः, उन्निष्क्र-मितुकामः। *ओघ॰ २२।*

अन्नमन्नं– अन्योऽन्यं–परस्परं। *स्था॰ १६२।*

अन्नमन्नओगाढाइं– एकक्षेत्राश्रितानि। *भग॰ ७५८।*

अन्नमन्नगढिया– अन्योऽन्यग्रथिता, परस्परगुम्फिता। *भग॰ २१५।*

अन्नमन्नगुरुयत्ता– अन्योऽन्यगुरुकता, अन्योऽन्येन ग्रन्थनाद्गुरुकता–विस्तीर्णता। *भग॰ २१५।*

अन्नमन्नगुरुयसंभारियत्ता– अन्योऽन्यगुरुकसम्भारिकता, अन्योऽन्येन गुरुकं यत्सम्भारिकं तद्भावस्तत्ता। *भग॰ २१५।*

अन्नमन्नघडत्ताए– परस्परसमुदायता। *भग॰ ७५८।*

अन्नमन्नपुट्ठाइं– आगाढश्लेषतः। *भग॰ ७५८।*

अन्नमन्नबद्धाइं– गाढाश्लेषतः। *भग॰ ७५८।*

अन्नमन्नभारित्ता– अन्योऽन्यभारिकता, अन्योऽन्यस्य यो भारः स विद्यते यत्र तदन्योऽन्भारिकं तद्भावस्तत्ता। *भग॰ २१५।*

अन्नयरंसत्थं– अन्यतरत् शस्त्रम्। सर्वशस्त्रम्, एकधारादिश-स्त्रव्यवच्छेदेन सर्वतोधारशस्त्रकल्पम्। *दशवै॰ २०१।*

अन्नयर– अन्यतरम्, स्तोकम् *दशवै॰ १९८।* प्रतिकूलम्। *आचा॰ ३४२।*

अन्नयरायम्मि– अन्यतरस्मिन्। *उत्त॰ ५४३।*

अन्न भण– अन्येनाकृष्यमाणः। *ओघ॰ १६५।*

अन्नलिंगे– अन्यलिङ्गम् साधुलिङ्गम्। *आव॰ १३४।*

अन्नवत्थुवन्नास– अन्यवस्तूपन्यासः, उपन्यासस्य

द्वितीयो भेदः *दशवै० ५५।*

अन्नवालए– अन्यपालः–अन्ययूथिकः। *भग० ३२३।*

अन्नवेल– तत्रान्यस्यां–भोजनकालापेक्षयाऽऽद्यावसानरूपायां वेलायां–समये चरतीति। *स्था० २९८।*

अन्नहाभावो– अन्यथाभावः। *बृह० २८९ अ।* उन्निष्क्रमणाभिप्रायः। *ओघ० ८१।*

अन्नाइट्ठे– अन्याविष्टः–अभिव्याप्तः। *भग० ६८३।*

अन्नाओ– अन्यस्मात्, अन्नेन द्वारेण। *उत्त० २१९।*

अन्नाणं– अज्ञानम्, मिथ्याज्ञानम्। *उत्त० १५१।* द्रव्यपर्यायविषयबोधाभावः। *स्था० १५४।* लौकिकश्रुतम्। *स्था० ४५१।*

अन्नाणतावादा– अज्ञानमेव श्रेय इत्येवं प्रतिज्ञाः। *स्था० २६८।*

अन्नाणकिरिया– अज्ञानात् वा चेष्टा कर्म वा सा। *स्था० १५३।*

अन्नाणदोसे– अज्ञानदोषः–अज्ञानात्–कुशास्त्रसंस्कारात् हिंसादिष्वधर्मस्वरूपेषु नरकादिकारणेषु धर्म्मबुद्ध्याऽभ्यु–दयार्थं वा प्रवृत्तिस्तल्लक्षणो दोषः, अज्ञानमेव दोषः। *स्था० १९०।*

अन्नाणियवाइ– कुत्सितं ज्ञानमज्ञानं तद्येषामस्ति तेऽज्ञानि-कास्ते च तै वादिनश्चेत्यज्ञानिकवादिनः। *भग० ९४४।*

अन्नाणी– अज्ञानी, मिथ्याज्ञानः। *जीवा० ४३९।* ज्ञाननिह्नववादी। *सूत्र० २०८।*

अन्नाणमूढा– जे सक्कादिमता अन्नाणा नाणबुद्धीए गेह्णंति। णे जतिणं हेउसएहिं दंसियं घडमाण मत्थंपि गिह्णंति। *निशी० ४३ अ।*

अन्नातचरते– अज्ञातः–अनुपदर्शितस्वाजन्यर्द्धिमत्प्रव्रजिता-दिभावः सन् चरति–भिक्षार्थमटतीत्यज्ञातचरकः। *स्था० २९८।*

अन्नायउंछं– अज्ञातोञ्छम्, विशुद्धोपकरणग्रहणविषयम्। *दशवै० २८०।*

अन्नायएसी– अज्ञातैषी–अज्ञातः–तपस्वितादिभिर्गुणैरनवगतः एषयते–ग्रासादिकं गवेषयति। *उत्त० ४१४।*

अन्निं– अन्यदीयम्। *सूत्र० ३०८।*

अन्निआपुत्तो– गङ्गाप्राप्तकेवल आचार्यः। *(संस्ता०)*

अन्निकापुत्रिक– आचार्यविशेषनाम। *व्यव० १९२ आ।*

अन्नितो– अन्वितः–युक्तः। *उत्त० ४४८।*

अन्नियपुत्ता– अर्णिकापुत्राः, वैनयिक्यामाचार्याः। *आव० ४२९।*

अन्नियपुत्तो– अन्निकापुत्रः, आर्यिकालाभद्वारे आर्यिकाऽऽनीताहारभोक्ता आचार्यः। *आव० ५३७।*

अन्ने– नानादेशापेक्षया गौरवकुत्सादिगर्भमामन्त्रणवेचनमिदम्। *दशवै० २१६।*

अन्नेसमाण– अन्वेषमाण भगवदाज्ञामनुपालयन्। *दशवै० १८७।*

अन्नेसिं– अन्वेषयेत् गवषयेत्। *आचा० ७७।*

अन्नो– अन्यदीयम्। *सूत्र० ३०८।*

अन्नोन्नं– अन्यदन्यद्। *ओघ० १४३।*

अन्नोन्नकारणं– परस्परवैयावृत्यकरणम्। *बृह० २१२ अ।*

अन्नोन्नघडत्ता– अन्योऽन्यघटता, परस्परसम्बद्धता। *जीवा० ९३।*

अन्यत्वम्– अनगारद्वयसम्बन्धिनो ये पुद्गलास्तेषां भेदः। *भग० ७४१।*

अन्यत्वद्रव्यशुद्धि– अन्यद्रव्यशुद्धिः, आदेशतो द्रव्यशुद्धेर्भेदः, यथा शुद्धवासा। *दशवै० २११।*

अन्यद्रव्यनानाता– परमाणोर्द्धर्य पुद्गलादिभेदभिन्नता। *आव० २८१।*

अण्णपुट्ठ– अन्यपुष्टः-कोकिलः। *उत्त० ६५३।*

अन्योऽन्यक्रियासप्तैकक– सप्तमसप्तकम्। *स्था० ३८७।*

अन्योऽन्यप्रगृहीतम्– वाण्यतिशयविशेषः। *सम० ६३।*

अन्योऽन्याविभागसम्बद्ध– क्षीरनीरादिकसम्बद्धम्। *आव० ३२२।*

अन्वीक्षिष्यामि– अन्वेषयिष्यामि। *आचा० २८२।*

अन्वेषयेत्– प्रार्थयेत्। *आचा० २९०।*

अन्यतीर्थिकः– सरजस्कादयः। *आचा० ३२४।* अन्यानि च तान्यर्हत्प्रणीततीर्थादन्यत्वेन तीर्थानि च–निजनिजाभिप्रायेण भवजलधेस्तरणं प्रति करणतया विकल्पितत्वेनान्यतीर्थानि तेषु भवाः, ते च शाक्यसरजस्कादयः। *उत्त० २९९।*

अपइट्ठाणे– अप्रतिष्ठानः, सप्तम्यां नरकावासविशेषः। *प्रज्ञा० ८३।*

अपकर्षणं– ह्रासः। *स्था० २२२।*

अपकसंती– परिह्रसन्ती नीयमाना वा। *स्था० ३२८।*

अपकिट्ठ– अपकृष्टम्। किञ्चिदूनम्। *भग० २९२।*

अपक्खग्गाही– अपक्षग्राही, न पक्षं शास्त्रबाधितं गृहणाति इति। *स्था० ४४१।*

अपक्खो– कालपक्खो। *निशी० ३३* आ।

अपचयद्रव्यमन्दः– कृशशरीरतया प्रवासं न कर्तुमीष्टे। *बृह० ११३* अ।

अपचयभावमन्दः– बुद्धेरभावेन हिताहितप्रवृत्तिनिवृत्ती न कर्तुमीष्टे। *बृह० ११३* अ।

अपच्चक्खाणकसाए– देशविरतिप्रतिबन्धको मोहः। *सम० ३१।*

अपच्चक्खाणकिरिआ– सूत्रकृताङ्गे द्वितीयश्रुतस्कन्धाध्ययन-विशेषः। *सम० ४२।*

अपच्चक्खाणकिरिया– अप्रत्याख्यानक्रिया, विंशतिक्रियामध्ये पञ्चमीक्रिया। *आव० ६१२।* अविरतिस्तन्निमित्तः कर्म्मब-न्धः। *स्था० ४१।* निवृत्त्यभावेन क्रिया–कर्मबन्धकारणम्, सम्यग्दृष्टेश्चतुर्थी क्रिया। *प्रज्ञा० ३३४।* प्रत्याख्यानक्रियाया अभावः, अप्रत्याख्यानजन्यः कर्मबन्धो वा। *भग० १०१।*

अपच्चक्खाणा– अप्रत्याख्यानः। *प्रज्ञा० ४६८।* कषाया एव। *आव० ७७।* देशविरत्यावारकः। *स्था० १९४।*

अपच्चलो– अपच्चलः, असमर्थः। *आव० ५३७।* अयोग्यः। *निशी० २५* अ।

अपच्छिमं– अपश्चिमम्, चरमम्। *आव० ५४४।* पश्चात्कालभाविन्यः। *सम० १२०।*

अपच्छिमा– अपश्चिमा। *आव० ८३९।* पश्चिमैवामङ्गलपरि-हारार्थमपश्चिमा। *स्था० ५७।*

अपज्जतं– अपर्याप्तम्–अशक्तः। *उत्त० ४०८।*

अपज्जत्ता– अपर्याप्ता, पर्याप्तभाषाविपरीतो भाषाभेदः। *दशवै० २१०।*

अपज्जत्तिया– अपर्याप्तिका, या मिश्रतया उभयप्रतिषेधात्म-कतया वा न प्रतिनियतरूपतयाऽवधारयितुं शक्यते सा, भाषाया द्वितीयो भेदः। *प्रज्ञा० २५५।*

अपज्जोसवण– अपत्ते अतीते वा जो पज्जोसवति। *निशी० ३३६* अ।

अपडिकम्म– शरीरप्रतिकर्मवर्जितम्। *भग० ६२६।*

अपडिण्णे– अप्रतिज्ञः, नास्य प्रतिज्ञा विद्यते। *आचा० १३२।* अनिदानो, वसुदेववत् संयमानुष्ठानं कुर्वन् निदानं न करोति। *आचा० १३३।* यदि वा स्याद्वादप्रधानत्वान्मौनीन्द्रागमस्यै-कपक्षावधारणं प्रतिज्ञा तद् रहितः। *आचा० १३३।* अनि-दानः। *आचा० ३०६।*

अपडिबद्धया– अप्रतिबद्धता, स्वजनादिषु स्नेहाभावः। *भग० ९७।*

अपडिभाणी– अप्रतिभाषी। *आचा० ३०६।*

अपडिरूवा– अप्रतिरूपा। *उत्त० ११३।*

अपडिलेह– अल्पार्थे नञ्, ततोऽप्रत्युपेक्षित इति अल्पोपकर-णत्वादल्पप्रत्युपेक्षः। *उत्त० ५९०।*

अपडिवाती– अवधिज्ञानभेदः। *स्था० ३७०।*

अपढमसमयनियंठो– अप्रथमसमयनिर्ग्रन्थः, यः शेषेषु समयेषु वर्त्तमानः सः। *उत्त० २५७।*

अपतिट्ठिए– अप्रतिष्ठितः–आक्रोशादिकारणनिरपेक्षः केवलं क्रोधवेदनीयोदयाद् यो भवति सः। *स्था० १९३।*

अपत्तं– अपात्रं–अभाजनम्। *निशी० ८०* अ।

अपत्तपडिच्छण– अप्राप्तामपि वेलाम् प्रतिपालयति। *ओघ० ४९।*

अपत्ति– अप्रीतिः। *आव० २०१।*

अपत्तियं– अप्रीतिकम्। *आव० २७३।* अपात्रिकाम्-अवि-द्यमानाधारम्। *भग० ७०५।*

अपत्तियंते– अप्रत्येति। *बृह० २२८* आ।

अपत्थं– अपथ्यं–अहितम्। *उत्त० २७६।*

अपत्थिअपत्थिआ– अप्रार्थितप्रार्थकः। *आव० १९२।*

अपत्थियपत्थए– अप्रार्थितं प्रार्थयते यः सः। *भग० १७४।*

अपदंसो– पित्तारुअं। *निशी० ११७* अ।

अपद्रापयेत्– जीविताद्व्यपरोपयेत्। *आचा० ४२८।*

अपदलम्– अपशदं द्रव्यं (दलं) कारणभूतं मृत्तिकादि यस्यासावपदलः, अवदलति वा दीर्यत इत्यवदलः आमपक्वतयाऽसार इत्यर्थः। *स्था० २७९।*

अपद्रावन्ति– प्राणान्मुञ्चन्ति। *आचा० ५५।*

अपद्वारं– कुत्सितद्वारम्। *स्था० ४०२।*

अवदारिआ– अपद्वारिका–स्थानविशेषः। *बृह० २७२* आ।

अपध्यानम्– विस्रोतसिका। *आव० ६०२*।

अपनीतः– विधूतः प्रकम्पितो वा। *आव० ५०७*।

अपनीता– विनाशिता। *ओघ० ४६*।

अपभ्रंशः– तत्तद्देशेषु शुद्धं भाषितम्। *जम्बू० २५९*।

अपमज्जियं– अप्रमार्जितम्, द्वितीयासमाधिस्थानम्। *आव० ६५३*।

अपमज्जियचारि– अप्रमार्जितचारी, असमाधिस्थाने द्वितीयो भेदः। *सम० ३७*।

अपमज्जियदुप्पमज्जियसिज्जासंथारए– अप्रमार्जितदुष्प्र-मार्जितशय्यासंस्तारकः, शय्यादेश्चक्षुषा न प्रत्युपेक्षणं, शय्यादेरुद्भ्रान्तचेतसा प्रत्युपेक्षणं दुष्प्रत्युपेक्षणं यस्य सः। *आव० ८३५*।

अपमत्ते– अप्रमत्तः–निद्रादिप्रमादरहितः। *आचा० ३०७*।

अपमानभीरु– भिक्षां भ्रमन्नपि न यस्य तस्यैव वेश्मनि प्रवेष्टु-मिच्छति, यदि वा 'ओमाणं' प्रवेशः, स च स्वपक्षपरपक्षयो-स्तद्भीरुर्गृहिप्रतिबन्धेन मा मां प्रविशन्तमवलोक्यान्ये साधवः सौगतादयो वाऽत्र प्रवेक्ष्यन्तीति। *उत्त० ५५२*।

अपमित्यकः– षष्ठः शबलदोषः। *प्रश्न० १४४*।

अपयं– अपदम्, पद्यविधौ पद्ये विधातव्येऽन्यच्छन्दोऽभिधानम्। सूत्रदोषविशेषः। *आव० ३७४*। न विद्यते पदम्–अवस्थावि-शेषो यस्य स। *आचा० २३१*।

अपयाण– अपादानं–मर्यादया दानं (खण्डनं)। *आव० २७८*।

अपया– लोमसीआदि। *निशी० ३* आ।

अपर– संयमः। *आचा० १६७*।

अपरच्छं– अपराक्षम्, असमक्षं, अधर्मद्वारस्य त्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ४३*।

अपरद्धो– अपराद्धः, व्याप्तः। *आव० १०८*।

अपरमं– दुक्खम्। *दशवै० ६२*।

अपरमविद्धम्– वाण्यतिशयविशेषः। *सम० ६३*।

अपराइआ– वप्रावतीविजये अपराजिता राजधानी। *जम्बू० ३५७*।

अपराइए– प्रतिवासुदेवनाम। *सम० १५४*।

अपराइय– पद्मबलदेवस्य पूर्वभवनाम। *सम० १५३*।

अपराजिअ– अपराजितः, अरजिनप्रथमभिक्षादाता। *आव० १४७*।

अपराजिआ– अपराजिता, राजधानीनाम। *जम्बू० ३५२*। पौरस्तयरुचकवास्तव्याऽष्टमी दिक्कुमारी। *जम्बू० ३९१*। रात्रिनाम। *जम्बू० ४९१*। चन्द्रस्याग्रमहिषीनाम। *जम्बू० ४३२*। पद्मबलदेवमाता। *आव० १६२*।

अपराजिए– ग्रहविशेषः। *स्था० ७९*।

अपराजित– जगतीद्वारनामविशेषः। *सम० ८८*।

अपराजिता– अपराजिता, अञ्जनपर्वते पुष्करणीविशेषः। *स्था० २३१*। अनुत्तरोपपातिकविमानविशेषः। *प्रज्ञा० ६९*।

अपराजिते– जगतीद्वारनामविशेषः। *स्था० २२५*।

अपराजिय– कुन्थुजिनप्रथमभिक्षादाता। *सम० १५१*।

अपराजिया– अपराजिया–सैद्धान्तिकरात्रिनाम। *सूर्य० १४७*। अष्टमबलदेवमाता। *सम० १५२*। अङ्गारकमहाग्रहस्याग्र-महिषी। *भग० ५०५, स्था० २०४*। सुविधिनाथदीक्षा-शिबिका। *सम० १५१*। विदेहेषु राजधानीविशेषनाम। *स्था० ८०*। राजधानीविशेषः। *स्था० ८०*।

अपराधालोचना– आलोचनाभेदः। *व्यव० ४८* आ।

अपरिआविआ– अपरितापिताः, स्वतः परतो वाऽनुप–जातकायमनः परितापाः। *जम्बू० १२६*।

अपरिकम्म– अपरिकर्म–व्याघाते गिरिभित्तिपतनाभिघाता-दिरूपे संलेखनामविधायैव भक्तप्रत्याख्यानादि क्रियते तत्। *उत्त० ६०३*।

अपरिक्खिउ– अनालोच्य। *निशी० ९८* आ।

अपरिखेदितं– वाण्यतिशयविशेषः। *सम० ६३*।

अपरिगहियागमणे– अपरिगृहीतागमनम्, वेश्या अन्यसत्कगृ-हीतभाटी कुलाङ्गना अनाथा वा तस्या गमनं–मैथुनासेवनम्। *आव० ८२५*।

अपरिग्गहो– अपरिग्रहः, धर्मोपकरणवर्जपरिग्राह्यवस्तुध–र्मोपकरणमूर्च्छावर्जितः। *प्रश्न० १४२*। न विद्यते धर्मोप-करणादृते शरीरोपभोगाय स्वल्पोऽपि परिग्रहो यस्य सः। *सूत्र० ४९*। अगीतार्थः तदायत्ताश्च। *व्यव० २३३*।

अपरिणत– अमार्गस्थः। *आव० ८५१*।

अपरिणते– भोजनपरिणत्यभावः। *ओघ० २३*।

अपरिणय– सेहप्रायः। *ओघ० ८९*। कालग्रहणभावोऽपग–तोऽन्यचित्तो वा जातः। *ओघ० २०३*। अपरिणतः–

एषणा-दोषविशेषः। *आचा० ३४५*। अविध्वस्तः। *आचा० ३४८*।

अपरिणामा– अपरिणामाः, अपरिणामिकः। *व्यव० ७२* अ।

अपरितंतजोगी– अपरितान्तयोगी, अविश्रान्तसमाधिः। *अन्त० २३, अनुत्त० ४*। अपरितान्ताः–अश्रान्ताः योगाः–मनःप्र-भृतयः सदनुष्ठानेषु यस्य सः। *प्रश्न० १०९*।

अपरितंतो– वैयावृत्त्यादौ अनिर्वेदी। *बृह० ९२* आ। अनिविण्णो। *बृह० २२१* अ।

अपरिताविय– अपरितापितः, स्वतः परतो वाऽनुपजातकाय-मनःपरितापः। *जीवा० २८४*।

अपरिपुण्णं– अपरिपूर्णम्, सद्गुणविरहात्तुच्छम्। *सूत्र० ३२६*।

अपरिभुत्तं– अपरिभुक्तम्। *आचा० ३२५*।

अपरिभुत्त– अपरिभुक्तः, अनाक्रान्तः। *ओघ० ५७*।

अपरिमाण– अपरिमाणः–अनन्तः। *आचा० २४१*।

अपरिमितम्– अमितम्। *आव० ५९५*।

अपरिमियपरिग्गहं– अपरिमितपरिग्रहः। *आव० ८२५*।

अपरिमियमणंता– अपरिमितानन्ताः–अत्यन्तानन्ताः। *प्रश्न० ९२*।

अपरियाइत्ता– अपर्यादाय–समन्तादगृहीत्वा। *स्था० २०*। अपर्यादाय–अगृहीत्वा। *भग० ६४३*। *जीवा० ३७५*। *स्था० ४६*।

अपरियाणित्ता– अपरिज्ञाय। *स्था० ४६*।

अपरियावणया– शरीरपरितापानुत्पादनेन। *भग० ३०५*।

अपरिसाडिं– अनवयवोज्झनम्। *भग० २९४*।

अपरिसाडि– अपरिशाटि, परिशाटिवर्जितम्। *प्रश्न० ११२*।

अपरिसाडी– वंसकंषिमादी। *निशी० १६८* अ।

अपरिसुद्धं– अपरिशुद्धम्, अयुक्तियुक्तम्। *आव० ५७६*।

अपरिस्साइ– न परिश्रवति–नालोचकदोषानुपश्रुत्यान्यस्मै प्रतिपादयति य एवंशीलः सोऽपरिश्रावीति। *स्था० ४२४*।

अपरिस्सावी– अपरिश्रावी–अबन्धको निरुद्धयोगः। *भग० ८९२*। अझरकः (*आतु०*)

अपरिहत्थो– अदक्षः। *आव० ५६७*।

अपरिहरित्ता– अपरिर्हृत्य–द्वित्रैर्मासैर्व्यवधानमकृत्वा। *आचा० ३६६*।

अपरिहारिया– अपरिहारिका–साधर्मिकाः। *आचा० ३५२*।

अपरीत्ता– साधारणशरीराः। *स्था० १३२*।

अपवरगो– अपवरकः। *जीवा० २६१*। अपवरकम्, अन्तर्गृहम्। *ओघ० १५३*।

अपवरिका– अपवरकम्। *व्यव० २०७* आ।

अपवर्त्तनम्– कर्मणां स्थित्यादेरध्यवसायविशेषेण हीनताकर-णम्। *भग० २५*।

अपवर्त्तना– हानिकरणम्। *सूर्य० ११३*।

अपवर्त्तयन्– तिरश्चीनं कुर्वन्। *आचा० ३४३*।

अपवादः– करणं, विशेषवचनं च। *जम्बू० ५४१*। विभागः। *निशी० १०५* आ।

अपवादम्– प्रवचनरहस्यम्। *बृह० १३१* अ।

अपवादापवादरूपम्– शाक्यादीनां प्रयोजने यद्राज्ञो विज्ञापनम्। *स्था० ३१२*।

अपव्वावितो– न प्रव्रजितः न मुंडितानि कृतानि। *व्यव० २८* आ।

अपसत्थविहायगति– अप्रशस्तविहायोगतिः–नामकर्मविशेषः। *प्रज्ञा० ४७४*।

अपसिणा– अप्रश्नाः– या पुनर्विद्या मंत्रविधिना जप्यमाना अपृष्टा एव शुभाशुभं कथयन्ति एताः। *सम० १२४*।

अपसू– अपशुः–द्विपदचतुष्पदादिरहितः। *आचा० ४०३*।

अपहार– मत्स्यः। *स्था० ३०९*।

अपहुप्पंते– अप्रभवति, अपूर्यमाणे। *पिण्ड० ८८*।

अपहृतान्योत्तरम्– वाण्यतिशयविशेषः। *सम० ६३*।

अपाईणवाए– अप्राचीनवातः, यः प्रतीच्या दिशः समागच्छति वातः सः। *प्रज्ञा० ३०*।

अपाचीनैः– अशुभैः। *आचा० २५०*।

अपान्तरालम्– अबाधा। *जीवा० ९४*।

अपायं– अपादम्, विशिष्टच्छन्दोरचनायोगात् पादवर्जितं गद्यगुणः। *दशवै० ८८*।

अपायतो– विश्लेषतः। *स्था० ४२८*।

अपारंगमा– अपारङ्गमाः, पारः-तटः परकूलं तद्गच्छन्तीति पारङ्गमाः न पारङ्गमाः अपारङ्गमाः। *आचा० १२४*।

अपावते– अपापकः शुभचिन्तारूपः। *स्था० ४०१*।

अपावभाव– अपापभावः, शुद्धचित्तः। *दशवै० २३*।

अपिः– सम्भावनानिवृत्त्यपेक्षासमुच्चयगर्हाशिष्यामर्षण–भूषणप्रश्नेष्विति। *स्था० ४९५*। बाढम्। *जीवा० १९८*। विद्यमानः। *आव० ४५०*। च। *उत्त० १८२*। इति। *ओघ० ३६*। यथाशब्दार्थः, समुच्चयार्थश्च। *आचा० ६५*। पुनः। *आचा० २८२*। बाढार्थे। *जम्बू० ४६*। एवकारार्थे। *आव० ५४९*। अभ्युपगमवादसंसूचकः। *आव० ५३१*। बाढम्। *जम्बू० ४१३*।

अपिट्टणया– यष्ट्यादिताडनपरिहारेण। *भग० ३०५*।

अपियत्ता– अप्रियता, सर्वेषामेव द्वेष्यतया। *भग० २३*।

अपीओ– अपीतः, न पीतः। *उत्त० ८७*।

अपुज्जो– अपूज्यः, अवन्दनीयः। *आव० ५१९*।

अपुट्ठवागरणं– अपृष्टव्याकरणम्, अपृष्टे सति प्रतिपादनम्। *भग० १५७*।

अपुणरावत्तयं– अपुनरावर्त्तकम्, कर्मबीजाभावाद्भवावता-ररहितम्। *भग० ७*।

अपुणरावित्ति- अपुनरावर्त्तकम्-अविद्यमान पुनर्भवावतारम्। *सम० ५*।

अपुत्तो– अपुत्रः, स्वजनबन्धुरहितः, निर्मम इत्यर्थः। *आचा० ४०३*।

अपुप्फिय– अपुष्पितं–तरिकारहितम्। *ओघ० १२२*। मच्छम्। *बृह० ६८ अ*।

अपुम– नपुंसकम्। *ओघ० ९०*।

अपुरिसंतरकडं– अपुरुषान्तकृतं–तेनैव दात्रा कृतम्। *आचा० ३२५*।

अपुरिस– अपुरुषः, नपुंसकः। *स्था० ३७२*।

अपुव्वो– अपूर्वः, अननुभूतपूर्वोऽनुभूतपूर्वो वा। *अनुयो० १३७*।

अपुव्वं– अपूर्वम्, अपूर्वकरणम्। *आव० ८५२*।

अपूर्वश्रुतप्रत्याख्यानम्– आतुरप्रत्याख्यानादिकम्। *आव० ४७९*। अप्राप्तपूर्वं, अवृत्तपूर्वम्। *आव० २३०, बृह० १९४ अ*।

अपुव्वकरणं– अपूर्वकरणं–असदृशाध्यवसायविशेषम्। *भग० ४३६*। अप्राप्तपूर्वम्। *आव० ७५*। सम्यक्त्वप्राप्तौ करण-विशेषः। *स्था० ३१*।

अपुहुत्ते– अपृथक्त्वं, अपृथग्भावः, चरणधर्मसङ्ख्या–द्रव्यानुयोगानां प्रतिसूत्रमविभागेन वर्तनम्। *आव० २८५*। अपृथक्त्वानुयोगः–एकस्मिन्नेव सूत्रे सर्व एव चरणादयः प्ररूप्यन्ते। *दशवै० ४*।

अपूरेंतो– अपूरयन्, अकुर्वन्। *आव० २७१*। अकुर्वन्, अनाचरन्। *आव० २६३*।

अपूर्वभक्तिकम्– अपूर्वरचनाकम्। *स्था० ४०१*।

अपेक्षाकारणम्– दिग्देशकालाकाशपुरुषचक्रादि। *स्था० ४९४*।

अपेज्जं– अपेयम्। *जीवा० ३७०*। अपेयम्–सुरादिकम्। *व्यव० ८ अ*।

अपोद्धारः– साक्षादुक्तिः। *आचा० ४९*। निरासः। *आव० ३०९*।

अपोरसीय– अपौरुषेयम्, अपुरुषप्रमाणम्। *भग० २९०*।

अपोरुसियं– अपौरुषेयम्, पुरुषप्रमाणरहितम्। *भग० ८२*।

अपोह– अपोहः, पृथग्भावः। *ओघ० १२*। अपोहनं–निश्चयः। *आव० १८*। विपक्षनिरासः। *भग० ४३३*।

अपोहत्ते– एवमेतत् यदादिष्टमाचार्येणेति पुनस्तमर्थमागृहीतं धारयति करोति च सम्यक् तदुक्तमनुष्ठानमिति। *आव० २६*।

अप्पं– अल्पम्, मूल्यत एरण्डकाष्ठादि। *दशवै० १४७*। अभावः, स्तोकं वा। *आव० ५८६*।

अप्पइट्ठाणे– अप्रतिष्ठानः। *सम० २*। मोक्षः।*आचा० २३१*।

अप्पइट्ठिते– अप्रतिष्ठितः–निरमलम्बन एव केवलक्रोधवेदनी-पादुपजायते यः क्रोधः। *प्रज्ञा० २९०*।

अप्पईकारं– अप्रतीकारम्, सूतिकर्मादिरहितम्। *प्रश्न० २२*।

अप्पउलिओसहि भक्खयणा– अपक्वौषधभक्षणता। *आव० ८२८*।

अप्पए– शरीरे। *आव० ५५५*।

अप्पकम्मपच्चायाते– अल्पकर्मप्रत्यायातः–अल्पैः–स्तोकैः कर्म्मभिः करणभूतैः प्रत्यायातः–प्रत्यागतो मानुषत्वमिति, अथवा एकत्र जनित्वा ततोऽल्पकर्मा सन् यः प्रत्यायातः, स तथा लघुकर्मतयोत्पन्नः। *स्था० १८०*।।

अप्पकिरियतराए– अल्पक्रियत्वम्–तथाविधकायिक्यादिक-ष्टक्रियाऽपेक्षम्। *भग० ७६९*।

अप्पकुक्कुई– अल्पकौत्कुचः, अल्पस्पन्दनः, अल्पं–

असत् 'कुक्कुयं' कौत्कुचं–करचरणभ्रूभ्रमणाद्यसच्चेष्टात्मकमस्येति। *उत्त० ५९*।

अप्पक्खमं– आत्मक्षमां–आत्महिताम्। *ओघ० १८९*।

अप्पक्खरं– अल्पाक्षरम्, सूत्रगुणः। *आव० ३७६*।

अप्पग्घ– अल्पार्धम्, स्वल्पमूल्यम्। *भग० १९९*।

अप्पच्चओ– अप्रत्ययः, प्रत्ययाभावः। अधर्मद्वारस्य चर्तुविंशतितमं नाम। *प्रश्न० २६*। अप्रत्ययकारणत्वात्। अधर्मद्वारस्य सप्तदशं नाम। *प्रश्न० ४३*।

अप्पच्चक्खाय– अप्रत्याख्याय–अनिराकृत्य। *उत्त० २६६*।

अप्पच्छन्दमईओ– आत्मच्छन्दमतिः, आत्मच्छन्दा–स्वाभिप्रायकार्यकारी। *आव० १००*।

अप्पजूहिए– सिद्धेऽप्योदनादिके। *आचा० ३३५*।

अप्पज्झं– आत्मवशं, स्वस्थचित्तम्। *बृह० २१० अ*।

अप्पज्झाणं– आत्मध्यानम्, अमुकोऽहं अमुककुले अमुगसिस्से अमुगधम्मट्ठाणट्ठिइए न य तव्विराहणेत्यादिरूपम्। *प्रश्न० १२८*।

अप्पझंझे– अल्पझञ्झः, अविद्यमानकलहविशेषः। *औप० ३९*।

अप्पझंझा– अल्पझंझाः–विगततथाविधविप्रकीर्णवचनाः। *स्था० ४४२*।

अप्पडिकुट्ठाइं– अप्रतिक्रुष्टे–अनिवारिते। *स्था० ९३*।

अप्पडिबद्धे– अप्रतिबद्धः–मनसि निरभिष्वंगता। *उत्त० ५८७*।

अप्पडिबुज्झमाणे– अप्रतिबुद्ध्यमानः–शब्दान्तराण्यनवधारयन् अप्रत्युहृयमानो वा –अनपह्रियमाणमानसो। *भग० ४८३*।

अप्पडिरुवा– अप्रतिरूपा। *आव० ६७५*।

अप्पडिरूवे– अप्रतिरूपः, अविद्यमानं प्रतिरूपमतिप्रकर्षवत्त्वे-नानन्यतुल्यमस्येति। *उत्त० १८८*।

अप्पडिलेहणा– अप्रत्युपेक्षणा, मूलत एव चक्षुषाऽनिरीक्षणाः। *आव० ५७६*।

अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमि– अप्रति–लेखितदुष्प्रतिलेखितोच्चारप्रश्नवणभूमिः–पौषधेऽतिचारः। *आव० ८३५*।

अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसिज्जासंथारए– अप्रति–लेखितदुष्प्रतिलेखितशय्यासंस्तारकः–पौषधेऽतिचारः। *आव० ८३५*।

अप्पडिलेहियदूसे– अप्रतिलेखितदूष्यः। *स्था० २३४*।

अप्पडिलेहियपणयं– अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चकम्, दूष्यप–ञ्चकस्य प्रथमो भेदः, तूल्युपधारनक गण्डोपधानालिङ्गि-नीपोतमयमसूरभेदभिन्नम्। *आव० ६५२*।

अप्पडिवाइ– अप्रतिपाति, अनुपरतस्वभावम्। *आव० ६०८*।

अप्पडिसुणणं– अप्रतिश्रवणम्, अप्रतिश्रोता। *आव० ७२६*।

अप्पडिसेवी– अप्रतिसेवी–न कुत्सितं कर्म आचरति। *ओघ० १६५*।

अप्पडिहओ– अप्रतिहतः, सौगन्धिकानगर्यधिपतिः। *विपा० ९५*।

अप्पडिहट्टु– अणप्पणित्ता। *निशी० १६९ अ*।

अप्पडिहयं– अप्रतिहतं, अप्रतिस्खलितम्। *जीवा० २५६*।

अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे– अप्रतिहतप्रत्याख्यात–पापकर्मा, न प्रतिहतं तपोविधानेन मरणकालादारात्क्षपितं प्रत्याख्यातं च मरणकालेऽप्याश्रवनिरोधेन पापकर्म येन सः। न प्रतिहतं सम्यग्दर्शनप्रतिपत्तितः प्रत्याख्यातं च सर्वविर-त्यङ्गीकरणतः पापकर्म–ज्ञानावरणाद्यशुभं कर्म येन सः। *भग० ३६*।

अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे– अप्रतिहतवरज्ञानदर्शधरः, योऽप्रतिहते कटकुट्यादिभिरस्खलितेऽविसंवादके वा वरे-प्रधाने ज्ञानदर्शने–विशेषसामान्यबोधात्मके धारयति सः। *भग० ७*।

अप्पडिहो– अप्रतिघः (*भक्त०*)

अप्पणच्चिय– आत्मीयम्, स्वकीयम्। *भग० १३२*।

अप्पणट्ठा– आत्मार्थम्, आत्मनिमित्तम्। *दशवै० २४९*।

अप्पणियं– आत्मीयं। *आव० १८९*।

अप्पणिया– आत्मीया। *आव० २१२*।

अप्पतिट्ठाणं– अप्रतिष्ठानम्, नरकविशेषः। *आव० ३४८*।

अप्पतुमंतुमा– अल्पतुमन्तुमाः–विगतक्रोधकृतमनोविकार–विशेषाः। *स्था० ४४२*।

अप्पतुमंतुमे– अल्पम्–अविद्यमानं त्वं त्वमिति स्वल्पापरा-धिन्यपि त्वमेवं पुरापि कृतवान् त्वमेवं सदा

करोषीत्यादि पुनः पुनः प्रलपनं यस्य सः। *उत्त० ५८९*।

अप्पतेअं– अल्पतेजः–तेजशून्यः। *दशवै० २७६*।

अप्पत्तियं– अप्रीतिकम्। *उत्त० ९०*। *दशवै० १२५*। पच्चामरिसकरणम्। *निशी० ३१* अ। मनसः पीडां कुर्यात्। *आचा० ४०५*। क्रोधः। *सूत्र० ३४*। अप्रेम। *भग० २९२*। मनसः दुष्प्रणिधानम्। *सूत्र० ३३१*।

अप्पपरिकम्मं– तूननं, सन्धानं दशाछेदनं वा। *बृह० २०२* आ।

अप्पपाणं– अल्पप्राणम्, अल्पाः-अविद्यमानाः प्राणः-प्राणिनो यस्मिंस्तत्, अवस्थितागन्तुकजन्तुविरहितम्। *उत्त० ६०*।

अप्पपुण्णेहिं– अपुण्यैः-अनार्यैः पापाचारैः। *आचा० ३०३*।

अप्पभाए– अप्रभातः। *आव० ३०१*।

अप्पभक्खी– अल्पलघुभक्षी-अल्पानि-स्तोकानि लघूनि निःसाराणि निष्पावादीनि भक्षयितुं शीलमस्य। *उत्त० ४२०*।

अप्पभु– अप्रभवः-भृतकादयः। *ओघ० १६३*।

अप्पभूतं– अल्पभूतां-अल्पां। *स्था० २९४*।

अप्पमज्जणा– अप्रमार्जना, मूलत एव रजोहरणादिनाऽस्पर्शना। *आव० ५७६*।

अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी– अप्रमार्जितदु-ष्प्रमार्जितोच्चारप्रश्रवणभूमिः-पौषधेऽतिचारः। *आव० ८३५*।

अप्पमत्तो– अप्रमत्तः, गुरुपारतन्त्र्यापहारिप्रमादपरिहर्त्ता। *उत्त० २२३*। अप्रमत्तसंयतगामः, भूतग्रामस्य सप्तमं गुणस्थानम्। *आव० ६५०*। आत्महितेषु जाग्रन्। *आचा० १७२*। प्रयत्नवान्। *ओघ० २२१*।

अप्पमाए– अप्रमादः, योगसङ्ग्रहे षड्विंशतितमो योगः। *आव० १७२*। प्रयत्नवान्। *ओघ० २२१*।

अप्पमाओ– अप्रमादः, उत्तराध्ययनेषु एकोनत्रिंशत्तममध्य-यनम्। *उत्त० ९*। *सम० ६४*। उवओगपुव्वकरणकिरियाल-क्खणो। *निशी० २९* अ।

अप्पमाणभोती– अप्रमाणभोजी, द्वात्रिंशत्कवलाधिकाहारभो-क्ता। *प्रश्न० १२५*।

अप्पमातो– अप्रमादः प्रमादवर्जनम्, अहिंसाया एकोनपञ्चाश-त्तमं नाम। *प्रश्न० ९९*।

अप्पयं– आत्मानम्। अल्पमेव वा। *उत्त० ९०*।

अप्पयाणयं– अप्रयाणम्। *आव० ३८५*।

अप्परए– अल्परतः, अल्पं-अविद्यमानं रतमिति क्रीडितं मोहनीयकर्मोदयजनितमस्येति, लवसप्तमादिः, अल्परजाः, प्रतनुबध्यमानकर्मा। *उत्त० ६७*।

अप्परिसाडियं– अपरिसाटिकम्, परिसाटविरहितम्। *उत्त० ६१*।

अप्परिहारिए– अपरिहारिकः-पार्श्वस्थाकन्नकुशील संसक्त-यथाच्छन्दरूपः। *आचा० ३२४*।

अप्पलीयमाणा– अप्रलीयमानाः-अनभिषक्ताः। *आचा० २४१*।

अप्पलेवा– अल्पलेपा, निर्लेपा, चतुर्थी पिण्डैषणा। *आव० ५७२*। अप्पलेवा-जस्स दिज्जमाणस्य णिप्पावचणगादिगस्स लेवो ण भवति सा। *निशी० १२* अ।

अप्पवणिज्जोदग– अपातव्यजला मेघाः। *भग० ३०६*।

अप्पवुट्ठिकाए– अल्पवृष्टिकायः, अल्पः-स्तोकोऽविद्यमानो वा वर्षणं वृष्टिः-अधःपतनं वृष्टिप्रधानः कायो-जीवनिकायो व्योमनि पतदप्काय इत्यर्थः, वर्षणधर्म्मयुक्तं वोदकं वृष्टिः, तस्याः कायो-राशिर्वृष्टिकायः अल्पश्चासौ वृष्टिकायश्चाल्प वृष्टिकायः। *स्था० १४१*।

अप्पसत्थाओ– अप्रशक्ताः-आश्रेयस्योऽनादेयाः। *स्था० १७५*।

अप्पसद्दा– अल्पशब्दाः विगतराटीमहाध्वनयः *स्था० ४४२*।

अप्पससरक्खं– अल्परजस्कम्। *आचा० ३३७*।

अप्पसागारियं– अल्पसागारिकम्। *आव० १९५*। अल्पगृह-स्थम्। *उत्त० ९०*। *आव० ३५८*।

अप्पसावज्जं– अल्पसावद्यम्, अपापं, स्तोकपापं वा। *आव० ५८६*।

अप्पसाहणो– अल्पसाधनः, बलादिरहितः। *आव० ७१२*।

अप्पहाणो– अप्रधानः, लघुः। *उत्त० १४९*।

अप्पहिट्ठे– अप्रहृष्टम्, अहसन्। *दशवै० १६६*।

अप्पा– आत्मा, अभिहितरूपस्तदाधाररूपो वा देहः। *उत्त० ५३*। शरीरम्। *प्रज्ञा० ३०५*। अतति सन्ततं गच्छति शुद्धिसङ्क्लेशात्मकपरिणामान्तराणीति। *उत्त० ५२*।

निशी० १५अ। आत्मा-स्वभावः। *स्था० ६१*।
अप्पाइय– आप्यायितः। *आव० ७१६*।
अप्पाउरण– अप्रावरणः, अभिग्रहविशेषः। *आव० ८५४*।
अप्पाणं– आत्मानम्, अतीतसावद्ययोगकारिणमश्लाध्यम्। अत्राणम्-अतीतसावद्ययोगत्राणविरहितम्। अतनम्-अतीतं सावद्ययोगं सततभवनप्रवृत्तं निवर्तयामि। *आव० ४८६*।
अप्पाणमेव– आत्मनैव। *उत्त०३१४*। आत्मानं-अंतरात्मानम्। *आचा० २८३*।
अप्पायंक– अल्पातङ्कः, रोगरहितः। *आव० ७९३*। अरोगी। *आचा० ३९३*।
अप्पाहंति– सन्दिशन्ति। *बृह० ४४आ*।
अप्पाहट्टु– आहृत्य, व्यवस्थाप्य, अपाहृत्य वा। *सूत्र० २७४*।
अप्पाहणया– सन्देशकस्तथैव दातव्यः। *ओघ० १०२*।
अप्पाहारं– अप्पधारणा, सामर्थ्यम्, अप्पाहारता जत्थ तं। *निशी० ८२आ*।
अप्पाहार– अल्पाहारः, ऊनोदरतायाः, प्रथमो भेदः। *दशवै० २७*। *स्था० १४९*।
अप्पाहारे– अल्पाधारः-तमेव पृष्ट्वा सूत्रार्थवाचनां ददाति। *बृह० १३३आ*। अल्पाहारः, अष्टकवलाहारः। *औप० ३८*। *भग० ९२१*। स्तोकाहारः, साधुः। *भग० २९२*। स्तोकाशी, षष्ठाष्टमादिसंलेखनाक्रमायातं तपः कुर्वन् यत्रापि पारयेत्तत्रा-प्यल्पमित्यर्थः। *आचा० २९०*।
अप्पाहारो– जो आयरिओ संकियसुत्तत्थो तं चेव पुच्छिउं वायणं देति, तारिसं ति मोत्तुं ण गंतव्वं। *निशी० ९३*।
अप्पाहिंति– सन्दिशन्ति। *बृह० ११४आ*। सन्दिशतः। *आव० ३०२*।
अप्पाहिकरणे– अल्पाधिकरणं-निष्कलहं। *स्था० ४१६*।
अप्पाहितो– सन्दिष्टः। *उत्त० २१९*।
अप्पाहे– तद्गुरोस्तत्प्रवर्तिन्या वा एवं सन्दिशति-यथैतामा-त्मसकाशे कुरुत। *ओघ० ४३*।
अप्पाहेइ– सन्दिशति। *दशवै० १०३*।
अप्पाहेति– संदिसइ। *निशी० २११आ*।
अप्पाहेत्ता– सन्दिश्य। *उत्त० १७३*। *आव० ३१०*।
अप्पिच्छे– अल्पेच्छः, अल्पा-स्तोका अल्पशब्दस्याभाववा-दित्वेनाविद्यमाना वा इच्छा-वाञ्छा वा यस्येति। *उत्त० १२४*। न्यूनोदरतयाऽऽहारपरित्यागी। *दशवै० २३१*।
अप्पिणिच्चिया– आत्मीया। *आव० २०२*।
अप्पितणप्पिते– अर्पित-विशेषितं, अनर्पितं-अविशेषितम्। *स्था० ४८१*।
अप्पियं– अर्पितम्, आहितम्। *भग० ८९*।
अप्पिय– अप्रियम्, अनिष्टम्। *भग० ७२*। अर्पितः, विशेषः। विशे० १३४६।
अप्पियणियं– अप्रीतिकम्, कलहः। *उत्त० ३५५*।
अप्पियत्ता– अप्रियता, अप्रेमहेतुता। *भग० २५३*। *प्रज्ञा० ५०४*।
अप्पियवहा– अप्रियवधाः-अप्रियं-दुःखकारणम् तत् घ्नन्ति। *आचा० १२२*।
अप्पुण्णकप्पिया– अपूर्णकल्पिका-अन्योन्यस्य सुखदुःखोप-संपदं प्रतिपद्यंते। *व्यव० ३७८आ*।
अप्पुत्थायी– अल्पोत्थायी, अल्पमुत्थातुं शीलमस्येति। प्रयो-जनेऽपि न पुनः पुनरुत्थानशीलः। *उत्त० ५८*।
अप्पुस्सुए– अल्पौत्सुक्यः। *भग० १७४*। त्वरारहितः। *भग० १२३*। अविमनस्कः। *आचा० ३७९*।
अप्पे– आप्यः, अपां प्रभवः हृदः। *भग० १४१*।
अप्पो– अल्पः, सर्वथाऽविद्यमानः। *जीवा० १२१*। नास्ति किञ्चिदित्यर्थः। *ओघ० १७७*। निषद्याद्वयोपेतं रजोहरणं मुखवस्त्रिका चोलपट्टकाश्च। *बृह० १५०आ*।
अप्पोदए– अल्पोदके-भौमान्तरिक्षोदकरहिते। *आचा० २८५*।
अप्पोल्लं– दृढवेष्टनाद् घनवेष्टनात्। *ओघ० २१४*।
अप्पोवही– अल्पोपधिः, अनुल्बणयुक्तस्तोकोपधिः। *दशवै० २८०*।
अप्पोसे– अल्पावश्याये-अधस्तनोपरितनावश्यायविप्रुड्व-र्जिते। *आचा० २८५*।
अप्फंदणया– भाण्डोचितहस्तपादादिचेष्टाविकलता। *व्यव० २३६अ*।
अप्फच्चितो– अइक्कंते। *निशी० १४७आ*।
अप्फालिया– शिक्षिताः-उपालब्धाः, उक्ताः। *आव० ५५७*।
अप्फालेइ– आस्फालयति, हस्तेनाऽऽताडयति-उत्तेजयति। *औप० ६४*।
अप्फिडिऊण– आस्फाल्य। *आव० ३४४*।

अप्फुण्णा– व्याप्ताः। *बृह० ७०* आ।
अप्फुण्णे– आपूर्णः–परिपूर्णशरीरः। *उत्त० ४८३*।
अप्फुण्णो– व्याप्तः। *आव० ३५४*।
अप्फेया– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।
अप्फोआ– वनस्पतिविशेषः। *जम्बू० ४६*।
अप्फोडेइ– आस्फोटयति, करास्फोटं करोति। *भग० १७५*।
अप्फोया– वनस्पतिविशेषः। *जीवा० २०१*।
अप्फोव– आस्तीर्णे, वृक्षगुच्छगुल्मलतासंछन्नः। *उत्त० ४३८*।
अप्रकीर्णप्रसृतं– वाण्यतिशयविशेषः। *सम० ६३*।
अप्पडिहय– अप्रतिहत–कटकुडपर्वतादिभिरस्खलिते, अविसंवादके वा। *सम० ४*।
अप्रत्याख्यानम्– द्वितीयकषाय चतुष्कम्। *आचा० ९१*।
अप्रमार्जितचारित्वम्– द्वितीयमसमाधिस्थानम्। *प्रश्न० १४४*।
अप्सरा– दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्य दक्षिणस्यां भूतावतंसि-काराजधान्यधिष्ठात्री, शक्रदेवेन्द्रस्य द्वितीयाग्रमहिषी। *जीवा० ३६५*। शक्रस्याग्रमहिषी। *जम्बू० १५९*।
अफलवंतकी– अफलवान्, अप्राप्तिकः। *प्रश्न० ६४*।
अफव्वंता– अलभमानाः। *निशी० १८३* आ।
अफासुअ– अप्रासुकम्, सचित्तसन्मिश्रादि। *दशवै० २३१*। सचित्तम्। *आचा० ३२१*।
अफासुए– अप्रासुकम्, न प्रगता असवः–असुमन्तो यस्मात्त-दप्रासुकम्–सजीवमित्यर्थः। *भग० २२६*।
अफुडिय– अस्फुटितः–राजीरहितः। *आव० २३९*।
अफुण्णे– आपूर्णम्। *प्रज्ञा० ५९२*।
अफुसं– अस्पृश्यम्, अबन्धनीयम्। *भग० १०४*।
अफुसमाणगतिपरिणामे– अस्पृशद्गतिपरिणामः, अस्पृशतो गतिपरिणामः। *प्रज्ञा० २८९*।
अफुसमाणगती– अस्पृशद्गतिः, यत्परमाण्वादिकमन्येन पर-माण्वादिना सह परस्परसम्बन्धमननुभूय गच्छति सा, विहायोगतेर्द्वितीयो भेदः। *प्रज्ञा० ३२७*।
अबंधव– अबान्धवः, स्वजनरहितः। *प्रश्न० १९*।
अबंधवो– अबान्धवः, बान्धवरहितः, स्वजनसम्पाद्यकार्या-भावात् कर्मनिगडबद्धः। *प्रश्न० ११*।
अबंधिउं– पात्रकबद्धग्रन्थिमदत्त्वा। *ओघ० १४४*।
अबंभं– अब्रह्म, अकुशलं कर्म, मैथुनम्। *प्रश्न० ६५*। अकुशलानुष्ठानम्, अब्रह्मणः प्रथमं नाम। *आव० ७६१*।
अबंभ– अब्रह्मवर्जकः, श्रावकस्य षष्ठी प्रतिमा। *आव० ६४६*।
अबंभचारिणो– अब्रह्मचारिणः, मैथुनं आसेवितुं शीलं धर्मो वा येषां ते। *उत्त० ३५८*।
अबद्धिआ– अबद्धिकाः, अबद्धं सत्कर्म कंचुकवत्पार्श्वतः स्पृष्टमात्रं जीवं समनुगच्छन्तीत्येवं वदन्ति। *औप० १०६*।
अबद्धिगा– अबद्धिकाः, स्पृष्टकर्मविपाकप्ररूपकाः। *आव० ३११*। अबद्धिकः, बद्धं–जीवप्रदेशैरन्योऽन्याविभागेन सम्पृक्तं न बद्धं–अबद्धं, अर्थात्कर्म, तदभ्युपगमविषयमेषामस्तीति। *उत्त० १५२*।
अबद्धिता– अबद्धिकाः–स्पृष्टकर्मविपाकप्ररूपकाः। *स्था० ४१०*।
अबला– अबलाः, शारीरशक्तिविकलाः। *जम्बू० २३९*।
अबले– अबलः, शरीरशक्तिवर्जितः। *भग० ३२३*।
अबहुस्सुए– अल्पश्रुताय–अवगाढस्तोकशास्त्राय। *सूर्य० २९६*।
अबहुस्सुतो– जेण आयारपगप्पो ण ज्झातितो। *निशी० २५* आ।
अबहोड– अवखोटकः, बन्धविशेषः। *उत्त० ११३*।
अबाधाए– अबाधया अपान्तरालं। *सूर्य० २६२*।
अबाल– अष्टाधिकवर्षः। *निशी० १७३* आ।
अबाहा– अबाधा, कर्मणो बन्धोदययोरन्तरम्। *भग० २५५*। अन्तरं, अन्तरालत्वाप्रतिघातरूपा। अव्यवधानेनान्तरम्। *जम्बू० ४३५*। दूरवर्तित्वेनानाक्रमणमपान्तरालम्। *जम्बू० ६४*। अन्तरं–व्यवधानम्। *जम्बू० ६५*। अपान्तरालम्। *जीवा० ९४, २०४*। अन्तरालत्वाव्याघातरूपा। *जीवा० ३०२*। अन्तरालम्। *ओघ० ९०*। *आव० ४६*। अन्तरं *जम्बू० ४३५*।
अबाहाए– अबाधया, व्यवधानेन कृत्वा। *सम० २१*। अबाधायां कृत्वा, अपान्तरालेषु मुक्त्वा। *जीवा० २२२*।
अबाहिरा– अबाह्याः, न बाह्या इति। *आव० ४५*।
अबितिज्जओ– अद्वितीयः, सहायो न भवति। *प्रश्न० १२१*।

अबुद्धा अबुद्धजागरियं– अबुद्धाः–केवलज्ञानाभावेन यथासंभवं शेषज्ञानसद्भावाच्च बुद्धसदृशास्ते चाबुद्धानां–छद्मस्थज्ञानवतां या जागरिका। *भग० ५५४*।

अबुहजण– अबुधजनः, अविपश्चिज्जनः–परिजनो यस्य सः, अकल्याणमित्रपरिजनः। *दशवै० ८६*।

अबोट– अनाक्रमणीय। *ओघ० १२*।

अबोहि– अबोधिः, मिथ्यात्वकार्यम्। *आव० ७६२*। मिथ्यात्वसंहतिः। *दशवै० २४४*।

अबोहिअ– अबोधिकम्, मिथ्यात्वफलम्। *दशवै० २०५*।

अबोहिकलुसं– अबोधिकलुषः, मिथ्यादृष्टिः। *दशवै० १५८*।

अब्बहुलकाण्डम्– रत्नप्रभायां तृतीयकाण्डः। *सम० ८८*।

अब्बुयं– द्वितीयसप्ताहगर्भावस्था (*तन्दु०*)

अब्भं– अभ्रम्, सामान्याकारेण प्रतीतम्। *जीवा० २८३*।

अब्भंगिएल्लय– स्नेहाभ्यक्तशरीरः। *ओघ० ७४*।

अब्भंगिओ– अभ्यङ्गितः। *आव० ११७*।

अब्भंगेति– थेवेण अब्भंगणं। *निशी० ११६ आ*।

अब्भंगो– थोवेण। *निशी० १८८ अ*।

अब्भंतरं– लोकेऽन्यैरनुगतम्। *दशवै० १४*।

अब्भंतरकरणं– द्वयोः साध्वोः गच्छमेढीभूतयोरभ्यन्तरे कुला-दिकार्यनिमित्तं परस्परमुल्लपतोस्तृतीयस्योपशुश्रूषोः बहिःकरणं। *व्यव० २३८ अ*।

अब्भंतरगे– अभ्यन्तरम्–अभ्यन्तः मध्य भवं। *स्था० ५५*।

अब्भंतरे पोग्गले– भवधारणीयेनौदारिकेण वा शरीरेण ये क्षेत्रप्रदेशाः अवगाढास्तेष्वेव ये वर्तन्ते तेऽवसेयाः, विभूषापक्षे तु निष्ठीवनादयोऽभ्यंतरपुद्गलाः। *स्था० १०५*।

अब्भक्खाणं– अभ्याख्यानम्, परमभि असतां दोषाणामाख्या-नम्, अधर्मद्वारस्य सप्तदशं नाम। *प्रश्न० २६*। असदभियोगः। *सूत्र० २६२*। असद् दुषणाभिधानम्। *प्रश्न० ४१*। असद्दोषारोपणम्। *प्रज्ञा० ४३८*। असंतभावुब्भावणं। *निशी० २५ अ*। असद्दोषाविष्करणम्। *भग० ८०*।

अब्भक्खाणे– अभ्याख्यानम्, आभिमुख्येनाख्यानं दोषावि-ष्करणम्। *भग० २३२*।

अब्भडिओ– आस्फालितः, आहतः। *आव० ४३१*।

अब्भत्थं– अध्यात्मस्थम्, अभिप्रेतम्। *उत्त० २६५*। यद्यस्याभिमतं सुखम्। *उत्त० २६५*। अध्यात्ममात्मनि यद्व-र्तते, मनः। *उत्त० २६५*। अध्यात्मकरणम्, क्रियाया अष्टमो भेदः। *आव० ६४८*।

अब्भत्थिए– आध्यात्मिकः, आत्मविषयः। *भग० ११५*।

अब्भत्थियं– अभ्यर्थितम्। *आव० ३५१*।

अब्भपडलं– अभ्रपटलम्, मेघवृन्दम्। *औप० ६६*। *प्रज्ञा० २७*। मणिभेदः, पृथिवीभेदः। *आचा० २१*। *उत्त० ६८१*।

अब्भपडलो– अभ्रपटलः। *प्रज्ञा० २६६*। *जीवा० २३*।

अब्भं(त)रया– अभ्यन्तरका–ये राजानमति प्रत्यासन्नीभूया-वलगन्ति। *व्यव० २८२ अ*।

अब्भरहितो– आसन्नो। *निशी० १३ आ*।

अब्भरुक्खो– अभ्रवृक्षः, अभ्रात्मको वृक्षः। *भग० १९५*। वृक्षाकारपरिणतमभ्रत्। *जीवा० २८३*।

अब्भरुह– अभ्यारुहः–वृक्षस्योपरिवृक्षः, वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२*।

अब्भवालुए– अभ्रवालुका, मणिभेदः, पृथिवीभेदः। *आचा० २१*।

अब्भवालुया– अभ्रवालुका, अभ्रपटलमिश्रा वालुका। *प्रज्ञा० २७*। *उत्त० ६८१*। *जीवा० २३*।

अब्भसंथडा– अभ्रसंस्थितानि, मेघैराकाशाच्छादनानीत्यर्थः। *स्था० २८७*।

अब्भा– अभ्राणि। *भग० १९५*।

अब्भाइक्खइ– अभ्याख्याति–निराकरोति। *आचा० ५२*।

अब्भाइक्खिज्जा– अभ्याख्यानम्–असदभियोगः। *आचा० ४४*। प्रकटमसद्दोषारोपणम्। *स्था० २६*।

अब्भावगासं– अङ्गणम्। *निशी० १९२ अ*।

अब्भावगासियं– आकाशम्। *बृह० १७९ अ*।

अब्भासं– पच्चासण्णं। *निशी० ६० अ*। अभ्यासः–हेवाकः। *स्था० २८५*।

अब्भास– अदूरसामत्थे, अच्छेअव्वम्। *दशवै० ३१*।

अब्भासकरणं– जो धम्मच्चुओ तं पुणो धम्मे ठवेंतेण। *निशी० २३८ अ*।

अब्भासगं– अभ्यासकम्। *ओघ० १५१*।

अब्भासवत्ति– अभ्यासवर्ती–गुरोरभ्यासे–समीपे वर्तते इति शीलः, गुरुपादपीठिकाप्रत्यासन्नवर्ती। *व्यव० २० आ*।

अब्भासवत्तियं– प्रत्यासत्तिवर्तित्वम्, श्रुताद्यर्थिना हि आचार्यादिसमीपे आसितव्यम्। *स्था० ४०१*। अभ्यासो–गौरव्यस्य समीपं तत्र वर्तितुं शीलमस्येत्यभ्यासवर्ती तद्वा-वोऽभ्यासवर्तित्वं, अभ्यासे वा प्रीतिकं–प्रेम। *भग० ९२५*।

अब्भासवत्तिया– अभ्यासवृत्तिता, समीपवर्तित्वम्। *औप० ४३*।

अब्भासासन– अभ्यासासनं–उपचरणीयस्यान्तिकेऽवस्थानं। *सम० ९५*।

अब्भासिया– द्रविडादिदेशोद्भवाः। *बृह० २११* आ।

अब्भासे– अभ्यासः, अदूरासन्नम्। *दशवै० ३१*। आसन्ने। *ओघ० ७८*। समीपे। *ओघ० १४०*।

अब्भासो– अभ्यासः, आसेवनालक्षणः। *आव० ५९१*।

अब्भाहतो– अभ्याहतः, मत्तः। *उत्त० ३००*।

अब्भिंतरं– आभ्यन्तरम्, प्रायश्चित्तादि। *प्रश्न० १५७*।

अब्भिंतर– योऽवधिः सर्वासु दिक्षु स्वद्योत्यं क्षेत्रं प्रकाशयति। *प्रज्ञा० ५३६*। आभ्यंतर–चित्तनिरोधप्राधान्येन कर्मक्षपणहेतुस्तपः। *सम० १२*।

अब्भिंतरए– अभ्यंतरम् आन्तरस्यैव शरीरस्य तापनात्, सम्यग्दृष्टिभिरेव तपस्तया प्रतीयमानत्वाच्च। *औप० ३७*।

अबिभंतरओ तवो– लौकिकैरनभिलक्ष्यत्वात्तन्त्रान्तरीयैश्चः। भावतोऽनासेव्यमानत्वान्मोक्षप्राप्त्यन्तरंगत्वाच्चाभ्यन्तरतपः। *दशवै० ३२*। *स्था० ३६५*।

अब्भिंतरमलो– आभ्यन्तरमलः, मूत्रपुरीषादि। *आव० ७५८*।

अब्भिंतरलावणग– आभ्यन्तरलावणिकः, लवणसमुद्रे शिखाया अर्वाक्चारी चन्द्रः। *जीवा० ३१८*।

अब्भिंतरसंबुक्का– संखनाभिखेत्तोवमाए आगिइए अंतो आढ-वति बाहिरओ संणियट्टइ। *उत्त० ६०५*।

अब्भिंतरिया– अभ्यन्तरिका, नगरीविशेषः। *आव० २००*।

अब्भिंडिऊण– आस्फाल्य। *उत्त० १४९*।

अब्भुक्खेइ– अभ्युक्षति, अभिमुखं सिञ्चति। *जीवा० २५६*। अभ्युक्षति, सिञ्चति, स्नपयति। *जम्बू० ११२*।

अब्भुक्खेंति– अभ्युक्षन्ति सिञ्चन्ति। *जम्बू० २७५*।

अब्भुग्गए– अभ्युद्गतः, आभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गतः। *सूर्य० २६३*।

अब्भुग्गओ– अभ्युद्गतः, आभिमुख्येन सर्वतो गतः। *जीवा० १७५*। अभ्रोद्गतः–युद्वा आकाशे उद्गता प्रबलतया सर्वत-स्तिर्यक् प्रसृता। *जम्बू० २९७*।

अब्भुग्गय– अभ्युद्गतः, आभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गतः। *प्रज्ञा० ९९*। अभिमुखमुद्गतः, अग्रिमभागे मनाक् उन्नतः। *जीवा० २०५*। संजातः। *सम० १३९*।

अब्भुग्गयमूसिय– अभ्युद्गतोच्छ्रितः, अभ्युद्गतमभ्रोद् गतं वा यथा भवत्येवमुच्छ्रितः, अथवा मकारस्यागमिकत्वादभ्युद् गतश्चासावुच्छ्रितश्चेत्यभ्युद्गतोच्छ्रितः, अत्यर्थमुच्च इत्यर्थः। *भग० १४५*।

अब्भुग्गया– अभ्युद्गता, आभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गता। *जीवा० ३७९*। अग्रिमभावे मनागुन्नता। *जम्बू० ५०*। अभ्युद्गता, अतिरमणीयतया द्रष्टृणां प्रत्यभिमुखमुत्प्राबल्येन स्थिता। *जीवा० २२६*।

अब्भुग्गयाओ– अभ्युद्गतान्यभ्रोद्गतानिवोच्चानि। *भग० ६७२*।

अब्भुग्गयुच्छितपभासियं– अभ्युद्गतोत्सृतप्रभासितं, अभ्युद्-गताआभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गता उत्सृताः–प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा तया सितम्। *जीवा० ३७९*।

अब्भुज्जयं– अब्भुज्जतमरणेण अब्भुज्जयविहारेण वा। *निशी० ३५* अ।

अब्भुज्जया– अभ्युद्यता, सुविहिता। *अनुत्त० ३*।

अब्भुज्जियविहारो– जिणकप्पादि। नि० *२६३* आ।

अब्भुट्ठाणं– अभ्युत्थानम्, आगच्छति गच्छति च दृष्टे गुरावासनमोचनम्। *उत्त० १७*। ससम्भ्रममासनमोचनम्। *उत्त० १२४*। अभीत्याभिमुख्येनोत्थानं–उद्यमनम्। *उत्त० ५३५*। विनयार्हस्य दर्शनादेवासनत्यजनं। *स्था० ४०८*। आसनत्यागः। *सम० ९५*। गौखार्हदर्शनेविष्टरत्यागः। *भग० ६३७*। जओ दीसइ तओ चेव कायव्वं। *दशवै० ३०*। आगतस्याभिमुखमुत्थानम्। *दशवै० २४०*।

अब्भुट्ठिज्ज- सिंहासनादभ्युत्तिष्ठेयुरिति। *स्था० १२७*।

अब्भुट्ठिओ– अब्भुट्ठिएत्ति सामाइयकडो पडिक्कंता व्रतारो-पितः। *निशी० ८४* आ।

अब्भुट्ठितो– वैयावृत्त्यकरणोद्यतः। *निशी० ३३४* अ।

अब्भुट्ठित्तए– अभ्युत्थातुम्–अभ्युपगन्तुम्। *स्था० ५७*।

अब्भुट्ठियं– अभ्युत्थितम्–अभ्युद्यतं। *उत्त० ३०७*। अभ्युत्थापन–वंदनकप्रतीच्छनकादिकं। *व्यव० १७२* आ। अभ्युत्थित–उद्यतः। *ओघ० १८०*।

अब्भुट्ठेमि– अङ्गीकरोमि। *भग० १२१*।

अब्भुत्तरोमा– प्रदीप्तरोमाः। *निशी० ६१* अ।

अब्भुदए– अद्भुतकान् , आश्चर्यरूपान्। *उत्त० ३१७*।

अब्भुदओ– उत्सवविशेषः। *बृह० १९८* अ।

अब्भुन्नय– अभ्युन्नतः, अभिमुखमुन्नतः। *जीवा० २७५*।

अब्भुवगमिया– आभ्युपगमिकी, या स्वयमभ्युपगम्य वेद्यते (वेदना)। *भग० ४९७*।

अब्भुवगमे– स्वेच्छया अभ्युपगम्य वादकथा क्रियते। *बृह० ३१* आ।

अब्भुवगमो– अभ्युपगमः, स्वयमङ्गीकारः। *प्रज्ञा० ५५७*। *भग० ६८३*।

अब्भे– आभिन्द्यात्, आच्छिन्द्यात्। *आचा० ३८*।

अब्भोवगमिया– आभ्युपगमिकी– केशोल्लुञ्चनातापनादिभिः शरीरपीडा। *प्रज्ञा० ५५७*। शिरोलोचब्रह्मचर्यादिनामभ्युपगमे भवा (वेदना)। *स्था० २४७*।

अब्रह्म– मैथुनम्। *आचा० ३३१*।

अभओ– अभयः। *आव० ९५*। अभयकुमारोऽष्टमकारी। *अन्त० ९*। व्यक्तिविशेषः। *आव० ३६८*। उदाहरणदोषे अभयकुमारः। *दशवै० ५३*। नामविशेषः। *बृह० ४६* आ।

अभओ सव्वस्सवि– अभयं सर्वस्यापि प्राणिगणस्याभयम्। अहिंसाया द्विपञ्चाशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९*।

अभक्तार्थः– खमणः, क्षपणः। *व्यव० १८१* आ।

अभग्गं– अभग्नम्, अपीडितम्। *आव० ७७२*।

अभग्गजोगो– अभग्नयोगः। *आव० ७९३*।

अभग्गसेण– अभग्नसेनः, विजयस्य चौरसेनापतेः स्कन्दश्री-भार्यायाः पुत्रः। *विपा० ५७*। विजयस्य चौरसेनापतेः पुत्रः। *विपा० ६०*। अभग्नसेन, विपाकश्रुताध्ययनम्। *स्था० ४०७*।

अभग्गो– अभग्नः, अभग्सेनः, विजयाभिधचौरसेनापतिपुत्रः, अन्तकृद्दशासु तृतीयाध्ययनम्। *विपा० ३५*।

अभज्जियं– अभग्नाम्–अमर्दितामविराधिताम्। *आचा० ३२३*।

अभडप्पवेसं– अभटप्रवेशम्, कौटुम्बिकगेहेषु राजवर्णवतां भटानामविद्यमानप्रवेशम्। *विपा० ६३*।

अभत्तच्छंदो– अभक्तच्छन्दः, भक्तारुचिरूपः। *उत्त० ७८*।

अभत्तट्ठं– अभक्तार्थम्, उपवासः। *आव० ८५२*।

अभत्तट्ठो– अभक्तार्थः, न भक्तार्थः उपवासः। *आव० ८५३*।

अभय– अभयः, श्रेणिकपुत्रनाम। *सूत्र० १०३*। दानविशेषः। *प्रश्न० १३५*। अभयः, संयमः। *आचा० ६२*। कुमारविशेषः। *निशी० ७* आ, *निशी० ३७* अ। वृक्षाधिष्ठायकव्यंतरदर्शी। *व्यव० १७* अ।

अभयकरा– मल्लिजिनदीक्षाशिबिका। *सम० १५१*।

अभयकरो– अभयकरः। *आव० ४९९*।

अभयकुमार– प्रद्योतस्यापकारकः। *सूत्र० ३१३*। औत्पातिकी बुद्धेदृष्टान्तः। *बृह० १८६* अ। आर्द्रकुमाराय प्रतिमा-प्रेषकः। *सूत्र० ३८५*। प्रद्योतगणिकाभिर्धार्मिकवञ्चनया वञ्चितः। *सूत्र० ३२९*। कालसौकरिकसुतसुलससखा। *सूत्र० १७८*। संवरपूर्विकैहिकार्थसिद्धौ दृष्टान्तः। *जम्बू० १९७*। रोहिणीयस्य लौकिकसूक्ष्मपरिनिर्वापणः। *व्यव० २०९*।

अभयकुमारो– दृष्टांतविशेषः। *निशी० १९४* अ।

अभयदए– अभयदयः, प्राणापहरणरसिकेऽप्युपसर्गकारिणि प्राणिनि यो न भयं दयते ददाति, अभया सर्वप्राणिभयपरि-हारवती वा दया – अनुकम्पा यस्य सः। *भग० ७*। अभयं – विशिष्टमात्मनः स्वास्थ्यं निःश्रेयसधर्म्मभूमिकानिबन्धनभूता परमा धृतिरितिभावः तदभयं ददति। *जीवा० २५५*।

अभयदयेणं– अभयदयः, न भयं दयते प्राणापहरणरसि–कोपसर्गकारिण्यपि प्राणिनि ददातीत्यभयदयः। सभ० ४। अभया वा–सर्वप्राणिभयपरिहारवती दया–घृणा यस्यासावभयदयः *सम० ४*।

अभयसेण– अभयसेनः, संवेगोदाहरणे वारत्रकपुरे राजा। *आव० ७०९*।

अभयसेणो– वारत्तपुरं नगरं, तत्थ अभयसेणो राया। *निशी० ५४* आ। वारत्रकपुरराजा। *बृह० ३४९* आ।

अभयसेन– छर्द्दितदोषदृष्टान्ते राजा। *पिण्ड० १६९*।

अभयसेना– वापीनाम। *जम्बू० ३७०*।

अभया– हरीतकी। *आचा० १३०*। *निशी० १४१* आ।

अभये– अभयः, अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमवर्गस्य दशमाध्ययनम्। *अनुत्त० १*।

अभवसिद्धिय– अभवसिद्धिकः, अभव्यः। *जीवा० ४४९*। *स्था० ३०*।

अभविय– अभव्यः–अयोग्यः *उत्त० ७१३*।

अभाग– अभाग्यः, अशोभनः। *आव० ७०८*।

अभावं– नञः कुत्सायामपि दर्शनादशोभनं भावं–सर्वतो निष्काशनलक्षणं पर्यायम्। *उत्त० ४६*।

अभाविआ– अगीतार्थाः। *बृह० १६६* आ।

अभाविओ– अभावितः। *आव० १०१*। अभावितः–अपरि–णतजिनवचनस्तस्य निर्लेपनाभावे माऽभूद् विपरिणामः। *बृह० २७२* अ।

अभाविते– असंसर्गप्राप्तं प्राप्तसंसर्गं वा। *स्था० ४८१*।

अभावितो– कृताभ्यासः। *निशी० १३१* आ।

अभावुक– नलस्तम्बः। *ओघ० २२३*।

अभावो– असंभवः। *दशवै० ३९*। विनाशः। *बृह० ७२* आ।

अभासो– स्वदेशभाषाया अज्ञः। *बृह० १९* आ।

अभि– पृथग्। *बृह० १९४* अ।

अभिई– अभिजित्, नक्षत्रविशेषः। *सूर्य० ११४*। *स्था० ७७*।

अभिओग– अभियोगः, अज्ञाप्रदानलक्षणः। *दशवै० २४९*। विकुर्वणा। *भग० १९१*। बलात्कारः। *उत्त० ३६५*।

अभिओगकया– अभियोगकृता, या वशीकरणचूर्णमन्त्रयोः संयोजिता सा। *ओघ० १९३*।

अभिओगपावणं– अभियोगप्रापणं, हठाद्व्यापारवर्त्तनम्। *प्रश्न० २२*।

अभिओगिओ– आभियोगिकः। *आव० १२४*।

अभिओगे– अभियोगः, प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यमाणत्वम्। *जीवा० २४३*।

अभिओगो– अभियोगः, पारवश्यम्। *विपा० ५४*। गर्वः। *आव० ७७२*। वशीकरणचूर्णो मन्त्रश्र्च। *ओघ० १९३*।

अभिओग्गो– अभियोग्यः, अभिमुखं कर्मसु युज्यते व्यापार्यत इति वा, तस्य भावः कर्म्म वा। *जीवा० २८०*।

अभिकंख– अभिकाङ्क्ष्य–उद्दिश्य। *आचा० २८१*। पर्यालोच्य। *आचा० ३८८*।

अभिकंखमाणो– अभिकाङ्क्षन्, मायारहितः। *दशवै० २५२*।

अभिकंता– अभिक्रान्ता–शय्यायास्तृतीयप्रकारः। *बृह० ९३* अ।

अभिक्कंतं– अभिक्रान्तम्, अभिक्रमणम्। प्रज्ञापकं, प्रत्यभिमुखं क्रमणम्। *दशवै० १४१*।

अभिक्कमंति– अभिलसंति। *दशवै० ६२*।

अभिक्कममाणे– अभिक्रामन्–गच्छन्। *आचा० २१७*।

अभिक्खसेवा– पुणो पुणो गमनं। *निशी० ३९* आ।

अभिक्खं– अभिक्ष्णं, अनवरतम्। *भग० २२, ४१*। *आचा० ३६५*। *सूत्र० ११५*। *उत्त० ३४३, २१४*। *आव० ४०७*। अनुसमयम्। *भग० ४३*। पुनः पुनः। *उत्त० ३४४, ४२८*। *स्था० ३०१*।

अभिक्खणं अभिक्खणं ओहारइत्ता– शबलदोषः। *सम० ३७*।

अभिक्खणंऽभिक्खमोहारी– अभीक्ष्णमभीक्ष्णमवधारकः, योऽभीक्ष्णमवधारिणीं भाषां भाषते, यथा दासस्त्वं चौरो वेति, यद्वा शङ्कितं तन्निःशङ्कितं भणति। एकादशममसमाधिस्थानम्। *आव० ६५३, ६५४*।

अभिगच्छंति– अभिगच्छन्ति, समीपमभिगच्छन्ति। *भग० १३७*।

अभिगता– अभिगताः, अभिगतजीवाजीवाः। *आव० ३०४*।

अभिगम– अभिगमः, ज्ञानम्। *उत्त० ५९२*। बोधिलाभः। *सम० १२०*। मैथुनासेवना, गमनं च। *आव० ८२५*। अभिगम्य, विज्ञाय, आसेव्य। *दशवै० २५८*।

अभिगमकुसले– अभिगमकुशलः, लोकप्राघूर्णकादिप्र–तिपत्तिदक्षः। *दशवै० २५५*।

अभिगमणं– अभिगमनं, सर्वबाहयान्मण्डलादभ्यन्तरप्रवेशनम्। *जीवा० ३४५*। *सूर्य० २४३*।

अभिगमरुई– अभिगमरुचिः–यस्य श्रुतज्ञानमर्थतो दृष्टं स भवति। *प्रज्ञा० ५६*। अभिगमो–ज्ञानं ततो रुचिर्यस्य स, येन हयाचारादिकं श्रुतमर्थतोऽधिगतं भवति सः। *स्था० ५०४*। अभिगमरुचिः–अभिगमो–ज्ञानं तेन रुचिर्यस्य सः। *उत्त० ५६३*।

अभिगमसड्ढे– अभिगमश्राद्धकः–यत्र कारणे आपन्ने प्रविश्यत। *ओघ॰ १५६*।

अभिगमसड्ढो– सम्मद्दिट्ठी–गिहीताणुव्वओ। *निशी॰ १९९* आ।

अभिगम– अभिगमः, विस्तरबोधः। *भग॰ १००*। प्रतिपत्तिः। *भग॰ १३७*।

अभिगमो– अभिगमः, यथावस्थितपदार्थपरिच्छेदः। *आव॰ ८३८*। साधूणमागयाणं जा विणयपडिवत्ती सा। *दशवै॰ १४१*।

अभिगया– जीवाजीवादिपदार्थाभिगमोपेता श्राविकेत्यर्थः। *बृह॰ १३९* आ।

अभिगहियट्ठ– अभिगृहीतार्थम्, प्रश्नितार्थस्याभिगमनात्। *भग॰ १३५*।

अभिगाहइ– सेवते। *आचा॰ ११४*। अभिगाहन्ते–सेवन्ते। *आचा॰ १३३*।

अभिगिज्झ– अभिगृह्य, आलोच्य। *दशवै॰ २१६*। अङ्गीकृत्य, तदभिमुखीभूय। *स्था॰ ५६*।

अभिग्गह– अभिग्रहः, गुरुवियोगकरणाभिसन्धिः। *दशवै॰ २४१*।

अभिग्गहियमिच्छादंसणवत्तिया– अभिगृहीतमिथ्यादर्शन-प्रत्ययिकी, मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकीक्रियाया द्वितीयो भेदः। *आव॰ ६१२*।

अभिग्गहिया– अभिगृहीता, प्रतिनियतार्थावधारणम्। *प्रज्ञा॰ २५६*। अभिग्रहिका–वस्त्राणि वा पात्राणि वा पूरणीयानि अपरेण वा येन प्रयोजनमिति प्रतिपन्नाभिग्रहाः। *बृह॰ ९९*।

अभिग्गहो– अभिग्रहः–प्रत्याख्यानविशेषः। *आव॰ ८५२*। कुमतपरिग्रहः। *स्था॰ ४९*। नियमः। *भग॰ ६२*।

अभिग्रहिकः– मिथ्यात्वविशेषः। *स्था॰ २७*।

अभिघट्टिज्जमाणस्स– अभिघट्टयमानस्य–वेगेन गच्छतः। *जम्बू॰ ३७*। *जीवा॰ १९३*।

अभिघातो– उवलओ वा घात्तिज्जति। *निशी॰ १०५*।

अभिचंदे– अस्यामवसर्प्पिण्यां चतुर्थकुलकरः। *सम॰ १०३, १५०*। अभिचन्द्रः, अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्याष्टमा-ध्ययनम्। *अन्त॰ ३*। अभिचन्द्रः–मुहूर्तविशेषः। *सूर्य॰ १४६*। *जम्बू॰ ४९१*। कुलकरविशेषः। *आव॰ १११*। *जम्बू॰ १३२*। अभिचन्द्रः–अमुष्यामवसर्प्पिण्यां चतुर्थकुलकरः। *स्था॰ ३६८*।

अभिचारकमन्त्रविद्यादि– अशिवपुररोधादौ तत्प्रशमनार्थं प्रयुञ्जान इत्यर्थः। *स्था॰ १६४*।

अभिचारुअं– चारकता। *निशी॰ २७४* आ।

अभिचारुकं– वसीकरणं। *निशी॰ १०१*।

अभिजाए- अभिजातः, शास्त्रीयद्वादशदिवसनाम। *जम्बू॰ ४९०*। विनीतः। *उत्त॰ १८८*। कुलीनः। *जम्बू॰ १८२*।

अभिजाओ– शिष्टः। *बृह॰ २५५* आ।

अभिजाणइ– अभिजानाति, विवेचयति। *आचा॰ २०३*।

अभिजातं– वाण्यतिशयविशेषः। *सम॰ ६३*।

अभिजाति– कुलीनता। *उत्त॰ ३४७*।

अभिजातिए– अभिजातिगः, अभिजातिः–कुलीनता तां गच्छति–उत्क्षिप्तभारनिर्वाहणादिनेति। *उत्त॰ ३४७*।

अभिजाते– अभिजातः, शास्त्रीयैकादशदिवसनाम। *सूर्य॰ १४७*।

अभिजाय– अभिजातम्–कुलीनम्। *भग॰ ४६९*।

अभिजायइ– अभिजायते, उपभोग्यतयाऽऽभिमुख्येनोत्पद्यते। *उत्त॰ १८७*।

अभिजित्– नक्षत्रदेवविशेषः। *प्रश्न॰ १५*। उदायनपुत्रः। *स्था॰ ४३१*।

अभिजुंजंति– अभियुञ्जते, विद्यादिसामर्थ्यतस्तदनुप्रवेशेन व्यापारयितुम्। *भग॰ १९१*।

अभिजुंजिया– अभियुज्य, व्यापार्य, स्मारयित्वा। *सूत्र॰ १३९*। योजयित्वा, अभियोगं ग्राहयित्वा, व्यापारयित्वा। *आचा॰ १२३*। आश्लिष्य–वशीकृत्य। *स्था॰ १०६*। सम्बन्धमुपगत्य, प्रतिस्पद्ध्य।*स्था॰ १७७*।

अभिजोइंति– तिरस्कुर्वन्ति, निर्भर्त्सयन्ति। *बृह॰ २८१*।

अभिजोयंति– वशीकुर्वन्ति। *बृह॰ २५५* अ।

अभिज्जं– अभेद्यं। *उत्त॰ २०७*।

अभिज्जा– अभिध्यानमभिध्येत्यस्य। *सम॰ ७१*। लोभः, अभिध्यानं वा। *प्रश्न॰ ९७*।

अभिज्झा– अभिध्या–अदृढाभिनिवेशः, चित्तलक्षणः। *भग॰ ५७३*। अभिध्या, अभिध्यानम्, अभिलाषः। *प्रज्ञा॰ ५०४*।

अभिज्झिअ– अभिध्यातम्, इष्टम्। *दशवै॰ २७७*।

अभिज्झियत्ता– अभिध्यिततता, भिध्या–लोभः सा सञ्जाता यत्र सो भिध्यितो, न भिध्यितोऽभिध्यितस्तद् भावस्तत्ता। *भग० २५३*। अभिध्यितता, अभिध्यानमभिध्या–अभिलाषः, सा सञ्जाताऽस्मिन् तस्य भावः। *प्रज्ञा० ५०४*। अभिध्येयता-अहृद्यत्वं, अशुभत्वं। *भग० २३*।

अभिणए– अभिनयः, चतुर्भिराङ्गिकवाचिकसात्त्विकाहार्यभेदैः समुदितैरसमुदितैर्वाऽभिनेतव्यवस्तुभावप्रकटनम्। *जम्बू० ४१४*।

अभिणंदणो– अभिनन्दनः, अभिनन्द्यते देवेन्द्रादिभिरिति, चतुर्थजिनः, गर्भात्प्रभृतिरभीक्ष्णं शक्रोऽभिनन्दितवानिति। *आव० ५०२*।

अभिणंदिए– अभिनन्दितः–लोकोत्तरप्रथममासनाम। *जम्बू० ४९०*।

अभिणंदियाइओ– अभिनन्दितवान्। *आव० ५०२*।

अभिणंदे– अभिनन्दः, लोकोत्तरप्रथममासनाम। *सूर्य० १५३*।

अभिणिक्खंतो– अभिनिष्क्रान्तः। *आव० ११७*।

अभिणिबोहे– अभिनिबोधः, अर्थाभिमुखो नियतः प्रतिनियतस्वरूपो बोधो–बोधविशेषः, अभिबुध्यतेऽस्माद् अस्मिन् वेति। तदावरणकर्मक्षयोपशमः। *प्रज्ञा० ५२६*।

अभिणिवट्टमाणे– अभिनिवर्त्तमानः, पृथग्भवन्। *सूत्र० ३५४*।

अभिणिविट्ठं– अभिनिविष्टं, विशिष्टविशिष्टतराध्यवसायभा-वतोऽतितीव्रानुभावजनकतया व्यवस्थितम्। *प्रज्ञा० ४०३*।

अभिणिवेसे– अभिनिवेशः, चित्तवष्टम्भः। *औप० १०६*।

अभिणिव्वट्टित्ता– अभिनिर्वर्त्त्य, समाकृष्य। *सूत्र० २७९*।

अभिण्णाणं– अभिज्ञानं, चिह्नम्। *उत्त० १४९*। *आव० ३४४*।

अभिण्णाय– अभिज्ञातम्, अभिमतम्। *भग० १९७*।

अभितावयंति– अभितापयन्ति, अपनयन्ति। *सूत्र० १३३*।

अभितुर– अभि–आभिमुख्येन त्वरस्व–शीघ्रो भव। *उत्त० ३४०*।

अभितोसइज्जा– अभितोषयति, येन वा तेन वा यापयति। *दशवै० २५३*।

अभिदुग्गा– अभिदुर्गा, आभिमुख्येन दुर्गा–दुःखोत्पादिका *सूत्र० १२९*।

अभिद्दवं– अभिद्रवन्ति। *आचा० ४२९*।

अभिदुय– अभिद्रुतः, सर्वात्मना व्याप्तः। *जीवा० १३०*।

अभिधानं– वचनपर्यायः। *आव० २९*।

अभिधारए– अभिधारयेत्–यायात्। *दशवै० १८६*। किमेते उपसर्गा ममाचलितचेतसः कर्त्तुमलमिति। चिन्तयेत्। *उत्त० १०९*। अभिधारयेयुः–अन्तर्भावितेव। *उत्त० १०९*।

अभिधारणा– धारणा, विचारणा, संकल्पः। *व्यव० ३७३*।

अभिधारयामो– गर्हणाबुद्ध्योद्घट्टयामः।*सूत्र० ३९२*।

अभिधारेमाणे– अभिसन्धारयतः–गच्छतः। *आचा० २३९*।

अभिधास्ये– कीर्त्तयिष्ये। *आचा० ४*।

अभिनंदिज्जा– अभिनन्देत्, अनुमन्येत। *उत्त० १२०*।

अभिनयिका– नृत्यकलाभेदः। *सम० ८४*।

अभिनव– विशिष्टवर्णादिगुणोपेतः। *जीवा० १२१*।

अभिनवम्– नवम्। *सूर्य० १८*।

अभिनिक्खमणं– अभिनिष्क्रमणं–दीक्षा। *आचा० ४२२*।

अभिनिक्खमति– अभिनिष्क्रामति–धर्माभिमुख्येन गृहस्थ-पर्यायान्निर्गच्छति। *उत्त० ३०६*।

अभिनिचरिका– आभिमुख्येन नियता चरिका सूत्रोपदेशेन बहिर्व्रजिकादिषु दुर्बलानामाप्यायनिमित्ते पूर्वाह्णकाले समुत्कृष्टं समुदानं लब्धुं गमनं। *व्यव० ३९* अ।

अभिनिदुवारं– अनेकद्वारम्। *बृह० १२* आ।

अभिनिबोध– अर्थाभिमुखोऽविपर्ययरूपत्वान्नियतोऽसंशयरूप-त्वाद् बोधः–संवेदनम्। *स्था० ३४७*।

अभिनिपयाए– अभिनिप्रजा–अभि–प्रत्येकं नियताविविक्ता प्रजा चुल्ली। *व्यव० ३३९* अ।

अभिनिवर्त्तनम्– क्रिया। *उत्त० ५८१*।

अभिनिविट्ठा– अभिनिर्वृत्ता। *आव० २२७*।

अभिनिविट्ठं– अभिनिविष्टम्। तीव्रानुभावतया निविष्टम्। *भग० ९०*।

अभिनिविट्ठाइं– अभि–अभिविधिना निविष्टानि–सर्वाण्यपि जीवे लग्नानि। *भग० ५३९*।

अभिनिवुडच्चे– अभिनिर्वृत्ताच्चः–शरीरसंतापरहितः।

आचा॰ २८४।

अभिनिवेशिकः– मिथ्यात्वविशेषः। *स्था॰ २७*।

अभिनिवेसए– अभिनिवेशयेत्, कुर्यात्। *दशवै॰ २३२*।

अभिनिवेसं– अभिनिवेशः। *आव॰ ३११*। आग्रहः। *भग॰ ४८९*।

अभिनिव्वट्टित्ता– अभिनिर्वर्त्त्य, विधाय। *भग॰ २२४*।

अभिनिव्विगड– विष्यक् अपवरकः। *व्यव॰ १९०*आ।

अभिनिव्वगडा– अभिनिर्व्याकृत–पृथग्विभिन्नद्वारायां वसतौ। *व्यव॰ ४०* आ।

अभिनिव्वगडाए– अभि–प्रत्येकं नियतो वगडः–परिक्षेपो यस्यां सा अभिनिव्वगडा। *व्यव॰ १८१* अ।

अभिनिसिज्जा– अभिनिषद्या–रात्रिस्वाध्यायभूमिः, अभिनैषधिकी–सामान्यस्वाध्यायभूमिः। *व्यव॰ १२७* अ।

अभिनिसिट्टो– अभिनिसृष्टः, अभिमुखं–बहिर्भागाभिमुखं निसृष्टः। *जीवा॰ ३६१, २०६*।

अभिनिस्सवति– अभिनिःश्रवति, जिघ्रतामभिमुखं निस्सरति। *जीवा॰ १९२*।

अभिन्नं– अव्यपगतजीवं। *बृह॰ ३५*आ।

अभिन्नाय– अभिधाय–ज्ञात्वा। *आचा॰ ३०४*।

अभिप्पाओ– अभिप्रायः, बुद्धिः। *आव॰ ४१४*।

अभिप्पेय– अभिप्रेतः। कामयन्। *दशवै॰ १९५*। अभिप्रेते-अभिरुचिते। *उत्त॰ २५४*।

अभिभवे– अभिभवकायोत्सर्गः–उपसर्गाभियोजने द्वितीयः। *आव॰ ७७१*।

अभिभूतः– आकुलः। *आव॰ ५८९*। प्रारब्धः, अपराद्धो वा। *प्रश्न॰ ६०*।

अभिभूय– तिरस्कृत्य। *आचा॰ ३०८*। सर्वथा तत्सामर्थ्य-मुपहत्य। *उत्त॰ ८१*। पराजित्य। *सूत्र॰ १४५*। अभिव्याप्य। *सूत्र॰ २८५*।

अभिमरए– अभिमरकः। *आव॰ ८१९*।

अभिमरा– अभिमरा। *उत्त॰ १६२*। *आव॰ ३१६*।

अभिमुखं– अभिमुखं। *व्यव॰ ९९* अ।

अभिमुहनामगोत्तं- अभिमुखनामगोत्र–नोआगमतो द्रव्यद्रुमस्य तृतीयः प्रकारः। *दशवै॰ १७*। अभिमुखे–संमुखे जघन्योत्कर्षाभ्यां समयान्तर्मुहूर्त्तानन्तरभावितया नामगोत्रे इन्द्रसम्बन्धिनी यस्य स तथा। *स्था॰ १०३*।

अभिमुह– पव्वज्जाभिमुहो, संपट्ठितो। *निशी॰ १०४*।

अभिमुहो– अभिमुखः, उद्युक्तः। *दशवै॰ २४५*। अभि–भगवन्तं प्रति मुखमस्य। *सूर्य॰ ६*।

अभियोग– आज्ञा। *स्था॰ ५२१*। कार्मणं कुर्यात्। *बृह॰ ९९* आ।

अभियोग– आभियोग्यः, अभियोगार्ह आदेशकारी देवः। प्रश्न *१२१*।

अभियोगो– वशीकरणं। *व्यव॰ ३१५६* आ।

अभियोजनम्– विद्यामन्त्रादिभिः परेषां वशीकरणादि। *प्रज्ञा॰ ४०६*।

अभिरई– अभिरतिः, आभिमुख्येन रतिः। *आव॰ ४५१*।

अभिरामयंति– अभिरमयन्ति, आभिमुख्येन विनयादिषु युञ्जते। *दशवै॰ २५६*।

अभिरू– मध्यमग्रामस्य सप्तममूर्छनानाम। *स्था॰ ३९३*।

अभिरूप– स्वादुभावमिवोपगतः। *भग॰ ४६७*।

अभिरूप– अभिमुखमतीवोक्तरूपं आकारो यस्य सः। *सूर्य॰ २*।

अभिरूवं– अभिरूपं, अभि–सर्वेषां द्रष्टृणां मनःप्रसादा–नुकूलतयाभिमुखं रूपं यस्य तत्, अत्यन्तकमनीयमिति। *जीवा॰ १६१*। *प्रज्ञा॰ ८७*।

अभिरूवा– अभिरूपाणि, कमनीयानि। *सम॰ १३८*। अभि–सर्वेषां द्रष्टृणां मनःप्रसादानुकूलतया अभिमुखं रूपं यस्यः सा, अत्यन्तकमनीया। *जम्बू॰ २१*। अभिरूपाः–कमनीयाः। *स्था॰ २३२*।

अभिलंघमाण– अनिलङ्घयत्, अनुलिखत्। *जम्बू॰ २९७*।

अभिलसंति– अभिलषन्ति। *औप॰ २४*।

अभिलसइ– अभिलषति, अभिलषणं–तल्लालसतया वाञ्छनम्। *उत्त॰ ५८७*।

अभिलावपुरिसे– अभिलापपुरुषः। पुँल्लिङ्गाभिधानमात्रम्। *आव॰ २७७*। *स्था॰ ११३*।

अभिलाषः– तीव्रलोभोदयप्रभव आत्मपरिणामः। *आव॰ ५८०*।

अभिलोयणं– अभिलोकनम्, अभिलोक्यते यत्रस्थैस्तत्, उन्नतस्थानम्। *प्रश्न॰ १३८*।

अभिवंदओ– अभिवन्दकः, अभिवन्दिष्यत इति। *आव॰ १६७*।

अभिवंदिऊण– अभिवन्द्य, अभिमुखं वन्दित्वा–प्रणम्य। *प्रज्ञा॰ ३*।

अभिवड्ढिए– अभिवर्द्धितः, तृतीयः पञ्चमश्र्च युगे संवत्सरौ। *सूर्य॰ १५४*। *स्था॰ ३४४*।

अभिवड्ढिए णं मासे– अभिवर्द्धितसंवत्सरस्य चतुश्र्चत्वारिं-शदहोरात्रद्विषष्टिभागाधिकत्र्यशीत्यधिकशतत्रयरूपस्य द्वादशो भागः। *सम॰ ५६*। अभिवर्द्धितमासः, अभिवर्द्धितो नाम मुख्यतस्त्रयोदशचन्द्रमासप्रमाणसंवत्सरः। *बृह॰ १८६* आ।

अभिवड्ढियवरिसं– जत्थ अधिकमासगो पडिति वरिसे तं। *निशी॰ ३३१* अ।

अभिवड्ढियसंवच्छरे– अभिवर्द्धितसंवत्सरः। *सूर्य॰ १६९, १७१*।

अभिभवंति– अभिभवन्ति–न्यक्कुर्वन्ति। *स्था॰ १७७*।

अभिवड्ढी– अभिवृद्धिः, उत्तराभाद्रपदाया देवता। *जम्बू॰ ४९९*।

अभिवयणा– 'अभी' त्यभिधायकानि वचनानि–शब्दा अभिवचनाति, पर्यायशब्दाः। *भग॰ ७७६*।

अभिवादणं– अभिवादनम्, शिरोनमनचरणस्पर्शनादिपूर्वमभि-वादये इत्यादि वचनम्। *उत्त॰ १२४*।

अभिवायण– अभिवादनं–नमोक्काराइकरणं। *दशवै॰ १६४*।

अभिवाहारो– अभिव्याहारः, आचार्यशिष्ययोर्वनप्रतिवचने-ऽभिव्याहरणम्। *आव॰ ४७१*।

अभिविधग्गहणं– पर्यापन्नपरिष्ठापितादेर्ग्रहणम्। *बृह॰ २४*।

अभिवुड्ढित्ता– अभिवर्ध्य। *सूर्य॰ १२*।

अभिवड्ढेमाणे– अभिवर्द्धयन्। *सूर्य॰ १२*।

अभिव्यज्यते– अनन्तपरिणामस्य द्रव्यस्य ततत्सहकारिकार-णसन्निधाने तत्तद्रूपम्। *स्था॰ ४९०*।

अभिशंसनम्– असदध्यारोपणं। अभ्याख्यानं च। *आव॰ ८२१*।

अभिसंधारिज्जा– अभिसन्धारेयत्, पर्यालोचयेत्। *आचा॰ ३२९*।

अभिसन्धि– आलोचनम्। *प्रज्ञा॰ ५००*।

अभिसंभूया– अभिसम्भूताः, प्रादुर्भूताः। *आचा॰ ३७६*।

अभिसमण्णागए– तद्भोगापेक्षया। *भग॰ १५९*। गवेषयता लब्धं। *भग॰ २२८*।

अभिसमन्नागच्छामि– अभिसमागच्छामि, अभिविधिना साङ्गत्येन चावगच्छामि–सर्वैः परिच्छित्तिप्रकारैः परिच्छिनद्मि। *भग॰ ७२५*।

अभिसमन्नागयं– परिणमयितुमारब्धम्। *भग॰ २२४*। उदयाभिमुखीभूतम्। *भग॰ ९०*। अभिसमन्वागतम्–उदया-भिमुखीभूतम्। *प्रज्ञा॰ ४०३*। विशेषतः परिच्छिन्नम्। *भग॰ २२३*।

अभिसमन्नागया– अभिसमन्वागताः, अभिः–आभिमुख्येन सम्यग्–इष्टानिष्टावधारणतयाऽन्वितिशब्दादिस्वरूपावगमा-त्श्र्चादागताः ज्ञाताः–परिच्छिन्ना यस्य। *आचा॰ १५३*। मोग्यावस्थां गताः। *स्था॰ २४५*।

अभिसमन्नागयाइं– अभिविधिना सर्वाणीत्यर्थः समन्वागतानि–सम्प्राप्तानि। *भग॰ ५३९*।

अभिसमागच्छति– अभिसमागच्छति, साध्यसिद्धौ व्यापारणतः सम्यक् प्राप्नोति। *भग॰ २३९*।

अभिसमागम– अभिसमागमः, वस्तुपरिच्छेदः। *स्था॰ १७२*।

अभिसमेच्चा– आभिमुख्येन सम्यगित्वा–ज्ञात्वा। *आचा॰ ४४*।

अभिसित्त– अभिषिक्तः, दीक्षासंस्कृतः। *दशवै॰ २४५*।

अभिसेअ– अभिषेकः, श्रियोऽभिषेकः। *आव॰ १७८*।

अभिसेअसिला– अभिषेकशिला, अभिषेकाय–जिनजन्म–स्नात्राय शिला। *जम्बू॰ ३७१*।

अभिसेआ– पवत्तिणी। *निशी॰ १३२* आ।

अभिसेए– आचार्यपदस्थापनार्हः, सूत्रार्थतदुभयोपेतः। *बृह॰ २७३* आ।

अभिसेएण– अभिषेकेण, शुक्रशोणिततनिषेकादिक्रमेणेति। *आचा॰ २३९*।

अभिसेओ– अभिषेकः–सूत्रार्थतदुभयोपेत आचार्यपदस्थाप-नार्हः। *व्यव॰ १४१* आ। *जीवा॰ २७६*।

अभिसेक्कमंडे– अभिषेकभाण्डम्, अभिषेकोपस्करः।

जीवा० २३६।
अभिसेग– अभिषेकः, अभिषिक्तः। *बृह० १७७* आ।
अभिसेगपत्ता– अभिषेकप्राप्ता।–प्रवर्त्तिनीपदयोग्या। *बृह० २२* आ।
अभिसेगसिलाओ– अभिषेकशिलाः, तीर्थकराणामभिषे–कार्थाः शिलाः। *स्था० २२५*।
अभिसेज्जं– अभिशय्या, अभिनिषद्या। *व्यव० १२८* अ।
अभिसेय– अभिषेकः–उपाध्यायः। *व्यव० १६५* अ।
अभिसेयसभा– अभिषेकसभा। *जीवा० २३६*।
अभिसेयसभा– अभिषेकसभा यस्यां राज्याभिषेकेणा–भिषिच्यते। *स्था० ३४२*। अभिषेकभवनविमानभाविनी सभा। *प्रश्न० १३५*।
अभिहआ– अभिहताः, अभिमुखेन हताः, चरणेन घट्टिताः, उत्क्षिप्य क्षिप्ता वा। *आव० ५७३*।
अभिहड– अभ्याहृतम्, स्वग्रामादेः साधुनिमित्तमभिमुखमा-नीतम्। *दशवै० ११६*। गृहस्थेनानीतं। *आचा० ३२५*। निष्पन्नमेवान्यतः समानीतम्। *आचा० ३६१*। अभ्याहृतं-स्वग्रामादिभ्य आहृत्य यद्ददाति। *स्था० ४६०*। *भग० ४६७*।
अभिहणंति– अभिघ्नन्ति, अभिमुखमागच्छन्तो घ्नन्ति। *प्रज्ञा० ५९२*।
अभिहणह– आभिमुख्येन हणथ। *भग० ३८१*।
अभिहणिज्ज– अभिहन्यात्, पादेन ताडयेत्। *आचा० ४२८*।
अभीक्ष्णमवधारकत्वम्– शङ्कितस्याप्यर्थस्यावधारकत्वम्। *प्रश्न० १४४*।
अभीति– अभिचिः, उदायननृपपुत्रः। *भग० ६१८*।
अभीयी– अभिजित्, नक्षत्रविशेषः। *सूर्य० १२९*।
अभीरू– सत्त्वसम्पन्नः। *ओघ० २०२*।
अभु(ब्भु)ज्जियमरणं– परिण्णादि। *निशी० २६३* आ।
अभुत्त– अमुक्तः, यः कुमार एव प्रव्रजितः। *ओघ० ९१*।
अभूइभाव– अभूतिभावः, असम्पद्भावः। *दशवै० २४३*।
अभूएणं– अभूतेन, असद्भुतेन। *सम० ५२*।
अभूतोद्भावनम्– यथा सर्वगत आत्मा। *स्था० २६*।
अभूतिभावो– विणासभावो। *दशवै० १३१*।
अभेज्ज– अभिध्या, रौद्रध्यानम्। *प्रश्न० ४२*।
अभेज्जलोभो– अभिध्यालोभः, रौद्रध्यानान्विता मूर्च्छा। *प्रश्न० ४२*।
अभैत्सुः– कणिकाकारं कुर्युः। *आचा० ३४३*।
अभ्यन्तरशम्बूका– यस्यां क्षेत्रमध्यभागाच्छङ्खवद्वृत्तया परिभ्रमणभङ्ग्या मिक्षां गृह्णन् क्षेत्रबहिर्भागमागच्छति। *बृह० २५७* अ।
अभ्यन्तरान्– अवगाहक्षेत्रस्थान्। *स्था० २८४*।
अभ्यन्तरानिर्वृति– बाह्यनिर्वृतेः खड्गधारासमानायाः स्वच्छत-रपुद्गलसमूहात्मिका। *प्रज्ञा० २९४*।
अभ्यस्तः– जित उचितो वा। *आव० ५९४*।
अभ्यस्तम्– कृतं, निर्वर्त्तितम्। *आव० ५९३*।
अभ्यागत– अतिथिः। *उत्त० ३९१*।
अब्भासगुणे– अभ्यासगुणे, भोजनादिविषयः। *आचा० ८६*।
अभ्यासराशि– गुणकारः। *सम० ९१*।
अभ्युद्यतविहारेण– जिनकल्पादिना। *बृह० २१०* आ।
अमंडलिउवजीवो– अमण्डल्युपजीवकः–तत्र योऽमण्डल्युप-जीवकः स साधुर्गुरुसगासं गत्वा तमेव गुरुं भणति यथा हे आचार्याः । संदिशत–ददत यूयमिदं भोजनं प्राघूर्णकक्षपक–अतरन्तबालवृद्धशिक्षकेभ्यः–साधुभ्य इति। *ओघ० १७८*।
अमंथरम्– अविलम्बितम्। *ओघ० १८७*।
अमओ– अमयः, न किम्मयोऽपि। *दशवै० १३३*।
अमग्गो– अमार्गः, मिथ्यात्वादिः। *आव० ७६२*।
अमच्च– अमात्यः, राज्याधिष्ठायकः। *भग० ३१८*। सचिवः। *दशवै० १०७*।
अमच्चा– अमात्याः, राज्याधिष्ठायकाः। *भग० २६४*।
अमच्चो– अमात्यः। *आव० ११६*। राज्यचिन्तकः। *प्रश्न० ७९, ९६*। राज्याधिष्ठायकः। *औप० १४*। राजमन्त्री। *बृह० ३३* अ। यौ राज्ञोऽपि शिक्षां प्रयच्छति सः। *व्यव० १६९* आ। *उत्त० ३८०*।
अमच्छरी– अमत्सरी, परगुणग्राही। *प्रश्न० ७४*।
अमणाम– अमनोऽमम्, न मनसा अन्तः संगम्यन्ते, पुनः पुनः स्मरणगम्यम्। *भग० ७२*।
अमणामत्ता– अमनोऽम्यता, अमनोगम्यता। *भग० २३*। न मनसा अम्यते–गम्यते संस्मरणतोऽमनोऽम्यस्तद्भावस्तत्ता, प्राप्तुमवाञ्छितत्वम्। *भग० २५३*। भोज्यतया मन

आप्नु-वन्तीति मनआपाः प्राकृतत्वाच्च पकारस्य मकारत्वे मणाम इति सूत्रे निर्देशः, न मनआपा अमनआपाः। *प्रज्ञा० ५०४*।

अमणुण्ण– अमनोज्ञम्, न मनसाः–अन्तःसंवेदनेन शुभतया ज्ञायन्ते। *भग० ७२*। अमनोज्ञः–रटनशीलः। *ओघ० १५३*। अमनोज्ञः–असंविग्नः। *ओघ० १२०*।

अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते– अमनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तः–अम-नोज्ञः–अनिष्टो यः शब्दादिस्तस्य यः संप्रयोगो–योगस्तेन संप्रयुक्तो यः सः। *औप० ४३*।

अमणुण्णा– असाम्भोगिकाः। *बृह० १८* आ।

अमणुन्नत्ता– अमनोज्ञता, न मनोज्ञा अमनोज्ञाः, विपाककाले दुःखजनकतया न मनःप्रह्लादहेतुः। *प्रज्ञा० ५०४*। न मनसा ज्ञायते सुन्दरता। *भग० ३५३*। कथयाऽप्यमनोरमतया। *भग० २३*।

अमणुन्ने– अमनोज्ञो–न कश्चित् प्रतिभाति रटनशीलत्वात्त-तश्चैकाकी हिण्डते। *ओघ० १५०*। सर्वेषामप्यनिष्टः। *बृह० २६६* अ।

अमणो– अमनस्कः, मनोरहितः–सम्मूर्च्छजः। *ओघ० २२१*।

अमत– अमृतम्–क्षीरोदधिजलम्। *जीवा० २१०*।

अमम– अममः, ममकाररहितः। *भग० २७६*। द्वादशोऽर्हन्। *स्था० ४३४*। जातिवाचकः शब्दः। *जम्बू० १२८, ३१३*। भरते वर्षे मनुष्यभेदविशेषः। *जम्बू० १२८*।

अममायमाणे– अममीकुर्वन्–अस्वीकृर्वन्। *आचा० १३२*।

अममे– जिनविशेषनाम। *सम० १५३*। शतद्वारे द्वादशोऽर्हन्। *अन्त० १६*। अममः, पञ्चविंशतितमो मुहूर्त्तः। *जम्बू० ४९१*। मुहूर्तनामविशेषः। *सूर्य० १४६*।

अमम्मणा– अनपखञ्च्यमानता। *औप० ७८*।

अमयं– अमतं, अशोभनं मतम्, नास्तिकादिदर्शनम्, अमृतं वा, अमृतमिवामृतं, आत्मनि परमानन्दोत्पादकतया धनम्। *उत्त० २०६*। अमृतस्य–क्षीरोदधिजलस्य। जं० ५५।

अमयघोसो– चंडवेगच्छिन्नो मुनिः।(*संस्ता०*)

अमयमेहे– अमृतमेघः–यथार्थनामा महामेघः। *जम्बू० १७४*।

अमयरसरसोवमं– अमृतरसरसोपमम्, परमान्नम्। *आव० १४४*।

अमर– अमरः–देवः। *आव० ६०*। मयूरः, अमरो वा। *प्रश्न० ८४*।

अमरकङ्का– धातकीखंडपूर्वभरते पद्मनाभराजधानी। *प्रश्न० ८७*।

अमरवइ– अमरपतिः–इन्द्रः। *भग० १५८*।

अमरसोवमं– आम्ररसोपमम्। *निशी० ३४७* अ।

अमरिसं– अमर्षः, असहिष्णुता। *दशवै० ३८*।

अमरिसणा– अमसृणाः, प्रयोजनेष्वनलसा अमर्षणा वा, अपराधेष्वपि कृतक्षमाः। *सम० १५७*। अमर्षणा, अपराधासहिष्णवः अमसृणा वा कार्येष्वनलसाः। *प्रश्न० ७४*।

अमरिसिओ– अमर्षितः। *आव० ५६५*। अमर्षः–मत्सरवि-शेषः। *आव० २४१*।

अमरिसो– अमर्षः, अत्यन्ताभिनिवेशः। *उत्त० ६५६*।

अमर्षाध्मातः– मत्सरपूरितः। *आव० ३४१*।

अमला– शक्रदेवेन्द्रस्याग्रमहिषीनाम। *जम्बू० १६१*। *भग० ५०५*। दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्य पूर्वस्यां भूताराजधा-न्यधिष्ठात्री, शक्रदेवेन्द्रस्य प्रथमाग्रमहिषी। *जीवा० ३६५*।

अमलाते– शक्रस्याग्रमहिष्या राजधानीविशेषः। *स्था० २३१*।

अमाइ– अमायी, यः शाठ्येन शिष्यान्न वाहयेत् सः। *दशवै० ५*।

अमाघाओ– अमाघातः, अमारिः, अहिंसायास्त्रिपञ्चाशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९*।

अमात्यः– राजमन्त्री। *आव० ५५*। अमात्यः। *स्था० १५५*।

अमायपुत्ते– अमातापुत्रः–रौद्रे नगरविनाशे स्वस्वजीवित–रक्षणाक्षणिकतया यत्र माता पुत्रं न स्मरति। *बृह० ३०४*।

अमावासासंगुणं– अमावास्यासंगुणम्, याममावास्यां ज्ञातुमिच्छसि तत्सङ्ख्यया गुणितम्। *सूर्य० ११३*।

अमिअतित्तो– अमृततृप्तः, आबाधारहितत्वात्। *आव० ४४७*।

अमिए– अमितः, भवनपतीन्द्रविशेषः। *जीवा० १७०*।

अमिज्जं– (अमेयं), विक्रयप्रतिषेधादेवाविद्यमानमातव्यां,

अविद्यमानमायां वा। *भग० ५४४*।

कोउगामिगा- अमितकौतुकाः कौतुकान्मृगा इव मृगा अज्ञत्वात्प्राकृतत्वादमितकौतुकाः। *उत्त० ५०१*।

अमितगति– भवनपतीन्द्रविशेषः। *स्था० २०५*।

अमितवाहणे– उत्तरदिग्वर्ती वायुकुमारेन्द्रः। *स्था० ८४*।

अमितवाहन– भवनपतीन्द्रविशेषः। *स्था० २०५*।

अमितसेणे– भरतेऽतीतोत्सर्पिणीकुलकरः। *स्था० ५१८*।

अमित्रक्रिया– यन्मातापितृस्वजनादीनामल्पेऽप्यपराधे तीव्रदण्डस्य दहनाङ्कनताडनादिकस्य करणम्। *स्था० ३१६*।

अमियं– अमृतम्, अमितम्, मृष्टां पथ्यां वा, सार्थिकां अपरिमितम्। *आव० ५९५*। अमितम्, अनेकभवोपात्त–मनन्तम्। *आव० ६१०*। अमितः–प्रमाणाभ्यधिकः। *ओघ० १४२*। अमितः–दिक्कुमाराणामधिपतिः। *प्रज्ञा० ९४*। (अमितः), अष्टमो दक्षिणनिकायेन्द्रः। *भग० १५७*।

अमियगती– वायुकुमारेन्द्रविशेषः। *स्था० ८४*।

अमियणाणि– अमितज्ञानी, जिनः। *सम० १५३*।

अमियवाहण– अमितवाहनः, भवनपतीन्द्रविशेषः। *जीवा० १७१*।

अमियवाहणे– अमितवाहनः, दिक्कुमाराणामधिपतिः। *प्रज्ञा० ९४*। उत्तरनिकाये अष्टम इन्द्रः। *भग० १५७*।

अमिल– अमिलम्, ऊर्णावस्त्रम्। *दशवै० १९३*।

अमिला– उरभ्राः। *ओघ० १३५*। उन्निया। *दशवै० ९२*। वस्त्राणि। *निशी० १४४* आ। रोमेसु कया। *निशी० २५५* अ। नमिजिनप्रवर्तिनीनाम। *सम० १५२*। अम्लान (अव्यादि) *स्था० ३४०*।

अमिलाणि– अम्लाना (*तन्दु०*)।

अमुगिच्चगं– अमुकदेशोद्भवम्। *बृह० ९८* आ।

अमुच्छ– (अमूर्च्छा) उपधावसंरक्षणानुबन्धः। *भग० ९७*।

अमुणिओ– अमुनयः, गृहस्थाः। *आचा० १५२*।

अमुणी– अमुनयः, मिथ्यादृष्टयः। *आचा० १५२*।

अमुत्ती– अमुक्तिः, सलोभता, परिग्रहस्य षड्विंशतितमं नाम। *प्रश्न० ९२*।

अमुय– अस्मृतम्, मनोऽपेक्षया अस्मृतम्। *भग० १९७*।

अमुहं– अमुखं, निरुत्तरम्। *व्यव० १६०* अ।

अमुहा– अमुखाः, निर्वाचः। *भग० ३७६*।

अमूढ– अमूढः, अविप्लुतः। *दशवै० २६६*।

अमूढदिट्ठी– अमूढदृष्टिः, बालतपस्वितपोविद्यातिशयदर्शनैर्न मूढाः स्वभावाच्चलिता दृष्टिः–सम्यग्दर्शनरूपा यस्यासाव-मूढदृष्टिः *प्रज्ञा० ५६*। अचलितसम्यग्दृष्टिः। *दशवै० १०२*। ऋद्धिमत्कुतीर्थिकदर्शनेऽप्यनवगीतमेवा-स्मद्दर्शनमिति मोहविरहिता सा चासौ दृष्टिश्च–बुद्धिरूपा। *उत्त० ५६७*।

अमूढलक्खो– अमूढलक्षः, सर्वज्ञेयाविपरीतवेत्ता। *आव० २३४*।

अमृतरसा– वापीनाम। *जम्बू० ३७१*।

अमेज्झं– अमेध्यम्। *आव० २१३*।

अमोसलिं– न विद्यते मोसली यत्र तदमोसलि। *स्था० ३६१*।

अमोहं– अमोघम्, अन्तरिक्षम्। *सूत्र० ३१८*। अवन्ध्यम्। *दशवै० २३३*। जूवगो। *निशी० ७०* आ।

अमोहदंसणं– अमोघदर्शनम्, पुरिमताले उद्यानम्। *विपा० ५५*।

अमोहदंसि– अमोहदर्शी, योऽमोहं–यथावत्पश्यति। *दशवै० २०७*।

अमोहदंसी– अमोघदर्शी, पुरिमतालनगरेऽमोघदर्शनोद्याने यक्षः। *विपा० ५५*।

अमोहपहारी– अमोघप्रहारी, जितशत्रो राज्ञो रथिकः। *उत्त० २१४*।

अमोहरहो– अमोघरथः, जितशस्त्रो राज्ञो रथिकः। *उत्त० २१३*।

अमोहसत्थं– अमोघशस्त्रम्। *आव० ४०७*।

अमोहा– अमोघा, पूर्वदिग्भागञ्जनपर्वतस्य दक्षिणस्यां दिशि पुष्करिणीविशेषः। *जीवा० ३६४*। *स्था० २३०*। अनिष्फला, जम्बवाः सुदर्शनाया द्वितीय नाम। *जीवा० २९९*। सफला। *जम्बू० ३३६*। अमोघाः, आदित्योदया-स्तमययोरादित्यकिरणविकारजनिता दण्डाः। *भग० १९६*। सिद्धशिलानाम। (दे०)। सूर्यबिम्बस्याधःकदाचिदुपलभ्य-मानशकटोर्द्धिसंस्थिता श्यामादिरेखा। *जीवा० २८३*।

अमोहे– अमोहः, वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग० २००*। ग्रैवेयकविमानप्रस्तटनामविशेषः। *स्था० ४५३*।

अमोहो– अमोघः। *उत्त० ४०३*। अमोघः, आदित्यकिरण–

विकारजनित आदित्योद्गमनास्तमयने आताम्रः कृष्णश्यामो वा शकटोर्द्धिसंस्थितो दण्डः, यूपकः। *आव० ७३६*। अमोहः, शाहजनीनगर्यां देवरमणोद्याने यक्षः। *विपा० ६५*।

अम्मड– अम्मडः, परिव्राजकः। *भग० ६५३*।

अम्मधाई– धात्री। *उत्त० ३३१*।

अम्मया– अम्बा, पुरुषसिंहवासुदेवमाता। *आव० १६२*। अम्बा। *आव० ७१६*।

अम्माहिती– पञ्चमवासुदेवमाता। *सम० १५२*। *व्यव० १८०* आ।

अम्मि(ब्भि)ओ– अभ्यागतः। *आव० ५६०*।

अम्मो– अम्बा। *आव० २७२*।

अम्मोगइया– अहंपूर्विका। *आव० २९३*।

अम्मोगतियाए– अभिमुखः। *आव० ३००*।

अम्लः– (अंबिलं), आश्रवणक्लेदन कृत्। *स्था० २६*। अम्लम्-काञ्जिकम्। *स्था० ४९२*। रसविशेषः। *प्रज्ञा० ४७३*।

अम्लवेतस– अम्लरसपरिणताः। *प्रज्ञा० १०*।

अम्हएहिं– अस्मदीयम्। *आव० ८१३*।

अम्हच्चयं– अस्मदीयम्, अस्मत्सम्बन्धि। *दशवै० ११२*।

अम्हच्चय– अस्माकीनः। *आव० २९५*।

अयं– अयं, प्रत्यक्षगोचरीभूतः संसारी। *आचा० १६३*। इष्टफलं, कर्म। *जीवा० ३२*। लोहं। *भग० ६९७*। इष्टफलम्। *भग० ४*।

अयंतिय– अयन्त्रितः, अनियमितः। *उत्त० ४७८*।

अइंते- अयंते पुनःकायिकां व्युत्सृज्य वसतिं प्रविशतः। *ओघ० ८१*।

अयंपिर– अजल्पनशीला, नोच्चैर्लग्नविलग्ना। *दशवै० २३६*।

अयंपुले– वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग० १९९*। मत्स्य-बन्धविशेषः। *विपा० ८१*। गोशालकश्रावकः। *भग० ६८०*।

अयंबुले– आजीवकोपासकविशेषः। *भग० ३७०*।

अय– अयः, लोहः। *प्रज्ञा० २७*। पृथिवीभेदः। *आचा० २९*।

अयआकरो– लोहाकरः, यत्र लोहं ध्मायते। *स्था० ४११*।

अयकक्करभोई– अजकर्करभोजी, अजः–छागस्तस्य कर्करं-यच्चनकवद्भक्ष्यमाणं कर्करायते तच्चेह प्रस्तावान्मेदोदन्तुर-मतिपक्वं वा मांसं तद्भोजी वा। *उत्त० २७४*।

अयकरए– अजकरकः, ग्रहविशेषः। *स्था० ७८*। *जम्बू० ५३४*।

अयकोट्ठंसि– लोहप्रतापनार्थं कुशूले। *भग० ६९७*।

अयकोट्ठसंठितो– अयःकोष्ठसंस्थितः, अयःकोष्ठः, लोहमयः कोष्ठस्तद्वत्संस्थिताः। *जीवा० १०५*।

अयगरा– अजगराः, उरःपरिसर्पभेदविशेषाः। *प्रज्ञा० ४५*।

अयगरो– अजगरः, उरःपरिसर्पविशेषः। *जीवा० ३९*।

अयगोलो– बालो णिद्धम्मो वा। *निशी० ६२* अ।

अयणं– अयनं, त्रय ऋतवः। *जीवा० ३४४*। *सूर्य० ९१*।

अयणाति– अयनानि–ऋतुत्रयमानानि। *स्था० ८६*।

अयनं- अयणे त्रय ऋतवः। *भग० ८८८*।

अजयं- अयतं अयतनया। *ओघ० २१९*।

अयथार्थम्– पलाशाभिधानवत्। *आव० ५१*।

अयमाणे– आददानः, प्रवर्त्तमानः। *सूर्य० १२*। आयान्–आगच्छन्। *सम० ९४*।

अयमाणे– (अयमीणे)–अददानः। *जम्बू० ४४२*।

अयरामरं– अजरामरम्, अविद्यमानौ जरामरौ यस्मिन् तत्। *आव० ८१*।

अयलं– अचलं स्वाभाविकप्रायोगिकचलनक्रियाव्यपोहात्। *जीवा० २५६*। अचलः–स्वाभाविकप्रायोगिकचलनहेत्व-भावात्। निश्चलः, *भग० ७*।

अयलपुरं– अचलपुरं, नगरविशेषः। *उत्त० ९१*। *पिण्ड० १४४*।

अयलभाया– अचलभ्राता, नवमगणधरः। *आव० २४०*।

अयले– अचलः, प्रथमबलदेवः। *आव० १५१, १७४, सम० ८८*। अन्तकृद्दशानांप्रथमवर्गस्यषष्ठाध्ययनम्। *अन्त० १*।

अयलो– अचलः, उज्जयिन्यां वणिग्दारकः। *उत्त० २१८*। स्वाभाविकप्रायोगिकचलनहेत्वभावात्। *सम० ५*।

अयवीही– अजवीथी, शुक्रमहाग्रहस्य सप्तमी वीथी। *स्था० ४६८*।

अयशःकीर्त्तिनाम– (अजसोकित्तिणाम), यदुदयवशात् मध्यस्थस्यापि जनस्याप्रशस्यो भवति तद्। *प्रज्ञा० ४७५*।

अयशोभयम्– अश्लाघाभयम्। *आव० ६४६*।

अयसि– अतसी, धान्यविशेषः। *दशवै० १९३। भग० ८०२, ८०३।* भङ्गी, धान्यविशेषः। *भग० २७४।* अतसपुष्पम्। *उत्त० ४६०।* कुसुंभिआ। *ओघ० १४६।*

अयसिकुसुमं– अतसीकुसुमम्। *प्रज्ञा० ३६०।*

अयसिवणं– अतसीवनम्। *आव० १८६।*

अयसिवणे– अतसीवनम् *भग० ३६।*

अयसी– औषधिविशेषः। *प्रज्ञा० ३३।* धान्यविशेषः। *उत्त० ६५३।*

अया– द्विखुरविशेषः। *प्रज्ञा० ४५।*

अयागरं– अयआकरः, यस्मिन् निरन्तरं महामूषास्वयोदलं प्रक्षिप्याऽय उत्पाट्यते सः। *जीवा० १२३।* लोहाकरः–यत्र लोहं ध्मायते। *भग० १९९।*

अयि– अयि!, कोमलामन्त्रेण प्रयुज्यमानः शब्दः। *दशवै० ४९।*

अयोगी– न सन्ति योगा यस्य स, न योगीति वा योऽसावयोगी, शैलैशीकरणव्यवस्थितः। *स्था० ५०।*

अयोग्यः– (अजोग्गो), अनलः, अपच्चलः। *निशी० २५ आ।*

अयोध्या– दशरथराजधानी। *प्रश्न० ८७।* भरतसगरादिचक्र-वर्त्तिनां नगरी। *प्रज्ञा० ३००।* कोशला। *जम्बू० १३६।*

अयोमुहा– अयोमुखः, एकादशमान्तरद्वीपः। *प्रज्ञा० ५०।*

अव्यापारोपेक्षाः– मृतकस्वजनादिभिस्तं सत्क्रियमाणमुपेक्ष-माणास्तत्रोदासीनाः। *स्था० ३५३।*

अव्याहतपौर्वापर्यम्– वाण्यतिशयविशेषः। *सम० ६३।*

अरंजर– अरजरम्, उदकुम्यो, अलञ्जरम्। *स्था० २८३, २२८।*

अरइ– अरतिः, मोहनीयोदयाच्चित्तोद्वेगः। *भग० ८०।*

अरइकम्मं– अरतिकर्म, यदुदयेन तेष्वेवारतिरुत्पद्यते तत्। *स्था० ४६९।*

अरइमोहणिज्जं– अरतिमोहनीयम्–यदुदयवशात् पुनर्बाह्याभ्यन्तरेषु वस्तुषु अप्रीतिं करोति। तत्। *प्रज्ञा० ४६९।*

अरइयं– अरतितो जं ण प्रच्चति। *निशी० १८९ अ।*

अरई– अरतिः, इष्टाप्राप्तिविनाशोत्थो मानसो विकारः। *आचा० १६८।* वातादिजनितश्चित्तोद्वेगः। *उत्त० ३३८।*

अरए– अरजाः ग्रहविशेषः। *जम्बू० ५३५। स्था० ७९।*

अरक्खुरी– आरक्षुरीम्, संवेगोदाहरणे मित्रप्रभस्य प्रत्यन्त-नगरम्। *आव० ७१०।*

अरगंतरं– अरकान्तरम्। *आव० ३४४।*

अरगाउत्तासिया– आरकोत्तासिता, अरकैरायुक्ता–अभिविधि-नाऽन्विता अरकायुक्ता, 'सिय'त्ति स्यात्–भवेत्, अथवाऽऽ-कारकाउत्तासिता–आस्फालिता यस्यां सा। *भग० १५४।*

अरजा– अरजपूः। *जम्बू० ३५७।*

अरणी– काष्ठविशेषः। *प्रज्ञा० २९।*

अरण्णं– अरण्यम्, काननम्। *दशवै० १४७।*

अरण्णवडिंसगं– विमानविशेषः। *सम० ३९।*

अरण्णानी– अरण्यम्। *उत्त० ३८१।*

अरति– अरतिः, मोहनीयोदयजश्चित्तविकार उद्वेगलक्षणः। *स्था० २६।*

अरते– अरजा, ब्रह्मलोके विमानप्रथमप्रस्तटनाम। *स्था० ३६७।*

अरय– अरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात्। *सम० १४०।*

अरयं– अरतं, रतस्याभावरूपः, अरजो–रजसोऽभावरूपः। अरसं–शृङ्गारादिरसाभावम्। *उत्त० ४४८।*

अरविंद– अरविन्द, प्रत्येकवनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा० ३७।* जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा० ३३।*

अरसं– अरसम्, हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतम्। *प्रश्न० १०६। प्रश्न० ६३।* अविद्यमानाहार्यरसम्। हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतमिति। *प्रश्न० १६३।* असंपत्तरसम्। *दशवै० ८३।* असम्प्राप्त-रसम्, हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतम्। *दशवै० १८०।*

अरसजीवी– अरसेन जीवितुं शीलमाजन्मापि यस्य स। *स्था० २९६।*

अरसमेहं– अरसमेघः, अमनोज्ञमेघः। *भग० ३०६।*

अरसाहारे– अरसाहारः, अरसं–हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतमाहार-यतीति, अरसो वाऽऽहारो यस्यासावरसाहारः। *स्था० २९८।*

अरसाहिं– प्रहरणविशेषैः। *उत्त० ४६०।*

अरसिया– अर्शांसि। *उत्त० १२१।*

अरसेहि– अविद्यमानरसैः। *भग० ४८४।*

अरसो– अरसः, हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतः। *औप० ४०।*

अरहंत– अर्हन्तः, अशोकाद्यष्टमहाप्रातिहार्यादिरूपां

पूजा-मर्हन्तीति। *दशवै० ६२*।

अरहंतघरं– अर्हद्गृहम्। *आव० २९५*।

अरहंता– अर्हन्, अमरवरविनिर्मिताशोकादिमहाप्रातिहार्यरूपां पूजामर्हतीति। *भग० ३*। अरहोऽन्तः–अविद्यमानं रहः–एकान्तदेशोऽन्तो–मध्यं गिरिगुहादीनां सर्ववेदितया येषां ते। *भग० ३*। अरथान्तः–अविद्यमानो रथः–स्यन्दनः सकल-परिग्रहोपलक्षणभूतः अन्तः–विनाशो जराद्युपलक्षण भूतो येषां ते। *भग० ३*। अरहन्तः–क्वचिदप्यासक्तिमगच्छन्तः। *भग० ३*। अरहयन्–प्रकृष्टरागादिहेतुभूतमनोज्ञेतरविषयसम्पर्केऽपि वीतरागत्वादिकं स्वं स्वभावमत्यजन्। *भग० ३*। अर्हाः–अर्हन्तः। *आव० ४०६*। *प्रज्ञा० ५५*। अशोकाद्यष्टमहाप्राति-हार्यादिपूजामर्हतीति तीर्थकरः। *आव० ४८*। अर्हत्ता। *स्था० ३३२*।

अरहंतुवएस– अर्हदुपदेशः, आगमः। *आव० ४५१*।

अरह– अर्हन्, अष्टविधमहाप्रातिहार्यरूपपूजायोगात्। *स्था० ४६५*। अर्हः–पूजार्हः। *भग० ६७*।

अरहट्टं– अरघटिक। (*आतु०*) ।

अरहट्टो– अरघट्टः। *ओघ० १५८*।

अरहण्णए– मुनिविशेषः। (*मरण०*)।

अरहण्णओ– अर्हन्नकः, ईर्यासमितौ यस्य देवतया पादच्छिन्नः। *आव० ६१६*।

अरहण्णग– तगरायामुष्णाभिहतः। (*मरण०*)। अर्हतकः, सद्व्यवहारकाचार्यः। *व्यव० २५६*। आ

अरहदत्ता– अर्हद्दत्ता, अप्रतिहतराजकुमारमहाचन्द्रमार्या। *विपा० ९५*।

अरहन्नओ– अरहन्नकः। *आव० ३८८*। *उत्त० ९०*।

अरहन्नग– अरहन्नकः, मुनिविशेषः। *बृह० ५९* अ।

अरहमित्तो– अर्हमित्रः, आत्मदोषोपसंहारविषये द्वारवत्यां श्रेष्ठिविशेषः। *आव० ७१४*। अर्हन्मित्रः। *आव० ३८८*।

अरहया– अर्हता, तीर्थकरता। *आव० २३५*।

अरहस्सं– अतीवरहस्यभूतं छेदशास्त्रार्थतत्त्वम्। *बृह० २६५* आ।

अरहसिज्जा– अर्हच्छय्या, अर्हद्भवनम्। *व्यव० २५* आ।

अरहा– देवादिकृतां पूजामर्हन्तीति अर्हन्तः, अरहसः अथवा नास्ति रहः–प्रच्छन्नं किञ्चिदपि येषां प्रत्यक्षज्ञानित्वात्ते। *स्था० १७४*। जिनः। *सम० १५३*। अर्हन्–पूजामर्हती। अरहाः, नास्य रहस्यं विद्यत इति वा। *उत्त० २५७*।

अरहितं– समपादेनेक्षणं लेष्टुकारोहेण वा साधुसाध्व्योः परस्परं दृष्टिबन्धो वा। *बृह० १४* अ।

अरायाणि– अराजानि, यत्र राजा मृतः। *आचा० ३७८*।

अरि– अरिः, सामान्यतः शत्रुः। *जम्बू० १२०*।

अरिक्को– अरिक्तः। *ओघ० १९१*।

अरिट्ठ– अरिष्टः, पिचुमन्दः वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३१*।

अरिट्ठनेमि– अरिष्टनेमिः। *आव० २७३, ५१५*। *दशवै० ३६, ९६*। तीर्थकरविशेषः। *बृह० ३०* आ। *अन्त० २, ५*। समुद्रविजयसुतः। *उत्त० ४८९*। समुद्रविजयस्य प्रथमः पुत्रः। *उत्त० ४९६*।

अरिट्ठयं– अरिष्टकं, फलविशेषः। *प्रज्ञा० ३६०*।

अरिट्ठा– मंडवगोत्रस्य नामविशेषः। *स्था० ३९०*।

अरिट्ठे– धर्मजिनप्रथमशिष्यः। *सम० १५२*।

अरिणो– अरयः, इन्द्रियविषयकषायपरीषहवेदनोपसर्गरूपाः। *आव० ४०६*।

अरिदमन– अरिदमणो, अभयप्रदानप्राधान्ये वसन्तपुरे राजा। *सूत्र० १५०*।

अरिमर्दन– संवासदृष्टान्ते वसन्तपुरे राजा। *पिण्ड० ४८*।

अरिष्टनगरम्– राममातुलहिरण्यनामराजधानी। *प्रश्न० ८८*।

अरिष्टपुरम्– रुधिरराजधानी। *प्रश्न० ९०*।

अरिस– अर्शांसि, रोगविशेषः। *विपा० ४०*। *निशी० १८९* अ। *निशी० ६२* आ। अर्शः, गुदाङ्कुरः। *जम्बू० १२५*।

अरिहंत– अर्हन्तः, अरुहन्तः–न रुहन्तीति। *दशवै० ७१*। अशोकाद्यष्टमहाप्रातिहार्यादिरूपां पूजामर्हन्तीति अर्हन्तः–शास्तारः। *आव० ११९*।

अरिहंतचेइयं– अर्हच्चैत्यम्, तीर्थकरप्रतिमा। *आव० ७८६*।

अरिहंता– अरिहन्ता, कर्मारिविनाशकः। *भग० ३*। कर्मारिहन्ता। *भग० ३*। अरिहन्तारः, इन्द्रियविषयकषाय-परीषहवेदनोपसर्गशम(नाश)काः। *आव० ४०६*। अरिहन्तारः, रजोहन्तारः। *आव० ४०६*।

अरिहमित्तो– अर्हन्मित्रः। *उत्त० ९०*।

अरिहा– अर्हाः। *आव० ३८७*।

अरिहो– अरिः, शत्रुः। *प्रश्न० ७६*।

अरी– अरिः, शत्रु। *जीवा० २८०*।

अरुअ– अरुः, व्रणं। *बृह० ११* आ। अरुः–व्रणं। *बृह० २०८* आ।

अरुगं– अरुकं, व्रणः। *बृह० २५४* अ।

अरुज्झंते– अरुह्यमाणे–एतस्मिन् पात्रके। *ओघ० १४५*।

अरुण– अरुणः, नन्दीश्र्वरसमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि। *प्रज्ञा० ३०७*। सप्तमहाकुष्ठेषु प्रथमभेदः। *आचा० २३५*।

अरुणुत्तरवडिंसगं– ब्रह्मलोककल्पे विमानविशेषः। *सम० १४*।

अरुणप्पभा– शीतलनाथदीक्षाशिबिका। *सम० १५१*।

अरुणप्पभो– अरुणप्रभः, चतुर्थोऽनुवेलन्धरनागराजः। तस्यैवावासपर्वतश्र्च। *जीवा० ३१३*। *स्था० २२६*।

अरुणमहावरो– अरुणमहावरः, अरुणवरोदे समुद्रेऽपरार्द्धा-धिपतिर्देवः। *जीवा० ३६७*।

अरुणवर– अरुणवरः, अरुणसमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि। *प्रज्ञा० ३०७*। द्वीपविशेषः। *स्था० २१७*।

अरुणवरभद्दो– अरुणवरभद्रः, अरुणवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपति-र्देवः। *जीवा० ३६७*।

अरुणवरमहाभद्दो– अरुणवरमहाभद्रः, अरुणवरद्वीपेऽपरार्द्धा-धिपतिर्देवः। *जीवा० २६७*।

अरुणवरावभासः– अरुणवरसमुद्रानन्तरं द्वीपः तदनन्तरं समुद्रोऽपि। *प्रज्ञा० ३०७*।

अरुणवरावभासभद्दो– अरुणवरावभासभद्रः, अरुणवरावभासद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६७*।

अरुणवरावभासमहाभद्दो– अरुणवरावभासमहाभद्रः, अरु–णवरावभासद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६७*।

अरुणवरावभासवरो– अरुणवरावभासवरः, अरुणवरावभा–ससमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६७*।

अरुणवरावभासो– अरुणवरावभासः, अरुणवरोदसमुद्रसत्को द्वीपः। *जीवा० ३६७*।

अरुणवरो– अरुणवरः, अरुणोदसमुद्रसत्को द्वीपः। *जीवा० ३६७*। अरुणवरोदे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६७*।

अरुणवरोए– अरुणवरोदः, अरुणवरद्वीपसत्कः समुद्रः। *जीवा० ३६७*।

अरुणा– शिखरिपर्वतवासिदेवनाम। *स्था० ८०*।

अरुणाभं– ब्रह्मलोककल्पे विमानविशेषः। *सम० १४*।

अरुणाभे– अरुणाभः, राहवप्रलापीमते कृष्णपुद् गलविशेषः। *सूर्य० २८७*। सौधर्मकल्पे विमानः। *भग० ५५१*।

अरुणावभासो– अरुणावभासः, अरुणावभासद्वीपसत्कः समुद्रः। *जीवा० ३६७*।

अरुणे– ग्रहविशेषः। *स्था० ७९*।

अरुणो– अरुणः–लोकान्तिकदेवविशेषः। *आव० १३५*। महाकुष्ठस्य प्रथमो भेदः। *प्रश्न० १६१*। ग्रहविशेषः। *जम्बू० ५३५*। द्वीपविशेषः, यो देवप्रभया पर्वतादिगतवज्ररत्नप्रभया चारुण इति। *जीवा० ३६७*। देवः। *जम्बू० ३०५*।

अरुणोए– अरुणोदः, अरुणद्वीपसत्कः समुद्रः, सुभद्रसु–मनोभद्रदेवाभरणद्युत्याऽरुणम्–आरक्तमुदकं यस्यासौ। *जीवा० ३६७*।

अरोणोदए– अरुणोदकः, अन्धकारं, तमस्कायस्य नाम। *भग० २७०*।

अरुणोद– समुद्रविशेषः। *स्था० २१७*।

अरुणोपपात– सूत्रविशेषः। *बृह० ६२* आ।

अरुणोववाते– अरुणोपपातः, इहमरुणो नामदेवस्तत्समय-निबद्धो ग्रन्थस्तदुपपातहेतुः, अध्ययननाम। *स्था० ५१३*।

अरुयं– अरुक्, अविद्यमानरोगः। *भग० ९*। अरुः–व्रणः। *सूत्र० ९२*। अरुजं, शरीरमनसोरभावेनाधिव्याधिरहितम्। *जीवा० २५६*। अरुजम्–अविद्यमानरोगं शरीरमनसोरभा-वात्। *सम० ५*।

अरुयं– अरुः। *आव० ८२०*।

अरुह– न रुहोऽरुहः अपुनर्भावी। *आचा० २३१*।

अरुहंत– अरोहन्, क्षीणकर्मबीजत्वादनुपजायमानः। *भग० ३*। अरोहन्, अनुपजायमानः क्षीणकर्मबीजत्वात्। *भग० ३*।

अरूपिणः– अमूर्ताः। *स्था० १९६*।

अरूवी– अरूपि, अमूर्त्तम्। *भग० १५०*।

अरेण– आरतः। *आव० २८५*।

अरो– अरः, तीर्थकृच्चक्रवर्तिविशेषः। *उत्त० ४४८*।

सप्तमचक्रवर्ती। *आव० १५९।* *सम० १५२।* सर्वोत्तमे कुले वृद्धिकरो जायतेऽतः, अष्टादशो जिनः, यस्मिन् गर्भगते मात्रा स्वप्ने सर्वरत्नमयोऽतिसुन्दरोऽतिप्रमाणश्चारको दृष्टोऽतः। *आव० ५०५।*

अरोगी– अरोगी–रोगविप्रमुक्तः। *दशवै० २०५।*

अरोस– अरोषः, चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४।*

अर्गलम्– अधिकम्। *उत्त० ६६०।*

अर्गलपाशका– अग्गलपासगाणि, यत्रार्गलाऽग्राणि निक्षिपन्ते। *आचा० ३३७।*

अग्गला– अर्गला, उपकरणभेदः। *आचा० ६०।* परिघः। *उत्त० ३११।*

अग्घइ– अर्घति, अर्हति। *उत्त० ३१६।*

अच्चे– अर्चा, लेश्या, शरीरं, क्रोधाद्यध्यवसायात्मिका ज्वाला। *आचा० २८४।*

अच्ची– अर्च्चि, अच्छिन्नमूलः। *स्था० ३३६।* अर्चिः–मूलप्रतिबद्धा। ज्वलनशिखा। *उत्त० ६९४।*

अच्चीए– अर्च्चिषा, शरीरनिर्गततेजोज्वाला। *स्था० ४२१।*

अर्जितदुःखा– अर्जितं–उपार्जितं दुःखं यैस्ते। *उत्त० २६३।*

अर्जुन– तृणविशेषः। *प्रज्ञा० ३०।* *उत्त० ६९२।* *जीवा० २६।* *जम्बू० १३।*

अज्जुणसुवन्नग– अर्जुनसुवर्णकम्, अर्जुनं–शुक्लं तच्च तत्सुवर्णकम्। *उत्त० ३८५।*

अर्जुनसुवर्णमयी– सर्वात्मना कनकमयी। *जम्बू० ३७३।*

अर्त्तिः– शारीरमानसी पीडा तत्र भवा। *आचा० १३९।*

अर्थ– अर्यते–गम्यते, परिच्छिद्यत इति। *आव० १०।* आज्ञा। *आव० ६०४।* सिद्धशब्दपर्यायः। *स्था० २५।*

अर्थम्– निमित्तम्। *उत्त० ४७३।*

अट्ठकर- अर्थकर, मन्त्री, नैमित्तिकः। *स्था० २४१।*

अट्ठजायं- अर्थजाता अर्थः–कार्यमुत्प्रव्राजनतः स्वकीयपरि-णेत्रादेर्जातं यया सा, पतिचौरादिना संयमाच्चाल्यमानेत्य-र्थस्तां वा। *स्था० ३२९।*

अट्ठादंडे- अर्थदण्डः त्रसानां स्थावराणां वा आत्मनः परस्य वोपकाराय हिंसाऽर्थदण्डः, दण्डयतेऽऽत्माऽन्यो वा प्राणी येन स दण्डः। *स्था० ३१६।*

अर्थधर्माभ्यासानपेतम्– वाण्यतिशयविशेषः। *सम० ६३।*

अर्थनिर्यापणा– अर्थस्य पूर्वापरसाङ्गत्येन गमनिकेत्यर्थः। *स्था० ४२३।* अर्थः–सूत्राभिधेयं वस्तु निरिति–भृशं यापना–निर्वाहणा पूर्वापरसाङ्गत्येन स्वयं ज्ञानतोऽन्येषां च कथनतो निर्गमना। *उत्त० ३९।*

अट्ठपदा– अर्थपदानि, अर्थप्रधानानि पदानि। *उत्त० ३४१।*

अर्थशास्त्रं– धनुर्वेदादि। *बृह० १३०* आ।

अर्थाज्ञया– पुनरभिनिवेशतोऽन्यथा प्ररूपणादिलक्षणया। *सम० १३२।*

अट्ठ- अर्थात् निमित्तात्। *उत्त० ४९१।*

अत्थाहिगारो- अर्थाधिकारः शास्त्रीयोपक्रमस्य पञ्चमभेदः। *आचा० ३।* *स्था० ४।* वक्तव्यताविशेष एव, स चैकत्व-विशिष्टात्मादिपदार्थप्ररूपणलक्षण इति। *स्था० ५।* *आव० ५६।* अध्ययनसमुदायार्थः। *आव० ५८।*

अर्थान्तराभिधानम्– गामश्वमित्याद्यन्यार्थप्रतिपादनम्। *आव० ४८८।*

अर्थान्तरोक्ति– मृषावादविशेषः। *स्था० २९०।*

अर्दवितर्दा– विह्वला। *जम्बू० १७०।*

अद्धचंद– अर्द्धचन्द्र। *सम० ३०, १३९।*

अर्द्धतृतीया– अर्द्धं तृतीयं येषां ते। *प्रज्ञा० ४७।*

अर्द्धपेटा– यस्यां तु साधुः, क्षेत्रं पेटावच्चतुरस्रं विभज्य मध्यवर्त्तीनि गृहाणि मुक्त्वा चतसृष्वपि दिक्षु समश्रेण्या भिक्षामटति सा पेटा, एवमेव, नवरमर्द्धपेटासदृशसंस्थानयो-र्दिग् द्वयसम्बद्धयोर्गृहश्रेण्योरत्र पर्यटति। *बृह० २५७* अ।

अर्द्धभारम्– पलसहस्रात्मकम्। *जम्बू० २५३।*

अर्द्धमागधभाषा– भाषाविशेषः। *जम्बू० १४।*

अर्द्धांसन्यासम्– उत्तरासंगरूपम्। *बृह० १२५* अ।

अर्वाक्– अधः। *आव० ८२७।*

अर्हन्– सातिशयरूपसम्पत्समन्वितः। *आचा० ४१२।*

अलं– अल्म्, अत्यर्थम्। *दशवै० २३८।*

अलंकार– अलंकारः। *निशी० २७६* आ। अलङ्कारान्, वस्त्रादीन्। *जम्बू० १४५।* *आव० १८२।*

अलंकारियसभा– अलङ्कारसभा। *जीवा० २३६।* अलङ्कारभवनविमानभाविनी सभा। *प्रश्न० १३५।*

अलंकारित– अलङ्कारिका, यस्यामलङ्क्रियते। *स्था० २५२।*

अलंकियं– अलङ्कृतम्, उपमादिभिरुपेतम्। सूत्रगुणविशेषः। *आव० ३७६।*

अन्योऽन्यस्फुटशुभस्वरविशेषाणां करणात्। *जम्बू० ४०।* मुकुटादिभिर्विभूषितम्। *भग० ११९।* काव्यालङ्कारयुक्तम्। *स्था० ३९७।* अन्यान्य-स्वरविशेषाणां स्फुटशुभानां करणात्। *स्था० ३९६।* अलंकृतं। *जम्बू० ४२०।*

अलंगारो– अलङ्कारः, आभरणम्। *जीवा० २४५।*

अलंदकं– वंसीमूलम्। *बृह० १७९* अ।

अलंबुसा– अलम्बुषा, उतररुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव० १२२।* उत्तररुचकवास्तव्या प्रथमा दिक्कुमारी महत्तरिका। *जम्बू० ३९१।*

अलकम्– ललाटम्। *जीवा० २७३।*

अलकापुरी– अलकापुरी, लौकिकशास्त्रै धनदपुरी। *जम्बू० १८१।* वैश्रमणयक्षपुरी। *अन्त० १।*

अलक्खं– अलक्षम्। गुप्तम्। *आव० ४२१।*

अलक्खे– अलक्ष्यः, वाणारस्यां राजा। *अन्त० २५।* अन्तकृद्दशानां षष्ठमवर्गस्य षोडशाध्ययनम्। *अन्त० १८।*

अलत्त– अलत्तकः। *उत्त० ६५३।*

अलत्तगपहो– जंमेत्तं अलत्तगेण पादो रज्जति तंमेत्तो कद्दमो जंमि पहे सो अलत्तपहो। *निशी० ७९* आ।

अलत्तगा– रंगोविशेषः। *निशी० १८८* अ।

अलब्धमध्यमः– गम्भीरः। *उत्त० ५५४।*

अलमंथु– समयभाषया समर्थोऽभिधीयते। *स्था० २१६।*

अलमत्थु– अलमस्तु, पर्याप्तं भवतु। *भग० ६७।* निषेधो भवतु, निषेधकः। *स्था० २१६।*

अलल्ल– अलल्ला, व्यक्ता भाषा। *दशवै० २३५।*

अलवो– अलपः, मौनव्रतिको निष्ठितयोगः, गुडिकादियुक्तो वा। *सूत्र० ३९३।*

अलसंडविसयवासी– अलसण्डविषयवासिनः, म्लेच्छविशेषाः। *जम्बू० २२०।*

अलस– अलसः, अन्येन सह प्रभूतं पर्यटितुमसमर्थः। *ओघ० १५०।* गण्डूलकः। *प्रश्न० २४।*

अलसगे– हस्तपादादिस्तम्भः श्वयथुर्वा। *आचा० ३६२।*

अलसा– अलसाः, प्रयत्नरहिताः। *ओघ० २२२।* द्वीन्द्रि–यजीवभेदः। *उत्त० ६९५।*

अलाउ– अलाबु, अलाबुतुम्बयोर्लम्बत्ववृत्तत्वकृतभेदः। *जम्बू० २४४।* अलातं–उल्मुकम्। *ओघ० १७।*

अलाउय– अलाबुकं। *आचा० ४००।*

अलाते– अलातम्, उल्मुकम्। *जीवा० २९, १०७।* *प्रज्ञा० २३९।* *ओघ० १७।* *स्था० ३३६।* *दशवै० १६९।*

अलातद्रव्यम्– वक्रतयाऽभासमानमेकान्तवादयभ्युपगतं वा वस्तु। *स्था० ४८२।*

अलाभ– अलाभः, याचितभिक्षाद्यलाभः, पञ्चदशः। परीषहः। *आव० ६५७।* अभिलषितविषयाप्राप्तिः। *उत्त० ८३।*

अलायं– अलातम्, उल्मुकम्। *उत्त० ८३।* *दशवै० २२८, १५४।*

अलाहि– हलम्। *आव० ११६, ७०२।* *भग० ४७०।* *ओघ० १५९।*

अलिंजरम्– कूप्यम्। *दशवै० २६०।*

अलिंद– कुण्डकम्। *ओघ० १६६।*

अलिंदट्ठिओ– अलिन्दकस्थितः। *उत्त० ३५५।*

अलिंदेण– अलिन्देन–कुण्डकेन। *ओघ० १६७।*

अलिंदो– दोषविशेषः। *बृह० ६२*आ। नट इव। *व्यव० १६४* अ।

अलिए– अलीकम्, भूतनिह्नवरूपं, असत्यं वा। *भग० २३२।*

अलित्तय– अलित्रम्। *आचा० ३३।*

अलिय– अलीकं, मृषावादः। *प्रश्न० ९५।* मिथ्या, अधर्म-द्वारस्य प्रथमं नाम। *प्रश्न० २६।* सद् भुतार्थनिह्नवरूपम्। *प्रश्न० १२१।* अनृतं–अभूतोद्भावनं भूतनिह्नवश्च, सूत्रदोषविशेषः। *आव० ३७४।* शुभफलापेक्षया निष्फलः। *प्रश्न० २७।*

अलियवयणे– अलीकवचनम्। *स्था० ३७०।*

अलिया– अलिका, पक्षिविशेषः। *अनुत्त० ४।*

अलियाण– अलीकाज्ञः, अलीका आज्ञा–आगमो यस्य सः। *प्रश्न० ४०।*

अलिसिंदा– चवलगारा। *निशी० १४४* आ।

अलुद्धो– अलुब्धः। *आव० ८५९।*

अलेप– म्रक्षणेन सर्पिषा–घृतेन वसया च निर्वृत्तो लेपोऽलेपो ज्ञातव्यः। *बृह० ८२* आ।

अलेभडो– अस्थिरः, अनाहारः। *आव० २१२।*

अलोए– अलोकः–केवलाकाशरूपः। *औप० ७९।*

अलोला– इंदियविसयणिग्गहकारी, एसणं ण पेल्लेति।

*निशी० ३३२*आ।

अलोलुओ– अप्पडिबद्धो। *दशवै० १४०*।

अलोहे– अलोभः, योगसङ्ग्रहेऽष्टमो योगः। *आव० ६६४*। स्वल्पलोभः। *जम्बू० १४८*।

अलौकिकत्वम्– असाधारणम्। *दशवै० १६७*।

अल्पझञ्झ– अविद्यामानवाक्कलहः। *उत्त० ५८९*।

अल्पपरिकर्माणि– यानि क्वचिन्मनाक् तूर्णितानि। *ओघ० १३२*।

अल्पलेपा– चतुर्थी पिण्डैषणा। *आचा० २५७*।

अल्लइ– वृक्षविशेषः। *भग० ८०३*।

अल्लइकुसुमं– अल्लकीकुसुमम्, लोके प्रतीतम्। *प्रज्ञा० ३६१*। *जम्बू० ३४*।

अल्लगं– आर्द्रकम्, कन्दविशेषः। *आव० ८२८*। आर्द्रं आर्द्रकं च। *आव० ८२८*।

अल्लपल्लो– अली, वृश्चिकपुच्छाकृतिः। *विपा० ७१*।

अल्लय– आर्द्र (*संस्ता०*)

अल्लिउं– अभिद्रोतुम्, आश्रयितुं वा। *आव० ४३७*।

अल्लितो– अर्पितः। *आव० ४३४*।

अल्लियंतुं– उपसर्प्तुम्। *आव० ६५*।

अल्लियंतो– आश्रयन्। *आव० ४००*।

अल्लियइ– आश्रयति। *आव० ६९५*।

अल्लियस्सह– आश्रयत। *उत्त० ३९६*।

अल्लियह– आलीयेताम्–आश्रयताम्। *उत्त० ३९४*। *ओघ० १५९*।

अल्लियावं– प्रवेशम्। *आव० ३४१*।

अल्लियावणबंधे– अल्लियावणं–द्रव्यस्य द्रव्यान्तरेणश्रलेषादिना-ऽऽलीनस्थ यत्करणं तद्रूपो यो बन्धः सः। *भग० ३९५*।

अल्लियावो– प्रवेशः, आश्रयणम्। *उत्त० १४५*।

अल्लिविओ– अर्पितः। *आव० ४२१*।

अल्लिवेइ– अर्पयति, सुश्लिष्टम्। *जम्बू० ५२९*। आलीनः-मस्तकभित्तौ किञ्चिल्लग्नो न तु टप्परौ। *जम्बू० ११३*। मनोवाक्कायगुप्तावाश्रितौ वा, यद्वा अलीनौ–पृथगवस्थानेन परस्परमश्लिष्टौ। *उत्त० ४९१*। गुरुजनमाश्रितः। अनुशा-सनेऽपि न गुरुषु द्वेषमापद्यन्ते, अथवा आ–समन्तात्सर्वासु क्रियासु लीना–गुप्ता नोल्वणचेष्टाकारिणः। *जम्बू० ११७*। *जीवा० २७८*। गुरुमाश्रितः। *औप० ८८*। इषल्लीनः। *आव० १९७*। आलीनः। *आव० ६३*। आश्रितः (*आतु०*)। आसमन्तात् लीना आलीना। *व्यव० ४४०*आ।

अल्लेसेहिं– अश्र्लेषैः। *आव० ६३*।

अवं– (अवाङ्), अधस्तात्। *आचा० ६३*।

अवंगाओ– अपाङ्गाः, नयनप्रान्तम्। *जम्बू० ५२*।

अवंगुअ– अप्रावृतम्। *निशी० २०४*अ।

अवंगुदुवारे– अप्रावृत्तद्वारः–कपाटादिभिरस्थगितगृहद्वारः। *औप० १००*।

अवंगुय– अप्रावृत्तम्, न स्थगयति। *बृह० २५*आ, *१६४*।

अवंगुतंमि– उद्घाटिते। *बृह० २५०*आ।

अवंगुयदुवारो– अप्रावृतद्वारः, अप्रावृतं द्वारं येन सः, उद्‌घाटितद्वारः। *सूत्र० ३३५*।

अवंगो– अपाङ्गः, नयनोपान्तम्। *जीवा० २०६*।

अवंझ– अवन्ध्यं, एकादशपूर्वनाम। *स्था० १९९*।

अवंझपुव्वं– अवन्ध्यपूर्व–यत्र सम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्याः–सफला वर्ण्यन्ते तत्, एकादशपूर्वनाम। *सम० २६*।

अवंतिवद्धण– अवन्तीवर्धनः अज्ञातोदाहरणे प्रद्योतात्मजपा-लकसुतः। *आव० ६९९*।

अवंतिसुकमार– प्राणिनः आहारविमोचने दृष्टांतः। *आचा० २९१*।

अवंतिसुकुमालो– अवन्तिसुकुमालः, योगसङ्ग्रहेऽनिश्रितोप-धानदृष्टान्ते उज्जयिन्यां सुभद्रापुत्रः। *आव० ६७०*। वंश–कुडंगेऽनशनी (*मरण०*)। शृगालीभक्षितः (*भक्त०*)।

अवंतिसेण– अवन्तीषेणः, अज्ञातोदाहरणे धारिणीपुत्रः। *आव० ६९९*।

अवंती– देशविशेषः। *बृह० २१८*अ। *उत्त० ४९*।

अवंतीजणवए– अवन्तीजनपदः, देशविशेषः। *आव० २८९*। *उत्त० ४९*। *निशी० ६४*आ।

अवंतीजणवय– देशविशेषः। *व्यव० १४९*आ।

अवंतीसुकुमार– नामविशेषः, उदाहरणविशेषः। *बृह० २२४*अ।

अवंतीसुकुमालो– नामविशेषः, उदाहरणविशेषः। *बृह० २२४*अ।

अवंतीसुकुमालो– वंशकुडंगेऽनशनी (*मरण०*)। शृगाली–भक्षितः (*भक्त०*)

अवंतीसुत– शृंगालीभक्षितो मुनिः। (*संस्ता०*)

अवंतीसोमालो– अवन्तीसुकुमाल। *निशी० १३७* आ।

अव– अपृथक्त्वम्। *आव० २७८*। अधः। *प्रज्ञा० ५२६*। *उत्त० ५५७*।

अवइद्धो– अपविद्धः, तोमरादिना सम्यग्विद्धः। *प्रश्न० ४९*।

अवइन्नगो– अवकीर्णकः। *आव० ७१८*।

अवउज्जिअ– अधोऽवनम्य। *आचा० ३४४*।

अवउज्झत्ति– परित्यज्यते। *आव० ७६५*।

अवउज्झियथोवमाहारो– उज्झितस्तोकाहारः, उज्झितधर्मा स्तोकः–स्वल्प आहारो यस्य सः। *आव० ५६८*।

अवउडगं– अवकोटनम्, ग्रीवायाः पश्चाद्भागनयनम्। *विपा० ५३*। अवकोटकः, कृकाटिकाया अधोनयनम्। *विपा० ४७*।

अवए– अवकम्, अनन्तजीववनस्पतिभेदः। *आचा० ५९*। जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा० ३१, ३३*। साधारणबादरवनस्पति-कायविशेषः। *जीवा० २६*। *प्रज्ञा० ३४*। साधारणवनस्पति-विशेषः। *प्रज्ञा० ४०*।

अवएडए– तापिकाहस्तकान्। *भग० ५४८*।

अवओडयबंधणयं– अवमोटनतोऽवकोटनतो वा पृष्ठदेशे बाहुशिरसा संयमनेन बन्धनं यस्य सः। *अन्त० १९*।

अवकंखइ– अवकाङ्क्षति, अपेक्षते, अनुकम्पते, *भग० १०२*।

अवकरिसो– अपकर्षः–अभावः। *प्रश्न० ६२*।

अवकारं– अपकरणम्, अङ्गारोपरिक्षेपः। *प्रश्न० ४०*।

अवकिन्नतो– अवकीर्णकः, करकण्डोः प्रथमं नाम। *उत्त० ३०१*।

अवकिरति– उत्सृजति। *आव० ७७१*।

अवकिरियव्वं– अवकरणीयम्, विक्षेपणीयम्, त्याज्यम्। *प्रश्न० ९६*।

अवकुंडिय– अवगाढ–व्याप्त। (*मरण०*)

अवकुज्जियं– उट्टाए तिरियहुत्तकरणं। *निशी० ५९* अ।

अवकोडकबंधणं– अवकोटकबन्धम्, बाहुशिरसां पृष्ठदेशबन्ध-नम्। *प्रश्न० १४*।

अवकोडयं– अवकोटकम्, कोटायाः–ग्रीवाया अधोनयनम्। *प्रश्न० ५६*।

अवक्कंत– अपक्रान्तः, सर्वशुभभावेभ्योऽपगतः–भ्रष्टः, अपक्रान्तः–अकमनीयः। *स्था० ३६६*। *आव० ५०४*। अवक्रान्तः – अवस्थितः। *उत्त० १५६*।

अवक्कमइ– अपक्रामति, च्यवते। *जीवा० ११०*। गच्छति। *जीवा० २४३, ३०६, ३२२, ४००*। अपक्रामति। *आव० १९६*। अपक्राम्यति। *उत्त० १५७*।

अवक्कमिज्जा– अपक्रामेत्–गच्छेत्–*आचा० ३८५*।

अवक्कमित्ता– अवक्रम्य, गत्वा। *दशवै० १७८*।

अवक्कमेज्ज– अपक्रामेत्, अपसर्पेत्, उत्तमगुणस्थानकाद् हीनतरं गच्छेदित्यर्थः। *भग० ६४*।

अवक्कासे– अपकर्षणं, अवकर्षणं, अप्रकाशो वा। *भग० ५७२*। अपकर्षः। *सम० ७१*।

अवक्कियं– असक्कं। *दशवै० ११३*।

अवक्रम्य– विनिर्गत्य। *व्यव० १४६* आ।

अवक्खारणं– अपक्षारणम्, अपशब्दं क्षारायमाणं वचनं, अपक्षकरणम्–सानिध्याकरणम्। *प्रश्न० ४१*।

अवक्खित्तो– आक्षिप्तः। *उत्त० ११७*।

अवगति– बुद्धिः। *उत्त० ३९२*।

अवगम– संज्ञा। *आचा० १२*।

अवगाढ– अवस्थिताः। *स्था० ५१४*।

अवगाढगाढ– गाढावगाढम्, अतिगाढम्, प्राकृतत्वादेवं रूपम्। *भग० ३७*।

अवगाढा– आश्रिताः। *स्था० ५२७*।

अवगाढाअवगाढं– अवगाढावगाढम्–अत्यन्तव्याप्तिदर्शनम्। *भग० १५३*।

अवगायति– परिभवति। *आचा० १०६*।

अवगासो– अवकाशः, यद्यस्योत्पत्तिस्थानम्। *सूत्र० ३५०*। गमनादिचेष्टास्थानम्। *आव० ८३५*। अवस्थानमवतारो। *स्था० २३७*। बहूनां विवक्षितद्रव्याणामवस्थानयोग्यं क्षेत्रम्। *भग० ६०५*।

अवगाहणा– आश्रयभावः। *भग० ६०९*।

अवगीत– वाङ्मात्रेणापि केनचिदप्यननुवर्त्यमानः। *आचा० १०६*।

अवगीतम्– निन्दितम्। *भग० ११*।

अवगुणंति– अपावृण्वन्ति। *भग० ६८३*।

अवगूहितो- अवगूहितः। *आव० ३४४*।

अवगुण्ठ्यते– लिप्यते। *आचा० १४७*।

अवग्गहो– अवग्रहः, अव इति–प्रथमतो, ग्रहणं–

परिच्छेदनम्। *स्था० २८३*। अवष्टम्भः। *ओघ० २११*। सामान्यार्थस्या-शेषविशेषनिरपेक्षानिर्देश्यस्य रूपादेरवग्रहणम्। *आव० ९*।

अवग्रहावधि– कारणे आपन्ने संयमार्थं यो गृह्यते। *ओघ० २०८*।

अवघाटनप्रायश्चित्तं– शेषप्रायश्चित्तानि शोधयति। *व्यव० ९३* आ।

अवच– जघन्यः। *सूत्र० १९२*।

अवचए– अपचयः, ह्रासः, शरीरेभ्यउ पुद्गलानां विचटनम्। *प्रज्ञा० ४३२*। देशतोऽपगमः। *भग० ५४०*।

अवचयो– अपचयः–हीनत्वम्। *सूर्य० १६*।

अवचनम्– त्रिविधवचनप्रतिषेधः। *स्था० १४१*।

अवचूल– अवचूलम्। *भग० ३१८*।

अवच्चलेणसारक्खणा– अपत्यलयनसंरक्षणा। *आव० ४०५*।

अवच्चे– अपत्ये। *आव० ११९*।

अवच्छेए– अवच्छेदः। देशः। *स्था० २०५*।

अवजाते– अपजातः–अप–हीनः, जातोऽपजातः, पितुः सकाशादीषद्धीनगुणः। *स्था० १८४*।

अवज्जं– अवद्यम्, पापं। *आव० ३६४*।

अवज्जपडिच्छन्नो– अवद्यप्रतिच्छन्नः, पापप्रच्छादितः। *आव० ५३७*।

अवज्जभीरू– अवद्यभीरूः, साधुः। *ओघ० २२४*।

अवज्जुत्तं– पृथग्भूतम्। *आव० ७५८*।

अवज्झा– अवध्या, गन्धिलविजयराजधानी। *जम्बू० ३५७*।

अवज्झाणायरिए– अपध्यानाचरितः, अप्रशस्तध्यानाचरितः। *आव० ८३०*।

अवट्ठिए– अवस्थितः, नित्यः। *भग० ७६०*। एवमुभयरूपतया। *स्था० ३३३*। निश्चलत्वात्। *स्था० ३३३*। अवस्थितानि–शाश्वतानि। *स्था० १४६*। अवधेः पञ्चमभेदः। *प्रज्ञा० ५४३*। *आव० २८*।

अवट्ठिय– अवस्थितः, स्थितम्। *भग० ११९*। अवर्द्धिष्णु। *जीवा० २७२*। अवस्थिता–स्वप्रमाणावस्थिता। *जीवा० ९९*। **स्वप्रमाणेऽवस्थिता मानुषोत्तरपर्वताद्बहिः** समुद्रवत्। *जम्बू० २७*।

अवट्ठिया कप्पा– अवस्थिताः कल्पाः– सामायिकसाधूनामवश्यं भविनः। *स्था० २७४*।

अवडिंसगमूयं– अवतंसकभूतम्, शेखरकल्पम्, प्रधानमित्य-र्थः। *प्रश्न० १३७*।

अवडेंसग– अवतंसकः, शेखरकः। *भग० ३२२*।

अवड्डं– कृकाटिकाम्। *भग० ३७९*।

अवड्ढं– अपार्द्धम्, अर्धमात्रम्। *सूर्य० ३०, १०४*। अर्द्धध्रुवमात्रम्। *ओघ० ८६*।

अवड्ढक्खेत्ता– अपार्द्धक्षेत्रम्, अपार्द्ध–समक्षेत्रापेक्षया अर्द्धमेव क्षेत्रम्। *स्था० ३६७*।

अवड्ढखेत्तं– अपार्द्धक्षेत्रम्, अर्धमात्रक्षेत्रम्। *सूर्य० १०४*। पञ्चदशमुहूर्तभोग्यं नक्षत्रं अभिचिर्वा, पञ्चदशमुहूर्त्तभोग्यानि भरणी आर्द्रा अश्लेषा स्वातिर्ज्येष्ठा च। *बृह० १४८* आ।

अवड्ढगोलावलिच्छाया– अपार्द्धगोलावलिच्छाया, गोलानामा-वलिर्गोलावलिस्तस्या छाया गोलावलिच्छाया अपार्द्धायाः– अपार्द्धमात्राया गोलावलेश्छाया। *सूर्य० ९५*।

अवड्ढचंदो– अपार्धचंद्रः-अर्धचंद्रः। *बृह० १०९* अ।

अवड्ढवाविसंठित– अपार्द्धवापीसंस्थितः। *सूर्य० १३०*।

अवड्ढा– अपार्द्धा। *स्था० १४९*।

अवड्ढो– अर्द्धं। *निशी० १४२* आ।

अवड्ढोमोअरिया– अपार्द्धावमोदरिका, द्वात्रिंशत्तोऽर्द्धं षोडश, एवं च द्वादशानामर्द्धसमीपवर्तित्वादुपार्द्धावमोदरिका द्वाद-शभिरिति। *औप० ३८*। *भग० २९२*।

अवणए– अपनयः–पूजासत्कारादेरपनयनम्। *स्था० ४१८*।

अवणयं– एकान्ते स्थापनम्। *बृह० २६४* अ।

अवणिज्जंतु– अपनीयन्ताम्। *आव० ४३६*।

अवणितमूलो– अपनीतमूलः, अपनीतमूलत्रिभागः, त्रिभाग-निर्वाटितवाटः, ऊर्ध्वभागादपि। त्रिभागहीन इति। *जीवा० २५५*।

अवणीओवणीयवयणं– अपनीतोपनीतवचनम्, यन्निन्दित्वा प्रशंसति। *प्रज्ञा० २६७*।

अवणीयं– अपनीतम्, स्थानान्तरस्थापितं निराकृतगुणं वा। *औप० ३९*।

अवणीयवयणं– अपनीतवचनम्, निन्दावचनम्। *प्रज्ञा० २६७*। गुणापनयनरूपम्। *प्रश्न० ११८*। निंदावचनम्।

आचा० ३८७।

अवणीयोवणीयवयणं– अपनीतोपनीतवचनम्, यत्रैकं गुणम-पनीय गुणान्तरमुपनीयते। *प्रश्न० ११८*। अरूपवती स्त्री किन्तु सद्वृत्ता। *आचा० ३८७*।

अवणेति– महामणिं प्रकाशयति। *निशी० ११६* आ।

अवणेज्जा– अपनयेत्, परित्यजेत्। *दशवै० १५६*।

अवण्ण– अवर्णः, अवज्ञा वा, अनादरः, वर्णनाया अकरणम्। *औप० १०५*। अश्लाधात्मकः। *उत्त० ७१०*। निन्दा। *आव० १०३*।

अवण्हाणं– अपस्नानम्, तथाविधद्रव्यसंस्कृतजलेन स्नानम्। *विपा० ४१*।

अवतंसो– पुरूषव्याधिनामको रोगः। *बृह० २४९* अ।

अवतासण– बाहाहिं अवतासिता। *निशी० ११३* अ।

अवत्त– अप्राप्तम्–अस्पृष्टम्। *भग० १२७*। अव्यक्तः, अष्टानां वर्षामधो बालः। *ओघ० १६२*।

अवत्तदंसणे– अव्यक्तदर्शनः–अव्यक्तं–अस्पष्टं दर्शनं–अनु-भवः। *भग० ७०९*।

अवत्तव्वं– अवक्तव्यम्। *प्रज्ञा० २३४*। यच्चरमशब्देनाचरमश-ब्देन वा स्वस्वनिमित्तशून्यतया वक्तुमशक्यं तत्। *प्रज्ञा० २३५*। अनन्तगुणं। *दशवै० २२१*।

अवत्तव्वगसंचिता– अव्यक्तव्यक्तसंचिता–समये समये एक-तयोत्पन्नाः। *स्था० १०५*।

अवत्ता– छगणमट्टियाए पाणिएण य। *निशी० २३२* अ।

अवत्तिता– अव्यक्तिकाः, अव्यक्तं–अस्फुटं वस्तु अभ्युपगमतो विद्यते येषां ते। *स्था० ४१०*।

अवत्तो– सोलसवरिसारेण वयसा। *निशी० २९०* आ।

अवत्थयं– अपार्थकम्, पौर्वापर्यायोगादप्रतिसम्बद्धार्थं, चतुर्थ-सूत्रदोषः। *आव० ३७४*। *अनुयो० २६१*।

अवदारं– अपद्वार। *आव० ३०६*।

अवदारियं– अवदारितम्, उद्घाटम्। *आव० ६८७*।

अवदाल– पादादिन्यासेऽधोगमनम्। *भग० ५४०*।

अवदालिओ– अवदारितः। *आव० १७५*।

अवदालियं– अवदालितम्, रविकरैर्विकाशितम्। *औप० १७*। रविकिरणैर्विकासितम्। *जीवा० २७३*। सञ्जातावदलनंविक-सितम्। *प्रश्न० ८२*।

अवदाली– अवदारयति–शकटं स्वस्वामिनं विनाशयतीत्ये-वंशीलः। *उत्त० ५४८*।

अवदालेइ– अवदालयति, उत्पाटयति। *प्रज्ञा० ६००*।

अवदू– कृकाटिका। *विपा० ७२*।

अवद्दहणा– दम्भनम्। *विपा० ४१*।

अवद्दारं– अपद्वारम्। *आव० ३०६*।

अवड्ढगाढलगोलछाया– अपार्द्धगाढलगोलच्छाया। *सूर्य० ९५*।

अवड्ढगोलच्छाया– अपार्द्धगोलच्छाया। *सूर्य० ९५*।

अवड्ढगोलपुंजछाया– अपार्द्धगोलपुञ्जच्छाया। *सूर्य० ९५*।

अवड्ढचंद– अपकृष्टमर्द्धं चन्द्रस्यापार्द्धचन्द्रः। *स्था० ७१*।

अवड्ढजवरासिसंठासंठिए– अपार्द्धयवराशिसंस्थानसंस्थितः, अपगतमर्द्धं यस्य सः, स चासौ यवश्च राशिश्च अपार्द्धयवराशी तयोरिव यत्संस्थानं यस्य तेन संस्थितः। *जीवा० ३४३*।

अवड्ढपोरिसी– अपार्द्धपौरुषी, अपतमर्द्धं यस्याः सा अपार्द्धा सा चासौ पौरुषी। *सूर्य० ९५*।

अवद्राय– मृत्वा। *जीवा० २६२*।

अवधारियं– तात्पर्यग्रहणतो हृदये विश्रामितं। *व्यव० २५७*।

अवधिकेवली– केवलिद्वितीयभेदः। *निशी० १३९* आ।

अवधिजिनः– विशिष्टावधिधरः। *आव० ५०१*।

अवधिज्ञानम्– ज्ञानस्य तृतीयभेदः। *स्था० ३३२*।

अवधिज्ञानजिनाः– विशुद्धावधिज्ञानाः। *व्यव० ८५* अ।

अवधीरयेत्– उपेक्षेत। *उत्त० ११२*।

अवधीरित– परिभूतः। *आचा० १०६*।

अवधूतम्– अवज्ञातम्। *ओघ० १५*।

अवन्नं– अवर्णम्, निन्दा। *आव० ६६२*। अश्लाघामवज्ञां। *स्था० २६०*।

अवन्ना– अवज्ञा, परिभवः। *ओघ० १८६*।

अवपंगुरे– अपवृणुयात्, उद्घाटयेत्। *दशवै० १६७*।

अवपात– पर्वतविशेषाः, येषु वैमानिका देवा अवपतन्ति अवपत्य च मनुष्यक्षेत्रादावागच्छति। *प्रश्न० ९६*।

अवपीलइ– अवपीडयति, जलेन प्लावयति। *जीवा० ३२६*।

अवबोह– अवबोधः, मतिः। *आचा० १२*।

अवभासियं– अपभासितं, दुष्टभाषणं, विरूपं भाषते। *व्यव० २०* अ।

अवमंथित– अवाङ्मुखीकृतः। *बृह० ८०* आ।

अवमः– लघुः पर्यायेण। *स्था० २४२*।
अवमण्णइ– अवमन्यते, अवज्ञाऽऽस्पदं मन्यते। *भग० १६६*।
अवमण्णह– उचितप्रतिपत्त्यकरणेन। *भग० २१९*।
अवमद– अवमद। *जम्बू० १०१*।
अवमद्दं– अपमर्दम्, उपमर्दनम्। *प्रश्न० ३७*।
अवमप्रतिजागरणम्– गुणविशेषः। *आव० ५३४*।
अवमा– हीना। *आचा० ३३२*।
अवमाणणं– अपमाननम्, विनयभ्रंशः। *प्रश्न० ९७*। अनभ्यु-त्थानादिकरणम्। *भग० २२७*। मानहरणम्। *प्रश्न० ४१*। अपमानम्, अपूजनम्। *औप० ४६*।
अवमाणो– अपमानः, दैन्यम्। *प्रश्न० १३८*।
अवमानं– हस्तादि। *स्था० १९८*।
अवमारियं– अपस्मारः–अपगतः स्मारः स्मरणं यस्मात् सः अपस्मारः, तस्मिन् सति तद् रोगिणः सर्वविशेषा स्मृतिः नश्यति। *आचा० २३३*।
अवमोदरः– अवमं–ऊनमुदरं–जठरं यस्य सः। *स्था०१४८*।
अवम्मो– अवाम्यः। *आव० १०१*।
अवयक्काओ– अवपाक्यास्तापिकाः। *भग० ५४८*।
अवयक्खंत– अपेक्षमाणः (भक्त)। पृष्ठतोऽभिमुखं निरूपनयन्। *ओघ० १२७*।
अवयक्खमाणस्स– अवकाङ्क्षतोऽपेक्षमाणस्य वा। *भग० ४९६*।
अवयग्गं– अन्तः, अन्तवाचको देशीवचनोऽयं शब्दः। *भग० ३५*। अवदग्रम्–पर्यन्तम्। *स्था० ४४*।
अवयणं– अवचनम्। *आव० ३४३*।
अवयव– अवयवाः, प्रतिज्ञादयः। *दशवै० ७५*। अवयवः–प्रमा-णाङ्गलक्षणः। *दशवै० ७७*। अवयवाः तथाविधविचित्रपरिणा-मापेक्षया। *स्था० ११*।
अवयविद्रव्यता– तथाविधैकपरिणामिता। *स्था० ११*।
अवयवी– अवयवानां तथारूपः सङ्घातपरिणामविशेषः। *जीवा० ६*।
अवयाणं– तैलविशेषः। *बृह० २२१* आ।
अवयानी– अनुश्रोतोगामिनी। *व्यव० २५* आ।
अवयारो– अवतारः, प्रस्तावः। *व्यव० २५* आ।
अवयासं– आलिङ्गनम्। *ओघ० १६४*।
अवयासणं– वृक्षादीनामालिङ्गापनम्। *बृह० २१५* अ।
अवयासिं– आलिङ्गनम्। *बृह० २६* आ।
अवयासिज्जमाणे– अपत्रास्यमानः, अप्रयास्यमानो वा। *औप० १०२*।
अवयासित्ता– अवकाश्य। *आव० ३५७*।
अवयासेउं– निवारयितुं, निरोद्धुम। *आव० ४३८*।
अवरं– उपरं, पश्चात्कालभावी। *आचा० १६७*।
अवरज्झियाउ– अपराद्धवान्। *आव० ८३५*।
अवरकंका– अपरकङ्का, ज्ञातायं षोडशाध्ययनम्। *आव० ६५३*। षष्ठाङ्गे षोडशं ज्ञातम्। *उत्त० ६१४*। *सम० ३६*।
अवरगज्जभो– अपरगर्जभः। *आव० ३८७*।
अवरज्झइ– अपराध्यंति, अपराधमाप्नोति। दस० ११६।
अवरण्हसंखडी– दिया गहियं रायो भुत्तं, राईभोयणस्य बितियभङ्गो। *निशी० १५* अ।
अवरत्त– अपरात्रः, अपकृष्टा रात्रिः, पश्चिमस्तद्भागः। *भग० १२७*। रत्तीए पच्छिमजामो। *दशवै० १६४*।
अवरदक्खिणा– अपरदक्षिणा। *आव० ६३०*।
अवरदारिता– अपरद्वारिकानि, अपरस्यां दिशि गम्यन्ते येषु। *स्था० ४१४*।
अवरद्धं– अपराद्धम्, दष्टम्। *उत्त० १४३*।
अवरद्धिगा– लूता फोडिआ, तस्यां लूतास्फोटिकायामुत्थि-तायां दाहोपशमार्थमचेतनेन पृथिवीकायेन परिषेकः क्रियते। *ओघ० १३०*। सर्पदंशस्तस्मिन् परिषेकादि क्रियते। *ओघ० १३०*।
अवरभू– अवरभूः, अधोभूः। *सूर्य० ४६*।
अवररायं– अपररात्र–रात्रेः पाश्चात्यः यामः। *आचा० २१०*।
अवरविदेहकूडे– अपरविदेहकूटम्, निषधे अष्टमकूटः। *जम्बू० ३०८*। अपरविदेहाधिपकूटम्। *जम्बू० ३७७*।
अवरविदेहे– अपरविदेहः, मेरोर्जम्बूद्वीपगतः पश्चिमविदेहः। *जम्बू० ३१०*। महाविदेहापरभागः। *स्था० ६८*। निषधे कूटविशेषः। *स्था० ७२*। नीले कूटविशेषः। *स्था० ७२*।
अवरवीयावो– अपरबीजापः। *आव० ३८७*।
अवराइअ– अपराजितः, पद्मबलदेवपूर्वभवनाम। *आव० १६३*।
अवराइआ– अपराजिता, शङ्खविजये नगरी। *जम्बू० ३५७*।
अवराजिआ– अपराजिता, पूर्वदिग्रुचकवास्तव्या

दिक्कुमारी। *आव० १२२*।

अवराजिया– अपराजिता, उत्तरदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्योत्तरस्यां पुष्करिणी। *जीवा० ३६४*।

अवराह– अपराधः, गुरुविनयलङ्घनरूपः। *आव० ५४१*।

अवराहखामणा– अपराधक्षमणा, वन्दनके षष्ठं स्थानम्। *आव० ५४८*।

अवरुंडिओ– आलिङ्गितः। *आव० २७४*।

अवरुत्तरा– अपरोत्तरा। *आव० ६३०*।

अवरेय– अवरेकः, रिक्तता। *उत्त० ३०५*।

अवरेण– अपरेण–जन्मादिना सार्द्धम्। *आचा० १६७*।

अवरो– अववादो। *निशी० १४६* अ।

अवरोप्परमसंबद्ध– परस्परमसम्बद्धः। *आव० ६३५*।

अवण्णे– अवर्णः, अश्लाघा। असद्दोषोद्घट्टनम्। *स्था० २७५*। अयशः, सर्वदिग्गामिन्यप्रसिद्धिः। *स्था० ४८*।

अवन्न– अवर्णः अप्रसिद्धमात्रम्। *भग० ४८९*। अश्लाघा। *ओघ० १२१*। अयशः। *ओघ० १२५*।

अवलंबण– अवलंबिज्जतित्ति अवलंबणं, सो पुण वेतिता मत्तावलंबो वा। *निशी० ११९* अ। बाह्यादिमात्रैक-देशग्रहणम्। *बृह० २३०* अ। अवतरतामुत्तरतामवलम्बन-हेतुभूताः। *जम्बू० ४३*। अवलम्बनः, अवतरतामुत्तरतां चालम्बने हेतुभूतः। *जीवा० १९८*। अवलम्बनं देशे ग्रहणम्। *स्था० ३२७*।

अवलंबणबाहा– अवलम्बनबाहा, उभयोरुभयोः पार्श्वयोर–वलम्बनाश्रयभूता भित्तिः। *जीवा० १९८*।

अवलंबनीयम्– लम्बयितव्यं रज्ज्वादिनिबद्धं हस्तादिना धरणीयम्। *भग० ४७*।

अवलंबमाणे– अवलम्बयन् हस्तवस्त्राञ्चलादौ गृहीत्वा। *स्था० ३५३*।

अवलंबमाने– अवलम्बमानः, पतन्ती बाह्यादौ गृहीत्वा धारयन्। *स्था० ३२७*।

अवलगका– सेवकाः। *भग० ४६४*।

अवलगनं– सेवा। *आचा० १३२*।

अवलद्ध– अपलब्धः न्यक्कारपूर्वकतया। *स्था० ४६६*। ईषल्लब्धः, अलब्धो वा। *प्रश्न० १३८*।

अवलद्धि– अपलब्धिः, अलाभोऽपरिपूर्णलाभो वा। *भग० १०१*।

अवलम्बए– अवलम्बेत–अवष्टम्भादिकां क्रियां कुर्यात्। *आचा० २९३*।

अवलितं– वस्त्रं शरीरं वा न वलितं कृतं तत्। *स्था० ३६१*। यथाऽऽत्मनो वस्त्रस्य च वलितमिति मोटनं न भवति। *उत्त० ५४१*।

अवलियं– अवलितम्। *ओघ० १०९*।

अवलेहणिया– वासासु कद्दमफेडणी। *निशी० १२४* अ।

अवलेखकं– मायायाः लक्षणम्। *आचा० १७०*।

अवलोकनम्– गवाक्षः। *बृह० २०७* अ।

अवलोवो– अपलोपः, वस्तुसद्भावप्रच्छादनम्। अधर्मद्वारस्य त्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० २७*।

अवल्ल– गोणी। *आव० ६६५*।

अवल्लखेवा– सविलंबाः क्षेपाः। *निशी० ७८* अ।

अवल्लगं– *ओघ० ३३*। निर्यामकाः। (*मरण०*)

अववं– अववम्, चतुरशीतिरववाङ्गशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५*।

अववंगं– अववाङ्गम, चतुरशीतिरववाङ्गशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५*। *भग० ८८८*।

अववरय– अपवरकः, गृहान्तर्भागः। *दशवै० ४२*।

अववाओ– अपवादः, द्वितीयपदम्। *निशी० ९२* अ।

अववाडणं– अवपाटनम्, विदारणम्। *भग० १२०*।

अववाय– अपवादः, परदूषणाभिधानम्। *प्रश्न० ११६*।

अववायसुत्तं– तिण्हमन्नयरागस्य इत्यादि। *बृह० २०१* आ। *निशी० ११* अ।

अववायाववाओ– अववाए पुण अन्नो अववाओ। *निशी० ६५* आ।

अवविहे– आजीविकोपासकविशेषः। *भग० ३६९*।

अववे– कालविशेषः। *भग० २१०, २७५, ८८८*। *सूर्य० ९१*।

अवश्रावणम्– आयामम्। *ओघ० १३३*।

अवष्टम्भम्– उपग्रहः। *ओघ० १५४*। *उत्त० ५५*।

अवष्टब्धाः– आक्रान्ताः। *आचा० २५८*।

अवसण्णा– अवसन्नाः। *आव० ६७५*। खग्गूडप्रायाः। *ओघ० १५६*।

अवसद्दो– अपशब्दः। *आव० ४०१*।

अवसरो– अवसरः, उपयोगकालः। *सूत्र० ११*।

अवसाणं– अवसानम्। *आव० ३८४*। अन्तः। *प्रज्ञा० ३९७*।

अवसायः– निश्चयः। *प्रश्न० १०४*।

अवसावणं– अवश्रावणम्, काञ्जिकम्। *बृह० १२९* आ।
अवसिद्धंतो– अपसिद्धान्तः। *आव० ३२०*।
अवसोहिय– अवशोध्य अपसार्य, पृथक्कृत्य, परिहृत्य। *उत्त० ३४०*।
अवसेसं– अवशेषम्, उद्धरितम्। *उत्त० ५९६*। भिक्षाप्रक्र–मात्पात्रनिर्योगोद्धरितम्, यद्वापगतं शेषमपशेषम्। *उत्त० ५४४*।
अवस्कन्दः– शिबिरः। *आचा० १४०*।
अवस्थानम्– संस्थितिः। *सूर्य० ७*।
अवस्सं– अवश्र्चम्, नियोगतः। *आव० २६५*।
अवह– अव्याप्रियमाणः। *बृह० २७* आ।
अवहट्टण– त्यागः। (*मरण०*)
अवहट्टु– अपहृत्य, त्यक्त्वा। *भग० १००*। परिहृत्य। *औप० २४*। परित्यज्य। *ओघ० ११४*। आहृत्य–निष्कृष्य, त्य-क्त्वा। *आचा० ४००*।
अवहट्टुअसंजमे– अपहृत्यासंयमः–अविधिनोच्चारादीनां परिष्ठापनतो यः सः। *सम० ३३*।
अवहट्टुसंजमो– अपहृत्यसंयमः–प्राणिभिः संसक्तं भक्तं पानमथवाऽविशुद्धमुपकरणं पात्रादि यद्वाऽतिरिक्तं भवेत् तत्परिष्ठापनं विधिना। *आव० ६५३*।
अवहडे– अपहृतम्। *भग० २७७*।
अवहन्न– उदूखलम्। *बृह० ६०* अ।
अवहारइ– अवधार्यते, प्रथमतया स्थाप्यते। *सूर्य० ११३*।
अवहारवं– अवधारणावान्। *स्था० ४८४*।
अवहाराइ– अपहृतवन्तः–गृहीतवन्तः। *आचा० ३३७*।
अवहारो– अपहारः, अधर्मद्वारस्य दसमं नाम। *प्रश्न० ४३*। जलचरविशेषः। *प्रश्न० ६२*। अवधार्यः–ध्रुवराशिः। *सूर्य० १३*। *जम्बू० ५०७*।
अवहितचित्तः– एकाग्रमनाः। *उत्त० ५९९*।
अवहीयं– अपधीकम्, अपसदा–निन्द्या धीर्यस्मिंस्तत्। अधर्मद्वारस्याष्टाविंशतितमं नाम। *प्रश्न० २६*।
अवहेडयं– अर्द्ध शिरोरोगम्। अत्त० *१४३*।
अवहेडियं– अवहेठितम्, अवेत्यधो, हेठितं–बाधितं अधो–नामितमिति। *उत्त० ३६७*।
अवाअ– अपायः, उदाहरणस्य प्रथमो भेदः। *दशवै० ३५*।
अवाईण– अवाचीनम्, अधोमुखम्। *औप० ७*। अवातीनानि, न वाणोपहता, न वातेन पातितानि। *जम्बू० २९*।
अवाईणपत्ता– अवाचीनपत्राः, अधोमुखपर्णाः, अधोमुख–पलाशा वा। *औप० ७*। अवातीनपत्राः–अवातोपहतबर्हाः। *औप० ९*।
अवाउड– अप्रावृतम्, प्रावरणरहितम्। *दशवै० ११९*। अप्रावृता। *ओघ० १६७*। प्रावरणाभावः। *भग० १२५*।
अवाउडए– अप्रावृतकः, प्रावरणवर्जकः। *औप० ४०*। न विद्यते प्रावरणकम्। *स्था० २९९*।
अवाउडिय– अप्रावृतिक, सकलां रात्रिं यावद् अप्रावरणा–भिग्रहवान्। *बृह० २९२* अ।
अवाए– अवायः, अवधारणात्मको निर्णयः। *प्रज्ञा० ३१०*। अपायः–अवग्रहज्ञानेन ईहितस्यार्थस्य निर्णयरूपो योऽ–ध्यवसायः। *प्रज्ञा० ३१०*।
अवाओ– अवायः–प्रक्रान्तार्थविनिश्र्चयः। *भग० ३४४*। ईहार्थविशेषनिश्र्चयः। *आव० ९*।
अवाधाय– अव्याघातः, प्रव्रज्यासूत्रार्थग्रहणादिकयाऽऽनुपूर्व्या विपक्त्रिममायुष्कक्षयमनुभवतो यो भवति सोऽव्याघातः। *आचा० २६२*।
अवाच्यप्रदेशः– गुह्यम्। *प्रज्ञा० ४३०*।
अवातदंसी– अपायदर्शी। *स्था० ४८४*।
अवातीणपत्तो– अवातीनपत्रः, न वातोपहतं पत्रं, वातेनापातितं पत्रम्। *जीवा० १८७*।
अवाते– अपायः–अनर्थः। *स्था० २५३*।
अवदाणे– अपादानः–विश्र्लेषतो मर्यादया दीयते, खण्ड्यते, गृहयते, अवधिमात्रम्। *स्था० ४२८*।
अवायदंसी– आणालोएंतस्स पलिउंचंतस्य पच्छित्तं अकरेंत-स्स संसारे जम्मणमरणादिदुल्लभबोहियत्तं च परलोगावाए दरिसेति इहलोगे च ओमासिवादी सो अवायदंसी। *निशी० १२८* आ। सातिचारस्य पारलौकिकापायदर्शीति। *स्था० ४८६*। अपायान्–अनर्थान् शिष्यचितभङ्गानिर्वाहा-दीन् दुर्भिक्षदौर्बल्यादिकृतान् पश्यतीत्येवंशीलः सम्यगना-लोचनायां वा दुर्लभबोधिकत्वादीन् अपायान् शिष्यस्य दर्शयति। *स्था० ४२४*।
अवायाणुप्पेहा– अपायानुप्रेक्षा, आश्रवाणामपायानामनुप्रेक्षा। *स्था० १८८*।

अवालुयाखिल्ल– अवारितश्लेष्म। (*तन्दु०*)
अवावारे– अव्यापारः, इन्द्रियाव्यापारः। *आव० ६५२*।
अवाहाणं– देशविशेषः। *भग० ६८०*।
अविंदंत– अलभमानः। *आव० ५३५*।
अविंधणं– आव्यधनम्, मनत्रावेशम्। *प्रश्न० ३८*।
अवि– अपि, अपिशब्दः पद्यबन्धत्वेन पादपूरणार्थं एवकारार्थो वा। *जम्बू० २४५*। प्रकारवाची। *निशी० १६८* आ।
अविअ– अपि च, अभ्युच्चये। *ओघ० ३६*।
अविअत्तो– अव्यक्तः, मुग्धः–सहजसद्विवेकविकलः। *सूत्र० ३४*।
अविइ– समन्ताद् वीचय इव वीचयः *उत्त० २३१*।
अविउद्दमाणो– पीड्यमानः। *सूत्र० ५१४*।
अविउप्पकड– अविद्वत्प्रकृता, अव्युत्प्रकटा वा न विशेषत उत्प्राबल्यतश्च प्रकटाः। *भग० ३२५*। अपि शब्दः सम्भा-वानार्थः उत्-प्राबल्येन च प्रकृता–प्रस्तुता वा उत्प्रकृतो-त्प्रकटो वा। *भग० ७५३*।
अविउस्सिया– अव्युत्सृज्य, अपरित्यज्य। *सूत्र० ३९४*।
अविओगिओ– अवियोगिकः, वियोगासहिष्णुः। *आव० ४३६*।
अविओगो– अवियोगः, धनादेरत्यजनम्। परिग्रहस्य पञ्चविंश-तितमं नाम। *प्रश्न० ९२*।
अविओसित– अवयवसितम्, अनुपशान्तम्। *स्था० १६६*।
अविकत्थण– अविकत्थनः–न बहुभाषी। *दशवै० ५*। अविकत्थनम्–हितमितभाषणम्। *आचा० २*।
अविकप्पं– अविकल्पः, निश्चयः। *आव० २६४*।
अविकलकुल– अविकलकुलाः, ऋद्धिपरिपूर्णकुलाः। *भग० ४६९*।
अविकोविओ– जो वा भणिओ अज्जो ! जइ भुज्जो भुज्जो से विहिसि तो ते छेदं मूलं वा दाहामो, एसो वि कोविदो, एतेसि चेव विवरीता जो य पढमताए पच्छित्तं पडिवज्जति ते अकोविआ भण्णंति। *निशी० १२१* अ।
अविक्कडिय– अविकटित, अखंडित। *व्यव० ५३* आ।
अविक्कयेण– अविक्रयेण–भाटकेन। *व्यव० २३८* आ।
अविक्किअ– असंस्कृतम्, सुलभमीदृशमन्यत्रापि। *दशवै० २२१*।
अविक्कीवो– आसायमाणो। *दशवै० १२३*।
अविकुलं– अपूतिकुलं। (*मरण०*)
अविगणिया– अविमता। *आव० ६९२*।
अविगियवयणो– अविकृतवदनः, नात्यन्तनिर्घाटितमुखः। *ओघ० १८२*।
अविगीत– अविप्रतिपन्नः। *व्यव० १९२* अ।
अविगुह– अवारित। (*मरण०*)
अविग्गहगइसमावन्नग– अविग्रहगतिसमापन्नः, ऋजुगतिकः, स्थितो वा। *भग० ८५*। विग्रहगतिनिषेधादृजुगतिकः अवस्थितश्च। *भग० ८७७*।
अविग्गहमणे– अविग्रहमनाः, अकलहचेताः अव्युद् ग्रहमना वा, अविद्यमानासदभिनिवेशः। *प्रश्न० १११*।
अविघाटा– अप्रकटा। *व्यव० २०३* अ।
अविघुट्टं– विक्रोशनमिव यन्न विस्वरम्। *स्था० ३९६*। विक्रो-शनमिव यद्विसवरं न भवति तत्। *जम्बू० ४०*।
अविच्युति– धारणाभेदः। *दशवै० १२५*।
अविज्जा– अविद्या, न विद्या–मिथ्यात्वोपहतकुत्सित-ज्ञानात्मिका। *उत्त० २६२*।
अविज्जापुरिसा– अविद्यापुरुषाः, अविद्या–मिथ्यात्वोपहतकु-त्सितज्ञानात्मिका तत्प्रधानाः पुरुषाः। अविद्यमाना वा विद्या –प्रभूतश्रुतं येषां ते। *उत्त० २६२*।
अविज्ञोपचितम्– अविज्ञानमविज्ञा तयोपचितं, अनाभोगकृत-मिति। *सूत्र० ११*।
अविणए– अविनयः। *आव० ७९३*।
अविणासी– अविनाशी, क्षणापेक्षयाऽपि न निरन्वयनाशधर्मा। *दशवै० १२९*।
अविणीअप्पा– अविनीतात्मा, भवान्तरेऽकृतविनयः। *दशवै० २४९*। विनयरहिता अनात्मज्ञाः। *दशवै० २४८*।
अविणीओ– अविनीतः, सूत्रार्थदातुर्वन्दनादिविनयरहितः। *स्था० १६५*। अविनीताः, ये बहुशोऽपि प्रतिनोद्यमानाः प्रमाद्यन्ति, ते च छन्देऽवर्त्तमाना भण्यन्ते। *बृह० २०९*।
अविण्णाय– अविज्ञातम्, अवध्यपेक्षया अज्ञातम्। *भग० १९७, २००*।
अवितथभावः– अर्थविनिश्चयः। *दशवै० २३५*।
अवितहं– अवितथम्, सत्यम्। *आव० ७६१*। *भग० १२१*।
अवितहमेयं– अवितथमेतत् न कालान्तरेऽपि

विगताभिमत-प्रकारम्। *भग॰ ४६७*।

अविदलकडाओ– अद्विदलकृताः, न द्विदलकृता अद्विदल-कृताः, अनूर्द्ध्वपाटिताः। *आचा॰ ३२३*।

अविद्दवंतो– अविद्रवन्। *उत्त॰ २७९*।

अविद्धकन्नए– अविद्धकर्णः, अव्युत्पन्नम्। *भग॰ ६७७*।

अविद्धत्थ– अविध्वस्तः, प्ररोहसमर्थः। *दशवै॰ १४०*।

अविद्यमानम्– मांसलतयाऽनुपलक्ष्यमाणम्। *जीवा॰ २७१*।

अविधिभिन्ने– ऊर्ध्वफालिरूपाः पेश्यः कृतं तद्दजुकभिन्नं, यत्पुनस्तिर्यक्बृहत्कत्तलिकाकृतं तच्च कलिकाभिन्नमेते द्वे। *बृह॰ १७५* अ।

अविधो– कुच्छितो। *निशी॰ २७७* अ।

अविपक्कदोसा– कषायेन्द्रियनिग्रहेऽसमर्था, अकोविदा वा। *बृह॰ १४१* अ।

अविपरीतदर्शन– साम्प्रतेक्षी। *सूत्र॰ ३८४*।

अविपु(घु)ट्ठुं– अविपु(घु)ष्टम्, न विस्वरं क्रोशतीव। *जीवा॰ १९४*।

अविप्पकड– अविप्रकटा, आनुकूल्येन प्रकृता–प्रक्रान्ता, अथवा न विशेषेण प्रकटा अविप्रकटा। *भग॰ ३२५*।

अविप्पणासो– अविप्रणाशः, शाश्र्वतं, सिद्धानां नमस्कारार्हत्वे हेतुः। *आव॰ २६३*।

अविबंधणो– अविबन्धनः, अविद्यमानमन्त्रादिनियन्त्रणः। उत॰ ४७९।

अविभागा– अविभागाः, अनुभाषाः। *स्था॰ २२२*।

अविभागपलिच्छेदो– अविभागपरिच्छेदः, केवलिप्रज्ञाछेदेना-विभागम्। *बृह॰ १५* आ।

अविमणे– अविमनाः, न शून्यचित्तः, अदीनस्य द्वितीयं नाम। *अन्त॰ २२*।

अविमोत्ति– अविमुक्ती, गृद्धिः। *निशी॰ १५५* अ।

अवियं– उच्छिष्टम्। *बृह॰ २७१* आ।

अवियत्तकुलं– जत्थ बहुणावि कालेण भिक्खा न लब्भइ। *दशवै॰ ७७*।

अवियद्धो– अविदाधः, अतृप्तः। (*महाप्र॰*)

अवियाइं– इत्येवमादीनुद्दिश्य। *आचा॰ ३५३*।

अवियाउरी– अप्रसविनी। *आव॰ २१२*।

अवियाणओ– अविजानन्, हिताहितप्राप्तिपरिहारशून्यमनाः। *आचा॰ ७०*।

अवियारं– अपराक्रममप्रभवति काले। (*भक्त॰*)

अवियार– अविचारम्, चेष्टात्मकविचारविरहितमरणानशनतपः। *उत्त॰ ६०२*। अविकारा–गीतादिविकाररहिताः। *बृह॰ ३१०* आ।

अवियोगज्झवसाणं– अवियोगाध्यवसानम्, अविप्रयोग–दृढा-ध्यवसायः। *आव॰ ५८५*।

अविरइ– अविरतिः, इच्छाया अनिवृत्तिः। *भग॰ १०१*।

अविरइय– अविरतिकः। *आव॰ २१८, ६२०, ६४०, ४०४, ५६०*। *दशवै॰ ८९*। गृहस्थी। *ओघ॰ १९४*।

अविरए– अविरतः, प्राणातिपातादिविरतिरहितः, विशेषण वा तपसि रतो यो न भवति सः। *भग॰ ३६*।

अविरओ– अविरतः, न विरतः, सावद्यव्यापारादनिवृत्त-मनाः। *प्रज्ञा॰ २६८*।

अविरतओ– अविरतः। *आव॰ ३९६*।

अविरतकायिकी– कायिकीक्रियायाः प्रथमो भेदः। मिथ्यादृष्टेरविरतसम्यग्दृष्टेश्र्च। उत्क्षेपणादिलक्षणा क्रिया कर्मबद्धनिबन्धना। *आव॰ ६११*।

अविरति– अविरतिः, अब्रह्म। *स्था॰ ३७२*। अप्रत्याख्यान-मथवा अविरतिरूपो भावः, शस्त्रम्। *स्था॰ ४९२*। अविरतिः। *आव॰ ९३*।

अविरतिया– अविरतिका, न विद्यते विरतिर्यस्याः सा। *स्था॰ ३७२*। अविरतिका। *आव॰ ३९६*।

अविरत्ताए– अविरक्तया विप्रियकरणे। *भग॰ ५७९*।

अविरत्तो– अविरक्तः। *औप॰ १३*।

अविरय– अविरतः, अनिवृत्तः। *प्रश्न॰ ३०*। मिथ्यादृष्टिः सम्यग्दृष्टिश्र्च। *आव॰ ५८८*।

अविरयसम्मद्दिट्ठी– अविरतसम्यग्दृष्टिः, देशविरतिरहितः सम्यग्दृष्टिः, भूतग्रामस्य चतुर्थ गुणस्थानम्। *आव॰ ६४०*।

अविरलं– परस्परासन्नम्। *प्रश्न॰ ८३*।

अविरलपत्तो– अविरलपत्रः। *जीवा॰ १८७*। अविरहिए–अविरहितम्–चूक्कस्खलितन्यायादपि न विरहितः, अथवा प्रदीर्घकालोपभोग्याहारस्य सकृद्–ग्रहणेऽपि भोगोऽनुसमयं स्यादतो ग्रहणस्यापि सातत्य–प्रतिपादनार्थम्। *भग॰ २०*।

अविरहिय– अविरहितः, अविमुक्तः। *आव॰ ५३२*।

अविरहो– अविरहः, सातत्येनावस्थानम्। *आचा॰ ६१*।

अविराहणं– अविराधना। *भग० ८१८*।

अविराहियसंजम– अविराधितसंयमः, प्रव्रज्याकालादारभ्या-भग्नचारित्रपरिणामः, सञ्ज्वलनकषायसामर्थ्यात्प्रमत्तगुण-स्थानकसामर्थ्याद्वा। स्वल्पमायादिदोषसम्भवेऽप्यनाचरि-तचरणोपधातः। *भग० ५०*।

अविरिक्का– अविरक्ता, अविभक्तरिक्था। *बृह० २४३* अ।

अविरेकछः– रोषः। *व्यव० १३७* अ।

अविरुद्धो– अविरुद्धः, वैनयिकः। *औप० ९०*।

अविलं– लोगपसिद्धं। *दशवै० ६*। गडुलमाकुलं वा। *सम० ५३*।

अविलंबियं– अविलम्बितम्, नातिमन्थरम्। *भग० २१४*। अमन्थरम्। *ओघ० १८७*। अनतिमन्दम्। *प्रश्न० ११२*।

अविवन्न– अविपन्नः, अप्राप्तविपत् मन्त्रादिभिरनियन्त्रितः। *उत्त० ४७१*।

अविसेस– अविशेषः, विशेषरहितः। *भग० ९६१*। *प्रज्ञा० ७४*।

अविसंधि– प्रवाहे णाव्यवच्छिन्नम्। *भग० ४७१*। अव्यवच्छिन्नम्। *आव० ७६१*।

अविसंवावण– अविसंवादनम्, पराविप्रतारणम्। *उत्त० ५७१*।

अविसंवायणाजोगे– अविसंवादनायोगः। *स्था० १९६*।

अविसादी– अविषादी, चिन्तारहितः, अदीनस्य पञ्चमं नाम। अन्तः *२२*।

अविसारओ– अविशारदः। *प्रज्ञा० ६०*।

अविसुद्धलेस्से– अविशुद्धलेश्यः, कृष्णादिलेश्यः। *जीवा० १४२*। विभंगज्ञानः। *भग० २८४*।

अविसुद्धो– पासत्थादी तेसिं मज्झातो जो आगतो विहारा-भिमुहो तस्य जो पुव्वोवही सो अविसुद्धो। *निशी० ११३* अ।

अविसेसियं– अविशेषतम्, विशेषरहितम्। *जम्बू० ८८*।

अविसोहिकोडी– अविशोधिकोटिः। *दशवै० १६२*।

अविहम्ममाण– विविधं परीषहोपसर्गैर्हन्यमानो विहन्यमानः, न विहन्यमानोऽविहन्यमानः, न निर्विण्णः सन् वैहानसं गार्द्ध-पृष्ठमन्यद्वा बालमरणं प्रतिपद्यत इति। *आचा० २५९*।

अविहाड– अप्रगल्भः। *व्यव० ३७९* अ।

अविहाव– अविभाव्य, अविभावनीयस्वरूपः। *प्रश्न० ११*।

अविहि– अविधिः। *आव० ५२*। अयतना। *बृह० १५३* अ।

अविहिगहिअं– अविधिग्रहणम्, अशुद्धस्य–उद् गमादिदोषा-न्वितस्य यद् ग्रहणं, अथवा गुडादेर्द्रव्यस्य मण्डकादिना प्रच्छाय यदेकत्र पात्रकदेशे स्थापनं तत्। *ओघ० १९२*।

अविहिपरिट्ठावणिया– अविधिपरिष्ठापनिकी। *आव० ६३८*।

अविहेडए– अविहेडकः, न क्वचिदुचितेऽनादरवान्। *दशवै० २६६*।

अवीइ– अवीचिः, वीचिः–विच्छेदस्तदभावात्। *उत्त० २३१*।

अवीरिए– अवीर्यः, उत्थानादिक्रियाविकलः। *भग० ९५*। मानसशक्तिवर्जितः। *भग० ३२३*।

अवीरिय– अवीर्यः, सिद्धः। *भग० ९५*।

अवीसंभो– अविश्रम्भः, अविश्वासः, प्राणवधस्य तृतीयः पर्यायः। *प्रश्न० ५*।

अवीहीपुच्छण– अविधिपृच्छा, वस्त्रपात्राद्युपकरणं विहारार्थमुद्ग्राह्य पृच्छन्ति। *बृह० २४१* अ।

अवुन्नं– अपुण्यम्। *उत्त० २१०*।

अवेइअ– अवेदितः, मनसाऽप्यनालोचितः। *आव० ४१५*।

अवोच्छिन्ना– अव्युच्छिन्ना यावदेकोऽपि तिष्ठति तावत्। *आव० ७२७*।

अव्युच्छेदम्– वाण्यतिशयविशेषः, विवेक्षितार्थानां सम्यक्सिद्धिं यावदनवच्छिन्नवचनप्रमेयम्। *सम० ६३*।

अव्वए– अव्ययम्, व्ययरहितम्। *भग० ११९*।

अव्वओ– अव्ययः, अव्ययशब्दवाच्यः। *जीवा० १८३*।

अव्वते– अव्ययः पर्यायापगमेऽप्यनन्तपर्यायतया। *स्था० ३३३*। अवयवापेक्षया। *स्था० ३३३*। व्ययाभावः। *भग० ७६०*।

अव्वत्तं– अव्यक्तः, अव्यक्तमतं, अस्फुटमतं, संयताद्यवगमे सन्दिग्धबुद्धिः। *आव० ३११*। अव्यक्तम्। *औप० १०६*। अगीतार्थस्य गुरोः सकाशे यदालोचनं तत्। *स्था० ४८४*।

अव्वत्तगसंचिया– अवक्तव्यसञ्चिताः, द्वय्यादिसङ् ख्याव्य-वहारतः शीर्षप्रहेलिकायाः परतोऽसङ् ख्यातव्यवहारश्च सङ्ख्याततत्वेनासङ्ख्याततत्वेन च

वक्तुं न शक्यतेऽसाववक्तव्यः स चैककस्तेनावक्तव्येन–एककेन एकत्वोत्पादेन सञ्चिताः। *भग० ७९६*।

अव्वत्तलिंगो– अव्यक्तलिङ्गः। *आव० ३५२*। अप्रत्यक्षलिङ्गः। *आव० ५६५*।

अव्वत्तस्य– अव्यक्तस्य–अगीतार्थस्य सूत्रार्थापरिनिष्ठितस्य। *आचा० १९६*।

अव्वत्तो– जाव कक्खादिसु रोमसंभवो न भवति, ताव अहवा जाव सोलसवरिसो ताव अव्वत्तो। *निशी० ८२* अ। श्रुतेऽगीतार्थः वयसि अर्वाक् षोडशभ्यः। *बृह० १३२* अ। अगीयड्डो। *निशी० १७३* आ।

अव्वया– अव्यया। *जीवा० ९९*। अव्ययशब्दवाच्या, मनागपि स्वरूपचलनस्य जातुचिदप्यसम्भवात्। *जम्बू० २७*। तदारम्भकप्रदेशापरिहाणेः। *जम्बू० २५७*।

अव्ववसितस्य– अव्यवसितस्य–अनिश्चयवतोऽपराक्रमवतो वा। *स्था० १७६*।

अव्वहिओ– अव्यथितः, परेणानापादितदुःख। *जम्बू० १२६*। *जीवा० ९९*। *आचा० ४२४*। अदीनमनाः। *दशवै० २३२*। अदीणो। *दशवै० १२३*।

अव्वहे– अव्यथम्, देवादिकृतोपसर्गादिजनितं भयं चलनं वा व्यथा तस्या अभावो अव्यथम्। *स्था० १९२*।

अव्वाबाधं– अव्याबाधम्, केनापि विबाधयितुमशक्यत्वात्। *जीवा० २५६*। वन्दनके तृतीयं स्थानम्। *आव० ५४८*। अव्याबाधः, परेषां पीडाकारित्वाभावाद्विनष्टबाधः। *भग० ७*। अव्याबाधम्–उपरतसकलपीडं मौक्तम्। *उत्त० ५७८*।

अव्वाबाह– शुक्राभविमानवासी सप्तमो लोकान्तिकदेवः। *भग० २७१*। *स्था० ४३२*। अव्याबाधः सप्तमलोकान्तिकदेवः। *आव० १३५*। अपीडाकारित्वम्। *सम० ५*।

अव्वायडा– अव्याकृता, अस्पष्टा अप्रकटार्था, असत्यामृषा-भाषाभेदः। *दशवै० २१०*।

अव्वावारपोसहे– अव्यापारपौषधः। *आव० ८३५*।

अव्वाहयं– अव्याहतम्, एकान्तिकमिहपरलोकाविरुद्धं फला-न्तराबाधितं वा। *आव० ४१५*।

अव्वाहितो– अव्याहितः, अनाहूतः। *जीवा० १६६*।

अव्वितिगिट्ठ– अव्यतिकृष्टे, उद्घाटायां पौरुष्यामित्यर्थः। *व्यव० २२७* आ।

अव्वुक्कंताइं– अव्युत्क्रान्ताः, अविध्यस्तपर्यायाः *आचा० ३४८*।

अव्वुच्छित्तिनयट्ठया– अव्युच्छित्तिनयार्थता, द्रव्यास्तिकनय-मतम्। *सूर्य० २८६*।

अव्वुच्छिन्ननयट्ठता– अव्यवच्छिन्ननयार्थता, द्रव्यास्तिकनय-मतम्। *सूर्य० २५८*।

अव्वो– संबोधने, अहम्। *व्यव० २०३* आ।

अव्वोगडं– अव्याकृतम्, गुरुभिर्विशेषतोऽनाख्यातम्। *भग० १००*। दायादादिभिरविभक्तं अननुज्ञातं वा। *बृह० ५०* अ। अव्याकृतं नाम दायिनां सामान्यं न पुनस्तैर्विभक्तं यदि विकृतं न केनापि विकारमापादितं, यद् भवेत् पूर्वराजेन संदिष्टं, वंशस्य परम्परया समागतम्। *व्यव० २७९* आ। अविभक्तम्। *व्यव० २७९* अ। अव्यक्तोऽपरिस्फुटः। *आचा० ३२०*।

अव्वोगडा– अव्याकृता, अविसंसृता। *आव० ७२७*। कृतेऽपि भागे निर्देशहीना अंशिका। *बृह० १९९* आ। अतिगम्भी-रशब्दार्था, अव्यक्ताक्षरप्रयुक्ता वा असत्यामृषाद्वादशभेदः। *प्रज्ञा० २५६*।

अव्वोच्छित्तिणए– अव्यवच्छित्तिनयः, द्रव्यास्तिकनयः। *उत्त० १५*।

अव्वोच्छित्तिणयट्ठया– अव्यवच्छित्तिनयार्थता, अव्यवच्छि-त्तिप्रधानो नयोऽव्यवच्छित्तिनयस्तस्यार्थोद्रव्यमव्यवच्छित्ति-नयार्थस्तद्भावस्तत्ता। *भग० ३०२*।

अव्वोच्छिन्न– अव्यवच्छिन्नम्, अखण्डितम्। *आचा० ४०५*। अव्यवच्छिन्नाः, अनवरतम्। *ओघ० १२६*।

अव्वोच्छिन्ना– कृतोऽपि भागे मूलराशेरव्यवच्छेदो यावत्। *बृह० १९९* अ।

अव्वोच्छिन्नाओ– अव्यवच्छिन्नाः, व्यवच्छिन्ना–जीवरहिता न व्यवच्छिन्ना अव्यवच्छिन्नाः। *आचा० ३२३*।

अव्वोयडा– अव्याकृताः, गम्भीरशब्दार्था मन्मनाक्षरप्रयुक्ता वाऽनाविर्भावितार्था। *भग० ५००*।

अशरणानुप्रेक्षा– अशरणस्य–अत्राणस्यात्मनोऽनुप्रेक्षा। *स्था० १९०*।

अशुषिरे– अज्झुसिरे, तृणपर्णाद्यनाकीर्णे। *उत्त० ५१८*।

अशून्यान्तरा– न शून्यानि अन्तराणि यासां ता। *आव० ३५*।

अशोकपल्लवप्रविभक्तिः– विंशतितमो नाट्यविधिः। *जीवा० २४७*।

अशोकलता– लताविशेषः। *आचा० ३०*।

अश्रयः– (अंस), कोणाः, कोट्यः। *स्था० ४३५*। चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः शरीरावयवाः पर्यङ्कासनोपविष्टस्य जानुनोरन्तरं, आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरम्, दक्षिणस्कन्धस्य जानुनश्चान्तरम्, वामस्कन्धस्य दक्षिण-जानुनश्चान्तरमिति। *जम्बू० १५*। चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः शरीरावयवाः। *स्था० ३५७*।

अश्रुतनिश्रितम्– यत्पुनः पूर्वं तदपरिकर्मितमतेः क्षयोपशम-पटीयस्त्वादौत्पत्तिक्यादिलक्षणमुपजायते तत्। *आव० ९*।

अश्वंदमः– वाहकः। *उत्त० ६२*।

अश्विनी– प्रथमं नक्षत्रम्। *दशवै० २३६*।

अष्टभाग– अट्ठभागो–अष्टमो भागः। *भग० ८३२*।

अट्ठमीपोसहो– अष्टमीपौषध–अष्टम्यां पौषधः–उपवासा–दिकोऽष्टमीपौषधः। *आचा० ३२७*।

अट्ठमीपोसहिया– अष्टमीपौषधिका–उत्सवाः। *आचा० ३२७*।

अष्टापदम्– अट्ठावय, तीर्थविशेषः। *आचा० ४१८*। *आव० २८७*। *बृह० ५२*अ।

अष्टाष्टकिका– चतुःषष्टिः। *व्यव० ३४७* आ।

अष्ठीवती– जानुनी। *प्रश्न० ८०*।

अष्ठीवान्– जानु। *जीवा० २७०*।

असंकमणो– अशङ्कमनाः, न विद्यते शङ्का यस्य मनसस्तद-शङ्कम् अशङ्कं मनो यस्य स। *आचा० १२२*।

असंकिया– अशङ्किता। *आव० ५६१*।

असंकिलिट्ठ– असङ्क्लिष्टम्, निर्दूषणम्। *औप० ५९*। विशुद्ध्यमानपरिणामवान्। *प्रश्न० ११०*।

असंखडं– कलहः, वैरं वा। *बृह० ४८* अ। *बृह० ८६* अ। *निशी० ३१*अ। कलहः। (*गणि०*)। *ओघ० ८०*।

असंखडबोलो– कलहबोलः। *आव० ६५४*।

असंखडिओ– असंङ्खडिकः, कलहकारकः। *ओघ० १५१*।

असंखयं– असंस्कृतम्। *दशवै० १०५*। उत्तराध्ययनेषु चतुर्थमध्ययनम्। *उत्त० ९*। *सम० ६४*।

असंखया– असङ्ख्यकाः, सङ्ख्याविरहिताः। *उत्त० ३१६*।

असंखेञ्जजीविया– असङ्ख्यातजीविकाः वृक्षविशेषाः। *भग० ३६४*। यथा निम्बाम्रादीनां मूलकन्दस्कन्धत्वक् छाखाप्र-वालाः। *स्था० १२२*।

अंखेज्जवित्थडे– असङ्ख्येयविस्तृतः असंङ्ख्येयं विस्तृतं यस्य सः। *जीवा० १०६*।

असंखेप्पद्धा– असङ्क्षेप्याद्धा, त्रिभागादिना प्रकारेण या सङ्क्षेप्तुं न शक्यते सा चासौ अद्ध च। *प्रज्ञा० ४८९*।

असंगहरुई– असङ्ग्रहरुचिः, गच्छोपग्रहकरस्य–पीठादिक-स्योपकरणस्यैषणा दोषविमुक्तस्य लभ्यमानस्यात्मंभरित्वेन न विद्यते सङ्ग्रहे रुचिर्यस्यासौ। *प्रश्न० १२५*।

असंगे– असङ्गः, वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग० २००*।

असंघयणो– आदिल्लेहिं तीहिं संघयणेहिं वज्जितो। *निशी० १३२* अ।

असंघातिमो– एगंगिओ। *निशी० ७९* अ।

असंचइआ– असंचयिताः–ये मासिके द्वैमासिके त्रैमासिके चतुर्मासिके पञ्चमासिके षण्मासिके वा प्रायश्चित्ते वर्त्तन्ते ते। *व्यव० ९७* आ।

असंचेअयओ– असंचेतयतः, अजानानस्य। *ओघ० २२०*।

असंजअ– असंयतः, गृहस्थः। *आचा० ३४२*।

असंजगविसओ– भगवयापडिसिद्धो। *निशी० १८* अ।

असंजण– असंगो, अगेही। *निशी० ८१* अ।

असंजमो– असंयमः, प्राणवधस्य चतुर्दशपर्यायः। *प्रश्न० ५*। अधर्मद्वारस्य षष्ठं नाम। *प्रश्न० ४३*।

असंजय– असंयतः चरणपरिणामशून्यः। *भग० ४९*। गृहस्थः। *दशवै० २२२*। असंयमवान्। *प्रश्न० ३०*।

असंजलं– जम्बूद्वीपैरवते पञ्चदशतीर्थकरनाम। *सम० १५३*।

असंजोगरया– असंयोगरताः–संयोगः–सम्बन्धः पुत्रकल–त्रमित्रादिजनितस्तत्र रताः संयोगरतास्तद्विपर्ययेणैकत्व-भावनाभाविता असंयोगरताः। *आचा० १८०*।

असंजोगिमे– असंयोगिमः, संयोगिमाद्विपरीत

आदित्यबि-म्बादिः। *उत्त० २१२*।
असञ्झा– असन्ध्या, विगतसन्ध्या। *ओघ० २०२*।
असण्णी– असंज्ञी–अविदितपूर्वमूदातम्। *व्यव० ३७७* आ।
असंतई– असन्तानः, असत्ता वा। *बृह०* । असन्ततिः (त्ता) परिणामविशेषः। *आव० ८४८*।
असंतकं– असत्कम्, असदर्थाभिधानरूपत्वात, द्वितीयाधर्म-द्वारस्य पञ्चमं नाम। *प्रश्न० २६*।
असंतगं– असत्, असद्भतार्थम्। अशान्तं–अनुपशमप्रधानम्। अशोभनं वा। *प्रश्न० १२१*। असत्कं-अविद्यमानार्थम्, असत्यमिति। *प्रश्न० ३६*।
असंतती– भायणवोच्छेदो अभाव इत्यर्थः। *निशी० ११६* आ।
असंतय– अशान्तकः, अनुपशान्तः, असत्–अशोभनम्। *प्रश्न० ४१*।
असंतरणए– असंस्तरणे। *ओघ० १४३*।
असंतासंते– मार्गितस्याप्यलाभः। *बृह० २७२* आ।
असंते– असत्, नाभाववचन शब्दोऽयम्। *आचा० ७४*। अवि-द्यमानः। *उत्त० ६१७*।
असंतोसो– असन्तोषः, परिग्रहस्य त्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९३*।
असंथडाइं– असंकृतानि, बीजादिभिरव्याप्तानि। *उत्त० ४८७*।
असंथडो– छट्ठऽट्ठमादिणा तवेण किलंतो असंथडो, गेलण्णेण वा दुब्बलशरीरो, दीहठाणेण वा पज्जंतं अलभंतो। *निशी० ३१३* अ।
असंथरताणं– अणुघट्टंताणं। *ओघ० ८७*।
असंथरमाणा– असंस्तरमाणाः, अतृप्ताः। *ओघ० ७८*।
असंथरे– असंस्तरताम्। *ओघ० १५४*।
असंथुओ– इय वइरित्तो संणायगो अनायगो वा। *निशी० १२१* आ।
असंदिग्धम्– वाण्यतिशयविशेषः, असंशयकारिता। *सम० ६३*।
असंदिग्धवचनता– परिस्फुटवचनता। *उत्त० ३९*।
असंदिद्धं– असन्दिग्धां, स्पष्टाम्। *दशवै० २१३*। असन्दि–ग्धम्-सूत्रस्य द्वितीयगुणः, सैन्धवशब्दवल्लवणघोटकाद्य-नेकार्थसंशयकारि न भवति। *आव० ३७६*। सन्देहवर्जितम्। *भग० १२१*।

असंदीणो– असन्दीनः, सन्दीनादितरः जलप्लावनात् न क्षयमाप्नोति। *उत्त० २१२*। आदित्यचन्द्रमण्यादिः। *आचा० २४७*। प्रचूरेन्धनतया विवक्षितकालावस्थायि। *आचा० २४७*। कषतापच्छेदनिर्घटितोऽसन्दीनः। *आचा० २४८*। कुतर्क्कार्प्रधृष्यतयाऽसन्दीनः अक्षोभ्यः, प्राणिनां त्राणाया-श्वासभूमिः। *आचा० २४८*।
असंधिए– असन्धितः, असंयोजितः। *उत्त० २१२*।
असंधिया– पोरवज्जिता। *निशी० १६१* अ।
असंनिहिसंचय– असन्निधिसञ्चयः, न विद्यते सन्निधिरूपः सञ्चयो यस्य सः। *जीवा० २७८*।
असंपओगचिंता– कथञ्चिदभावे सत्यसम्प्रयोगचिन्ता। *आव० ५८५*।
असंपओगाणुसरणं– सति वियोगे सम्प्रयोगानुस्मणम्–चिन्त-नम्। *आव० ५८४*।
असंपग्गहिया– असंप्रग्रहिता–संप्रग्रहरहितता। *व्यव० ३९१* अ।
असंपत्त– असम्प्रात्तः। *दशवै० १९४*। असंलग्नम्। *जीवा० १८१*। विशिष्टान् वर्णादीननुपगतः। *जीवा० २३*।
असंप्रग्रहः– आत्मनो जात्याद्युत्सेकरूपग्राहवर्जनमिति भावः। *स्था० ४२३*।
असंप्रग्रहता– असम्प्रग्रहः, समन्तात्प्रकर्षेण जात्यादिप्रकृष्टता-लक्षणेन ग्रहणम्–आत्मनोऽवधारणं सम्प्रग्रहस्तदभावः। जात्याद्यनुत्सिक्ततेति। *उत्त०३९*।
असंफुरो– असंवृतः। *बृह० ३* आ, *बृह० २२४* आ। सङ्कुचितपादो, ग्लानः। *बृह० २२९* अ।
असंबद्धं– असम्बद्धम्, स्वशरीरात्पृथग्भूतम्। *जीवा० १२०*।
असंभंते– असम्भ्रान्तम्, असम्भ्रान्तज्ञानः। *भग० १४०*।
असंभवंता– असम्भवन्तः, ते गौरवत्रिकान्यतरदोषाज्ज्ञानादिके मोक्षमार्गे न सम्यग्भवन्तः–नोपदेशे वर्त्तमानाः। *आचा० २५०*।
असंभासो– असम्भाष्यः। *आव० २२१*।
असंभम– असम्भ्रमः, न भयं कर्त्तव्यम्। *ओघ० ५२*।
असंमत्तं– असम्यक्त्वम्, द्वाविंशतितमः परीषहः। *आव० ६५७*।
असंलोए– असंलोके, न विद्यते संलोको–दूरस्थितस्यापि स्वपक्षादेरालोको यस्मिंस्तत्। *उत्त० ५१८*। *आचा० ३३५*।
असंववहारिए– असांव्यवहारिकः, अनादिकालादारभ्य

निगोदावस्थामुपगता एवावतिष्ठन्ते ते व्यवहारपथातीतत्वात्। *प्रज्ञा० ३८०*।

असंविग्गा– पासत्थोसण्णो कुसीलो संसत्तो अहछंदो। *निशी० ३३* अ।

असंविभागी– संविभजति–गुरुग्लानबालादिभ्य उचितमश-नादि यच्छतीत्येवंशीलः संविभागी, न तथा य आत्मपो-षकत्वेनैव सः। *उत्त० ४३४*। आचार्यग्लानादीनामेषणा-गुणविशुद्धिलब्धं सन्न विभजतेऽसौ। *प्रश्न० १२५*।

असंवुडबउसो– असंवृतबकुशः, यो मूलगुणादिष्वसंवृतः सन् करोति, बकुशस्य चतुर्थो भेदः। *उत्त० २५६*। *भग० ८९०*। प्रकटकारी। *स्था० ३३७*।

असंवुडे– असंवृतः, प्रमत्तः। *भग० ३१५*।

असंशुद्धम्– सङ्कीर्णम्। *आव० ७६०*।

असंसट्ठा– दायगो असंसट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं दोतित्ति। *निशी० १२* अ। असंसृष्टा–अक्खरडिय। *स्था० ३८६*।

असंसारसमावण्णा– असंसारसमापन्नाः, मुक्ताः। *प्रज्ञा० १८*।

असंसारो– असंसारः, संसारप्रतिपक्षभूतो मोक्षः। *जीवा० ८*। न संसारोऽसंसारः, मोक्षः। *प्रज्ञा० १८*।

असंहनन– असंघयण, आदिमानां त्रयाणां संहनननानाम-न्यतमेनापि संहननेन विकलः। *व्यव० ११४* अ।

अस– अशनरूपाणि। *व्यव० १२९* आ।

असइं– असकृद्, अनेकधा। *उत्त० ३१३*।

असइ– अशतिः, अवङ्मुखहस्ततलरुपा मुष्टिः *जम्बू० २४४*।

असई– असती। *ओघ० १४६*। संस्तरणाभावे। *बृह० १९३* आ।

असईपोसणया– असतीपोषणता, असतीः पोषयति। *आव० ८२९*।

असक्कओ– असंस्कृतः, न विद्यते संस्कृतं–संस्कारो यस्य सः। असत्कृतः–अविद्यमानसत्कारः। *प्रश्न० ४१*।

असक्कयमसक्कय– असंस्कृतासक्कृतः, अविद्यमानसं–स्कारसत्कारः। न विद्यते संस्कृतं–संस्कारो यस्य सोऽसं-स्कृतः, असत्कृतः–अविद्यमानसत्कारः। *प्रश्न० ४१*।

असगडतातो– ज्ञानासहनः। (*मरण०*)

असगडपिया– अशकटपिता, अशकटायाः पिता। *उत्त० १३०*। नामविशेषः। *व्यव० १८* अ। *निशी० १५*।

असगडा– अशकटा। *उत्त० १२९, १३०*। एतन्नाम्नी आभीरपुत्री। *दशवै० १०५*।

असगडाताए– अशकटापिता। *व्यव० १८* अ।

असच्चसंघत्तणं– असत्यसन्धत्वम्, असत्यं–अलीकं सन्द-धाति अच्छिन्नं करोतीति, तद्भावः। द्वितीयाधर्मद्वारस्य षड्विंशतितमं नाम। *प्रश्न० २६*।

असच्चो– असत्यः, सद्भ्योऽहितः। *प्रश्न० ३०*।

असज्झं(ब्भं)– ग्राम्यवचनं, कर्कशं, कटुकं, निष्ठुरं, जकारा-दिकं वा। *निशी० ८०* आ।

असज्झाइयं– अस्वाध्यायिकम्, अशोभन आध्याय एव, रूधिरादिकारणे कार्योपचारात्। *आव० ७३१*।

असढ– शठभावरहितः। *ओघ० २२०*।

असढकारणो– 'सढ' च्छादने, जो अप्पाणं मायाए ठाति–असढो होऊणं करणं करीत। *निशी० १४९* अ।

असढत्तणं– अशठत्वम्। *आव० ५२*।

असण– अशनम्, घृतपूर्णादि। *आव० ८११*। मण्डकौदनादि, आशु–शीघ्रं क्षुधां–बुभुक्षां शमयतीति। *आव० ८५०*। बीजकः। *आव० १८६*। अश्यत इत्यशनम्, ओदनादि। *दशवै० १४१*। अश्यते–भुज्यत इति अशेषाहाराभिधानम्। *उत्त० ६००*।

असणवण– अशनवनम्, बीजवनम्। *आव० १८६*। वनविशेषः। *भग० ३६*।

असणि– अशनिः, वज्रम्। *दशवै० १६४*। आकाशे पतन्नग्निमयः कणः। *जीवा० २९*। *प्रज्ञा० २९*। वइरोयणिंदस्य अग्गम-हिसी। *भग० ५०४*। *स्था० २०४*।

असणिमेहा– अशनिमेघाः, करकादिनिपातवन्तः, पर्वतादि- दारणसमर्थजलत्वेन वज्रमेघाः। *जम्बू० १६८*। करका-दिनिपातवन्तः पर्वतादिदारणसमर्थजलत्वेन वा वज्रमेघाः। *भग० ३०६*।

असणे– अशनं, वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३१*। बीयकः। *उत्त० ६५३*।

असण्णातय– असज्ञातीय। आ० ८४६।

असतिं– असकृत्, अनेकवारम्। *जीवा० १२८*।

असत्थ– अशस्त्रम्, सप्तदशभेदः संयमः। *आचा० ५३*।

असत्थस्स– अशस्त्रस्य, निरवद्यानुष्ठानरूपस्य

संयमस्य। *आचा० १५६*।

असद्– अविद्यमानम्। *उत्त० ३४७*।

असद्दहंतो– अश्रद्धानः, अश्रद्दधानः। *आव० १८१*।

असद्दहणं– अश्रद्धानम्। *आव० ५७३*।

असद्धुतै – साधोः कर्त्तृमयुक्तैः। *आचा० २४२*।

असनिरूपेण– ईतिरूपो हि पतङ्गादेरापात इति। *दशवै० १६४*।

असनो– अशनः, बीयकः। *आचा० ४११*।

असन्निआउए– असंज्यायुः, असञ्ज्ञी सन् परभवयोग्यं बद्धमायुः। *भग० ५१*।

असन्निभूए– असञ्ज्ञीमूतिः असञ्ज्ञिम्य उत्पन्नः। *प्रज्ञा० ५५८*।

असन्निभूया- असञ्ज्ञीभूता, असञ्ज्ञिनां या जीयते सा। *प्रज्ञा० ३३९*।

असन्नी– असञ्ज्ञी, मिथ्यादृष्टिरमनस्को वा। *प्रज्ञा० ३३९*। यथोक्तमनोविज्ञानविकलः। *प्रज्ञा० ५३३, ४०७*।

असबलायारे– अशबलो यस्य सितासितवर्णोपेतबलीवर्द इव कर्बुर आचारो–विनयशिक्षाभाषागोचरादिकः। *व्यव० २३५ अ*।

असबलो– अशबलः, एकान्तशुद्धः। *उत्त० २५७*।

असब्भं– असभ्यम्, अनुचितं जकारमकारादि। *आव० ५८८*।

असब्भावं– असद्भावम्, अविद्यमानाः सन्तः–परमार्थसन्तो भाव–जीवादयोऽभिधेयभूता यस्मिन् तत्। *उत्त० १५१*।

असब्भावगिहंतरं– गृहस्य पार्श्वतः पुरोहडेऽङ्गणे मध्ये वा। *बृह० २३ आ*।

असब्भावठवणा– एक एवाक्षः पिण्डकल्पनया बुद्ध्या कल्प्यते तत्। *ओघ० १२९*। असद्भावस्थापना, असद्भावकल्पना। *जीवा० १२२*।

असब्भावपट्ठवणा– असद्भावप्रस्थापना। *आव० १५१*।

असब्भावभावणा– असद्भावभावना। *उत्त० १६५, २२३*।

असब्भावुब्भावणा– असद्भावोद्भावना। *उत्त० १५७*। *आव० ३१४*।

असब्भावो– असद्भावः। *आव० ३२०*।

असब्भूए– असद्भुतम् , अभूतोद्भावनरूपमशोभनरूपं वा। *भग० २३२*।

असब्भूय– असद्भुतम् , अनृतम्, *आव० ५८८*।

असभ्यम्– अश्लीलम्। *आव० ८३४*। खरपरुषादि। *उत्त० ३४७*।

असमंजसं– अननुकुलम्। *उत्त० २२६*।

असमओ– असमयः, असम्यगाचारः, द्वितीयाधर्मद्वारस्य पञ्चविंशतितमं नाम। *प्रश्न० २६*।

असमणपाउग्गो– अश्रमणप्रायोग्यः। *आव० ७७८*।

असमणुन्न– असमनुज्ञः, आचाराङ्गेऽष्टभाध्ययनस्य प्रथमोद्दे-शकः। *आचा० २६०*। असमनोज्ञाः, असाम्भोगिकाः। *ओघ० ५४*।

असमर्था– अतिभारेण न शक्नुवन्ति फलानि धारयितुम्। *आचा० ३९१*।

असमाणो– असमानः, न विद्यते समानोऽस्य गृहिष्वाश्रया-मूर्च्छितत्वेनान्ययतीर्थिकेषु वाऽनियतविहारादिनेति, असदृशः समानो वा साहङ्कारो न तथेति। *उत्त० १०७*।

असमारभमाणस्य– असमारभमाणस्य, सङ्घट्टादीनामविषयी-कुर्वतः। *स्था० ३२४*।

असमासदोसो– असमासदोषः, समासव्यत्ययः, सूत्रदोषवि-शेषः। *आव० ३७४*।

असमाहडा– असमाहृता, अनङ्गीकृता। *सूत्र० ३१४*।

असमाहडाए– अशुद्धया लेश्यया–उद् गमादिदोषदुष्टमिदतित्येवं चित्तविप्लुत्या। *आचा० ३३२*।

असमाहि– असमाधिः, अस्वास्थ्यनिबन्धना कायादिचेष्टा। *आव० ४९९*। समाधिः–समाधानं–ज्ञानादिषु चित्तैकाग्र्य, न समाधिः। *उत्त० ६१४*। चित्तोद्वेगरूपम्। *उत्त० ५५१*।

असमाहिकरो– असमाधिकरः, अस्वास्थ्यनिबद्धनकरः। *आव० ४९९*।

असमाहिठाणा– असमाधिस्थानानि, न चित्तस्वास्थ्यस्या-श्रयाः। *प्रश्न० १४४*। *सम० ३७*।

असमिक्खियप्पलावी– बुद्धीए अणूहियं पुव्वावरं इहपरलो-यगुणद्दोसं वा जो सहसा भणइ। *निशी० ८० आ*। असमीक्षितप्रलापी, अपर्यालोचितानर्थकवादी। *प्रश्न० ३६*।

असमीक्ष्य– अनालोच्य। *उत्त॰ ३४७*।
असमोहएणं– अनुपयुक्तेनात्मना। *भग॰ २८९*।
असमोहयावि– दण्डादुपरता असमुद्घाता वा। *भग॰ ७६४*।
असम्मोहे– असम्मोहः, देवादिकृतमायाजनितस्य सूक्ष्म–पदार्थविषयस्य च सम्मोहस्यमूढतायानिषेधात्। *स्था॰ १९२*।
असरण– अशरणः, शरणरहितः, अर्थप्रापकाभावात्। *प्रश्न॰ ११*। अर्थकारकविरहितः। *प्रश्न॰ १९*। गृहं नात्र शरणमस्ती-त्यशरणः संयमः। *आचा॰ ३०३*। शरणमनालम्बमानोऽदीन-मनस्कः। *आचा॰ ३०६*।
असहीण– असत्। *बृह॰ १८७ अ*। अस्वाधीनः, परायत्तः। *आचा॰ १५२*।
असहु– सुकुमारो राजपुत्रादिप्रव्रजितः। *स्था॰ १३८*। अशक्तिष्टः। *निशी॰ ३६० अ*। असहिष्णुः। *ओघ॰ १४३*। असमर्थः–राजपुत्रादिः। *ओघ॰ १३८*।
असहू– असमर्थः–क्षुत्पीडितः। *ओघ॰ ४४*। राजादिदीक्षितः। *बृह॰ २२४ अ*। रायाजुवराया सेट्ठि अमच्चपुरोहिया य एते असहू। *निशी॰ १०१ अ*। भिक्षावेलां प्रतिपाल-यितुमशक्तः। *ओघ॰ ८६*। असहिष्णुः। *आव॰ ८५८*। असमर्थः। *ओघ॰ १९५*।
असांव्यवहारिक– छेकः। *आव॰ ५२७*।
असाए– असातः, असातोदयकलितः। *जीवा॰ १३०*।
असाडभूई– आषाढभूतिः, मायापिण्डोदाहरणे धर्मरूचिशिष्यः। *पिण्ड॰ १३७*।
असाढए– तृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।
असाढा– अषाढा, पूर्वोत्तराषाढानक्षत्रविशेषः। आव *१२०*।
असाधू– असाधवः, असंयताः। *स्था॰ ३१९*।
असामन्नं– असामान्यम्, अनाचीर्णपूर्वम्। *सूर्य॰ २३८*।
आसारजरढा– अकालवृद्धा। *ओघ॰ २१८*।
असारणा– अवगेषणा। *बृह॰ १५६ अ*।
असारवणा– अगवेसणा। *निशी॰ १३६ अ*।
असारहिए– असारथिकः सारथिरहितः। *भग॰ ३२२*।
असारिए– असागारिके। *निशी॰ ३१ आ*।
असावज्जं– असावद्यम्, आयतनस्य प्रथमः पर्यायः। *ओघ॰ २२२*।
असासए– अशाश्र्वतम्, प्रतिक्षणमावीचीमरणेन मरणम्। *आचा॰ ६६*। क्षणनश्र्वरत्वम्। *भग॰ ४६९*।
असासयं– अशाश्र्वतम्, प्रतिक्षणं विशरारुत्वम्–अनित्यम्। *प्रश्न॰ ९६*।
असाहुया– असाधुता, द्रोहस्वभावता। *उत्त॰ ११४*।
असाहू– असाधुः, अपगतभावसाधुत्वः। *उत्त॰ ५८*।
असि– असिः, खड्ग। *जीवा॰ ११७*। *भग॰ १८२*। *प्रज्ञा॰ ९७*। तलवारः। *आव॰ ५८८, ४८७, ३६०*। खड्गाभ्यासम्। *प्रश्न॰ ९७*। खड्गः–करवालः। *भग॰ १९१*। शस्त्रविशेषः। *आव॰ ३६०*।
असिअं– असितम्, कृष्णमशुभं च संसारानुबन्धित्वात्। *आव॰ ४३९*।
असिअएणं– दात्रेण। *भग॰ ६५०*।
असिए– असितः–अबद्धः–तैः सार्धं संगमकुर्वत् भिक्षुः। *आचा॰ ४३०*।
असिकच्छप– अस्थिकच्छपः, कच्छपविशेषः। *सम॰ १३५*।
असिक्खग– अशिक्षकः, चिरप्रव्रजितः। *दशवै॰ ३९*।
असिखेडगं– असिखेटकम्, असिनासहफलकम्। *प्रश्न॰ २१*।
असिचम्मपायं– असिचर्मपात्रम्–स्फुरकः, अथवा असिः–खड्गश्र्चर्मपात्रं च – स्फुरकः, खड्गकोशको वा। *भग॰ १९१*।
असिचम्मपायहत्थकिच्चगए– असिचर्मपात्रहस्तकृत्वा कृतः, असिचर्मपात्रं हस्ते यस्य स तथा कृत्यं–सङ्घादिप्रयोजनं गतः– आश्रितः कृत्यगतस्ततः कर्मधारयः, अथवाऽसिच-र्मपात्रं कृत्वा हस्ते कृतं यैनासौ असिचर्मपात्रहस्तकृत्वाकृतः, प्राकृत्वाच्चैवं समासः, अथवाऽसिचर्मपात्रस्य हस्तकृत्यां–हस्तकरणं गतः–प्राप्तो यः स तथा। *भग॰ १९१*।
असिट्ठो– अशिष्टः, अप्रतिपादितः। *प्रश्न॰ ११*। अशिष्टः। *आव॰ २१८*।
असिणाइ– अन्ये श्रमणादयो येऽमुमग्रपिण्डमशितवन्तः। *आचा॰ ३३७*।
असिणाणए– अस्नानतया। *आचा॰ ३६४*।
असिता– गृहवासविमुक्ता। *आचा॰ २२२*।
असिद्ध– न सिद्धः, हेतुदोषविशेषः। *स्था॰ ४९३*। संसारी। *जीवा॰ ४३६*।
असिपंजरं– असिपञ्जरम्, शक्तिपञ्जरम्। *प्रश्न॰११५*।

असिपत्त– असिपत्रं, असीनां पत्रम्। *विपा० ७१*। खड्गपत्रम्। *जीवा० १०६*। असिः–खड्गःस एव पत्रम्। *स्था० २७३*। असयः-खड्गास्तद्वद्भेदकतया पत्राणि–पर्णानियस्मिंतत्। *उत्त० ४६०*। *प्रज्ञा० ८०*। परमाधार्मिकेषु नवमः। *उत्त० ६१४*। नवमः। परमाधार्मिकः। *आव० ६५०*। *सूत्र० १२४*। *सम० २९*।

असिपुत्रिकः । *उत्त० ४५*।

असिय– असितः, कृष्णः। *प्रज्ञा० ९१*।

असियअं– दात्रम्। *आव० २९५*।

असियग– असियगम्, दात्रम्। *आचा० ६१*।

असिरयणं– असिरत्नम्, चक्रवर्त्तेरेकेन्द्रियपञ्चमरत्नम्। *जम्बू० २३८*। *स्था० ३९८*।

असिलट्ठी– असियष्टिः, खड्गलता। *विपा० ५६*। असिः–खड्गः स एव यष्टिः–दण्डोऽसियष्टिः, अथवा असिश्च यष्टिश्च। *जम्बू० २६४*।

असिलायं– विस्वरम्। *बृह० २५* आ।

असिलिट्ठं– अश्लिष्टम्। *आव० ९९*।

असिलोगभते– अश्लोकभयम्, अकीर्त्तिभयम्। *स्था० ३८९*। अश्लाघाभयम्। *आव० ४७२*।

असिलोगो– अश्लाघा, अयशः। *आव० ६४६*।

असिव– अशिवम्, व्यन्तरकृतं व्यसनम्। *आव० ६२६*। उद्दा-इयाए अभिद्दुतं। नि० *९७* अ। *निशी० ७५* अ। व्यन्तरकृत उपद्रवः। *बृह० २३१* अ। देवतादिजनितो ज्वराद्युपद्रवः। *ओघ० १३, १४*।

असिवाइखेत्तं– अशिवादिक्षेत्रम्, अशिवादिप्रधानं क्षेत्रम्, आदिशब्दादूनोदरताराजद्विष्टादिपरिग्रहः। *दशवै० ३९*।

असिवुवसमणी– अशिवोपशमनी कृष्णस्य चतुर्थी भेरी। *आव० ९७*।

असिवोवसमणी– अशिवोपशमनी, कृष्यस्य चतुर्थी भेरी, षण्मासान् सर्वे रोगोपशमनी। *बृह० ५६* अ।

असी– असिः, अस्युपलक्षितः सेवकपुरुषः। *जीवा० २७९*। हीरो। *निशी० १४१* अ। खड्गः, यमुपजीव्य जनः सुखवृत्तिको भवति, यद्वा साहचर्यलक्षणया असिशब्देन अत्र अस्युपलक्षिताः पुरुषा गृहयन्ते। *जम्बू० १२२*।

असील– अशीलः, अविद्यमानशीलः, सर्वथा विनष्टचारित्र-धर्मः। *उत्त० ३४५*। अशीलाः–दुःशीलाः। *स्था० १५३*।

असीलया– अशीलता चारित्रवर्जितत्वात्। अब्रह्मणः सप्तदशं नाम। *प्रश्न० ६६*।

असुआ– असूया, अव्याजम्, ईर्ष्या। *दशवै० २४३*।

असुइ– अशुचिः अश्रुतिर्वा। *प्रश्न० ६३*। स्नानब्रह्मचर्यादि-वर्जितत्वात्। अशुचिः, शास्त्रवर्जितो वा अश्रुतिः। *भग० ३०८*। स्नानब्रह्मचर्यादिवर्जिताः, अश्रुतयः, शास्त्रवर्जिताः। *जम्बू० १७०*। विगन्धं शरीरमलादि। *जीवा० २८२*।

असुति– अशुचीति, अमेध्यानि मूत्रपुरीषाणि। *स्था० ४७६*।

असुद्ध– अशुद्धम्, आधाकर्मादिः। *ओघ० १७७*।

असुन्नकाल- अशून्यकालः नारकभवानुगसंसारावस्थान-कालस्य द्वितीयभेदः। *भग० ४७*।

असुभ– अशुभकार्ये मृतकस्थापनादौ। *व्यव० १३९* अ।

असुभजोग– अशुभयोगः, अनुपयुक्ततया प्रत्युप्रेक्षादिकरणम्। *भग० ३२*।

असुभणाम– अशुभनाम, यदुदयवशात् नाभेरधस्तनाः पादा-दयोऽवयवा अशुभा भवन्ति तत्। *प्रज्ञा० ४७४*।

असुभत्ता– अशुभता, न शुभता। *प्रज्ञा० ५०४*। अमङ्गल्यता। *भग० २४३*।

असुभाणुप्पेहा– अशुभानुप्रेक्षा, अशुभत्वं संसारस्यानुप्रेक्षणं–अनुस्मरणम्। *स्था० १८८*।

असुभाते– असुखाय–दुःखाय। *स्था० १४९*। अशुभाय, अपुण्यबन्धाय असुखाय वा। *स्था० २९२*। पापाय, असुखाय वा–दुःखाय। *स्था० ३५८*।

असुयंगं– अश्रुताङ्गम्, नोश्रुताङ्गम्। *उत्त० १४४*।

असुय– अश्रुतं परवचनद्वारेण। *भग० २००, १९७*।

असुर– रौद्रकर्मचारी। *उत्त० २७६*।

असुरकुमार– असुरकुमाराः, देवविशेषः। *भग० १९७*। असुराश्च ते नवयौवनतया कुमारा इव कुमाराश्चेत्यसुरकु-माराः। *स्था० २८*। भवनपतिभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ३९*।

असुरकुमारीओ– असुरकुमार्यः, देवीविशेषाः। *भग० १९७*।

असुरदारे– सिद्धायतनस्य द्वितीयं द्वारम्। *स्था० २३०*।

असुरसुरं– असुरसुरम्, अनुकरणशब्दोऽयम्। *भग० २९४*। सरडसरडं अकरिंतो। *ओघ० १८७*। एवंभूतशब्दरहितम्। *प्रश्न० ११२*।

असुरा– असुराः, न सुरा असुराः, भवनपतिव्यन्तराः। *स्था० २२*। भवनपतिविशेषः, भवनपतिव्यन्तरा वा। *स्था० १०४*। असुरकुमाराः। *भग० १३५*। भवनपतिव्यन्तरलक्षणः। *स्था० ४६६*।

असुरो– असुरः, आसुरभावान्वितत्वाद्, यक्षः। *उत्त० ३६६*। भवनवासी। *बृह० २६४* अ।

असुह– अशुभम्, अशुभस्वभावम्। *भग० ७२*। अशुभः–अतीवासातरूपः।

असुहदुक्खभागी– असुखदुःखभागी, दुःखानुबन्धिदुःखभागी। *भग० ३०८*।

असुहया– अशुभदा, असुखदा। *आव० २३६*।

असुहिय– असुखितः, अविद्यमानसुहृद् वा। *प्रश्न० ४१*।

असुइअ– असूचितम्, व्यञ्जनादिरहितम्। *दशवै० १८१*।

असूचया– साक्षात्। *स्था० ३०४*।

असूयपुत्तो– असूयपुत्रः। *आव० २११*।

असूया– अप्पणो दोसं भासति ण परस्स। *निशी० २७८* अ। आतगता। *निशी० २७८* अ।

असूचा– स्फुटमेव परदोषोद्घट्टनम्। *बृह० १२८* अ।

असेयं– मुखं। *निशी० ८८* आ।

असोंडो– अमज्जपाणो। *निशी० १४४* अ।

असोअ– अशोकः, सुप्रभबलदेवपूर्वभवनाम। *आव० १६३*। अरुणद्वीपे महर्द्धिको देवविशेषः। *जीवा० ३६७*। द्विसप्तति-तमग्रहः। *जम्बू० ५३५*। वृक्षविशेषः। *जीवा० २२२*। किन्नरव्यंतराणां चैत्यवृक्षः। *स्था० ४४२*। अशोकनामदेवः। *जम्बू० ३२०*। लताविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*। बिन्दुसारपुत्र। *बृह० ४७* अ। वृक्षविशेषः। म *गच्छा० ८०३*। एकास्थिकवृक्ष-विशेषः। *प्रज्ञा० ३१*। *स्था० ७९*। मल्लिनाथस्य चैत्यवृक्षः। *सम० १५२*। विजयपुरस्य नन्दनवनोध्याने यक्षः। *विपा० ९५*। बिंदुसारपुत्तो। *निशी० २४३* अ।

असोगचंदो– अशोकचन्द्रः, योगसङ्ग्रहेषु शिक्षायां दृष्टान्तः। *आव० ३७९*।

असोगदत्तो– अशोकदतः, मायोदाहरणे साकेतपुरे समुद्रदत्त-सागरदत्तपिता। *आव० ३९४*।

असोगललिए– चतुर्थबलदेवपूर्वभवनाम। *सम० १५३*।

असोगवण– अशोकवनम्। *आव० १८६*। पुष्करिण्यां वनम्। *स्था० २३०*। वनखण्डनाम। *जम्बू० ३२०*। *भग० ३७*।

असोगसिरी– पाडलिपुत्ते असोगसिरी राया। *निशी० ४४* आ। *बृह० १५३* आ।

असोगा– अशोका, नलिनविजयराजधानी। *जम्बू० ३५७*। नागकुमारेन्द्रस्याग्रमहिषी। *भग० ५०४*। *स्था० २०४*।

असोच्चा– अश्रुत्वा। *भग० ४२५*। आगमानपेक्षम्। *भग० ४५५*।

असोणिअ– अशोणितम्, रक्तरहितम्। *आव० ७६४*।

असोत्थो– अश्र्वत्थः। *आव० ४१७*।

असोयणया– अशोचनता, दैन्यानुत्पादनेन। *भग० ३५*।

असोयलया– अशोकलता, लताविशेषः। *भग० ३०६*।

असोही– अशोधिः, प्रतिसेवना, स्खलना। *ओघ० २२५*।

अस्तमयनप्रविभक्ति– नवमाट्यभेदः। *जम्बू० ४१६*।

अस्तान्ते– अत्थंतंमि, अस्तमयपर्यन्ते। *उत्त० ४३५*।

अस्ति– अत्थि, प्रदेशः। *स्था० १५, ४१६*।

अस्तिकायः– अत्थिकाय, धर्म्मादिपञ्चविधास्ति कायमाश्रित्य कायः। *आव० ७६७*।

अत्थिकायधम्म- अस्तिकायधर्म अस्तिशब्देन प्रदेशा उच्यन्ते, तेषां कायो–राशिरस्तिकायः स चासौ संज्ञया धर्म्मश्र्चेति, गत्युपष्टम्भलक्षणः धर्मास्तिकायः। *स्था० १५४*। योऽस्तिकायानां धर्मादीनां धर्मोगत्युपष्टम्भादिः। *उत्त० ५६६*।

अस्तिकायाः– अत्थिकाया, अस्तीत्ययं त्रिकालवचनो निपातः, अभूवन् भवन्ति भविष्यन्ति चेति भावना, अतोऽ-स्ति च ते प्रदेशानां कायाश्र्च राशय इति, अस्तिशब्देन प्रदेशाः क्वचिदुच्यते, ततश्र्च तेषां वा काया अस्तिकायाः। *स्था० १९६*। अस्तीनां–प्रदेशानां सङ्घातात्मकत्वात् कायः। *स्था० १५*।

अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वम्– अत्थिनत्थिप्पवातपुव्वं, चतुर्थं पूर्वम्। *स्था० ४८४*। तत्र यद्वस्तु लोकेऽस्ति धर्मास्तिकायादि यच्च नास्ति खरशृङ्गादि तत् प्रवदति, सर्वं वस्तु स्वरूपेणास्ति पररूपेण नास्तीति प्रवदति। *नन्दी० १४१*।

अस्थानस्थापनम्– अठाणठवणं–अयोग्यतास्थापनम्। *ओघ० १३१*।

अट्ठिग- अस्थिका कपालिकापर्यायः। *व्यव० २०६* अ।

अस्थितकल्पिकः– साधुभेदविशेषः। *भग० ४*।

अट्ठिमिंजा- अस्थिमिंजा अस्थिमध्यरसः। *स्था० १७०*।

अट्ठिमिंजाणुसारी– अस्थिमिंजानुसारि। *स्था० ३७५*।

अथिरं- अस्थिरम् जीर्णम्। *आचा० ३९६*।

अथिरणाम- अस्थिरणाम यदुदयवशाज्जिह्वादीनामवयवा-नामस्थिरता भवति तत्। *प्रज्ञा० ४७४*।

अणिह- अस्निहः स्निह्यते–श्लिष्यतेऽष्टप्रकारेण कर्म्मणेति स्निहः, न स्निहोऽस्निहः, यदि वा स्निह्यतीति स्निहो राग-वान् यो न तथा सोऽस्निहः, उपलक्षणार्थत्वाच्चास्य रागद्वे-षरहित इत्यर्थः। *आचा० १९१*। स्नेहरहितः। *आचा० २१०*। स्निह्यतीति स्निहो, न स्निहोऽस्निहः–रागद्वेषर-हितत्वात् अप्रतिबद्धः। *आचा० २५८*।

अस्पृशद्गति– समयप्रदेशान्तरमस्पृशती। *आव० ४४१*।

अफुडिआ- अस्फुटितम् सर्वविराधनापरित्यागः। *दशवै० १९६*।

अस्संजए– असंयतः–गृहस्थः, स च श्रावकः प्रकृतिभद्रको वा। *आचा० ३२९*। असंयताः–असंयमवन्तः, आरम्भपरि-ग्रहप्रसक्ताः, अब्रह्मचारिणः। *स्था० ५२४*।

अस्संजतो– गिहत्थो। *निशी० ३०आ*।

अस्संजमो– असंयमः, प्राणातिपातादिलक्षणः। *आव० ५१६*।

अस्संपडियाए– न विद्यते स्वं–द्रव्यमस्य सोऽयमस्वो निर्ग्रन्थ इत्यर्थः, तत्प्रतिज्ञया। *आचा० ३२५*।

अस्सकण्णी– अश्र्वकर्णी, वनस्पतिविशेषः। *आचा० ५७*। साधारणवनस्पतिकायिकभेदः। *जीवा० २७*।

अस्सकन्नि– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा० ३४*।

अस्सकन्नी– अनन्तकायभेदः। *भग० ३००*। *भग० ८०४*। कन्दविशेषः। *उत्त० ६९१*।

अस्सतरो– अश्र्वतरः, खरतरः, एकखुरश्र्चतुष्पदः। *जीवा० ३८*। एकखुरचतुष्पदः। *प्रज्ञा० ४५*।

अस्सपुरं– अश्र्वपुरम्, पुरुषसिंहपुरम्। *आव० १६२*।

अस्सपुरा– अश्र्वपुरी, पक्ष्मविजयराजधानी। *जम्बू० ३५७*।

अस्सरोनिवाए– अप्सरोनिपातः, चप्पुटिका। *जीवा० ३९९*।

अस्सलेसा– नक्षत्रविशेषः। *स्था० ७७*।

अस्सवाणियओ– अश्र्ववणिक्। *आव० २२०*।

अस्सवाहणिया– अश्र्ववाहनिका। *उत्त० २७७*। *आव० ५६*।

अस्ससेणे– अश्र्वसेनः, सनत्कुमारपिता। *आव० १६२*। पार्श्र्वपिता। *आव० १६१*।

अस्सादणसगोत्ते– आस्वादनसगोत्रम्, अश्र्विनीनक्षत्रगोत्रम्। *सूर्य० १५०*।

अस्सामिणी– अस्वामिनी। *आव० २२४*।

अस्सायणे– आश्र्वायनम्, अश्र्विनीगोत्रम्। *जम्बू० ५००*।

अस्सासणे– अष्टाशीतिमहाग्रहे चतुर्दश महाग्रहः। *स्था० ७८*।

अस्सासो– आश्र्वासः, प्राणिनामेव आश्र्वासनम्, अहिंसायाः पञ्चाशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९*।

अस्सिं– अयम्। *स्था० १३८*।

अस्सिंपडियाए– एतत्प्रतिज्ञया एतान् साधून् प्रतिज्ञाय-उद्दिश्य। *आचा० ३६१*।

अस्सिंलोए– अयं लोकः, अयं मनुष्यलोकः। *जीवा० ३४४*।

अस्सिणि– अश्र्विनी, नक्षत्रविशेषः। *सूर्य० १३०*। *स्था० ७७*। मेतार्य जन्मनक्षत्रम्। *आव० २५५*।

अस्सीई– अश्विनी, नक्षत्रविशेषः। *स्था० ४६९*।

अस्सेसा– अश्र्लेषा। *सूर्य० १३०*।

अस्सो– अश्र्वः, घोटकः, एकखुरश्र्चतुष्पदः। *जीवा० ३८*। अर्शः। *जीवा० २८४*। *प्रज्ञा० ४५*।

अहं– अधं–अधस्तात्। *आचा० ६३*। अधः–बुध्ने। *ओघ० १६८*।

अह– एष। *निशी० ११८अ*। *व्यव० १०७आ*। अयं। *निशी० ९२आ*।

अहक्खाओ– यथास्थितः। (*संस्ता०*)

अहक्खायं– अथाख्यातम्, अथ शब्दो यथार्थे, आङ्–अभि-विधौ, याथातथ्येनाभिविधिना वा यत् ख्यातं–कथितं अक-षायं चारित्रम्। *प्रज्ञा० ६८*। यथाख्यातं-यथैवाख्यातम्-अकषायम्। *आव० ७८*। यथैख्यातं-यथाख्यातं प्रसिद्धं सर्वस्मिन् जीवलोके, अकषायचारित्रमिति। *आव० ७९*। अथ शब्दो यथार्थः, आख्यातं–अभिहितं अथाख्यातम्। *स्था० ३२४*।

अहगुरु– येन प्रव्राजितो यस्य पार्श्र्वे अधीतः, रत्नाधिकतरकः। *व्यव० ३९५अ*।

अहछंदो– यथाछन्दः, यथैच्छयैवागमनिरपेक्षं प्रवर्त्तते यः। *आव० ५१८*।

अहछंदिया– अथाछन्दिका, अव्यापारिता, स्वयं प्रवृत्ता। *बृह० २६१* अ।

अहण्णे– अधन्यः। *उत्त० ३२९*।

अहतहं– ययातथं, सूत्रकृताङ्गाद्य श्रुतस्कन्धे त्रयोदशमध्य-यनम्। *आव० ६५१*। सूत्रकृताङ्गस्य त्रयोदशमध्ययनम्। *उत्त० ६१४*।

अहत्ता– अधस्ता, गुरुपरिणामता। *प्रज्ञा० ५०४*। *भग० २३*। जघन्यता। *भग० २५४*।

अहत्थे– यथास्थान्, यथावस्थितान् यथार्थान् वा यथाप्रयो-जनान् भावान् जीवादीन्, यथा द्रव्यान्, पर्यायान्। *स्था० ३५१*।

अहप्पहाण– यथाप्रधानः। *भग० ६७९, ६८३*। यथाप्रधानः, यो यत्र ग्रामादौ प्रधानः। *ओघ० ५९*।

अहमं– अधमम्, जघन्यम्। *आव० ५८५*।

अहमंती– अहं अंता इति अन्तो–जात्यादिप्रकर्षपर्यन्तोऽस्या-स्तीत्यन्तः अहमेव जात्यादिभिरुत्तमतया पर्यन्तवर्ती। *स्था० ४७३*।

अहमिंदा– अहमिन्द्राणि, अहं अहं इत्येवमिन्द्राः। *सम० ४३*।

अहमो- अधमः, मलाविलत्वाञ्जुगुप्सितः। *सूत्र० ८२*। अध-र्मपोषकं दानं अधर्मकारणत्वात्। *स्था० ४९६*।

अहम्म– अधर्म, असंयमः। *दशवै० २७१*। धर्मविपक्षः–पापम्। *उत्त० २७४*। धर्मप्रतिपक्षः। *उत्त० २४८*। अधर्म्मः, भारहरामायणादिपावसुतं *निशी० ४* आ। धर्मविपक्षं विषयासक्तिरूपम्। *उत्त० २८५*।

अहम्मक्खाई– अधर्माख्यायिनः, न धर्ममाख्यान्तीत्ये–वंशीलाः, न धर्मात् ख्यातिर्येषां ते। *भग० ५६०*।

अहम्मखाई– अधर्माख्यायी, अधर्मभाषणशीलः। अधर्मख्या-तिः–अधार्मिकप्रसिद्धिको वा। *विपा० ४८*।

अहम्मजुत्तं– अधर्मयुक्तम्, पापसम्बद्धम्। *दशवै० ५२*।

अहम्मपलज्जणे– अधर्मप्ररञ्जनः, अधर्मे हिंसादौ प्ररज्यते अनुरागवान् भवतीति। *विपा० ४८*।

अहम्माणी– अहंमानी, अहमेव विद्वान् इति मानोऽस्येति। *आव० २४१*।

अहम्माणुए– अधर्मानुगः, अधर्मान्–पापलोकान् अनुगच्छ-तीति। *विपा० ४८*।

अहम्मिट्ठा– अधर्मीष्टा अधर्मिष्ठा वा–धर्म्मः–श्रुतरूप एवेष्टो-वल्लभः पूजितो वा येषां ते धर्मेष्टाः, धर्मिणां वेष्टा धर्मीष्टाः। अतिशयेन वा धर्म्मिणो धर्मिष्ठास्तन्निषेधादधर्मेष्टा अधर्मिष्टा अधर्मिष्ठा वा। *भग० ५६०*।

अहम्मिट्ठे– अर्धमिष्ठः, अतिशयेनाधर्मो–धर्मरहितः। *विपा० ४८*। अधर्मेष्टः अधर्मो–धर्मविपक्षः–पापमिति स इष्टः-अभिलषितोऽस्येति, यद्वा अधर्मगुणयोगादधर्मः, अतिश-येनाधर्मः। *उत्त० २७४*।

अहम्मियं– आधार्मिकं–अधार्मिकाणामिदम्। *प्रश्न० ११०*।

अहय– अहतम्, मलमूषिकादिभिरनुपदूषितं, प्रत्यग्रमिति। *औप० ६६*। अव्यवच्छिन्नम्। *औप० ७४*। अपरिमलितम्। *जीवा० २५४*। तंतुग्गतं। *निशी० २५३* अ। आख्यानकप्रतिबद्धम्, अव्याहतं, नित्यं, नित्यानुबन्धि वा। *जीवा० २१७*। *प्रज्ञा० ८९*। *जम्बू० ६३*। अव्याहतम्। *भग० १५४*। *सूर्य० २६७*। अपरिभुक्तम्। *भग० २५४*।

अहर– अधरम्, अधः–नरकतिर्यक्। *दशवै० २७२*। नरकः। *आव० ५३२*।

अहरगतिगमणं– अधरगतिगमनम्, अधोगतिगमनकारणम्। *प्रज्ञा० ३६८*।

अहराई– अहोरात्रिकी। *आव० ६४८*।

अहवण– अथवा। *बृह० १४* आ। विकल्पप्रदर्शने। *निशी० २९०* अ। विकल्पार्थो निपातः। *बृह० २४६*।

अहवा– अनन्तरम्। *निशी० १८* आ। अयं निपातः। *निशी० १६८* आ।

अहव्वणवेद– अथर्वणवेदः, चतुर्णा वेदानां चतुर्थः वेदः। *भग० ११२*।

अहसंथडं– निष्प्रकम्पं चम्पकपट्टादि। *बृह० ३१* अ।

अहसिता– न सहेतुकमहेतुकं वा हसन्नेवास्ते। *उत्त० ३४५*।

अहसुद्धो– यथाशुद्धः, निर्दोषोपदेशदाता। *बृह० ७१* आ।

अहस्सिरे– अहसनशीलः। *उत्त० ३४५*।

अहस्ससच्चे– अहास्यात्सत्यः, हास्यपरित्यागात्सत्यः, द्वितीयव्रतस्य प्रथमा भावना। *आव० ६५८*।

अहाअत्थं– यथार्थम्–निर्युक्त्यादिव्याख्यानानतिक्रमेणेत्यर्थः *स्था० ३८८*।

अर्थस्यनिर्युक्त्यादेरनतिक्रमेण। *स्था० ५११*।

अहाउअकाल– यथायुष्ककालः, देवाद्यायुष्कलक्षणः। *दशवै० ९*।

अहाउनिव्वत्तिकाले– यथायुर्निर्वृत्तिकालः, यथायेन प्रकारे-णायुषो निर्वृत्तिः–बन्धनं, तथा यः कालः–अवस्थितिरसौ। *भग० ५३३*।

अहाउयं– यथायुष्कम्, यथाबद्धमायुष्कम्। *प्रश्न० १९*। यथा-युष्कम्। *आव० ११५, २५८*। यथायुः–आयुषोऽनतिक्रमेण। *उत्त० १८८*।

अहाकडं– यथकृतम्, गृहस्थेनस्वार्थनिर्वर्त्तितम्। *प्रश्न० १२७*।

अहाकडा– आधाकृता, साधूनाधाय–सम्प्रधार्य कृता। *बृह० ९२अ*।

अहाकप्पं– यथाकल्पम्, प्रतिमाकल्पानतिक्रमेण तत्कल्पव-स्त्वनतिक्रमेण वा। *भग० १२४*। कल्पनीयानतिक्रमेण प्रति-मासमाचारानतिक्रमेण वा। *स्था० ३८८*।

अहाकम्मं– यथाकर्म, बद्धकर्मानतिक्रमेण। *भग० ६५*।

अहागडा– प्राशुकानि, अल्पपरिकर्माणि। *ओघ० ९२*।

अहागडे– यथाकृतम्, आत्मार्थमभिनिर्वर्त्तितम्। *दशवै० ७२*।

अहाचरा– अधश्चराः–बिलवासित्वात्सर्प्पादयः। *आचा० २९१*।

अहाच्चयं– दृष्टिवादे सूत्रभेदः। *सम० १२८*।

अहाच्छंदे– यथाछन्दान्, स्वच्छन्दान्। *ओघ० ५६*।

अहाछंद– यथाछन्दाः–यथा कथश्चिन्नागमपरतन्त्रतया छन्दः अभिप्रायो–बोधः। *भग० ५०२*। यथा स्वाभिप्रेतं तथा प्रज्ञापयन्। *निशी० २३आ*।

अहाजातो– अप्पोवधी। *निशी० १३१आ*।

अहाजायं– रजोहरणमुखवस्त्रिकाचोलपट्टयुतः रचितकरपुटश्च। *बृह० १०आ*।

अहाडं– यथाकृतम्, परिकर्मशून्यं। *बृह० २०२आ*।

अहाणी– असीयणं। *निशी० ५आ*।

अहातच्चं– यथातत्त्वम्, तत्त्वानतिक्रमेण वर्त्तमानम्। *भग० १२८*। सप्तसप्तमिकेत्यभिधानार्थानतिक्रमेणान्वर्थसत्याप-नेनेत्यर्थः। *स्था० ३८८*। शब्दार्थानतिक्रमेण। *स्था० ५३९*।

अहातच्चे– यथातथ्यो, यथातत्त्वो वा, यथा–येन प्रकारेण तथ्यं–सत्यं तत्त्वं वा। *भग० ७०९*।

अहातच्चो– जहेव दिट्ठो तहेव जो भवति सो अहातच्चो भवति। *निशी० ८६अ*।

अहापज्जत्तं– यथापर्याप्तम्। *भग० १३९*।

अहापडिरूवं– यथाप्रतिरूपम्। *आव० १९९*। *भग० ६६१*।

अहापदं– यथापदम्। *आव० ३५२*।

अहापरिग्गहिए– यथाप्रतिगृहीतम्, यथाप्रतिपन्नम्। *भग० १३६*।

अहापरिन्नायं– यावन्मात्रं क्षेत्रमनुजानीषे तावन्मात्रं कालं ताव-न्मात्रं च क्षेत्रमाश्रित्यवयंवसाम इति यावत्। *आचा० ४०३*।

अहापवत्तं– यथाप्रवृत्तम्। *आव० ११५*।

अहाबायरा– यथाबादराः, यथोचितबादरा आहारपुद्गला इत्यर्थः। *भग० १८९*। यथाबादराणि, स्थूलतरस्कन्धान्य-साराणि। *भग० २५१*।

अहाबायरे– यथाबादरम्, स्थूलप्रकारम्। *भग० २५१*। असारम्। *भग० १५४*।

अहाभद्दगो– यथाभद्रकः। *आव० ७३९*।

अहाभद्दे– यथाभद्रः, शासनबहुमानवान्। *बृह० ३०३अ*।

अहाभदो– दाणरुयी। *निशी० ११९आ*। दंसणविरहितो अरहंतेसु तस्सासणे साधू उभयभद्दसीलो। *निशी० ३२५अ*।

अहाभावो– स्वपरिग्रहे धारणम्। *बृह० २४आ*। अधाप्रवृत्ति। *निशी० २५१आ*। प्रतिस्वामितं–प्रति-गृहीतं न तु भुज्यते यत्पात्रादि। *बृह० २८६आ*।

अहामग्गं– यथामार्गम्, ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमे क्षायोपशमि-कभावानतिक्रमेण वा वर्त्तमानम्। *भग० १२४*। मार्गः क्षायो-पशमिको भावस्तदनतिक्रमेण। *स्था० ३८८*।

अहारिणो– मनसोऽनिष्टाः। *आचा० २४२*।

अहारियं– यथारीतम्, रीतं–रीतिः–स्वभावः, तस्यानतिक्रमेण वर्तते तत्, यथास्वभावमित्यर्थः। *भग० २१२*। यथाऽऽर्यम्। *आचा० २७९*। यथाऋजु। *आचा० ३८१*।

अहालंद– मध्यममष्टपौरुषीमानम्। *बृह० ३५आ*। पोरिसी। *निशी० १८अ*। जघन्येन

तरुणीदकार्द्रकरशोषकालः, उत्कृष्टतः पूर्वकोटी। *बृह० ३२* आ। संजोगवर्जिते तृतीयभेदः। *निशी० २३९* अ। यावन्मात्रं कालं भवाननुजानाति। *आचा० ४०३*।

अहालहुस्सए– स्तोकप्रायश्चित्ततदानम्। *बृह० २०९* आ।

अहालहुस्सगाइं– यथालघुस्वकानि, 'यथे'ति यथोचितानि लघुस्वकानि–अमहास्वरूपाणि, महतां हि तेषां नेतुं गोपयितुं वाऽशक्यत्वादिति यथालघुस्वकानि, अथालघूनि–महान्ति-वरिष्ठानीति वृद्धाः। *भग०* ।

अहावच्चा– यथापत्यानि, पुत्रस्थानीयाः। *भग० १९७*।

अहासंथडं– णिप्पकपं पट्टं। *निशी० १७०* अ।

अहासंथडा– अचला। *निशी० १६०* आ।

अहासच्चं– यथासत्यम्, इदं यन्मया कथितं कथ्यमानं च तद्यथासत्यम्, याथातथ्यम्। *आचा० १८३*।

अहासन्निहिआ– यथासन्निहिताः। *आव० १७५*।

अहासम्मं– यथासाम्यम्, समभावानतिक्रमेण वर्त्तमानम्। *भग० १२४*।

अहासुत्तं– यथासूत्रम्, सूत्रानतिक्रमेण। *स्था० ३८८*। सामान्यसूत्रानतिक्रमेण वर्त्तमानम्। *भग० १२४*।

अहासुहुमणियंठो– यथासूक्ष्मनिर्ग्रन्थः, यथासूक्ष्म एतेषु सर्वेषु। *उत्त० २५७*।

अहासुयं– यथाश्रुतं यथासूत्रं वा। *आचा० ३०१*।

अहासुहुमकसायकुसील– कषायकुशीलस्य पञ्चमो भेदः। *भग० ८९०*।

अहासुहुमपुलाए– पुलाकस्य पञ्चमो भेदः। *भग० ८९०*। यथासूक्ष्मपुलाकः, पुलाकस्य पञ्चमो भेदः। पञ्चस्वपि पुला-केषु यः स्तोकं विराधयति सः। *उत्त० २५६*।

अहासुहुमबउस– बकुशस्य पञ्चमो भेदः। *भग० ८९०*। *उत्त० २५६*। यथासूक्ष्मबकुशः, योऽक्ष्णोः पुष्पिकामपनयति, शरीराद्वा धूल्यादिकमपनयति। *उत्त० २५६*।

अहासुहुमे– यथासूक्ष्मान् सारान्। *भग० १५५*।

अहि– सर्पः, पृथिव्याश्रितो जीवविशेषः। *आचा० ५५*। सर्पः। *उत्त० ६९९*। उरःपरिसर्पभेदः। *सम० १३५*। परिसर्पविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*।

अहिंडंतओ– अहिण्डमानः, असहिष्णोर्द्वितीयभेदः। *आव० ८५८*।

अहिंसा– अनुकम्पा। *प्रश्न० १०३*। प्राणातिपातविरतिः। *दशवै० २१*।

अहिअ– अधिकम्, अहितम्, अपथ्यम्। *जम्बू० १६७*।

अहिअगामिणिं– अहितगामिनीम्, उभयलोकविरुद्धाम्। *दशवै० २३५*।

अहिउत्थ– अभ्युषितः। *उत्त० १२०*।

अहिकरणं– अधिकरणम्, गन्त्रीयन्त्रकादिः। *भग० १३५*।

अहिकरणकरो– अधिकरणकरः, योऽन्येषां कलहयति, द्वादशमसमाधिस्थानम्। *आव० ६५३*।

अहिकरणोईरण– अधिकरणोदीरणः, योऽन्येषां यन्त्रादीन्युदी-रयीत, त्रयोदशमसमाधिस्थानम्। *आव० ६५३*।

अहिकिच्च– अधिकृत्य–आश्रित्य। *भग० २४*।

अहिक्खेव– अधिक्षेतः, निन्दाविशेषः। *प्रश्न० ४१*।

अहिगमरुइ– अधिगमरुचिः, विशिष्टं परिज्ञानं तेन रुचिर्य-स्यासौ। *प्रज्ञा० ५८*।

अहिगमास– अधिकमासः। *दशवै० २७०*।

अहिगमो– अधिगमः, विशिष्टं परिज्ञानम्। *प्रज्ञा० ५०*। ज्ञानम्। *आव० ५३०*। अभिगमः–सेवा। *सम० ५३*।

अहिगरणं– अधिकरणम्, कलहः। *सूत्र० ६६*। *बृह० १५२* आ। कूटपाशरूपम्। *भग० ९३*। अधिक्रियते आत्मा नरका-दिषु येन तदधिकरणं–अनुष्ठानं बाह्यं वा वस्तु चक्रमहादि। *आव० ६११*। कलहः यन्त्रादि वा। *आव० ६५४*। ज्योति-षादि। *आव० ६६२*। अनुष्ठानविशेषः, बाह्यं वा वस्तु चक्र-खड्गादि। *भग० १९१*। अनुष्ठानं बाह्यं वा वस्तु। *स्था० ४१*। वास्तूदूखलशिलापुत्रकगोधूमयन्त्रकादि। *आव० ८३१*। राटिः। *ओघ० १८२*।

अहिगरणकिरिया– अधिकरणक्रिया, दुर्गतौ ययाऽधिक्रियन्ते प्राणिनः सा। *प्रश्न० ३७*।

अहिगरणि– अधिकरणिः, सुवर्णकारोपकरणम्। *जम्बू० २२६*।

अहिगरणिए– अधिकरणकरं–कलहकरम्। *आचा० ४२५*।

अहिगरणिया– अधिकरणिकी–अधिक्रियते नरकादिष्वात्मा-ऽनेनेति अधिकरणं–अनुष्ठानविशेषः बाह्यं वा वस्तु चक्रख- ड्गादि, तत्र भवा तेन वा निर्वृत्ता, क्रियाभेदविशेषः। *भग० १८१*। अधिक्रियत आत्मा नरकादिषु येन तदधिकरणम्–अनुष्ठानं बाह्यं

वा वस्तु चक्रमहादि, तेन निर्वृत्ता क्रिया। *आव० ६११*। *सम० १०*।

अहिगरणी– अधिकरणी, यत्र लोहकारा अयोघनेन लोहानि कुट्टयन्ति। *भग० २५१*।

अहिगरणे– अधिकरणसिद्धान्तः। *बृह० ३१* आ।

अहिगारनिउत्तो– अधिकारनियुक्तः। *आव० ७६८*।

अहिगारो– अधिकारः, प्रयोजनं, प्रस्तावः। *आव० २७६*। ओघतः प्रपञ्चप्रस्तावरूपः। *दशवै० २७८*। आ-अध्ययन-परिसमाप्तेर्योऽनुवर्त्तते स। *दशवै० १३*। नियोगः। *प्रश्न० ६६*। प्रयोजनम्। *दशवै० १३५*। *व्यव० ४* अ।

अहिगरिणता– अधिकरणिकी–खड्गादिनिर्वर्त्तनी। *स्था० ३१७*।

अहिछत्ता– अहिच्छत्रा–नगरीविशेषः। *उत्त० ३७९*। पार्श्वना-थस्य धरणेन्द्रमहिमास्थानम्। *आचा० ४१८*। जङ्गलेषु जन-पदेष्वार्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा० ५५*। सङ्गपरिहरणविषये पुरी। *आव० ७२३*।

अहिजुजिय– अभियुज्ज, वशीकृत्य, आश्रिलष्य वा। *भग० १३२*।

अहिज्ज– अधित्य। *उत्त० ३६२*।

अहिज्जिउं– अध्येतुम्, पठितुम्, श्रोतुम्, भावयितुम्। *दशवै० १३८*।

अहिट्ठए– अधिष्ठाता, तपःप्रभृतीनां कर्त्ता। *दशवै० २३८*। अधितिष्ठति यथावत् करोति। *दशवै० २५६*।

अहिट्ठग– अधिष्ठाता, कर्त्ता। *दशवै० २०६*।

अहिट्ठाणं– अधिष्ठानम्, अपानप्रदेशः। *आव० ४१९*।

अहिट्ठाणजुद्धं– अधिष्ठानयुद्धम्। *आव० ९८*।

अहिट्ठित्तए– अधिष्ठातुम्–परिभोक्तुम्। *बृह० २१८* अ।

अहिट्ठित्ता– अधिष्ठाय, आरोहणं कृत्वा। *दशवै० ६१*।

अहिठाणि– अधिष्ठाने, अपानप्रदेशे। *ओघ० ६९*।

अहित– अनुचितविधायी। *बृह० २१४* अ। अपथ्यम्। *उत्त० २७६*।

अहितुंडए– आहितुण्डिकः, गारुडिकः। *दशवै० ३७*।

अहिनंदइ– अभिनन्दति, बहु मन्यते। *आव० ४९०*।

अहिन्नायदंसणे– अभिज्ञातदर्शने–सम्यक्त्वभावनया भावितः। *आचा० ३०४*।

अहिमडे– अहिमृतः, मृताहिदेहः। *जीवा० १०६*।

अहिमन्त्र– मन्त्रसाधनोपायशास्त्राणि। *सम० ४९*।

अहिमर– अभिमरः, अभिमुखमाकार्य मारयति म्रियते वेति। *ओघ० १८*। अभिमुखं परं मारयति यः सः। *प्रश्न० ४६*।

अहिमरका– घातकाः। *बृह० ८२* आ।

अहिमार– अधिभारः, वृक्षविशेषः। *उत्त० १४३*।

अहिमासयम्मि– अधिकमासे। *आव० ५५७*।

अहियं– अधिकं, अहितं वा अधिकं, अपथ्यं वा। *भग० ३०६*। अर्गलम्। *उत्त० ६२३*। अर्गलं, शीघ्रतरम्। *उत्त० ७*। अति-शयेन। *जीवा० २२९*। जीवा *३५५*। अहितम्, अश्रेयः। *आचा० ३८*।

अहियपिच्छणिज्जं– अधिकप्रेक्षणीयम्। *आचा० ४२३*।

अहियाते– अहिताय, अपथ्याय। *स्था० १४९*। अपायाय। *स्था० २९२*। अपथ्याय। *स्था० ३५८*।

अहियासएज्जा– अधिसहेत्, वर्त्तयेत्, पालयेत्। *सूत्र० १६४*।

अहियासणा– अभिसहना, उपसर्गसहनम्। *आव० ६६०*। अतिसहना। *आव० ७९९*।

अहियासेत्तए– अध्यासितुम्। *दशवै० ९३*।

अहियासेमि– अध्यासयामि–वेदनायामवस्थानं करोमि। *स्था० २४७*।

अहियोगो– अभियोगः, बलात्कारः। *बृह० २७* अ।

अहिरिया– अधिराजा, मौलः पृथिवीपतिः। *बृह० ४* अ।

अहिरिक्कं– उत्रासनम्। *व्यव० १४९* अ।

अहिरीमाणा– अह्रीमनसः–अलज्जाकारिणः। *आचा० २४१*।

अहिर्बृध्न– उत्तरभाद्रपदादेवता। *जम्बू० ४९९*।

अहिलाणं– मुखसंयमनम्। *भग० ४८०, जम्बू० २६५*। *औप० ७१*। मुखसंयमनविशेषः। *जम्बू० २३५*।

अहिलिंति– समागच्छन्ति। *बृह० १०८* अ।

अहिलोडिया– गोपालिकाख्यो हिंसकजीवः। *बृह० १९०*।

अहिल्लियाए– अहिन्निका, मैथुने दृष्टान्तः। *प्रश्न० ८९*।

अहिवई– अधिपतिः–आचार्यः। *ओघ० ७४*।

अहिवास– अधिवासः–अवस्थानः। *भग० ४७०*।

अहिवासिऊण– अधिवास्य। *आव० ३६१*।

अहिसंका– अभिशङ्का, तथ्यनिर्णयः। *सूत्र० ३९३*।

अहिसक्कणं– उस्सूरे आगच्छंति। *निशी० १४२* आ। अभिष्वष्कणं–तस्यैव विवक्षितकालस्य संवर्द्धनं, परतः

करणमित्यर्थः। *बृह० २६८* आ।

अहिसरणेहिं– अग्गतो वा सरेति। *निशी० ४९* आ।

अहिसरिया– अभिसृता। *आव० ३७२*।

अहिसलागा– मुकुलि–अहिभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ४६*।

अहिसेया– अभिसेका, गणावच्छेदिनी। *बृह० २६३* अ।

अही– अहिः, सर्प, उरःपरिसर्पविशेषः। *जीवा० ३९*। *प्रज्ञा० ४५*। मुकुलि–अहिभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ४६*। सामान्यतः सर्पः। *जम्बू० १२५*।

अहीणपडिपुन्नपंचिंदियसरीरं– अहीनप्रतिपूर्णपञ्चेन्द्रियशरीरः, प्रतिपूर्णानि स्वकीयस्वकीयप्रमाणतः, प्रतिपुण्यानि वा–पवित्राणि पञ्चेन्द्रियाणि–करणानि यस्मिंस्तत्तथा, अहीनम-ङ्गोपाङ्गप्रमाणतः प्रतिपूर्णपञ्चेन्द्रियं प्रतिपुण्य पञ्चेन्द्रियं वा शरीरं। *स्था० ४५८*।

अहीणपुन्नपंचिंदियशरीरं– अहीनानि स्वरूपतः पूर्णानि सङ्ख्यया, पुण्यानि वा पूतानि। पञ्चेन्द्रियाणि यत्र तत्तथा तदेव-विधं शरीरं यस्य सः। *भग० ५४१*।

अहीणो– अहीनः, प्रकृष्टः, अधीनोवास्वायत्तः। *प्रश्न० १३६*।

अहीनग्रहणं– समग्रहणम्। *व्यव० ८६* आ।

अहीलणिज्जं– अहीलनीयम्, अवज्ञातुमनुचितम्। *उत्त० ३६५*।

अहुणुव्वासिय– अधुना यदुद्वसितम्। *ओघ० ५७*।

अहुणोत्तणो– अधुनातनः। *आव० ४२१*।

अहुणोववन्ने– अधुनोपपन्नः, अचिरोपपन्नः। *स्था० १८७*।

अहुमरेंतो– उपद्रवन्। *आव० २७३*।

अहे– अधः, आकाशः। *सूर्य० ४५*। अथ शब्दार्थे। *बृह० १७९*। आमन्त्रणार्थो निपातः। *भग० ४६०*। अथ–आनन्त-र्यार्थोऽयं शब्दः। *भग० ८३, ८६*। गर्त्तायाम्। *उत्त० २१३*। भूमिलते। *प्रज्ञा० ८०*। अधः। *स्था० १६२*। अथेतिपरि-प्रश्नार्थः। *स्था० ४०६*। अधः–अधस्तात् नीचैः। *भग० २६९*। अथशब्दश्चेहपदत्रयेऽपि त्रयाणामप्याश्रयाणां प्रतिमा-प्रतिपन्नस्य साधोः कल्पनीयतया तुल्यता–प्रतिपादनार्थः। *स्था० १५७*। यथार्थः। *स्था० ३२४*। अथशब्दार्थे। *बृह० १७९* अ। आधाकर्म। *बृह० ८३* अ।

अहेपन्नगद्धरूवो– अधःपन्नगार्द्धरूपः, अधस्तनं यत्पन्नगस्यार्द्धं तस्येव रूपमाकारो यस्य सः, अधःपन्नगार्द्धवदतिसरलो दीर्घश्च। *जीवा० २०६*। अधः–अधस्तनं यत्पन्नगस्यार्द्धं तस्येव रूपम्–आकारो यस्य सः। *जीवा० ३६१*।

अहेऊहिं– अहेतुभिः, क्रियावाद्यादिपरिकल्पितकुहेतुभिः। *उत्त० ४४९*।

अहेवाए– अधोवातः, योऽध उद्गच्छन् वाति वातः। सः। *जीवा० २९*।

अहेविगडे– अधोविकटे–अधः–कुड्यादिरहिते छन्नेऽप्युपरि तदभावेऽपि च। *आचा० ३०९*।

अहेवियडं– पार्श्र्वतोऽपावृतं गृहम्। *बृह० १८१* अ।

अहेसणिज्जे– यथाऽसावुद्गमादिदोषरहित एषणीयो भवति तथाभूतो दुर्लभः। *आचा० ३७६*। यथाऽसौ मूलोत्तरगुण-दोषरहितत्वेनैषणीयो भवति, तथाभूतो दुर्लभ इति। *आचा० ३६८*।

अहेसि– अभूवम्। *आव० १४६*। अभूत्। *उत्त० ४९६*।

अहो– अधः, अर्वाक्। *आव० ८२७*। दीणभावे, विम्हए, आमंतणे य। *दशवै० ९६*। उदगस्रोतोऽनुकूलम्। *निशी० ६३* आ।

अहोकायं– अधःकायः पादलक्षणः। *आव० ५४७*।

अहोत्था– अभूत्। *उत्त० ४७५*।

अहोधारं– अहतधारा वर्षा। *आव० २९१*।

अहोधिय– नियतक्षेत्रविषयोऽवधिस्तद्रुपं ज्ञानदर्शनम्। *स्था० ४७३*।

अहोरत्ता– अहोरात्राः–त्रिंशन्मुहूर्त्तप्रमाणाः। *स्था० ८६*।

अहोरत्ते– अहोरात्रम्। *भग० ८८८*।

अहोराइयाभिक्खुपडिमा– अहोरात्रप्रमाणा एकादश भिक्षु प्रतिमा। *सम० २१*।

अहोलोए– अधोलोकः, तिर्यग्लोकस्याधस्ताल्लोकः। *प्रज्ञा० १४४*।

अहोलोयतिरियलोए– अधोलोकतिर्यग्लोकः, यदधोलोकस्यो-परितनमेकप्रादेशिकमाकाशप्रदेशप्रतरं यच्च तिर्यग्लोकस्य सर्वाधस्तनमेकप्रादेशिकमाकाशप्रदेशप्रतरम्, एतद्वयमपि। *प्रज्ञा० १४४*।

अहोवाए– अधोवातः, अध उद्गच्छन् यो वाति वातः सः। *प्रज्ञा० ३०*।

अहोविहारो– आश्र्चर्यभूतो विहारः। *आचा० १०७*।

अहोवेइया– अधोवेदिका, यत्र जान्वोरधो हस्तौ कृत्वा प्रतिलिख्यते सा। *ओघ० ११०*। जाणू हेट्ठाओ द्वितेसु हत्थेसु पडिलेहेति। *निशी० १८२* अ।

अहोसिरा– अधःशिरसः, अधोमुखाः। *जम्बू० १५४*।

- x - x - x - x -

आ

आंगुल– व्याक्षिप्तः। *निशी० ३४७* अ।

आंटरगमादि– वनस्पतिविशेषः। *निशी० १५७* अ।

आइं– निपातः। *भग० ६७५*। विस्मयतश्र्चर्यन्ते। *स्था० ५२३*। वाक्यालङ्कारे। *भग० १७६*। वाक्यालङ्कारार्थः। *प्रश्र्न० ११७*। अलङ्कारे। *प्रश्र्न० १२६*। वाक्यालङ्कारे, अवधारणे वा निपातः। *उपा० २७*। आदिः–धर्मस्य प्रथमा प्रवृत्तिः। *जीवा० २५५*। गणितप्रक्रियाया आदिः (अंगांकसंख्या-न्यासः)। *सूत्र० ९*। यस्मात्परमस्ति न पूर्वम्। *अनुयो० ५४*। स्वभेदः। *अनुयो० ३४*।

आइंखिणिया– डोम्बी तस्याः–कुलदैवतं घंटीकयक्षोनाम स प्रष्टः सन् कर्णे कथयति, सा च तेन शिष्टं–कथितं सदन्यस्मै कथयति, घंटिय सिड्ढं परिकहेइ। *बृह० २१५* अ।

आइअत्ती– सार्थचिन्तकः। *बृह० २४९* अ।

आइक(ग)रे– आदिकरः, आदौ–प्रथमतः श्रुतधर्मम्–आचा-रादिग्रन्थात्मकं करोति–तदर्थप्रणायकत्वेन प्रणयतीत्येवं-शीलः। *भग० ७*।

आइक्खंति– आख्यान्ति, सामान्यतः कथयन्ति। *भग० ९८*। ईषद् भाषन्ते। *स्था० १३६*। आचक्षते। *आचा० १७८*।

आइक्खगा– आख्यायकाः, शुभाशुभकथकाः। *जम्बू० १४२*। यः शुभाशुभमाख्याति। *प्रश्र्न० १४१*।

आइक्खणं– संहितोच्चारणम्। *बृह० २५* अ।

आइक्खिए– मातंगविद्या यदुपदेशादतीतादि कथयन्ति डोण्ड्यो बधिरा इति लोकप्रतीताः। *स्था० ४५१*।

आइगर– आदिकरः, ऋषभनामा भगवान्। *उत्त० ६२०*।

आइच्च– आदित्यः, अर्चिमालिविमानवासी द्वितीयो लोका-कान्तिकदेवः। *भग० २७१*। आदित्मासो येन कालेनादित्यो राशिं भुंक्ते। *सम० ५६*। आदित्यः। *आव० १३५*। *सूर्य० २९२*।

आइच्चजसाई– आदित्ययशःप्रभृतिः। *नन्दी० २४२*।

आइच्चजसे– आदित्ययशा, भरतचक्रिपुत्रः। *स्था० ४३०*।

आइच्चसंवच्छरे– आदित्यसंवत्सरः, युगभाविसंवत्सरविशेषः। *सूर्य० १६८*। 'पुढविदगाण'मित्यादिलक्षणः संवत्सरविशेषः। *सूर्य० १७१*।

आइज्ज– आदेयः–रम्यः। *प्रश्र्न० ८३*।

आइज्जा– आदेया, दर्शनपथमुपगता, उपादेया सुभगा च। *जीवा० २७१*।

आइड्ढं– विशिष्टम्। *बृह० ६६* अ। आविष्टा–अधिष्ठिता। *स्था० ३२८*।

आइ(य)इढि– आत्मर्द्धिः, आत्मशक्तिः, आत्मलब्धिर्वा। *भग० १०७, ४९२*।

आइणग– चर्ममयं वस्त्रम्, *जम्बू० ३६*। मूषकादिचर्म–निष्पन्नानि। *आचा० ३९४*।

आजिनकं– चर्ममयो वस्त्रविशेषः। *भग० ५४०*।

आइण्णं– आकीर्णम्, समन्तान्निक्षिप्तम्। *भग० १५३*। सम्बाधनं स्त्रीस्पर्शादिदोषाः। *ओघ० ४८*। आचीर्णम्। *निशी० १५७* अ। भावितकुलम्। *बृह० २७०* अ।

आइण्णंतो– प्रोतयन्। *आव० ४२७*।

आइण्णपोग्गलं– जं काकसाणादीहिं अणिवारियविप्पकिण्णं (मांसं) णिज्जति। *निशी० ७२* अ।

आइण्णा– आकुला। *निशी० १८६* अ। साधूण कप्पणिज्जा। *निशी० १८६* अ। संकुला। *आचा० ३३१*।

आइण्णे– आकीर्णः, गुणैर्व्याप्तः। *जीवा० २७०*। जात्यः। *औप० ७१*। खित्तमिव खलियं गुणेहिं जयविजयाईहिं आपूरिओ, अस्सो जातिरेव वा। *दशवै० १६५*।

आइद्ध– आरब्धं। (*मरण०*) आदिग्धः, आलिङ्गितः। *प्रश्र्न० ४१*। अविद्धः, प्रेरितः। *आव० ६०२*।

आइन्नं– आचीर्णम्, आसेवितम्। *आचा० ५*। आयरियपरंप-रएणं वालुंकलाओ आदिण्णं णिम्मीसोवक्खडं आसेवितं तं आइन्नं। *निशी० १५७* आ। आत्मीयात्मीयाऽऽवास-मर्यादानुलंघनेन व्याप्ताः। *भग० ३७*। कल्प्यम्। *पिण्ड० १६५*। आकीर्णम्–राजकुलसङ्खडय्यादि। *दशवै० २८०*।

आइन्नवर– जात्यप्रधानः। *भग० ३२२, ४८१*।

आइन्नसंलिक्खं- स्त्र्यादिचित्राकीर्णं। *आचा० ३८१*।

आइन्ना– आकीर्णानि, गुणवन्ति। *जम्बू० २३२।*
आइन्ने– आकीर्णः, आकीर्यते–व्याप्यते विनयादिभिर्गुणैरिति जात्यादिगुणोपेतं। *उत्त० ३४९।* व्याप्तः। *उत्त० ३४८।*
आइन्नो– आकीर्णः, सङ्कीर्णः, गुणव्याप्तो मनुष्यजनः। *औप० २।* विनीतः। *उत्त० ४८।* आचार्यगुणैराचारश्रुतसंपदादिभि-र्व्याप्तः–परिपूर्णः। *उत्त० ५५०।*
आइमउ– आदिमृदु, प्रथमतः कोमलम्। *अनुयो० १३१।*
आइमूलं– वृक्षादिमूलोत्पत्तावाद्यं कारणम्। *आचा० ८७।*
आइयणं– अदनं, भक्षणम्। *आचा० ७२६। व्यव० १८०अ।* भोजनम्। *बृह० १२६आ।* समुद्देशनम्–भोजनम्। *बृह० ४आ।* आपानम्। *बृह० ३४अ। स्था० ३३१।* भूयः प्रत्यापिबति। *बृह० १८५। आ।*
आइयंति– आददति, गृह्णन्ति, बध्नन्तीत्यर्थः *स्था० ३२०।*
आइयति– आदत्ते। *उत्त० १९८।*
आइलं– आविलम्–गडुलम्। *जीवा० ३७०।*
आइल्लचंदसहिय– उद्दिष्टचन्द्रसहितः। *सूर्य० २८०।*
आइसुए– आदिश्रुतः, सामायिकादिश्रुतः। *बृह० ३८आ।*
आइसुयं– पञ्चमङ्गलम्। *बृह० २४९आ।*
आइस्सइ– आविश्यते–अधिष्ठीयते। *भग० ७४९।*
आई– आदिः, संसारः, धर्मकारणानां वाऽऽदिभूतं शरीरम्। *सूत्र० १६२।* सामीप्यम्, व्यवस्था, प्रकारः, अवयवश्च। *प्रश्न० ७।* निवेशः। *औप० ५।*
आईए– आतीतः, आ–समन्तादतीव इतो–गतोऽनाद्यनन्ते संसारे। *आचा० २८५।*
आईणं– आजिनकम्, चर्ममयं वस्त्रम्। *जीवा० १९२।*
आईणगं– आजिनकम्, चर्ममयं वस्त्रम्। *जीवा० २१०। औप० ११। जम्बू० ५५। जम्बू० १०७।* निरया० १।
आईय– आ–समन्तादतीव इतो–गतोऽनाद्यनन्ते संसारे भ्रम-णम्। *आचा० २८६।*
आईयट्ठे– आ–समन्तादतीव इताः–ज्ञाताः परिच्छिन्ना जीवा-दयोऽर्था येन सोऽयमातीतार्थः आदत्तार्थो वा, यदिवाऽ-तीताः–सामस्त्येनातिक्रान्ता अर्थाः–प्रयोजनानि यस्य स तथा, उपरतव्यापारः। *आचा० २८६।*

आउं– वैद्यकम्। *आव० ६६०।* भवस्थितिहेतवः कर्म्म पुद् गलाः। *आचा० १०२।*
आउंटणं– आकुञ्चनम्, गात्रसङ्कोचनलक्षणम्। *आचा० ५७४।*
आउंटणपसारणं– आकुञ्चनप्रसारणम्। *आव० ८५३।*
आउंटियं– संकोचितम्। *भग० ६३१।*
आउ– आयुः, स्थितिः। *भग० २३६।* उताहो। *बृह० २१०अ।* एति–उपक्रमहेतुभिरनपवर्त्यतया यथास्थित्यैवानु भवनीयतां गच्छतीति। *उत्त० ३३५।* जीवितं। *स्था० १०८।* आयुः, कर्म्मविशेषः। *स्था० २२०।*
आउकाए– अप्कायः, पूर्वसमुद्रः, पश्चिमसमुद्रो वा। *सूर्य० ४७।*
आउक्खएणं– आयुःक्षयेण, आयुःपूर्णीकरणेन। *आचा० ४२१।*
आउखेम– आयुःक्षेम–आयुषः सम्यक् पालनं। *आचा० २९०।* जीवितं। *आचा० २९१।*
आउज्जं– आतोद्यम्, वादित्रं, मृदंगादि। *आव० ५२८।* पटहभेरीवंशवीणाझल्लर्यादीनि। *आचा० ६१।*
आउज्जंगं– आतोद्याङ्गम्, आतोद्यकारणम्। *उत्त० १४३।*
आउज्जिय– आयोगिकः, उपयोगवान्, ज्ञानी। *भग० १४०।*
आउज्जिया– आयोजिका, आ–मर्यादया केवलिदृष्ट्या योजनं–शुभानां योगानां व्यापारणम्। *प्रज्ञा० ६०४।*
आउज्जियाकरणं– आयोजिकाकरणम्। *प्रज्ञा० ६०४।*
आउज्जीकरणं– आवर्जीकरणम्, उदीरणावलिकायां कर्मप्रक्षे-पव्यापाररूपम्। *औप० ११०।* आवर्जितकरणम्। *प्रज्ञा० ६०४।*
आउज्जो– आवर्जः, आत्मानं प्रति मोक्षस्याभिमुखीकरणं आत्मनो मोक्षं प्रत्युपयोजनमिति, अथवा आवर्ज्यते-अभि-मुखीक्रियतेमोक्षोऽनेनेति वा–शुभमनोवाक्कायव्यापारविशेषः। *प्रज्ञा० ६०४।*
आउट्ट– आकुट्टम्, आलजालम्। *उत्त० १४६।* आवर्जितः। *बृह० ३४आ।*
आउट्टइ– आवर्त्तते, प्रवर्त्तते। *भग० २८९।*
आउट्टणं– आकम्पनम्, *बृह० पृ० ८५अ।*
आउट्टणया– आवर्त्तना, आवर्त्तना, आवर्त्तते–ईहातो निवृत्यापायभावं प्रत्यभिमुखो वर्त्तते येन

बोधपरिणामेन सः, तद्भावः, अपायपर्यायः। *नन्दी० १७६*।

आवट्टति– निवर्त्तते। *सूत्र० १९०*। आवर्त्तते–निवर्त्तते तमालोचयतीत्यर्थः। *स्था० १३९*। करोति। *निशी० २५६* अ।

आउट्टा– आराधिता। *बृह० ११२* अ। आवर्जिता। *ओघ० १५९*।

आउट्टामो– प्रवर्त्तामहे। *आचा० ३३१*।

आउट्टावेज्ज– अभिमुखयेत्। *आचा० ३६४*।

आउट्टिआए– आकुट्या–उपेत्य। *सम० ३९*।

आउट्टिज्जमाणं– आकोट्यमानम्, सङ्कोच्यमानम्। *सूत्र० २९८*।

आउट्टि– उपेत्य। *व्यव० १६* आ।

आउट्टिय– ज्ञात्वा। *आव० ७५८*। उत्तमार्थकृतः। आहारः। *निशी० ५७* आ।

आउट्टिया– आउट्टिया नाम आभोगो जानान इत्यर्थः। *निशी० ५९* आ। आवर्जिताः। *बृह० १८६* आ।

आउट्टी– समाधानम्। *बृह० १२३* आ।

आउट्टे– कर्त्तुमभिलषेत्। *आचा० ४१७*। निवर्त्तयेत्। *आचा० १११*। आवर्त्तयेत्–अनुकूलयेत्। *व्यव० २८२* आ। आवृत्तः–व्यवस्थितः। *आचा० २७९*। समन्तात् व्यवस्थितः। *आचा० २७९*।

आउट्टेउं– आवर्ज्य। *बृह० ३४* अ।

आउट्टो– व्यावृत्तः। *उत्त० ३३२*। आवर्जितः। हृष्टः। *उत्त० ३३२*। स्वस्थः। *उत्त० ३५५*। *आव० २२०*। *उत्त० १०८*। आवृत्तः। *आव० ५७८, २९४, ५३६, २८७*। *उत्त०३२४*। आवर्जितः। *आव० ४१२*।

आउडिज्जमाण– 'जुड'बन्धने, इतिवचनाद् 'आजोड्यमा-नेभ्यः' आसम्बध्यमानेभ्यो मुखहस्तदण्डादिना सह शङ्खप-टझल्लर्यादिभ्योवाद्यविशेषेभ्य आकुट्यमानेभ्यो वा। एभ्य एव ये जाताः। शब्दास्ते, आजोड्यमाना आकुट्यमाना एव वोच्यन्ते, अतस्तानाजोडय्यमानाकुट्यमानान् वा शब्दान् श्रृणोति, इह च प्राकृतत्वेन शब्दशब्दस्य नपुंसकनिर्देशः, अथवा आकुट्यमानानि–परस्परेणाभिहन्यमानानि। *भग० २१६*।

आउडेइ– आजुडति, सम्बद्धं करोति, लिखति। *जम्बू० २५०*। आकुट्टयति, ताडयति। *जम्बू० २२४*। आकुट्टयति। *भग० १७३*।

आउत्त– आयुक्तम्, उपयोगपूर्वकम्। *भग० १८४*। सम्यक् प्रवचनमालिन्यादिरक्षणतया। *प्रज्ञा० २६८*। उपयुक्तः। *स्था० ४०९*। प्रयत्नपरो मरणाराधनयुक्तः। उपयुक्तः। *ओघ० २०२*। उपयोगतत्परम्। *ओघ० १७६*। आयुक्तः। *व्यव० २६६* अ।

आउत्तगो– आवर्त्तकः। *उत्त० ३०४*।

आउत्तियं– आयुक्तिकम्। *उत्त० ११९*।

आउत्तो– आयुक्तः, व्यवस्थितः। *दशवै० २२६*।

आउय– आयुष्कम्, जीवितम्। *आव० ३४१*। आयुष्ककालः, देवाद्यायुष्कलक्षणः। *आव० २५७*।

आउयकम्मस्स गालणा– आयुःकर्मणो गालनं, प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। *प्रश्न० ५*।

आउयकम्मस्स णिट्ठवणं– आयुःकर्मणो निष्ठापनम् प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। *प्रश्न० ५*।

आउयकम्मस्स भेय– आयुःकर्मणो भेदः, प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। *प्रश्न० ५*।

आउयकम्मस्स संवट्टगो– आयुःकर्मणः संवर्त्तकः, प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। *प्रश्न० ५*।

आउयकम्मस्सुवद्दवो– आयुःकर्मण उपद्रवः, प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। *प्रश्न० ५*।

आउयबंधद्धा– आयुर्बन्धाद्धा। *प्रज्ञा० ४८९*।

आउयसंवट्टए– आयुःसंवर्तकः–आयुरुपक्रमः। *स्था० ६७*।

आउर– आतुरः, शरीरसमुत्थेनागन्तुकेन वा व्रणेन ग्लानः। *दशवै० २७०*। क्षुधापिपासया वा पीडितः। *व्यव० २३* आ। दृष्टान्तः। *निशी० २०२* आ। आतुरः, क्वचिदपिस्वा-स्थ्यमलभमानः सन् आकुलः। *जीवा० १२२*। आतुरः–दुःखः। *भग० ७०५*। ग्लाने सति प्रतिजागरणार्थं (प्रति-सेवा)। *स्था० ४८४*। अत्यन्ताकुलतनुः। *उत्त० ८६*। कामेच्छाऽन्धाः। *आचा० २३८*। प्रतिसेवनाभेदः। *भग० ९१९*। आतुरः, चिकित्साया अविषयभूतः। *विपा० ७६*। चिकित्साया अविषयभूतो रोगी। *बृह० २८१* आ। मर्त्तुकामः। *उत्त० २७३*।

आउरपच्चक्खाण– प्रकीर्णकनाम। *आव० ८०४*। श्रुतप्रत्या-ख्यानम्।*आव० ४७९*। अस्वास्थ्यमनाः। *आचा० ७२*। आतुरः–चिकित्साक्रियाव्यपेतः तस्य

प्रत्याख्यानवर्णनम्। *नन्दी० २०६*। अपूर्वश्रुतप्रत्याख्यानम्। *आव० ४७९*।

आउरसरणं– आरोग्गसाला। *दशवै० ५१*।

आउरस्सरण– आतुरशरणम्, दोषातुराश्रयदानम्। *दशवै० ११८*। आतुरस्मरणम्, क्षुधाद्यातुराणां पूर्वोपभुक्तस्मरणं चानाचरितम्। *दशवै० ११७*।

आउरीभूएहिं– आकुलीभूतैः, आतुरीभूतैः। *बृह० ३८अ*।

आउल– आकुलम्। व्यग्रम्। *आव० ५८५*। प्रचुरम्। *भग० ९५*। गडुलं, आविलं वा। *सम० ५३*।

आउलगमणं– आकुलगमनं–एकत्र मिलिता गच्छन्ति। *ओघ० १२६*।

आउलमाउलं– आकुलाकुलम्, स्त्र्यादिपरिभोगविवाहयुद्धा-दिसंस्पर्शननानाप्रकारम्। *आव० ५७४*।

आउला– आकुला, त्वरमाणा। *बृह० ६५अ*।

आउलाकुल– आकुलाकुलः, अतिव्याकुलः। *प्रश्न० ५०*।

आउली– तडवडावृक्षः। *जीवा० १११*।

आउलो– आकुलः, अभिभूतः। *आव० ५८९*।

आउसं– आयुः–जीवितं तत्संयमप्रधानतया प्रशस्तं प्रभूतं वा विद्यते यस्यासावायुष्मांस्तस्यामन्त्रणम्। *स्था० ७*।

आउसंत– आयुष्मान्, चिरजीवी। *दशवै० १३७*। आवसन् गुरुमूलमावसन् वा। *दशवै० १३७*।

आउसंतेणं– आजुषमाणेन, श्रवणविधिमर्यादया गुरून् सेव-मानेन। *उत्त० ८०*। भगवतेत्यस्य विशेषणमायुष्मता-चिर-जीवितवता। *सम० २*। श्रवणविधिमर्यादया गुरूनासेवमानेन। *स्था० ९*। आयुष्मदन्ते, आयुष्मता। *नन्दी० २१२*। आजु-षमाणेन–प्रीतिप्रवणमनसा। *सम० २*। हे आयुष्मन्। *सम० २*। *नन्दी० २१२*। आमृशता–गुरूक्रमयुगलं संस्पृशता। *सम० २*। गुरुकुलमावसता। *दशवै० १३७*। आवसता गुरुकुले। *सम० २*। आयुष्मन्, शिष्यामन्त्रणम्। *उत्त० ८०*।

आउसंवट्टणं– आयुरुपक्रमः। *निशी० २७४अ*।

आउसणाहिं– आक्रोशना मृतोऽसि त्वमित्यादिभिर्वचनैः। *भग० ३८३*।

आउसेइ– आक्रोशयति, शपति। *भग० ३८३*।

आउसो– आयुष्मन्, पुत्रादेरामन्त्रणम्। *भग० १३५*।

आउस्स– आक्रोशः, असभ्यवचनरूपः। *सूत्र० ९३*।

आउस्सियकरणं– आवश्यककरणम्, आवर्जिकरणम्। *प्रज्ञा० ६०४*।

आउहं– आयुधम्, क्षेप्यं शस्त्रम्। *प्रश्न० ४७*। अक्षेप्यम्। *विपा० ४६*। खेटकादि। *जीवा० २५९*। क्षेप्यास्त्रम्, *भग० १९४*। शस्त्रम्, अथवाऽऽयुधं–अक्षेप्यशस्त्रं खड्गादि। *भग० ३१८*।

आउहसाला– आयुधशाला–शस्त्रागारम्। *आव० १४८*।

आऊ– आयुः, एति–आगच्छति प्रतिबन्धकतां स्वकृतकर्म-बद्धनरकादिकुगतेर्निष्क्रमितुमनसो जन्तोरिति। अथवा आसमन्तादेति–गच्छति भवाद् भवान्तरसङ्क्रान्तौ विपाको-दयमिति वा। *प्रज्ञा० ४५४*।

आए– अनन्तकायः–कुहणविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। आत्मना। *स्था० १३९*।

आएस– प्राघूर्णकः। *ओघ० ६७*। निर्देशः। *निशी० १९आ*। प्राघूर्णक आयातः। *ओघ० १०१*। आज्ञा। *निशी० २८५आ*। आदेश–कृत्रिमकृतभ्रूकुटीभंगादयः। *आचा० ९१*। प्राघूर्णकः। *आचा० १३९, ३५२*। कर्मकरादिः। *आचा० ४१५*। व्यापारनियोजना।*आचा० ३१८*। दृष्टांतः। *आचा० २६२*। आदिश्यते इत्यादेशः आचार्यपारम्पर्यश्रु-त्यायातो वृद्धवादो, यमैतिह्यमाचक्षते। *आचा० २६२*। वृद्ध-वादः। *आचा० २६३*। प्राघूर्णकः। *स्था० १३८*। उपचारो, व्यवहारः (देशे प्रधाने च)। *स्था० २२३*। आदेशः, विशेषः, आङिति मर्यादया विशेषरूपानतिक्रमात्मिकया दिश्यते–कथ्यत इति। *उत्त० ३२*। प्राघूर्णकसाधुः। *आव० २६३*। प्राघूर्णकः। *ओघ० १८३*। आदेशः–प्रकारः सामान्यविशेष-रूपस्तत्र चादेशेन–ओघतो द्रव्यमात्रतया न तु तद्गतसर्व-विशेषापेक्षयेतिभावः, अथवा आदेशेन–श्रुतपरिकर्म्मिततया। *भग० ३५७*। आदेशः, कथनम्। *उत्त० १४७*। संखडिविषयो दृष्टान्तः। *बृह० १३५आ*। प्राघूर्णकः। *निशी० १४आ*। पाहुण्णकं। *निशी० २९३आ*। प्राघूर्णकः। *बृह० १९५अ*। प्रायश्चित्तप्रकारः। *बृह० ९८आ*। अस-त्यार्थादेशः। *प्रश्न० १७*। विध्यन्तरम्। *दशवै० १३*। व्यपदेशः। *आचा० ७४*। अभ्यर्हितः प्राहुणकम्। *उत्त० २७२*। अधि-कारः। *बृह० २७६आ*। अनुज्ञा। *व्यव० ३४६अ*। उपचारः, व्यवहारः, स च बहुतरे प्रधाने वाऽऽदिश्यते। *स्था० २२३*। नयान्तरविकल्पः। *व्यव० ३५४आ*। आदिश्यते–आज्ञाप्यत इत्यादेशः–

कर्मकरादिः। *आचा० ४१५*।

आएसणं– आवेशनं, अयस्कारकुंभकारादिस्थानम्। *औप० ६१*।

आएसणाणि– आदेशनानि–लोहकारादिशालाः। *आचा० २६६*।

आएसपर– आदेशः–कर्म्मकरादिः स चासौ परश्र्चादेशपरः। *आचा० ४१५*।

आएसावि– आगमिष्याः। *सूत्र० ७६*।

आएसियं– आदेशम्, विभागौद्देशिकतृतीयभेदः। *पिण्ड० ७९*।

आओ– उताहो। *बृह० ७ अ*। भागः। *आव० ३४२*। ज्ञानादिनामायहेतुत्वादध्ययनम्। *स्था० ६*। भूमिस्फोटकविशेषः। *आचा० ५७*।

आओग– आयोगः, द्विगुणादिवृद्ध्यअर्थप्रदानम्। *भग० १३५*। द्विगुणादिवृद्ध्यर्थप्रदानम्। *जम्बू० २३२*। अर्थलाभः। *औप० १२*। अर्थोपायः यानपात्रोष्ट्रमण्डलिकादिः। *सूत्र० ४०७*। परिकरः। *औप० ६३*।

आओगपओगसंपउत्ताइं– आयोगेन–द्विगुणादिलाभेन द्रव्यस्य प्रयोगः–अधमर्णानां दानं तत्र सम्प्रयुक्तानि–व्यापृतानि तेन वा सम्प्रयुक्तानि सङ्गतानि तानि। *स्था० ४२२*। आयोगो–द्विगुणादिवृद्ध्याऽर्थप्रदानं प्रयोगश्र्च–फलान्तरं तौ संप्रयुक्तौ–व्यापारितौ यैस्ते। *भग० १३५*।

आओगपयोगसंपउत्ते– आयोगप्रयोगाः–द्रव्यार्जनोपायवि–शेषाः संप्रयुक्ताः–प्रवर्तिता येन। *स्था० ४६३*।

आओडावेइ– आखोटयति, प्रवेशयति। *विपा० ७२*।

आओसे– प्रदोषे। *ओघ० ७६*।

आओसेज्जा– आक्रोशयेत्। *उपा० ४२*।

आओहणं– आयोधनम्, (युद्धम्) *स्था० ४०२*।

आकंदियं– आक्रन्दितम्, ध्वनिविशेषकरणम्। *प्रश्न० २०*।

आकंपइत्ता– वैयावृत्त्यादिभिः आकम्प्य–आवर्ज्य। *स्था० ४८४*। यदालोचनाऽऽचार्यं वैयावृत्त्यकरणादिनावर्ज्य यदालोचनम्। *भग० ९१९*।

आकट्टविकट्टिं– आकर्षवैकर्षिकाम्। *भग० ६८५*।

आकट्टिं– आकृष्टिं। *भग० ६८३*।

आकड्ढविकड्ढिं करेइ– आकट्टविकट्टिं करोति, आकर्षविकर्षिकां करोति। *भग० १६७*।

आकरणम्– आगरणं, आह्वानम्। *ओघ० २०४*।

आकाशम्– आङिति सर्वभावाभिव्याप्त्या काशत इति। *उत्त० ६७२*। सर्वभावावकाशनात्, आ–मर्यादया काशन्ते–दीप्यन्ते पदार्थसार्था यत्र तत्। आ–अभिविधिना काशन्ते-दीप्यन्ते पदार्था यत्र तत्। *अनुयो० ७४*। आङिति मर्यादया-स्वस्वभावापरित्यागरूपया काशन्ते-स्वरूपेणैव प्रतिभासन्ते तस्मि-न्पदार्था इति। *उत्त० ६७२*। *बृह० ९१ अ*।

आकाशगा– आगासगा, भूतविशेषाः। *प्रज्ञा० ७०*।

आकासाहि– आकर्षय। *आचा० ३७८*।

आकासिइ– खाद्यविशेषः। *जम्बू० ११८*।

आकिण्णं– अतिकीर्णं। *निशी० १३ अ*।

आकुट्टि– हिंसा। *आचा० ३०५*।

आकुट्टिय– उत्पेत्य। *बृह० १२२ आ*।

आकुल– आकुलः, व्याप्तः। *जम्बू० १८८*।

आकेवलिआ– आकेवलिकाः, न केवलं अकेवलम्, तत्र भवा आकेवलिकाः–सद्वन्द्वाः–सप्रतिपक्षा इतियावत् असम्पूर्णा वा। *आचा० २४१*।

आकोट्टिमं– आकुट्टिकं यथा रूप्यकोऽधस्तादपि उपर्यपि मुखं कृत्वाऽऽकुट्यते। *दशवै० ८६*।

आकोडनं– आकोटनम्, कुट्टनेनाङ्गे प्रवेशनम्। *प्रश्न० ५७*।

आकोडेमाणे– आउडेमाणे, आकुट्यमानम्, आहन्यमानम्। *भग० २५१*।

आकोसायंतं– आकोशायमानम्, विकचीभवत्। *जीवा० २७१*। *जम्बू० १११*।

आक्षोधुका– क्षुधारहिता। *दशवै० १२७*।

आख्यातिकम्– क्रियाप्रधानत्वात् धावतीति। *अनुयो० ११३*।

आख्यायिकास्थानानि– अक्खाइयठाणाणि, कथानकस्था-नानि। *आचा० ४१३*।

आगंतागारं– गामपरिसट्ठाणं, आगंतागारं–बहिया वासो। *निशी० १८३ अ*। आगन्तुकानां कार्पटिकादीनामगारमाग-न्तागारम्। *सूत्र० ३९३*। ग्रामादेर्बहिरागत्यागत्य पथिकादय-स्तिष्ठन्ति। *आचा०*

३६५।

आगंतार– यत्रागारिण आगत्य तिष्ठन्ति तदागन्तुकागारम्। *बृह० ४८* आ। प्रसङ्गायाता आगत्य वा यत्र तिष्ठन्ति तदा-गन्तारम्, तत्पुनर्ग्रामान्नगराद्वा बहिः स्थानं तत्र। *आचा० ३०७*। आगन्तागारम् (धर्मशाला) *आचा० ३०६*। पत्तना-द्बहिर्गृहम्। *आचा० ३४८*।

आगंतु– आगन्तुकः–पथिकादिरगारस्थजनो यत्रागत्य सन्तिष्ठते। *बृह० १७९* आ।

आगंतुओ– आगन्तुकः, कण्टकादिप्रभवः। *आव० ७६४*।

आगंतुगो– आगामुकः। *आव० २७०*। आगंतुएण सत्था–तिणाकओ जो सो। *निशी० १८८* आ।

आगंतुय– आगन्तुकः। *दशवै० १०८*।

आगंतू– आगन्तुकः। *उत्त० १९३*।

आगंपिया– वशीकृता। *निशी० ९७* अ।

आगइ– आगतिः, प्रत्यावृत्त्या–प्रातिकूल्येनागमनम्। *आव० २९१*। प्रज्ञापकप्रत्यासन्नस्थाने आगमनम्। *स्था० १३३*।

आगम– आगमनम्–आगमः–आ–अभिविधिना मर्यादया वा गमः–परिच्छेद इति। *आव० २६*। आचार्यपारम्पर्येणागतः, आप्तवचनं वा। *अनुयो० ३८*। आगम्यन्ते–परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेनेति, केवलमनःपर्यायावधिपूर्वचतुर्द्दशकदशकनवक-रूप। *स्था० ३१७*। सूत्रार्थोभयरूपः। *आव० ५२४*। आग-म्यन्ते–परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेन इति आगमः–आप्तवचन-सम्पाद्यो विप्रकृष्टार्थप्रत्ययः। *स्था० २६२*। गुरुपारम्पर्येणा-गच्छतीति आगमः, आ–समन्ताद्गम्यन्ते-ज्ञायन्ते जीवादयः पदार्था अनेनेति वा। *अनुयो० २१९*। आप्तप्रणीतः। *आचा० ४८*। (आगमसिद्धः) *स्था० २५*। सूत्रम्। *आव० ६०४*। अध्ययनम्। *आव० ३००*। आगमः, प्राप्तिः। *दशवै० १६*। सङ्ग्रहम्। *बृह० ३२* आ। अर्थपरिज्ञानम्। *व्यव० २५१* आ। आ–अभिविधिना सकलश्रुतविषयव्याप्तिरूपेण मर्यादया वा यथावस्थितप्ररूपणारूपया गम्यन्ते–परिच्छि-द्यन्तेऽर्था येन सः। *नन्दी० २४९*। आगच्छति गुरुपारम्पर्ये-णेत्यागमः। *भग० २२२*।

आगमकुसला– आगमः–श्रुतिस्मृत्यादिरूपस्तस्मिन् कुशला-वागमकुशलौ। *उत्त० ५२१*।

आगमणं– प्रयोजनपरिसमाप्तौ पुनर्वसतिं गमनम्। *आव० ५७३*। आकसणं। *निशी० ६३* आ।

आगमणगिहं– सभाप्रपादेवकुलादिपथिकस्थानम्। *बृह० १७९* आ। आगमनगृहं–सभाप्रपादि, पथिकादीनामागमने-नोपेतं, तदर्थं वा गृहम्। *स्था० १५७*।

आगमतः– आगममाश्रित्य (ज्ञानापेक्षयेत्यर्थः)। *अनुयो० १४*।

आगममाणे– आगमयन्–आपादयन्। *आचा० २७८*। *२८३*। अवगमयन्, बुध्यमानः। *आचा० २४५*।

आगमववहारी– आगमववहारी, छव्विहे–केवलणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी चोद्दसपुव्वी अभिण्णदसपुव्वी नवपुव्वी य। *निशी० १००* अ। आगमव्यवहारिणः व्यवहारपञ्चके प्रथमभेदः। *व्यव० ५* अ। प्रत्यक्षज्ञानिनः। *व्यव० ६३* अ।

आगमसत्थ– आगमशास्त्रम्, आ–अभिविधिना सकलश्रुत–विषयव्याप्तिरूपेण मर्यादया वा यथावस्थितप्ररूपणारूपया गम्यन्ते–परिच्छिद्यन्तेऽर्था येन स आगमः, स चैवं व्युत्पत्त्या अवधिकेवलादिलक्षणोऽपि भवति ततस्तद्व्यवच्छेदार्थं विशे-षणान्तरमाह–'शास्त्रे'ति शिष्यतेऽनेनेति शास्त्रमागमरूपं शास्त्रमागमशास्त्रम्। *नन्दी० २४९*।

आगमिएल्लगो– ज्ञातः। *आव० ३१७*।

आगमिओ– आगमितः, ज्ञातः। *आव० ४३७*।

आगमियं– ज्ञातम्। *आव० ११६*। *ओघ० १०५*। ज्ञातः। *आव० ३१६*।

आगमियाणि– प्राप्तानि, अधीतानि। *आव० ४३३*।

आगमिस्सं– आगमिष्यम्, आगामि, *आचा० १६७*।

आगमिसस्सभद्दत्ताए– आगमिष्यदिति–आगामिकालभावि भद्रं–कल्याणं यस्मिंस्तथा तस्य भावस्तत्ता तया, यदि वाऽऽगमिष्यतीत्यागमः–आगामी कालस्तस्मिन् शश्वद्भद्र -तया–अनवरतकल्याणतयोपलक्षितम्। *उत्त० ५८५*।

आगमेति– जानाति। *विपा० ७३*।

आगमेयव्वं– आगमयितव्यम्–ज्ञातव्यम्। *बृह० १९२* अ।

आगमेसा– आगमिष्यन्ती। *आव० १७४*।

आगमेसिभद्दा– आगमिष्यत् भद्रा–द्वितीयभवे अन्तकृतः। *उपा० २१*।

आगमेस्संति– आगमिष्यामि–गृहीष्यामि। *व्यव० ४१८* आ।

आगमेस्सा– भविष्यतः(*मरण०*)।

आगमेस्साणं– आयत्याम्। *आव० ३५८*। भविष्यताम्। (*महाप्र०*)।

आगमोगं– आगमौकः, पथिकाद्यगारिणां स्थानं, तेषां आगमने वा यद् गृहं तत्। *बृह० १७९* आ।

आगयं– आगतम्–स्वीकृतम्। *आचा० १८१*।

आगया– आगताः–सिद्धाः। रागद्वेषाभावात् पुनरावृत्तिरहिताः सर्वज्ञाः। *आचा० १६७*।

आगयपण्हय– आयातप्रश्रवा पुत्रस्नेहादागतस्तनमुखस्तन्ये-त्यर्थः। *भग० ४६०*।

आगर– आकर, यत्र संनिवेशे लवणाद्युत्पद्यते। *स्था० ४४९*। उत्पत्तिस्थानम्। (*मरण०*)। *अन्त० ७*। पृथिव्याद्याकरः। *आव० ६२२*। लोहाद्युत्पत्तिभूमिः। *स्था० २९४, ७८६*। आकरः, हिरण्याकरादि। *प्रज्ञा० ४८*। खानिः। *प्रश्न० ३८*। *ओघ० ९*। रत्नादीनामुत्पत्तिभूमिः। *प्रश्न० १३४*। *उत्त० ६०५*। हिरण्याकरादिकः। *जीवा० २७९*। लोहाद्युत्पत्ति-स्थानम्। *प्रश्न० १२७*। *अनुयो० १४२*। आगत्य तस्मिन्कु-र्वतीत्यारः। *आचा० ५*। हिरण्याकरादिः। *जीवा० ४०*। लोहाद्युत्पत्तिस्थानम्। *भग० ३६*। भिल्लपल्ली भिल्लकोट्टं वा। *निशी० २४२* आ। *बृह० २४६* अ। कृत्रिका-पणादिः। *बृह० २४२* आ। जत्थ घरट्टादिसमीवेसु बहुं जव भुसुट्टं सो। *निशी० ६२* अ। रूप्यसुवर्णाद्युत्पत्तिस्था-नम्। *नन्दी० २८८*। सुवर्णादेरुत्पत्तिस्थानम्। *ओघ० ९५*। ताम्रादेरुत्पत्तिस्थानम्। *आचा० ३२९*। सुवर्ण्णादिधातूनां खानिः। *निशी० ७०* आ।

आगरमहेसु– आकरमहो–खानिमहोत्सवः। *आचा० ३२८*।

आगररूवं– आकररूपम्। *भग० १९३*।

आगरिस– आकर्षः–चारित्रस्य प्राप्तिः। *भग० ९०५*। आकर्षः–तथाविधेन प्रयत्ने कर्मपुद्गलोपादानम्। *प्रज्ञा० ११८*। आकर्षणम्, प्रथमतया मुक्तस्य वा ग्रहणम्। *आव० ३६३*। एकानेकभवेषु ग्रहणानि। *आव० १०५*। आकर्षणमाकर्षः–एकस्मिन्नानाभवेषु वा पुनः पुनः सामायिकस्य ग्रहणानि प्रतिपत्तये। *अनुयो० २६०*।

आगलणं– वैकल्पम्। *व्यव० १३२* आ।

आगलेंति– आकलयन्ति, जेष्याम इत्यध्यवस्यन्ति। *भग० १७४*।

आगल्लो– ग्लानः। *बृह० १२२* आ।

आगसणं– आकृष्यत इति आगसणं तं च दविणं। *निशी० १७४* आ।

आगढं– कर्कशम्। *बृह० ७३* आ। तीव्रः। *आव० ५८८*। अत्यर्थम्। *व्यव० २५२* अ।

आगाढजोग– आगाढयोगः, गणियोगः। *ओघ० १८१*।

आगाढपण्ण– आगाढप्रज्ञः, आगाढा–अवगाढा परमार्थ–पर्यवसिता तत्त्वनिष्ठा प्रज्ञा–बुद्धिर्यस्यासौ। *सूत्र० २३७*। शास्त्राणि। *व्यव० २२६* अ।

आगाढो- आगाढतरां जम्मिजोगे जतणा सो। *निशी० १९७* अ।

आगामिपहं– आगामिपथः, आगामिनो–लब्धव्यस्य वस्तुनः पन्थाः। *स्था० ९८*।

आगार– गृहम्। *अनुयो० २४४*। आकारः–आक्रियतेऽनेनाभिप्रेतं ज्ञायत इति, बाह्यभेष्टारूपः। *आव० २८१*। प्रत्याख्यानापवादहेतवोऽनाभोगादयः। *आव० ८४०*। आकारः–आक्रियत इत्याकारः–प्रत्याख्यानापवादहेतुर्म-हत्तराद्याकारः। *भग० २९६*। आकारः–प्रत्याख्यानापवाद-हेतवोऽनाभोगादयः। *स्था० ४९८*। शरीरगता भावविशेषः। *व्यव० ६४* आ। प्रतिनियतोऽर्थग्रहणपरिणामः। *प्रज्ञा० ५२६*। तच्छायामात्रम्। *प्रज्ञा० ३७१*। प्रत्याख्यानापवादहे-तुरनाभोगादिः। *आव० ८४०*। आकृतयः, स्वरूपाणि। *अनुयो० १३१*। *स्था० ३९५*। दिगवलोकनादि। *बृह० ४३* अ। आकृतिः। *जीवा० २०७*। प्रभा। *जीवा० २६५*। प्रतिवस्तु प्रतिनियतो ग्रहणपरिणामः। *जीवा० १८*। मूर्त्तिः। *जीवा० २७३*। विशेषांशग्रहणशक्तिः। *भग० ७३*। स्थूलधीसंवेद्यः प्रस्थानादिभावाभिव्यञ्जको दिगवलोकनामिः। *उत्त० ४४*। सन्निवेशविशेषः। *सूर्य० २९३*।

आगारधम्मं– आगारधर्मः–द्वादशव्रतरूपो गृहस्थधर्मः।

आगारभाव– आकारभावः, स्वरूपविशेषः। *जम्बू० १८*। *जीवा० १७६*। आकार एव भावः। *आव० ३३८*।

आगारभावपडोयारे– आकारभावप्रत्यवतारः, आकारस्यआ-कृतेर्भावाः–पर्यायाः, अथवा आकाराश्र्च आकारभावास्तेषां प्रत्यवतारः–अवतरणमाविर्भावः। *भग० २७७*।

आगारभावमायाए– आकारभाव एव आकार भावमात्रं। *आव० ३३८*।

आगारभेए– आकारभेदः। *प्रज्ञा० ५३१*।

आगाल– आगालः, आगालनमागालः–समप्रदेशावस्थानम्। *आचा० ५*।

आगास– आकाशम्, अनावृतस्थानम्। *प्रश्न० १३८*। आकाशम्, सर्वद्रव्यस्वभावानाकाशयति–आदीपयति तेषां स्वभावलाभेऽवस्थानदानादिति, आङ्–मर्यादाऽभिविधिवाची, तत्र मर्यादायामाकाशे भवन्तोऽपि भावाः स्वात्मन्येवाऽऽसते नाकाशतां यान्तीत्येवं तेषामात्मसादकरणाद्, अभिविधौ तु सर्वभावव्यापनादाकाशमिति। *स्था० ५५*। 'आङ्' इति मर्यादया स्वस्वभावापरित्यागरूपया काशन्ते-स्वरूपेण प्रतिभासन्ते अस्मिन् व्यवस्थिताः पदार्था इत्याकाशम्, यदा त्वभिविधावङ् तदा 'आङ्' इति सर्वभावाभिव्याप्त्या काशते इत्याकाशम्। *प्रज्ञा० ९*। आकाशम्-तृणादिरहितम्। *बृह० ११अ*। आ–मर्यादया अभिविधिना वा सर्वेऽर्थाः काशन्ते–स्वं स्वभावं लभंते यत्र तदाकाशम्। *भग० ७७६*। आङिति मर्यादया स्वस्वभावापरित्यागरूपया काशन्ते-स्वरूपेणैव प्रतिभासन्ते तस्मिन्पदार्था इत्याकाशं, यदा त्वभिविधावाङ्तदा आङिति–सर्वभावाभिव्याप्त्या काशत इति। *उत्त० ६७२*।

आगासगामितं– आकाशगामित्वम्। *स्था० ३३२*।

आगासगयं– आकाशगतं–व्योमवर्ति आकाशकं वा–प्रकाश-मित्यर्थः। *सम० ६१*।

आगासतल– आकाशतलम्। *जीवा० २६९*। कटाद्यच्छन्नकु-ट्टिमम्। *जम्बू० १०६*। *आव० ६९४, ६९९*।

आगासथिग्गलं– आकाशथिग्गलं, शरदि मेघापान्तरालवर्त्त्या-काशखण्डम्। *प्रज्ञा० ३६०*। शरदि मेघमुक्तमाकाशखण्डम्। *जम्बू० ३२*।

आगासफलिहं– आकाशस्फटिकम्, अतिस्वच्छस्फटिक-विशेषः। *जीवा० २५३*। *जम्बू० २७५*। *भग० १०*।

आगासफलितोवमा– आकाशस्फटिछोपमा। *प्रज्ञा० ३६४*।

आगासफलोवमाइ– खाद्यविशेषः। *जम्बू० ११८*।

आगासवासिणो– जातिजुंगितविशेषाः। *निशी० ४३*।

आगासाइवाई– आकाशादिवादिनः, अमूर्त्तानामपिपदार्थानां साधन(ने) समर्थवादिनः। *औप० २९*। आकाशातिपातिनः– आकाशं–व्योमातिपतन्ति–अतिक्रामन्ति आकाशगामिवि-द्याप्रभावत् पादलेपादिप्रभावाद्वा आकाशाद्वा हिरण्यवृष्ट्या-दिकमिष्टमनिष्टं वाऽतिशयेन पातयन्तीत्येवंशीलाः। *औप० २९*।

आगासिया– आकाशिता, आकाशं–अम्बरमिता–प्राप्ता, आकर्षिता वा–आकृष्टा, उत्पादितेति वा। *औप० २२*।

आघं– सूत्रकृतांगे प्रथमश्रुतस्कंधे दशमाध्ययननाम। *सूत्र० १८६*। आख्यातवान्। *सूत्र० १८८*।

आघंसणं– एतेहिं एक्कंसिं आघंसणं। *निशी० ११९अ*। *निशी० १९०अ*।

आघवइत्ता– धर्म्ममाख्याय, आख्याय सामान्यतो यथा कार्यो धर्म्मः। *स्था० ११९*। आख्यायकः–प्रज्ञापकः। *स्था० २६७*।

आघवउ– आख्यातः, तस्मिन् क्षेत्रे प्रसिद्धः। *आव० ५२४*।

आघवणा- आख्याना। *उपा० ४७*।

आघवणा– आख्यातः, सामान्यविशेषपर्यायाभिव्याप्तिकथनेन। *उत्त० ५९८*।

आघविज्जंति– प्राकृतशैल्या आख्यायन्ते–सामान्यविशेषाभ्यां कथ्यन्ते। *सम० १०९*। *नन्दी० २१२*।

आघवियं– अर्घापितम्, अर्घः–पूजा तस्य आपः–प्राप्तिर्जाता यस्य तत्, अर्घ वा आपितं–प्रापितं यत्तत्। *प्रश्न० ११३*।

आघवेइ– आख्यापयति सामान्यविशेषरूपतः। *स्था० ५०२*। *भग० ७११*।

आघवेज्ज– आग्राहयेच्छिष्यान् अर्घापयेद् वा–प्रतिपादनतः पूजां प्रापयेत्। *भग० ४३६*।

आघाअ– आघातः। *दशवै० २०१*। मरणम्। *सूत्र० १७८*। तथाविधयतनयाऽन्यप्राणिनामात्मनश्र्च विधिवत् संलि-खितशरीरतया यस्मिंस्तत्। *उत्त० २४९*।

आघातणं– आघातनम्, यत्र सङ्ग्रामे बहूनि मृतानि तत्।

आव० ७४४।

आघातो– जावंतो भूतो अगणि सगासमल्लियंते ते सव्वे घातयतीति। *दशवै० ९८।*

आघादियं– कथयित्वा। नि०च० *७१* अ।

आघायठाणं– आघातस्थानम्, वधस्थानम्। *आव० ७४१।*

आघायणं– आघातनम्, वध्यभूमिमण्डलम्। *प्रश्न० ५९।* जत्थ(मूषकादि) हतो तं। *निशी० ७२* अ।

आघायाय– आघातयन्, संलेखनादिभिरुपक्रमकारणैः सम-न्ताद्घातयन्–विनाशयन्। *उत्त० २५४।*

आचरियं– आचरितम्, कल्प्यम्। *दशवै० ११६।*

आयार- आचारः चक्रवालसामाचारीरूपः। *बृह० २४९* आ। शास्त्रविहितो व्यवहारः। *उत्त० ७११।* व्यवहारः। *स्था० ६४।* वेषधारणादिको बाह्यः क्रियाकलापः। *उत्त० ४९९।* पूर्वपुरुषाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिः, तत्प्रतिपादको ग्रन्थः। *नन्दी० २०९।* चारित्रम्। *उत्त० ५८३।* आचरण-माचारः उचितक्रिया विनय इतियावत्। *उत्त० ३४४।*

आयारपणिही- आचारप्रणिधि दशवैकालिकस्याष्टममध्ययनम्। *दशवै० २२४।*

आयारवत्थू- आचारवस्तु नवमपूर्वगततृतीयवस्तु। *उत्त० २५८।*

आयारसंपया- आचारसम्पत् संयमध्रुवयोगयुक्ततादिचतुर्भेद-भिन्ना सम्पत्। *उत्त० ३९।*

आयरियं- आचारिकम् निजनिजाचारभवमनुष्ठानम्। *उत्त० २६६।*

आयरियपरिभासित्तं- आचार्यपरिभाषित्वम् पञ्चमसमाधि-स्थानम्। *प्रश्न० १४४।*

आचालो– आचालः, आचाल्यतेऽनेनातिनिबिडं कर्मादीत्या–चालः। *आचा० ५।*

आच्छिद्दणं– एक्कसि ईष्द्वा छेदनम्। *निशी० १८९* अ।

आजवंजवीभाव– पुनःपुनर्भ्रमणभावः। *आचा० ७९। उत्त० ३३६।*

आजवंजवे– अजवंजवी, पुनःपुनर्भ्रमणम्। *आचा० १६१।*

आजाइ– आजायन्ते तस्यामित्याजातिः, आचारपर्यायः। *आचा० ६।* आजाति–मनुष्यजन्म गर्हिता जात्यैश्वर्यरूपा-दिरहिततया। *स्था० ४१९।* सम्मूर्च्छनगर्भोपपाततो जन्म। *स्था० ५१२।* च्युतस्योद्वृत्तस्य वा कुमानुषत्वतिर्यक्त्वरूपा गर्हिता कुमानुषादित्वादेव। *स्था० १३२।*

आजाइसहस्स– आजातिसहस्रम्, अनेकेषु देवादिजन्मसु प्रतिजीवं क्रमप्रवृत्तेषु अधिकरणभूतेषु बहून्यायुष्कसहस्राणि तत्स्वामिजीवानामाजातीनां च बहुशतसहस्रसङ्ख्यत्वात्। *भग० २१५।*

आजिणभद्दो– आजिनभद्रः, आजिने द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणमहाभद्दो– आजिनमहाभद्रः, आजिने द्वीपेऽपरार्द्धा-धिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणयं– आजिनकम्, चर्ममयं वस्त्रम्। *जीवा० २६९।*

आजिणवरभद्दो– आजिनवरभद्रः, आजिनवरे द्वीपे पूर्वार्द्धा-धिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणवरमहाभद्दो– आजिनवरमहाभद्रः, आजिनवरे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणवरमहावरो– आजिनवरमहावरः, आजिने समुद्रे आजिनवरे समुद्रे चापरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणवरावभासभद्दो– आजिनवरावभासभद्रः, आजिन–वरावभासे द्वीपेऽपूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणवरावभासमहाभद्दो– आजिनवरावभासमहाभद्रः, आजिनवरावभासे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणवरावभासमहावरो– आजिनवरावभासमहावरः, आजिनवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणवरावभासववरो– आजिनवरावभासवरः, आजिन-वरावभासे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

आजिणवरावभासो– आजिनवरावभासः, द्वीपविशेषः, समुद्र-विशेषश्र्च। *जीवा० ३६९।*

आजिणवरो– आजिनवरः, आजिने समुद्रे, आजिनवरे समुद्रे च पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।* द्वीपविशेषः, समुद्र विशे-षश्र्च। *जीवा० ३६८।*

आजिणो– आजिनः, द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्र्च। *जीवा० ३६८।*

आजीव– आजीवः, आजीविका। *पिण्ड० १२१।* आजीविकः। *व्यव० १६३* अ। भगवत्यष्टमशतकपंचमोद्देशकः। *भग० ३२८।*

आजीवक– (आजीवग) गोशालकमतानुसारी। *दशवै० २२२*।

आजीवगदिट्ठंतो– आजीवदृष्टान्तः, आ–सकलजगदभिव्याप्त्या जीवानां यो दृष्टान्तः–परिच्छेदः सः, सकलजीवदर्शनम्। *जीवा० १३७*।

आजीवगा– आजीविकाः पंडरभिक्खूआ। *निशी० ९८*।

आजीवगो– आजीवगः, आ–समन्ताज्जीवन्त्यनेनेत्याजीवः– अर्थनिचयस्तं गच्छीत–आश्रयत्यसौ, आजीवगः–अर्थमदः। *सूत्र० २३७*।

आजीववत्तिया– आजीववृत्तिता, जात्याद्याजीवनेनात्मपालना। *दशवै० ११७*।

आजीवणपिंडो– जातिमातिभावं उवजीवतित्ति आजीवणपिंडो। *निशी० ९७* आ।

आजीवभयं– आजीविकाभयम्, निर्धनः कथं दुर्भिक्षादावात्मानं धारयिष्यामीति भयम्। *आव० ६४६*। वृत्तिभयम्। *प्रश्न० १४३*। दुर्जीविकाभयम्। *आव० ४७२*।

आजीवियसुत्तपरिवाडीए– आजीविकसूत्रपरिपाट्याम् गोशाल-कमतप्रतिबद्धसूत्रपद्धत्याम्। *सम० ४२*।

आजीविया– आजीविकाः, पाषण्डिविशेषाः, नाग्न्यधारिणः गोशालकशिष्याः, आजीवन्ति वा येऽविवेकिलोकतो लब्धि-पूजाख्यात्यादिभिस्तपश्र्चरणादीनि ते आजीविकाऽस्ति-त्वेनाजीविकाः। *भग० ५०*। पाखण्डविशेषाः, गोशालमतानु-सारिणः, आजीवंति येऽविवेकतो लब्धिपूजाख्यात्यादिभि-श्र्चरणादीनि। *प्रज्ञा० ४०६*। *औप० १०६*। आजीविकाः–गोशालकशिष्याः। *भग० ३६७*। *स्था० २३२*। आजीविकाः गोशालकप्रवर्तिताः। *सम० १३०*।

आजोअणंतरं– आयोजनान्तरम्, योजनपरिमाणम्। *आव० २३१*।

आजोग– आयोगः, व्यापारणम्। *उत्त० ७१०*। *आव० ६९४*।

आजोजिया– आयोजिका, आयोजयति जीवं संसारे इति, क्रियाविशेषः। *प्रज्ञा० ४४५*।

आडंबरो– आडम्बरः, मातङ्गनामा यक्षः। *आव० ७४३*। पटहः। *स्था० ३९५*। *अनुयो० १२९*।

आडहइ– आदधाति, नियुङ्क्ते। *औप० ६४*।

आडा– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा० ४९*।

आडोसेतीय– आडासेतीकः, पक्षिविशेषः *प्रश्न० ८*।

आडआलित्तं– मिश्रितं, विलोडितम्। *आव० ३४२*।

आडोव– आटोपः, स्फारता। *प्रश्न० ४८*। *औप० ५३*।

आडोवेइ– आटोपयेत्, वायुना पूरयेत्। *भग० ८२*।

आडोहिंत्तो– जलं विलोढयन्। *बृह० ७२* आ।

आढइ– गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*। आढकी, गुच्छविशेषः। *आचा० ५७*।

आढए– आढकः, मानविशेषः। *भग० ३१३*।

आढगं– आढकः, प्रस्थचतुष्टयनिष्पन्नः। *अनुयो० १५१*। चतुःप्रस्थपरिमाणम्।*आव० २३८*।

आढगमो– आढककः, मानविशेषः। *उत्त० १४३*।

आढणं– आदरः। *बृह० ७६* आ।

आढत्तं– आरब्धम्। *भग० २८२*।

आढत्ता– आरब्धा। आ० *२३७*।

आढत्तो– आरब्धः। *आव० १०३, ४१३, २६२*। *दशवै० ९७*।

आढयं– आढकः, सेतिकाप्रमाणः। *जम्बू० २४४*।

आढवेइ– आरभते। *दशवै० ३८*।

आढवेऊण– आरभ्य। *आव० ३४१*।

आढा– आदरः। *बृह० ६७* आ।

आढाति– आद्रियते। *दशवै० ५९*। आ०व० ९२, ८१२।

आढायमाणे– आद्रियमानः। *आचा० २८४*।

आणं– आज्ञां–योगेषु प्रर्त्तनलक्षणम्। *स्था० ३३१*। विधि–विषयमादेशम्। *स्था० ३८६*।

आणंतरिए– आनन्तर्यम्–सातत्यमच्छेदनमविरहः। *स्था० ३४६*।

आणंद– आनन्दः, द्वितीयमासक्षपणे भिक्षादाता। *आव० २००*। उपासकदशांगाद्यध्ययनम्, तन्नाम श्रावकः। *उपा० १*। गाथापतिः। *आव० २१५*। नालंदबाहिरिकायां गाथा-पतिः। *भग० ६६२*। आनन्दः। षष्ठो बलदेवविशेषः। *आव० १५९*। श्रुतेन सामायिकाप्तौ दृष्टांतः। *आव० ३४७*। षोडशः मूहूर्तःविशेषः। *सूर्य० १४६*। *जम्बू० ४९१*। धरणेन्द्रर-थानीकाधिपतिः। *स्था० ३०२*। षष्ठो बलदेवः। *सम० १५४*। शीतलजिनाद्यगणभृत्। *सम० १५२*। भगवान् महा-वीरशिष्यः। *भग० ६६८*। अवधिनिर्णविषये श्रमणोपासकः। *सूत्र० ९*। प्रथमाश्रावकनाम। *आव०२१५*।

आणंदकूडे– आनन्दनाम्नो देवस्य कूटमानन्दकूटम्। *जम्बू० ३१३*।

आणंदपुरं– आनन्दपुरम्, इहलोकगुणविषये कच्छदेशे नगरम्। *आव० ८२४*। द्रव्यमूढोदाहरणे पुरं। *निशी० ४२* अ। स्थलपत्तनविशेषः। *निशी० २२९* अ। (मार्गोपसंपदि) नगरविशेषः। *निशी० २४१* अ। नगरविशेषः। *निशी० ७१* अ। क्षेत्रविपर्यासे नगरविशेषः। *निशी० ८*।

आणंदपुरे– मूलचैत्यगृहे सर्वजनसमक्षं दिवसतः कल्पकर्षणं भवति। *निशी० ३५५* अ।

आणंदरक्खिए– आनन्दरक्षितः, पार्श्वापत्यस्थविरनाम। *भग० १३८*।

आणंदा– आनन्दा, पूर्वदिग्रुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव० १२२*। दक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्यापरस्यां पुष्करिणी। *जीवा० ३६४*। अंजनकपर्वते पुष्करिणी। *स्था० २३०*। पौरस्त्यरुचकवास्तव्या तृतीया दिक्कुमारी। *जम्बू० ३९१*।

आणंदिए– आनन्दितः, तृष्टः, हृष्टः, ईषन्मुखसौम्यतादिभावैः समृद्धिमुपगतः। *भग० ११९, ३१७*।

आणंदियं– आनन्दितम्। स्फीतीभूतम्। *जीवा० २४३*।

आणइंति– आनयन्ति। *बृह० १०९* अ।

आणक्खिऊण– परीक्ष्य। *आव० २९१*।

आणक्खिस्सामि– अन्वीक्षिष्यामि–अन्वेषयिस्यामि। *आचा० २८२*।

आणक्खेउं– परीक्ष्य। *ओघ० ३३*। अनुमीथ। *बृह० १६४* आ।

आणक्खेऊण– ज्ञात्वा, निश्चित्य। *निशी० ६* आ।

आणात्तं- एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकं विमानम्। *सम० ३७*।

आणत्तं– अन्यत्वम्–अनगारद्वयसम्बधिनो ये पुद् गलास्तेषां भेदः। *भग० ७४१*।

आणत्तिअं– आज्ञप्तिकाम्, आज्ञां प्रत्यर्पयत। *जम्बू० १६२*।

आणत्तो– आज्ञप्तः। *आव० ४१९*।

आणपाण– आणप्राणः। *सूर्य० २९२*।

आणपाणकालो– आनपानकालः, उच्छ्वासनिःश्वासौ समुदि-तावेकः। *जीवा० ३४४*।

आणपाणलद्धी– अंतर्मुहूर्तेन चतुर्दशपूर्वपरावर्तनशक्तिः। *ओघ० १७८*।

आणमंति– आमनन्ति। *भग० १९*। उच्छ्वसन्ति, अन्तः–स्फुरन्तीमुच्छ्वासक्रियां कुर्वन्ति, आनमन्ति उच्छ्वसन्ति। *प्रज्ञा० २१९*। 'णमु प्रह्वत्वे' इत्येतस्यानेकार्थत्वेन श्वस-नार्थत्वात्, आनमन्ति इत्यनेनाध्यात्मक्रिया। *भग० १९*।

आणमणिया– आज्ञापनी, विंशतिक्रियामध्ये द्वादशी क्रिया। *आव० ६१२*। कार्ये परस्य प्रवर्त्तनं यथेदं कुर्विति भाषा। *प्रज्ञा० ६५३*।

आणय– आनतः, नवमदेवलोकनाम। *प्रज्ञा० ६९*।

आणरुई– आज्ञारुचिः, आज्ञा–सर्वज्ञवचनात्मिका तस्या रुचिः–अभिलाषो यस्य स आज्ञारुचिः। जिनाज्ञैव मे तत्त्वं न शेषं युक्तिजातमिति योऽभिमन्यते स आज्ञारुचिः। *प्रज्ञा० ५६*।

आणरुती– आज्ञारुचिः, आज्ञा–सर्वज्ञवचनात्मिका तया रुचिर्यस्य स तथा, यो हि प्रतनुरागद्वेषमिथ्याज्ञानत-याऽऽचार्यादीनामाज्ञयैव कुग्रहाभावाज्जीवादि तथेति रोचते सः। *स्था० ५०३*।

आणवणप्पओगे– आनयनप्रयोगः। *आव० ८४३*। इह विशि-ष्टावधिके भूदेशाभिग्रहे परतः स्वयंगमनायोगाद्यदन्यः सचि-त्तादिद्रव्यानयने प्रयुज्यते सन्देशकप्रदानादिना त्वयेदमानेयम् इत्यानयनप्रयोगः। (देशावकाशिके अतिचारः)। *उपा० १०*।

आणवणिया– आज्ञापनिका, जीवाजीवानानाययतः। *स्था० ३१७*। आज्ञापनस्य–आदेशनस्येयमाज्ञापनमेव वेत्याज्ञापनी सैवाज्ञापनिका, तज्जः कर्म्मबन्धः, आदेशनमेव वेति, आनायनं वा आनायनी। *स्था० ४३*।

आणवणी– आज्ञापनी, असत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै० २१०*। कार्ये परस्य प्रवर्तनी। *भग० ५००*।

आणवेस्सामि– आनाययिष्यामि। *आव० ४१०*।

आणा– आज्ञा, मौनीन्द्रवचनम्। *आचा० ४४*। तीर्थकरगण-धरोपदेशः। *दशवै० २६५*। ज्ञानाद्यासेवारूपजिनोपदेशः। *भग० ५४*। कर्त्तव्यमेवेदमित्याद्यादेशः। *भग० १६७*। दुवालसंगं गणिपिडगं। *निशी० ४* अ। उपदेशः। *सूत्र०*

१८३। अर्थः। *आव० ६०४*। आज्ञाप्यत–आज्ञाहिताहितप्राप्तिप-रिहाररूपतया सर्वज्ञोपदेशः। *आचा० ११३*। आज्ञया सूत्रा-ज्ञया अभिनिवेशतोऽन्यथापाठादिलक्षणया अतीतकाले अनंता जीवाश्चतुरन्तं संसारकान्तारं–नारकतिर्यग् नरामर-विविधवृक्षजालदुस्तरं भवाटवीगहनमित्यर्थः, अनुपरावृत्त-वन्तो जमालिवत् अर्थाज्ञया पुनराभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूप-णादिलक्षणया गोष्ठामाहिलवत् उभयाज्ञया पुनः पंचविधा-चारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादेरन्यथाकरण–लक्षणया गुरु-प्रत्यनीकद्रव्यलिंगधार्यनेकश्रमणवत् सूत्रार्थोभयैर्विराध्येत्यर्थः, अथवा द्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षमागमोक्तानुष्ठानमेवाज्ञा तया तदकरेनेत्यर्थः। *सम० १३३*। हे साधो ! भवतेदं विधेयमि-त्येवंरूपामादिष्टिः। *स्था० ३०१*। गूढार्थपदैरगीतार्थस्य पुरतो देशान्तरस्थगीतार्थनिवेदनाय गीतार्थो यदतिचारनि-वेदनं करोति सा। *स्था० ३०१*। यदगीतार्थस्य पुरतो गूढा-र्थपदैर्देशान्तरस्थगीतार्थनिवेदनायातिचारालोचनं इतरस्यापि तथैव शुद्धिदानं सा। *भग० ३८४*। *स्था० ३१८*। आदेशः। *भग० १२२*। *जीवा० २४३*। सर्वज्ञ वचनात्मिका। *प्रज्ञा० ५८*। आङिति स्वस्वभावावस्थानात्मिकया मर्यादयाऽ-भिव्याप्त्या वा ज्ञायन्तेऽर्था अनयेति, भगवदभिहितागमरूपा। *उत्त० ४४*। आगमः। *सूत्र० ४०५*। *आव० ८६२*। *उत्त० ४४९*। अनुज्ञा। *पिण्ड० १६९*। गुरुनियोगात्मिका। *उत्त० ५७२*। यथोक्ताज्ञापरिपालना। *नन्दी० २४८*। द्वादशांगं सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं, द्वादशांगमेव चाज्ञा, आज्ञाप्यते जन्तुगणो हितप्रवृत्तौ यया साऽऽज्ञेति, अथवा पंचविधाचा-रपरिपालनशीलस्य परोपकारकरणैकतत्परस्य गुरोर्हि-तोपदेशवचनमाज्ञा। *नन्दी० २४८*।

आणाइणो– आज्ञादयः, आज्ञाभङ्गादयः *पिण्ड० ६९*।

आणाइयं– आज्ञातिगं–आज्ञा–जिनादेशमतिगच्छति–अति-क्रामति यत्तत्, अधर्मद्वारस्य पाठान्तरेणाष्टाविंशतितमं नाम। *प्रश्न० २७*।

आणाईसरसेणावच्चं– आज्ञेश्वरसेनापत्यम्, आज्ञाप्रधानस्य सतो यत् सेनापत्यम्। *भग० १५४*। स्वस्वसैन्यं प्रत्यद्भुत-माज्ञाप्राधान्यम्। *प्रज्ञा० ८९*।

आणाकंखी– आज्ञाकांक्षी, आगमानुसारप्रवृत्तिकः। *आचा० २१०*।

आणानिद्देसयरे– आज्ञानिर्देशकरः, आज्ञा–'सौम्य ! इदं कुरु इदं च मा कार्षीः' इति गुरुवचनं तस्या निर्देशः, इदमित्थमेव करोमीति निश्चयाभिधानं, तत्करः। *उत्त० ४४*। भगवद-भिहितागमरूपया उत्सर्गापवादाभ्यां प्रतिपादनमाज्ञानिर्देशः इदमित्थं विधेयमिदमित्थं वेत्येवमात्मकः तत्करणशील-स्तदनुलोमानुष्ठानो वा। *उत्त० ४४*। आज्ञानिर्दे-शतरः–आज्ञानिर्देशेन वा तरति भवाम्भोधिमिति। *उत्त० ४४*।

आणानिद्देसे– आज्ञानिर्देशः, आज्ञा–भगवदभिहितागमरूपा तस्या निर्देशः–उत्सर्गापवादाभ्यां प्रतिपादनम्। *उत्त० ४४*।

आणापाण– आनप्राणः, उच्छवासनिःश्वासकालः। *भग० २११*।

आणापाणू– आनप्राण–अच्छवासनिःश्वासकालः, संख्या–तावलिकाप्रमाणाः। *स्था० ८५*।

आणाफलं– आज्ञाफलम्–जनेन यथोदितवचनप्रतिपत्तिरूपा फलं प्रयोजनं अस्य। *उत्त० ५८०*

आणामं– (अननम्–श्वसनम्)। *भग० १०९*।

आणामियं– आनामितम्, ईषन्नामितम्। *प्रश्न० ८२*। आरोपि-तम्। *जीवा० २७३*।

आणाय– आज्ञाय, स्वरूपाभिव्याप्त्याऽवगम्य। *उत्त० १०४*। आनायम्, जालम्। *उत्त० ४०७*। *प्रश्न० २२*।

आणारुइ– आज्ञारुचिः, आज्ञा–सर्वज्ञवचनात्मिकां तया रुचिर्यस्य सः। *उत्त० ५६३*। आज्ञा–सूत्रव्याख्यानं निर्यु-क्त्यादिश्रद्धानम्। *औप० ४४*। सूत्रव्याख्यानं निर्युक्तादि तत्र तया वा रूचिः–श्रद्धानम्। *स्था० १९०*। *भग० ९२६*।

आणाविजए– आज्ञाविचयम्, आज्ञागुणानुचिन्तनम्। *औप० ४४*। प्रवचनपर्यालोचनविषयमाज्ञालोचनविषयं धर्मध्यानम्। *स्था० १९०*। आणाविजय–आज्ञा–जिनप्रवचनं तस्या विचयो–निर्णयो यत्र तदाज्ञाविचयम्। *भग० ९२६*। आज्ञा वा विजीयते अधिगमद्वारेण परिचिता क्रियते यस्मिन्निति। *स्था० १९०*। आ–अभिविधिना ज्ञायन्तेऽर्था यया साऽऽ-

ज्ञाप्रवचनं सा विचीयते–निर्णीयते पर्यालोच्यते वा अस्मिंस्तत्। *स्था० १९०*।

आणावियं– आनायितम्। *आव० ४२२*

आणासाएमाणे– अनाशयमानः, आशावीषयमकुर्वाणोऽना-स्वादयन वाऽभुञ्जानोऽतर्कयन्नस्पृहयन्नप्रार्थयमानोऽनभिलषन् । *उत्त० ५८८*।

आणितिल्लयं– आनीतः। *आव० ५५८*।

आणिमलो– अनलगिरिगजस्य विष्ठा। *निशी० ३४१* अ।

आणुकंपिए– अनुकम्पितः, कृपावान्। *भग० १६१*।

आणुग– अनूपः–नद्यादिपानीयबहूलः। *बृह० १७५* आ।

आणुगामिए– देशान्तरगतमपि ज्ञानिनं यदनुगच्छति लोचनव-दिति तदेवानुगामिकम्। *स्था० ३७०*। धूमादिहेतुरनुगामि ततो जातमानुगामिकम्–अनुमानं तद्रूपो व्यवसायः। *स्था० १५१*।

आणुगामियं– आनुगामिकम् *औप० ५८*। आनुगामुकः–अनुग-मनशीलः। *आव० २८*।

आणुगामियत्ताए– आनुगामिकत्वाय, शुभानुबन्धायेत्यर्थः। *भग० ४५१*। भवपरम्परानुबन्धसुखाय। *भग० ११५*।

आणुपुव्वी– आनुपूर्वी, शिष्यप्रशिष्यपरम्परात्मिका। *उत्त० ८*। क्रमेण मरणकालं पत्तस्स आणुणुव्वी। *निशी० ५३* अ। वृषभनासिकान्यस्तरज्जूसंस्थानीया, यया कर्म्मपुद्गलसंहत्या विशिष्टं स्थानं प्राप्यतेऽसौ, यया वोर्ध्वोत्तमाङ्गा-धश्चरणादिरूपो नियमतः शरीरविशेषो भवति सा। *आव० ८४*। यथाऽऽसन्नम्। *भग० २१*। मूलादिपरिपाटी। *जीवा० १८७*। *आव० ८०३*। क्रमेण यथाऽऽसन्नम्। *जम्बू० ४६१*। शास्त्रीयोपक्रमाद्यभेदः। *स्था० ४*। *आव० ५६*। यदुदया-दन्तरालगतौ जीवो याति तदानुपूर्वीनाम। *सम० ६७*। *उत्त० ६४१*। आनुपूर्वी-यथासन्नम। *जीवा० २०*।

आणुपुव्विंगढिया– अनुपूर्व्या–परिपाट्या ग्रथिता–गुम्फिता इति आनुपूर्वीग्रथिता। *भग० २१४*।

आणुपुव्वो– आनुपूर्वः, क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरभावरूपः। *जीवा० १९८*।

आणू– उस्सासो। *दशवै० ५४*।

आतंतमे– आत्मतमः–आत्मानं तमयति–खेदयति इति आत्मतमः–आचार्यादिः। आत्मनि तमः–अज्ञानं क्रोधो वा यस्य स आत्मतमाः। *स्था० २१४*।

आत– (आय)–अप्पा। *निशी० ३२* अ।

आतवेतावच्चकरे– आत्मवैयावृत्यकरः, अलसो विसम्भोगिको वा। *स्था० २४१*। आत्मवैयावृत्त्यकरः–यस्मात् स तपसा पूर्वसंचितकर्ममलं शोधयन्नात्मन एवोपकारे वर्तते ततः सः। *व्यव० १४८* आ।

आतसरीरसंवेगणी– आत्मशरीरसंवेगनी–यदेतदस्मदीयं शरी-रमेतदशुचि अशुचिकारणजातमशुचिद्वारविनिर्गतमिति न प्रतिबन्धस्थानमित्यादिकथनरुपा। *स्था० २१२*।

आतावणा– आतापना। *प्रश्न० १०७*।

आतावते– आतापयति–आतापनां शीतातपादिसहनरूपां करोति इति आतापकः। *स्था० २९९*।

आतियं– आचितम्, रचितम्। *प्रश्न० ४७*।

आतियणो– अदने–भक्षणे। *व्यव० १८०* अ।

आतियाणे– भुंजणवेलाए ठाति। *निशी० ३८* आ।

आतूलुगा– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा० ३४*।

आतो– आयः। *उत्त० १४७*। आहोस्वित्। *उत्त० ३२३*।

आतो(उ)ज्जं– आतोद्यम्, वाद्यभ्। *प्रश्न० ८*। पटहादिः। *स्था० ६३*।

आत्तएणं– आदत्तेन–गृहीतेन, आत्मीयेन वा। *अनुयो० २२*।

आत्ततरः– दृढतरः, अयमनयोरतिशयेनात्तो–गृहीतो यत्नेना-ध्यवसित इत्यर्थः। *आचा० २९४*।

अत्तपण्णहा– आत्तप्रज्ञाहा, आत्तां–सिद्धान्तादिश्रवणतो गृहीतामाप्तां वा–इहपरलोकयोः सद्बोधरूपतया हितां प्रज्ञाम्–आत्मनोऽन्येषां वा बुद्धिं कुतर्कव्याकुलीकरणतो हन्ति यः स। *उत्त० ४३५*।

आत्मछन्दाः– आत्मनैव उपधेरानयनाय छन्दोऽभिप्रायो विद्यते येषां तु आत्मछन्दसः। *व्यव० २१* आ।

आत्मरक्षी– विषयाभिलाषविगमान्निर्निदानः सन् आत्मानं रक्ष-त्यपायेभ्यः–कुगतिगमनादिभ्य इत्येवंशीलः। *उत्त० २२५*।

आत्मवादी– अस्त्यात्मा स्वतो नित्य इतिवादी। *आव० ८१६*।

आत्मसमीपे– आत्मोत्सङ्गे। *ओघ० ११८*।

आत्मसंवेदनीय– आत्मना क्रियत इति। *आव० ४०५*।

आत्मागम– अत्तागम, गुरूपदेशमन्तरेणात्मन एव आगमः। *अनुयो० २१९*।

अत्ताहिड्डियजोगी– आत्माधिष्ठितयोगी, आत्माधिष्ठि–तेनल-ब्धेन भक्तादिना युज्यत इति, अत्तलद्धिओ। *ओघ० १५१*।

अत्तट्ठे- आत्मार्थ अर्थ्यमानतया स्वर्गादिः, यद्वा आत्मैवार्थः। *उत्त० २८४*। विशोधनम्। *व्यव० ११५* अ।

अत्तट्ठियं- आत्मार्थिकम्- आत्मनोऽर्थः, आत्मार्थस्तस्मिन् भवम्। *उत्त० ३६०*।

आदंसग– आदर्शकः–दर्पणः। *उत्त० ६५०*।

आदंसगहत्थिआ– आदर्शहस्ता। *आव० १२२*।

आदंसिआइ– खाद्यविशेषः। *जम्बू० ११८*।

आदण्ण– खिन्नः। *आव० ९४, ३५५*।

आददति– विदधति। *प्रश्न० १०७*।

आदर्शकगृहं– भरतकेवलज्ञानस्थानम्। *प्रज्ञा० २०*।

अद्दागसमाण- आदर्शसमानः आदर्शसमानो, यो हि साधुभिः प्रज्ञाप्यमानानुत्सर्गापवादादीनागमिकान् भावान् यथावत्प्र-तिपद्यते सन्निहितार्थादर्शकवत् स आदर्शसमानः। *स्था० २४३*।

आदाण– आदानम्, आदीयते–स्वीक्रियतेऽष्टप्रकारं कर्म येन तत्, कषायाः, परिग्रहः, सावद्यानुष्ठानं वा। *सूत्र० २६४*। (बहिद्धादाणं)–बहिर्द्धा–मैथुनम् आदानं च–परिग्रहः, परिग्राह्यं वा वस्तु धर्मोपकरणाद् बहिः। *स्था० २०२*। मोक्षार्थिनाऽऽ–दीयते–गृह्यत इति, संयमः। *सूत्र० २२९*। कारणम्। *निशी० ११६* अ। प्रभवः, प्रसूतिः। *निशी०* पू० *११६* अ। ग्रहणम्। *आव० ८२२*। आदीयत इति, धनम्। *आव० ६४६*। *निशी० ३१७* अ। आदानः, अंशः। सूर्य *२०९*।

आदाणणिक्खेवणासमिती– आदानिक्षेपणासमितिः, जं वत्थ-पायसंथारगफलगपीढगकारणट्ठा गहनिक्खेवकरणं पडिलेहिय पमज्जिय सा। *निशी० १७* अ।

आदाणनिक्खिवणअणाभोगकिरिया– आदाननिक्षेपानाभोग-क्रिया, रजोहरणेनाप्रमार्ज्य पात्रचीवरादीनामादानं निक्षेपं वा करोति सा। *आव० ६१४*।

आदाणभयं– आदानभयम्, धनस्य चौरादिभ्यो यद्भयम्। *आव० ६४६*। धनहरणभयं। *आव० ४७२*। आदानं–धनं–तदर्थं चौरादिभ्यो यद्भयम्। *स्था० ३८९*। द्रव्यमाश्रित्य भयम्। प्रश्न *१४३*।

आदाणभरियंसि– आद्रहणभृते। *उपा० ३४*।

आदाणिज्जं– आदानीयम्, सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चदशाध्ययनम्। *सूत्र० २५२*।

आदाणियं– आदानीयम्, आदीयते–गृह्यते उपादीयत इति, पदमर्थो वा। *सूत्र० ९*।

आदाणीय– आदानीयः, उपादेयः। *सम० ८१*। *स्था० ३६९*। परमार्थतो भावादानीयं ज्ञानदर्शनचारित्ररूपं तत्। *आचा० १४०*।

आदिंतियमरण– यानि हि नरकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्य-नुभुय म्रियते मृतश्र्च न पुनस्तान्यनुभूय पुनर्मरिष्यत इत्येवं यन्मरणं। *भग० ६३४*।

आदि– आदिः, कारणम्। *प्रश्न० ४*।

आदिए– आददीत, गृह्णीयात्। *उत्त० ५१७*।

आदिकरः– आइगर, आदौ प्राथम्येन श्रुतधर्म्ममाचारादिग्र-न्थात्मकं करोति–तदर्थप्रणायकत्वेन प्रणयतीत्येवंशील आदिकरः। *सम० ३*। प्रथमतया प्रवर्त्तनशीलः। *व्यव० ३८५* अ।

आदिगरमंडलगं– आदिकरमण्डलम्। *आव० १४६*।

आदिच्चो– आदित्यः। *जीवा० ३२१*। सूर्यसंवत्सरः। *सूर्य० १२*।

आदिट्ठ– आदिष्टः, विशेषितः। *भग० ४७*।

आदिट्ठा– गृहीता। *निशी० २०७* आ।

आदित्यमासः– त्रिंशदहोरात्राणि रात्रिन्दिवस्य चार्द्ध, दक्षिणा-यनस्योत्तरायणस्य वा षष्ठभागमानः। *बृह० १८६* आ।

आदित्ययशा– भरतपुत्रनाम। *व्यव० १३९* आ।

आदिमा भावा– आवश्यकादयः सूत्रकृताङ्गं यावद् ये आगमग्रन्थास्तेषु ये पदार्था अभिधेयास्ते। *बृह० १२८* आ।

आदित्यरथः– वालिसुग्रीवपिता विद्याधरः। *प्रश्न० ८९*।

आदियणं– ग्रहणं। *निशी० १३४* अ। पिबंतस्स। *निशी० ६५* आ।

आदियणआ– आदानम्, ग्रहणम्। *आव० ६१४*।
आदियणा– आदानम्, परधनस्य ग्रहणं, तृतीयाधर्मद्वारस्य पञ्चदशं नाम। *प्रश्न० ४३*।
आदीअदिट्ठभावे– आदौ–आवश्यकादिशास्त्रेषु वर्त्तमाना अदृष्टा भावा येनः सः। *बृह० १२६* आ।
आदेज्ज– आदेया, दर्शनपथमुपागता सती पुनः पुनराकाङ्क्षणीया। *जम्बू० १११*। आदेयः, रम्यः। *प्रश्न० ८३*।
आदेज्जनाम– आदेयनाम, यदुदयवशात् यच्चेष्टते भाषते वा तत्सर्वं लोकः प्रमाणीकरोति दर्शनसमनन्तरमेव च जनोऽ-भ्युत्थानादि समाचरति तत्। *प्रज्ञा० ४७५*।
आदेयवचनता– सकलजनग्राह्यवाक्यता। *उत्त० ३९*।
आदेशकषाय– कैतवकृतभृकुटिभंगुराकारः। *आव० ३९०*।
आदेशिकं– श्रमणानुद्दिश्यादेशम्। *बृह० ८३* अ।
आदेसं– उद्दिट्ठ। *निशी० २३०* आ। विशेषं प्रतिनियतव्यक्त्यात्मकम्। *उत्त० ६७३*।
आदेसतिगं– आदेशत्रिकम्, मतत्रिकम्। *पिण्ड० १०*।
आदेसदव्वसुद्धी– आदेशद्रव्यशुद्धिः, द्रव्यशुद्धिभेदः। *दशवै० २११*।
आदेसा– पाहुणा। *निशी० १११* अ। प्राघूर्णकाः। *बृह० ८५* आ।
आदेसे– आदेशः, आदिश्यते यस्मिन्नागते सम्भ्रमेण परिजनस्तदासनदानादिव्यापारे सः, प्राघूर्णकः। *सूत्र० ३००*।
आदेसो– आदेशः, प्रकारः। *जीवा० ५३*। सुत्ताएसो। *निशी० ७१* अ। अनुज्ञा। *व्यव० ३४६* अ। नयान्तरविकल्पः। *व्यव० ३५४* आ।
आद्यशब्द– तर्कणादोषादिप्रतिपादनः। *निशी० २२५*।
आद्रहणम्– उच्छलदुष्णजलम्। *दशवै० १७४*। *पिण्ड० ३५*।
आधरिसितो– आधर्षितः। *आव० ३१*।
आधत्त– आधत्तम्, ग्रहणके मुक्तम्। *बृह० १२०* अ।
आधरिसेहिति– आधर्षिष्यति। *आव० १७४*।
आधाकम्मिए– आधाय–आश्रित्य साधून् कर्म्मसचेतनस्याचे-तनीकरणलक्षणा अचेतनस्य वा पाकलक्षणा क्रिया यत्र भक्तादौ तदाधाकर्म्म तदेवाधाकर्म्मिकम्। *स्था० ४६०*।
आधायणं– जत्थ वा महा संगामे मता। *निशी० ७३* अ।
आधिः– मनःपीडा। *भग० ४*।
आधिदैविकम्– दैवादिसत्कं दुःखम्। *उत्त० २६६*।
आधिभौतिकम्– अन्यभूतसत्कं दुःखम्। *उत्त० २६६*।
आधूय– भ्रमयित्वा जलेन सदाहत्याहत्य। *जम्बू० २३०*।
आधूयारुहकम्- हरितभेदः *आचा० ५७*।
अज्झत्थियं- आध्यात्मिकम् आत्मसत्कं दुःखम्। *उत्त० २६६*। आत्मनि क्रियमाणम्। *आचा० ४१६*।
आनगारिकम्– अनगारेषु–भावभिक्षुषु भवमानगारिकमनुष्ठानम्। *उत्त० ३३९*।
आनन्द– श्रुतसामायिकलाभे दृष्टान्तः। *आव० ३४७*।
आनन्दपुरम्– स्थलपत्तने नगरविशेषः। *बृह० १८१* आ। जितारिराज्ञः राजधानी । *बृह० १०७* आ। नगरविशेषः। *व्यव० १४६* अ, *४* आ। *व्यव० २६६* अ।
आनन्दविजयः– आचार्यनामविशेषः। *जम्बू० ५४५*।
आनन्दविमलः– आचार्यनामविशेषः। *जम्बू० ५४३*।
आनुगामिकः– आ–समन्तादनुगच्छतीत्येवंशीलमानुगामिकः, अनुगमः प्रयोजनं यस्य सः। *प्रज्ञा० ५३९*। अनुगच्छति साध्याभावे न भवति यो धूमादिहेतुः सोऽनुगामी ततो जात-मानुगामिकं, अनुमानं, तद्रूपो व्यवसयायः। *स्था० १५१*।
आनुपूर्वी– यथासन्नम्। *प्रज्ञा० ५०३*। कूर्प्परलाङ्गलगोमूत्रिका-कारेण यथाक्रमं द्वित्रिचतुःसमयप्रमाणेन विग्रहेण भवान्तरो-त्पत्तिस्थानं गच्छतो जीवस्यानुश्रेणिनियता गमनपरिपाटी। *प्रज्ञा० ४७३*।
अनुक्रमः– अनुपरिपाटी। *अनुयो० ५१*।
आपणवीही– आपणवीथिः, रथ्याविशेषः। *जम्बू० ४१३*। आपणवीथिः। *भग० ४७६*।
आपन्नपरिहार– मासिकं वा द्विमासिकं वा यावत् षण्मासिकं वा प्रायश्चित्तं। *व्यव० ४५* आ।
आपाकः– भाण्डपचनस्थानम्। *स्था० ४१९*।
आपागपत्तं– आपाकप्राप्तम्, ईषत् पाकाभिमुखीभूतम्। *प्रज्ञा० ४५९*।
आपाण्डु– आ–ईषच्छुभ्रत्वभाजः, पाण्डुः। *उत्त० ६८९*।
आपीडः– शेखरकः। *जीवा० २७२*। आमेलकः–शेखरकः। *जीवा० २०७, ३६१*।
आपुच्छणा– आप्रच्छनमापृच्छा,

विहारभूमिगमनादिप्रयोजनेषु गुरोः कार्या, समाचार्याः षष्ठभेदः। *आव० २५९*। आपृच्छना। *ओघ० १५१*। *भग० ९२०*। स्वकार्यप्रवृत्तावापृच्छनम्। *बृह० २२२अ*। विहारभूमिगमनादिषु प्रयोजनेषु गुरोः पृच्छा। *स्था० ४९९*।

आपूरितं– आपूर्यमाणम्, परिसंस्थिते पवने भूयो जलेन ध्रिय-माणम्। *जीवा० ३०८*।

अत्त– आप्त, ज्ञानदर्शनचारित्राणि येनाप्तानि स, रागद्वेषप्रहीणः, इष्टाः शोध्यै शैधि विषये ये आप्ताः। *व्यव० ३८९आ*।

आप्तप्रज्ञाहा– सिद्धान्तादिश्रवणतो गृहीतामाप्तां वा इहपरलो-कयोः सद्बोधरूपतया हितां–प्रज्ञाम्–आत्मनोऽन्येषां वा बुद्धिं कुतर्कव्याकुलीकरणतो हन्ति यः सः। *उत्त० ४३५*।

आप्नोति– आत्मवशतां नयति। *प्रज्ञा० ३६२*।

आप्रच्छना– भदन्त ! करोमीदमित्येवं गुरोः प्रच्छनमाप्रच्छना। *अनुयो० १०३*। *सम० १५८*।

आप्फोडिऊण– आस्फोट्य। *आव० १६८*।

आबद्धसेओ– आबद्धस्वेदः। *आव० ५१५*।

आबद्धो– आबद्धः, आरब्धः। *आव० ५१५*।

आबाहा– आबाधा, ईषद्बाधा। *भग० २१८*। *जम्बू० १२४*। जन्मजरामरणक्षुत्पिपासादिका आबाधा। *स्था० ४८८*।

आबाहाए– अन्तरे कृत्वेति शेषः। *सम० १६*।

आभंकरं– सनत्कुमारकल्पे त्रिसागरस्थितिकं विमानं। *सम० ८*।

आभंकरपभंकरं– आभंकरवत्। *सम० ८*।

आभंकरे– आभङ्करः, सप्ततितमग्रहनाम। *स्था० ७९*। अष्टषष्टितमग्रहनाम। *जम्बू० ५३५*।

आभट्ठो– आभाषितः, संलप्तः। *आव० २४१*।

आभरण– आभरणानि, मुकुटादीनि। *जम्बू० १४५*।

आभरणचङ्गेरी– देवछन्दके पूजोपकरणम्। *जीवा० २३४*।

आभरणपिया। *निशी० ९अ*।

आभरणवासा– आभरणवर्षा, आभूषणवर्षणम्। *भग० १९७*।

आभरणविचित्ताणि– आभरणविचित्राणि, गिरिविडकादि–विभूषितानि। *आचा० ३९४*। *निशी० २५५ अ*।

आभरणविधी– हारऽद्धहारादिया आभरणविधी। *निशी० २७६आ*। उपभोगविधिविशेषः। *उपा० ३*।

आभरणवुट्ठी– आभरणवृष्टिः। *भग० १९१*।

आभरणाणि– आभरणानि, अङ्गपरिधेयानि। *जम्बू० २२१*। आभरणप्रधानानि। *आचा० ३९४*। *निशी० २५५अ*।

आभवंतितो– आभवन्तिकः–व्यवहारः। *व्यव० ३८१आ*।

आभवति– स्वं भवति। *आव० ८२१*।

आभव्वं– आभाव्यं, शैक्षः शैक्षिका वा। *बृह० ७०आ*।

आभा– आभा, आकारः। *प्रज्ञा० ८०*। छायावर्णः। *सम० १४०*। प्रतिभासः। *जीवा० ३११*। वर्णस्वरूपम्। *जीवा० १०३*।

आभागी– भोक्ता। *आव० ८१५*।

आभासइ– आभासयति, समन्ततः सर्वासु दिक्षु अवभा-सयति। *जीवा० ३१२*।

आभासिआ– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५*।

आभासिता– लवणान्तरद्वीपनाम। *स्था० २२५*।

आभासितो– आभाषिकः, अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा० १४४*।

आभासियं– अभाषिकम्–विवक्षितभाषामजानानः। *आव० ६१४*।

आभासिय– आभाषिकः, म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४*।

आभासियदीवे– अन्तरद्वीपनाम। *स्था० २२५*।

आभिओग– आ–समन्तादाभिमुख्येन युज्यन्ते–प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यन्ते इति आभियोग्याः–शक्रलोकपालप्रेष्यकर्म-कारिणो व्यन्तरविशेषाः। *जम्बू० ७५*। आभियोग्यम्।–कर्मकरभावः। *दशवै० २४८*। अभियोग्यभावना-कुत्सित-भावना। *उत्त० ७०७*। अभियोगभावनाजनितः। *स्था० २७४*।

आभिओगसेढीओ– आभियोग्याः–शक्रलोकपालप्रेष्यकर्मका-रिणो व्यन्तरविशेषास्तेषामावासभूते श्रेण्यौ। *जम्बू० ७५*।

आभिओगिए– आभियोगिकः अभियोगे–प्रेष्यकर्म्मणि व्यापार्यमाणत्वे नियुक्ताः। *जीवा० २४३*।

आभिओगिय– आभियोगिकः, वशीकरणाय मन्त्राभिसंस्कृ-तम्। *आव० ६४२*।

आभिओग्ग– आभियोग्यम्, वशीकरणादि द्रव्यतो द्रव्य-संयोगजनितं, भावतो विद्यामन्त्रादिजनितम्,

बलात्कारो वा। *प्रश्न० ३८*। आभियोगः–कार्मणम्। *बृह० १२२* आ।

आभिग्गहिओ– आभिग्रहिकः, अभिग्रहेण निर्वृत्तः, कायो–त्सर्गः। *आव० ७८३*।

आभिचारुका– विद्याविशेषः। *बृह० २०३* आ।

आभिडणं– आवडणम्। *ओघ० २०४*।

आभिणिबोहिय– आभिनिबोधिकम्, अभिमुखो–योग्यदेशाव-स्थितवस्त्वपेक्षया नियतः–स्वस्वविषयपरिच्छेदकतयाऽव-बोधः–अवगमोऽभिनिबोधः, स एवाभिनिबोधिकम्। *उत्त० ५५७*। अर्थाभिमुखो नियतः-प्रतिनियतस्वरूपो बोधोबोध-विशेषः, अभिबुध्यतेऽस्माद् अस्मिन् वेति। *प्रज्ञा० ५२६*। आभिनिबोधिकम्–मतिज्ञानम्। *आव० १८*। आभिमुख्येन निश्चितत्वेनावबुध्यते–संवेदयते आत्मा तदिति, आभि-निबोधः, अवग्रहादिज्ञानं, अथवा आत्मा तेन प्रस्तुतज्ञानेन तदावरणक्षयोपशमेन वा करणभूतेन घटादि वस्त्वभिनिबु-ध्यते, तस्माद् वा प्रकृतज्ञानात् क्षयोपशमाद्वाऽभिनिबुध्यते, तस्मिन् वाऽधिकृतज्ञाने, क्षयोपशमे वा सत्यभिनिबुध्यतेऽ-वगच्छतीत्यभिनिबोधो ज्ञानम्, क्षयोपशमो वा, सो वा 'अभिणिबुज्झए'त्ति, अथवाऽभिनिबुध्यते वस्त्वभिग-च्छतीत्यभिनिबोधः, स एवाभिनिबोधिकम् (?) अभीत्या-भिमुख्ये नीति नैयत्ये, ततश्चाभिमुखोवस्तुयोग्यदेशावस्था-नापेक्षी नियतइन्द्रियाण्याश्रित्य स्वस्वविषयापेक्षी बोधः, अभिनिबुध्यते आत्मना सः। अभिनिबुध्यते वस्त्वसौ इत्यभिनिबोधः स एवाभिनिबोधिकम्। *अनुयो० २*।

आभिणिबोहियनाण– अर्थाभिमुखोऽविपर्ययरूपत्वात् नियतोऽसंशयरूपत्वाद्बोधः–संवेदनमभिनिबोधः स एव स्वार्थिके कप्रत्ययोपादानादाभिनिबोधिकं ज्ञातिर्ज्ञायते वाऽनेनेति ज्ञानम् आभिबोधिकं च तज्ज्ञानं चेति आभिनि-बोधिकज्ञानम्, इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तो बोध इति। *भग० ३४३*। इन्द्रियपञ्चकमनोनिमित्तो बोधः। *अनुयो० २*। अर्था-भिमुखो नियतो बोधः, अभिनिबोधे भवं तेन वा निर्वृत्तं तन्मयं तत्प्रयोजनं वा, अथवा अभिनिबुध्यते तत्, अथवा अभिनिबुध्यते ऽनेनास्माद्वा अस्मिन् वा तत् तदावरणकर्म-क्षयोपशम इति भावार्थः। *आव० ७*। अभिनिबोधिकम्, आत्मैव वाऽभिनिबोधोपयोगपरिणामानन्यत्वाद् अभिनिबुध्यत इति वा। *आव० ७*।

आभियोगिक– अभियोगभावनाभावितत्वेनाभियोगिकदेवे-षूत्पन्ना अभियोगवर्तिनः। *भग० १९०*।

आभियोगिय– आभियोगिकः, अभियोजनं–विद्यामन्त्रादिभिः परेषां वशीकरणादि येषां ते। *प्रज्ञा० ४०६*।

आभियोगी– आभिओगा–किङ्करस्थानीयदेवविशेषास्तेषामिय-माभियोगी। *बृह० २१२* आ। आभियोग्याः–आभिमुख्येन युज्यन्ते–प्रेष्यकर्म्मणि व्यपार्यन्त इत्याभियोग्याः, किङ्कर-स्थानीयदेवविशेषाः। *बृह० २१२* आ।

आभिसेक्कं– आभिषेक्यम्, अभिषेकयोग्यं, राजपरिधेयम्। *जम्बू० २१६*।

आभीरविसओ– आभीरविषयः, देशनाम। *आव० ४१२*। *निशी० १०२* आ।

आभोइत्ता– आभोगयित्वा, ज्ञात्वा। *दशवै० १७९*।

आभोइतो– आभोगितः। *उत्त० १३३*।

आभोएउं– आमोगयित्वा, उपयोगपूर्वकेनावधिना विज्ञाय। *आव० १२८*।

आभोएति– आभोगयति। *आव० १२४*।

आभोग– आभोगः, जानता योऽतिचारः कृतः। *आव० ५६४*। अभिसन्धिः। *भग० २०*। आलोचनमभिसन्धिः। *प्रज्ञा० ५००*। उपकरणम्। *ओघ०३३*। उपयोगः। *बृह० २११* आ। *स्था० ५०५*। आभोगनमाभोगः, उपयोगविशेषः। *आव० ६१९, ६२६*। विस्तारः। *विपा० ३९*।

आभोगण– आभोगनम्, अर्थावग्रहसमानन्तरमेव सद् भूतार्थ विषयाभिमुखमालोचनम्। *१७६*।

आभोगणिव्वत्तिए– यदा परस्यापराधं सम्यगवबुद्ध्य कोपकारणं च व्यवहारतः पुष्टमवलम्ब्य नान्यथाऽस्य शिक्षोपजायते इति आभोग्य कोपं विधत्ते तदा स कोप आभोगनिर्वर्त्तितः। *प्रज्ञा० २९१*। आभोगेन निर्वर्त्तितः–उत्पादित आभोगनिर्वर्त्तित आहारयामीतीच्छापूर्वं निर्मापितः। *प्रज्ञा० ५००*।

आभोगबउस– आभोगबकुशः, य आभोगेन जानन् करोति

सः, बकुशस्य प्रथमो भेदः। *उत्त० २५६*। आभोगः–साधूनामकृत्यमेतच्छरीरोपकरणविभूषणमित्येवं ज्ञानं तत्प्रधानो बकुश आभोगबकुशः। *भग० ८९०*। शरीरोपकरणभूषयोः सञ्चिन्त्यकारी। *स्था० ३३७*।

आभोगिणी– यं परिजपिता सती मानसं परिच्छेदमुत्पादयति सा। *बृह० ३३* अ। जा विज्जा जविता माणसं परिच्छे-दमुत्पादयति सा। *निशी० १७७* अ।

आमं– आमम्। *दशवै० १७६*। अपरिणतम्। *पिण्ड० ६५* अविशोधिकोटिः। *बृह० २०१* अ, *५१* अ। आमं णाम जं अपोलियं अग्गिणा ण पक्कंति, अण्णेण वा केणइ पगारेण न पक्कं–णिज्जीवं। *निशी० १५७* अ। असत्थपरिणयं। *दशवै० ५१*। अनुमतार्थद्योतकम-व्ययम्। *बृह० १६६* अ। सचित्तं। *दशवै० ८६*। अपक्वरसम्। *प्रश्न० ६०*। अनुमतौ सम्मतमेतदस्माकं सर्वमितिभावः। *व्यव० ७१* अ। अपक्वः। *व्यव० १०६* आ। जओ तेहिं उग्गमा-दिदोसेहिं घेप्पमाणेहिं चारित्तं अविपक्कं अपज्जत्तं आमं भवति तेण ते आमं भण्णति, शब्दमात्रोच्चारणम् सरडीभूतं जो वरिसतायुपुरिसो वरिससतं अंतरे मरंतो आमो भण्णति। *निशी० १२६* अ। अपक्वम्। *आव० १३०*। स्वी-कारेऽव्ययम्। *आव० ६४*। *आव० १९४*। *आव० ४०८*। अशस्त्रोपहतम्। *आचा० ३४८*। *दशवै० २२९*। अजीर्णम्। *दशवै० २७०*। आमाम्-असिद्धां, सचेतनाम् अपरिणतं, अपक्वाम्। *दशवै० १८५*। अपरिशुद्धम्। *आचा० १३१*।

आमंडे– आमलकम्, परिणामिक्यां सप्तदमोदाहरणम्। नंदी। *१६५*। आम्लकम्–आमलकम्। *आव० ४३६*।

आमंतणी– आमन्त्रणी, असत्यामृषाभाषायाः प्रथमो भेदः। *दशवै० २१०*। हे देवदत्त ! इत्यादिरूपा भाषा। *प्रज्ञा० २५६*। हे देवदत्त ! इत्यादिका, असत्यामृषाभाषा। *भग० ५००*।

आमंतयामो– आमन्त्र्यावहे, पृच्छावः। *उत्त० ३९८*।

आमंतिओ– आमन्त्रितः, सम्भाषितः, पृष्ठो वा। *उत्त० ३९२*।

आमंतेयव्वो– आपुच्छियव्वो। *निशी० ९७* आ।

आमगं– अपक्वम्। *भग० ६८४*।

आमगंधि– आमगन्धयः, विश्राः। *सम० १३६*।

आमज्जति– अक्खिपत्तरोमे संठवेति। *निशी० ११०* अ। हत्थेण आमज्जति। *निशी० १८७* आ।

आमज्जमाणे– आमर्जयन्, सकृद्धस्तादिना शोधयन्। *आचा० ३४३*।

आमज्जिज्ज– सकृदामृज्यात्। *आचा० ३३७*।

आमड्ड– विपर्यासीकृतम्, परामड्ड। *ओघ० १९२*। आमृष्टम्, तेजःप्रकर्षारोपणाय मनःशिलादिना समन्तात्पराकृष्टम्। *उत्त० ५२७*।

आमडागं– आमपत्रम्, अरणिकतन्दुलीयकादि तच्चार्द्धपक्व-मपक्वं वा। *आचा० ३४८*।

आममहुरे– आममधुरम्, ईषन्मधुरम्। *स्था० १९६*।

आमरणदोसो– आमरणदोषः, महदापद्गतोऽपि स्वतो महदा-पद्गतेऽपि च परे आमरणादसञ्जातानुतापः, अपि त्वसमाप्ता-नुतापानुशयपर इति। *आव० ५९०*।

आमरणंतदोसे– आमरणान्तदोषः–आमरणान्तमसंजाता-नुपातस्य हिंसादिषु प्रवृत्तिः सैव दोषः *स्था० १९०*।

आमर्षौषधिः– ऋद्धिविशेषः। *प्रज्ञा० ४२४*।

आमलए– आमलकम्। *आव० ८३१*। आमरकः, सामस्त्येन मारिः। *स्था० ५०८*। फलविशेषः। *पिण्ड० २२*। *दशवै० १००*।

आमलकप्प– आमलकल्पा, नगरीविशेषः। *आव० ३१४, ३१५, ७०७*। *उत्त० १५९*।

आमलग– आमलक, बहुबीजो वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*। *भग० ८०३*।

आमलगा– आमलकानि। *अनुयो० १९२*।

आमलपाणगं– फलविशेषप्रक्षालनजलं। *आचा० ३४७*।

आमाघाओ– अमाघातः, (अमारीपटहः)। *आव० ४०१*।

आमिस– आमिषः–मांसः। *उत्त० ६३४*। आमिषाद्–गृद्धि-हेतोरभिलषितविषयादेः। *उत्त० ४०९*।

आमिसभोगगिद्ध– आमिषभोगगृद्धः, आमिषस्य–मांसादेर्भोगः–अभ्यवहाररस्तत्र गृद्धः। *उत्त० ६३४*।

आमिसावत्ते– मांसाद्यर्थं परिभ्रमणम्। *स्था० २८८*।

आमुसंत– आमृशन्, स्पृशन्। *दशवै० १३७*। *आचा० ११*। आमृशन्, भगवत्पादारविन्दं भक्तिः करततलयुगादिना स्पृ-शन्। *स्था० ९*। *उत्त० ८०*।

आमुसिज्जा– आमर्षणम्, सकृदीषद्वा। स्पर्शनम्। *दशवै० १५३*।

आमे– आमः, अविशोधिकोट्याख्यदोषः। *सूत्र० १४५*।

आमेड– आमेलः, आपीडः, शेखरकः। *जीवा० १७२*।

आमेडणा– आम्रेडना, विपर्यस्तीकरणम्। *प्रश्न० ५६*।

आमेल– आपीडः, शेखरकः। *प्रज्ञा० ९६*। *भग० ४५९*। पुष्पशेखरकः। *औप० ५१*।

आमेलओ– आमेलकः, आपीडः, शेखरकः। *जीवा० ३६१*। आभोडकः–पुष्पोन्मिश्रो वालबन्धविशेषः। *उत्त० १४३*।

आमेलग– आमेलकः, आपीडकः, शेखरः। *जीवा० २७५*। आपीडः, शेखरकः। *जम्बू० ५२*। *जीवा० २०७*।

आमेलय– आमेलकः, चूडा। *भग० ६३*।

आमेलिय– आपीडिका, चूडा। *भग० ३१८*।

आमो– असत्थोवहतो। *निशी० १९६* अ।

आमोअ– आमोदः, मानसे उत्सवः। *आव० ७२१*। आमोकः–कचवरपुञ्जः। *आचा० ४११*।

आमोक्ख– आमोक्षः, आमुच्यन्तेऽस्मिन्नित्यामोक्षणं वाऽऽ-मोक्षः। *आचा० ६*।

आमोडणं– हत्थेहि आमोडणं। *निशी० २४५* अ।

आमोडेति– सीमन्तयति। *निशी० ३१* अ।

आमोद– गन्धः। *उत्त० ३६९*।

आमोयगो– आमोदकः। *जीवा० २६८*।

आमोसगा– आमोषकाः, चौराः। *स्था० ३१५*।

आमोसलि– आमर्शवत्तिर्यगूर्ध्वमधो वा कुड्यादिपरामर्शवद्यथा न भवति। *उत्त० ५४१*।

आमोसहि– आमर्षौवधिः, तत्रामर्षणमामर्षः–संस्पर्शनमित्यर्थः, स एवौषधिर्यस्यावामर्षौषधिः, करादिसंस्पर्शमात्रादेव व्या-ध्यपनयनसमर्थौ लब्धिलब्धिमतोरभेदोपचारात्साधुरे-वामर्षोषधिः। *आचा० १७८*। आमर्षौषधिः। *स्था० ३३२*। आमर्षणमामर्षः–संस्पर्शनमित्यर्थः, स एवौषधिः। *आव० ४७*। आमर्षणमामर्षः–हस्तादिसंस्पर्शः। *औप० २८*।

आमोसे– आमर्षणम् आमर्षः–अप्रमृज्य करेण स्पर्शनम्। *आव० ५७४*। आमोषाः–आ–समन्तान्मुष्णन्ति–स्तेन्यं कृर्वन्तीति। *उत्त० ३१२*।

आम्लम्– चतुर्थरसम्। *आव० ८५४*। अंबिला। *उत्त० ६७७*।

आयं– तोसलिविसए सीयतलाए आयाणं खुरेसु सेवालतरिया लग्गंति, तत्थ वत्था कीरंति। *निशी० २५४* आ। कर्माश्रवलक्षणम्। *सूत्र० १८९*। इष्टफलम्। *भग० ४*।

आयंकं– आतङ्कः, आशुघाती रोगः। *आव० ७५९*। सद्योघाती रोगः। *दशवै० २७३*। कृच्छ्रजीवनं दुःखं। *आचा० ७५*। आशुघाती शूलादिः। *जम्बू० १२५*। *भग० ४७१*। सद्योघातिव्याविः। *भग० १२२*। नरकादिदुःखम्। *आचा० १६०*। कृच्छ्रजीवितकारी, सद्योघातीत्यर्थः शूलादि। *स्था० ११९*। शूलविशूचिकादिः सद्योघाती। *स्था० १५०*। व्याधिः। *भग० ६९०*। आङिति सर्वात्मप्रदेशाभिव्याप्त्या तंकयन्तिकृच्छ्रजीवितमात्मानं कुर्वन्ति इत्यातंकाः–सद्यो-घातिनो रोगविशेषाः। *उत्त० ३३८*। आतङ्कः, सद्योघातिनः। *औप० ९६*। *आव० ५८५*। ज्वरादि। *पिण्ड० १७७*। *आचा० २९७*। कृच्छ्रजीवितकारी ज्वरादिः। *भग० ७०२*। आतङ्कः, आशुकारी व्याधिविशेषः। *दशवै० १४*। रोगः। *उत्त० ४८६*। ज्वरादि। *आव० ८४८*। *ओघ० १९०*। कष्टजीवितकारी। *विपा० ४०*। आशुजीवितापहारी शूलादिकः। *सूत्र० २९२*। *आचा० २०५, ३३०, ३६२*।

आयंकसंपओग– आतङ्कसम्प्रयोगः, आतङ्क–रोगः तस्य योगः। *औप० ४३*।

आयंगुल– पुरुषात्मसम्बन्धि आत्माङ्गुलम्। *अनुयो० १५६*। अङ्गुलस्य प्रथमभेदः। *प्रज्ञा० २९९*।

आयंचामि– गोमुत्तं। *निशी० १२७* अ। *व्यव० १०४* आ।

आयंचणं– लिंपामि, आसिञ्चामि। *उपा० ३२*।

आयंतकरे– आत्मनोऽन्तम्–अवसानं भवस्य करोतीति आत्मान्तकरः, धर्म्मदेशनानासेवकः, प्रत्येकबुद्धादिः। *स्था० २१३*।

अयंति– आगच्छन्ति, उत्पद्यन्ते। *आव० १७९*।

आयंतियमरणे– यानि नारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च न पुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीति। *सम० ३३*।

आयंती– आयान्ती। *आव० ३०७*।

आयते– आचान्तः, नवानामपि श्रोतसां शुद्धोदकप्रक्षालनेन गृहीताचमनः। *जीवा० २४३*। कृतपानः। *भग० १६४*।

आयंदमे– आत्मदमः, आत्मानं दमयति–शमवन्तं करोति शिक्षयति वेति। *स्था० २१४*।

आयंबिलं– आचाम्लम्, ओदनकुल्माषादि। *औप० ४०*। आचाम्लम्। *आव० ८५२*। शुद्धौदनादि। *अनुत्त० ३*।

सकूरा। *आव० ८५५*। पानकम्। *ओघ० १३३*।
आयंबिलपाउग्गं– आचाम्लप्रायोग्यम्, (कूरविहाणाणि)। *आव० ८५५*।
आयंबिलवड्ढमाणं– आचाम्लवर्द्धमानम्, तपोविशेषः। *अन्त० ३२*।
आयंबिलिए– आचाम्लिकः। *स्था० २९८*।
आयंभरे– आत्मानं बिभर्त्ति–पुष्णातीत्यात्मम्भरिः। *स्था० २४८*।
आयंस– आदर्शः, बृषभादिग्रीवाभरणम्। *अनुयो० ४७*। दर्पणः। *जम्बू० ३९२*। आदर्शः। *जम्बू० ५१०*।
आयंसघरं– आदर्शगृहम्। *आव० १७०*।
आयंसघरगं– आदर्शगृहकम्, आदर्शमयमिव गृहकम्। *जीवा० २००*। *जम्बू० ४५*।
आयंसमुहदीवे– आदर्शमुखद्वीपः, अन्तरद्वीपनाम। *स्था० २२६*।
आयंसमुहा– आदर्शमुखनामा नवमोऽन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा० ५०*। *जीवा० १४४*।
आयंसलिवी– ब्राहमीलिपिपञ्चदशभेदः। *प्रज्ञा० ५६*।
आय– आयः, श्रुतनाम। *दशवै० १६*। लाभः। *अनुयो० १५४*। आत्मा–शरीरम्। *उत्त० ४१५*। जीवश्चित्तं वा। *उत्त० ५०४*। अतति–सततं गच्छति तानि तान्यध्यवसायस्थाना-न्तराणीति आत्मा–मनः। *उत्त० ३१४*।
आयइ– आयतिः–अनागतं, उत्तरकालम्। *आव० ५०९*।
आयकाय– अनंतकायविशेषः। *भग० ८०४*।
आयक्खाहि– आख्याहि, कथय, निवेदय। *भग० ११२*।
आयगय– आत्मनि गतः आत्मगतः, आत्मज्ञ इति। *सूत्र० १२४*।
आयगवेसए– आत्मगवेषकः, आत्मानं–कर्मविगमाच्छुद्ध–स्वरूपंगवेषयति–अन्वेषयतेयः सः। आगयवेषकः–आयः–सम्यग्दर्शनादिलाभस्तं गवेषयतीति। आयतगवेषकः–सूत्रत्वादायतो वा–मोक्षस्तं गवेषयतीति वा। *उत्त० ४१५*।
आयगुत्ते– आत्मा–शरीरं तेन गुप्तः आत्मगुप्तः–न यतस्ततः करणचरणादिविक्षेपकृत, गुप्तो–रक्षितोऽसंयमस्थानेभ्य आत्मा येन सः। *उत्त० ४१५*।
आयजोगे– आत्मयोगी, आत्मनो योगः–कुशलमनः–प्रवृत्तिरूप आत्मयोगः, स यस्यास्ति स तथा, धर्मध्यानावस्थितः। *सूत्र० ४३२*।
आयट्ठं– आत्मनोऽर्थ आत्मार्थः, स च ज्ञानदर्शनचारित्रात्मकः, आत्मने हितं–प्रयोजनमात्मार्थं, चारित्रानुष्ठानमेव, आयतः–अपर्यवसानान्मोक्षः स एवार्थः। आयत्तः–मोक्षः, अर्थः–प्रयोजनं यस्य। *आचा० ११०*। आत्महितं। *आचा० १०९*। ज्ञानादिरूपं स्वकार्यम्। *बृह० ७१ अ*।
आयट्ठी– आत्मार्थी, यो हयन्यमपायेभ्यो रक्षति सः, आत्मवान्। *सूत्र० ३४२*।
आयणाणं– आत्मज्ञानम्, वादादिव्यापारकाले किममुं प्रतिवादिनं जेतुं मम शक्तिरस्ति न वा ? इत्यालोचनम्। *उत्त० ३९*।
आयणीली– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।
आयण्णं– आकीर्णम्, स्थानविशेषः। *ओघ० १५४*।
आयतंगुली– एगापएसिणी। *निशी० २०८ अ*।
आयतगुत्ते– आत्गुप्तः–सततोपयुक्तः। *आचा० २७२*।
आयतजोग– आयतयोगः–सुप्रणिहितं मनोवाक्कायात्मकम्। *आचा० ३१४*। ज्ञानचतुष्टयेन सम्यग्योगप्रणिधानं। *आचा० ३१४*।
आयतणं– आयतनम्, गुणानामाश्रयः, अहिंसायाः सप्तच-त्वारिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९*। आविष्करणं कथनं, निर्णयनं वा। *सूत्र० १८१*। स्थानम्। ओध० २२२। *निशी० १९२ आ*। देवकुलम्। *निशी० ३९ आ*। दोषाणां स्थानं। *आचा० ३२९*। ज्ञानादित्रयम्। *आचा० २०७*।
आयतणा– आयतनानि–बन्धहेतवः। *स्था० ३५१*।
आयतणाइं– आयतनादीनि, दोषरहितस्थानानि, वसतिग-तानि, संस्तारकगतानि च। *आचा० ३७२*। देवकुलपाश्र्वा-पवरकाः। *आचा० ३६६*। कर्मोपादानानि। *आचा० ४०७*। उपभोगास्पदभूतानि। *आचा० १२७*। कर्मोपादानस्थानानि। *आचा० ३५६*। दोषस्थानानि। *आचा० ३८६*।
आयतरो– तवबलिओ। *निशी० १२३ अ*।
आयतसंठाण–आयतसंस्थानम्। *प्रज्ञा० ११*।
आयता– दीर्घा। *जीवा० १६४*।
आयती– सन्ततिः। *बृह० २१३ अ*।
आयतीहितं– आगामिकालहितं, आत्मना हितं वा। *दशवै०*

१५७।

आयते– आयतः, संस्थानपञ्चमभेदः। *प्रज्ञा० २४२*। *भग० ८५८*।

आयतो– आयतः, मोक्षः। *सूत्र० १७३*। मोक्खो। *दशवै० ८८*।

आयत्तं– आयत्तम्, सम्मिश्रम्। *पिण्ड० ८१*। आधिनीकृतम्। *आव० ३६६*।

आयत्ताए– आत्मत्वाय–आत्मीयकर्म्मानुभवाय। *आचा० २३३*।

आयपइट्ठिते– आत्मप्रतिष्ठितः, आत्मना वा परत्राक्रोशादिना प्रतिष्ठितो–जनित आत्मप्रतिष्ठितः। *स्था० ९२*। आत्माप-राधेनैहिकामुष्मिकापायदर्शनादात्मविषयः। *स्था० १९३*।

आयपतिट्ठिए– आत्मप्रतिष्ठितः, आत्मन्येव प्रतिष्ठितः। *प्रज्ञा० २९०*।

आयपवायं– आत्मप्रवादं, सप्तमपूर्वम्। *स्था० १९९*।

आयप्पवाय– आत्मप्रवादः, यत्रात्मनः संसारिमुक्ताद्यनेक भेद-भिन्नस्य प्रवदनम्। *दशवै० १२*। आत्मानं–जीवमनेकधा नय-मतभेदेन यत्प्रवदति तत्। *नन्दी० २४१*

आयप्पवायपुव्वं– आत्मप्रवादनाम सप्तमपूर्वम्। *सम० २६*।

आयभाव– आत्मभावः, स्वस्वरूपः। *अनुयो० २२६*। जीव–सम्बन्धः। *अनुयो० २२०*। उत्थानशयनगमनभोजनादिरूप आत्मपरिणामविशेषः। *भग० १४९*। अनादिभवाभ्यस्तो मिथ्यात्वादिकः, विषयगृध्नुता वा। *सूत्र० २४०*।

आयभाववंकणया– आत्मभाववंकनता, आत्मभावस्याप्र–शस्तस्य वङ्कनता–वक्रीकरणं प्रशस्तत्वोपदर्शनता। *स्था० ४२*।

आयभाववंचणा– आत्मभाववञ्चनता, मायाप्रत्ययिकीक्रियायाः प्रथमो भेदः। *आव० ६१२*।

आयभाववत्तव्या– आत्मभाववक्तव्यता, अहंमानिता। *भग० १३९*।

आयमणं– आचमनम्, निर्लेपदादि। *ओघ० १३७, १९०, १६२*। आशातनायाः दशमभेदः। *आव० ७२५*। गण्डू–षादिकरणम्। *उत्त० ३७०*। निर्लेपनम्। *बृह० २०४* आ। णिल्लेवणं। *निशी० २२०* आ। पुरीषात्सर्गानन्तरं शौचकरणम्। *पिण्ड० ११*। आचमनम्। *स्था० ३३९*।

आयमाणे– आददानः, प्रवर्त्तमानः। *सूर्य० १२*।

आयमेज्जा– निर्लेपनं चापाने एवमेव कुर्यात्। *ओघ० १२५*।

आयय– आयतम्, प्रसारितम्, दीर्घम्। *भग० २३०*। आयतः–मोक्षः, आयतम्–अत्यन्तम्। *दशवै० २५८*। आकृष्टं, दीर्घश्च। *भग० ९३, ३३३*। मोक्षः। *व्यव० १९७* अ। आत्मा। *आचा० १२२*। मोक्षः संयमो वा। *उत्त० ५८७*। संयतः। *आचा० ३१४*। प्रयत्नवान्। *भग० ९३*। दीर्घः सर्वकालभवनात् मोक्षः। *सूत्र० ७५*।

आययकण्णायत्तं– आयतकर्णायतम्, प्रयत्नवत्कर्णं यावदा-कृष्टम्। *भग० ९३*।

आययचक्खू– आयतचक्षुः–दीर्घमैहिकामुष्मिकापायदर्शि चक्षुः–ज्ञानं यस्य स। *आचा० १३६*।

आययट्ठिए– आयतार्थिकः, मोक्षार्थी। *दशवै० २५६*।

आययट्ठिया– आयतार्थिकाः, आयतो–मोक्षः संयमो वा स एवार्थः प्रयोजनं विद्यते येषामिति। *उत्त० ५८७*। आयतः–मोक्षस्तत्र स्थिता आयतस्थिता उद्यतविहारिणः संविग्ना इत्यर्थः। *व्यव० १९७* अ।

आययट्ठी– आयतार्थी, मोक्षार्थी। *दशवै० १८७*।

आययणं– आयतनम्। *आव० २११*। आदानम्। *अन्त० २४*। गमनम्, गृहम्। *जीवा० २७९*। स्थानम्। *जम्बू० ७७*। *दशवै० १९८*। आङ्–अभिविधौ समस्तपापारम्भेभ्यः आत्मा आयत्यते–आनियम्यते यस्मिन् कुशलानुष्ठाने वा यत्नवान् क्रियत इत्यायतनं–ज्ञानादित्रयम्। *आचा० २०६*। उत्पत्तिस्थानम्। *उत्त० ६२३*।

आययतरे– आयततरः, आयमनयोरतिशयेनायत आयततरः। *आचा० २९४*। यत्नेनाध्यवसितः। *आचा० २९३*।

आयरंति– आचरन्ति, आसेवन्ते। *दशवै० १९८*।

आयरंतो– आचरन्, व्यवहरन्, कुर्वन् वा। *उत्त० ६४*।

आयरक्खा– आत्मरक्षा, स्वाम्यात्मरक्षा। *भग० १९४*। अंगरक्षा राज्ञाम्। *स्था० ११७*।

आयरक्खिए– आत्मरक्षितः, आत्मा रक्षितो दुर्गतिहेतोरप-ध्यानादेरनेनेति। *उत्त० ९१*। आयरक्षितः–आयोवाज्ञाना-दिलाभो रक्षितोऽनेनेति। *उत्त० ९१*।

आत्मा रक्षितो दुर्गति-पतनात् त्रातोऽनेनेति, रक्षिता आयाः–सम्यग्दर्शनादिलाभा येनेति। *उत्त० ४१४*।

आयरणं– आचरणम्, अनुष्ठानम्। *उत्त० ५३३*।

आयरणया– आदरणं, अभ्युपगमं आचरणम् वा। *भग० ५७३*।

आयरणा– आचरणा, विधिः, मर्यादा, सीमा च। *आव० ६३९*। ततियभङ्गविकप्पो। *निशी० १९८* अ। चर्या। *बृह० १२९* आ।

आयरिअ– आचार्यः, शिल्पोपदेशदाता। *भग० ३१७*। *औप० ६२*। अनुयोगाचार्यः। *उत्त० १७*। *व्यव० १३७* अ। अनुयोगधरः। *आचा० ३५३*। सपरसिद्धंतपरूवगो। *निशी० १६* अ। आयरिए–आचार्यः–प्रतिबोधकप्रव्राजकादिः अनुयोगाचार्यो वा। *स्था० १४३, २४४*।

आयरियं– आचरितम्, आसेवितं। *आव० २६३*। आर्य्यः–आराद् यातः पापकर्म्मेभ्य इति। *भग० ९०*। आचरणमाचरितं तत्तक्रियाकलापः। *उत्त० २६६*। आराद्यातं सर्वकुयुक्तिभ्य इत्यार्यं–तत्त्वं तत्। *उत्त० २६६*। आर्यम्-आर्याणां कर्त्तव्यं आचार्यं वा, मुमुक्षुणा यदाचरणीयं ज्ञानदर्शनचारित्रम्। *सूत्र० १८४*। पापकर्मेभ्य आराद्यातमित्यार्यम्। *स्था० ११९*।

आयरिय– आचार्यः। *प्रज्ञा० ३२७*। शिल्पी। *जम्बू० २१२*। आङित्यभिव्याप्त्या मर्यादया वा स्वयं पञ्चविधाचारं चरत्याचरयति वा परान्, आचर्यते वा, मुक्त्यर्थिभिरासेव्यत इति। *उत्त० ३७*। आ–मर्यादया–तद्विषयविनयरूपया चर्यते सेव्यते, जिनशासनार्थोपदेशकतया तदाकाङ्क्षिभिरिति, आचारः–ज्ञानाचारादिः, आ–मर्यादया वा चारो–विहार आचारः तत्र यः स्वयंकरणात्प्रभाषणात्प्रदर्शनाच्च साधुः सः, आ–ईषत्–अपरिपूर्णाः हेरिका ये ते चाराः–आचारः–चार-कल्पाः, युक्तायुक्तविभागनिरूपणनिपुणा विनेयाः शिष्यास्तेषु यो यथावच्छास्त्रार्थोपदेशकतया। *भग० ३*।

आयरियउवज्झाए– आचार्योपाध्यायः, आचार्येण सहोपा–ध्यायः। *भग० २३२*। आचार्येवोपाध्यायः। *निशी० १९६* आ।

आयरियजणवय– देशविशेषः। *निशी० ३४४* आ।

आयरियते– आचार्यकम्–तद्ग्रन्थव्याख्यातृत्वम्। *व्यव० १६६* आ।

आयरियव्वं– पढियव्वं। *निशी० ५* आ।

आयवणाम– आतपनाम–यदुदयात् जन्तुशरीराणि स्वरूपेणा-नुष्णान्यपि उष्णप्रकाशलक्षणमातपं कुर्वन्ति तदातपनाम, तद्विपाकश्र्च भानुमण्डलगतेषु पृथिवीकायिकेष्वेव न वह्नौ, प्रवचनेऽपि निषेधात्, तत्रोष्णत्वमुष्णस्पर्शनामोदयात्। उत्कटलोहितवर्णनामोदयाच्च प्रकाशकत्वम्। *प्रज्ञा० ४७३*।

आयरिया– आचार्याः–प्राणाचार्या वैद्याः। *उत्त० ४७५*। *व्यव० १७१* अ।

आयरिसो– आदर्शः। *आचा० ५*।

आयरेणं– आदरेण, प्रयत्नेन। *जम्बू० १९२*।

आयरो– आदरः, आद्रियते आदरणं वा, परिग्रहस्याष्टमं नाम। *प्रश्न० ९२*। सम्भ्रमः। *बृह० ११* अ।

आर्य– अज्ज, पितामहः। *व्यव० १७१* अ। अजुगुप्सीत्कारी। *व्यव० १४* अ।

आयवं– आतपवान्, चतुर्विंशतितममुहूर्त्तनामविशेषः। *सूर्य० १४६*। *जम्बू० ४९१*। रविबिम्बजनित उष्णप्रकाशः। *उत्त० ५६१*। आतपः, आ–समन्तात्तपति सन्तापयति जगदिति। *उत्त० ३८*। घर्म। *उत्त० १२१*।

आयवतत्तए– आतपतप्तं पयः। *भग० ६८०*।

आयवत्ताइं– आतपत्राणि, छत्राणि। *जम्बू० ८१*।

आयवाइ– विश्र्वकारणात्मवादिनः। *आव० ८१६*।

आयवाई– आत्मवादिनः, क्रियावादिविशेषः। *सम० ११०*। 'पुरुष एवेदं ध्नि'मित्यादि प्रतिपत्तुरिति। *स्था० २६८*।

आयवाभा– आतपाभा, सूर्यस्य ज्योतिषेन्द्र द्वितीया अग्र-महिषी। *जीवा० ३८५*। सूर्यस्य पत्नीनाम। *भग० ५०५*।

आयवी– आत्मवित्, आत्मानं श्र्वभ्रादिपतनरक्षणद्वारेण वेत्तीति। *आचा० १५४*।

आयवीरियं– वीर्यस्य पञ्चभेदः। *निशी० ११* अ।

आयसंचेयणिज्जा– आत्मना संचेत्यन्ते–क्रियन्त इति आत्मसंचेतनीया (घट्टन–पतन–स्तंभन–श्लेषजन्या उप–सर्गाः)। *स्था० २८०*।

आयसंचेयतो– आत्मसंचेतनीयः–आत्मनैवात्मनो दुःखो–त्पादनम्। *व्यव० १९६* अ।

आयसा– आत्मना। *सूत्र० १०६*।

आयसी– लोहमयी, दर्भमयी च। *प्रश्न० १३*।

आयसंवेणिज्जा– आत्मसंवेदनीया–आत्मना क्रियन्ते ये, उपसर्गाः। *आव० ४०५*।

आयसरीरसंवेयणी– आत्मशरीरसंवेजनी, संवेजनीकथायाः प्रथमो भेदः। *दशवै० ११२*।

आयसरीराणवकंखिया– स्वशरीरक्षतिकारिणी क्रिया। *स्था० ४३*।

आयसेण– आत्मसेनः, जंबूद्वीपैरवते अस्यामवसर्प्पिण्यां चतुर्थतीर्थकृत्। *सम० १५९*।

आया– आत्मा, जीवः। *आचा० १६*। आत्मा। *भग० १२२*। आत्मा, रूपं। *नन्दी० २१२*। द्वादशशते आत्मभेदनिरूपणार्थो दशमोद्देशकः। *भग० ५५२*। अतति–सततमवगच्छति 'अतसातत्यगमन' इति वचनादतो धातोर्गत्यर्थत्वाद्गत्य-र्थानां च ज्ञानार्थत्वादनवरतं जानातीति निपातनादात्मा-जीवः उपयोगलक्षणत्वादस्य सिद्धसंसार्यवस्थाद्वयेऽप्युपयो-गभावेन सततावबोधभावात्, अतति–सततं गच्छति स्व-कीयान् ज्ञानादिपर्यायानित्यात्मा, संसार्यपेक्षयानानागतिषु सततगमनात् मुक्तापेक्षया च भूततद्भावत्वादात्मेति। *स्था० १०*।

आयाए– आत्मविराधनादोषः। *ओघ० ७९*।

आयाणं– आदानम्, ईप्सितार्थग्रहणम्। *औप० १८*। अर्गलास्थानं वा। *औप० १८*। दुष्प्रणिहितमिन्द्रियं। *आचा० ३०४*। कर्मादानम्। *आचा० ३३७*। आदीयते-स्वीक्रियते प्राप्यते वा मोक्षो येन तत्, ज्ञानदर्शनचारित्रत्रयम्। *सूत्र० ५२*। डगलगा। *निशी० २२० आ*। गहणं, जेण मग्गेण गंतूण दगमट्टियहरियादीणि घेप्पंति तं दगमट्टियं। *दशवै० ७८*। कुचादिग्रहणम्, सम्प्राप्तकामस्यैकादशो भेदः। *दशवै० १९४*। आदानः–आदीयतेऽनेनेत्यादानो–मार्गः। *दशवै० १६८*। इन्द्रियम्, करणम्। *भग० २८६*। आदीयतेद्वारस्थग-नार्थं गृह्यत इत्यादानः। *जम्बू० १११*। आदीयते–गृह्यते आत्मप्रदेशैः सह श्लिष्यतेऽष्टप्रकारं कर्म्म येन तदादानम्, हिंसाद्याश्रवद्वारमष्टादशपापस्थानरूपं वा। *आचा० १७०*। संयमानुष्ठानं। *आचा० १२८*। कर्म्मोपादानं। *आचा० २४३, ३३०*। आदीयते–सावद्यानुष्ठानेन स्वीक्रियते। *आचा० १९३*। आदिः। *व्यव० २१८ आ*। हिंसाद्याश्रवद्वारमष्टाद-शपापस्थानरूपं वा तत्स्थितेर्निमित्तत्वात्कषाया वा। *आचा० १७१*। आदीयत इति आदानः, धनधान्यादि। *उत्त० २६५*। आदीयत इति आदिः–प्रथमम्। *उत्त० ५७०*। आदीयन्ते-गृह्यन्ते शब्दादयोऽर्था एभिरिति आदानानि–इन्द्रियाणि। *बृह० २११ आ*। आदीयते–सद्विवेकैर्गृह्यत इति, चारित्रधर्मः। *उत्त० ३३८*। आदीयते गृह्यतेऽर्थः अनेनेत्यादानम्–इन्द्रियम्। *भग० २२४*। आदानः, आदेयो रम्यः। *प्रश्न० ८१*। आदीयते–स्वीक्रियते आत्महितमनेनेति आदानः–संयमः। *उत्त० २२५*। सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररूपम्। *सूत्र० ४०५*।

आयाणपएण– आदीयते–प्रथममेव गृह्यत इत्यादानं तच्च तत्पदं चादानपदं तेन आदानपदेन। *आचा० १९६*।

आयाणपय– आदानपदम्, शास्त्रास्याध्ययनोद्देशकादेश्चादि-पदम्। *अनुयो० १४१*।

आयाणपरिसाडे– आधानपरिसाटम्, गर्भाधानपरिसाटरूप–मूलकर्मतृतीयभेदः। *पिण्ड० १४२*।

आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई– आदानभाण्डमात्रनिक्षेप-णासमितिः, भाण्डमात्रे आदाननिक्षेपविषया समितिः–सुन्दरचेष्टा। *आव० ६१६*। आदाने–ग्रहणे भाण्डमात्रायाः–वस्त्राद्युपकरणरूपपरिच्छदस्य, उपकरणस्य वा, भाण्डस्य-वस्त्रादेर्मृन्मयभाजनस्य वा मात्रस्य च–पात्रविशेषस्य निक्षे-पणायां–विमोचने ये समिताः–सुप्रत्युपेक्षितादिक्रमेण सम्यक् प्रवृत्तास्ते। *औप० ३५*।

आयाणरक्खी– आदानरक्षी, आदीयते–स्वीक्रियते आत्महितमनेनेत्यादानः–संयमस्तद्रक्षी। *उत्त० २२५*।

आयाणसो– आदानशः–आदेरारभ्य। *सूत्र० ४२४*।

आयाणसोय– आदानस्रोतः, आदीयते–सावद्यानुष्ठानेन स्वी-क्रियत इति आदानम्–कर्म्म संसारबीजभूतं तस्य स्रोतांसि–इन्द्रियविषया मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगा वा। *आचा० १९२*।

आयाणसोयगढिए– संसारबीजभूतेन्द्रियविषयः मिथ्यात्वादि-गृद्धः–अध्युपपन्नः। *आचा० १९३*।

आयाणिज्जं– आदानीयम्–श्रुतं। *आचा० १२२*। कर्म। *आचा० २४२*। आदातव्यं भोगाङ्गं, आदानीयं–कर्म। *आचा० १२२*। ग्राह्यः, आदेयवचनश्च। *आचा० १९१*।

आयाणी– क्वचिद्देशविशेषेऽजाः सूक्ष्मरोमवत्यो भवन्ति, तत्पक्ष्मनिष्पन्नानि आजकानि भवन्ति। *आचा० ३९४*।

आयाणीय– आदानीयम्, ग्राह्यम्। *आचा० ३८*।

आयाती– आयातिः, गर्भान्निर्गमः। *स्था० ६७*।

आयापरिणामो– आज्ञया परिणामः। *व्यव० ४५० अ*।

आयाम– अवशायनम्। *आव० ५४*। दैर्घ्यम्। *अनुयो० १८०, १७१*। *भग० ११९*। *स्था० १८४*। अवश्रावणम्। *ओघ० १३३*। *पिण्ड० १७*। आचामः। *स्था० ३३९*। अवसामणं। *निशी० ४७ आ*। आचाम्लम्। *उत्त० ७०६*। उच्चत्वम्। *भग० २६९*।

आयामगं– आयामकम्, अवश्रावणम्। *उत्त० ४१९*।

आयामणया– आकर्षणम्। *भग० ९३*।

आयामते– आयामकम्–अवश्रावणम्। *स्था० १४७*।

आयामविक्खंभो– आयामविष्कम्भः। *आव० १५०*।

आयामुसिणोदगं– अवश्रावणमुष्णोदकं च। *स्था० ३३९*।

आयामे– आयामः, दैर्घ्यम्। *प्रज्ञा० ४२७*।

आयामेति– ददाति। *भग० ६६३*।

आयामेत्ता–आयामेन समाकृष्य। *सूत्र० ३०९*। आयम्य, आकृष्य। *भग० ९३*।

आयामेत्था– भोजितवान्। *भग० ६६२*।

आयाय– आदाय, स्वीकृत्वा चारित्वा। *उत्त० २२८*। अवगम्य। *आचा० ३३९*। गृहीत्वा मयैतदर्थं यतितव्यमिति निश्रिचत्य बुद्ध्यासम्प्रधार्येतियावत्। *उत्त० २६८*। बुद्ध्यागृहीत्वाऽभ्युपगम्य। *उत्त० २५३*। गृहीत्वा, अवगम्य। *आचा० ३३५*। बुद्ध्यागृहीत्वा। *उत्त० १०४*।

आयार– स्वरूपम्। *जम्बू० १८*। मूलगुणादिः। *दशवै० २५६*। लोचास्नानादिः। *दशवै० ११०*। आङ्–मर्यादायां चरणं चारः– मर्यादया कालनियमादिलक्षणया चार आचार इति। *आव० ४४८*। चतुर्थनिर्युक्तिः। *आव० ६१*। श्रुतज्ञानादिविषयम-नुष्ठानं कालाध्ययनादि। *भग० १२२*। व्यवहारः। *स्था० ६४*। चारित्रम्। *उत्त० ५६३*। ज्ञानाचारादि। *उत्त० ५८३*।

आयारअक्खेवणी– आचाराक्षेपणी, आचारो–लोचास्नाना–दिस्तत्प्रकाशनेन आक्षेपणी। *स्था० २१०*।

आयारकुसल– ज्ञानाद्याचारेण कर्मशुकानां लावकः। *व्यव० २३४*। आचारे ज्ञातव्ये–प्रयोक्तव्ये वा दक्षः, अभ्युत्थाना-सनप्रदानाद्युपहितान्तगुणानामाकरो वा। *व्यव० २३६*।

आयारक्खी- आत्मरक्षी आत्मानं रक्षयत्यपायेभ्यः कुगतिं गमनादिभ्य इत्येवं शीलः। *उत्त० २२५*।

आयारगोअर– आचारगोचरः, क्रियाकलापः। *दशवै० १९१*। आचारः–मोक्षार्थमनुष्ठानविशेषस्तस्य गोचरः। *आचा० ३६६*।

आयारग्ग– चूलिका। *आचा० ७*।

आयारतेणे– आचारस्तेनः, विशिष्टाचारवत्तुल्यरूपः। इति। *दशवै० १९०*।

आयारदंसणं– आचारदर्शनम्, प्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनम्। *आव० ४४८*।

आयारदोसो–आचारदोषः। *आव० ६५४*।

आयारपकप्प– आचारप्रकल्पः, आयरणं आयारो सो य पञ्चविहो–णाणदंसणचरित्ततववीरियायारो य, तस्य पक-रिसेणं कप्पणा–सप्तभेदप्ररूपणेत्यर्थः। *निशी० ४ आ*। आचार–प्रथमाङ्गं तस्य प्रकल्पः–अध्ययनविशेषो निशीथ-मित्यपराभिधानं, आचारस्य वा–साध्वाचारस्य ज्ञानादिवि-षयस्य प्रकल्पो व्यवस्थापनमित्याचारप्रकल्पः। *सम० ४८*। *उत्त० ६१६*। (निशीथः) आचार एव। *आव० ६६०*। प्रत्याख्यानपूर्वस्य विशतितमं प्राभृतं। *आचा० ३१९, ३२०*। निशीथाध्ययनम्। *स्था० ३३५*।

आयारपभासणं– कालनियमाद्याचारव्याख्यानम्। *आव० ४४८*।

आयारफलं– आचारफलम्, मुक्तिलक्षणम्। *उत्त० ५८३*।

आयारभंडए– आचारभाण्डम्। *अनुत्त० १*।

आयारभंडग– आचारभाण्डकं–पात्रकम्। *ओघ० १५१*।

आयारभाव– विशिष्टाचारः। *दशवै० १९०*।

आयारमंतरे– आचारान्तरे। *आव० ७९३*।

आयारवं– पंचविहं आयारं जो मुणइ आयरइ वा सम्मं सो। *निशी० १२८ आ*। ज्ञानादिपञ्चप्रकाराचारवान्। *स्था० ४२४, ४८४*।

आयारवंतं– आकारवत्, सुन्दराकारं आकारचित्रं वा। *औप० २*।

आयारसमाही– आचारसमाधिः, चतुर्थं विनयसमाधिस्थानम्। *दशवै० ३५५*।

आयारे– आचारः। *निशी० १४८* आ। ज्ञानादि–विषयाऽऽसेवा *स्था० ३२५*। आचार्याणां नमस्कारार्हत्वे तृतीयहेतुः, तानाचारवत आचाराख्यापकांश्च प्राप्य प्राणिन आचारपरिज्ञानानुष्ठानाय प्रभवन्ति। *आव० ३८३*।

आयारो– आचारः, साधुसामाचारी। *प्रश्न० १२५*। आचार्यते आसेव्यत इत्याचारः। *आचा० ५*। आचारः। *व्यव० ३९१* अ।

आयावए– आपातनाकारी। *प्रश्न० १०७*।

आयावगा– असुरकुमारविशेषः। *भग० ६२०*।

आयावणा– आतापनास्थानम्। *आव० ३९१*।

आयावादी– आत्मवादी। *आचा० २२*।

आयावतं– सकृदीषद्वा तापनमातापनम्। *दशवै० १६३*।

आयाविंतो– आतापयन्। *आव० ३७१*।

आयास– पीडा। *ओघ० १५७*। लोहमयम्। *भग० ३१९*। मनःप्रभृतीनां खेदः, परिग्रहस्य चतुर्विंशतितमंनाम। *प्रश्न० ९२*।

आयासकर– आदेशितः आदेशः, आदेशत इति आदेशः। *व्यव० ३३६* आ।

आयाहिणं पयाहिणं– आदक्षिणप्रदक्षिणः, आदक्षिणात्–दक्षिणहस्तादारभ्य प्रदक्षिणः–परितो भ्राम्यतो दक्षिण एव। *सूर्य० ६*। *आव० १२४*। *जम्बू० १७*। *भग० ११४*।

आयाहिण– आदाहिणा, आदक्षिणाप्रदक्षिणा। *आव० २३२*।

आयुःकर्मानुभूतिः– स्थितिर्जीवनमिति। *प्रज्ञा० १६९*।

आयुःक्षेमस्य– जीवितस्य। *आचा० २९१*। आयुषः क्षेमः–सम्यक्पालनं तस्य। *आचा० २९०*।

आयुर्वेदः– वैदकशास्त्रम्। *विपा० ७५*।

आयो– लाभः। *भग० ९*। गमनं, वेदनम्। *स्था० ३४८*।

आयोगठाणं– आयोगस्थानम्, मेलनस्थानम्। *आव० ८२३*।

आयोग्गहो– आयपमाणं खेत्तं। *निशी० २४६* आ।

आयोधनस्थानम्– अट्टालकम्। *उत्त० ३११*।

आरं– आरः, संसारः। *बृह० ५१* अ, *२०१* अ। इहभवः, गृहस्थत्वम्, संसारो वा। *सूत्र० ५६*। इहलोकाख्यं मनुष्य-लोकं वा। *सूत्र० १५२*।

आरंभ– आरम्भः, जीवोपघातः, उपद्रवणं, सामान्येन वाऽऽश्रवद्वारप्रवृत्तिः। *भग० ३१*। श्रावकस्याष्टमी प्रतिमा। *आव० ६४६*। आरभ्य। *आव० ६८८*। सावद्यानुष्ठानम्। *आचा० ७८*। जीवोपघातः। *भग० ७५३*। पृथिव्याद्युपमर्दनं। *स्था० १०८*। सावद्यक्रियानुष्ठानम्। *आचा० १५६*। आरम्भणमारम्भः, शरीरधारणायान्नपानाद्यन्वेषणा। *आचा० २९०*। द्रव्योत्पादनव्यापाराः। *उत्त० ४५६*। पृथिव्याद्युप-मर्दनम्। *प्रज्ञा० ३३५*। जीवाः, कृष्यादिव्यापारः, जीवाना-मुपद्रवणं वा। *प्रश्न० ६*। *निशी० ३३* आ। व्यापारः। *प्रश्न० ६३*। हलदन्तालखननः। *आव० ८१८*।

आरंभइ– आरभते–पृथिव्यादीनुपद्रवयति। *भग० १८३*।

आरंभओ– आरम्भजः, आरम्भात्–हलदन्तालखननाज्जा–यते सः। *आव० ८१८*।

आरंभकहा– आरंभकथा, छागतित्तिरमहिषारण्यकादिका हता अत्रेति प्रशंसनं द्वेषणं वा। भक्तकथायास्तृतीयभेदः। आ० *५८१*। तित्तिराद्युपयोगकथा। *स्था० २०९*।

आरंभपरिण्णाए– आरम्भः–पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परिज्ञातः–तथैव प्रत्याख्यातो येनासावारम्भप्रतिज्ञातः, श्रमणोपासकाष्टमी प्रतिमा। *सम० १९*।

आरंभसमारंभो– आरंभसमारंभः, आरंभा–जीवास्तेषां समा-रंभः–उपमर्दः, अथवा आरंभः–कृष्यादिव्यापारस्तेन समा-रंभो जीवोपमर्दः, अथवा आरंभो–जीवानामुपद्रवणं तेन सह समारंभः, परितापनमिति वा, प्राणवधस्यैकादशपर्यायः। *प्रश्न० ५*।

आरंभिया– आरंभिकी, आरंभः–पृथिव्याद्युपमर्दनं स प्रयो-जनं–कारणं यस्याः सा, सम्यग्दृष्टेः प्रथमक्रिया। *प्रज्ञा० ३३४*। विंशतिक्रियामध्ये प्रथमा। *आव० ६१२*। आरम्भ-णमारम्भः तत्र भवा आरम्भिकी। *स्था० ४१*।

आरक्खि– आरक्षकः चौरग्राहकः। *बृह० १०७* अ। आरक्षिकः। *ओघ० ८९*।

आरक्खिगो– दंडवासिगो। *निशी० ३०* आ।

आरक्खितो– कोट्टवालो। *निशी० २६२* अ।

आरक्खिय– आरक्षकः। *उत्त० १६५*। दण्डनायकः। *दशवै० १६६*। *आव० ६३३*। *ओघ० १०६*। आरक्षिकाणामप्युपरि स्थायिनोहिंडिकाआरक्षिकाः, पुररक्षिकाः। *व्यव० १४५*।

आरक्खियपुरिसो– आरक्षकपुरुषः। *आव० ३५१*।

आरगय– आराद्‌गतम्–आराद्भागस्थितमिन्द्रियगोचरमागतमि-त्यर्थः। *भग० २१७*।

आरटन्ती– रुदन्ती। *नन्दी० १५४*।

आरणं– संशब्दनम्। *ओघ० ८१*।

आरणा– आरणाः, कल्पोपगैकादशवैमानिकभेदः। *प्रज्ञा० ६९*।

आरण्ण– आरण्यः, तापसादिः। *अनुयो० २४४*।

आरण्णगतणं– श्यामाकादितृणम्। *बृह० २२०* अ।

आरण्णिय– आरण्यकः, अरण्ये भवः, तिर्थिकविशेषः। *सूत्र० ४२२*।

आरण्यकम्– लौकिकश्रुतम्। *आव० ४६५*।

आरतः– अत्र इतो वा। *उत्त० ५४०*।

आरत्तं– आरक्तम्, ईषद्रक्तम्। *आचा० १२१*।

आरनालं– कञ्जियं (देसीभासाए)। *निशी० ४७* अ।

आरनिबद्धा– आरकनिबद्धा, गन्त्री। *पिण्ड० १०२*।

आरन्निय– अरण्ये वसतीति आरण्यकः। *सूत्र० ३१५*।

आरबके– आरबदेशोद्भवान्, म्लेच्छविशेषान्। *जम्बू० २२०*।

आरबदेशजा– आरब्यः। *जम्बू० १९१*।

आरबी– आरबदेशवासिनी स्त्री। *भग० ४६०*।

आरबो– आरबः, चिलातदेशवासी म्लेच्छः। *प्रश्न० १४*।

आरभंती– आरभमाणा, षट्‌कायान् विनाशयन्ती। *पिण्ड० १५७*।

आरभटभसोलः– त्रिंशत्तमो नाट्यविधिः। *जीवा० २४७*।

आरभड– आरभटम्, नृत्यविशेषः। *जम्बू० ४१२*। *निशी० १* अ। जहाभिहितविधाणतो विवरीयं, अहवा तुरियं अण्णंमि वा दरपडिलेहंति अण्णं आढवेंति। *निशी० १८१* आ। वितथकरणरूपा, त्वरितं सर्वमारभमाणस्य, अर्द्धप्रत्युपेक्षित एवैकत्र यदन्यान्यवस्त्रग्रहणं सा। *स्था० ३६१*। विपरीता प्रत्युपेक्षणा, आकुलं यदन्यान्यवस्त्रग्रहणं तद्वा। *ओघ० १०९*। सोत्साहः सुभटः तेषामिदम्। *जम्बू० ४१७*। अष्टाविंशतितमो नाटय्यविधिः। *जीवा० २४७*। *जम्बू० १४७*।

आरयं– आरतं, उपरतम्। *सूत्र० १०५*। अभिविधिना आसक्तं। *प्रश्न० १३८*।

आरसिउं– आरस्य, रुदित्वा। *आव० ५०४*।

आरसियं– आरसितम्, शब्दितं। *आव० २२७*।

आरा– आरा, प्रवणदण्डान्तर्वर्त्तिनी लोहशलाका। *प्रश्न० २२*। तुट्टोवाणहसिव्वणट्ठा। *निशी० १८* अ।

आराडी– आराटी, आरसनम्। *आव० ६७७*।

आरादण्डः– प्रतोदः। *दशवै० २५०*।

आराम– तत्र रमणीयतातिशयेन स्त्रीपुरुषमिथुनानि यत्र आरमन्ति स विविधपुष्पजात्युपशोभित आरामः। *अनुयो० २४*। विविधपुष्पजात्युपशोभितः। *स्था० ३१२*। रतिः। *आचा० २२९*। आरामः-आरमन्ति यस्मिन्माधवीलतादिके दम्प-त्यादीनि स आरामः। *भग० २३८*। आरामाः-दम्पत्यादीनि येष्वारमन्ति ते। *अनुयो० १४९*। वाटिका। *प्रश्न० ८*। आरम-न्ति-यस्मिन् माधवीलतागृहादौ दम्पत्यादीनि क्रीडन्तीति। *औप० ३*। पुष्पप्रधानवम्। *औप० ४१*। दम्पत्योर्नगरास-न्नरतिस्थानम्। *जम्बू० ३८८*। आगत्य रमन्तेऽत्र माधवी-लतागृहादिषु दम्पत्य इति सः। *जीवा० २५८*। दम्पतिरम-णस्थानभूतमाधवीलतादिगृहयुक्तः। *प्रश्न० १२७*। दम्पति-रतिस्थानलतागृहोपेतवनविशेषः। *प्रश्न० ७३*। माधवीलता-द्युपेतो दम्पतिरमणाश्रयो वनविशेषः। *प्रश्न० १२६*।

आरामाइ– विविधवृक्षलतोपशोभिताः कदल्यादिप्रच्छन्नगृहेषु स्त्रीसहितानां पुंसा रमणस्थानभूताः। *स्था० ८६*।

आरामागार– आराममध्यवर्तिगृहम्। *औप० ६१*। उद्‌यान-गृहम्। *आचा० ३६५*। *आचा० ३०६*।

आरामिओ– आरामिकः। *आव० ३९०*।

आराहइत्ता– आराध्य, उत्सूत्रप्ररूपणादिपरिहारेणाबाधयित्वा। *उत्त० ५७२*। यथावदुत्सर्गापवादकुशलतया यावज्जीवं तद-र्थासेवनेन। *उत्त० ५७२*।

आराहए– आराधयति, प्रगुणीकरोति। *दशवै० २२४*। आरा-धकः-निरतिचारपालनकृत्। *उत्त० ५७८*।

आराहओ– आराधकः, अविराधकः। *ओघ० ११२*।

आराहगा– आराधकाः-आराधयन्ति-अविकलतया निष्पा-दयन्ति सम्यग्दर्शनादीनि इत्याराधकाः। *उत्त० २३३*। आवर्जकाः। *उत्त० ३६१*।

आराहण– आराधनम्, अखण्डकालकरणम्। *भग० २९७*।

आराहणा– आराधना, सम्यगासेवना। *उत्त० ५८६*। अनुष्ठानम्। *उत्त० ५९१*। ज्ञानाद्याराधनात्मिका। *उत्त० ५८२*। आवर्जनार्थम्। *उत्त० ५९१*। अखण्डकालस्य करणम्। *आव० ८४०*। चरमकाले निर्यापणरूपा। *दशवै० २६२*। मोक्षमार्गाखण्डना। *आव० ५६२*। अष्टमशते दशमोद्देशकः। *भग० ३२८*। अखण्डकालकरणम्। *उपा० १२*। मोक्षारा-धनाहेतुत्वात्। *अनुयो० ३१*। निरतिचारज्ञानाद्यासेवा। *स्था० ९८*।

आराहणामरणंते– आराधनामरणान्ते, मरणकाले आराधना, योगसङ्ग्रहे द्वात्रिंशत्तमो योग। *आव० ६६४*।

आराहणी– आराधनी, आराध्यते-परलोकपीडया यथावद-भिधीयते वस्त्वनया, द्रव्यभावभाषाभेदः। *दशवै० २०८*।

आराहा– आरोहन्ति ते आराहा। *निशी० २७७* अ।

आराहिय– आराधितम्, एभिरेव प्रकारैः सम्पूर्णैर्निष्ठां नीता। *स्था० ३८८*। सफलीकृतः। *उत्त० २९८*।

आराहियचरणया– आराधितचरणता, चरणप्रतिपत्तिसम-यादारभ्य मरणान्तं यावन्निरतिचारतया तस्य पालना। *भग० ६९५*।

आराहेइ– आराधयति, साधयति। *उत्त० ५८२*।

आरिए– आर्याः, आराद् याताः सर्वहेयधर्म्मेभ्य इत्यार्याः –संसारार्णवतटवर्त्तिनः क्षीणघातिकर्म्मांशाः संसारोदर-विवरवर्त्तिभावविदः तीर्थकृतः। *आचा० ११६*। ऋद्धिप्राप्ता अर्हदादयः, क्षेत्रजात्याद्यार्याः। *सम० १३५*। आर्यः- चारित्रार्हः। *आचा० १३१*।

आरिओ– आर्यः, आराद् यातः सर्वहेयधर्मेभ्य इति। *सूत्र० ३३*। आराद्यातः सर्वहेयधर्मेभ्य इति, मोक्षमार्गः सम्यग्दर्श-नज्ञानचारित्रात्मकः। *सूत्र० १७२*।

आरियदंसी– आर्यं-प्रगुणं न्यायोपपन्नं पश्यति तच्छीलश्चेति आर्यदर्शी-पृथक् प्रहेणकश्यामाशनादिसंकल्परहितः। *आचा० १३१*।

आरियपदेसिए– आर्यप्रदेशितः-तीर्थंकरप्रणीतः। *आचा० २४७*।

आरियपन्ने– आर्यप्रज्ञः-श्रुतविशेषितशेमुषीकः। *आचा० १३१*।

आरिया– आर्याः, आराद्धेयधर्मेभ्यो याताः-प्राप्ता उपादेयध-र्मैरिति। *प्रज्ञा० ५५*।

आरुग्ग– आरोग्यं-सिद्धत्वम्। *आव० ५०७*।

आरुग्गबोहिलाभो– आरोग्यबोधिलाभः, आरोगस्य भाव आरोग्यं-सिद्धत्वं, तदर्थं बोधिलाभः-प्रेत्य जिनधर्मप्राप्तिः। आरोग्याय बोधिलाभः। *आव० ५०८*।

आरुभिता– छायाया नवमभेदः। *सूर्य० ९५*।

आरुहयं– आर्हतम्। *आव० ४६५*।

आरुहेत्– *आचा० ३७९*।

आरुहयते– अध्यास्यते। *उत्त० ५१०*।

आरुढ– आरुढः, अध्यासितः। *उत्त० ३४९*।

आरुढे पाउयाहिं– आरुढः पादुकयोः-काष्ठमयोपानहोः, एष-णायां नवमदायकदोषः। *पिण्ड० १५७*।

आरुवणा– आरोपणा, यत्रैकस्मिन्प्रायश्चित्तेऽन्यदप्यारोप्यते। *प्रश्न० १४५*। आचारप्रकल्पस्याष्टाविंशतितमो भेदः। *आव० ६६०*। पच्छित्तं *निशी० २३९* आ।

आरे– पंकप्रभापक्रान्तमहानरकाः। *स्था० ३६५*।

आरेण– आरतः, प्रत्यूषसि। *ओघ० १४८*। आरात्। *सूत्र० ४२३*।

आरोगसाला– अणाहसाला। *निशी० ३८* आ।

आरोग्गं– आरोग्यं, रोगाभावः। *आव० ३४१*। नीरोगता। *आव० ३४१*।

आरोग्गा– अरोगाः-जरादिवर्जिताः। *स्था० २४७*।

आरोवणा– आरोपणा, आरोपणमेकापराधप्रायश्चित्ते पुनः पुन आसेवनेन विजातीयप्रायश्चित्ताध्यारोपणम्। *स्था० २००*। प्ररूपणायाः प्रथमभेदः। *आव० ३८२*। परस्परावधारणम्। *आव० ३८३*। प्रायश्चित्तम्। *बृह० ८५* आ। चडावना (मायाप्रत्ययमधिकप्रायश्चित्तम्)। *स्था०३२५*। चडावणा, अहवा जं दव्वादि पुरिसं विभागेण दाणं सा आरोवणा। *निशी० ८५* अ। आचाराङ्गस्याष्टाविंशतितममध्ययनम्। *उत्त० ६१७*।

आरोवणाकसिणं– आरोपणाकृत्स्नं, षाण्मासिकं ततः परस्य भगवतो वर्द्धमानस्वामिनस्तीर्थे आरोपणस्याभावात्। *व्यव० ११८* आ।

आरोवणापायच्छित्तं– प्रायश्चित्तभेदः। *व्यव० ११* अ।

आरोहणा– आरोपणा-प्रायश्चित्तविशेषः। *व्यव० १२४*।

आरोहपरिणाहयुक्तता– आरोहो-दैर्घ्यं परिणाहो-विस्तर-स्ताभ्यां तुल्याभ्यां युक्तता, शरीरसम्पत्प्रथमभेदः। *उत्त० ३९*।

आरोहा– महामात्रा। *विपा० ४६*।
आरोहो– उस्सेहो। *निशी० २६६* आ। नातिदैर्घ्यं नातिह्रस्वता शरीरोच्छ्रयो वा। *बृह० पृ० ३०१* आ।
आर्जिका– अज्जिए, आर्यिका, मातुः पितुर्वा माता। *दशवै० २१६*।
आर्त्ताः– दुःखिनः रागद्वेषोदयेन। *आचा० १८३*।
आर्द्रकः– आर्द्रकनगराधिपतिः। *सूत्र० ३६*। विशिष्टतपश्चरणफलवान्। *सूत्र० २९१*। सचित्ततंतरुशरीरम्। *आव० ८२८*।
आर्द्रकुमारः– प्रतिमादर्शने दृष्टान्तः। *बृह० १८५* अ। सदाचारप्रयत्नवज्ज्ञातं। *सूत्र० ३८५*।
आर्यः– आरात्-सर्वहेयधर्म्मेभ्योऽर्वाग् यातः। *नन्दी० ४९*।
आर्यकम्– हरितम्। *दशवै० १८५*।
अज्जकण्हे- आर्यकृष्ण आचार्यनाम।
आर्यखपुट– विद्याबले दृष्टान्तः। *बृह० १५६* अ। विद्या-सिद्धः, सिद्धमन्त्रः। *दशवै० १०३*।
आर्यमंगु– आचार्यनाम। *बृह० २४* अ।
अज्जरक्खिय- आर्यरक्षित आचार्यनाम।
अज्जवयणं– आर्यवचनम्, आर्याणां-तीर्थकृतां वचनम्-आगमः। *उत्त० ५२६*।
आर्यवज्रः– कर्णाभ्यां श्रुते दृष्टान्तः। *बृह० ६३* अ।
आर्यश्यामः– आचार्यविशेषः। *प्रज्ञा० ६०६*।
आर्यसमुद्रः– आचार्यविशेषः। *बृह० २४* अ।
आर्यसुहस्ती– आचार्यविशेषः। *बृह० २४* आ।
अज्जा– आर्या, प्रशान्तरूपा। *अनुयो० २६*। भिक्षुणी। *ओघ० २०८*।
अज्जासुत्तं– आर्यासूत्रम्, सूत्रभेदः। *बृह० २०१* आ।
आर्जिका- आर्यिका मातुः पितुर्वा माता। *दशवै० २१६*।
आर्यैः– तीर्थकृद्भिः। *आचा० २७४*। सकलहेयधर्मेभ्यो दूरं यातैस्तीर्थकरादिभिराचार्यैर्वा। *उत्त० २९३*।
आलंकारिअभंडं– आलङ्कारिकभाण्डम्, आभरणभृतभाजनम्। *जम्बू० २५५*।
आलंकारियं– आलङ्कारिकम्, अलङ्कारयोग्यं भाण्डम्। *जीवा० २३६*।
आलंच– आलञ्चः, द्रव्यस्य बहुत्वेतरादिभिर्लोके प्रतीतभेदः। *प्रश्न० ५६*।
आलंब– आलम्बः, प्रलम्बः। *भग० १७५*।
आलंबण– आलम्बनम्, प्रपततां साधारणस्थानम्। *आव० ५३४*। प्रवृत्तिनिमित्तं शुभमध्यवसानम्। *आव० ५८६*। ग्लानादि। *उत्त० ५८७*। रज्ज्वादिवदापद्गर्ता-दिनिस्तारक-त्वादालम्बनम्। *भग० ७३८, ७३९*। आश्रयणीयं गच्छकुटुं-बकादि। *स्था० १५४*।
आलंबणबाहा– अवलम्बनबाहाः, द्वयोः पार्श्वयोरवलम्बनाश्र-यभूता भित्तयः। *जम्बू० २९२*।
आलइअ– आलगितम्, आविद्धम्। *आव० १८५*। यथास्थानं स्थापितम्। *जम्बू० १६०*। *प्रज्ञा० १०१*।
आलइयमालमउड– आलगितमालमुकुटम्, आलगितमालं मुकुटं यस्य सः। *भग० १७४*। आलगितमालमुकुटः। *आचा० ४२३*।
आलए– आलयः, आश्रयः। *जीवा० २७९*। *उत्त० ४५४*। *जम्बू० १८*। वसतिः, सुप्रमार्जिताः स्त्रीपशुपण्डकविवर्जिता वा। *आव० ५२९*।
आलग्गो– अधृतिमापन्नः, कातरः। *आव० ८००*।
आलपाल– प्रलापः। *आव० ६६९*।
आलभिआ– आलंभिका नगरीविशेषः, वीरस्य सप्तमवर्षारा-त्रस्थानम्। *आव० २०९, २२१*।
आलभिया– आलंभिका, नगरीविशेषः। *भग० ५५०*। नगरीविशेषः। *भग० ६७५*।
आलय– आवासः। *ओघ० १५६*। आश्रयः। *जीवा० १७६*। *जम्बू० १२१*।
आलयविन्नाणं– आलयविज्ञानं-ज्ञानसंततिः। *सूत्र० २६*।
आलयगुणेहिं– आलयगुणैः, बहिश्चेष्टाभिः प्रतिलेखनादिभिरु-पशमगुणेन च। *बृह० ६२* अ।
आलवंते– आलपन्, अत्यर्थं लपन्। *अनुयो० १४२*। आलपति, आङिति ईषल्लपति-वदति। *उत्त० ५५*।
आलविज्ज– ईषत्सकृद्वा लपनमालपनम्। *दशवै० २१६*।
आलवित्तए– आलपनम्, सकृत्सम्भाषणम्। *आव० ८११*। आलपितुं-सकृत्सम्भाषितुम्। *उपा० १३*।
आलस्स– आलस्यम्, अनुद्यमस्वरूपम्। *उत्त० १५१*। अनुत्साहात्मा। *उत्त० ३४५*।
आला– विद्युत्कुमारीमहत्तरिका। *स्था० ३६१*।
आलाएति– आलगयति। *आव० १००*।
आलानम्– हस्तिबन्धनस्तम्भम्। *नन्दी० १५३*।
आलाव– आलापः, सकृज्जल्पः। *भग० २२३*। आलापः

आङ ईषदर्थत्वादीषल्लपनम्। *स्था० ४०७*।

आलावगो– आलापकः। *आव० २६०*।

आलावणबंधे– आलापनबंधः-आलाप्यते-आलीनं क्रियत एभिरित्यालापनानि रज्ज्वादीनि तैर्बन्धस्तृणादीनाम्। *भग० ३९५, ३९८*।

आलावो– बहुमाणणेहभरितो सरभसं णमोक्खमासमणाणंतितो गुरुआलावो भण्णति। *निशी० २३७* आ।

आलिं– वनस्पतिविशेषः। *जीवा० २००*।

आलिंग– आलिङ्गः, यो वादकेन मुरजमालिङ्ग्य वाद्यते। *जम्बू० १०१*। मुरजो वाद्यविशेषः। *जम्बू० ३१*। मृन्मयो मुरजः। *जीवा० १०५*।

आलिंगकसंठित– आलिङ्गसंस्थितः, आवलिकाबाह्यस्य चतुर्दशं संस्थानम्। *जीवा० १०४*।

आलिंगण– आलिङ्गनम्, ईषत्स्पर्शनम्, सम्प्राप्तकामस्य दशमो भेदः। *दशवै० १९४*। स्पृशनम्। *निशी० २५६* आ।

आलिंगणवट्टि– आलिङ्गनवर्ती, शरीरप्रमाणमुपधानेन वर्त्तते यत्। *जम्बू० २८५*। *जीवा० २३२*। *सूर्य० २९३*।

आलिंगणि– आलिङ्गिनी, अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चके चतुर्थो भेदः। *आव० ६५२*।

आलिंगपुक्खरे– आलिङ्गपुष्करम्, मुरजमुखम्। *भग० १४५*।

आलिंगणी– पुरुषप्रमाणं पार्श्र्वमुपधानं। *बृह० २२०* अ। जाणुकोप्परादिसु जा दिज्जति सा। *निशी० ६१* अ।

आलिंगिता– पुरिसेणित्थीस्तनादिषु स्पृष्टा। *निशी० ११३* अ।

आलिंगो– आलिङ्ग्यः। *जीवा० २६६*। आलिङ्गः, मुरजो वाद्यविशेषः। *जीवा० १८९*।

आलिंपइ– सकृत् लिंपइ। *निशी० ७६* आ।

आलि– वनस्पतिविशेषः। *जम्बू० ४५*। *जीवा० २००*। औषधविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

आलिघरं– आलिगृहकम्, वनस्पतिविशेषस्तन्मयं गृहकम्। *जीवा० २००*।

आलिद्धमणालिद्धं– आलिष्टानाश्लिष्टम्, कृतिकर्मणि चतुर्भ-ङ्गभिन्नः सप्तविंशतितमो दोषः। *आव० ५४४*।

आलित्त– अभिविधिना ज्वलितः। *भग० १२१*। आदीप्तः। *अन्त० १७*। आलित्र, नौवाहनोपकरणः। *आचा० ३७८*।

आलिद्धा– आदिग्धाः, शिलायां शिलापुत्रके वा लग्नाः। *भग० ७६६*।

आलिन्दकम्– अलिंदग, कुण्डुल्कम्। *अनुयो० १५१*।

आलिसंदग– चपलकाः। *जम्बू० १२४*। चवलकप्रकाराः, चवलकाः। *भग० २७४*। धान्यविशेषः। *भग० ८०२*।

आलिसिंदया– चवलया। *स्था० ३४४*।

आलिहइ– आलिखति, विन्यस्यति। *जम्बू० १९२*।

आलिहमाण– आलिखन्, ईषत्सकृद्वाऽऽकर्षन्। *भग० ३६५*।

आलिहाविज्जा– ईषत्सकृद्वाऽऽलेखनम्। *दशवै० १५२*।

आलिहित्ता– आलिख्य, आकारकरणेन कृत्वा अन्तर्वर्णका-दिभरणेन पूर्णानि कृत्वा। *जम्बू० १९२*।

आलीढं– आलीढम्, आक्रान्तम्। *आव० ७०४*। दक्षिणपाद-मग्रतो भूतं कृत्वा वामपादं पश्र्चात्कृत्यापसारयति, अन्तरं द्वयोरपि पादयोः पञ्च पादाः, लोकप्रवाहे प्रथमं स्थानम्। *आव० ४६५*। यत्र दक्षिणं पादमग्रतः कृत्वा वामपादं पृष्ठतः सारयति, अन्तरं द्वयोरपि पादयोः पञ्च पदानि तत्स्थानम्। *उत्त० २०५*। दक्षिणमूरुमग्रतो मुखं कृत्वा वाममूरुं पश्र्चा-त्मुखमपसारयति, अन्तरा च द्वयोरपि पादयोः पञ्च पदाः ततो वामहस्तेन धनुर्गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन प्रत्यञ्चामाकर्षति तत्। *व्यव० ४६* आ। योधसंस्थानं। *आचा० ८९*। योधस्थानम्। *स्था० ३*। वामूरुअं अग्गओ काउं दाहिणपिट्ठतो वामह-त्थेण धणू घेत्तूणं दाहिये एयं गच्छइ। *निशी० ९०* अ।

आलीणाणि– ईसिं लीणाणि। *दशवै० १२५*।

आलीणे– आलीनः। *जीवा० २७३*। गुरुसमाश्रितः, संलीनो वा। *भग० ८१*।

आलीवग– आदीपिकः, गृहादिप्रदीपनककारी। *प्रश्न० ४६*।

आलीवणं– व्याकुललोकानां मोषणार्थं ग्रामादिप्रदीपनकम्। *विपा० ३९*।

आलुंचनं– आलुञ्चनं, ग्रहणम्। *आव० ५६२*।

आलुंपे– आलुम्पः, निर्लाञ्छनगलकर्त्तनचौर्यादिक्रियाकारी। *आचा० १०२*।

आलुए– आलुकः-अनन्तकायभेदः। *भग० ३००*। कन्द-विशेषः। *उत्त० ६९१*। आलुकम्-साधारणवनस्पतिकायि-कभेदः। *जीवा० २७*। आलुका-कुण्डिका। *अनुत्त० ५५*।

आलुयं– आलुकम्, कन्दविशेषः। *अनुत्त० ६*। त्रयोविंश-तितमशतकाद्योद्देशकः। *भग० ८०४*। आर्द्रकम्। *भग० ८०४*।

आलेखः– विचित्रम्। *जीवा० १९९*।

आलेवणं– आलेपनम्। *आव० ६२३*। *आचा० ३२*।

आलेहो– आलेखः, चित्रम्। *जम्बू० ३२*।

आलो– आलं, अशक्यक्रियम्। *आव० ९४*।

आलोअं– अवलोकः, निर्यूहकादिरूपः। *दशवै० १६६*। बहिः-प्रस्थानभाविनि शकुनानुकूल्यालोकेन। *जम्बू० २६३*। सौरप्रकाशम्। *प्रज्ञा० ५००*।

आ(अव)लोअचलं– आ(अव)लोकचलम्, अवलोकनमा-लोकस्तस्मिंश्र्चलं, दर्शनलालसम्। *आव० ७८४*।

आलोअणं– आलोकनम्, निरूपणम्। *ओघ० ५२*। अण्णेसिं आख्यानं। *निशी० ३३४*अ। आलोक्यन्ते दिशो-ऽस्मिन् स्थितैरिति। *उत्त० ४५१*। आलोचनम्-गुरुनिवेदनम्। *स्था० १३७*। प्रायश्र्चित्तभेदः। *स्था० २००*।

आलोअणा– आलोचना, आभिमुख्येन गुरोरात्मदोषप्रका-शनम्। *आव० ४६९*।

आलोअभायणं– आलोकभाजनम्, मक्षिकाद्यपोहाय प्रकाशप्र-धानं भाजनम्। *दशवै० १८०*।

आलोइज्ज– आलोचयेत्-प्रकाशयेत्। *उत्त० ५४४*।

आलोइज्जा– आलोकयेत्-पश्येत्-ब्रुयात्। *आचा० ३२८*। अवलोकयेत्। *आचा० ३९६*।

आलोइता– आलोकिता, ईषद्दृष्टा। *उत्त० ४२५*। समन्ताद्दृष्टा। *उत्त० ४२५*।

आलोइत्तए– आलोचयितुम्, गुरवेऽपराधान्निवेदयितुमिति। *स्था० ५६*।

आलोइयं– आलोकितं-प्रत्युपेक्षितं। *आचा० ४२८*।

आलोइयपडिक्कंते– आलोचितप्रतिक्रान्तः, आलोचितं गुरूणां यदतिचारजातं तत्प्रतिक्रान्तम्-अकरणविषयीकृतं येनाथ-वाऽऽलोचितश्र्चासावालोचनादानात्प्रतिक्रान्तश्र्च मिथ्यादु-ष्कृतदानादालोचितप्रतिक्रान्तः। *भग० १२८*।

आलोए– आलोकः, दर्शनम्। *भग० ३१८*। दर्शनं, दृश्य-मानता। *जीवा० ३९१*। आलोचयेत्-दत्तावधानो भवेत्। *आचा० ३४२*। चक्षुर्दर्शनपथे। *ओघ० १८३*।

आलोएइ– आलोचयति। *आव० ७२५*।

आलोएज्जा– आलोचनं-गुरुनिवेदनम्। *स्था० १३७*।

आलोएत्तो– आलोयणा। *व्यव० १०८*अ।

आलोको– आलोक्यत इति आलोकः-स्थानदिगादिनिरूपणम्। *ओघ० १८१*। अतिस्निग्धदीपशिखादिदर्शनम्। *उत्त० ६३१*। सावकाशं मुक्त्वाऽभ्यन्तरे स्वपन्ति। *ओघ० १०७*। आलोक्यन्ते दिशोऽस्मिन् स्थितैरिति। *उत्त० ४५१*।

आलोग– आलोकम्, सौरप्रकाशम्। *जम्बू० २२९*। चोप-लपादी। *दशवै० ७६*। समो भूभागः। *ओघ० १९३*। आलोकनमालोको यावद्दृष्टिप्रसरः। *ओघ० २३*।

आलोचयति– गणयति प्रेक्षते च। *आव० ५३६*।

आलोयं– आलोकम्। *ओघ० ८४*। दृष्टिपथम्। *औप० ६९*। स्थानदिक्प्रकाशादिसप्तधाऽऽलोकम्। *बृह० १४६*आ। प्रकाशः। *आव० ६४२*। आलोकस्थानं-गवाक्षादिकं। *आचा० ३४१*।

आलोयणं– आलोचनम्, यथागृहीतभक्तपाननिवेदनम्। *प्रश्न० १११*। आलोचना, प्रयोजनतो हस्तशताद्बहिर्गमनागमनादौ गुरोर्विकटना, मिथ्यादुष्कृतं च। *आव० ७६४*। एकादशी गुर्वाशातना। *आव० ७२५*। गुरोः पुरतो वचसा प्रकटीकरणम्। *व्यव० १४*अ। *स्था० २००*। अलवणं। *व्यव० ३३५*अ। सकृत् अनेकशः प्रलोकनम्। *निशी० २२२*।

आलोयणा– आलोचना, आङिति-सकलदोषाभिव्याप्त्या-लोचना-आत्मदोषाणां गुरुपुरतः प्रकाशना। *उत्त० ५७९*। आलोचना। *ओघ० २२५*। योगसङ्ग्रहे प्रथमो योगः। *आव० ६६३*। परस्स पागडं करेइ। *निशी० ८५*अ। *व्यव० १०७*आ।

आलोयणाणुलोमं– आलोचनानुलोम्यम्, पूर्वं लघवः आलो-च्यन्ते पश्र्चाद् गुरवः। *आव० ७८१*।

आलोयणारिह– आलोचना-निवेदना तल्लक्षणां शुद्धिं यदर्हत्यतिचारजातं तदालोचनार्हम्। *भग० ९२०*।

आलोयभायणं– आलोकभाजनम्, प्रकाशमुखे भाजने, अथवा आलोके-प्रकाशे नान्धकारे पिपीलिकावालादीनामनुप-लम्भात्, तथा भाजने-पात्रे, पात्रं विना जलादिसम्पतित-सत्त्वादर्शनादिति। *प्रश्न० ११२*।

आलोविअ– अलोपिकः। *दशवै० ४४*।

आलोवेइ– आलोचयति। *आव० ७१०*।

आवंति– आचारप्रकल्पे प्रथमश्रुतस्कन्धस्य पञ्चममध्ययनम्। *प्रश्न० १४५*। आचाराङ्गस्य पञ्चममध्ययनम्। *उत्त० ६१६*। आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधस्य पंचमाध्ययनम्। *सम० ४४*। *आचा० १९६*। *आचा० १८५*। आचारप्रकल्पस्य पञ्चमो भेदः। *आव० ६६०*।

आवंती– लोकसारापराभिधं, आचारांगपंचमाध्ययनम्। *स्था० ४४४*।

आवइ– आगच्छत्यापतति। *उत्त० २८०*।

आवईसु दढधम्मया– आपत्सु दृढधर्मता, योगसङ्ग्रहे तृतीयो योगः। *आव० ६६४*।

आवकधाते– यावत्कथा-यावज्जीवम्। *स्था० २३६*।

आवकहियं– यावत्कथिकम्, प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्या-प्राणोपरमात् तच्च भरतैरावतभाविमध्यद्वाविंशतितीर्थकरतीर्थान्तरगतानां विदेहतीर्थान्तरगतानां च साधूनामवसेयम्। *प्रज्ञा० ६३*। सकृद्गृहीतं यावज्जीवमपि भावनीयम्। *आव० ८३९*। यावज्जीविकं व्रतादिलक्षणम्। *आव० ५६३*। यावज्जीविकं महाव्रतभक्तपरिज्ञादिरूपम्। *स्था० ३८०*। ये कल्पसमाप्त्यन्तरमव्यवधानेन जिनकल्पं प्रतिपत्स्यन्ते ते यावत्कथिकाः। *प्रज्ञा० ६८*।

आवज्जणं– आवर्जनम्। *ओघ० १६९*।

आवज्जय– आवर्जकः, आराधकः। *उत्त० ३६१*।

आवज्जीकरणं– आवर्जीकरणम्, आवर्जितः-अभिमुखीकृतः मोक्षगमनं प्रत्यभिमुखीकृतस्य करणं-क्रिया शुभयोगव्यापारः। *प्रज्ञा० ६०४*। आवर्जीकरणम्-अन्तर्मौहूर्त्तिकं उदीरणाव-लिकायां कर्मप्रक्षेपव्यापाररूपम्। *स्था० ४४२*।

आवट्ट– आवर्त्तः शङ्खसत्कः। *उत्त० ६०५*। संसारः। *आचा० ६२*।

आवट्टजोणी– आवर्त्तयोनिः, आवर्त्तोपलक्षिता योनिः। *उत्त० १८३*।

आवट्टणं– आवर्त्तनम्, परिभ्रमणम्। *सूर्य० २७६*।

आवट्टती– आवर्त्यते, पीड्यते-दुःखभाग्भवति। *सूत्र० १९०*।

आवट्टितो– आवृत्तः। *आव० ९५*।

आवट्टो– आवर्त्तः, आवर्त्तयति-प्राणिनं भ्रामयतीति। *सूत्र० ८६*। *उत्त० १८३*। *जीवा० २४३*।

आवड– आवर्त्तः-मणीनां लक्षणः। *जीवा० १८९*।

आवडइ– आपतति, भवति। *ओघ० ९०*।

आवडण– अभिघातः, आपतनं वा। *बृह० ७७* आ। प्रस्फोटनम्। *ओघ० १२२*। आभिडणं। *ओघ० २०४*। पक्खलणं। *निशी० ४९* अ। आपतनं-द्वारादौ शिरसो घट्टनम्। *बृह० २९५* अ।

आवडणपडणादी– आपतनपतनादयः। *ओघ० ९०*।

आवडणा– उसूआदिसु पक्खलणा। *निशी० २१* अ।

आवडिऊण– आपत्य। *आव० १९६*।

आवडिए– अवकोटितानि, अधस्तादामोटितानि। *उत्त० ३६७*।

आवडिओ– आपतितः। *आव० ५७८*। आस्फालितः। *आव० १९६*। आपतितम्। *उत्त० १७०*। *आव० ३२०*।

आवडिया– आपतितौ, प्राप्तौ। *उत्त० ५३०*।

आवण– आपणः, हट्टः। *भग० २३८, १३६*। *प्रश्न० ८*। वीथिः। *दशवै० १७६*। *जम्बू० १०७*। *अनुयो० १५९*। आपणः, पण्यस्थानम्। *प्रश्न० १२७*।

आवणवीहि– आपणवीथिः, हट्टमार्गः, रथ्याविशेषः। *जीवा० २४६*।

आवणाइ– आयतनानि, आपतनानि वा उपभोगार्थमागमनानि। *जम्बू० १२१*।

आवण्ण– आपन्नपरिहारिकाः। *बृह० २०* अ।

आवण्णपरिहारो– आवन्नपरिहारिकः, जो मासियं वा जाव छम्मासियं वा पायच्छित्तं आवण्णो तेण सो सपच्छित्ती असुद्धो अ विसुद्धचरणेहिं साहूहिं परिहरिज्जति इह तेण अहिकारो। *निशी० ८९* आ।

आवण्णसत्ता– आपन्नसत्त्वा, गर्भवती। *उत्त० ५३*।

आवती– प्रतिसेवनापंचमभेदः। *भग० ९१९*। आपत्यः-द्रव्यतः प्रासुकद्रव्यं दुर्लभं क्षेत्रतोऽध्वप्रतिपन्नता कालतो दुर्भिक्षं भावतो ग्लानत्वं। *स्था० ४८४*।

आवतीगंगा– गंगामहागंगासादीनगंगामृत्युगंगालोहितगंगातः सप्तगुणा आवतीगंगा। *भग० ६७४*।

आवत्त– आवर्त्तः, आवर्त्तनम्, प्रादक्षिण्येन परिभ्रमणम् । *जम्बू० १८७*। षोडशसागरस्थितिकं महाशुक्रविमानम्।

सम० ३२। आवर्तकः, पयसां भ्रमः। *जम्बू० १११*। चिकुरसंस्थानविशेषः। *जम्बू० १८३*। मणीनां लक्षणानि। *जम्बू० ३१*। महाविदेहे विजयनाम। *जम्बू० ३४६*। अप्राप्तम्-अस्पृष्टम्, आवर्त्त आवृत्तिरावर्त्तनं-परिभ्रमणम्। *भग० १२८*। आवर्त्तिका। *जीवा० २४४*।

आवत्तकूडे– आवर्तकूटम्, नलिनकूटे तृतीयकूटनाम। *जम्बू० ३४६*।

आवत्तगा– एकखुरविशेषचतुष्पदः। *प्रज्ञा० ४५*।

आवत्तणपेढिया– आवर्तनपीठिका, यत्रेन्द्रकीलिका। *जीवा० २०४*। यत्रेन्द्रकीलको निवेशितः। *जीवा० ३५९*। यत्रेन्द्रकीलो भवति। *जम्बू० ४८*। अग्रद्वारम्। *निशी० १९* अ। आवर्तनम्-भक्तीभवनम्। *व्यव० २०३* आ।

आवत्ता– आवर्ता, ग्रामविशेषः। *आव० २०६*। आवर्त्तबहुल-जला नदी। *बृह० १६२* आ। धातकीखंडे तन्नाम महाविदेहगतो विजयः। *स्था० ८०*।

आवत्ते– आवर्त्तः, विजयस्य नाम। *जम्बू० ३४६*। घोषव्य-न्तरेन्द्रलोकपालः। *स्था० १९८*।

आवत्तो– आवर्त्तः, एकखुरविशेषः। *प्रश्न० ७*। एकखुरश्र्च-तुष्पदः। *जीवा० ३८*। नाट्यविशेषः, भ्रमद् भ्रमरिकादा-नैर्नर्त्तनम्। *जम्बू० ४१४*। *जीवा० २४६*।

आवपनम्– लोहमयं शकटोपकरणम्। *पिण्ड० २२*।

आवबहुले– अब्बहुलम्, जलबहुलं, रत्नप्रभापृथव्यास्तृ-तीयकाण्डः। *जीवा० ८९*।

आवयं– आवर्त्तः, अहोकायमित्यादि सूत्रगर्भो गुरुचरण-न्यस्त-हस्तशिरः स्थापनारूपः, सूत्राभिधानगर्भः काय-चेष्टाविशेषः। *आव० ५४२*।

आवयइ– अतिपतति। *आचा० २६५*।

आवरणं– आवरणम्, स्फुरकादि। *प्रश्न० १३*। आव्रियते आकाशमनेनेति, भवनप्रासादनगरादि तल्लक्षणशास्त्रम् । *स्था० ४५१*। सन्नाहः। *प्रश्न० ४९*। कवचादि। *उत्त० १४३*। *आव० ३४६*। कपाटं। *बृह० १११* अ। कवचः। *भग० ९४*। आवरणे-प्रच्छादनपटे। *जम्बू० २३६*। फलकादि। *आचा० ६०*। स्फुरककण्टकादि। *भग० ३१८*। आङो मर्यादेषदर्थवचनत्वात् ईषन्मर्यादया वाऽऽवृणव-न्तीत्यावरणाः, ततश्र्च सर्वविरतिनिषेधार्थ एवायं वर्तते न देशविरतिनिषेधे खल्वावरणशब्दः। *आव० ७८*। खेटकं सन्नाहं वा। *जम्बू० ३५९*। सन्नाहं। *स्था० ४५०*।

आवरणप्रविभक्तिः– अष्टमनाट्यभेदः। *जम्बू० ४१६*।

आवरिसणं– पाणिएण उप्फोसणं। *निशी० १७२* आ।

आवरेत्ता– आवृत्य-अवष्टभ्य। *भग० ५७६*।

आवर्जनम्– आराधना। *उत्त० ५९१*। आवर्षणं गन्धोदका-दिना। *अनुयो० २६*।

आवर्तना– आउट्टणा, आवर्जनं, निवेदनम्। *बृह० ४७* आ।

आवलगनादिकाः– क्रियाविशेषाः। *आचा० १२४*।

आवलणं– आवलनम्, मोटनं, अथवा गलकस्य बलादावलनं मारणं चेति। *प्रश्न० २२*।

आवलियपविट्ठो– आवलिकाप्रविष्टः, श्रेणिव्यवस्थितः। *जीवा० १०५*।

आवलिया– आवलिका-असंख्यातसमयमाना। *स्था०८५*। आवलिका, श्रेणिः। *जीवा० १०५*। असंख्येयसमयसंघा-तोपलक्षितः कालः। *आव० ६१*। परंपरा। *आव० ८५८*। असङ्ख्यातसमयात्मिका। *भग० २११*। वंशः, प्रवाहः। *जम्बू० १६६*। तत्र या विच्छिन्ना एकांते भवति मण्डली सा आवलिका। *व्यव० २१* अ। असङ्ख्येयसमयसमुदा-यिका। *सूर्य० २९२*। वंशः, प्रवाहः, *जम्बू० २५८*।

आवलियाठावगो– आवलिकास्थापकः आचार्यपारम्पर्यम्। *आव० ३०७*।

आवलियापविट्ठ– आवलिकाप्रविष्टम्, यत्पूर्वादिषु चतसृषु दिक्षु श्रेण्या व्यवस्थितम्। *जीवा० ३९७*।

आवलियाबाहिरं– आवलिकाबाह्यम्, यत्पुनरावलिकाऽऽ-विष्टानां प्राङ्गणप्रदेशे कुसुमप्रकर इव यतस्ततो विप्रकीर्णम्। *जीवा० ३९७*।

आवली– हारः। *बृह० ४८* अ। पुद्गलानां दीर्घरूपा श्रेणिः। *सूर्य० १३०*। आवली, पङ्क्तिः। *ओघ० ८२*।

आवल्लो– बलीवर्दः। *आव० ६६५*। *उत्त० १९२*।

आवसंत– आवसन्, विवसन्। *आचा० ११*। आङिति-गुरु-दर्शितमर्यादया वासना। *उत्त० ८०*। *स्था० ९*। मया गुरुकुले आमृशन्। *सम० २*। आवसन्-सेवमानः। *आचा० २१३*।

आवसह– आवसथः, आश्रयः। *उत्त० ६२६*। *दशवै० २४५*। शेषभवनप्रकारः। *उत्त० ३८५*। आवसथः, परिव्राजकस्था-नम्। *प्रश्न० १२६*। *औप० ६१*। परिव्राजकाश्रयः। *प्रश्न० ८*। उटजाकारं गृहम्। *सूत्र० ३१५*।

आवसहिय– आवसथिकः, तीर्थिकविशेषः। *सूत्र० ४२२*।

आवसिया– आवश्यिकी, अवश्यकर्त्तव्ययोगैर्निष्पन्ना। *आव० २५१*।

आवस्सए– आवश्यकम्, अवश्यकर्त्तव्यं संयमव्यापारनिष्पन्नम्। *आव० ११९*। कायिकादिव्युत्सर्गम्। *ओघ० १४७*।

आवस्सग– आवश्यकम्, समन्तादात्मवश्यकारकम्। *अनुयो० ११*। अवश्यं कर्तव्यं आवश्यकं-कायिकाव्युत्सर्गरूपम्। *ओघ० १४९*। कायिकोच्चारादि। *ओघ० ८७*। प्रतिक्रमणम्। *ओघ० ९३, ५८*। सामायिकादि षडध्ययनकलापः। *अनुयो० ७*। आवश्यकम्, श्रमणादिभिरवश्यं क्रियत इति, ज्ञानादिगुणा मोक्षो वा आ-समन्ताद् वश्यः क्रियतेऽनेन इति, आ-समन्तादवश्या इन्द्रियकषायादिभावशत्रवो येषां ते तथा, तैरेव क्रियते यत् तत्। *अनुयो० ३१*। आवासकं वा समग्रगुणग्रामा-वासकं वा। *अनुयो० ३१*। दोषत्यागलक्षणमवनतादिकम्। *आव० ५४५*। गुणानां आ-समन्तादवश्यमात्मानं करोति। *अनुयो० १०*। नियमतः करणीयम्। *आव० ५९४*। भद्रम्। *आव० ४२६*। मूलगुणोत्तरगुणानुष्ठानलक्षणः। *आव० २६७*। आवर्त्तादिकम्। *आव० ५११*। कायिकाव्युत्सर्गलक्षणम्। *ओघ० १५२*। सामायिकादिषड्विधम्। *स्था० ५१*। अवश्यं कर्तव्यमावश्यकं, अथवा गुणानामावश्यमात्मानं करोतीत्या-वश्यकं, यथा अन्तं करोतीत्यन्तकः, अथवा 'वस निवासे' इति गुणशून्यामात्मानमावासयति गुणैरित्यावासकम्। *आव० ५१*।

आवस्सय– सञ्ज्ञा कायिकीलक्षणम्। *बृह० २६१ अ*।

आवस्सयाइं– आवश्यकानि, शरीरचिंतादेवतार्चनादीनि। *व्यव० १६९ आ*।

आवस्सिआ– आवश्यकी, क्वचिद्बहिर्गमनकार्ये समुत्पन्नेऽव-श्यंगन्तव्यमितिभणनम्। *बृह० २२२ अ*। ज्ञानाद्यालम्बनेनोपाश्रयाद् बहिरवश्यंगमने समुपस्थितेऽव-श्यंकर्त्तव्यमिदमतो गच्छाम्यहमित्येवं गुरुं प्रति निवेदना। *अनुयो० १०३*।

आवस्सिता– चतुर्थी सामाचारी। *स्था० ४९९*।

आवस्सिया– आवश्यिकी, अवश्यकर्त्तव्यैश्चरणकरणयोगै-र्निर्वृता। *आव० ५४७*। *बृह० २२४ अ*।

आवहो– दारकपक्षिणामावहः। *व्यव० ३४२ आ*।

आवाए– आपातः, अन्यतोऽन्यतआगमनात्मकः। *उत्त० ८६*।

आवागसीसाओ– आपाकशिरसः। *नन्दी० १७७*।

आवागो– आपाकः, भ्राष्ट्रं। *आव० १०१*।

आवाडा– आपाता इति नाम्ना किराताः। *जम्बू० २३२*।

आवातभद्दते– प्रथममीलके दर्शनालापादिना भद्रकारी। *स्था० १९७*।

आवाय– आपातः, तत्प्रथमतया संसर्गः। *भग० ३२६*। आभिमुख्येन समवायः। *आव० ३२६*। अभ्यागमः। *ओघ० ११९*।

आवारि– लघ्वापणम्, आस्पदम्। *आव० ६७५*।

आवावकहा– आवापकथा, ईयद्द्रव्या शाकघृतादिश्चात्रो-पयुक्ता इत्यादि प्रशंसनं द्वेषणं वा, भक्तकथायाः प्रथमभेदः। *आव० ५८१*। शाकघृतादीन्येतावन्ति तस्यां रसवत्यामुप-युज्यन्त इत्येवंरूपा कथा आवापकथा। *स्था० २०९*।

आवास– आवासः, देववासस्थानम्। *जम्बू० ३९७*। आवश्यकम्-प्रतिक्रमणम्। *आव० ७८४*। *ओघ० २००*। *प्रज्ञा० ६०६*। निवासः। *जीवा० १८०*।

आवासग– आवासकम्, समन्तादवासयति गुणैरिति। *अनुयो० ११*। गुणशून्यमात्मानमावासयति गुणैरिति, गुणसान्निध्य-मात्मनः करोतीति भावार्थः। *आव० ५१*। प्राभातिकवैका-लिकप्रतिक्रमणलक्षणे। *व्यव० १८२ अ*।

आवासिय– आवासितः, स्थितः। *दशवै० १०७*।

आवासेंति– आवासयन्ति, वसन्ति। *आव० ६५४*।

आवाहं– सरीरवज्जा पीडा। *निशी० ३३५ अ*।

आवाह– आवाहः, विवाहात्पूर्वं ताम्बूलदानोत्सवः। *जम्बू० १२३*। *जीवा० २८१*।

आवाहणं– आवाहनम्, गमनम्। *प्रश्न० २०*।

आवाहिओ– आहूतः। *आव० ३६९, ३९३*।

आवाहो– आवाहः, अभिनवपरिणतस्य वधूवरस्यानयनम्। *प्रश्न० १३९*। सुहं दिवसं। *निशी० ९२ आ*। वध्वा वरगृहानयनम्। *बृह० ४३ आ*। आहूयन्ते स्वजनास्ताम्बू-लदानाय यत्र सः। *जीवा० २८१*।

आविंध– परिधेहि। *आव० ९९*।

आवि– आविः, जनसमक्षं प्रकाशदेश इतियावत्। *उत्त० ५४*।

आविइ– अनुसमयम्-प्रतिक्षणमं। *भग० ६२५*।

आविए– आपिब। *उत्त० ३३९*।

आविद्धं– परिहितम्। *जम्बू० १९०, २७८*। आलगितम्। *प्रज्ञा० १०१*। व्याप्तम्। *उत्त० ५४८*। समन्तात्ताडितः। *उत्त० ४९५*। शिरस्यारोपणेन आविद्धः। *भग० १९३*।

आविद्धामो– परिदध्मः। *आव० ६५*।

आविलं– आविलम्, सकालुष्यमाकुलं वा। *प्रश्न० ५३*। अविमलमस्वच्छं प्रकृत्या। *जीवा० ३०३*।

आवी– गंगागामी नदीविशेषः। *स्था० ४७७*।

आवीईमरणे– आ-समन्ताद्वीचय इव वीचयः-आयुर्दलिक-विच्युतिलक्षणाऽवस्था यस्मिंस्तदावीचि, अथवा वीचिः-विच्छेदस्तदभावादवीचि, दीर्घत्वं तु प्राकृतत्वात्तदेवंभूतं मर-णमावीचिमरणं-प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचटनलक्षणम्। *सम० ३३*।

आवीचिमरणं– आवीचिमरणं, सप्तदशमरणभेदे प्रथमः। *उत्त० २३०*।

आवीचियगरणं– आ-समन्ताद्वीचयः-प्रतिसमयमनुभूय-मानायुषोऽपरापरायुर्दलिकोदयात्पूर्वपूर्वायुर्दलिकविच्यु-तिलक्षणाऽवस्था यस्मिन् तदावीचिकं, अथवाऽविद्यमाना वीचिः-विच्छेदो यत्र तदवीचिकं अवीचिकमेवाविचिकं तच्च तन्मरणं चेत्यावीचिकमरणम्। *भग० ६२४*।

आवीलए– आङ्ईषदर्थे, ईषत्पीडयेद्-अविकृष्टेन तपसा शरीरकमापीडयेत्, एतच्चप्रथमप्रव्रज्याऽवसरे। *आचा० १९२*।

आवीलाविज्जा– आपीडनम्, सकृदीषद्वा पीडनम्। *दशवै० १५३*।

आवेउं– आपातुम्, भोक्तुम्। *दशवै० ९६*।

आवेढिओ– एगदुतिदिसिढ़ितेसु, अहवा एगपंतीए समंताठिएसु, आङ् मर्यादयाऽऽवेष्टितः। *निशी० ४६* आ।

आवेढियं– आवेष्टितम्, सकृदावेष्टितम्। *स्था० ५०२*।

आवेढियपरिवेढिए– आवेष्टितपरिवेष्टितः, गाढतरं संवेल्लितः। *प्रज्ञा० ३०६*।

आवेयणं– आवेदयति, निवेदयति कालमित्यर्थः। *ओघ० २०४*।

आवेलिज्ज– आपीडयेत्, गाढमवगाहयेत्। *उत्त० ४७५*।

आवेसणं– लोगसमवायट्ठाणं। *निशी० ६९* आ। आ-समन्ताद्विशन्ति यत्र तदावेशनम्-शून्यगृहम्। *आचा० ३०७*।

आशाम्बराः– दिगम्बराः। *प्रज्ञा० २०*।

आश्रयं गच्छामि– भक्तिं करोमीत्यर्थः। *आव० ५७१*।

आश्रित्य– प्रतीत्य। *जीवा० ५६*। *उत्त० ६०२*।

आसं– अश्र्वम्, मनः। *प्रज्ञा० ६००*। आशां-भोगाकांक्षां। *आचा० १२७*।

आसंकलनम्– चयनम्। *स्था० १७९*।

आसंतर– अश्र्वतरः, वेगसरः, अजात्याघोटकः। *दशवै० १९४*।

आसंदओ– आसन्दकः। *आव० ५५८*।

आसंदग– कट्ठमओ। *बृह० २११* अ। कट्ठमओ अज्झूसिरो। *निशी० २०८* अ। पल्यङ्कः। *आव० ३५८*।

आसंदयं– आस्यन्दकम्। *आव० ६९३*।

आसंदी– मञ्चिका। *पिण्ड० १०९*। उपवेशनयोग्या मञ्चिका। *सूत्र० ११८*। *दशवै० २०४*। उपवेशनार्हमासनम् । *दशवै० ११७*। आसनविशेषः। *सूत्र० १८२*। मञ्चकः। *सूत्र० २७८*।

आसंसइयं– असंशयितं, निःसंशयं मनःसंश्रितं वा। *सूत्र० ३१०*।

आसंसपओगो– निदानकरणं। *निशी० ३५* अ।

आसंसा– आशंसा-अप्राप्तप्रापणाभिलाषः। *आचा० ११५*।

आस– अश्र्वः, वाल्हीकादिदेशोत्पन्नः, जात्यः। *दशवै० १९४*। क्षेपः। *आव० ३६४*।

आसइ– आस्ते। *आव० ३९६*।

आसइत्तु– आसितुम्, उपवेष्टुम्। *दशवै० २०४*।

आसएण– आश्रयतीति आश्रयः-धूमबलकादिः। *अनुयो० २१४*।

आसकण्णो– अश्र्वकर्णः, सप्तदशान्तरद्वीपः। *जीवा० १४४*।

आसकन्नदीवे– अन्तरद्वीपनाम। *स्था० २२६*।

आसकन्ना– अश्र्वकर्णः, सप्तदशान्तरद्वीपः। *प्रज्ञा० ५०*।

आसकरणं– आससिक्खावणं। *निशी० ७१* अ।

आसकिसोरो– अश्र्वकिशोरः। *आव० ३७०, २६१*।

आसक्खंघसंठिते– अश्र्वस्कन्धसंस्थितम्,

अश्विनीनक्षत्र-संस्थानः। *सूर्य० १३०*।

आसखंधसंठिओ– अश्र्वस्कन्धसंस्थितः, उभयोरपि पार्श्र्वयोः पञ्चनवतियोजनसहस्रपर्यन्तेऽश्र्वस्कन्धस्येवोन्नततया षोडशयोजनसहस्रप्रमाणोच्चैस्त्वयोः शिखायाभावात् । *जीवा० ३२५*।

आसगं– आस्यकम्, मुखम्। *जीवा० ११९*। आस्यके, पिठरादिमुखे। *स्था० १४८*।

आसग्गीव– अश्र्वग्रीवः, त्रिपृष्ठवासुदेवशत्रुः। *आव० १५९*। महामाण्डलिकराजा। *आव० १७४*।

आसचडगर– अश्र्वसमूहः। *आव० ३७०*।

आसज्ज– आसाद्य-अंगीकृत्य। *आचा० १५९*।

आसण– आसनं, सिंहासनादि। *प्रश्न० १६१*। आधारलक्षणानि। धर्मास्तिकायादीनां लोकाकाशादीनि, स्वस्वरूपाणि वा। *आव० ५९९*। पीठफलकादिकम्। *आव० ६५४*। स्थानम्। *उत्त० १०९*। पीठकादि। *आव० ७९५*। *दशवै० २८१*। अपवादगृहीतं पीठकादि। *दशवै० २३१*। *दशवै० २२८*। वसत्यादि। *सूत्र० ६६*। कट्टपीढगादि। *दशवै० १२६*। विष्टरम्। *प्रश्न० १३८*। *प्रश्न० ८*। सिंहासनादि। *जीवा० ४०६*। आसन्दकादिविष्टरं, आस्यते-स्थीयतेऽस्मिन्निति वाऽऽसनंशय्या। *आचा० १३४*। उपवेशनम्। *उत्त० ६०९*। अवस्थानम्। *उत्त० ६२६*। आसनं गोदोहिकोत्कुटुकासन-वीरासनादिकः। *आचा० ३१२*। पादपीठपुञ्छनादि। *उत्त० ४२३*। सिंहासनादि। *उत्त० २६२*। पीठकादि। *सम० ३८*। शक्रादीनां सिंहासनम् । *स्था० ११७*। आसन्दकादि। *दशवै० २१८*। *आचा० ६०*। *भग० २३८*। आसण-आसनप्रदानं, गुर्वादीनां समागतानां पीठकाद्युपनयनम्। *व्यव० २३५*।

आसणअणुप्पदाणं– आसनानुप्रदानम्, स्थानात्स्थानं सञ्चारणम्। *दशवै० ३०*।

आसणअभिग्गहो– आसनाभिग्रहः, तिष्ठत एवासनानयनपूर्वकमुपविशतोऽत्रेतिभणनमिति। *सम० ९५*। *स्था० ४०८*।

आसणगाणि पंताणि– पांशूत्करशर्करालोष्टाद्युपचितानि काष्ठानि च दुर्घटितानि। *आचा० ३१०*।

आसणत्थ– आसनस्थं, निषद्यागतम्। *आव० ५४१*।

आसणदाणं– आसनदानम्, पीठकाद्युपनयनम्। *दशवै० २४१*। पीठादिदानम्। *उत्त० ६०९*।

आसणमणुप्पयाणं– आसनानुप्रदानम्, आसनस्य स्थानान्त-रसञ्चारणम्। *स्था० ४०८*। *सम० ९५*।

आसणाणुप्पयाणं– आसनानुप्रदानं, गौरव्यमाश्रित्यासनस्य स्थानान्तरसंचारणम्। *भग० ६३७*।

आसणाभिग्गह– आसनाभिग्रहः-तिष्ठत एव गौरव्यस्यासनान-यनपूर्वकमुपविशतेतिभणनम्। *भग० ६३७*। यत्र यत्रोपवेष्टु-मिच्छति तत्र तत्रासननयनम्। *औप० ४२*। तिष्ठत एवादरेणासनानयनपूर्वकमुपविशताऽत्रेतिभणनम्। *दशवै० ३०*।

आसणेय– आश्र्वासनः। *जम्बू० ५३४*।

आसतरगा– वेसरा। *निशी० १४४* आ।

आसत्त– आसक्त, भूमौ लग्नः। *जम्बू० ७६*। आ-अवाङ् अधोभूमौ सक्त आसक्तः, भूमौ लग्नः। *प्रज्ञा० ८६*। *जीवा० १६०*। *जीवा० २२७*। भूमौ सम्बद्धः। *औप० ५*।

आसत्तमल्लदामा– आसक्तमाल्यदामा। *आव० १८४*।

आसत्ती– आसक्तिः, धनादावासङ्गः, परिग्रहस्यैकोनत्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९३*।

आसत्थ– पीप्पलकः। *भग० ८०३*। असुरकुमारचैत्यवृक्षः। *स्था० ४८७*। मनागाश्र्वासितः। *ओघ० ५२*। अनंतजिनचैत्यवृक्षविशेषः। *सम० १५२*। आश्र्वस्तः। *आव० ३९०*।

आसन्दकम्– आसनम्। *दशवै० २१८*। *आचा० १३४*।

आसन्नं– संमुखीनम्। निर० ८।

आसपुराओ– धातकीखंडे विदेहविशेषस्य राजधानी। *स्था० ८०*।

आसम– आश्रमः, तापसादिस्थानम्। *भग० ३६*। *अनुयो० १४२*। *सूत्र० ३०९*। तीर्थस्थानम्। *आचा० ३२९*। *स्था० २९४*। *स्था० ८६*। तापसावसथोपलक्षित आश्रयः। *आचा० २८५*। प्रथमतस्तापसादिभिरावासितः पश्र्चादप-रोऽपि लोकः तत्र गत्वा वसति। *बृह० १८१* आ। तापसावसथादिः, आ-समन्तात् श्राम्यन्ति-तपःकुर्वन्त्य-स्मिन्निति। *उत्त० ६०५*। व्रतग्रहणादिरूपः। *दशवै० २७९*। आश्रमः, तापसादिनिवासः। *प्रश्न० ५२*। तापसावसथोप-लक्षित

आश्रयः। *प्रज्ञा० ४८*। *जीवा० ४०*। *जीवा० २७९*। तापसाद्यावासः। *औप० ७४*।

आसमडे– अश्वमृतः, मृताश्वदेहः। *जीवा० १०६*।

आसमपय– आश्रमपदम्, पार्श्वनाथदीक्षास्थानम् *आव० १३७*। आ-समन्तात् श्राम्यन्ति-तपःकुर्वन्त्यस्मिन्नि-त्याश्रमः तापसावसथादिस्तदुपलक्षितं पदं-स्थानम्। *उत्त० ६०५*।

आसममारी– मारीविशेषः। *भग० १९७*।

आसमरूवं– आश्रमरूपम्। *भग० १९३*।

आसमित्त– अश्वमित्रः, कौण्डिन्यशिष्यः। *आव० ३१६*। *उत्त० १६३*। चतुर्थनिह्नवनाम। *स्था०४१०*। यस्मात्सामुच्छेदा उत्पन्नाः। *आव० ३११*।

आसमुहदीवे– अंतरद्वीपभेदः। *स्था० २२६*।

आसमुहा– अश्वमुखनामा त्रयोदशान्तरद्वीपः। *प्रज्ञा० ५०*। *जीवा० १४४*।

आसय– आशयः, निदानम्। *आव० ६१०*।

आसयइ– आस्वादते-अभिलषति, आश्रयति वा। *सम०५५*।

आसरयणे– अश्वरत्नम्। *स्था० ३९८*।

आसरह– अश्ववहनीयो रथः। *भग० ३२२*। अश्वरथः-नियुक्तोभयपार्श्वतुरङ्गमो रथ इत्यर्थः। *जम्बू० १९८*।

आसल– आसलं, आस्वाद्यम्। *जीवा० ३३१*। *जीवा० ३७०*। आस्वादनीयः। *जीवा० ३५१*।

आसव– आसवः, मद्यम्। *उत्त० ६१९*। पत्रादिवासकद्रव्य-भेदादनेकप्रकारः। *जीवा० २६५*। पुष्पप्रसवमद्यम्। *उत्त० ६५४*। आश्रवाः-उपादानहेतवो हिंसादयः। *उत्त० ५९२*। चन्द्रहासादिकम्। *जीवा० ११८*। चन्द्रहासादिपरमासवम्। *जम्बू० ४२*। *निशी० ३५* अ। आश्रवः-सूक्ष्मरन्ध्रम्। *भग० ८३*। आश्रवन्ति-प्रविशन्ति कर्म्माण्यात्मनीत्याश्रवः-कर्म्मबन्धहेतुरितिभावः, स चेन्द्रियकषायाव्रतक्रियायोग-रूपः।*स्था०१८*। आश्रवं। *प्रज्ञा०५६*।

आसवा– आस्रवाः-कर्मबन्धस्थानानि। *आचा० १८१*। पापोपादानस्थानानि। *आचा० ४१३*। बन्धकाः। *आचा० १८२*। पत्रादिविशेषेण व्यतिरिक्त आसवः। *प्रज्ञा० ३६४*। आश्रवः-आ-समन्तात् शृणोति-गुरुवचनमाकर्णयतीति। *उत्त० ४९*। कर्मबन्धहेतुर्मिथ्यात्वादिः। *आव० ५९८*। आश्रवः-इन्द्रियजयादिरूपः परमार्थपेशलः कायवाङ्म-नोव्यापारः। *दशवै० २७९*। जलप्रवेशस्थानम्। *व्यव० १६७* आ। पापोपादानहेतुरारम्भादिः। *जीवा० १२८*। शुभाशुभकर्मादानहेतुः। *स्था० ४४६*।

आसवदारं– आश्रवद्वारम्, कर्मबन्धद्वारम्। *आव० ८५१*। आश्रवणं-जीवतडागे कर्म्मजलस्य संगलनमाश्रवः-कर्म्मनिबन्धनमित्यर्थः, तस्य द्वाराणीव द्वाराणि-उपाया आश्रवद्वाराणीति। *स्था० ३१६*।

आसवपीतो– पीतासवः। *उत्त० २६३*।

आसववुच्छेओ– आश्रवव्यवच्छेदः-कर्मबन्धद्वारस्थगनेन संवरणेनेत्यर्थः। *आव० ८५१*।

आसवार– अश्ववारः, अश्वारूढपुरुषः। *भग० ४८१*।

आससणाय वसणं– आशसनाय-विनाशाय व्यसनम्, तृतीयाधर्मद्वारस्य षड्विंशतितमं नाम। *प्रश्न० ४३*।

आससप्पओगे– आशंसा-इच्छा तस्याः प्रयोगो-व्यापारणं करणं आशंसैव वा प्रयोगो-व्यापारः आशंसाप्रयोगः। *स्था० ५१५*।

आससा– आशंसा। *आव० ३२२*। अप्राप्त-प्रार्थनम्। *स्था० १४५*।

आससाए– आशंसया, यद्यत्यन्तप्रवर्षणं भावि तदा स्थलेषु फलावाप्तिरथान्यथा तदा निम्नेष्वित्येवमभिलाषात्मिकया। *उत्त० ३६१*।

आससेण– अश्वसेनः, पार्श्वजिनपिता। *सम० १५२*। पंच-मचक्रिपिता। *सम० १५१*।

आसा– अश्वाः। *आव० २६१*। आशा-इच्छाविशेषः। *प्रश्न० ६४*। *औप० ४७*।

आसाइज्जा– आशातयेत्-हीलयेत्, बाधयेत्। *आचा० २५७*।

आसाएज्जा– आस्वादयेत्-परिभुञ्जीत। *आचा० ३९८*।

आसाएमाणे– आस्वादयन्, ईषत्स्वादयन्। *भग० १६३*। आसादयेत्-संस्पृशेत्। *आचा० ३८०*।

आसाढ– आषाढः, निह्नवनाम। यस्मादव्यक्ता उत्पन्नाः। *आव० ३११*। तृतीयो निह्नवः। *स्था० ४१०*।

आसाढग– तृणभेदः। *भग० ८०२*।

आसाढबहुलं– आषाढबहुलं, आषाढकृष्णपक्षम्। *आव०*।

आसाढभूई– आषाढभूतिः-देशभाषानेपथ्यादिविपर्ययकरणे दृष्टांतः। *सूत्र० ३२९*। दर्शनपरीषहभग्नः। (*मरण०*)। *व्यव० १९६* अ।

आसाढायरिया– चेल्लयसुरेण थिरीकया आयरिया। *व्यव०*

११ अ।

आसायए– आशातयति, कदर्थयति। *दशवै० २४४*।

आसायण– आशातकपाराञ्चिकः। *स्था० १६३*।

आसायणसील– आशातनाशीलः, शातयति-विनाशयती-त्याशातना तस्यां शीलं-तत्करणस्वभावात्मकमस्येत्य-त्याशातनाशीलः। *उत्त० ५७९*।

आसायणा– आशातना, लघुतापादनरूपा अथवा स्वस-म्यग्दर्शनादिभावापह्रासरूपा। *दशवै० २४४*। ज्ञानाद्यायस्य शातना। *आव० ५४७*। आशातना। *प्रश्न० १४६*। आ-सामस्त्येन शात्यन्ते-अपध्वस्यन्ते यकामिस्ता आशा-तना-रत्नाधिकविषयाविनयरूपाः पुरतोगमनादिकाः। *स्था० ५११*। आयः-सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्य शातनाः-खण्डनं निरुक्तादाशातनाः। *सम० ५९*।

आसायणिज्जं– आस्वादनीयम्, सामान्येन स्वादनीयम्। *जीवा० २७८*।

आसालए– आशालकः, अवष्टम्भसमन्वित आसनविशेषः। *दशवै० २०४*।

आसालओ– ससावंगमं (सावट्ठंभं) आसणं। *दशवै० ९९*।

आसालिए– आसालिकः, उरःपरिसर्पभेदः। *सम० १३५*।

आसालिय– आसालिकः, उरःपरिसर्पविशेषः। *प्रश्न० ८*। *जीवा० ३९*। उरःपरिसर्पभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*।

आसास– आश्र्वासः, आश्र्वसन्त्यस्मिन्नित्याश्र्वासः। *आचा० ५*। आश्र्वासयति अत्यन्तमाकुलितानपि जनान् स्वस्थी-करोतीति। *उत्त० २१२*।

आसासग– अश्र्वस्यास्यं-मुखं, तत्र गतः फेन सोऽश्र्वास्य-गतः। *प्रज्ञा० ९५*। आसासकः-बीयकाभिधानो वृक्षः। *राज० ९*।

आसासणय– आशंसनम्, मम पुत्रस्य शिष्यस्य वा इदमिदं च भूयादित्यादिरूपा आशीः। *भग० ५७३*।

आसासदीव– आश्र्वासद्वीपः, आकुलितजनस्वस्थकारको द्वीपविशेषः। *उत्त० २१२*। आश्र्वासननाश्र्वासः, आश्र्वासाय द्वीप आश्र्वासद्वीपः। *आचा० २४७*। आश्र्वास्यतेऽस्मिन्नि-त्याश्र्वासः, आश्र्वासश्र्चासौ द्वीपश्र्चाश्र्वासद्वीपः। *आव० २४७*।

आसासय– आशासकः, वृक्षविशेषः। *औप० ११*।

आसासा– आश्र्वासाः-विश्रामाः। *स्था० २३६*।

आसासि– आश्र्वासय, स्वस्थीकुरु। *उत्त० १२७*।

आसासिआ– आश्र्वासिता। *आव० २२२*।

आसाहीणाएहिं– दुद्दंतेहिं। *दशवै० ११६*।

आसिआवणं– स्तैन्यम्। *बृह० ८६* आ।

आसिहणा– तिष्ठ। (*मरण०*)।

आसित्ता– आस्वाद्य-भुक्त्वा। *आचा० ३३०*।

आसित्तो– आसिक्तः, सबीजः। *बृह० ९७* आ। जस्स पुण अवच्चं उप्पज्जति सो। *निशी० ३१* अ।

आसियं– आसिक्तं, आसेचनं, ईषदुदकच्छट्टकः। *प्रश्न० १२७*। उदकच्छटम्। *जीवा० २४६*। निर्द्धाटनं, निष्काशनम्। *बृह० ६१* आ।

आसियावणं– हरणं। *निशी० २६७* अ। अपहरणम्। *बृह० ३०९* आ। हरति। *निशी० १३*आ।

आसिले– आसिलः, महर्षिविशेषः। *सूत्र० ९५*।

आसिवावितो– प्रव्राजितः। *निशी० २८६* अ।

आसी– आश्यो-दंष्ट्राः। *प्रज्ञा० ४७*। *आव० ४८*। आसीः-दंष्ट्रा। *आव० ५६६*।

आसीणे– आसीनः, आश्रितः। *आचा० २९३*।

आसीयावणा– निष्कषायितुमासादनम्। *व्यव० ३६१*अ।

आसीविस– आशीविषः शङ्खविजये वक्षस्कारः। *जम्बू० ३५७*। नागः। *प्रश्न० १०७*। आश्यो-दंष्ट्रास्तासु विषं येषां ते। *स्था० २६५*। *जीवा० ३९*। सीतोदादक्षिणतः वक्ष-स्कारः। *स्था० ३२६*। उरःपरिसर्पविशेषः। *जीवा० ३९*। *उत्त० ३१८*। आशीविषः-भुजङ्गः। *आव० ५६७*।

आसु– आशु, शीघ्रम्। *उत्त० ६३८*। *जम्बू० २०२*।

आसुकारिणः– दुष्टाः। *निशी० ७५* आ।

आसुकोहो– तक्खणमेव कोहो। *दशवै० १२५*।

आसुक्कारो– आशु-शीघ्रं सजीवस्य निर्जीवीकरणम्, अहि-विषविशूचिकादिः। *बृह० १४७* अ। शीघ्रकारः, अहिवि-षविशूचिकादिकः। *आव० ६२९*।

आसुपन्ने– आशुप्रज्ञः, शीघ्रमुचितकर्त्तव्येषु यतितव्यमिति प्रज्ञा-बुद्धिरस्येति। *उत्त० २१७*। सततोपयुक्तः। *आचा० २६८*।

आसुर– असुरभावनाजनित आसुरः, भवनपतिविशेषस्या-यमासुरः। *स्था० २७४*। कोहो। *दशवै० १२२*।

आसुरत्तं– आसुरत्वम्, क्रोधभावम्। *दशवै० २३१*।

आसुरत्तभावणा– आसुरत्वभावना। *उत्त० ७०७*।

आसुरत्तो– क्रुद्धः। *आव० ३८९*।

आसुरिनामा– कपिलशिष्यः। *आव० १७१*।

आसुरियं– असुरभावम्। *प्रश्न० १२१*। अविद्यमानसुर्याम्। *उत्त० २७६*। असुराणामियमासुरीया। *उत्त० २७६*।

आसुरी– असुरा-भवनपतिदेवविशेषास्तेषामियं आसुरी। *बृह० २१२आ*।

आसुरुत्ते– आशुरुप्तः, आशु-शीघ्रं रुप्तः-कोपोदयादिमूढः स्फुरितकोपलिङ्गो वा। *भग० ३२२*। आशु-शीघ्रं रुप्तः-क्रोधेन विमोहितो यः सः। आसुरोक्तः-आसुरं वा-असुर सत्कं कोपेन दारुणत्वादुक्तं-भणितं यस्य सः। *विपा० ५३*। आसुरुत्तः-शीघ्रं कोपविमूढबुद्धिः, स्फुरितकोपचिह्नो वा। *भग० १६७*। क्रुद्धः। *आव० ६५, १५२, ७११*। आशु-शीघ्रं रुष्टः-क्रोधेन विमोहितो यः स आशुरुष्टः, आसुरं वा-असुरसत्कं कोपेन दारुणत्वात् उक्तं-भणितं यस्य स आसुरोक्तः। निर० ८।

आसुरे काए– असुराणामयमासुरस्तम्-असुरसम्बन्धिनं, चीयत इति कायस्तं, निकायमित्यर्थः। *उत्त० १८२*। असुरसम्बन्धिनि काये असुरनिकाये इत्यर्थः। *उत्त० २९६*।

आसूणि– आशूनिः, श्लाघा। *सूत्र० १८०*। येन घृतपाना-दिना आहारविशेषेण रसायनक्रियया वा अशूनः सन्, आ-समन्ताच्छूनीभवति-बलवानुपजायते तत्। *सूत्र० १८०*।

आसूणियं– आशूनितम्, ईषत्स्थूलीकृतम्। *प्रश्न० ४९*।

आसूयम्– आसूयम् औपयाचितकम्। *पिण्ड० १२०*।

आसेवणसिक्खा– आसेवनशिक्षा, प्रत्युपेक्षणादिक्रियोपदेशः। *उत्त० ५४५*। शिक्षाद्वितीयभेदः। *नन्दी० २१०*। सामाचारी-शिक्षणम्। *बृह० ६४अ*। प्रत्युपेक्षणादिक्रियारूपोऽभ्यासः। *आव० ८३३*।

आसेवियं– स्तोकं आस्वादितं, अनास्वादितं वा। *आचा० ३२५*।

आसो– जात्या आशुगमनशीलः अश्वः। *जीवा० २८२*। मनः। *प्रज्ञा० ८८*। य एकस्मिन् द्वित्र्यादीनर्थान् वक्ति यथा अश्नातीत्यश्वः, आशु धावति न च श्राम्यति। *बृह० ३४अ*। चतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*।

आसोकंता– मध्यमग्रामपंचमी मूर्च्छना। *स्था० ३९३*।

आसोट्ठे– अश्वत्थः। *आचा० ३४८*।

आसोठे– अश्वत्थः, बहुबीजवृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

आसोत्थमंथु– *आचा० ३४८*।

आस्तिक्यम्– सम्यक्त्वस्य पञ्चमलक्षणम्। *आव० ५९१*।

आस्थानमण्डपः– उपस्थानगृहम्। *भग० २००*। *नन्दी०६१*।

आस्फोटनम्– सकृदीषद् वा स्फोटनम्। *दशवै० १५३*।

आस्या– यत्रास्यते यथासुखेन स्वाध्यायपूर्वकम्। *ओघ०६९*।

आस्रपः– मूलः। *जम्बू० ४९९*।

आहंसु– आहुः, उक्तवन्तः। *भग० ९८*। आख्यातवान्। *प्रश्न० २६*।

आहच्च– आहत्य, कदाचित्। *भग० ३०५, २२*। *उत्त० १८४, ४८*। *प्रज्ञा० ३३३*। *बृह० ११४आ*। कादाचि-त्कम्। *आव० ५३०*। सहसा। *निशी० १२०अ*। कदाचित् सान्तरमित्यर्थः। *भग० ४१*। उपेत्य स्वतः एव, अत्यर्थं कदाचिद् वा। *आचा० ५५*। ढौकित्वा। *आचा० २७२*। उपेत्य। *आचा० ३६२*। सहसा। *आचा० ३२२, ३५५*। कदाचित् अनन्यगत्या। *व्यव० ८आ*। आहत्या-आहननं प्रहारः। *भग० ६७३*।

आहच्च गंथा– आहृतग्रन्था-व्ययीकृतद्रव्या। *आचा० २७२*।

आहट्टु– आहृत्य, उपेत्य। *सूत्र० ३००*। गृहीत्वा। *आचा० २८२, ३४५*।

आहट्टो– आडम्बरः (उपाधिः)। *आव० ३४१*।

आहडं– आहृतम्, स्वग्रामादेः साध्वर्थमानीतम्। *प्रश्न० १५४*। साध्वयोग्यमशनादि। *दशवै० २०३*।

आहणइ– आहन्ति, समीकरोति। *आव० ३८५*।

आहत्तहिए– सूत्रकृतांगे त्रयोदशाध्ययनम्। *सम० ४२*।

आहम्मिए जोगे– वशीकरणादीनि। *आव० ६६२*।

आहयंति– कथयन्ति। *निशी० २७७अ*।

आहय– आहतं, लक्षणया लिखितम्। *जम्बू० २०३*। आख्यानकप्रतिबद्धं यन्नाट्यं तेन युक्तं तद्गीतम्। *स्था० ४२१*। आहतं, आख्यानकप्रतिबद्धम्। *सूर्य० २६७*। *जीवा० १६२*। *आव० २९८*। आख्यानकप्रतिबद्धं, आस्फालितं वा। *औप० ७४*।

आहया– आख्यानकप्रतिबद्धानि। *राज० १६*।

आहरणं– आ-अभिविधिना ह्रियते-प्रतीतौ नीयते

अप्रतीतो-ऽर्थोऽनेनेति। *स्था० २५४*। साध्यसाधनान्वयव्यतिरेक-प्रदर्शनं दृष्टान्तो वा। *आव० ६२*।

आहरणतद्देसे– आहरणतद्देशः, आहरणार्थस्य देशस्तद्देशः स चासावुपचारादाहरणं चेति प्राकृतत्वादाहरणशब्दस्य पूर्वनि-पाते आहरणतद्देश इति यत्र दृष्टान्तार्थदेशेनैव दार्ष्टान्तिका-र्थस्योपनयनम् क्रियते तत्। *स्था० २५४*।

आहरणतद्दोसे– आहरणतद्दोषः, आहरणस्य सम्बन्धी साक्षा-त्प्रसङ्गसम्पन्नो वा दोषस्तद्दोषः सा चासौ धर्म्मे धर्म्मिणः उपचारादाहरणं चेति आहरणस्य दोषो यस्मिंस्तथा यत्सा-ध्यविकलत्वादिदोषदुष्टं तद्दोषाहरणं। *स्था० २५४*।

आहरणा– घोरयति घोरणं करोति। *ओघ० ५८*। ज्ञातविशेषः। *स्था० २५३*। उदाहरणम्। *दशवै० ३५*।

आहरे– आहरयेत्-व्यवस्थापयेत्। *आचा० २९२*।

आहव्वणी– आथर्वणी, आथर्वणाभिधाना सद्योऽनर्थकारिणी विद्या। *सूत्र० ३१९*।

आहा– आधा। *भग० १०२*। साधूनां मनस्याधानम् साधू-नाश्रित्य। *प्रश्न० १२७*। आधानम्, साधुनिमित्तं चेतसः प्रणिधानम्। *पिण्ड० ३५*। अधस्तात्। *निशी० २९४* आ। आधीयतेऽस्यामिति। *पिण्ड० ३६*।

आहाकम्म– आधाकर्म्म, आधाय-निमित्तत्वेनाश्रित्य पूर्वोक्त-मष्टप्रकारमपि कर्म बध्यते, शब्दस्पर्शरसरूपगन्धादिकं। कर्मनिमित्तभूता मनोज्ञेतरशब्दादय एवाधाकर्म्म। *आचा० ९८*। आधानं आधाकरणं तदुपलक्षितं कर्म। यथाकर्म वा तत्तद् गत्यनुरूपचेष्टितं वा। *उत्त० १८२*। साधुप्रणिधानेन यत्सचेतनमचेतनं क्रियते अचेतनं वा पच्यते चीयते वा गृहादिकं व्यूयते वा वस्त्रादिकं तदाधाकर्म। *भग० १०२*। प्रथम उद्गमदोषः। आधानं आधा तया आधया कर्मपाकादिक्रिया, आधाय-साधुं चेतसि प्रणिधाय यत् क्रियते भक्तादि तत्। *पिण्ड० ३४*। चतुर्थशबलदोषः। *प्रश्न० १४४*। *सम० ३९*।

आहाकम्मियं– आधाकर्म, दोषविशेषः। *आचा० ३२९*।

आहाकम्मेहिं– आधाकर्मभिः, आधानम्-आधाकरणं आत्मनेतिगम्यते, तदुपलक्षितानि कर्माण्याधाकर्माणि, तैः- स्वकृतकर्मभिः। *उत्त० २४७*।

आहार– आहारः, भोजनम्, जीवनम्। *प्रश्न० १०६*। मनसा तथाविध पुद्गलोपादानरूपः। *भग० ८६*। त्रयोदशशतके पंचमोद्देशकः। *भग० ५९६*। अष्टविंशतितम-माहारप्रतिपा-दकत्वादाहारः। *प्रज्ञा० ६*।

आहारए– आहारकम्, चतुर्दशपूर्वविदा कार्योत्पत्तौ योगबले-नाह्रियत इति। *प्रज्ञा० २६८*। तथाविधकार्योत्पत्तौ चतुर्दश-पूर्वविदा योगबलेनाह्रियत इति। *स्था० २९५*। चतुर्दशपूर्व-विदा तीर्थकरस्फातिदर्शनादिकतथाविधप्रयोजनोत्पत्तौ सत्यां विशिष्टलब्धिवशादाह्रियते-निर्वर्त्यते इति। *जीवा० १४*। *प्रज्ञा० ४०९*। तथाविधप्रयोजने चतुर्दशपूर्वविदा यदाह्रियत्ते-गृह्यते तत्। आह्रियन्ते-गृह्यन्ते केवलिनः समीपे सूक्ष्म-जीवादयः पदार्था अनेनेति वा। *अनुयो० १९६*। आहारयति-आहारं गृह्णातीति। *नन्दी० ९०*।

आहारएसणा– आहारैषणा। *दशवै० १८*।

आहारगं– आहारकम्, तृतीयं शरीरम्। *प्रज्ञा० ४६९*।

आहारगंगोवंगणाम– आहारकाङ्गोपाङ्गनाम, उपाङ्गनाम। *प्रज्ञा० ४७०*।

आहारगत्तं– आहारकत्वं, आहारकशरीरकरणलब्धिः। *स्था० ३३२*।

आहारगबंधण– आहारकबन्धनम्, बन्धननाम। *प्रज्ञा० ४७०*।

आहारगमो– आहारगमः, प्रज्ञापनाया अष्टाविंशतितमाहा-रपदोक्तसूत्रपद्धतिः। *भग० १०९*।

आहारगसंघायणाम– आहारकसङ्घातनाम, यदुदयवशादाहार-कशरीररचनानुकारिसङ्घातरूपा जायते तदाहारकसङ्घातनाम। *प्रज्ञा० ४७०*।

आहारगसमुग्घात– आहारकसमुद्घातः, आहारके प्रारभ्यमाणे समुद्घातः। *जीवा० १७*।

आहारट्ठ– आहारार्थः, आहारप्रयोजनमाहारार्थित्वम्। *भग० २०*। आहारलक्षणं प्रयोजनं, आहाराभिलाषो वा। *प्रज्ञा० ५००*।

आहारट्ठि– आहारार्थी, आहारमर्थयते-प्रार्थयते इत्येवं-शीलः, अर्थो वा-प्रयोजनमस्यास्तीत्यर्थी, आहारेणभोजनेन अर्थी आहारार्थी, आहारस्य-भोजनस्य वा ऽर्थी आहारार्थी। *भग० २०*।

आहारपच्चक्खाण– आहारप्रत्याख्यानम्, अनेषणीयभक्त-पाननिराकरणरूपम्। *उत्त० ५८८।*

आहारपदे– प्रज्ञापनाया अष्टाविंशतितमपदम्। *प्रज्ञा० २५। नन्दी० १०५।*

आहारपयाइं– आहारपदानि, आहारग्रहणविषयकानि पदानि। *जम्बू० ४६१।*

आहारपरिण्णा– आहारपरिज्ञा, सूत्रकृताङ्गे द्वितीयश्रुतस्कंधे तृतीयाध्ययनम्। *आव० ६५८। स्था० ३८७। उत्त० ६१६।*

आहारपर्याप्तिः– यथा शक्त्या करणभूतया भुक्तमाहारं खल-रसरूपतया करोति सा। *बृह० १८४* आ।

आहारपोसहे– आहारपौषधः, आहारनिमित्तं पौषधः, आहारनिमित्तं धर्मपूरणं पर्वेति भावना। *आव० ८३५।*

आहारसण्णा– आहारसंज्ञा, आहाराभिलाषः-क्षुद्वेदनीयोदयप्रभव आत्मपरिणामः। *आव० ५८०।*

आहारसन्ना– आहारसंज्ञा, क्षुद्वेदनीयोदयाद् या कवलाद्याहारार्थं तथाविधपुद्गलोपादानक्रिया सा। *प्रज्ञा० २२२।* क्षुद्वेदनीयोदयात्कावलिकाद्याहारार्थं पुद् गलोपादानक्रियैव संज्ञायतेऽनया तद्वानित्याहारसंज्ञा। *भग० ३१४।* आहा-राभिलाषः-क्षुद्वेदनीयप्रभवः खलु आत्मपरिणामविशेषः। *जीवा० १५।*

आहारवं– आलोइज्जमाणं जो सभेदं सव्वं अवधारति सो। *निशी० १२८* आ। आलोचितापराधानां अवधार-णावान्। *भग० ९२०।*

आहाराइणियाए– रत्नैः-ज्ञानादिभिर्व्यवहरतीति रात्निकः-बृहत्पर्यायो यो यो रात्निको यथारात्निकं तद्भावस्तत्ता तया यथारात्निकतया-यथाज्येष्ठं। *स्था० ३०१।*

आहारुद्देस– आहारोद्देशः, प्रज्ञापनाष्टाविंशतितमपदस्यो-द्देशकः। *भग० २०।*

आहारेंति– विशेषाहारापेक्षया सामान्याहारस्याविशिष्टशरीर-बन्धनसमय एव कृतत्वात्। *भग० ७६३।*

आहारे– आहारः, चरमाचरमपदगतसूत्रम्। *प्रज्ञा० २४६।* आहारप्रतिपादकं प्रज्ञापनाया अष्टाविंशतितमं पदम्। *प्रज्ञा० ६।* आधारः। *भग० ७३८।* फलपत्रकिशलयमूलकन्दत्व-गादिनिर्वर्त्यः। *आचा० ६०।*

आहारेत्ताइतो– आहृतवान्। *आव० ३०८।*

आहारे भोयणा– आहाराभोगता। *प्रज्ञा० ५४३।*

आहारो– आहारः, कूरादि एक्कं चेव खुधं णासेति पाणे तक्कखीरुदगमज्जादि एगंगिया तिसं णासेंति, आहार-किच्चं च करेंति खाइमे एगंगिया फलमंसादि आहारकिच्चं च करेंति, साइमेऽवि मधुफाणिय तंबोलादिया एगंगिया खुहं णासेंति। *निशी० ५०* आ। मुक्खत्तो जं किंचिवि भुंजति सो सव्वो आहारो। *निशी० ५१* अ। आधार आधेयस्येव सर्वकार्येषु लोकानामुपकारित्वात्। *भग० ७३९।*

आहारोवचया– आहारोपचयाः, आहारेणोपचयो येषां ते। *आचा० २७५।*

आहार्यः– अभिनयचतुर्थभेदः। *जम्बू० ४१४।* काष्ठफल-पुस्तमृत्तिकाचर्मादिघटितप्रजननैर्योषिदवाच्यप्रदेशासेव न-मित्यर्थः। *आव० ८२५।* आहार्य अन्धकाररहितत्वं। *सम० १४०।*

आहालंदिया– कल्पविशेषः। *निशी० ३३८* आ।

आहावंति– आगच्छन्ति। *बृह० २१३* अ।

आहावणा– आभावना, उद्देशः। *पिण्ड० ११६।*

आहाविज्ज– आधावेत्। *आव० ६३३।*

आहासिया– आभासिकनामद्वितीयान्तरद्वीपः। *प्रज्ञा०५०।*

आहिंडओ– आहिण्डकः, दूरदेशविहारकर्ता। *आव० ५३६।*

आहिंडगा– विहरंता। *निशी० ३१४* अ।

आहिंडा– सततं परिभ्रमणशीलाः। *बृह० १८४* आ।

आहिंडिओ– आहिण्डकः, आहेटकः। *आव० ४३२।* अगीतार्थः, चक्रस्तूपादिदर्शनप्रवृत्तः। *ओघ० ६०।*

आहिंडितो– आहिण्डिकः। *उत्त० १०८।*

आहिंधइ– परिदधाति। *आव० ३६०।*

आहिअग्गि– आहिताग्निः, अग्निं गृहीत्वा स्वगृहे स्थापनात्। *आव० १६९।* ब्राह्मणः। *दशवै० २५२।* कृतावस्थादिर्ब्राह्मणः। *दशवै० २४५।* प्रतिपादितोऽनुष्ठितो वा। *सूत्र० १७८।*

आहिए– आहितः, जनितः। *सूत्र० ६९।* प्रथितः, प्रसिद्धिं गतः। *सूत्र० ६९।*

आहिज्जइ– आधीयते, व्यवस्थाप्यते, आख्यायते वा। *सूत्र० ३३७।* सम्बध्यते। *सूत्र० ३०६।* आख्यायते। *सम०*

११३।

आहितविशेषम्– आहितविशेषत्वं-वचनान्तरापेक्षया ढौकितविशेषता। एकत्रिंशत्तमवाणीगुणः। *सम० ६३*।

आहितुण्डिग– आहितुण्डिकः, गारुडिकः। *दशवै० ३७*।

आहितो– आख्यातः, कथितः। *सूत्र० ११*।

आहियं– आहितम्, ढौकितम्। *सूत्र० ७१*। आत्मनि व्यवस्थितं, आ-समन्तात् हितं वा। *सूत्र० ६८*। गृहीतम्। *आव० ३७०*।

आहियग्गी– बंभणो। *दशवै० १३२*।

आहियडमरं– आहितडमरम्, शत्रुकृतविड्वरोऽधिकविड् वरो वा। *औप० १२*।

आहिया– आख्याता। *स्था० ३९७*।

आहियोग– आभियोगदेवेषूत्पन्ना आदेशवर्त्तिनः। *भग० १९८*।

आहिव्वण– आहित्यम्, अहितत्वं-शत्रुभावम्। *प्रश्न० ३८*।

आही– आधिः, मनःपीडा। *प्रश्न० २५*।

आहुइ– आहुतिः, अग्नौ घृतादिद्रव्यप्रक्षेपरूपा। *दशवै० २४५*।

आहुणिए– आधुनिकः। *सूर्य० २९४*। अष्टाशीतौ ग्रहेषु पंचमग्रहनामा। *स्था० ७८*। *जम्बू० ५३४*।

आहुणिज्ज– आहवनीयं-सम्प्रदानभूतम्। *औप० ५*।

आहुणिय– आधूय। *आव० १२१*।

आहुस्स– आहोतुः, दातुः। *औप० ५*।

आहूए– संहृतः। *आचा० ४२१*।

आहूतो– उत्पन्नः। *आव० ३४३*। लग्नः, उत्पन्नः। *उत्त० १४८*।

आहूय– आहूतम्-आहवानमामन्त्रणं नित्यं मद्गृहे पोषमात्रमन्नं ग्राहयं इत्येवंरूपम्, कर्म्मकराद्याकारणं वा साध्वर्थं स्थाना-न्तरान्नाद्यानयनाय यत्र सः, स्पर्धा वा। *भग० २९३*। *भग० २९४*।

आहेडगो– मिगव्वं। *निशी० १३६* आ।

आहेणं– जमन्नगिहातो आणिज्जति तं अहवा जं बहुगिहातो वरगिहं णिज्जति तं। *निशी० २२* अ। यद् विवाहो-त्तरकाले वधूप्रवेशे वरगृहे भोजनं क्रियते। *आचा० ३३४*।

आहेति– आधाय, कृत्वा। *उत्त० २४७*।

आहेवच्चं– आधिपत्यम्, अधिपतिकर्म। *भग० १५४*। अधिपतेः कर्म, रक्षा। *जम्बू० ६३*। *जीवा० २१७, १६२*।

आहेवणं– आक्षेपम्, पुरक्षोभादिकरणम्। *प्रश्न० ३८*।

आहोपुरुषिका– आत्मशक्त्याविष्करणम्। *सूत्र० ३४५*।

आहोहिओ– आधोऽवधिकः, परमावधेरधस्ताद् योऽवधिस्तेन-योव्यवहरति सः परिमितक्षेत्रविषयावधिकः। *भग० ६७*।

आहोहिय– नियतक्षेत्रविषयावधयः। *सम० ९६*।

आहोही– यत्प्रकारोऽवधिरस्येति यथावधिः परमावधेर्वाऽधोव-त्त्र्यवधिर्यस्य सोऽधोऽवधिः। *स्था० ६१*।

आह्निका– पिशाचे चतुर्थभेदः। *प्रज्ञा० ७०*।

आह्रियते– निर्वर्त्त्यते। *जीवा० १४*।

- X - X - X - X -

(इ)

इंखिणिका– कर्णमूले घण्टिकां चालयन्ति। *आव० १३०*।

इंखिणी– विज्जाभिमंतिया घंटिया कण्णमूले चालिज्जति, तत्थ देवता कढेंति कहेंतस्स पसिणापसिणं संभवति स एव इंखिणी भण्णति। *निशी० ८५* अ। निन्दा। *सूत्र० ६१*।

इंगना– इङ्गना, सञ्ज्ञा। *नन्दी० १५*।

इंगाल– अङ्गारः, दग्धेन्धनो विगतधूमज्वालः। *आचा० ४९*। चारित्रेन्धनमङ्गारमिव यः करोति भोजनविषय-रागाग्निः सोऽङ्गारः। *भग० २९१*। अङ्गाराणामयमाङ्गारः। *दशवै० १६४*। ज्वालारहितोऽग्निः। *दशवै० १५४, २२८*। महाग्रहविशेषः। *भग० ५०५*। निर्ज्वलितेन्धनम्। *भग० २१३*। विगतधूमः। *प्रज्ञा० २९*। निर्धूमाग्निः। *जीवा० १०७*। विगतधूमज्वालो जाज्वल्यमानः खदिरादिः। *जीवा० २८*। अङ्गारः। *आव० ४२२, ३१३*। रागो। *निशी० ४९* अ। ज्वालारहितो वह्निः, अग्नेस्तृतीयभेदः। *पिण्ड० १५२*।

इंगालए– अङ्गारकः, अष्टाशीतितममहाग्रहविशेषः। *सूर्य० २९४*। महाग्रहविशेषः। *जम्बू० ५३४*। *स्था० ७८*।

इंगालकड्ढिणि– ईषद्वङ्काग्रा लोहमययष्टिः।*भग०६९७*।

इंगालकम्म– अङ्गारकर्म्म, अङ्गारकरणविक्रयक्रिया। *आव० ८२९*।

इंगालदाहओ– अङ्गारदाहकः। *आव० १५१*।

इंगालब्भूया– अङ्गारराशिना भूता। *भग० १६६*।

इंगालवडेंसए– अङ्गारावतंसकं, ज्योतिषविमानविशेषः।

भग० ५०५।

इंगालसोल्लियं– अङ्गारैरिव पक्वम्। *भग० ५१९*। *औप० ९१*। निर० २६।

इंगाला– अणिंधणाणि ज्वाला। *निशी० ५२* आ।

इंगिअ– इङ्गितम्, अन्यथा प्रवृत्तिलक्षणम्, निष्ठीवनादिलक्षणम्। *दशवै० २५२*। नयनादिचेष्टया। *जम्बू० २२३*।

इंगिणि– इङ्गिनी, अनशनविशेषः। *आव० ६७०*।

इंगिणिमरणे– इङ्गिनीमरणम्, प्रतिनियतदेश एव चेष्टयतेऽस्या-मनशनक्रियायाम्, सप्तदशमरणे षोडशः। *सम० ३३*। इङ्गिते प्रदेशे मरणं इङ्गितमरणम्। *आचा० २६२*। "इंगियदेसंमि सयं चउव्विहाहारचायनिप्फन्नं। उव्वत्तणाइजुत्तं नऽण्णेण उ इंगिणीमरणं"। *स्था० ९६*। यावत्कथिकानशनद्वितीयभेदः। *स्था० ३६४*।

इंगिणी– इङ्गिनीमरणम्, मरणस्य षोडशो भेदः। *उत्त० २३०*। इङ्गिनी, इङ्ग्यते-प्रतिनियतप्रदेश एव चेष्टते अस्यामनशन-क्रियायामिति। *उत्त० २३५*। *सम० ३५*।

इंगितं– सूक्ष्मबुद्धिगम्यचेष्टा। *स्था० ४*। सूक्ष्मचेष्टाविशेषः। *बृह० ४३* अ।

इंगिनीमरणं– उक्तन्यायतः प्रतिपद्य शुद्धस्थण्डिलस्थाता एकाक्येव कृतचतुर्विधाहार प्रत्याख्यानस्तत्स्थंडिलस्या-न्तछायात उष्णमुष्णाच्च छायां स्वयं संक्रामति। *उत्त० ६०२*। नियतप्रदेशस्थायित्वेऽशनादित्यागः। *आव० ५६३*।

इंगियं– इङ्गितम्, ज्ञानविशेषः। *आव० ७२४*। नयनादिचेष्टा-विशेषः। निर० ८। *ज्ञाता० ४१*। निपुणमतिगम्यं प्रवृत्तिनिवृ-त्तिसूचकमीषद् भूशिरःकम्पादि। *उत्त० ४४*। अंगभंगादि। *उत्त० ६२६*।

इंगियपत्थिय– चेष्टितप्रार्थितः। (*मरण०*)।

इंगियमरणं– इंगितमरणम्, इंगिते प्रदेशे मरणम्। *दशवै० २७*।

इंगियागारकुसलो– इंगिताकारकुशलः। *आव० ५६*।

इंगियागारसंपन्ने– इंगिताकारसम्प्रज्ञः, इंगितं-निपुणमतिगम्यं प्रवृत्तिनिवृत्तिसूचकं, आकारः-स्थूलधीसंवेद्यः प्रस्थानादि भावाभिव्यञ्जको दिगवलोकनादिः, द्वन्द्वे इंगिताकारौ, तौ अर्थाद् गुरुगतौ सम्यक् प्रकर्षेण जानातीति। *उत्त० ४४*। इंगिताकारसम्पन्नः-इंगिताकाराभ्यां गुरुगतभावपरिज्ञान-मेवोक्तं तेन सम्पन्नः-युक्तः। *उत्त०४४*।

इंग्यते– प्रतिनियतदेश एव चेष्ट्यते। *सम० ३५*।

इंतं– आयान्तम्। *उत्त० ३२५, १३९*।

इंती– एंति-आगच्छन्ति। *ओघ० ७८*।

इंतो– आयान्, आगच्छन्। *दशवै० ३७*। *आव० ८०१*। *बृह० १७९* अ।

इंदं– एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकं विमानम्। *सम० ३७*।

इंद– इन्द्रः, सप्तमदिनस्य सैद्धान्तिकं नाम। *सूर्य०१४७*। ऐन्द्री-पूर्वदिक्सैद्धान्तिकनाम। *स्था० १३३*।

इंदकाइया– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा० ४२*। त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३२*।

इंदकील– इन्द्रकीलः, गोपुरे कीलविशेषः। *जीवा० ३५९, २०४*। गोपुरकपाटयुगसन्धिनिवेशस्थानम्। *जम्बू० ४८*। गोपुरावयवविशेषः। *औप० ३*। गोपुरकपाटयुगसन्धिनिवे-शस्थानम्। *भग० १७५*। पुरमध्यस्थम्। *नन्दी० १५०*।

इंदकुंभ– कुम्भानामिन्द्रः-विजयदेवाभिषेककलशाः। *जम्बू० ५०*।

इंदकुंभसमाणो– इन्द्रकुम्भसमानः, महाकुम्भप्रमाणकुम्भस-दृशः। *जीवा० ३६०*।

इंदकुमारिया– इन्द्रकुमारिका। *आव० ४३४*।

इंदकेऊ– इन्द्रकेतुः, लोकमहनीयो ध्वजविशेषः। *उत्त० ३०३*।

इंदकेतू– इन्द्रकेतुः, रश्मिनियन्त्रिते वेन्द्रयष्टिः। *प्रश्न० १३४*।

इंदखीलो– इन्द्रकीलः। *आव० ४१७*।

इंदगाइ– त्रीन्द्रियजीवविशेषः। *उत्त० ६९५*।

इंदगाह– इन्द्रग्रहः, उन्मत्तताहेतुः। *भग० १९८*।

इंदगोवए– इन्द्रगोपकः, प्रावृट्प्रथमसमयभावी कीटविशेषः। *प्रज्ञा० ३६१*।

इंदगोवया– इन्द्रगोपकः, त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३२*। त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा० ४२*।

इंदगोवसमाइय– त्रीन्द्रियजीवभेदः। *उत्त० ६९५*।

इंदगोवेइ– इन्द्रगोपकः, प्रावृट्कालभावी कीटविशेषः। *जम्बू० ३४। आचा० ३७६।*

इंदग्गहो– इन्द्रग्रहः। *जीवा० २८।*

इंदग्गी– इन्द्राग्निः, ग्रहविशेषः। *स्था० ७९। जम्बू० ५३५।*

इंदजसा– इन्द्रयशा, ब्रह्मराजराज्ञी। *उत्त० ३७७।*

इंदजालिओ– इन्द्रजालिकः-भूतिलाभिधः। *आव० २१९।*

इंदज्झओ– इन्द्रध्वजः, शेषध्वजापेक्षयाऽतिमहत्त्वादिन्द्रश्चासौ ध्वजश्च इन्द्रध्वज इति विग्रहः, इन्द्रत्वसूचको ध्वज इति वा। *सम० ६१।*

इंदट्ठाणे– इन्द्रस्थानम्, यत्रेन्द्रयष्टिरूद्र्ध्वीक्रियते। *अन्त० २३।*

इंदणाणो– इन्द्रनागः, येन बालतपसा सामायिकं लब्धम्। *आव० ३५३।* वसन्तपुरे दारको य एकपिण्डिको जातः। *आव० ३५२।*

इंददत्त– इन्द्रदत्तः, अभिनन्दनजिनप्रथमभिक्षादाता। *आव० १४७। सम० १५१।* इन्द्रपुरनगरनृपतिः। *विपा० २२। व्यव० १५१* अ। *व्यव० १७०* आ। तितिक्षोदाहरणे इन्द्रपुरनगरनरेशः। *आव० ७०२।* मथुराक्षाद्धः पादच्छेदकः। (*मरण०*)। वासुपूज्यपूर्वभवः। *सम० १५१।* इन्द्रपुरे राजा। *आव० ३४३।* मथुरायां पुरोहित-विशेषः। *उत्त० १२५।* श्रावस्त्यां कपिलशिक्षको ब्राह्मणः। *उत्त० २८६, २८७।* इन्द्रपुरनृपतिः। *उत्त०१४८।*

इंदधणु– इन्द्रधनुः। *जीवा० २८३।* विविधवर्णमभ्रमण्डले जायमानं तेजोमण्डलम्। *भग० १९५।*

इंदनीले– इन्द्रनीलः, रत्नविशेषः। *प्रज्ञा० २७।* पृथिवी-भेदः। *आचा० २९।* मणिभेदः। *उत्त० ६८९।*

इंदपयपव्वतो– गजाग्रपदपर्वतापरनामा पर्वतः, षड्दिग्-क्षेत्रा-वग्रहस्थानम्। *निशी० ३४१* अ।

इंदपाउया– इन्द्रपादुका, इन्द्रकुमारी। *आव० ४३७।*

इंदपुरं– इन्द्रपुरम्, नगरविशेषः। *उत्त० ३८०।* इन्द्रदत्तराज-धानी। *उत्त० १४८।* तितिक्षोदाहरणे नगरविशेषः। *आव० ७०२।* नगरविशेषः। *विपा० ५४, ९५।* इन्द्र-दत्तराजधानी। *विपा० ८८।* नगरविशेषः। *आव० ३४३। व्यव० १५१* अ, *१७०* आ।

इंदभूई– इन्द्रभूतिः, प्रथमगणधरः। *आव० २४०।* श्रीवीरप्रथमगणधरः। *सम० १५२।*

इंदभूती– इन्द्रभूतिः इति मातृपितृकृतनामधेयः, महावीरस्वा-मिनः प्रथमशिष्यः। *भग० ११।* महावीरस्वामिनो ज्येष्ठः शिष्यः। *भग० १३९।* श्रीमहावीरप्रथमगणधरः। *सूत्र० ४०७।* रविप्रश्ननिर्णये चम्पानगर्यां पुण्यभद्रचैत्ये महावीरस्वामिनो गौतमगोत्रो ज्येष्ठः शिष्यः। *भग० २०६।*

इंदमह– इन्द्रमहः, इन्द्रोत्सवः। *उत्त० २११।* अश्र्वयुक्-पौर्णमासी। *स्था० २१४।* लौकिकमहोत्सवः। *आव० ३५८।* उत्सवविशेषः। *आव० ६९२। आचा० ३२८।* यदश्र्वयुक् पूर्णिमायां भवति कार्त्तिके वा। *आव० ७३६।* इन्द्रोत्सवः। *आव० ३५८।* इन्द्रस्य-शक्रस्य महः-प्रति-नियतदिवसभावी उत्सवः। *जीवा० २८१।*

इंदमुद्धाभिसित्ते– इन्द्रमूर्द्धाभिषिक्तः, सप्तमदिनस्य सैद्धा-न्तिकनाम। *जम्बू० ४९०।*

इंदसम्मो– इन्द्रशर्मा, गृहपतिविशेषः। *आव० १९४।* प्रतिचरकः। *आव० १९०।*

इंदसिरी– इन्द्रश्रीः, ब्रह्मराजराज्ञी। *उत्त० ३७७।*

इंदसेणा– रक्तवतीसंगमिका नदी। *स्था० ४७९।*

इंदा– ऐन्द्री, पूर्वदिक्। *आव० २१५। भग० ४९३।* नागकुमा-रेन्द्रस्य पञ्चमाग्रमहिषी। *भग० ५०४।* पञ्चमविद्युत्कुमारी महत्तरिका। *स्था० ३६१।* रक्तवतीसंगमिका नदी। *स्था० ४७७।*

इंदासणि– इन्द्राशनिः, इन्द्रवज्रम्। *उत्त० ४७५।*

इंदियं– इन्द्रियं, प्रज्ञापनायाः पञ्चदशं पदम्। *प्रज्ञा० ६।* इन्दनादिन्द्रः-जीवः, सर्वविषयोपलब्धिभोगलक्षणपरमै-श्र्वर्ययोगात्तस्य लिङ्गं तेन दृष्टं सृष्टं जुष्टं दत्तमिति वा, श्रोत्रादि। *स्था० ३३४।* औदारिकादित्वार्थपरिच्छेदकत्वलक्षणधर्म्म-द्वयोपेतम् । *स्था० ३५६।*

इंदियउद्देसए– प्रज्ञापनायाः पंचदशपदस्य प्रथमोद्देशकः। *भग० ४४०, ७७७, १३१। प्रज्ञा० ५४५।*

इंदियकरणं– इन्द्रियकरणम्, इन्द्रियाणां-चक्षुरादीनां करणं अवस्थान्तरावादनम्। *उत्त० २९८।*

इंदियत्थ– औदारिकादित्वार्थपरिच्छेदकत्वलक्षणधर्म्मद्व-योपेतमिन्द्रियं, अर्थः-विषयो जीवादिः। *स्था० ३५६।*

इंदियत्थविकोवणयाते– इन्द्रियार्थविकोपनं-कामविकारः।

स्था० ४४७।

इंदियत्था– इन्द्रियार्थाः इन्द्रियैरर्यन्ते-अधिगम्यन्त इति इन्द्रियार्थाः-शब्दादयः। *स्था० २५३*। इन्द्रियाणामर्थाः-तद्विषयाः-शब्दादयः। *स्था० ३३५*।

इंदियनिग्गहो– इन्द्रियनिग्रहः, इन्द्रियाणां-श्रोत्रादीनां निग्रहः-इष्टेतरेषु शब्दादिषु रागद्वेषकरणं, पञ्चैतेऽनगारगुणा। *आव० ६६०*।

इंदियपच्चक्खे– इन्द्रियं-श्रोत्रादि तन्निमित्तं-सहकारिकारणं यस्योत्पित्सोस्तदलिंगिकं शब्दरूपरसगन्धस्पर्श-विषयज्ञा-नमिन्द्रियप्रत्यक्षम्। *अनुयो० २११*।

इंदियपज्जत्ति– इन्द्रियपर्याप्तिः- यया धातुरूपतया परि-णमितादाहारादिन्द्रियप्रायोग्यद्रव्याण्युपादायैकद्वित्र्यादी-न्द्रियरूपतया परिणमय्य स्पर्शादिविषयपरिज्ञानसमर्थो भवति सा। *बृह० १८४* आ।

इंदियपडिपुण्णो– नोविगलिंदियो। *निशी० २६६*आ।

इंदियबलं– इन्द्रियबलम्, चक्षुरादीन्द्रियाणां बलं-स्वस्व-विषयग्रहणपाटवम्। *जीवा० २६८*।

इंदियमुंडा– न जितेन्द्रियाः। *निशी० ३७* अ।

इंदियलद्धी– इन्द्रियलब्धिः, पंचेन्द्रियप्राप्तिः। *उत्त० १४५*। इन्द्रियाणाम्-स्पर्शादीनां मतिज्ञानावरणक्षयोपशमसम्भूता-नामेकेन्द्रियादिजातिनामकर्मोदयनियमितक्रमाणां पर्याप्त-कनामकर्मादिसामर्थ्यसिद्धानां द्रव्यभावरूपाणां लब्धिरा-त्मनीतीन्द्रियलब्धिः। *भग० ३५०*।

इंदियलाघवं– इन्द्रियलाघवं, इन्द्रियाणि तस्य वशे वर्त्तंते। *व्यव० १०२* आ।

इंदियाइं– इन्द्रियाणि-नयननासिकादीनि। *उत्त० ४२५*।

इंदियाणि– इन्द्रियाणि-नयननाशावंशादीनि। *सम० १६*।

इंदीवर– हरितविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

इंदुत्तरवडिंसगं– एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकं विमानम्। *सम० ३७*।

इंदुवसु– इन्दुवसुः, ब्रह्मराजराज्ञी। *उत्त० ३७७*

इंदे– इन्द्रः। *स्था० २९२*। मल्लिनाथप्रथमशिष्यः। *सम० १५२*।

इंदो– इन्द्रः, अधिपतिः। *प्रज्ञा० १०५*। इन्दनाद्-इन्द्रः-आत्मा। *प्रज्ञा० २८५*। *जीवा० १६*। इन्दनात्-इन्द्रः-सर्वोपलब्धिभोगपरमैश्वर्यसम्बन्धाज्जीवः। *आव० ३९८*। जीवः-सर्वविषयोपलब्धिभोगलक्षणपरमैश्वर्ययोगात्। *स्था० ३३४*। परमैश्वर्ययोगात्प्रभुर्महान्। *स्था० १९८*।

इंदोकंतं– एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकं विमानम्। *सम० ३७*।

इंधणपलिआमं– जहा कोद्दवपलालेणं अंबगादि फलाणि वेढेत्ता पाविज्जंति आदिग्गहणेणं सालिपलालेण वितत्थ जे ण पक्का फला ते इंधणपलियामं भण्णति। *निशी० १५२* आ।

इंधणपलियामं– इंधनपर्यायामं-कोद्रवपलालादिना वेष्टयित्वा पाच्यानि फलानि। *बृह० १४२* आ।

इंधणसाला– जत्थ तणाकरिसभारा अच्छंति। *निशी० २१* आ। तृणकरीषकचवरस्थानम्। *बृह० १७५*अ।

इइकट्टु– इतिकृत्वा, निश्चित्य। *जम्बू० ३८६*। इति-कृत्वा-यस्मात् कारणात्। *अनुयो० १६*।

इइकम्मं– इतिकर्म्म, इति-सांसारिकं दुःखं कर्म-अष्टप्रका-रकर्मकृतम्। *आचा० १४५*।

इइहास– इतिहासः-पुराणम्। *औप० ९३*। *भग० ११२*। निर० २३।

इक्कडं– कटिनं तृणविशेषः। *बृह० ५२* आ। ढंढण-सदृशं तृणविशेषम्। *प्रश्न० १२८*। तृणविशेषः। *भग० ८०२*।

इक्कडा– लाडदेसे वणस्सतिभेओ। *निशी० १३४* आ। वनस्पतिविशेषाः। *सूत्र० ३०७*।

इक्कमिक्क– एकैकम्-परस्परम्। *उत्त० ३८२*।

इक्काई– राष्ट्रकूटविशेषः। *विपा० ३९*।

इक्कारसालंकारं– एकादशालङ्काराः, स्वरप्राभृतकथितालं-काराः। *जम्बू० ३९*।

इक्खाग– इक्ष्वाकुः, कुलविशेषः। *आव० १७९*।

इक्खागकुलो– इक्ष्वाकुकुलः, कुलविशेषः। *निशी० २९०* अ। *आव० १०९*।

इक्खागभूमि– इक्ष्वाकुभूमिः, ऋषभजन्मभूमिः। *आव० १६०*।

इक्खागा– इक्ष्वाकवः, नाभेयवंशजाः। *भग० ४८१*। *औप० ५८*। कुलार्यभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ५६*। प्रथमप्रजापतिवं-

शजाः। *स्था० ३५८*। ऋषभस्वामिविंशिकाः। *आचा० ३२७*।

इक्खु– इक्षुः। *भग० ३०६*। *दशवै० १८३*।

इक्खुगारा– इक्षुकाराः, धातकीखण्डपुष्करवरद्वीपार्द्धयोः भेदकारिणो दक्षिणोत्तरायताः पर्वतविशेषाः। *प्रश्न० ९५*।

इक्खुवाडिया– इक्ष्वादीनां मूलवर्गः। (वंशवर्गवत्)। *भग० ८०२*।

इक्खुवाडि– पर्वगविशेषाः। *प्रज्ञा० ३३*।

इक्षु– पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

इक्षुरसा– वापीनाम, पंडकवन आग्नेयप्रासादवापिका। *जम्बू० ३७१*।

इक्षुवरः– घृतोदसमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि। *प्रज्ञा० ३०७*।

इगं– इकम्, देशीपदम्। *आव० ४७४*।

इच्छं– इच्छामि। *आव० २६५*।

इच्छया– बलाभियोगमन्तरेण। *स्था० ५००*।

इच्छसि– मृगयसे। *आचा० १६८*।

इच्छा– इच्छा, बलाभियोगः। *स्था० ४९९*। एकादशीरात्रि-नाम। *जम्बू० ४९१*। *सूर्य० १४७*। धनादिविषयाभिलाषः। *स्था० २९१*। चेतःप्रवृत्तिरभिप्रायः। *आचा० १७५*। अभिलाषमात्रम्। *प्रश्न० ९७*। अप्राप्तार्थाभिलाषरूपा। *प्रश्न० ९२*। वन्दनके प्रथमं स्थानम्। *आव० ५४८*।

इच्छाकामा– इच्छाकामाः, एषणमिच्छा सैव चित्ताभिलाषरू-पत्वात्कामा इति। *दशवै० ८५*। मोहनीयभेदहास्यरत्युद्भवाः। *आचा० १३५*।

इच्छाकार– इदं मदीयं कार्यमिच्छया कुरुत न बलाभि-योगेनेत्येवमिच्छया करणम्। *बृह० २२२* अ। आज्ञाबलाभियोगरहितो व्यापारः। *अनुयो० १०३*। दशविधसा-माचार्याः प्रथमभेदः। *भग० ९२०*। बलाभियोगमन्तरेण करणं इच्छाकारः-इच्छाक्रिया। *आव० २५८*।

इच्छाणुलोमा– यथा कश्चित्किञ्चित्कार्यमारभमाणः कञ्चन पृच्छति, स प्राह-करोतु भवान् ममाप्येतदभिप्रेतमित्येवंरूपा भाषा। *प्रज्ञा० २५६*। प्रतिपादयितुर्या इच्छा तदनुलोमात-दनुकूला। *भग० ५००*। असत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै० २१०*।

इच्छाणुलोमियं– इच्छा-चेतःप्रवृत्तिरभिप्रायस्तस्यानुलोमम् अनुकूलं तत्र भवमैच्छानुलोमिकम्। *स्था० १७५*।

इच्छापरिमाणं– इच्छायाः परिमाणम्। *आव० ८२५*।

इच्छापुन्निमा– इच्छापूर्णिमा। *सूर्य० ११५*।

इच्छामणं– इच्छामनः, कायपरिचारेच्छाप्रधानं मनः। *प्रज्ञा० ५४९*।

इच्छामुच्छा– इच्छामूर्च्छा, इच्छा-परधनं प्रत्यभिलाषः मूर्च्छा-तत्रैव गाढाभिष्वङ्गरूपेति, तृतीयाधर्मद्वारस्य सप्तविंशतितमं नाम। *प्रश्न० ४३*।

इच्छालोभ– इच्छारूपो लोभः इच्छालोभः-चक्रवर्तीन्द्र-त्वाद्यभिलाषादिको निदानविशेषः। *आचा० २९५*। महालोभः। *बृह० २४६* अ। *स्था० ३७४*।

इच्छियं– इष्टम्-ईप्सितम्। *भग० १२१*। इच्छितं-इष्टं-अनुमतम्। *उत्त० ५०३*। इच्छाविषयीकृतम्। *जीवा० २७९*।

इच्छियपडिच्छियं– इष्टप्रतीप्सितम्, युगपदिच्छाप्रतीप्साविषयं वा। *भग० १२१*। इच्छाया अवग्रहो नाम इच्छितप्रतीच्छितेन इच्छा संजाताऽस्येति इच्छितं, प्रतीच्छा संजाताऽस्येति प्रतीच्छितं, इच्छितं च तत् प्रतीच्छितं च इच्छितप्रतीच्छितम्। *व्यव० ९३* अ।

इच्छियपडिच्छियववहारो– इच्छितप्रतीच्छितव्यवहारः, ईप्सितप्रतीप्सितव्यवहारः। *आव० १००*।

इज्जंजलि– इज्याञ्जलिः, यागविषयो जलाञ्जलिः। *अनुयो० २९*। मातुर्नमस्कारविधौ तद्भक्तः क्रियमाणः कर-कुड्मलमीलन-लक्षणोऽञ्जलिः। *अनुयो० २९*। पूजायामञ्जलिः। *अनुयो० २९*।

इज्जंत– एज्जंत-आयान्तमागच्छन्तम्। *उत्त० ३५८*।

इज्ज– इज्या, पूजा। *उत्त० ५३१*। यजनम्। *उत्त० ३५८*। यजनं-यागः। *अनुयो० २९*। माता। *अनुयो० २९*। पुजागाय-गोत्र्यादिपाठपूर्वकं विप्राणां सन्ध्याऽर्चनम्। *अनुयो० २९*।

इज्जिसिया– इज्यैषिकाः, इज्यां-पूजामिच्छन्त्येषयन्ति वा ये त एव। *भग० ४८२*।

इट्टग– सेवकिका, मानोत्पत्तिकारणम्। *पिण्ड० १३३*।

इट्टाल– इष्टिकाखण्डः। *दशवै० १७५*। नि०७४आ।

इट्ठं– इष्टम्। *आव० २४०*। वल्लभः-पूजितः। *भग० ५६०*।

इड्डगा– (क्षणविशेषः) इड्डगा सुत्ताउला (सेवतिका)।

निशी० १०० आ।

इड्डर– गन्त्रीढञ्चनकम्। *भग० ३१३*। गन्त्र्याः सम्बन्धि। *ओघ० १६६, १६७*।

इड्डरग– इड्डरकं-महत् पिटकम्। *राज० १४१*।

इड्डरिकादिः– पर्युषितकलनीकृताः अम्लरसा भवन्ति, आरनालस्थिताम्रफलादिर्वा। *स्था० २२०*।

इड्ढि– ऋद्धिः-आमर्षौषध्यादिः। *दशवै० १०३*। भवनपरिवारादिका। *जम्बू० ६२*। *उत्त० ३५०*। *आव० १७८*। *स्था० १३२*।

इड्ढिपत्ता– ऋद्धिप्राप्ता आर्याः। *प्रज्ञा० ५५*। ऋद्धिप्राप्ता-आर्यप्रथमभेदः, अर्हदादयः। *सम० १३५*।

इड्ढिमं– इस्सरो। *निशी० १६६* आ।

इड्ढिमत– ऋद्धिमतः-विस्मयनीयवर्णादिसम्पत्तिमतः। *उत्त० ४७३*।

इड्ढिसिय– रूढिगम्याः। *भग० ४८१*।

इड्ढी– ऋद्धिः। *प्रज्ञा० ४२४*। इस्सरियं। *निशी० १३* आ। आत्मशक्तिरूपा। *प्रज्ञा० ४६७*। भवनपरिवारादिका। *जीवा० २१७*। विभवैश्वर्यः। *जीवा० २८०*। विमानपरिवारादिका। *सूर्य० २५८*। *स्था० ११६*। औषधिविशेषः। *उत्त० ४८०*। कनकादिसमुदायः। *उत्त० २८४*। आमर्षौषध्यादि। *आचा० १७८*। विमानवस्त्रभूषणादि। *उपा० २६*। दीनानाथदानादिका विभूतिः। *उत्त० ४६५*। श्रावकोपकरणादिसम्पदामर्षौषध्यादिरूपा। *उत्त० ६६८*।

इड्ढीगारवं– ऋद्धिगौरवम्, ऋद्ध्या-नरेन्द्रादिपूज्याचार्यादित्वाभिलाषलक्षणया गौरवं-ऋद्धिप्राप्त्याभिमानाप्राप्ति-सम्प्रार्थनाद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवम्। *आव० ५७९*। ऋद्ध्या-नरेन्द्रादिपूजालक्षणया आचार्यत्वादिलक्षणया वा अभिमानादिद्वारेण गौरवम्, ऋद्धिप्राप्त्यभिमानाप्राप्त-प्रार्थनाद्वारेणात्मनोऽशुभभावो भावगौरवम्। *स्था०१७३*।

इणं– अयम्, अनन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्षः। *भग० ३४*।

इणमो– इदं, वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षासन्नम्। *प्रश्न० २*।

इणामेव– एवमेव। *प्रज्ञा० ६००*।

इण्हिं– इदानीम्। *आव० २७३*।

इतः– स्थितः। २६१।

इतर– सामान्यसाधुभ्यो विशिष्टतरः। *आचा० २४३*। शय्या-तरः। *व्यव० २७६*। अन्तप्रान्तः कुलः। *आचा० २४३*।

इता– ज्ञाता। *आचा० २८६*।

इति– इतिः-प्रवृत्तिः। *स्था० ३४३*। उपदर्शने। *सूर्य० २८६*। *प्रज्ञा० २५५*। परिसमाप्तौ एवमर्थे वा। *उत्त० ६७*। एवं प्रकारार्थः। *स्था० ५०३*। पूर्वप्रकान्तपरामर्शकः। *आचा० १४५*। इतिसद्दो वा अर्थे। *निशी० १३७* आ। आमं-तणे परिसमत्तीए उवप्पदरिसणे वा। *दशवै० ६३*। हेतौ। *आचा० १००*। उपप्रदर्शने। *उत्त० ५७०*। *दशवै० ७६*। आद्यर्थः। *उत्त० ५६१*। प्रत्येकं पर्यायस्वरूपनिर्देशार्थः। *उत्त० ८*। आद्यर्थे। *आव० २८*। प्रख्यातगुणानुवादनार्थः। *भग० ६७*। एवंप्रकाराः। *स्था० ३५४*।

इतिकत्तव्वं– इतकर्त्तव्यं। *आव० २१३*। इतिकर्तव्यता-आदर्शनिक्षेपे संपूर्णकर्तव्यतार्थः। *आचा० ५*।

इत्तरं–स्वल्पः। *निशी० १८९* अ। परिमितकालम्। *दशवै० २६*। चतुर्थादिषण्मासान्तमिदं तीर्थमाश्रित्य। *स्था० ३६४*। पादपोपगमनापेक्षया नियतदेशप्रचाराभ्युपगमादिङ्गि-तमरणम्। *आचा० २८५*।

इत्तरकं– इत्वरकम्, स्वल्पकालं, नियतकालावधिकं। *उत्त० ६००*।

इत्तरकालिकं– प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थेष्वनारोपितव्रतस्य इत्वरकालिकम्। *स्था० ३२३*। अल्पकालिकम्। *भग० ९०९*।

इत्तरा– इत्वरा, ये कल्पसमाप्त्यनन्तरं तमेव कल्पं गच्छं वा समुपयास्यन्ति ते इत्वराः। *प्रज्ञा० ६८*। स्वल्पकालभाविनी। *अनुयो० १३*। प्रस्तुतकल्पपरिसमाप्तौ ये भूयः स्थविरकल्पं प्रतिपद्यन्ते ते। *बृह० २२७*आ।

इत्तरिए– अल्पकालीनं। *भग० ९२१*। *निशी० २३९*।

इत्तरियं– इत्वरम्-स्वल्पकालभावीनि। *आव० ८३८*। उत्तरगुणप्रत्याख्यानम्। *आव० ८०४*। अल्पकालिकं दैवसिकादि प्रतिक्रमणमेव। *आव० ५६३*।

इत्तरियं दिसं– इत्वरं दिशम्-आचार्यलक्षणम्। *व्यव०* द्वि ० २००अ।

इत्तरिय– इत्वरं, भरतैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थे-

ष्वनारोपितमहाव्रतस्य शैक्षकस्य विज्ञेयम्। *प्रज्ञा० ६३*। अयनशीलम्-स्वल्पकालभावी। *उत्त० ३३५*। इत्वराः-प्रस्तुतकल्पपरिसमाप्तौ ये भूयः स्थविरकल्पं प्रतिपद्यन्ते ते। *बृह० २२७* आ।

इत्तरियतवो– इत्वरतपः स्वल्पकालं अनशनरूपं तपः। *उत्त० ६००*।

इत्तरियपरिग्गहियागमणे– तत्रेत्वरकालपरिगृहीता काल-शब्दलोपात् इत्वरपरिगृहीतागमनम्, भाटीप्रदानेन किय-न्तमपि कालं दिवसमासादिकं स्ववशीकृताया गमनं-मैथुनासेवनम्। *आव० ८२५*।

इत्तिरिउग्गहो– रुक्खातिहेट्ठठिताण वीसमणट्ठा इत्तरिओ उग्गहो भवति। *निशी० २३९* आ।

इत्तिरियं– इत्वरं, स्वल्पकालिकं दैवसिकरात्रिकादि। *स्था० ३८०*। *निशी० ३५४* आ।

इत्थंथं– इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थं। *प्रज्ञा० १०९*। नारका-दिव्यपदेशबीजं वर्णसंस्थानादि तत्। *दशवै० २५८*।

इत्थत्तं– अनेन प्रकारेणेत्थं तद्भाव इत्थत्वं, मनुष्यादित्वम्। *भग० १११*।

इत्थत्थं– इत्यर्थम्, एनमर्थम्-अनेकशस्तिर्यङ्नरनाकि-नारकगतिगमनलक्षणम्। *भग० १११*।

इत्थिकहा– स्त्रीकथा-स्त्रीणां स्त्रीषु वा कथा, विकथायाश्च-तुर्थभेदः। *स्था० २०९*। *दशवै० ११४*।

इत्थिपोसए– स्त्रीयं पोषयतीति स्त्रीपोषकः, अनुष्ठानविशेषः। *सूत्र० १११*।

इत्थिरयणे– स्त्रीरत्नम्। चकवर्त्तेः पञ्चमं पञ्चेन्द्रियरत्नम्। *स्था० ३९८*।

इत्थिलिंगं– स्त्रीलिङ्गम्, स्त्रीत्वस्योपलक्षणमित्यर्थः। *प्रज्ञा० २०*।

इत्थिवऊ– स्त्रीवाक्, स्त्रीलिङ्गप्रतिपादिका भाषा। *प्रज्ञा० २४९*।

इत्थिवेए– स्त्रीवेदः, स्त्रियाः पुंमासं प्रत्यभिलाषः। *प्रज्ञा० ४६८*।

इत्थिवेदो– अंतो अणुसमय डाहो अणुवसंतो वि घट्टिज्जमाण दिप्पंतो फुंफुअग्गिसमाणो इत्थिवेदो। *निशी० ३१* अ।

इत्थिवेय– स्त्रीवेदः, स्त्रियाः पुंस्यभिलाषः। *जीवा० १८*।

इत्थिसंसग्गी– अक्खाइगउल्लावादि। *दशवै० १२७*।

इत्थिसंसत्तो– स्त्रीसंसक्तः-स्त्रीसम्बन्धः। *प्रश्न० १३८*।

इत्थिसागारिए– स्त्रीजनः। *निशी० १०* अ।

इत्थी-स्त्री– पुरुषोत्तमवासुदेवनिदानकारणम्। *आव० १६३*।

इत्थीउ-स्त्रियः– अष्टमः परीषहः। *आव० ६५६*।

इत्थीणपुंसिया– इत्थिवेदो वि से नपुंसकवेदमपि वेदेति। *निशी० २५* आ।

इत्थीनामगोत्तं– स्त्रीनामगोत्रम्। *आव० १२०*।

इत्थीपण्हाइ– स्त्री उपलक्षणमेतत् पुरुषो वा प्रस्तौति प्रस्यंदते मिथुनकर्म्म समारभते इत्यर्थः। *व्यव० ११५* आ।

इत्थीपरिण्णा– स्त्रीपरीज्ञाध्ययनम्, सूत्रकृताङ्गे प्रथम-श्रुतस्कन्धे चतुर्थमध्ययनम्। *सम० ३१*।

इत्थीपसुविवज्जिअं– स्त्रीपशुविवर्जितमित्येकग्रहणे तज्जा-तीयग्रहणात् स्त्रीपशुपण्डकविवर्जितं स्त्र्याद्यलोकनादिरहितम्। *दशवै० २३७*।

इत्थीरूवं– अणाभरणा इत्थीरूवं भण्णति। *निशी० ७७*।

इत्थीविग्गह– स्त्रीविग्रहः, स्त्रीशरीरम्। *दशवै० २३७*।

इत्थीविपरियासो– स्त्रिया विपर्यासः स्त्रीविपर्यासः-अब्रह्मासेवनम्। *आव० ५७५*।

इत्थीवेदे– स्त्रीवेदः, स्त्रियं यथावस्थितस्वभावतस्तत्सं-बन्धविपाकतश्च वेदयति-ज्ञापयतीति, वैशिकादिकं स्त्री-स्वभावार्विभावकं शास्त्रमिति। *सूत्र० ११२*।

इदुर– सम्बादिढञ्चनकादि तदिदूरम्। *अनुयो० १५१*।

इद्धं– चित्तं। *निशी० ३६* अ।

इन्द्रकूपः– उंडतमः कूपविशेषः। *आव० ८२७*।

इन्द्रजालम्– कुहकम्। *दशवै० २५४*।

इन्द्रनीलः– रत्नविशेषः। *जीवा० २३*। *आव० १८१, २५९*। *प्रज्ञा० ९१*।

इन्द्रियगोचरा– विषयाः। *आव० ५८४*।

इन्द्रियदुष्प्रणिहितकायिका– आद्येन्द्रियैः-श्रोतादिभिर्दुष्प्र-णिहितस्य इष्टानिष्टविषयप्राप्तौ मनाक्सङ्गनिर्वेददद्वारेणाप-वर्गमार्गं प्रति दुर्व्यवस्थितस्य क्रिया। *आव० ६११*।

इन्द्रियार्थावग्रहः– स्पर्शनादीन्द्रियाणां ये स्पर्शादयो अर्थाः तेषां अवग्रहः-सामान्यमात्रज्ञानं। *नन्दी० १७४*।

इन्धनं– गोमयो भण्यते। *ओघ० १२९*।

इब्भ– इभमर्हतीति इभ्यः। *बृह० ११९* अ। यद्द्रव्य-निचयान्तरितो हस्त्यपि न दृश्यते। इभो-हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हतीति निरुक्तादिभ्यः। *जम्बू० १२२*। हस्तिप्रमा-णद्रविणराशिपतिः। *औप० २७*। अर्थवान्। *स्था० ४६३*। यद्द्रव्यनिचयान्तरितो महेभो न दृश्यते। *औप० ५८*। इभमर्हन्तीतीभ्याः-यद्द्रव्यस्तूपान्तरित उच्छ्रितकदलि-कादण्डो हस्ती न दृश्यते ते। *स्था० ३५८*। महाधनाः। *भग० ४६३*। धनवान्। *प्रज्ञा० ३३०*। इभो-हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हतीतीभ्यः। यत्सत्कपुञ्जीकृतहिरण्यरत्नादिद्रव्येणा-न्तरितो हस्त्यपि न दृश्यते सोऽधिकतरद्रव्यो वा इभ्य इत्यर्थः। *जीवा० २८०*। *अनुयो० २३*। यावतो द्रव्यस्योत्करे-णान्तरितो हस्ती न दृश्यते तावद् द्रव्यपतयः। *प्रश्न० ९६*।

इब्भजाति– मातिपक्खविसुद्धा इब्भजाइ। *निशी० २९०* अ। विशिष्टा जातयः। *स्था० ३५८*।

इमंपि– इदमपि, इतिपूर्वकोऽपिशब्दः। *आचा० ६५*।

इय– इतः, आर्षत्वात् अस्य। *प्रज्ञा० ११२*। आगतः। (*मरण०*)।

इयण्हिं– इत इदानीम्। *स्था० १४३*।

इयपट्ठा– इतिप्रष्ठाः-प्रधानाः, वाग्मिनः। *उपा० ४६*।

इयरं– इतरं, रजोहरणनिषद्या औपग्रहिकं कार्पासिकं और्णिकं वा चीरं, सार्थो वा। *ओघ० २३*। इतरशब्देन रजोहरणनिष-द्योच्यते। *ओघ० २३*।

इयरेयर– इतरेतरः, इतरेतरसंयोगः। *उत्त० २३*।

इरिआवहं– ईरणमीर्या, पथि ईर्या ईर्यापथं-गमनागमनम्। *ओघ० ३७*।

इरियावहिए– ऐर्यापथिकः, केवलयोगप्रत्ययः कर्मबन्धः, क्रियास्थाने त्रयोदशं क्रियास्थानम्। *सम० २५*।

इरितासमिती– जीवसंरक्खणजुगमेत्तंतरदिट्ठिस्स अप्पमादिणो संजमोवकरणुप्पायणणिमित्तं जा गमणकिरिया सा। *निशी० १६* आ।

इरिमंदिर– लक्ष्मीमन्दिरम्, लक्ष्म्यालयं, प्रभूतलक्ष्मीकम् । *दशवै० ५८*।

इरिया– ईरणमीर्या-गतिपरिणामः। *उत्त० ५१४*। ईर्या-आचारप्रकल्पस्य द्वादशो भेदः। *आव० ६६०*। ईर्यागमनम्। *भग० ३२३*। ईरणमीर्यागमनमित्यर्थः। *आचा० ३७४*। ईर्या आचारप्रकल्पस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य तृतीयमध्ययनम्। *प्रश्न० १४६*। ईर्या-गमनं, ईर्याकार्यं कर्म। *आव० २६५*। ईर्या-गमनम्। *भग० १०६*।

इरियाइ– ईर्यादि, संयमविषया विराधना। *ओघ० ८०*।

इरियामि– ईरे-गच्छामि गोचरचर्यादिष्विति। *उत्त०४४५*।

इरियावह– ईर्या-गमनं, तत्प्रधानः पन्था ईर्यापथः। *आव० ५७६*।

इरियावहकिरिया– ईर्यापथक्रिया, या उपशान्तमोहादारभ्य सयोगिकेवलिनं यावदिति। *सूत्र० ३०४*।

इरियावहियं– ऐर्यापथिकी, ईर्या-गमनं तद्विषयः पन्था-मार्गस्तत्र भवा, केवलकाययोगप्रत्ययः कर्मबन्धः इत्यर्थः। *भग० १०६*। ईरणमीर्या-गतिस्तस्याः पन्था यदाश्रिता सा भवति तस्मिन् भवमध्यात्मादित्वाट्ठकि ऐर्यापथिकं, पथि-स्थस्तिष्ठच्चैर्यापथिकम्। *उत्त० ५९५*।

इरियावहिया– ईर्यापथक्रिया, क्रियायास्त्रयोदशो भेदः। *आव० ६४८*। ईर्यापथिकी-विंशतिक्रियामध्ये विंशतितमा। *आव० ६१२*। ऐर्यापथिकी-गमनप्रधानः पन्थाः ईर्यापथस्तत्र भवा। *आव० ५७३*। ईर्यापथिकीचंक्रमणक्रिया। *बृह० २७* अ।

इरियासमिइ– ईर्यासमितिः-निरवद्यप्रवृत्तिरूपा। *प्रश्न० १४३*।

इरियासमिए– ईरणं-गमनमीर्या तस्यां समितो-दत्तावधानः पुरतो युगमात्रभूभागन्यस्तदृष्टिगामीत्यर्थः। *आचा० ४२८*

इला– हिमवते चतुर्थकूटः। *स्था० ७१*। धरणेन्द्रस्य महिषीनाम। *भग० ५०४*।

इलादेवया– इलादेवता, इलावर्द्धननगरदेवता। *आव० ३५९*।

इलादेवी– पश्चिमरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव०१२२*। पुष्पचूलायाः पञ्चममध्ययनम्। निर० ३७। पाश्चात्यरुचक-वास्तव्या प्रथमादिक्कुमारीमहत्तरिका। *जम्बू० ३९१*।

इलादेवीकूडे– इलादेवीकूटं, क्षुल्लहिमवतकूटः। *जम्बू० २९६*। इलादेवीदिक्कुमारीकूटम्। *जम्बू० ३८१*।

इलापुत्तो– इलापुत्रः, इलावर्द्धननगरसार्थवाहपुत्रः। *आव०*

३५१। तीर्थकराचार्यव्यतिरिक्तेभ्यः श्रुत्वा प्रतिबुद्धः। *सूत्र० १७२*।

इलावद्धणं– इलावर्द्धनं, नगरविशेषः। *आव० ३५१*।

इलिआगई– इलिकागतिः, गत्यंतरगतिविशेषः। *भग० ८४*। *स्था० ८१*। *आव० ३६३*।

इलिका– धान्यकीटः। *भग० ८४*। धान्यजन्तुविशेषः। *आव० ३६३*।

इलू– धान्यविशेषः। *निशी० १४९* अ।

इष्टकापाकः– यत्रेष्टकाः पच्यन्ते तत्। *जीवा० १२४*।

इसत्थं– प्राकृतशैल्या इषुशास्त्रं-नागबाणादिदिव्यास्त्रा-दिसूचकं शास्त्रम्। *जम्बू० १३८*।

इसि– ऋषयः-गणधरव्यतिरिक्ताः शेषा जिनशिष्याः। मुनयः यतयो वा। *सम० १५१*। त्रिकालदर्शनिनः। *राज० ४६*।

इसिगणिया– ऋषिगणितदेशवास्तव्या देवानन्दादासी। *भग० ४६०*।

इसिच्चेव– वाणवंतरपणपन्निदा। *स्था० ८५*।

इसिज्झयं– ऋषिध्वजं-मुनिचिहनं रजोहरणादि। *उत्त० ४७८*।

इसितडागं– ऋषितटाकं, तोसलिनगरे सरः। *बृह० २५७*।

इसिदासे– ऋषिदासः, अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य तृतीयमध्ययनम्। *अनुत्त० २*।

इसिदिण्णं– ऋषिदिन्नम्, ऐरवते पंचमजिननाम। *सम० १५३*।

इसिपब्भारा– सिद्धशिलानाम। *सम० २२*।

इसिभद्द– आलभिकायां श्रमणोपासकविशेषः। *भग० ५५०*।

इसिभासिआ– ऋषिभाषिताः। *आव० ६१*।

इसिभासिय– ऋषिभाषित। *बृह० ३५* अ।

इसिभासियाइं– ऋषिभाषितानि, उत्तराध्ययनादीनि। *आव० ३०१*। ऋषिभाषितं- उत्तराध्ययनादि। *सूत्र० ३८६*।

इसिया– मुञ्जागर्भभूता शलाका। *सूत्र० २७१*।

इसिवज्झा– ऋषिवध्या-ऋषिहत्या। *उत्त० ४४०*।

इसिवाइंदा– वाणमन्तरविशेषः। *स्था० ८५*।

इसिवाइय– ऋषिवादिकः, वाणमन्तरविशेषः। *प्रज्ञा० ९५*। व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्त्तिनो वाणव्यन्तरजातिविशेषाः। *प्रश्न० ६१*।

इसिवालए– वाणव्यंतरऋषिपालेन्द्रः। *स्था० ८५*।

इसिवाले– ऋषिपालः, उत्तरऋषिवादिकव्यन्तराणामिन्द्रः। *प्रज्ञा० ९८*।

इसिवालो– तोसलिवासिना क्रीत उज्जयिनीकुत्रिकापणाधिपः सुरः। *बृह० २६७* आ। पंचमवासुदेवपूर्वभवनाम। *सम० १५३*।

इसिवुड्ढी– ऋषिवृद्धिः, ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणां मध्ये सप्तमी राज्ञीनाम। *उत्त० ३७९*।

इसी-ऋषिः– विशिष्टतपश्चरणोपेतो महर्षिः। *सूत्र० २९८*। दक्षिणऋषिवादिकव्यन्तराणामिन्द्रः। *प्रज्ञा० ९८*। पश्यतीति अतिशयज्ञानी। *औप० ७८*। सुविहितः। *ओघ० २२२*।

इसु– इषुः, शरः। *दशवै० १८*।

इसुसत्थं– इषुशास्त्रम्, बाणकला। *आव० ३९२*।

इस्सरियं– ऐश्वर्यं-प्रभुत्वं, द्रव्यादिसमृद्धिर्वा। *उत्त० ४७४*।

इस्सरे– भूतेन्द्रविशेषः। *स्था० ८५*।

इस्सा– ईर्ष्या। *आव० ४१०*। परगुणासहनम्। *उत्त० ६५६*।

इहत्थे– इहार्थ ईहास्थो वा। *स्था० २४८*।

इहरा– इतरथा, अन्यथा। *पिण्ड० १४१*। अन्यथा। *आव० २६०*।

इहलोगइया– मणुस्सा। *निशी० ७१* आ।

इहलोकभते– इहलोकभयं-मनुष्यादिकस्य सजातीयाद-न्यस्मान्मनुष्यादेरेव सकाशाद्यद्भयम्। *स्था० ३८९*। यत्सजातीयाद् भयम्। *सम० १३*। इहलोके भयं स्वभावाद् यत् प्राप्यते। *आव० ४७२*। स्वजातीयात् मनुष्यादेर्मनुष्या-दिकस्यैव भयम्। *प्रश्न० १४३*।

इहलोगसंवेगणी– संवेगणीकथायाः प्रथमभेदः, इहलोकः-मनुष्यजन्म, तत्स्वरूपकथनेन संवेगनी। *स्था० २१०*।

इहलोगासंसप्पओगे– इहलोकाशंसाप्रयोगः, इहलोकः-मनुष्यलोकस्तस्मिन्नाशंसा-अभिलाषप्रयोगः। *आव० ८३९*।

इहलोगो– इहलोकः, मनुष्यलोकः। *आव० ८४०*।

इहलोयभयं– इहलोकभयं-मनुष्यादिसजातीयादन्यस्मान्मनु-ष्यादेरेव भयम्। *आव० ६४५*।

इहलोयसंवेयणी– इहलोकसंवेजनी, संवेजनीकथायास्तृतीयो भेदः। *दशवै० ११२*।

इहेहे– विप्साभिधानं सम्भ्रमख्यापनार्थं, यदि वा इहेति

लोके इहेत्यस्मिन् मृत्यौ। *उत्त० ४०१*।

- x - x – x –

(ई)

ईइ– ईतिः, गड्डरिकादिरूपा। *जीवा० १८८*। जं० २१।

ईति– दुरितविशेषः। *भग० ८*। धान्याद्युपद्रवकारिशलभ-मूषकादिः। *जम्बू० ६६*।

ईती– ईतिः-धान्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादिप्राणिगणः। *सम० ६२*।

ईरियट्ठा– ईर्याविशुद्ध्यर्थम्। *स्था० ३६०*।

ईरिया– गमनं। *स्था० ३४३*। ईरणमीर्या-गतिपरिणामः। *उत्त० ५२४*।

ईरियावहिया– ऐर्यापथिकीक्रिया, योगमात्रजः कर्मबन्धः। *आव० ६१२*। ईर्या-गमनं तत्प्रधानः पन्था-मार्ग ईर्या-पथस्तत्र भवमैर्यापथिकं-केवलयोगप्रत्ययं कर्म्म। *भग० ३८५*। *आव० ६४८, ६४९*।

ईरियावहियाकिरिया– ईर्यापथिकक्रिया-यदुपशान्तमोहा-देरेकविधकर्म्मबन्धनमिति। *स्था० ३१६*।

ईरियासमिइ– ईर्यासमितिः, ईर्यायां समितिः, ईर्याविषये एकीभावेन चेष्टनम्। *आव० ६१५*। रथशकटयानवाहना-क्रान्तेषु मार्गेषु सूर्यरश्मिप्रतापितेषु प्रासुकविविक्तेषु पथिषु युगमात्रदृष्टिना भूत्वा गमनागमनं कर्त्तव्यम्। *आव० ६१५*।

ईर्याप्रत्ययं– ईरणमीर्या-गमनं तेन जनितम्। *सूत्र० १२*।

ईर्याविशुद्धि– ईर्या-गमनं तस्या विशुद्धिर्युगमात्रनिहित-दृष्टित्वम्। *स्था० ३६०*।

ईलिकागतिः– गतिविशेषः। *प्रज्ञा० १५१*। *नन्दी० १५३*।

ईली– करवालविशेषः। *प्रश्न० ४८*।

ईश्वरकारणिकः– क्रियावादिद्वितीयविकल्पः। *सम० ११०*।

ईश्वरकारणिनः– क्रियावादिद्वितीयविकल्पः। *स्था०२६८*।

ईश्वरपुत्रः– इभ्यानां पुत्रः ईश्वरपुत्रः। *नन्दी० २५८*।

ईषत्कुटिला– कुण्डलीभूता। *जम्बू० ११३*।

ईषा– गात्रविशेषः। *जम्बू० ५५*। *राज० ९३*।

ईसक्खो– ईशाख्यः, ईशनमैश्वर्यमात्मनः ख्याति अन्त-र्भूतण्यर्थतया ख्यापयति-प्रथयति यः सः। *जीवा०२१७*।

ईसत्थ– इषुशास्त्रम्, धनुर्वेदः। *आव० १२९*। *प्रश्न० ९७*। धणुवेदादि-धनुर्वेदादि। *निशी० २०*आ।

ईसत्थसत्थरहचरियाकुसलो– इष्वस्त्रशस्त्ररथचर्याकुशलः। *उत्त० २१४*।

ईसर– ईश्वरः, भोगिकादिः अणिमाद्यष्टविधैश्वर्ययुक्तो वा। *जम्बू० १२२*। लवणे उत्तरपातालकलशः। *स्था० ४८०, २२६*। प्रभुरमात्यादिः। *अन्त० १६*। स्फातिमान्। *जीवा० ३६५*। युवराजादिः भोगिको वा। *प्रश्न० ९६*। भोगिकादिः, अणिमाद्यष्टविधैश्वर्ययुक्तो वा। *जीवा०२८०*। *बृह० २५५*आ। युवराजः, अणिमाद्यैश्वर्ययुक्तः। *औप० ५८*। *प्रज्ञा० ३३०, ३२७*। महेश्वरः। *प्रश्न० ३३*। प्रधानः, प्रभुः, स्वामी। *आव० ५०२*। भूतवादिकव्यन्तरेन्द्रः। *प्रज्ञा० ९८*। 'ईस ईश्वर्ये' ऐश्वर्येण युक्तः ईश्वरः, सो य गामभोतियादि। *निशी० २७०*अ। गृहस्वामी। *आचा० ४०३, ३७०*। द्रव्यपतिः। *उत्त० ३५३*। युवराजो माण्डलिकोऽमात्यो वा, अणिमाद्यष्टविधैश्वर्ययुक्त ईश्वरः। *स्था० ४६३*। युवराजः सामान्य-मण्डलिकोऽमात्यश्च। *अनुयो० २३*। युवराजः। *भग० ३१८*। युवराजादयः। *भग० ४६३*। *औप० १४*। युवराजा। *राज० १२१*।

ईसरस्स– पातालकलशः। *सम० ८७*।

ईसरा– ईश्वराः, युवराजाः, अणिमाद्यैश्वर्ययुक्तः। *जम्बू० १९०*।

ईसरिए– ऐश्वर्यः, मदस्य षष्ठं स्थानम्। *आव० ६४६*।

ईसरी– ईश्वरी, सोपारके श्राविकाविशेषः। *आव० ३०४*।

ईसा– ईशा, पिशाचकुमारेन्द्रस्याभ्यन्तरिका पर्षत्। *जीवा० १७१*। ईश्वरी-लोकपालाग्रमहिषीणां आद्या पर्षद्। *स्था० १२७*। ईर्ष्या-प्रतिपक्षाभ्युदयोपलम्भजनितो मत्सरविशेषः। *आव० ६११*।

ईसाण– ईशानः-ईशानावतंसकाभिधविमानोपलक्षितः द्वितीयकल्पः। *अनुयो० ९२*।

ईसाणवडिंसए– ईशानावतंसकः, ईशानकल्पमध्येऽवतंसकः। *जीवा० ३९१*।

ईसाणवडेंसए– ईशानकल्पेन्द्रविमानं। *भग० २०३*।

ईसाणा– ईशानदेवलोकनिवासिन ईशानाः, द्वितीयो देवलोकः। *प्रज्ञा० ६९*। पूर्वोत्तरदिक्कोणनाम। *स्था० १३३*।

इसाणी– पूर्वोत्तरदिक्कोणनाम। *भग० ४९३*। ऐशानी ईशान-कोण, पूर्वोत्तरमध्यवर्तिदिक्। *आव० २१५*।

ईसाणे– द्वितीयकल्पेन्द्रः। *स्था० ८५*। अहोरात्रस्यैका-दशमुहूर्तनाम। *सूर्य० १४६*। एकादशमुहूर्तनाम। *जम्बू० ४९१*। देवलोकविशेषः। *आव० ११५*।

ईसिं– ईषत्, मनाक्। *जीवा० १८१*।

ईसिं ओट्ठवलंबिणी– ईषदोष्टावलम्बिनी, ईषत्-मनाक् ततः परम्परमास्वादतया झटित्येवाग्रतो गच्छति ओष्टेऽवलम्ब-तेलगतीत्येवंशीला। *प्रज्ञा० ३६४*।

ईसिं ओणयकाओ– ईषदवनतकायः। *आव० २१६*।

इसिं तंबच्छिकरणी– ईषत्ताम्राक्षिकरणी, ईषत्-मनाक् ताम्रे अक्षिणी क्रियेते अनयेति। *प्रज्ञा० ३६४*।

ईसिंपब्भारगओ– ईषत्प्राग्भारगतः-ईषदवनतकायः। *आव० २१६*।

ईसिं वोच्छेदकडुई– ईषद्व्युच्छेदकटुका, ईषत्-मनाक् पानव्यच्छेदे सति तत ऊर्ध्वं कटुका एलादिद्रव्यसम्पर्कत उपलक्ष्यमाणतिक्तवीर्येति। *प्रज्ञा० ३६४*। *जीवा० ३५१*।

ईसि– ईषत्, मनाक्। *प्रज्ञा० ९१*। *आव० ८५७*। ईषत्प्रा-ग्भारानाम। *प्रज्ञा० १०७*। सिद्धशिलानाम। रत्नप्रभाद्यपे-क्षया ह्रस्वत्वाद् ईषत्। *स्था० ४४०*। *सम० २२*।

ईसिगि– सरस्सछल्ली-त्वक्। *निशी० ६३ आ*।

ईसिपंचहस्सक्खरुच्चाणद्धा– अयोगिकालमानं। *उत्त० ५७७*। ईषदिति-स्वल्पः प्रयत्नापेक्षया पञ्चानां ह्रस्वाक्षराणां अइ-उऋलृ इत्येवंरूपाणामुच्चरणमुच्चारो भणनं तस्याद्धाकालो यावता त उच्चार्यन्ते। *उत्त० ५९६*।

ईसिपब्भारा– ईषत्प्राग्भारा, ईषद्धाराक्रान्तपुरुषवन्नता अन्ते-ष्विति। *अनुयो० ९२*। सिद्धशिलानाम, प्राग्भारस्य ह्रस्वत्वा-दीत्प्रागभारा। *स्था० ४४०*। *सम० २२*। सिद्धशिला। *आव० ६००*।

ईसी ओट्ठावलंबिणी– ईषदोष्ठावलम्बिनी, ईषद् ओष्ठम-वलम्बते ततः परमतिप्रकृष्टास्वादगुणरसोपेतत्वात् झटिति परतः प्रयाति। *जीवा० ३५१*।

इसी तंबच्छिकरणी– ईषत्ताम्राक्षिकरणी, किंचिन्नेत्ररक्तता-करणी। *जीवा० ३५१*।

ईसीपब्भारगए– ईषत्प्राग्भारगतः। *आव० ६४८*।

ईसीपब्भारा– ईषत्प्राग्भारा, सिद्धभूमिः। *आव० ४४२*। अष्टमभूमिः, अन्त्याभूमिः। *आव० ६००*। पञ्चचत्वारिं-शद्योजनलक्षायामविष्कम्भप्रमाणा शुद्धस्फटिकसंकाशा सिद्धशिला। *प्रज्ञा० २२८*। ईषद्-अल्पो रत्नप्रभाद्यपेक्षया प्राग्भारः-उच्छ्रयादिलक्षणो यस्यां सा। *स्था० २५१*। सिद्धशिला। *प्रज्ञा० १०७*। ईषत्-अल्पो योजनाष्टकबाह-ल्यपञ्चचत्वारिंशल्लक्षविष्कम्भात् प्राग्भारः पुद् गलनिचयो यस्याः सा। *स्था० १२५*।

ईसेणिआ– ईसिनिकाः। *जम्बू० १९१*।

ईहइ– ईहते-पर्यालोचयति। *आव० २६*।

ईहते– पूर्वापराविरोधेन पर्यालोचयति। *नन्दी० २५०*।

ईहा–सदर्थविशेषालोचनं। *भग० ३४४*। सदर्थाभिमुखा ज्ञानचेष्टा। *भग० ६३३*। वितर्कः। *सम० ११५*। अवग्र-हादुत्तरकालमवायात्पूर्वं सद्भूतार्थविशेषोपादानाभिमुखो-ऽसद्भूतार्थविशेषपरित्यागाभिमुखः-प्रायोऽत्र मधुरत्वादयः शङ्खादिशब्दधर्मा दृश्यन्ते न खरकर्कशनिष्ठुरतादयः शार्ङ्गा-दिशब्दधर्मा इत्येवंरूपो मतिविशेषः। *नन्दी० १६८*। ईहन-मीहा-सदर्थपर्यायलोचनम्। *नन्दी० १८६*। ईहनमीहा-सतामर्थानामन्वयिनां व्यतिरेकाणां च पर्यालोचना। *आव० १८*। तदवगृहीतार्थविशेषालोचनम्। *आव० ९*। ईहनमीहा-सद्भूतार्थपर्यालोचनरूपा चेष्टा। *प्रज्ञा० ३१०*। *नन्दी० १६८*। किमिदमित्थमुतान्यथेत्येवं सदर्थालोचनाभिमुखा मतिः चेष्टा। *औप० ९९*। सदर्थपर्यालोचनात्मिका। *दशवै० १२६*। अवग्र-हार्थगतासद्भूतसद्भूतविशेषालोचनम्। *राज० १३०*।

ईहामिग– ईहामृगः-वृकः। *भग० ४७८*। *जम्बू० ४३*। *जीवा० १९१*। नाट्यविधिविशेषः। *जीवा० २४६*। *जम्बू० ४१५*। आटव्यः पशुः। *आचा० ४२३*।

ईहामिय– ईहामृगाः-वृकाः। *राज० २८*।

- x - x - x -

(उ)

उंछं– उञ्छं-भक्तं। *ओघ० १५४*। अन्यान्यवेश्मतः स्वल्पं स्वल्पमामीलनात्। *उत्त० ६६७*। जुगुप्सनीयं, गर्ह्यम्। *सूत्र० १०८*। भैक्ष्यम्। *सूत्र० ७४*। अल्पाल्पम्। *प्रश्न० १११*। छादनाद्युत्तरगुणदोषरहितः। *आचा० ३६८*। अज्ञातपिण्डो-ञ्छसूचकत्वादिति साधोरुपमानम्। *दशवै० १८*। एषणीयः। *आचा० ३७६*। उञ्छयते-अल्पाल्पतया गृह्यत इति, भक्तपानादिः। *स्था० २१३*।

उंछवित्ती– उञ्छवृत्ती-कणयाचनवृत्तिः। *आव० ७०५*।

व्यव० ३५९ अ।

उंछविही– कणयाचनवृत्तिः। *आव० ७०५*।

उंजणं– अवमं(सं)तुअणं। *दशवै० ६९*।

उंजण– उञ्जनम्। उत्सेचनम्। *दशवै० २२८, १५४*।

उंजायणा– वासिष्ठगोत्रस्य नामविशेषः। *स्था० ३९०*।

उंजेज्जा– उत्सिञ्चेत्। *दशवै० १५४*।

उंडअ– उण्डकः, पिण्डकः। *ओघ० २९*।

उंडगं– उन्दकम्, स्थण्डिलम्। *दशवै० १५६*।

उंडत्तं– उद्वेधः। *स्था० ५२५*।

उंडया– ग्रन्थयः। *निशी० २४५* आ।

उंडिं– मुद्राम्। *व्यव० १६७* आ

उंडिका– मुद्रा। *बृह० ३३* अ।

उंडुअं– उन्दुकम्-स्थानम्। *दशवै० १७०*। *बृह० २०२*अ।

उंडेरय– वटकाः। *आव० ६८०*।

उंदर– उन्दुरः। *प्रश्न० ८*।

उंदु– उन्दु-मुखम्। *अनुयो० २९*।

उंदुर– उन्दुरः-मूषकः। *ओघ० १२६*। *आव० ६४१*। *उत्त० १०९*। *निशी० २२* अ।

उंदुरुक्कं– मुखेन वृषभादिशब्दकरणम्। *अनुयो० २९*।

उंदोइयाए– अडोलिया, यवनृपतिदुहिता। *बृह० १९१*अ।

उंबर– उदुम्बरः, बहुबीजकवृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*। *भग० ८०३*। चतुर्थभवनवासिदेवस्य वृक्षः। *स्था० ४८७*। उम्बरः। *व्यव० ३६२* अ। गिहेलुको। *निशी० ३८* आ।

उंबरदत्त– उदुम्बरदत्तः, दुःखविपाके सप्तममध्ययनम्। *विपा० ७८*। पाटलखण्डनगरे सागरदत्तसार्थवाहसुतः। *विपा० ७४*। जक्षविशेषः। *विपा० ७४*।

उंबरमंथुं– चूर्णविशेषः। *आचा० ३४८*।

उंबरवच्चं– उंबरस्स फला जत्थ गिरिउडे उच्चविज्जंति तं उंबरवच्चं भण्णति। *निशी० १९२* आ।

उंबरिय– वृक्षविशेषः। *भग० ८०३*।

उंबरो– उदुम्बरदत्तः, सार्थवाहसुतः, दुःखविपाकानां सप्तमम-ध्ययनम्। *विपा० ३५*।

उ– उपयोगकरणे। *आव० ४४९*।

उअत्तं– उत्तीर्णम्। *निशी० ३४५* आ।

उअरदंते– उदरदान्तः-येन वा तेन वा वृत्तिशीलः। *दशवै० २३३*।

उआहणित्ता– उपाहत्य, समीपमानीय। *दशवै० ५९*।

उइंति– उद्यन्ति, उदयं यान्ति। *उत्त० ४८६*।

उदओदए– उदितोदयः, सिद्धौ कायोत्सर्गफलमिति दृष्टान्ते राजा। *आव० ८००*।

उइज्जंति– उदीर्यन्ते, उद्रेकाऽवस्थां नीयन्ते। *आव० ५६८*।

उइण्णा– अवतीर्णा। *उत्त० ३००*।

उइन्न– उदीर्णः-विपाकापन्नः। *आचा० १५१*।

उईरयं– उदीरकं-प्रवर्त्तकम्। *प्रश्न० ८६*।

उईरयइ– उदीरयति-अन्यान् वातान् जलमपि चोत्-प्राबल्येन प्रेरयति। *जीवा० ३०७*।

उउ– उत। *निशी० ३४८* अ। ऋतुः। *भग० ५४३*। ऋतुरक्तरूपः, शास्त्रप्रसिद्धो वा। रक्तप्रवृत्तिलक्षणः। *स्था० ३१३*।

उउबद्ध– ऋतुबद्ध उच्यते शीतकाल उष्णकालश्च। *ओघ० ११८*। ऋतुबद्धः। *आव० १८९*। शीतोष्णकालयोः। *ओघ० २०५*। शीतोष्णकालौ मिलितौ चैव भण्यते। *ओघ० १३१*।

उउबद्धपीढफलगं– यः पक्षस्याभ्यन्तरे पीठफलकादीनां बन्धनानि मुक्त्वा प्रत्युपेक्षणां न करोति यो वा नित्यावस्तृ-तसंस्तारकः सोऽबद्धपीठफलकः तम्। *व्यव० १६४* अ। जो य पक्खस्स पीढफलिगादियाण बंधे मोत्तुं पडिलेहणं ण करेति सो संजओ उउबद्धपीढफलगो अथवा णिच्चथणिय-संथारगो णिच्चुत्थरियसंथारगो य उउबद्धपीढफलगो भण्ण-ति। *निशी० ९१* अ।

उउबद्धोग्गहो– ऋतुबद्धावग्रहः। *निशी० २३९* अ।

उउपरियइ– ऋतुपरिवर्त्तः-ऋत्वन्तरम्। *आचा० ३२७*।

उउय– ऋतुजः-कालोचितः। *प्रश्न० १६२*।

उउसंधी– ऋतुसन्धिः-ऋतोः पर्यवसानम्। *आचा० ३२७*।

उऊ– ऋतुः, मासद्वयमानः। *भग० २११*। ऋतुः। *आचा० ३२७*।

उऊसंवच्छरे– ऋतवो-लोकप्रसिद्धा वसन्तादयः तद्व्यव-हारहेतुः संवत्सरः ऋतुसंवत्सरः, तृतीयप्रमाणसंवत्सरः। *जम्बू० ४८७*।

उएट्टे– शिल्पे चतुर्थभेदः। *अनुयो० १४९*।

उकट्टणं– गाढतरम्। *निशी० ११५* अ।

उक्कंचण– उर्ध्वं कंचनमुत्कंचनं-हीणगुणस्य गुणोत्कर्षप्रति-पादनम्। उत्कोचा। *राज० ११५*।

उक्कंचणदीव– ऊर्ध्वदण्डव्रतः। *भग० ५४८*।

उक्कंचणया– उत्कञ्चनता-मुग्धवञ्चनप्रवृत्तस्य

समीपवर्त्तिवि-दग्धचित्तरक्षार्थं क्षणमव्यापारतयाऽवस्थानम्। *औप० ८१*। मुग्धवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपवर्तिविदग्धचित्तरक्षणार्थं क्षणम-व्यापारतया अवस्थानम्। *राज० २९*।

उक्कंतो– उत्क्रान्तः, आयुःक्षयेण भृतः। *उत्त० ४६०*। उत्कृतः-त्वगपनयनेन छिन्नः। *उत्त० ४६०*।

उक्कंबिओ– वंशादिकम्बाभिरवबद्धः। *आचा० ३६१*।

उक्क– उल्का। *व्यव० २४१* अ। गगनाग्निः। *दशवै० १५४*।

उक्कइयकरणं– सिव्वणं, तुण्णणं। *निशी० १२४*अ।

उक्कच्छिय– आर्यिकाणां त्रयोदशभेदोपधौ एकादशी। *ओघ० २०९*।

उक्कच्छिया– कच्छाए समीवं उवकच्छं, तं छादयंतीति। *निशी० १८०* अ।

उक्कज्जिय– डंडायतं। *निशी० ५९* अ।

उक्कडं– उत्कटं-उपेतम्। *जम्बू० २७५*। दुष्कृतम्। *आव० ७८२*। प्रचुरः। *आव० ७७४*।

उक्कडुअ– उत्कटुकानि, यथास्थानमनिविष्टानि। *जम्बू० १७०*।

उक्कडुआसणिए– उत्कुटुकासनं-पीठादौ पुतालगनेनोप-वेशनरूपमभिग्रहतो यस्यास्ति स। *स्था० २९८*।

उकड्ढग– अपकर्षकः, यो गेहाद्ग्रहणं निष्काशयति, चौरान् वा आकार्य परगृहाणि मोषयति, चौरपृष्ठवहो वा। *प्रश्न० ४७*।

उक्कड्ढिअं– उत्कर्षितम्-उत्पाटितम्। *पिण्ड० ११६*।

उक्कत्थणं– उत्कत्थनं-त्वचोऽपनयनम्। *प्रश्न० २४*।

उक्कणअणाभोगकिरिया– उत्क्रमणानाभोगक्रिया, लङ्घनप्ल-वनधावनासमीक्ष्यगमनागमनादिक्रिया। *आव० ६१४*।

उक्करं– उत्करं-क्षेत्रागवादि प्रति अविद्यमानराजदेयद्रव्यम्। *विपा० ६३*।

उक्करियाभेदे– उत्कटिकाभेदः-द्रव्यस्य पञ्चमभेदः। *प्रज्ञा० २६७*।

उक्करिसियखग्गो– आकृष्टखड्गः। *आव० ५५४*।

उक्कलंबिज्जिउं– उल्लम्बयितुम्। *आव० २२०*।

उक्कलंबेइ– अवलम्बयति। *आव० ४२६*। उद्बध्नाति। *निशी० ५२* आ।

उक्कलंबेति– उब्बंधेति। *निशी० ११८* अ।

उक्कल– उत्कलः-ऊर्ध्वं धर्मकलाया यत्तत्। *प्रश्न० २७*। उत्कलः-प्रदेशविशेषः, नैमित्तिकविशेषः। *आचा० ३५९*। नैमित्तिकः। *आचा० ३५९*। त्रीन्द्रियजीवभेदः। *उत्त० ६९५*।

उक्कलति– उत्कलति-उच्छलति। *उत्त० १२४*।

उक्कला– उत्कटा, उत्कला वा। *स्था० ३४३*।

उक्कलिया– उत्कलिका-लघुतरः समुदायः। *औप० ५७*। *भग० ४६३*। त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३२*। उत्साहः। *सूर्य० २९६*। लघुतरः समुदायः। *भग० ११५*।

उक्कलियाअंडं– वक्खोइलियाअंडगं। *दशवै० १२१*।

उक्कलियावाउ– उत्कलिकावातः, बादरवायुकायभेदः। *आचा० ७४*।

उक्कलियावाए– उत्कलिकाभिः प्रचुरतराभिः सम्मिश्रितो यो वातः उत्कलिकावातः। *प्रज्ञा० ३०*। *जीवा० २९*।

उक्कलियावाया– उत्कलिकावातः, उत्कलिकाभिर्यो वाति सः। *भग० १९६*। ये स्थित्वा स्थित्वा पुनर्वान्ति। *उत्त० ६९४*।

उक्कस– उत्कर्षः-औन्नत्यम्। *दशवै० १८९*।

उक्कसणं– उदगंतेण प्रेरणं। *निशी० ६३* आ।

उक्कसाई– उत्कषायी-प्रबलकषायी। *उत्त० ४२०*।

उक्कसिस्सामि– लघु सदपरशकलगनत उत्कर्षयिष्यामि। *आचा० २४४*।

उक्कसे– उत्कर्षेत्-उत्क्रामयेत्। *आचा० २९३*।

उक्कस्स– उत्कर्षन्तीत्युत्कर्षाः-उत्कर्षवन्तः, उत्कृष्टस-ङ्ख्याः, परमानन्ताः। *स्था० ३५*।

उक्का– उल्का-चुडुली। *जीवा० २९*। ये मूलाग्नितो वित्रुट्य वित्रुट्याग्निकणाः प्रसर्पन्ति ते। *जीवा० १२४*। महद्रेखा प्रकाशकारिणी, रेखारहितो विस्फुलिङ्गः प्रभाकरोवा। *आव० ७५२*। दीपिका। *नन्दी० ८४*। चुड्डली। *आव० ५६६*। निपतन् रेखायुक्तो ज्योतिष्पिण्डः। *ओघ० २०५*। स्वदेहवर्णा रेखां कुर्वन्ती या पतति सा रेखाविरहिता वा उद्द्योतं कुर्वन्ती पतति सा। *आव० ७६५*। गगनाग्निज्वाला। *जम्बू० ५२*। चुड्डली। *प्रज्ञा० २९*। पगासविरहितो य, महंतरेहा पहा। *निशी० ७५* आ। सदेहवण्णं रेहं करेंती जा पडइ सा उक्का, रेहविरहितावाउज्जोवं करेंती पडती सा वि उक्का। *निशी० ७०* अ। अग्निपिण्डाः। *स्था० ४२०*। आकाशजा।

स्था० ४७६।

उक्कापडणं– उल्कापातनम्, उल्कापातः। *आव० ७३५।*

उक्कापाए– उल्कापातः-व्योम्नि संमूर्च्छितज्वलननिपतन-रूपः। *जीवा० २८३।*

उक्कापाय– उल्कापातः, सरेखः सोद्द्योतो वा तारकस्येव पातः। *भग० १९६।*

उक्कामयंति– उत्क्रामयन्ति-अपनयति। *दशवै० ८६।*

उक्कामुहदीवे– अन्तरदवीपनाम। *स्था० २२६।*

उक्कामुहा– उल्कामुखनामैकविंशतितमोऽन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा० ५०।* अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा० १४४।*

उक्कारियभेय– उत्कारिकाभेदः, एरण्डबीजानामिव यो भेदः। *भग० २२४।*

उक्कालिए– उत्कालिकं-कालवेलावर्जं पठ्यते तदूर्ध्वं कालिकादित्युत्कालिकं-दशकालिकादि। *स्था० ५२।* कालवेलावर्जं पठ्यते तत्। *नन्दी० २०४।*

उक्कावाते– उल्का-आकाशजा तस्याः पातः उल्कापातः। *स्था० ४७६।* व्योमसम्मूर्च्छितज्वलनपतनरूपः प्रसिद्ध एव। *अनुयो० १२१।*

उक्कासे– उत्कर्षणं, उत्काशनं वा। *भग० ५७२।*

उक्किट्टणा– सूत्रार्थकथनम्। *बृह० २५अ।* उत्की-र्त्तनासंशब्दना। *आव० ५६।*

उक्किट्ठ– उत्कृष्टं-उत्कृष्टिनादः, आनन्दमहाध्वनिः। *प्रश्न० ४९।* प्रधानां कर्षणनिषेधाद्वा। *भग० ५४४।* उत्कृष्टिः-आनन्दध्वनिः। *जम्बू० २००।* उत्कृष्टिः-आनन्दमहा-ध्वनिः। *भग० ११५।* उत्कृष्टः-उत्कर्षवती। *भग० १६७।* उत्कृष्टम्-कालिङ्गालाबुत्रपुषफलादीनां शस्त्रकृतानि श्लक्ष्ण-खण्डानि चिञ्चिणिकादिपत्रसमुदायो वा उदूखलकण्डितः। *दशवै० १७०।* दोद्धियकालिंगादीणि उक्खले छुब्भंति। *दशवै० १७९।*

उक्किट्ठकलयलो– उत्कृष्टकलकलः। *आव० १७३।*

उक्किट्ठरस– उत्कृष्टरसः-प्रचुररसोपेतः। *पिण्ड० १४९।*

उक्किट्ठि– उत्कृष्टिः-आनन्दमहाध्वनिः। *औप० ५९।* *राज० १२२।*

उक्किट्ठिसीहनादो– उत्कृष्टिसिंहनादः। *आव० ३४५।*

उक्किट्ठी– उत्कृष्टिः। *आव० ४१३।* उत्कर्षवशः। *सूर्य० २८१।*

उक्किण्णं– उत्कीर्णं-भुवमुत्कीर्य पालीरूपम्। *सम०१३७।*

उक्किण्णंतरा– उत्कीर्णान्तराः, उत्कीर्णमन्तरं यासां खातपरिखानां ताः। *जीवा० १५९।*

उक्किण्ण– उत्कीर्णः-गुण्डितः। *प्रश्न० ५९।* उत्कीर्णमि-वोत्कीर्णं, अतीवव्यक्तम्। *जम्बू० ७६।* आकीर्णः। *प्रश्न० २५। प्रज्ञा० ५६१। ओघ० ५४।*

उक्कित्तणं– उत्कीर्त्तनम्, सामान्येन संशब्दनम्। *आव० ६०४।*

उक्कित्तणा– उत्कीर्त्तना, प्राबल्येन-परया भक्त्या संशब्दना। *आव० ४९२।*

उक्कित्तिया– उत्कीर्त्तिता-कथिता। *सूर्य० २९६।*

उक्किण्णं– अतीवव्यक्तम्। *प्रज्ञा० ८५।*

उक्किण्णंतर– उत्कीर्णमन्तरं यासां खातपरिखाणां ता उत्कीर्णानन्तराः। *प्रज्ञा० ८५।*

उक्किण्ण– उत्कीर्ण-शिलादिषु नामकादि। *दशवै० ८६।*

उक्खिरणगाइं– फलखाद्यककपर्दकादिविकिरणानि। *बृह० १५५अ।*

उक्किरिज्जमाण– क्षुरिकादिभिः कोष्ठादिपुटानां कोष्ठादि-द्रव्याणां वा उत्कीर्यमाणः। *जीवा० १९२।* उत्कीर्यमाणं-क्षुरिकादिभिः कोष्ठादिपुटानां कोष्ठादिद्रव्याणां वा उल्लिख्य-मानः। *जम्बू० ३६।*

उक्किलंतो– उत्कलन्। *आव० २०७।*

उक्कीरमाण– उत्किरन्-वेधनकेन मध्याद्विकिरन्। *अनुयो० २२३।*

उक्कुंचणं– उत्कुञ्चनं, ऊर्ध्वं शूलाद्यारोपणार्थं कुञ्चनम्। *सूत्र० ३२९।*

उक्कुज्जिय– ऊर्ध्वकायमुन्नम्य। *आचा० ३४४।*

उक्कुट्ठहत्थो– उक्कुंट्ठ-सचित्तवणस्सतिपत्तंकुरुफलाणि वा उक्खलेछुब्भति, तेहिं हत्थो लित्तो एस। *निशी० ३८।*

उक्कुट्ठि– उत्कृष्टिः-हर्षविशेषप्रेरितः। *आव० २३१।*

उक्कुट्ठिकलयलो– उत्कृष्टिकलकलः। *आव० १७५।*

उक्कुट्ठिसीहणायं– उत्कृष्टिसिंहनादः, हर्षविशेषप्रेरितो ध्वनि-विशेषः। *आव० २३१।*

उक्कुट्ठी– पुक्कारकरणं। *निशी० ६१आ।*

उक्कुट्ठो– कचित्तवणस्सतिपत्तंकुरुफलाणि वा उक्खले छुब्भंति। *निशी० ३८अ।*

उक्कुड– उत्कुटुकासनः। *आव० ६४८। स्था० २९९।*

उक्कुडुअ– उत्कुटुकम्, यथास्थानमनिविष्टम्। *भग० ३०८*। *ओघ० १०७*। मुक्तासनः। *उत्त० ५५*। आधारे पुतालगन-रूपम्। *भग० १२५*। *आचा० ४२४*।

उक्कुडुगासण– उत्कुटुकासनम्, कायक्लेशभेदः। *दशवै० २८*।

उक्कुडुती– उत्कुटुका-आसनालग्नपुतः पादाभ्यामवस्थित उत्कुटुकस्तस्य या सा। *स्था० ३०२*।

उक्कुडुयभाणवत्थे– उत्कुटुकः सन् भाजनवस्त्राणि-गोच्छ-कादीनि प्रत्युपेक्षयेत् यतो वस्त्रप्रत्युपेक्षणा उत्कुटुकेनैव कर्त्तव्या। *ओघ० ११७*।

उक्कुडुयासणिए– कायक्लेशभेदः। *भग० ९२१*। कायक्लेश-द्वितीयभेदः। *स्था० ३९७*।

उक्कुद्दइ– उत्कूर्दते-ऊर्ध्वं गच्छति। *उत्त० ५५१*।

उक्कुरुडिका– तृणभस्मगोमयाङ्गारादिमीलकः। *उत्त० ३५९*।

उक्कुरुडिया– उत्कुरुटकः। *आव० १९४*।

उक्कूइय– उत्कूजित-कृताव्यक्तमहाध्वनिः। *प्रश्न० २०*।

उक्कूजियं– उत्कूजितं-अव्यक्तमहाध्वनिकरणम्। *प्रश्न० १६०*।

उक्कूलं– उत्कूलयति-सन्मार्गादपध्वंसयति कूलाद्वान्याय-सरित्प्रवाहतटादूर्ध्वं यत्तत् उत्कूलम्। द्वितीयाधर्मद्वारस्य पञ्चदशं नाम। *प्रश्न० २६*।

उक्केरो– उत्केरः-समूहः। *ओघ० ११७, ११६, २१३*।

उक्कोचा– उत्कोचा-उत्कोटा, लञ्चा। *औप० २*।

उक्कोड– लंचा। *निशी० ४५* अ।

उक्कोडा– उत्कोटा-उत्कोचा-लञ्चा। *विपा० ३९*। उत्कोचा, लञ्चा। *औप० २*।

उक्कोडालंच– उत्कोटालंचयोः-द्रव्यस्य बहुत्वेतरादिभिर्लोके प्रतीतभेदयोः। *प्रश्न० ५६*।

उक्कोडिय– उत्कोटा-लञ्चा तया चरन्ति उत्कोटिकाः। *राज० २*।

उक्कोस– उत्कृष्टतः-अतिशयेन। *ओघ० २२७*। उत्कर्षतीति उत्कर्षः, उत्कृष्टः। *सूर्य० १३*। जात्यादिभिर्मदस्थानैर्लघुप्र-कृतिं पुरुषमुत्कर्षयतीति उत्कर्षकः-मानः। *सूत्र० ६९*। उत्क्रोशः-कुररः। *प्रश्न० ८*। उत्कृष्टम्-कमनीयम्। *दशवै० २११*।

उक्कोसए– उत्कर्ष एव उत्कर्षका उत्कृष्टः। *सूर्य० ११*। उत्कर्षिका उत्कृष्टा। *सूर्य० १४*।

उक्कोसए कुंभे– उत्कृष्टकः कुम्भः-आढकशतनिष्पन्नः। *अनुयो० १५१*।

उक्कोसकसिणं– सतसहस्समूल्लं। *निशी० १३९* आ।

उक्कोसगमयपत्तो– उत्कर्षेण मदं प्राप्तः उत्कर्षमदप्राप्तः। *जीवा० ३५१*।

उक्कोसतिसामासा– जेट्ठो आसाढो य। *निशी० १२३*।

उक्कोसतिसामासे– उत्कृष्टतृण्मासः-उत्कृष्टा तृड् मासयोः-ज्येष्ठाषाढयोर्यस्मिन् काले सः। *ओघ० २१०*।

उक्कोससंथरणं– उत्कृष्टं संस्तरणं-भिक्षार्थमवतीर्णास्ततः पर्याप्तं हिंडित्वा यावत् तृतीयपौरुष्या आदौ स्वाध्यायप्रस्था-पनवेला तावत् सन्निवर्त्तते एतद्, अथवा तृतीयपौरुष्या आदौ स्वाध्यायप्रस्थापनवेलावान् सन्निवर्त्तते एतद्। *व्यव० १६३* आ।

उक्कोसा– उत्कर्षः-प्रकर्षः तद्योगादुत्कर्षा उत्कर्षतीति वा उत्कर्षा-उत्कृष्टा। *स्था० १३९*।

उक्खं– उक्षं-सम्बन्धो-विषयविषयीभावलक्षणः। *नन्दी० ७१*। सम्बन्धनं-अन्यजनकभावलक्षणम्। *स्था० ५०*।

उक्खंदं– उत्क्रन्दम्। *आव० १७५*। अवस्कन्दः। *आव० ३००*।

उक्खंधो– अवस्कन्दः, छलेन परबलमर्दनम्। *प्रश्न० ३८*।

उक्खंपिर– उत्कण्ठित। (*संस्ता०*)।

उक्खड्डमड्डा– देशीपदं, पुनःपुनःशब्दार्थे। *व्यव० ६५* आ।

उक्खणिहिति– उत्खनीः। *आव० २२६*।

उक्खलं– स्थानविशेषः। *निशी० ८३* आ।

उक्खलि– उखा-स्थाली। *पिण्ड० ८४*।

उक्खिओ– सेवितः। *मरण०*।

उक्खित्त– उत्क्षिप्तं, गेयविशेषः। *जम्बू० ४१२*। उत्पा-टितम्। *विपा० ४७*। भाजनगतम्। *ओघ० ८८*।

उक्खित्तचरए– उत्क्षिप्तं-स्वप्रयोजनाय पाकभाजनादुद्धृतं तदर्थमभिग्रहविशेषाच्चरति-तद् गवेषणाय गच्छतीति उत्क्षिप्तचरकः। *स्था० २९८*।

उक्खित्तचरगा– पिण्डैषणाभेदविशेषः। *निशी० १२* अ।

उक्खित्तचरगो– उत्क्षिप्तचरकः-उत्क्षिप्तं-पाकपिठरादुद्धृ-तमेव चरति-गवेषयति यः सः। *प्रश्न० १०६*।

उक्खित्तणा– ज्ञातायां प्रथममध्ययनम्। *आव० ६५३।* षष्ठाङ्गे प्रथमं ज्ञातम्। *उत्त० ६१४।*

उक्खित्तणाए– षष्ठाङ्गे प्रथमज्ञातः। *सम० ३६।* ज्ञातायां प्रथममध्ययनम्। *आव० ६५३।*

उक्खित्तणिक्खित्तचरगा– पिण्डैषणाभेदविशेषः। *निशी० १२अ।*

उक्खित्तपुव्वा– उत्क्षिप्तपूर्वाः-तेषामादौ दर्शिता यथाऽस्यां वसत यूयमिति। *आचा० ३६१।*

उक्खित्तय– उत्क्षिप्तं-प्रथमतः समारभ्यमाणम्। *जीवा० २४७।*

उक्खित्तविवेगो– उत्क्षिप्तविवेकः। *आव० ८५४।*

उक्खित्ता– उत्क्षिताः-सिक्ताः। *जम्बू० २२१।*

उक्खित्तायं– उक्षिप्तकं-प्रथमतः समारभ्यमाणम्। *जीवा० १९४।*

उक्खित्तो– उत्क्षिप्तः-कृतः स्थापितः। *आव० ४३३।*

उक्खिविया– उत्क्षिप्ता। *आव० ३७०।*

उक्खु– वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२।*

उक्खुलनियत्था– उखुलनिवसिता, विपर्यस्तवस्त्रा। *बृह० २५५अ।*

उक्खेव– उत्क्षेपः-हस्तोत्पाटनम्। *व्यव० २३२आ।*

उक्खेवओ– उत्क्षेपः-प्रारम्भवाक्यम्। *निर० २३।*

उक्खेवग– उत्क्षेपकः-वंशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यदण्डमध्य-भागः। *भग० ४६८।* शिष्याणामुत्क्षेपकः। *व्यव० २३२।*

उक्खेवण– उत्क्षेपकः-वंशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यो दण्डमध्य-भागः। *ज्ञाता० ४८।*

उक्खेवो– उत्क्षेपः-प्रस्तावना। *विपा० ५५।* क्षेपणम्। *ओघ० ११०।*

उक्खो– परिधानवस्त्रैकदेशः। *बृह० १७७अ।* परिधाणं, वत्थस्स अब्भिंतरचूलाए उवरि कण्णो णाभिहिज्ज उक्खो भण्णति। *निशी० १५४अ।*

उखल– उदूखला। *प्रश्न० ८।*

उखलियं– पुडियाकारं। *निशी० १आ।*

उखली– उदूखली। *आव० ८५५।*

उखा– स्थाली। *भग० ३२६।*

उखुत्तो– णिसण्णो। *निशी० ७७अ।*

उगहणंतगो– योनिद्वाररक्षार्थकं वस्त्रम्। *ओघ० २०९।*

उग्गं– उग्रम्-अप्रधृष्यम्। *सूर्य० ४।* *भग० १२।* *ज्ञाता० ९।*

उग्ग– उग्रः-क्षत्रियपुरुषेण शूद्रस्त्रियां जातः। *आचा० ८।* आदिदेवावस्थापिताऽऽरक्षकवंशजातः। *भग० ११५।* आरक्षकः। *आव० १२८।* आदिदेवेन य आरक्षकत्वेन नियुक्तस्तद्वंशजश्र्च। *औप० २६।* शुभाध्यवसायप्रबलः। *आव० ८०२।* आरक्षिकाः। *आचा० ३२७।* आदिराजेना-ऽऽरक्षकत्वेन ये व्यवस्थापितास्तद्वंश्यः। *स्था० ३५८।* भगवतो नाभेयस्य राज्यकाले ये आरक्षका आसन्। *स्था० ११४।* आरक्षकादयः। *उत्त० ४१८।* आदिदेवेनारक्षकत्वे नियुक्तास्तद्वंश्याः। *भग० ४८१।*

उग्गकुलं– उग्रकुलम्। *आव० १७९।*

उग्गच्छ– उद्गत्य-क्रमेण तत्रोद्गमनं कृत्वा। *भग० २०७।*

उग्गतवा– उग्रतपाः-अप्रधृष्यानशनादिवान्। *सूर्य० ४।* अष्टमादि। *स्था० २३३।* उग्रं-उत्कटं दारुणं वा कर्मशत्रून् प्रति तपः-अनशनादिः। *उत्त० ३६५।*

उग्गतवित्ती– उग्गते आदिच्चे वित्ती जस्स सो, आदिच्च मुत्तीए जस्स वित्ती सो उग्गतवित्ती। *निशी० ३०८।*

उग्गतेय– उग्रतेजाः-तीव्रप्रभावः, तीव्रविषः। *प्रश्न० १०७।*

उग्गपुत्तो– उग्रपुत्रः, क्षत्रियविशेषजातीयः। *सूत्र० २३६।*

उग्गम– उद्गमः-षोडशविध आधाकर्मादिदोषः। *प्रश्न० १५५।* आधाकर्मादिदोषविशेषः। *आव० ५७६।* उद्गमनमुद्गमः-पिण्डादेः प्रभवः। *स्था० १५९।*

उग्गमइ– आगच्छति। *आव० ४२२।*

उग्गमकोडी– उद्गमकोटिः-उद्गमदोषरूपा। *पिण्ड०१९७।*

उग्गमितं– उद्गमितम्। *आव० ८५९।*

उग्गमोवघाते– उद्गमोपघातः-उद्गमदोषैराधाकर्माभिः-षोडशप्रकारैर्भक्तपानोपकरणालयानामशुद्धता। *स्था० ३२०।*

उग्गय– उद्गतः-निष्काशितः। *औप० ६८।* ऊर्ध्वं गताः उद्गताः-व्यवस्थिताः। *ज्ञाता० १४।* च्यूता। *ज्ञाता० २३।* उद्गता-संस्थिता। *जम्बू० ७१।* निविष्टा। *भग० ४७८।* उप-रिवर्त्तिनी। *जम्बू० २९२।*

उग्गयमुत्ती– सूर्योद्गमात् परं प्रतिश्रयावग्रहाद् बहिः-प्रचा-रवच्छरीरत्वात्। *बृह० १७९अ।* मूर्त्तिः-शरीरं, तं जस्स प्रतिश्रयावग्रहात् उदिते आइच्चे वृत्तिनिमित्तं

प्रचारं करोति सो। *निशी० ३०८* आ।

उग्गयवित्ती– उग्गय इति वा उदओत्ति, वर्त्तनं वृत्तिः, उग्गयए सूरिए जस्स वित्ती सो। *निशी० ३०९* आ।

उग्गवई– उग्रवती, रात्रितिथिनाम। *जम्बू० ४९१*।

उग्गवती– उग्रवती, रात्रितिथिनाम। *सूर्य० १४८*।

उग्गविसं– दुर्जरविषम्। *भग० ६७२*।

उग्गविसा– उग्रं विषं येषां ते उग्रविषाः। *प्रज्ञा० ४६*। उरःपरिसर्पविशेषः। *जीवा० ३९*।

उग्गसेण– उग्रसेनः, द्वारिकायां राजा। *आव० ९४*। नृपविशेषः। *बृह० ३०* अ। मथुरानृपतिः, कंसपिता। *उत्त० ४९०*। राजमुख्यः। *अन्त० २*।

उग्गहं– योनिद्वारं तद्वस्त्रमपि। *बृह० २५१* आ।

उग्गह– अवग्रहः। *ओघ० १५२*। धर्मलाभदानम्। *दशवै० १६७*। आश्रयः। *विपा० ३३*। जोणिदुवारस्स सामइकी संज्ञा उग्गह इति। *निशी० १७९* आ। उपग्रहम्-अवष्टम्भम्। *ओघ० १५४*। पतद्ग्रहम्। *ओघ० १७५*। प्रथमपरिच्छेदनं अशेषविशेषनिरपेक्षानिर्देश्यरूपादेरवग्रहणम्। *स्था० ५१*। अवगृह्यते-स्वामिना स्वीक्रियते यः सोऽवग्रहः। *भग० ७००*। सामान्यार्थस्यअशेषविशेषनिरपेक्षस्यानिर्देश्यस्य रूपादेः अव इति प्रथमतो ग्रहणं-परिच्छेदनमवग्रहः। *भग० ३४४*। अवग्रहः-अव्यक्तरूपः परिच्छेदः। *प्रज्ञा० ३११*। अवधारणम्। सुन्दरा एत इत्यवधारणम्। *उत्त० १४५*। अवग्रहः-परिग्रहः। *सूत्र० १७९*। अविवक्षिताशेषस्य सामान्यरूप-स्यानिर्देश्यस्य रूपादेरवग्रहणमवग्रहः। *राज० १३०*। पडिग्गहो। *निशी० ११६* अ। अवग्रहः-आभवन-व्यवहारः। *व्यव० ९३* अ। अवग्रहणमवग्रहः-अनिर्देश्य-सामान्यमात्ररूपार्थग्रहणम्। *नन्दी० १६८*। आवासः। *निर० २*। अवग्रहणं-सम्बध्यमानस्य शब्दादिरूपस्यार्थस्याव्यक्त-रूपः परिच्छेदः। *नन्दी० १६८*।

उग्गहजायणे– अवग्रहयाञ्चा-वसतिस्वाम्यनुज्ञा। *आव० ६५८*।

उग्गहणंतयं– योनिद्वाररक्षार्थकं वस्त्रम्। *बृह० २५१* आ।

उग्गहणमेधावी– अवग्रहमेधावी, सूत्रार्थग्रहणपटुप्रज्ञावान् । *बृह० १२५* आ। अवगृह्यत इत्यवग्रहो-वसतिस्तत्प्रतिमाः अभिग्रहाः अवग्रहप्रतिमाः। *स्था० ३८७*। आचाराङ्गस्य-षोडशमध्ययनम्। *उत्त० ६१७*। *आचा० ४०२*। *सम० ४४*। आचारप्रकल्पे द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य सप्तममध्ययनम्। *प्रश्न० १४५*। आचारप्रकल्पस्य षोडशो भेदः। *आव० ६६०*।

उग्गहिआ– अवगृहीता-पञ्चमी पिण्डैषणा। *आव०५७२*।

उग्गहिए– अवगृहीतं-परिवेषणार्थमुत्पाटितं। *स्था० ४६५*।

उग्गहियं– अवगृहीतम्। *आव० २८८*। बद्धः। *भग०४५९*। अवगृह्णाति-आदत्ते हस्तेन दायस्तद्। *स्था० १४८*। अवगृहीता-भोजनकाले शरावादिषूपहृतमेव भोजनजातं यत्ततो गृह्णातः। *स्था० ३८६*। यद् अवगृह्णाति यच्च संहरति यच्च आस्यके प्रक्षिपति। *व्यव० ३५४* अ। परिवेषणार्थमुत्पाटितम्। *औप० ३७*। अवग्रहोऽस्यास्तीति अवग्रहिकं-वसतिपीठफलकादिकं। औपग्रहिकं-दण्डका-दिकमुपधिजातम्। *औप० ३७*।

उग्गहियए– अवगृहीतकः-बद्धः। *राज० ४४*।

उग्गहिया– जं परिवेसगेण परिवेसणाए परस्स कडुच्छुतादिणा उग्गहियं आणियंति वुत्तं भवति, तेण य तं पडिसिद्धं तं तहु-क्खित्तं चेव साधुस्स देति एसा उवग्गहिया। *निशी० १२* अ।

उग्गा– आरक्षिकाः। *बृह० १५१* आ। कुलार्यप्रथमभेदः। *प्रज्ञा० ५६*। खाद्यविशेषः। *जम्बू० ११८*। आदिदेवाव-स्थापिताः। *राज० १२१*। प्रभुणा आरक्षकत्वेन नियुक्तास्ते उग्राः। *जम्बू० १४५*।

उग्गाढो– प्रगुणः। *बृह० २९७* अ।

उग्गारो– उद्गिरणं उग्गालो। *निशी० ३१५* अ।

उग्गालिदासो– दासविशेषः। *निशी० ४०* अ।

उग्गाले– उद्गालयेत्-श्लेश्मनिष्ठीवनं कुर्यात्। *ओघ०१८६*।

उग्गालो– उद्गिरणं उग्गालो। *निशी० ३१५* अ।

उग्गाहिऊणं– उद्ग्राहितेन-पात्रबन्धबद्धेन पात्रकेण। *ओघ० १२२*।

उग्गाहितं– उद्ग्राहितम्-गृहीतम्। *आव० ६१८*। उत्क्षिप्तं, उपकरणम्। *ओघ० ७२*।

उग्गाहिमं– अवगाहिमं, पक्वान्नं खण्डखाद्यादि। *प्रश्न० १६३*।

उग्गाहिय– उद्ग्राहितं-गृहीतं पात्रकम्। *ओघ० १४९*।

उग्गाहे– उद्ग्राहयति-सङ्घट्टितेनास्ते। *ओघ० १८४*।

उग्गाहेउं– उद्ग्राह्य-संयन्त्रयित्वा। *ओघ० ७४*।

उग्गाहेऊण– उद्ग्राह्य। *उत्त० १००*।

उग्गिरिऊणं– उद्गीर्य। *आव० २०८*।

उग्गुंडिया– उद्धूलितम्। *भग० ३०८*।

उग्गोवणा– उद्गोपनम्-विवक्षितस्य पदार्थस्य जनप्रकाशचिकीर्षा। *पिण्ड० २९*।

उग्गोवेति– उप्पाएति। *निशी० २३४* अ।

उग्घडयं– अनुवर्त्तनम्, अनुकरणम्। *आव० ५१५*।

उग्घाइए– उद्घाइए-उद्घातितं, विनाशितं विनाशयिष्यमाणत्वेनोपचारात्। *स्था० ५०२*।

उग्घाइम– उद्घातिमम्-उद्घातो-भागपातस्तेन निर्वृत्तम्, लघु। *स्था० १६३*।

उग्घाड– उद्घाटं-अदत्तार्गलमीषत्स्थगितं वा। *आव० ५७५*।

उग्घाडकवाडउग्घाडणा– उद्घाटकपाटोद्घाटना, उद्घाटम्-अदत्तार्गलमीषत्स्थगितं वा कपाटं तस्योद्घाटनं-सुतरां प्रेरणम् तदेव। श्वानवत्सदारकसंघट्टना। *आव० ५७५*।

उग्घाडणकवाड– उद्घाटकपाटं-अनर्गलितकपाटं। *ओघ० १६६*।

उग्घाडाए पोरिसिए– उद्घाटपौरुष्याम्। *आव० ८३८*।

उग्घाडितो– उद्घाटितः। *आव० ३१७, ३१८*।

उग्घाडिया– उद्घाटिताः। *आव० २९२*।

उग्घात– उद्घातः-भागपातः। *स्था० १६३, ३२५*। लघूकरणलक्षणः। *स्था० ३११*।

उग्घातिते– उद्घातः-भागपातो यत्रास्ति तदुद्घातिकं, लघ्वित्यर्थः। *स्था० ३२५*।

उग्घाय– आचाराङ्गस्य षड्विंशतितममध्ययनम्। *उत्त० ६१७*। आचारप्रकल्पस्य षड्विंशतितमो भेदः। *आव० ६६०*।

उग्घायाइं– लघूनि। *बृह० १४५* अ।

उग्घोसणाट्ठाणीया– उद्घोषणास्थानीयाः। *आव० ३८५*।

उग्रतेजाः– आधाकर्मण एव अभोज्यतायां पदातिः। *पिण्ड० ७१*।

उग्रसेनः– भोगराजा, राजीमत्याः पिता। *दशवै० ९७*।

उचितः– जितः, अभ्यस्तो वा। *आव० ५९४*।

उचूलयालगं– अधःशिरस उपरि पादस्य कूपजले बोलणाकर्षणम्। *विपा० ७२*।

उच्चं– उच्चः-पूज्यः। *भग० १६४*।

उच्चंतए– उच्चन्तकः-दन्तरागः। *प्रज्ञा० ३६०*। उच्चंतगोदन्तरागः। *जम्बू० ३३*।

उच्चंते– उच्चंतगो-दन्तरागः। *राज० ३२*।

उच्चंपिय– संघातितं। (*तन्दु०*)

उच्चछंदो– उच्चछन्दः-उच्चोमहानात्मोकर्षणप्रवणश्छन्दः-अभिप्रायो यस्य सः। *प्रश्न० ३१*।

उच्चता– उच्चतया-निदेजत्वेन। अप्रातिहारिकतया। *बृह० २१९* अ।

उच्चतायभयगो– तुमे ममं एच्चिरं कालं कम्मं कायव्वं जं जं अहं भणामि, एत्तियं तेण धणं दाहामित्ति। *निशी० ४४*।

उच्चत्तं– उच्चत्वं। *जम्बू० २०*। अ०नु० *१७१*। उच्चत्वं उत्सेधः। *जम्बू० ३२१*। उच्छ्रयः। *स्था० ३९*। ऊद्ध्वस्थितस्यैकमपरं तिर्यक्स्थितस्यान्यत् गुणोन्नतिरूपम्। *स्था० ३६*।

उच्चत्तछाया– उच्चत्वया, छायायाः षष्ठो भेदः। *सूर्य० ९५*।

उच्चत्तभयते– उच्चताभृतकः–मूल्यकालनियमं कृत्वा यो नियतं यथावसरं कर्म्म कार्यते स। *स्था० २०३*।

उच्चत्तविसाणो– उच्चविषाणः उच्चशृङ्गः। *उत्त० ३०३*। उत्तमविषाणः। *आव० ७१९*।

उच्चयबंधे– उच्चयः–ऊद्ध्वं चयनं–राशीकरणं तद्रूपो बन्धः उच्चयबन्धः। *भग० ३९५*।

उच्चलिओ– उच्चलितः। *आव० २८५*। *आव० ३१७*।

उच्चा– ऊद्ध्वं चिता। उपरिस्थितत्वेनं वा। *उत्त० ११०*।

उच्चाओ– उच्चातो–श्रान्तः। *ओघ० १७७*। *निशी० १८८* अ।

उच्चागोए– उच्चैर्गोत्रं–यदुदयवशादुत्तमजातिकुलबलतपोरूपै श्वर्य श्रुतसत्काराभ्युत्थानासनप्रदानाञ्जलिपग्रहादिसम्भवस्तत्। *प्रज्ञा० ४७५*। मानसत्कारार्हः। *आचा० ११६*।

उच्चागोत्ते– उच्चैर्गोत्रः–उच्चैः–लक्ष्म्यादिक्षयेऽपि पूज्यतया गोत्रं–कुलमस्येति। *उत्त० १८८*।

उच्चारे– उच्चारः–विष्टा। *भग० ८७*। संज्ञा। *बृह० ३०६* अ।

सण्णा। *निशी० १४३* आ। पुरीषः। *आव० ५६४, ६१६, ७८१। उत्त० ५१७।* जं० *१४८। स्था० ३४३।* शरीरादुत्प्राबल्येन च्यवते–अपयाति चरतीति वा उच्चारः–विष्ठा। *आचा० ४०१।* पुरीपयरिष्ठापनम्। *उत्त० ३५७।* गृहस्थैः सह पुरीषव्युत्सर्गं कुर्वन्ति, श्लेषम्णः परिष्ठा-पनमङ्गणे कुर्वन्ति वा। *ओघ० ५६।*

उच्चारभूमी– उच्चारभूमिः–पुरीषभूमिः। *आव० ७८४।* उच्चारप्रश्रवणविधिसप्तैककः, सप्तसप्तक्यां तृतीयस्य भेदः। *स्था० ३८७।*

उच्चालइय– ऊर्ध्वमुत्क्षिप्य भूमौ। *आचा० ३११।* उच्चालयितारम्–अपनेतारम्। *आचा० १६९।*

उच्चालियंमि– उच्चालिते–उत्पाटिते। *ओघ० २२०।*

उच्चावइत्ता– उच्चैः कृत्वा। उत्पाट्य। *प्रज्ञा० ३५७।*

उच्चावए– उच्चावचः–उत्तमाधमः। *जीवा० ३७४।*

उचावतं– उच्चावचम्–असमञ्जसं। *स्था० २४७।*

उच्चावयं– उच्चावचं–उच्चं नाममैवं कुर्वन्तु, अवचं नाम कुर्वन्तु। *आचा० ३६३।* शोभनाशोभनम्। *जीवा० १६६।* उच्चावचम्। *दशवै० १६६।* अनुकूलप्रतिकूलम्, असमञ्जसं वा। *भग० १०१।*

उच्चावया– अनुकूलप्रतिकूला, असमञ्जसा। *अन्त० १८।* उच्चावचा–गुरुलघवो नानारूपा वा। *सूत्र० २०७।* ऊर्द्धं चिता उच्चा, शीतातपनिवारकत्वादिगुणैः शय्यान्तरो–परिस्थितत्वेन वा उच्चाः, तद्विपरीतास्त्ववचाः, अनयोर्द्वन्द्वे उच्चावचाः, नानाप्रकारा व। *उत्त० ११०।* शोभनाशोभन-भेदेन नानाप्रकाराः। *दशवै० १८४।* असमञ्जसा। *भग० ६८३। ज्ञाता० २००।*

उच्चावयाइं– उच्चावचानि–विकृष्टाविकृष्टतया नानाविधानि उच्चव्रतानि वा शेषव्रतापेक्षया महाव्रतानि। *उत्त० ३६३।*

उच्चिअ– उच्चितं, उच्चिताकरणं, पादस्योत्पाटनम्। *जम्बू० २६५।*

उच्चिक्खित्तं– उच्चोत्क्षिप्तम्। *पिण्ड० ११०।*

उच्चिट्ठ– कांसारादिभक्षणेनोच्छिष्टे। *बृह० २१५अ।*

उच्चिट्ठए– उच्छिष्टम्–भ्रष्टम्। *दशवै० १०४।*

उच्चिणिउं– उच्चेतुं–गृहीतुम्। *आव० ८१९।*

उच्चियपउमं– उच्चितपद्मं। *आव० १७०।*

उच्चुण्णेउं– अवचूर्ण्य, गुण्डयित्वा। *ओघ० १४३।*

उच्चूलं– अवचूलं–टगकन्यस्ताधोमुखकूर्चकः। *औप० ६३।*

उच्चेंती– उच्चिन्वती–अवचयं कुर्वती। *दशवै० ४१।*

उच्चैःश्रवा– सुरवरेन्द्रवाहनं हयः। *जम्बू० २३५।*

उच्चोदए– उच्चोदयः, ब्रह्मदत्तस्य प्रधानः प्रथमः प्रथमः प्रासादः। *उत्त० ३८५।*

उच्चोलएहिं– उच्चुलुकैः, छंटाभिः, चुलुकैः। *आव० ६७८।*

उच्छंग– उत्सङ्गः–पृष्ठदेशः। *जम्बू० २६५।* पृष्ठदेशः। *औप० ७१। भग० ४८०।*

उच्छण्णं– उच्छिन्नम्, क्षीणम्। *आव० ६७०, ६७१।*

उच्छदयति– बोलं करोति। *ओघ० १५३।*

उच्छन्नं– अपशब्दं–विरूपं छन्नं–स्वदोषाणां परगुणानां वाऽऽ-वरणमपच्छन्नं। उत्थत्वं, न्यूनत्वं वा, द्वितीयाधर्मद्वारस्य चतुर्दशं नाम। *प्रश्न० २६।*

उच्छन्ननाणी– उच्छन्नज्ञानी–यावत्शक्तिप्रच्छादितज्ञानी। *प्रज्ञा० ४६१।*

उच्छयं– उच्छ्रयं–व्याप्त। *आव० १८४।*

उच्छलंत– उच्छलन्तः–उद्वलन्तः। *प्रश्न० ६२।*

उच्छ(त्थ)ल– उत्–उन्नतानि स्थलानि–धूल्युच्छ्रयरू–पाण्युच्छ(त्थ)लानि। *भग० ३०७।*

उच्छलिओ– उच्छलितः–निर्गतः। *आव० ४०२।*

उच्छवो– उत्सवः–शक्रोत्सवादिः। *प्रश्न० १५५।* इन्द्रो-त्सवादिः। *प्रश्न० १४०।*

उच्छहया– उत्सहन्–अर्थोद्यमवान्। *दशवै० २५३।*

उच्छा– तुच्छा, रिक्ता। (*गणि०*)।

उच्छाइओ– उत्सादितः। *आव० ३९८।*

उच्छाएइ– आच्छादयति। *आव० ६२४।*

उच्छायणयाए– उच्छादनतायै, सचेतनाचेतनतद् गतवस्तू-च्छादनाय। *भग० ६८४।*

उच्छाह– उत्साहः–वीर्यं। *सम० ११८।*

उच्छिंपक– अवच्छिम्पकः–चौरविशेषः। *प्रश्न० ४७।*

उच्छिंपणं– उत्क्षेपणं–जलमध्यान्मत्स्यादीनामाकर्षणम्। *प्रश्न० २२।*

उच्छिण्णं। *निशी० १०४अ।*

उच्छिन्नगोत्तागारं– उच्छिन्नगोत्रागारम्, उच्छिन्नं गोत्रागारंतत्स्वामिगोत्रगृहं यस्य तत्। *भग० २००।*

उच्छिन्नसामिय– उच्छिन्नस्वामिकम्, निःसत्ताकीभूतस्वा-मिकम्। *भग० २००*

उच्छिन्नसेउय– उच्छिन्नसेतुकम् त्यक्तमर्यादम्। *भग० २००।*
उच्छिन्ना– निर्नष्टसत्ताकाः। *स्था० २९४।*
उच्छु– इक्षुः। *दशवै० २२६। आव० ८५४।*
उच्छुक्किओ– जुगुप्सितः। *बृह० २५५* आ।
उच्छुखण्ड– इक्षुखण्डः। *दशवै० ११६।*
उच्छुगंडिय– इक्षुगण्डियं–सपर्वेक्षुशकलम्। *आचा० ३५४।*
उच्छुघर– इक्षुगृहम्। *व्यव० ३१९* अ। *आव० ३०१। निशी० १०९* अ।
उच्छुजंतं– इक्षुयन्त्रम्। *आव० ८२९।*
उच्छुद्धं– विक्षिप्तम्। *ओघ० १५०।* परित्यक्तं। *बृह० १३३* आ। रोगाघ्रातं। *बृह० २३* आ।
उच्छुभ– आधिक्येन क्षिप, प्रवेशयेत्यर्थः। *प्रश्न० २०।*
उच्छुभह– किञ्चित्क्षिपतेत्यर्थः। *भग० ६८५।*
उच्छुमेरगं– अपनीतत्वगिक्षुगण्डिका। *आचा० ३४८।*
उच्छुहइ– अवष्टभ्नाति, विध्यतीत्यर्थः। *ज्ञाता० ६८।*
उच्छूढं– उज्झितं संक्कारपरित्यागात्। *सूर्य० ५।* उज्झितम्। *भग० १२। राज० ५७। विपा० ३४। औप० ८४। जम्बू० १६।*
उच्छूढ– निःसृतः। *सूर्य० ९२।* अवक्षिप्तः–अर्गलास्थाना–न्निष्कासितः। *जीवा० २७२।* स्वस्थानादवक्षिप्तो–निष्का-सितः। *जम्बू० १११। प्रश्न० ८१।*
उच्छूढसरीरे– उच्छूढशरीरः–उज्झितमिवोज्झितं तत्संस्कारत्यागात् शरीरं येन सः। *भग० १२।*
उच्छूढाइं– लुंटितानि। *बृह० ५७* अ।
उच्छूनावस्था– विनष्टावस्था। *जीवा० १०७।*
उच्छूरं– अकालम्। *ओघ० १४८।*
उच्छूरिया– सुप्रावृत्ता। *बृह० ३५६* आ।
उच्छेवा– उच्छेवा नाम यत्र पतितुमारब्धं तत्रान्यस्येष्टकादेः संस्थापनम्। *व्यव० ७* अ।
उच्छोडेइ– उच्छोटयति। *आव० ३९९।*
उच्छोभवंदणयं– इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए तिविहेणं एयं उच्छोभवंदणयं। *निशी० ९३* अ।
उच्छोभो– आलः, कलङ्कः। *आव० ४०१।*
उच्छोलणं– एक्कसि धोवणं उच्छोलणं। *निशी० ११८* आ। तेल्लादिणा फासुगअफासुएण देसे उच्छोलणं। *निशी० ८९* अ। उच्छोलनं–अयतनया शीतोदकादिना हस्त-पादादिप्रक्षालनम्। *सूत्र० १८१।*
उच्छोलणा– उच्छोलना–पुरीषमुत्सृज्य प्रभुतेन पयसा क्षालनम्। *ओघ० ५५। ओघ० १२०।* एक्कसि उच्छोलणा। *निशी० १८८* अ।
उच्छोलणापहोअ– उत्सोलनया–उदकायतनया प्रकर्षेण धावति–पादादिशुद्धिं करोति यः स उत्सोलनाप्रधावी। *दशवै० १६०।*
उच्छोलिंति– प्रक्षालयन्ति। *गणि०।*
उच्छोलेइ– अग्रतो मुखां चपेटां ददाति। *भग० १७५।*
उच्छोलेज्ज– ईषद् उच्छोलनं विदध्यात्। *आचा० ३६३।* सकृदुदकेन प्रक्षालनं कुर्यात्। *आचा० ३४२।*
उच्छोलेति– सकृदुदकेन प्रक्षालनम्। *निशी० ११६* आ।
उजु– ऋजुः–मायारहितः संयमवान वा। *दशवै० २६२।*
उजुगं– दृष्टिवादे सूत्रभेदः। *सम० १२८।*
उजुवालिआ– ऋजुवालिका, वीरस्य केवलोत्पत्तिस्थानम्। *आव० १३९।*
उज्ज– आर्षत्वादुद्द्योतयतीति उद्द्योतः। *उत्त० ३८।*
उज्जमंतो– मूलुत्तरगुणेसु विसुद्धो विवित्तो। *निशी० २५* अ।
उज्जम– उद्यमः–यथाशक्ति अनुष्ठानम्। *आचा० १५०।* अनालस्यम्। *औप० ४८।*
उज्जममाणो– उद्यच्छन्–उद्यमं कुर्वन्। *आव० ५३४।*
उज्जयनी– नगरीविशेषः। *नन्दी० १४५।*
उज्जयन्त– पर्वतविशेषः। *जम्बू० १६८।* क्रीडापर्वतवि–शेषः। *भग० ३०६।* रैवतकम्। *उत्त० ४९२।* अट्टनमल–वास्तव्यनगरम्। *व्यव० ३५७* अ।
उज्जयिनी– चण्डप्रद्योतराजधानी। *प्रश्न० ९०।* नगरीविशेषः। *आचा० २४८। बृह० २१८* आ।
उज्जयिनीराजपुत्र– उज्जयिन्याः राजपुत्रः। *आचा० २४८।*
उज्जरा– प्रवाहाः। *आव० ६२०।*
उज्जल– उज्ज्वलः–विपक्षलेशेनाप्यकलङ्कितः। *भग० ४८४, २३१।* निर्म्मलः। *जीवा० २२७। ज्ञाता० २२१।* बहिः–श्वेतवर्णः। *जम्बू० ५२८।* उज्ज्वलम्–सुखलेशवर्जितम्। *प्रश्न० १५६।* शुद्धम्। *जीवा० १८८।*
उज्जला– उज्ज्वला। *आव० १९२।* विपक्षलेशेनाप्यकलङ्किता। *प्रश्न० १७।* उत्–प्राबल्येन

मलिनशरीराः अलब्धसुखास्वा-दाश्च। *बृह० ४०* अ।
उज्जा– ऊर्जा–बलम्। *व्यव० १४४* आ।
उज्जाण– जत्थ लोगो उज्जाणियाए वच्चति। जं वा ईसि णगरस्य उवकंठ ठियं तं। *निशी० २६५* अ। पुष्पा-दिमद्वृक्षसंकुलादौ उत्सवादौ बहुजनभोग्यम्। *प्रश्न० १२७*। ऊद्धर्वं यानमस्मिन्निति उद्यानम्–उदकम्। *आव० ७९७*। पुष्पादिसद्वृक्षसंकुलमुत्सवादौ बहुजनोपभोग्यम्। *जीवा० २५८*। *आव० १९७*। ऊर्ध्वं यानमुद्यानं–मार्गस्योन्नतो भागः, उट्टङ्क इत्यर्थः। *सूत्र० ८८*। पुष्पादिमद्वृक्षसंकुलबहु-जनभोग्यवनविशेषः। *प्रश्न० ७३*। पुष्पादिमद्वृक्षसंकुलमुत्स-वादौ बहुजनभोग्यम्। *प्रश्न० १२७*। *औप० ३*। क्रीडार्थाग-तजनानां प्रयोजनाभावेनोर्ध्वावलम्बितयानवाहनाद्याश्रयभूतं तरुखण्डम्। *जम्बू० ३८८*। पुष्पफलोपेतादिमहावृक्षसमु-दायरूपम्। *औप० ४१*। जनक्रीडास्थानम्। *दशवै० २१८*। पुष्पादिमद्वृक्षसंकुलं, उत्सवादौ बहुजनोपभोग्यम्। *राज० ११२*। ऊर्ध्वं विलम्बितानि प्रयोजनाभावात् यायानि यत्र तदुद्यानं–नगरात्प्रत्यासन्नवर्ती यानवाहनक्रीडागृहाद्या-श्रयस्तरुखण्डः। *राज० २३*। चम्पकवनाद्युपशोभितमिति। *स्था० ३१२*। औद्यानिक्यां निर्गतो जनो यत्र भुंक्ते। *व्यव० ३६२* अ। वस्त्राभरणादिसमलङ्कृतविग्रहाः सन्निहिता-शनाद्याहारमदनोत्सवादिषु क्रीडार्थं लोका उद्यान्ति यत्र तच्चम्पकादितरुखण्डमण्डितः। *अनुयो० २४*। पत्रपुष्पफल-च्छायोपगतवृक्षोपशोभितं, विविध–वेषोन्नतमानश्च बहुजनो यत्र भोजनार्थं यातीति। *सम० ११७*। पुष्पफलादिसमृद्धा-नेकवृक्षसंकुलानि उत्सवादौ बहुजनपरिभोग्यानि। *अनुयो० १५९*। पुष्पादिमद्वृक्षयुक्तम्। *भग० ४८३*। आरामः कीडावनं वा। *उत्त० ४५१*।
उज्जाणगिहाणि– उद्यानगृहाणि। *स्था० ८६*।
उज्जाणानि– उद्यानानि–पत्रपुष्पफलच्छायोपगादिवृक्षोप–शोभितानि बहुजनस्य विविधवेषस्योन्नतमानस्य भोजनार्थं यानं–गमनं येषु। *स्था० ८६*।
उज्जाणियलेणाइ– उद्यानगतजनानामुपकारिकगृहाणि नगर-प्रदेशगृहाणि वा। *भग० ६१७*।
उज्जाणिया– उद्यानिका। *आव० ६७९*।
उज्जाणियागओ– उद्यानिकागतः। *आव० ४०२*।
उज्जाणियागमणं– उद्यानिकागमनं। *आव० ४५३*।
उज्जाणेत्ति– प्रतिलोमगामिनीत्यर्थः। *निशी० ४४* आ।
उज्जालंतं– उज्ज्वालनम्–व्यजनादिभिर्वृद्ध्यापादनम्। *दशवै० १५४*।
उज्जालओ– प्रज्वालकः। *निशी० ५०* अ।
उज्जालेह– उज्जवालयत, दीपयत। *जम्बू० १६२*।
उज्जिंतगिरि– उज्जयन्तगिरिः, पर्वतविशेषः। *आचा० ४१८*। *नन्दी० ६०*।
उज्जिओ– बलवान्। *बृह० १९५* अ।
उज्जितं– ऊर्जितम्। *आव० ३०४*।
उज्जीवाविया– उज्जीविता। *आव० ५५९*।
उज्जु– समं संजमो वा। *दशवै० ५२*। ऋजोः–ज्ञानदर्शनचारित्राख्यस्य मोक्षमार्गस्यानुष्ठानादकुटिलः, यथावस्थितपदार्थस्वरूपपरिच्छेदाद्वा, सर्वोपाधिशुद्धोऽवक्रः। *आचा० १५४*। ऋजुः–अकुटिलः। *आचा० ४२*। अवक्रः, अविपरीतस्वभावः। *स्था० १८३*। अवक्रः। *उत्त० ५९०*। गृहाभिमुखः। *ओघ० १५६*। वर्त्तमानमतीतानागतवक्रपरि-त्यगाद् वस्त्वखिल, वक्रविपर्ययादभिमुखं वा। *आव० २८४*। अतीतानागतपरकीयपरिहरणमाञ्जलं वस्तु। *अनुयो० १८*।
उज्जुअ– ऋजुकम्–मायारहितः। *पिण्ड० १४७*। अभिमुखः। दस० *१८४*।
उज्जुआयता– ऋजुश्चासावायता चेति ऋज्वायता यया जीवादय ऊद्र्ध्वलोकादेरधोलोकादौ ऋजुतया यान्ति। *भग० ८६६*। ऋज्वी–सरला सा चासावायता च–दीर्घा ऋज्वा-यता। *स्था० ४०७*।
उज्जुकडे– ऋजुकृतः–ऋजुः–संयमस्तत्प्रधानं ऋजु वा मायात्यागतः कृतम्–अनुष्ठानं यस्य सः। *उत्त० ४१४*।
उज्जुग– ऋजुम्। *आव० ३८४*। दक्षिणहस्तः। *ओघ० १७५*।
उज्जुजड्ड– ऋजवश्च प्राञ्जलतया जडाश्च तत एव दुष्प्रति-पाद्यतया ऋजुजडाः। *उत्त० ५०२*।
उज्जुतभिन्नं– यत् चिर्भटादिकं विदार्य ऊर्ध्वफालिरूपाः

पेश्यः कृतं तद् ऋजुकभिन्नम्। *बृह० १७५*अ।

उज्जुते– ऋजुकः–अवक्रः, उद्यतो वा–अनलसः। *प्रश्न० १५७*।

उज्जुत्तो– उद्युक्तः। *ओघ० १६०*।

उज्जुदंसी– ऋजुदर्शी–ऋजुर्मोक्ष प्रति ऋजुत्वात्संयमस्तं पश्यत्युपादेयतयेति ऋजुदर्शी–संयमप्रतिबद्धः। *दशवै० ११८*।

उज्जुपन्न– ऋजुप्रज्ञः। *स्था० २०२*।

उज्जुभूयं– ऋजुभूतं–प्रगुणीभूतम्। *उत्त० १८५*।

उज्जुमइ– ऋजुमतिः–मार्गप्रवृत्तबुद्धिः। *दशवै० १६०*।

उज्जुमई– ऋज्वी–सामान्यग्राहिणी मतिरस्य स। *नन्दी० १०९, १०८*। ऋज्वी–सामान्यतो मनोमात्रग्राहिणी मतिः–मनःपर्यायज्ञानं येषां ते। *औप० २८*।

उज्जुया– ऋजुका–न वक्रा। *जीवा० २७१*।

उज्जुवालिया– ऋजुका–न वक्रा। *जीवा० २७१*।

उज्जुवालिया– ऋजुवालिका, वीरस्य केवलोत्पत्तिस्थानम्। *आव० २२७*।

उज्जुसंधिसंखेडयं– उज्जुसंधिसंखेडयाओ वा सगडमग्गं पवेदेति। *निशी० ८६*अ।

उज्जुसुअ– ऋजुसूत्रः–ऋजु–वर्त्तमानमतीतानागतवक्र परित्यागाद् वस्त्वखिलं तत्सूत्रयति-गमयतीति। ऋजुश्रुतः–ऋजु–वक्रविपर्यययादभिमुखं श्रुतं–ज्ञानस्येति। *आव० २८४*। ऋजुअवक्रं श्रुतमस्य सोऽयमृजु-श्रुतः, ऋजु–अवक्रं वस्तु सूत्रयतीति ऋजुसूत्रः। *स्था० ३९२*।

उज्जुसुते– ऋजु–वक्रविपर्ययादभिमुखं श्रुतं–ज्ञानं यस्यासौ ऋजुश्रुतः,ऋजु वा–वर्त्तमानमतीतानागतवक्रपरित्यागाद्वस्तु सूत्रयति–गमयति इति ऋजूसूत्रः। *स्था० ३९०*। ऋजुव-क्रविपर्यादभिमुखं श्रुतं–ज्ञानं यस्य सः। *स्था० ३९२*। ऋजु–अवक्रमभिमुखं श्रुतं–श्रुतज्ञानं यस्येति। *स्था० १५२*। ऋजुः–अवक्रं श्रुतमस्येति। *अनुयो० २६५*। स्वकीयं संप्राप्तं च वस्तु नान्यदित्यभ्युपगमपरः, ऋजु वा–अतीता-नागतवक्रपरित्यागाद्वर्त्तमानं वस्तु सूत्रयति-गमयतीति ऋजु-सूत्रः। *स्था० १५२*।

उज्जुसुयं– ऋजुसूत्रं–नयगतौ भेदः। प्रज्ञाः० *३२७*। ऋजु–अतीतानागतपरिहारेण प्राञ्जलं वस्तु सूत्रयति–अभ्युपग-च्छतीति ऋजुसूत्रः। *अनुयो० १८*।

उज्जुसेढीपत्ते– ऋजुश्रेणिप्राप्तः–ऋजुः–अवक्रा श्रेणिः–आकाशप्रदेशपंक्तिस्तां प्राप्तः। अनुश्रेणिगतः। *उत्त० ५९७*।

उज्जुहिता– प्रेर्य। *उत्त० ५५१*।

उज्जू– ऋजुः–यतिः, यतिरेव परमार्थतः ऋजुः। *आचा० १५६*।

उज्जूहिगा– गावीओ उज्जूहिताओ अडविहुत्तीओ उज्जु–हिज्जंति अहवा गोसंखडि उज्जूहिगा। *निशी० ७१*।

उज्जेंत– रैवतकः। *बृह० १०६*अ। उज्जयन्तः–पर्वत–विशेषः। *आव० ८२७*। परदारगमने पर्वतविशेषः। *आव० ८२३*।

उज्जेणय– उज्जयिनीकः। *आव० ६२६*।

उज्जेणा– उपयोजना–संघट्टना। *बृह० १४६*अ।

उज्जेणि– उज्जयिनी, गुरुनिग्रहविषये पुरी। *आव० ८१३*। सर्वकामविरक्ताविषये नगरी। *आव० ७१४*। अज्ञातोदाहरणे प्रद्योतराजधानी। *आव० ६९९*। मालवदेशे नगरी। *दशवै० ५७*। शिल्पसिद्धदृष्टान्ते पुरी। *आव० ४१०*। कायदण्डो-दाहरणे नगरीविशेषः। *आव० ३०२*।

उज्जेणिगाओ– औज्जयिन्यः। *आव० ६४*।

उज्जेणिया– उद्यानिका। *आव० २१०*।

उज्जेणी– उज्जयिनी, लवालवोदाहरणे नगरी। *आव० ७२१*। गुणविषये पुरी। *आव० ८१९*। विनयदृष्टान्ते पुरी। *आव० ७०८*। शिल्पकर्मविषये नगरी। *आव० ४०९*। स्थिरीकरणो-दाहरणे नगरी। *दशवै० १०३*। योगसंग्रहेऽनिश्रिपोपधानदृष्टान्ते नगरी। *आव० ६६८*। जितशत्रुराजधानी। *उत्त० २१३, १९२*। औत्पात्तिकीदृष्टान्ते नगरी। *आव० ४१५*। भद्रगुप्ताचार्यस्थानम्। *आव० २९२*। नगरीविशेषः। *बृह० १९१*अ *१९०*आ। योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते नगरी। *आव० ६७२*। प्रथमे आलोचनायोगे नगरी। *आव० ६६४*। योगसंग्रहे आपत्सु दृढधर्मत्वदृष्टान्ते नगरीविशेषः। *आव० ६६७*। हस्तिमित्रगाथापतिस्थानम्। *उत्त० ८५* देवदत्तागणिकाव-सननगरी। *उत्त० २१८*। उज्जयिनीनगरीविशेषः। *उत्त० ९९, २९४, १२७, ८७*। प्रद्योतनराजधानी। *उत्त० ९६*। चेटीदेवतोक्तं

भग्नसाधुस्थानम्। *बृह० १७१* आ। *बृह० ३९* अ। नगरी–विशेषः। *निशी० २४३* अ। *निशी० ५७* आ। *बृह० १९१* अ। *बृह० २६७* अ। कालकाचार्यविहारभूमिः। *निशी० ३३९* आ। *बृह० ४७* अ। *बृह० १४९* अ।

उज्जेणीनयरी– अवन्तीजनपदे नगरी। *उत्त० ४९*।

उज्जेणीसावगसुतो– उज्जयनीश्रावकपुत्रः–उज्जयिन्यां श्रावकसुतः। *उत्त० २९४*।

उज्जोअ– उद्द्योतः –प्रभासमूहः। *जीवा० २६७*। अनुष्ण–प्रकाशः। *जम्बू० ४३३*। दीप्यमानता। *जीवा० ३९९*। उद्योतं–चान्द्रप्रकाशम्। *जम्बू० २२९*।

उज्जोइंति– उद्द्योतयन्ति। *भग० ३२७*।

उज्जोएइ– उद्द्योतयति –भृशं प्रकाशयति। *भग० ७८*।

उज्जोएमाण– उद्योतयन्। *औप० ५०*।

उज्जोओ– उद्योतः–रत्नादिप्रकाशः। *उत्त० ५६१*।

उज्जोयगरे– उद्योतकरः–केवलालोकेन तत्पूर्वकप्रवचन–दीपेन वा सर्वलोकप्रकाशकरणशीलः। *आव० ४९४*।

उज्जोयणामे– यदुदयाज्जन्तुशराण्यनुष्णप्रकाशकरूपमुद्योतं कुर्वन्ति यथा यतिदेवोत्तरवैक्रियचन्द्रनक्षत्रतारविमानरत्नौ-षधयस्तदुद्योतनाम। *प्रज्ञा० ४७४*।

उज्जोवणं– गाविणं पसरणं। *निशी० १०७* अ।

उज्जोवेंति– उद्योतयन्ति। *सूर्य० ६३*। उद्द्योतयतः –भृशं प्रकाशयतः। *जम्बू० ४६१*।

उज्जोवेमाणा– उद्योतयमानः स्थूलवस्तूपदर्शनतः। *स्था० ४२१*।

उज्झंतगं– उज्झितकं, त्यज्यम्। *आव० ६६८*।

उज्झंता– क्षपयन्तः। *अनुयो० १३१*।

उज्झंसिओ– तिरस्कृतः। *आव० २०४*।

उज्झक्खणिया-पवनप्रेरिता उदककणिकाः। *बृह० २९* आ।

उज्झखणी– दगवातो सीतभरो सा य उज्झखणी भण्णति। *निशी० २३२* आ।

उज्झनं– परिशाटः। *आव० ५७६*।

उज्झमज्जी– उद्घाटनम्। *आव० ६६५*।

उज्झयारेमि– उपकरोमि। *बृह० ४६* आ।

उज्झर– अवझरः–पर्वततटादुदकस्याधःपतनम्। *भग० २३७*। प्रवाहः। (*तन्दु०*)। उज्झरः–प्रवाहः। *नन्दी० ४७*। गिरतिटादुदकस्याधःपतनानि। *जम्बू० ६६*। गिरिष्वम्भसां प्रस्रवाः। *प्रज्ञा० ७२*। निर्झरः। *ज्ञाता० २६*।

उज्झररवो– निर्झरशब्दः। *ज्ञाता० १६१*।

उज्झा– अयोध्या, सगरराजधानी। *आव० १६१*। अजित–नाथजन्मभूमिः। *आव० १६०*। उ इत्येतदक्षरं उपयोगकरणे वर्तते, ज्झ इति चेदं ध्यानस्य भवति निर्देशे, ततश्च प्राकृ-तशैल्या उज्झा, उपयोगपुरस्सरं ध्यानकर्तार इत्यर्थः। *आव० ४४९*। अनन्तनाथजन्मभूमिः। *आव० १६०*।

उज्झाइओ– विरूपः। *बृह० २४१* अ।

उज्झाइगं– जुगुप्सा। *बृह० २२९* आ।

उज्झाइतं– विरूपं। *बृह० २२९* आ।

उज्झातो– उपाध्यायः। *उत्त० १४९*।

उज्झाहि– उज्झीः। *आव० २१७*।

उज्झिआ– उज्झिता–सद्विवेकशून्या। *सूत्र० १२*।

उज्झिणिका– पारिष्ठापनिका। *बृह० १२३* अ। *बृह० २४२* आ।

उज्झितं– छर्द्दितं, त्यागम्। *पिण्ड० १६९*।

उज्झितक– विजयसार्थवाहपुत्रः। *स्था० ५०७*। दुःखविपाकानां द्वितीयमध्ययनम्। *स्था० ५०७*।

उज्झित्तए– उज्झितुं–सर्वस्या देशविरतेस्त्यागेन। *ज्ञाता० १३४*।

उज्झिय– उज्झितः–उज्झितधर्मा, सप्तमी पिण्डैषणा। *आव० ५७२*। उज्झितधर्मा। *आव० ५६८*।

उज्झियए– उज्झितकः–सुभद्राविजयमित्रसार्थवाहयोः सुतः। *विपा० ४६*। सार्थवाहपुत्रः, अन्तकृद्दशासु दुःखविपाकानां द्वितीयमध्ययनम्। *विपा० ३५*।

उज्झियतो– उज्झितः–त्यक्तः। *आव० ८२३*।

उज्झियधम्मा– चतुर्थी वस्त्रैषणा। *आचा० ३७७*। यत्परित्यागार्हं भोजनजातमन्ये च द्विपदादयो नावकाङ्क्षन्ति तदर्द्धत्यक्तं वा गृहणत इति, सप्तमी पिण्डैषणा। *स्था० ३८७*। *आव० ५६८, ५७२*।

उज्झियधम्मिय– उज्झितधर्मिकं–उज्झितं–परित्यागः स एव धर्मः–पर्यायो यस्यास्ति तत्। *अन्त० ३*। उज्जितधर्मिका-सप्तमी पिण्डैषणा। *आचा० ३५७*। जं असणादिगं गिही उज्जिउकामो साहू य उवट्ठितो तं तस्स देति ण य तं कोइ अण्णो दुपदादि अभिलसति

एसा उज्जियधम्मिया। *निशी० १२* अ। *निशी० १६३* आ।

उज्झियधम्मे– उज्झितमेव धर्मः–स्वभावो यस्य तद् उज्झितधर्म–परित्यागार्हम्। *बृह० ९७* आ।

उट्ट– उष्ट्रः। *प्रज्ञा० २५२*। उष्ट्रः–द्विखुरचतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*। *जीवा० ३८*। म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५*।

उट्टण- आवर्तनम् भक्तिभावनम्। *व्यव० २०३* आ।

उट्टवामा– उष्ट्री। *आव० ४१८*।

उट्टिए– उष्ट्राणामिदम्। औष्ट्रिकम्। *अनुयो० ३५*। उष्ट्रिकाबृहन्मृ-न्यभाण्डम्। *उपा० ४*।

उट्टिते– उष्ट्रलोममयम्। *स्था० ३३८*।

उट्टितो– उव्वसिओ। *निशी० १७८* आ।

उट्टियं– उट्टरोमेसु उट्टियं। *निशी० १२६* अ।

उट्टिया– उष्ट्रिका–महामृण्मयो भाजनविशेषः। *औप० १०६*। मृण्मयो महाभाजनविशेषः। *उपा० २१*। सुरातैलादिभा-जनविशेषः। *उपा० ४०*। उवरिहुत्तिकरणं। *निशी० ५९* अ, *६१* अ।

उट्टियासमणा– उष्ट्रिका–महामृण्मयो भाजनविशेषस्तत्र प्रविष्टा ये श्राम्यन्ति–तपस्यन्तीति उष्ट्रिकाश्रमणाः। *औप० १०६*।

उट्टं– ओष्ठं–कर्णम्। *ओघ० २११*।

उट्टंभिया– अवष्टभ्य–आक्रम्य। *आचा० ३१२*।

उट्टण– उत्थितः। *बृह० ७९* अ।

उट्टवेसि– उद्धरसि। *ज्ञाता० ६९*।

उट्ठा– उत्था–कायस्योर्ध्वभवनम्। *औप० ८३*। ऊर्ध्वं वर्त्तनम्। *सूर्य० ६*। *भग० १४*। उष्ट्री। *दशवै० १९३*।

उट्ठा(ट्टा)– उष्ट्राः–जलचरविशेषाः। *सूत्र० १६०*।

उट्ठाए– उत्थाय-उद्यतविहारं प्रतिपद्य सर्वालङ्कारं परित्यज्य पञ्चमुष्टिकं लोचं विधायैकेन देवदुष्येणेन्द्रक्षिप्तेन युक्तः कृत–सामायिकप्रतिज्ञ आविर्भूतमनःपर्यायज्ञानोऽष्टप्रकारकर्म्म-क्षयार्थं तीर्थप्रवर्त्तनार्थं चोत्थाय। *आचा० ३०१*। उत्थानं उत्था-ऊर्ध्वं वर्त्तनं। *राज० ५८*।

उट्ठाण– उत्थानम्–उद्वसनम्। *नन्दी० २०७*। प्रथममुद् गमनम्। *उत्त० ३५१*। जन्म। *भग० ६६१*। चेष्टाविशेषः। *स्था० २३*। उत्थानम्। *पिण्ड० ७१*। ऊर्ध्वीभवनम्। *भग० ३११*। *सूर्य० २८६*। श्रवणाय गुरुं प्रत्यभिमुखगमनम्। *सूर्य० २९६*। देहचेष्टाविशेषः। *प्रज्ञा० ४६३*। ऊर्ध्वं भवनम्। *जम्बू० १३०*। उत्पत्तिः। *ज्ञाता० १८९*।

उट्ठाणपरियाणियं– परियानं–विविधव्यतिकरपरिगमनं तदेव पारियानिकं–चरित उत्थानात्–जन्मन आरभ्य पारियानिकं उत्थानपारियानिकम्। *भग० ६६०*।

उट्ठाणपरियावणियं- उत्थानपर्यापन्निकम्। *आव० ६५*।

उट्ठाणसूए– उत्थानश्रुतं–उद्वसनं तद्धेतुः श्रुतमुत्थानश्रुतम्। *नन्दी० २०७*।

उट्ठाय– उत्थाय–अभ्युपगम्य। *आचा० ३८*। सर्वं सावद्यं कर्म्म न मया कर्तव्यमित्येवं प्रतिज्ञामन्दरमारुद्य। आदायगृहीत्वा। *आचा० १४०*।

उट्ठावणा– उच्चेव ठावणा उत्–प्राबल्येन वा ट्ठावणा उट्ठावणा। *निशी० ४७* अ।

उट्ठावणागहणं– उपस्थापनायां हस्तितदन्तोन्नताकारहस्तादि-भिर्यद् रजोहरणादिग्रहणं। *बृह० २८६* अ।

उट्ठिअ– उद्युक्तः। *ओघ० २२०*। उत्थितः–उद्वसितः। *ओघ० ४९*। उद्यतः। *ओघ० २२०*।

उट्ठिए– उत्थितः–ज्ञानदर्शनचारित्रोद्योगवान्। *आचा० १७६*। उत्–प्राबल्येन स्थितः। *आचा० २५८*।

उट्ठिय– उत्थितः–संयमोद्योगवान्। *आचा० २२४*। रुअं। *निशी० २२८* आ। ईश्वरीभूतम्। *पिण्ड० १२३*।

उट्ठी– अष्टा। *आव० ६२४*।

उट्ठुभह– अवष्ठीव्यत–निष्ठीव्यत। *भग० ६८५*।

उट्ठेइ– उत्थाय–विबुद्धय। *भग० १२२*।

उट्ठेमि– आयामि–आगच्छामि। *आव० ६८५*।

उडंकरिसी– ऋषिविशेषः। *बृह० २८६* आ।

उडए– उटजः–तापसाश्रमगृहम्। *निर० २६*।

उडओ– ओटजः–तापसाश्रमः। *उत्त० १३४*।

उडव– उटजः–तापसाश्रमः। *जीवा० १०५*। कोटिंवो। *निशी० ७७* आ। पर्णकुटी। *आव० १८९*।

उडवसंठिया– उटजसंस्थिताः–तापसाश्रमसंस्थिताः। आव-लिकाबाह्यस्य दशमं संस्थानम्। *जीवा० १०४*।

उड्डंकरिसि– ऋषिविशेषः। *निशी० ६८* आ।

उड्डंडुग– उद्दंडकः–जनहास्यः। *निशी० ५०* अ।

उडु– ऋतुः। *निशी० २३९* अ। उडुपः–तरणकाष्टं–तुम्बकादि। *पिण्ड० १०२*।

उडुकल्लाणिआ– ऋतुकल्याणिकाः, ऋतुषु षट्स्वपि कल्याणिकाः–ऋतुविपरीतस्पर्शत्वेन सुखस्पर्शाः अथवाऽमृतकन्यात्वेन सदा कल्याणकारिण्यः। *जम्बू० २६३*।

उडुपं– नौः। *आचा० ४१*।

उडुबद्धियं– ऋतुबद्धम्–शीतोष्णकालयोर्मासकल्पम्। *आचा० ३६५*।

उडुवई– उडुपतिः–उडूनां–नक्षत्राणां पतिः–प्रभुः सः। *उत्त० ३५१*।

उडुविमानं– सौधर्मे प्रथमः प्रस्तटः। *स्था० २५१*।

उडू– कालविशेषः। *भग० ८८८*। ऋतवः–द्विमासमानाः। *स्था० ८६*। नक्षत्रः। *उत्त० ३५१*।

उडूसंवच्छरे– ऋतुसंवत्सरः, कर्मसंवत्सरः, सवनसंवत्सरश्च। *सूर्य० १६८*। यस्मिन् संवत्सरे त्रीणि शतानि षष्ट्यधिकानि परिपूर्णान्यहोरात्राणां भवति एष ऋतुसंवत्सरः, ऋतवो लोकप्रसिद्धाः वसन्तादयः तत्प्रधानसंवत्सर ऋतुसंवत्सरः। *सूर्य० १६९*।

उड्डं– कुडयं। *बृह० ६१* आ।

उड्डंचकादि– उद्घट्टकादि। *ओघ० ८९*।

उड्डंचगा– उदकाः–याचकाः। *बृह० ८६* आ।

उड्डंचय– उड्डकाः–उद्घेटकास्तान् कुर्वन्ति, आलापकान् कर्णाघाटकेन पठित्वा तथैवोच्चरन्ति इत्यर्थः। *बृह० ६०* आ।

उड्डंचये– कुट्टियाओ। *निशी० १७१* अ।

उड्डंडग– ऊर्द्धीकृतदण्डः। *औप० ९०*।

उड्डंति– व्यवस्थापयन्ति। *आव० ५१९*।

उड्डंबालग– कोट्टपालकः। *आव० २०४*। आरक्षकः। *आव० २०४*।

उड्डग– पलालं। *निशी० ६१* अ।

उड्डच्छे– उद्घोषिते। *निशी० १३२* अ।

उड्डणक्कं– प्रपंचः। *निशी० २६* आ।

उड्ड(ड्डे)ति। *निशी० २३२* आ।

उड्डमरं– उत्थाणं। *निशी० १९४* आ।

उड्डमादी– खितिखाणतो उड्डमादी। *निशी० ४४* आ।

उड्डहणं– व्यङ्गनयोर्द्वयोरनवस्थाप्यः। *बृह० ३०८* अ।

उड्डाह– उपघातः। *ओघ० ८९*। प्रवचनहीला। *ओघ० ४८*। खिंसा। *पिण्ड० १०९*। अपवादः। *आव० ८००*। उपघातः। *ओघ० १४९*। *आव० १९५*।

उड्डाहितो– निर्भर्त्सितः। *उत्त० १३९*।

उड्डिओ– अवतारितः। *आव० ३९६*।

उड्डियाओ– अवतारिता। *दशवै० ५७*।

उड्डुयं– उद्गारितम्। *आव० ७७९*।

उड्डुयरो– यः समुद्दिशन् संज्ञां वा व्युत्सृजन् चपलतया हस्तादीन्यपि लेपयति। *बृह० २७२* अ।

उड्डुयालेउं– मथितुम्–मन्थनं कर्त्तुम्। *दशवै० ६०*।

उड्डेति– छड्डेति। *निशी० २९०* अ।

उड्डेह– धरथ। *निशी० २३७* अ।

उड्ढ– वमनं। *निशी० ३१५* आ। *निशी० ५८* अ। *बृह० ७५* अ। णदीए समुद्दे वा वेलापाणियस्स प्रतिकूलं उड्ढं। *निशी० ६३* आ।

उड्ढउंच्चत्त– ऊर्ध्वस्थितस्यैकमपरं, तिर्यक् स्थितस्यान्यत्, गुणोन्नतिरूपं, तत्रेतरापोहेनोर्ध्वस्थितस्य यदुच्चत्वं तदूर्ध्वो-च्चत्वम्। *स्था० ३६*।

उड्ढंकप्पेसु– ऊर्ध्वं कल्पेषु–ऊर्ध्वं कल्पोपरिवर्त्तिषु ग्रैवेयका-दिविमानकेषु कल्पेषु–सौधर्मादिषु, ऊर्ध्वं वा उपरिकल्प्यन्ते विशिष्टपुण्यभाजामवस्थितिविषयतयेति सौधर्मादयो ग्रैवेय-कादयश्च सर्वेऽपि कल्पा एव तेषु। *उत्त० १८६*।

उड्ढंजाणू– शूद्धपृथिव्यासनवर्जनात् औपग्रहिकनिषद्याभावाच्च उत्कटुकासनः सन्नपदिश्यते ऊर्ध्वं जानुनी यस्य स ऊर्ध्व-जानुः। *ज्ञाता० २*।

उड्ढ– ऊर्ध्वं–कर्णकः। *ओघ० १६८*। सर्वोपरिस्थितम्। *उत्त० २६८*। अनाच्छादितममालगृहम्। *स्था० १५७*। ऊर्ध्वं। *नन्दी० १५४*।

उड्ढकवाडे– ऊर्ध्वमपि लोकान्तं स्पृष्टे ते अधोऽपि च लोकान्तं स्षृटे ते ऊद्र्ध्वकपाटे। *प्रज्ञा० ७५*।

उड्ढकाएहिं– ऊर्ध्वकायैः–द्रोणैः काकैर्वैक्रियैः। *सूत्र० १३७*।

उड्ढघट्टणा– उद्र्ध्वघट्टना–मुसलीद्वितीयभेदः। ऊद्र्ध्वं कुट्टिकादिपटलानि घट्टयति। *ओघ० १०९*।

उड्ढचरा– ऊद्र्ध्वचरा–गृध्रादयः। *आचा० २९९*।

उड्ढठाण- ऊर्द्ध्वस्थानम्-कायोत्सर्गादि। *उत्त० ३९९*। कायोत्सर्गः, ऊर्ध्वतया स्थानम्–अवस्थानं पुरुषस्य

ऊर्ध्वं-स्थानम्। *स्था० ३*।

उड्ढत्ता– मुख्यता। *भग० २५४*। ऊर्ध्वता–लघुपारिणामता। *प्रज्ञा० ५०४*। *भग० २३*।

उड्ढमंतो– उद्वमन्–अधस्तनमध्यमत्रिभागगतवातसङ्क्षोभ-वशाज्जलमूद्र्ध्वमुत्क्षिपन्। *जीवा० ३०८*।

उड्ढरेणु– ऊर्ध्वरेणुः–ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्चलनधर्मोपलभ्यो रेणुः। *भग० २७७*।

उड्ढरेणू- ऊर्ध्वरेणुः-स्वतः परतो वा ऊर्ध्वाधस्तिर्यक् चल-नधर्मारेणुः। *अनुयो० १६३*।

उड्ढलोए– तिर्यग्लोकस्योपरिष्टादूदर्ध्वलोकः। *प्रज्ञा० १४४*।

उड्ढलोयतिरियलोए– ऊर्ध्वलोकस्य यदधस्तनमाकाशप्र–देशप्रतरं यच्च तिर्यग्लोकस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदेश-प्रतरमेष ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकः। *प्रज्ञा० १४४*।

उड्ढलोयपयरं– ऊद्र्ध्वलोकप्रतरं–तिर्यग्लोकस्य चोपरि यदेकप्रादेशिकमाकाशप्रतरं तत्। *प्रज्ञा० १४४*।

उड्ढवाए– ऊद्र्ध्वमुद्गच्छन् यो वाति वातः स ऊद्ध्र्ववातः। *जीवा० २९*। ऊद्र्ध्वमुद्गच्छन् यो वाति वातः स ऊर्ध्व-वातः। *प्रज्ञा० ३०*।

उड्ढवियडं– मालरहितं छाद्यरहितं परं पार्श्वतः कुड्ययुक्तं तदूद्र्ध्वविवृतं भवति। *बृह० १९१* अ।

उड्ढवेइया– ऊद्र्ध्ववेदिका, यत्र जान्वोरुपरि हस्तौ कृत्वा प्रतिलिख्यते सा। *ओघ० ११०*।

उड्ढस्सासो– ऊद्र्ध्वश्र्वासः। *आव० ६२९*।

उड्ढा– ऊद्र्ध्व–वमनम्। *बृह० ७५* अ।

उड्ढाई– ऊद्र्ध्वादि–छर्दनादिदोषः। *ओघ० १३६*।

उड्ढिया– ऊर्ध्वीकृता। *आव० २२३*।

उड्ढोववन्नगा– ऊर्ध्वलोकस्तत्रोपपन्नकाः–उत्पन्ना ऊद्ध्र्वोपपन्नकाः। *स्था० ५७*। सौधर्मादिभ्यो द्वादशभ्यः कल्पेभ्य ऊद्र्ध्वमुपपन्नाः ऊद्र्ध्वोपपन्नाः। *जीवा० ३४६*।

उणादि– उण्प्रभृतिप्रत्ययान्तं पदम्। *प्रश्न० ११७*।

उणुयत्ता– स्थिता। *आव० २७२*।

उण्डी– पिण्डी। *ज्ञाता० ९१*।

उण्णए– उच्छिन्नं नतं–पूर्वप्रवृत्तं नमनमभिमानादुन्नतम्, उच्छिन्नो वा नयो–नीतिरभिमानादेवोन्नयो नयाभाव इत्यर्थः। *भग० ५७२*।

उण्णमणी– उन्नामिनी–विद्याविशेषः। *दशवै० ४१*।

उण्णय– उन्नतः–प्रधाचनजातिकः। *आव० २४०*।

उण्णयविसालकुलवंसा– उन्नताः प्रधानजातित्वात् विशालाः–पितामहपितृव्याद्यनेकसमाकुलाः कुलान्येव वंशाः–अन्वया येषां ते उन्नतविशालकुलवंशाः। *आव० २४०*।

उण्णया– उन्नतानि–गुणवन्ति, उच्चानि। *औप० ३*।

उण्णयासणं– उन्नतासनं–उच्चासनम्। *जीवा० २००*।

उण्णागं– उर्णाकं, ग्रामविशेषः। *आव० २११*।

उण्णिए– अविलोममयम्। *स्था० ३३८*। ऊर्णाया इदम् और्णिकम्। *अनुयो० ३५*।

उण्णियं– ऊरणो रोमेसु उण्णियं। *निशी० १२६* अ।

उण्हं– उष्णं, उष्णरूपः। *सूर्य० १७२*। उषति–दहति जन्तुमिति उष्णम्। *उत्त० ३८*। चतुर्थः परीषहः। *आव० ६५३*। उष्णः–धर्मः। *स्था० ३४५*।

उण्हकालो– उष्णकालः–ग्रीष्मः। *ओघ० २१२*।

उण्हयं– उष्णम्। *आव० ८५८*।

उण्हवणं– उष्णापनम्–उष्णीकरणम्। *पिण्ड० ८२*।

उण्हा– उष्णा। *आव० २८९*।

उण्होदए– उष्णोदकं–स्वभावत एव क्वचिन्निर्झरादावुष्णप-रिणामम्। *जीवा० १२५*।

उण्होदय– उष्णोदकं। *आव० ८५५*।

उण्होला– घृतेलिका। *आव० २१७*।

उत्– प्राबल्येन, अपुनर्भवरूपतया वा। *प्रज्ञा० ११२*। प्राबल्ये। *प्रज्ञा० ५५९*।

उत्कम्पनदीपा– ऊर्ध्वदण्डवन्तः। *ज्ञाता० ४४*।

उत्करिकाभेदः– समुत्कीर्यमाणप्रस्थकस्येवेति। *स्था० ४७५*।

उत्कर्षण। *स्था० २१२*। *आचा० २७७*।

उत्कुट्टित– चिंचनकादिः। *व्यव० २८* अ।

उत्कुरुटिकादि– आसनविशेषः। *ओघ० ४१*। तुषराश्यादि। *ओघ० ४१*।

उत्क्षिप्तचरका– उत्क्षिप्तं–पाकपिठरात् पूर्वमेव दायकेनोद्धृत्तं तद्ये चरन्ति–गवेषयन्ति ते। *बृह० २५७* आ।

उत्तइया– उत्तेजिया–अधिकं दीपिता। *दशवै० ११५*।

उत्तणं– उत्तृणम्–उद्गततृणम्। *प्रश्न० १४*।

उत्तणा– दीर्घत्रि(तृ)णा। *निशी० ३३६* अ।

उत्तणाणि– उत्तृणानि–ऊर्द्ध्वीभूतानि तृणानि दीर्घाणीति यावत् तानि यत्र मार्गे भवन्ति। *बृह० ७९* आ।

उत्तत्तकणगवन्ना– उत्तप्तकनकवर्णाः–ईषद्रक्तवर्णा। *प्रज्ञा० ९५*।

उत्तम– उत्तमो गिरिषु सर्वतोऽप्यधिकसमुन्नतत्वात्, मेरोश्र्च-तुर्दशं नाम। *जम्बू० ३७५*। गिरिणामुत्तम इति उत्तमः मन्दरस्य चतुर्दशं नाम। *सूर्य० ७८*। मिथ्यात्वमोहनीयज्ञा-नावरणचारित्रमोहादित्रिविधतमसः उन्मुक्ता इति उत्तमाः। *आव० ५०८*। उपरिवर्ति। देवलोकाद्यपेक्षया प्रधानम्। *उत्त० ३१९*। ऊद्र्ध्वं तमसः–अज्ञानाद्यत्तत्तथा, अज्ञानरहित इत्यर्थः। *ज्ञाता० ७६*।

उत्तमकट्ठ– उत्तमकाष्ठा–प्रकृष्टावस्था। *जम्बू० ९८*। उत्त-मकाष्ठा–परमकाष्ठा, उत्तमावस्था परमकष्टो वा। *भग० ३०५*।

उत्तमकट्ठपत्त– उत्तमकाष्ठाप्राप्तः–परमप्रकर्षप्राप्तः। सूर्य *११*।

उत्तमकट्ठपत्ता– परमकाष्ठाप्राप्ता, उत्तमावस्थायां गत, परमकष्टप्राप्ता वा। *भग० ३०५*।

उत्तमट्ठ– अनशनाय। (*आतु०*)। उत्तमार्थः–अनशनम्। *ओघ० १४*। उत्तमः–प्रधानोऽर्थः–प्रयोजनं स उत्तमार्थः–मोक्षः। *उत्त० ३५३*। पर्यन्तसमयाराधनारूपः। *उत्त० ४७९*। मोक्षः। *उत्त० ५२३*।

उत्तमट्ठकालंमि– उत्तमार्थकाले–अनशनकाले। *ओघ० २२७*।

उत्तमट्ठगवेसए– उत्तमार्थगवेषकः–उत्तमः–प्रधानोऽर्थः–प्रयोजनं उत्तमार्थः, स च मोक्ष एव तं गवेषयति–अन्वेषय-तीति। *उत्त० ३५३*।

उत्तमट्ठपत्ता– उत्तमार्थप्राप्ताः, उत्तमान् तत्कालापेक्षयो-त्कृष्टानर्थान्–आयुष्यकादीन् प्राप्ता उत्तमार्थप्राप्ताः, उत्तमकाष्ठां प्राप्ता वा–प्रकृष्टावस्थां गताः। *भग० २७७*।

उत्तमा– उत्तमाः–प्रधानाः, ऊर्ध्वं वा तमस इति उत्तमसः। *आव० ५०७*। पूर्णभद्रस्य तृतीयाग्रमहिषी। *भग० ५०४*। *स्था० २०४*। प्रथमरात्रिनाम। *सूर्य० १४७*। *जम्बू० ४९१*।

उत्तमार्धम्– परार्घ, महार्घं वा। *दशवै० २२१*।

उत्तमुत्तम– उत्तमोत्तम्–अतिशयप्रधानम्। *उत्त० ३१९*।

उत्तमेणं– ऊर्ध्वं तमसः–अज्ञानाद्यत्तत् तथा तेन ज्ञानयुक्तेन। उत्तमपुरुषासेवितत्वाद्वोत्तमेन। *भग० १२५*।

उत्तयंतं– उत्तुद्यमानः–ऊर्ध्वं व्यथ्यमानम्। *विपा० ७४*।

उत्तरं– वासकप्पकंवली। *निशी० ३४३* आ।

उत्तरंगं– उत्तराङ्गं। *जीवा० ३५९*। उत्तरङ्गं–द्वारस्योपरि तिर्यग्व्यवस्थितं काष्ठा। *जीवा० २०४*। *जम्बू० ४८*।

उत्तर– उत्तरत–उत्तरदिग्वर्त्ती सर्वेभ्यो भरतादिवर्षेभ्य इति, मेरुनाम। *जम्बू० ३७६*। ऐरावते द्वाविंशतितमतीर्थंकरः। *सम० १५४*। अग्रवर्त्ती। विद्यादिशक्त्यभावे–ऽनुल्लङ्घनीयः। *जम्बू० ४६२*। भवधारणीयशरीरापेक्षया कार्योत्पत्तिकाला-पेक्षया चोत्तरकालभावि। *जम्बू० ४०२*। कार्यम्। *सूत्र० २८५*।

उत्तरअंतरदीवा– उत्तरस्यां दिशि येऽन्तरद्वीपाः। *भग० ४९२*।

उत्तरउत्तरा– उत्तरोत्तरविमानवासिनः, उत्तरो वा उपरितन-स्थानवर्ती, उत्तरः– प्रधानो येषु ते उत्तरोत्तराः। *उत्त० १८७*।

उत्तरकंचुइज्ज– उत्तरकञ्चुकः–तनुत्राणविशेषः। *विपा० ४६*।

उत्तरकंचुइय– उत्तरकञ्चुकः–तनुत्राणविशेषः। *विपा० ४७*।

उत्तरकरणं– मूलतः स्वहेतुभ्य उत्पन्नस्य पुनरुत्तरकालं विशेषाधानात्मकं करणम्। *उत्त० १९४*। औदारिक–वैक्रियाहारेषु तैजसकार्मणयोस्तदसम्भवादङ्गोपाङ्गना–मैवोत्तरकरणमिति। *उत्त० १९७*।

उत्तरकिरियं– उत्तरक्रियम्–उत्तरा–उत्तरशरीराश्रया क्रिया गतिलक्षणा यत्र गमने तदुत्तरकियम्। *भग० २१२*।

उत्तरकुरा– उत्तरपूर्वरतिकरपर्वतस्य पश्र्चिमायामीशानदे-वेन्द्रस्य रामाराज्याः राजधानी।

जीवा० ३६५। *स्था० २३१*। नेमनाथशिबिकानाम। *सम० १५१*। उत्तरकुरुः। *आव० ११६*। मेरोर्जम्बूद्वीपगतः उत्तरतः उत्तरकुरुनामा विदेहः। *जम्बू० ३१०*।

उत्तरकुरु– कुरुविशेषः। *जीवा० २६६*। वापीनाम। *जम्बू० ३७०*। नेमनाथस्य शिबिका। *उत्त० ४९२*। साकेतनगरे उद्यानम्। *विपा० ९५*। *आव० ११५*। क्षेत्रविशेषः। *स्था० ६८*। अकर्मभूमिविशेषः। *प्रज्ञा० ५०*।

उत्तरकुरुकूडे– उत्तरकुरुदेवकूटं। *जम्बू० ३३७*।

उत्तरकुरुदहे– उत्तरकुरो महाद्रहः। *स्था० ३२६*। उत्त-रकुरुह्रदः द्रहविशेषः। *जम्बू० ३३०*।

उत्तरकुरुवत्तव्वया– उत्तरकुरुवक्तव्यता। *भग० २७६*।

उत्तरकूरुकुड– उत्तरकुरुकूटं–गन्धमादनपर्वते चतुर्थकूटः। *जम्बू० ३१३*।

उत्तरकूलग– गङ्गाया उत्तरकूल एव वास्तव्यम्। *भग० ५१९*। *औप० ९०*।

उत्तरकूला– उत्तरकूलगा–गङ् गोत्तरकूलवास्तव्यास्तापसाः। *निर० २५*।

उत्तरखत्तियकुंडपुर– नगरविशेषः। *आचा० ४२१*।

उत्तरगंधारा– उत्तरगान्धारा–गान्धारस्वरस्य पञ्चमी मूर्छना। *जीवा० १९३*। गान्धारग्रामस्य पञ्चमी मूर्छना। *स्था० ३९३*।

उत्तरगज्जभो– उत्तरगर्जभः–वातविशेषः। *आव० ३८७*।

उत्तरगुणनिर्मितः– पुरुषप्रायोग्याकारवन्ति द्रव्याणि। *आव० २७७*।

उत्तरगुणनिर्वर्त्तितः– यस्तु काष्ठाचित्रकर्मादिष्वालिखितः सः। *बृह० १४३ अ*।

उत्तरगुणपच्चक्खाण– उत्तरगुणप्रत्याख्यानम्। *आव० ४७९*।

उत्तरगुणलद्धिं– उत्तरगुणाः– पिण्डविशुद्ध्यादयस्तेषु चेह प्रकमात्तपो गृह्यते ततश्च उत्तरगुणलब्धिं–तपोलब्धिम्। *भग० ७९५*।

उत्तरगुणा– दशविधप्रत्याख्यानरूपाः। *भग० ८९४*। *निशी० १६६ अ*। मूलगुणापेक्षया स्वाध्यायादीन्। *उत्त० ५३६*।

उत्तरगुणे– उत्तरगुणविषयं–कीतकृतादि। *आव० ३२५*।

उत्तरचूलियं– उत्तरचूडम्, यद् वन्दनं कृत्वा पश्चान्महता शब्देन मस्तकेन वन्द इति भणति, कृतिकर्मणि एकोनत्रिंशत्तमो गुणः। *आव० ५४४*।

उत्तरज्झ– उत्तराध्यः–उत्तराध्ययनम्। तृतीया निर्युक्तिः। *आव० ६१*।

उत्तरज्झयणा– उत्तराध्ययनानि। *आव० ७५१*।

उत्तरज्झयणाइं– उत्तराध्ययनानि–सर्वाण्यपि चाध्ययनानि प्रधानान्येव तथाऽप्यमून्येव रुढ्योत्तराध्ययनशब्दवाच्यत्वेन प्रसिद्धानि। *नन्दी० २०६*।

उत्तरज्झाए– उत्तराध्यायाः–उत्तराः–प्रधाना अधीयन्त इत्यध्यायाः– अध्ययनानि तत उत्तराश्च ते अध्यायाश्च। *उत्त० ७१२*।

उत्तरड्ढभरहकूड– उत्तरार्द्धभरतनाम्नो देवस्य निवासभूतं कूटं उत्तरार्धभरतकूटम्। *जम्बू० ७७*।

उत्तरणं– निरंतरं। *निशी० ७७ अ*। एक्काए चेव अप्पो य गच्छा मे उत्तरणं। *निशी० ७७ आ*। तुंबोडुपादि-भिर्नौवर्जितैर्यद् उत्तीर्यते तद् उत्तरणम्। *बृह० १६१ अ*। जत्थ तरंतो जलं संघट्टेति तं सव्वं उत्तरणं भन्नति। *निशी० ७८ आ*।

उत्तरद्दारिता– उत्तरद्वारिका। *स्था० ४२४*।

उत्तरद्धे– उत्तरार्द्धे–उत्तरभागे। *जम्बू० ४८२*।

उत्तरपओगकरणं– उत्तरप्रयोगकरणं, जीवप्रयोगकरण–द्विती-यभेदः। *आव० ४५८*।

उत्तरपट्टो– उत्तरपट्टकः। *ओघ० २१७*। उत्तरपट्टः। *ओघ० ८३*।

उत्तरपदव्याहतं– गत्यागतिलक्षणे द्वितीयो भेदः। *आव० २८१*।

उत्तरपरिकर्मक्रियते– उद्ध्रियते। *आव० ७६५*।

उत्तरपासो– उत्तरपार्श्वः। *जीवा० २०४, ३५९*।

उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ– उत्तरपूर्वेण, उत्तरपूर्वस्यां दिशि। *जीवा० १४४*।

उत्तरपुरच्छिमे– औत्तरपौरस्त्यः, उत्तरपूर्वारूपो दिग्विभागः–ईशानकोणः। *सूर्य० २*।

उत्तरपुरत्थिमेल्लं– उत्तरपूर्वे, ईशाने कोणे इत्यर्थः। *सूर्य० २१*।

उत्तरपुव्वा– ईशानकोणः। *आव० ६३०*।

उत्तरफग्गुणी– उत्तरफाल्गुनी, हस्तोत्तरा। *आव० २५५*।

उत्तरबलिस्सहगणे– गणविशेषः। *स्था० ४५१*।

उत्तरभद्रपदाः– प्रोष्ठपदाः। सूर्य *११४*।

उत्तरमंदा– उत्तरमन्दाभिधा गान्धारस्वरान्तर्गता सप्तमी मूर्च्छा। *जम्बू० ३८*। मध्यमग्रामस्य प्रथमा मूर्छना। *स्था० ३९३*। गान्धारस्वरस्य सप्तमी मूर्छना। *जीवा० ३९३*।

उत्तरमहुर– वणिग्विशेषः। *निशी० २१०* अ।

उत्तरवाए– उत्तरवादः–उत्कृष्टवादः। *आचा० २४३*।

उत्तरवेउव्विते– उत्तरवैक्रियम्। *प्रज्ञा० २९८*।

उत्तरवेउव्वियं– उत्तरवैकुर्विकम्, उत्तरमुत्तरकालभवि–नस्वभविनस्वभाविकमित्यर्थः, वैकुर्विकं विकुर्वणं तेन निर्वृत्तं वैकुर्विकम्। विशिष्टवस्तू विशिष्टाभरणसुश्लिष्टतत्परिधान-समीचीनकुङ् कुमाद्युपलेपनजनितमतिमनोहारिरामणीयकम्। *व्यव० ११५* आ। उत्तरवैक्रियम्–पूर्ववैक्रियाऽपेक्षयोत्तर-कालभावि वैक्रियम्। *भग० ७२*।

उत्तरवेउव्विया– उत्तरवैक्रिया, तद्ग्रहणोत्तरकालं कार्यमाश्रित्य या क्रियते सा। *अनुयो० १६३*।

उत्तरसत्तासुओ– उत्तरसत्त्वासुकः, उत्तरपौरस्त्यवातभेदः। *आव० ३८६*।

उत्तरसाढा– उत्तराषाढा, अकम्पितजन्मनक्षत्रम्। *आव० २५५*।

उत्तरसाला– अत्थानिगादिमंडवो हयगयाण वा साला उत्तर-साला। *निशी० ३९६* अ।

उत्तरा– उत्तरमथुरा। *आव० ६८८*। उत्तरवाचाला। *आव० १९५*। उत्तराभाद्रपदा–उत्तराफाल्गुनी "उत्तराषाढा"। *जम्बू० ५०२*। उत्तरमथुरा। *आव० ३५६*। बोटिकशिव–भूते-र्भगिनी। *आव० ३२४*। मध्यमग्रामस्य तृतीया मूर्छना। *स्था० ३९३*।

उत्तरापथे– देशविशेषः। *निशी० ४४* अ।

उत्तरावक्कमणं– उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणं–अवतरणं यस्मात्तद् उत्तरापक्रमणम्–उत्तराभिमुखं पूर्वं तु पूर्वाभिमुखमासीदिति। *भग० ४७७*। उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणं–अवतरणं यस्त्तदुत्त-रापक्रमणं–उत्तराभिमुखम्। *ज्ञाता० ५६*।

उत्तरावह– उत्तरापथः, उत्तरदिग्विभागः। *आव० ९९*। *निशी० ९३* आ। उत्तरदिक्सम्बन्धी देशः। *आव० ८३०, २९४*। *बृह० २२७* अ। *निशी० १६* अ।

उत्तरासंग– उत्तरासङ्गः, वक्षसि तिर्यग्विस्तारितवस्त्रविशेषः। *जम्बू० १८७*। उत्तरीयस्य देहे न्यासविशेषः। *भग० १३८*।

उत्तासणगं– उत्त्रासनकं–भयङ्करम्। *ज्ञाता० १३३*।

उत्तरासमा– मध्यमग्रामस्य चतुर्थी मूर्छना। *स्था० ३९३*।

उत्तरासाढा– उत्तराषाढानां–उत्तराषाढापर्यन्तानां नक्षत्रा-णाम्। सूर्य *११४*।

उत्तरासाढाणक्खत्ते– उत्तराषाढानक्षत्रम्। सूर्य *१३०*।

उत्तरित्तए– उत्तरीतुं–लङ्घयितुम्। *स्था० ३०९*।

उत्तरिज्ज– उत्तरीयम्–उत्तरासङ्गः। *जम्बू० १८९*। *भग० ३१९*। वसनविशेषः। *भग० ४६८*। उपरिकायाच्छादनम्। *ज्ञाता० २७*।

उत्तरिज्जयं– उत्तरीयकं–उपरितनवसनम्। *उपा० ५०*।

उत्तरीकरणं– उत्तरकरणं पुनः संस्कारद्वारेणोपरिकरणमुच्यते, उत्तरं च तत् करणं च इत्युत्तरकरणं, अनुत्तरमुत्तरं क्रियत इत्युत्तरीकरणम्। *आव० ७७९*।

उत्तरीयं– प्रावरणं प्रच्छदपटीत्यर्थः। उत्तरीयं पुनर्यत् तदुपरि प्रस्तीर्यते। *बृह० ९८* अ।

उत्तरोट्ठरोमा– दाढियाओ। *निशी० १९०* अ।

उत्तरो– उत्तरग्रहणात् संजतसम्मदिट्ठिग्गहणं। *निशी० ६३* अ।

उत्ताणग– उत्तानः। *आव० ६४८*। उत्तानकाः–ऊर्ध्वमुख–शायिनः। *जम्बू० २३९*।

उत्ताणतो– उत्तानकः। *उत्त० २४४*।

उत्ताणयं– उत्तानकं–उत्तानीकृतम्। *प्रज्ञा० १०७*। उत्तानकम्-ऊर्ध्वमुखम्। *उत्त० ६८५*। *भग० १२५*।

उत्ताणा– उत्ताना। *स्था० २९९*।

उत्तानं– स्पष्टम्। *प्रज्ञा० ५९९*। प्रतलम्। *स्था० २७८*। स्वच्छतयोपलभ्यमध्यस्वरूपत्वम्। *स्था० २७८*।

उत्तारंती– अवतारयन्ती। *आव० ६७६*।

उत्तारो– उत्तारः–अधस्तादवतरणम्। *जीवा० २६९*। जलमध्याद्बहिर्विनिर्गमनम्। *जीवा० १९७*।

उत्तालं– उत्त–प्राबल्यार्थे। इत्यतितालमस्थानतालं वा। *स्था० ३९६*। *अनुयो० १३२*। उत्–प्राबल्येन अतितालं अस्थानतालं वा। *जम्बू० ४०*। *जीवा० १९४*।

उत्तालिज्जंताणं– आलपनम्। *राज० ४६*।

उत्तासणओ– उद्वेगजनकः। *स्था० ४६१*।

उत्तासणयं– उत्त्रासनिका–स्मरणेनाप्युद्वेगजनिका। *भग० १७५*।
उत्तासिया– उत्तासिता–आस्फालिता। *भग० १५४*।
उत्तिंग– उत्तिङ्गः–पिपीलिकासन्तानकः। *आचा० २८५*। तृणाग्रः। *आचा० ३२२*। रन्ध्रम्। *आचा० ३९७*। उदगं हत्थादिणा पिहेति। *निशी० ६३* आ। किटिकानगरम्। *दशवै० १७५*। सर्पच्छत्रादिः। *दशवै० २२९*। गर्दभाकृतिजीव-विशेषः, कीटिकानगरं वा। *आव० ५७३*। कीलियावासो। *निशी० २५५* आ। कीडयणगरगो उत्तिंगो, फरुगद्दभो वा। *निशी० ८३* अ। कीटिकानगरम्। *बृह० १६६* आ। छिद्रं। *निशी० ६३* आ। कीडियानगरयं। *दशवै० ८०*।
उत्तिंगसुहुम– उतिङ्गसूक्ष्मं–कीटिकानगरम्। *दशवै० २३०*।
उत्तिण्णो– उत्तीर्णः–अवतीर्णः। *ओघ० २०*।
उत्तिन्न– अवतीर्णः। *दशवै० १९५*।
उत्तिमं– उतमम्–श्रेष्ठम्। *आव० ४८७*।
उत्तिमट्ठो– उत्तमार्थः–अनशनम्। *बृह० १००* अ। उत्तमार्थः–कालधर्मः। *आव० ६२६*। भक्तप्रत्याख्यानम्। *आव० ५६३*।
उत्ती– उक्तिः, शब्दकरणम्। *आव० ४६४*।
उत्तुअणा– उत्तेजना। *बृह० ७२* आ।
उत्तुइउ– (देशी०) गर्वे। *व्यव० २१०* आ।
उत्तुइया– उत्तेजिता। *बृह० २७* आ।
उत्तुडियाइ– राज्यादि। *आव० ५५५*।
उत्तुपियं– उत्तुपितं–स्नेहितम्। *प्रश्न० ५९*।
उत्तेड– बिन्दुः। *पिण्ड० १०*।
उत्तेत्ता– अपवर्त्त्य। *आव० ६२४*।
उत्थरंत– आस्तृण्वन्–आच्छादयन्। *प्रश्न० ४७*।
उत्थरमाणो– अभिभवन्। *आव० ५६७*।
उत्थल– उन्नतानि–स्थलानि धूल्युच्छ्रयरूपाणि। *जम्बू० १६८*।
उत्थल्लं– *ओघ० १९२*।
उत्था– उत्थानं–मूलोत्पत्तिम्। *उत्त० ४७५*।
उत्थाण– अतिसारः। *व्यव० २७४* अ।
उत्थिए– यूथं–सङ्घान्तरं, तीर्थान्तरमित्यर्थः। *उपा० १३*।
उत्थितवादः– उत्थितस्तद्वादः। *आचा० २०३*।
उत्थिय– उत्थियः–यूथिकः। *भग० ३२४*।
उत्थुमण– अवस्तोभनम्, अनिष्टोपशान्तये निष्ठीवनेन थुथुकरणम्। *बृह० २१५* अ।
उत्पला– हस्तिनागपुरे भीमस्य भार्या। *स्था० ५०७*।
उत्पलिनीकन्द– पद्मिनीकन्दः। *प्रज्ञा० ३७*।
उत्पातनिपातप्रसक्तसंकुचितप्रसारितरेक्करचितभ्रान्तसम्भ्रान्तः– एकत्रिंशत्तमो नाट्यविधिः। *जीवा० २४७*।
उत्पादपूर्व– प्रथमपूर्वनाम। *उत्त० ३४२*।
उत्पादसभा– उत्पादभवनविमानभाविनी सभा। *प्रश्न० १३५*।
उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलं– स्वविषये श्रोतृणां जनितमविच्छिन्न कौतुकं येन तत्तथा। षड्विंशतितमो वचनातिशयः। *सम० ६३*।
उत्प्रास्यमान– उन्नतमाना–गर्वाध्मातो महता चारित्रमोहेन मुह्यति संसारमोहेन वोह्यत इति। *आचा० २१६*।
उत्प्लुत– भीतः। *ज्ञाता० १६१*।
उत्प्लृत्य– वृद्ध्यागत्वा। *सूर्य० ४७*।
उत्सकलय– अनुजानीहि। *ओघ० ६८*।
उत्सर्पण– क्रियाविशेषः। *आचा० ३६४*।
उत्साहः– सूत्रार्थपरावर्तनायामभियोगः। *बृह० ११३* आ।
उत्सित्कं– काञ्जिकस्य सौवीरिणीतो यद् निष्काशनं तत्। *बृह० २७५* अ।
उत्सूर– वेलातिक्रमः। *पिण्ड० ७१*।
उत्सृ(च्छ्र)तम्– प्रासादादि। *आव० ८२६*।
उत्सृष्टम्– उत्सर्जनम्–त्यागः। *आचा० ३६२*।
उत्सेधबहुलं– उत्सेधाख्यो नाभेरधस्तनो देहभागो गृह्यते, ततः सह आदिना-नाभेरधस्तनभागेन यथोक्तप्रमाणपलक्षणेन वर्तत इति सादि, उत्सेधबहुलमिति भावः। *जीवा० ४२*।
उदंक– उदङ्को–येनोदकमुदच्यते। *जम्बू० १०१*। *जीवा० २६६*।
उदंचनम्– अरघट्टघटीनिवहादिभिरुत्सेचनम्। *उत्त० ५९९*। *पिण्ड० १५३*।
उदंत– सरीरवट्टमाणी, वत्ता। *निशी० १३३* अ। उदन्तः–वृत्तान्तः। *आव० ६१२*।
उदंतवाहगो– उदन्तवाहकः, वृत्तान्तवाहकः। *आव० ५३६*।

उदंतवाहतो– उदन्तवाहकः–दूतः। *उत्त॰ १०८*।

उदइए– उदयः–कर्म्मणां विपाकः स एवौदयिकः–क्रियामात्रं, उदयेन निष्पन्नः औदयिकः। *भग॰ ६४९, ७२२*। औद-यिकः–ज्ञानावरणादीनामष्टानां प्रकृतीनामात्मीयात्मीयस्व-रूपेण विपाकतोऽनुभवनमुदयः स एव, यथोक्तेन वोदयेन निष्पन्नः। *अनुयो॰ ११४*।

उदई– उदयः–अनुक्रमोदितस्यैवेति। *भग॰ ५१२*। अनुक्रमगतानामुदयः। *भग॰ ९७३*।

उदउल्ल– उदकार्द्रः, यद् बिन्दुसहितं भाजनादि गलद् बिन्दु-रिति। *ओघ॰ १७०*। स्पष्टोपलभ्यमानजलसंसर्ग, अप्काय-म्रक्षितचतुर्थभेदः। *पिण्ड॰ १४९*। उदकेनार्द्रः। *अनुयो॰ १६०*। गलद्बिन्दुः। *आचा॰ ३४६, ३७९*।

उदउल्लादि– उदकार्द्रादि। *आव॰ ५२*।

उदए– पर्वगवनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। उदयः। *ओघ॰ ११३*। उदकः-अन्ययूथिकः। *भग॰ ३२३*। पेढालपुत्रो निर्ग्रन्थः। *सूत्र॰ ४०९*। षष्ठ आजीविकोपासकः। *भग॰ ३६९*। जलरुहवनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१, ३३*। जम्बू-द्वीपभरते आगामिसप्तमतीर्थंकरः। *सम॰ १५३*। तृतीय-तीर्थकृत्पूर्वभवनाम। *सम॰ १५४*। उदयः-जीवगतो लेश्या-दिपरिणामः, फलप्रदानाभिमुख्यलक्षणं कर्म। *उत्त॰ ३५*। उदयः-विपाकवेदनानुभवरूपः। *पिण्ड॰ ४१*। उदकः। *प्रश्न॰ २२*। निर्ग्रन्थविशेषः। *सूत्र॰ ४०७*।

उदएचरा– उदकचराः-उदके चरन्तीति उदकचराः-पूतरक–च्छेदनकलोड्डणकत्रसा मत्स्यकच्छपादयः। *आचा॰ २३८*।

उदकं– जलरुहविशेषः। *जीवा॰ २६*। जलरुहभेदः। *आचा॰ ५७*।

उदकगृहम्– उदकभवनम्। *आचा॰ ३४१, २३८*।

उदकप्रतिष्ठापनमात्रक– उपकरणधावनोदकप्रक्षेपस्थानम्। *आचा॰ ३४१*।

उदकरजः– उदकरेणुसमूहः। *औप॰ ४७*। *जीवा॰ १९१*।

उदकार्द्र– बिन्दुसहितं। *बृह॰ २८२* आ।

उदग– उदकं। *सूत्र॰ ३०७*। अणंतवणप्फई। *दशवै॰ १२०*। *निशी॰ ७९* अ। उदकम्-अनन्तवनस्पति-विशेषः। *दशवै॰ २२९*। नगरपरिखाजलम्। *ज्ञाता॰ १०*। जलाश्रयमात्रम्। *भग॰ ९२*। जनपदसत्यत्वे पथः, उदका-दिपर्यायः। *दशवै॰ २०८*। पूत्युदकोपमानतः खल्वन्नपानमुप-भोक्तव्यम्। साधोरुपमानम्। *दशवै॰ १९*। शिरापानीयम्। *दशवै॰ १५३*।

उदगगब्भे– उदकगर्भः-कालान्तरेण जलप्रवर्षणहेतुः। *भग॰ १३३*।

उदगजोणिया– उदकस्य योनयः-परिणामकारणभूता उदक-योनयः त एवोदकयोनिका-उदकजननस्वभावा। *स्था॰ १४२*।

उदगणाए– षष्ठाङ्गे द्वादशं ज्ञातम्। *उत्त॰ ६१४*। उदकं-नगरपरिखाजलं तदेव ज्ञातं-उदाहरणं उदकज्ञातम्। *ज्ञाता॰ १०*। *सम॰ ३६*। ज्ञाताया द्वादशमध्ययनम्। *आव॰ ६५३*।

उदगतीरं– उदगागारातो जत्थ णिज्जति उदगं तं उदगतीरं, दूरंपि णज्जति उदगं तम्हा ण होइ तं उदगतीरं, तो जत्तियं णदीपूरेण अक्कमति तं उदगतीरं, अहवा जहिं ठिएहिं जलं दीसति अहवा णदीए तडीए उदगतीरं, अहवा जहिं ठितो जलट्ठिएण सिंचति सिंधुगंगादिणा तं जलतीरं, अहवा जाव-तियं विविओ फुसंति अहवा जावतितं जलेण फुडं तं उदग-तीरं। *निशी॰ १६* आ।

उदगत्तामा– गौतमगोत्रोत्तरभेदः। *स्था॰ ३९०*।

उदगदोणी– उदगदोणी वा-अरहट्टस्स भवति जीए अवरिं घडीओ पाणियं पाडेंति। अहवा घरंगणए कट्ठमयी अप्पोदएसु देसेसु कीरइ तत्थ मणुस्सा ण्हावेंति। *दशवै॰ ११०*। जलभाजनं यत्र तप्तं लोहं शीतलीकरणाय क्षिप्यते। *भग॰ ६९७*। उदकद्रोणिः-अरहट्टजलधारिका। *दशवै॰ २१८* आ।

उदगपउरो– उदकप्रचुरः-देशविशेषः सिन्धुविषयवत्। *बृह॰ १३८* आ।

उदगपडणं– उदकपतनम्। *आव॰ २७३*।

उदगबिंदु– उदकबिन्दुः। *अनुयो॰ १६१*।

उदगभाविया– जा, उदके छूढपुव्वा सा। *निशी॰ ४६*।

उदगभासो– उदकभासः-शिवकभुजगेन्द्रस्यावासपर्वतः। *जीवा॰ ३११*।

उदगमच्छ– उदकमत्स्यः-इन्द्रधनुःखण्डम्। *भग॰ १९६*। इन्द्रधनुषः खण्डम्। *जीवा॰ २८३*। इन्द्रधनुःखण्डानि। *अनुयो॰ १२१*।

उदगमाला– उदकमाला-समपानीयोपरिभूता माला। *जीवा० ३२४*। उदकशिखा, वेलेत्यर्थः। *स्था० ४८०*।

उदगवलणी– *निशी० २४अ*।

उदगवारगसमाणं– उदकवारकसमानं-लघुपानीयघटसमानम्। *जीवा० १२२*।

उदगावत्तं– उदकावर्त्तोदकबिन्दोर्मध्ये अवगाह्य तिष्ठेदित्यर्थः। *अनुयो० १६१*।

उदग्ग– उदग्रः-उन्नतपर्यवसानेन उत्तरोत्तरं बुद्धिमान्। *भग० १२५*। उच्चं, समुच्छ्रितशिर इत्यर्थः, प्रधानः, बहिः। *जीवा० ३४३*। उदग्र-उच्चः। *ज्ञाता० ६६*। उदग्रः-तीव्रः। *ज्ञाता० ७६*।

उदड्ढे– रत्नप्रभायां अपक्रान्तमहानरकः। *स्था० ३६५*।

उदतण– उदयणं-उदयगामि, प्रवर्द्धमानं। *स्था० ३४२*।

उदत्त– तुदत्रम् भूमिस्फोटनशस्त्रविशेषः। *आव० ८२९*। उदात्तः-उन्नतभाववान्। *भग० १२५*।

उदधि– जलनिचयः। *स्था० १७७*।

उदपानं– कूपः। *बृह० १८३अ*।

उदप्पील– उदकोत्पीलः-तडागादिषु जलसमूहः। *भग० १९९*।

उदब्भेया– उदकोद्भेदः -गिरितटादिभ्यो जलोद्भवः। *भग० १९९*।

उदय– उदीरणावलिकागततत्पुद्गलोद्भूतसामर्थ्यता। *आव० ७७*। आयामः। *भग० १८७*। पनक। *भग० १८७*। पेढालपुत्रः। पार्श्र्वाजिनशिष्यः। *स्था० ४५७*। भाविया। *निशी० २६४आ*।

उदयट्ठी– उदयार्थी, लाभार्थी। *सूत्र० ३९४*।

उदयण– उदयनः-वीणावत्सराजः। *उत्त० १४२*।

उदयणकुमारं– उदयनकुमारं, मृगावतीपुत्रः। *आव० ६७*।

उदयणमाया– उदयनमाता, भावप्रतिक्रमणदृष्टान्ते मृगावती आर्या। *आव० ४८५*।

उदयनिप्पन्ने– औदयिकभावस्य द्वितीयभेदः। *भग० ७२२*।

उदयपहो– उदकपथः, लोकानां जलानयनमार्गः। *आव० ६४०*।

उदयभासे– वेलन्धरनागराजस्यावासः। *स्था० २२६*।

उदयवद्दलं– उदकवर्द्दलं भाविरेणुसन्तापोपशान्तये। *आव० २३०*।

उदयवर्तित्वं– समुदयः, समुदायो वा। *प्रश्न० ६३*।

उदयास्तान्तरं– तापक्षेत्रम्। *जम्बू० ४४२*। प्रकाशक्षेत्रं, तापक्षेत्रम्। *जम्बू० ४५५*।

उदरपोप्पयं– उदरामर्शनम्। *आव० ६६*।

उदरवलिमंसं– उदरवलिमांसं, उदरोपरि या वलयाकारा मांसरेखा तस्या मांसं। *आव० ६७८*।

उदरिं– वातपित्तादिसमुत्थमष्टधोदरं तदस्यास्तीत्युदरी। *आचा० २३५*। उदरी-जलोदरी। *प्रश्न० १६१*।

उदवाहा– उदकवाहाः-अपकृष्टान्यल्पान्युदकवहनानि। *भग० १९९*।

उदसि– उदस्वित्। *निशी० ६अ*।

उदहिकुमारा– उदधिकुमाराः-वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्दे-शवर्त्तिनो देवाः। *भग० १९९*। भुवनपतिदेवविशेषः। *प्रज्ञा० ६९*।

उदहिकुमारीओ– उदधिकुमार्यः-वरुणस्याज्ञोपपातवचन-निर्देशवर्त्तिन्यो देव्यः। *भग० १९९*।

उदहिनामाणं– उदधिनाम्नाम्-आर्यसमुद्राणाम्। *आचा० २६२*।

उदहीसरिसनामाणं– उदधिः-समुद्रस्तेन सदृक्-सदृशं नाम-अभिधानमेषामुदधिसदृग्नामानि -सागरोपमाणि। *उत्त० ६४७*।

उदाइ– उदायी-कूणिकराज्ञो हस्ती। *भग० ३१७*। नृपविशेषः। *आव० ६८७*। *भग० ६७३, ६७५*।

उदाइमारक– साधुवेषधारकः। *निशी० २९३आ*।

उदाइमारय– श्रमणवेषधारको विनयरत्नमुनिः। *निशी० २३आ*।

उदाइयाए– असिवं उदाइयाए अभिद्दुत। *निशी० ९७अ*।

उदात्तं– उदात्तत्वं-उच्चैवृत्तिता। द्वितीयो वचनातिशयः। *सम० ६३*।

उदायण– वीतभयराजा। *भग० ६१८*। *निशी० १४५अ*। शतानीकराजपुत्रः। *विपा० ६८*। *भग० ५५६*। अन्तिमराजर्षिः। *स्था० ४३०*। उदायनः-विगतिद्वारे वीतभयनगराधिपतिः। *आव० ५३७*। *आव० २९८*। सौवीरराजवृषभो राजा। *उत्त० ४४८*। प्रद्योतराज्ये गान्धर्वविद्याप्रधानः। *आव० ६७३*। विदर्भकनगराधिपतिः। *प्रश्न० ८९*। अन्तिमराजर्षिः। *बृह० १६६अ*।

उदायितकुमारो– उदायिकुमारः-पद्मावतीपुत्रः। *आव० ६८३*।

उदायिनृपः– यः कृत्रिमसाधुभिर्मारितः। *सूत्र० २५०*। *आव० ५२९*। *सूत्र० ३६५*। *आचा० ९*।

उदायिनृपमारक– श्रमणवेषधारको मुनिः। *बृह० २०४* अ। *स्था० १८५*।

उदायिमारगो– उदायिमारकः-श्रमणवेषधारको मुनिः। *निशी० ३९* अ, *४१* अ।

उदायी– कूणिकराजस्य हस्तिराजः। *भग० ७२०*। कोणिकपुत्रः। *स्था० ४५६*।

उदार– उदारं-उद्भटम्। *जम्बू० २०३*। उदारत्वं-अभि-धेयार्थस्यातुच्छत्वं गुम्फगुणविशेषो वा। द्वाविंशतितमो वच-नातिशयः। *सम० ६३*। शोभनं। *स्था० २३३*। प्रधानम्। *प्रज्ञा० २३९*। *स्था० २९५*। तीर्थंकरगणधरशरीरापेक्षया शेषशरीरेभ्यः प्रधानं, सातिरेकयोजनसहस्रमानत्वा-च्छेषशरीरेभ्यो महाप्रमाणं वा। *अनुयो० १९६*। औदार्यवान्। *भग० १२५*।

उदाला– उदाराः-महान्तः। *उत्त० ४१९*।

उदाहड– भणिया। *निशी० ४९* आ।

उदाहरण– चरितकल्पितभेदम्। *आव० ५९७*। कथनम्। *उत्त० ३२२*। उदाहरणम्-साध्यसाधनान्वयव्यतिरेकप्रदर्शन-मुदाहरणं, दृष्टान्तः। *दशवै० ३३*।

उदाहरे– उदाहरेत्-उदाहृतवान्। *उत्त० २४१*।

उदाहु– उताहो निपातो विकल्पार्थः। *भग० १७*। *भग० २३७*। उक्तवान्। *आचा० १२८*। आहोश्वित्। *उपा० ३८*।

उदिए– उदितः उदयं प्राप्तः, स्थित इत्यर्थः। *जम्बू० ५२८*।

उदिओदए– उदितोदयः, कायोत्सर्गदृष्टान्ते राजा। *आव० ७९९*। पारिणामिकीबुद्धौ पुरिमतालपुरे राजा। *आव० ४३०*। उदितोदितः-पुरिमतालनगराधिपतिः। *विपा० ५८*। श्रीकान्तापतिः। *नन्दी० १६६*।

उदिक्खंते– प्रतीक्ष्यमाणः। *बृह० ११६* आ।

उदिण्णं– उदीर्णम्-पीडितम्। *आव० ८६३*। विपाकोदयमाग-तम्। *प्रज्ञा० ४०३*।

उदिण्णं– उदीर्णम्-स्वत उदीरणाकरणेन वोदितम्। *भग० ९०*।

उदिण्णमोह– उदीर्णमोहः-उत्कटवेदमोहनीयः। *भग० २२३*।

उदीणपाइणं– उदवेग उदीचीनं प्रागेव प्राचीनं उदीचीनं च तदु-दीच्या आसन्नत्वात् प्राचीनं च तत्प्राच्याः प्रत्यासन्नत्वाद् उदीचीनप्राचीनम्-दिगन्तरं क्षेत्रदिगपेक्षया पूर्वोत्तरदिगित्यर्थः। *भग० २०७*। उदीचीनं च तदुदीच्या आसन्नत्वात् प्राचीनं च प्राच्याः, प्रत्यासन्नत्वादिति। *जम्बू० ४८०*।

उदीणवाए– यः उदीच्या दिशः, समागच्छति वातः स उदीचीनवातः। *जीवा० २९*। यः उदीच्या दिशः समा-गच्छति वातः स उदीचीनवातः। *प्रज्ञा० ३०*।

उदीर– उदिरिंसु *३* उदयप्राप्ते दलिके अनुदितांस्तान् आकृष्य करणेन वेदितवन्तः *३*। *स्था० २८९*। उदीरितवन्तः-अध्यवसायवशेनानुदीर्णोदयप्रवेशनतः। *स्था० १७९*।

उदीरइ– उदीरयति-प्राबल्येन प्रेरयति, पदार्थान्तरं प्रतिपादयति वा। *भग० १८३*।

उदीरण– अनुदयप्राप्तस्य करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणमिति। *स्था० १०१, १९५*। उदीरणम्-अनुदितस्य करणविशेषा-दुदयप्रवेशनम्। *भग० ५३*। उदीरणाकरणवशतः कर्मपुद् गलानामनुदयप्राप्तानामुदयावलिकायां प्रवेशनम्। *प्रज्ञा० २९२*। करणेनाकृष्य दलिकस्योदये दानम्। *स्था० ४१७*।

उदीरणा– अप्राप्तसमये उदयप्रापणं सैव उदीरणा। *जम्बू० १६८*। अप्राप्तकालफलानां कर्मणामुदये प्रवेशनम्। *स्था० २२१*।

उदीरणाभवियं– उदीरणाभविकम्-तत्र भविष्यतीति भवा सैव भविका, उदीरणा भविका यस्येति, उदीरणायां वा भव्यं-योग्यमुदीरणाभव्यमिति। *भग० ५८*।

उदीरिए– उदीरणम्-स्थिरस्य सतः प्रेरणम्। *भग० १८*। उदीरणा-उदीरणा नाम अनुदयप्राप्तं चिरेणाऽऽगामिना कालेन यद्वेदयितव्यं कर्मदलिकं तस्य विशिष्टाध्यवसायलक्षणेन करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणं। *भग० १५*।

उदीरिय– उत्-प्राबल्येनेरितं-प्रेरितं उदीरितं। *जीवा०१९२*।

उदीरिया– उदीरिताः-स्वभावतोनुदितान् पुद् गलानुदयप्राप्ते कर्मदलिके करणविशेषेण प्रक्षिप्य यान् वेदयते। भग *२४*। उदीरिता-उदयमुपनीता, वेदिता। *भग०*

१८५।
उदीरेंतं– उदीयरन्तं-वस्त्वन्तरं प्रेरयन्तम्। *स्था०३८५*।
उदीरेइ– उदीरयति-भणति, प्रवर्त्तयति। *स्था० १९७*।
उदुम्बर– द्वितीयं महाकुष्ठम्। *प्रश्न० १५१*।
महाकुष्ठविशेषः। *आचा० २३५*।
कर्मविपाकस्याष्टममध्ययनम्। *स्था० ५०८*।
खाद्यवृक्षविशेषः। *आव० ८२८*।
उदुम्बरदत्त– सागरदत्तसार्थवाहसुतः। *स्था० ५०८*।
उदुरुसेज्जा– रुष्येत्। *निशी० ४९* आ।
उदुसुहं– ऋतुसुखं, ऋतुशुभं वा-कालोचितम्। *प्रश्न० १४१*।
उदु, उडू– द्विमासप्रमाणकालविशेष ऋतुः। *स्था० ३६९*।
उदूखल– काष्ठनिमित्तं खण्डनोपयोगि शस्त्रम्। *भग०२१३*। *आचा० ३४४*।
उदूरूढो– पडिनियत्तो। *निशी० १८४* अ।
उदो– उदः-म्लेच्छविशेषः। चिलातदेशनिवासी। *प्रश्न०१४*।
उद्गमनप्रविभक्ति– चन्द्रसूर्ययोरुद्गमनं-उदयनं तत्प्रवि-भक्तीरचना तदभिनयगर्भं यथा उदये सूर्यचन्द्रयोर्मण्डलमरुणं प्राच्यां चारुणः प्रकाशस्तथा यत्राभिनीयते तदुद्गमनप्रवि-भक्ति। षष्ठो नाट्यविधिः। *जम्बू० ४१६*।
उद्गीर्ण– वान्तम्। *उत्त० ३३९*।
उद्ग्राहितं– मेलितम्। *नन्दी० १५९*।
उद्घाटितः– प्रकाशितः, प्रकटितः। *स्था० ४१२*।
उद्घाटितज्ञः– प्रथमो विनेयः। *प्रज्ञा० ४२५*।
उद्घेट्टका– उड्डंच्चका। बृ-० ६० आ।
उद्दंडगा– ऊद्र्ध्वकृतदण्डाः ये सञ्चरन्ति। *भग० ५११*।
उद्दंडपुर– नगरनाम। *भग० ६७५*।
उद्दंडा– ऊर्ध्वकृतदण्डा ये संचरन्ति। *निर० २५*।
उद्दंडुको– जनोपहास्यः। *बृह० २४२* अ।
उद्दंस– त्रीन्द्रियजीवभेदः। *उत्त० ६९५*।
उद्दंसगा– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा० ४२*।
उद्दंसे– उद्दंशः। *आव० २१७*।
उदए मारणंतिए– उदये मारणान्तिके वेदनोदये मारणा-न्तिकेऽपि न क्षोभः कार्यः। योगसंग्रहे एकोनत्रिंशत्तमो योगः। *आव० ६६४*।
उद्ददरं– सुभिक्खं। *निशी० ८९* अ। सुभिक्षं। *निशी० ३१५* अ। ऊद्र्ध्वदरं ते दरा ऊद्र्ध्वं यत्र पूर्यन्ते तदूद्र्ध्वदरम्। *बृह० १००* अ। दुविधा दरावण्णदरा य पोट्टदरा य, ते ऊद्धं पूरेंति जत्थ तं उद्ददरं-सुभिक्खं। *निशी० २२६* अ।
उद्दवणं– उत्थानं-नाशः। *बृह० ७९* अ।
उद्दवण– उपद्रावणम्-अतिपातविवर्जिता पीडा। *पिण्ड० ३७*।
उद्दवणकर– मारणान्तिकवेदनाकारि धनहरणाद्युपद्रवकारि वा। *औप० ४२*।
उद्दवणया– कूटपाशधारणता। *भग० ९३*। विज्जाए सप्पो अन्यत्र नीयते। *निशी० ३३५* अ।
उद्दवणा– उपद्रवणमपद्रवणं वा। प्राणवधस्य नवमः पर्यायः। *प्रश्न० ५*।
उद्दवातितगणे– गणविशेषः। *स्था० ४५१*।
उद्दविया– अवद्राविताः-उत्त्रासिताः। *आव० ५७४*। मारिताः। *भग० ७६६*।
उद्दवेंति– अपद्रावयन्ति-जीविताद् व्यपरोपयन्ति। *प्रज्ञा० ५९३*।
उद्दवेउं– उपद्राव्य। *उत्त० २०७*।
उद्दवेह– विनाशयत। *उपा० ४९*।
उद्दवेहिइ– अपद्रावयिष्यति-उपद्रवान् करिष्यति। *भग० ६११*।
उद्दाइंता– शोभमाना। *ज्ञाता० २७*।
उद्दाइ– उद्ददाति-रचयति। *भग० ९३*। उद्याति-जलस्यो-परि वर्त्तते। *भग० १८४*। अपद्रवति-म्रियते। *भग० १११*।
उद्दाइआ– उपद्राविका, उपद्रवकारिणी। *ओघ० १७*। उप-द्रोत्री। *ओघ० १५*।
उद्दाइत्ता– अपहृत्य-मृत्वा। *भग० १११*। अपद्राय-मृत्वा। *स्था० ४७१*। अवद्राय-मृत्वा। *जीवा० २६२*। *जम्बू० ४२५*।
उद्दाणं– उदाणं, वैधव्यम्। *आव० ४३७*।
उद्दाणगं– मृतकम्। *आव० ७००*।
उद्दाणभत्तारा– अपद्राणभतृका, भत्तारेण परिठविता। *निशी० १०९* आ।
उद्दाणि– उद्राः-सिन्धुविषये मत्स्यास्तत्सूक्ष्मचर्मनिष्पन्नानि उद्राणि। *आचा० ३९४*।
उद्दाम– उद्दामः-चरणनिपातजीवोपमर्द्दनिरपेक्षत्वाद् द्रुतचारी। *अनुयो० २६*।
उद्दामिया– उद्दामिता-अपनीतबन्धना, प्रलम्बिता। *विपा० ४६*।

उद्दायंति– अपद्रान्ति-प्राणैर्विमुच्यन्ते। *आचा० २१७*।

उद्दायणं– वीतभयणगरे राया। *निशी० ३४६* आ।

उद्दाल– उवदालः, विदलनं, पादादिन्यासे अधोगमनम्। विदलनम्। *जीवा० २३२*। *राज० ९३*।

उद्दालक– एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः। *जीवा० १४५*।

उद्दाला– उद्दालाः, द्रुमविशेषः। *जम्बू० ९८*।

उद्दालिओ– उद्दालितः-बलाद्गृहीतः। *आव० ७१७*। अपहृतः। *उत्त० ३०१*।

उद्दावणया– उत्त्रासनम्। *भग० १८४*।

उद्दावो– उद्दावः-स्थानान्तरेष्वद्याप्यसङ्कामितः। *जीवा० ३५५*।

उद्दाह– प्रकृष्टो दाहः। *स्था० ५०८*।

उद्दिक्खाहि– प्रतीक्षस्व। *निशी० ३२२* अ।

उद्दिट्ठ– यावदर्थिकाः पाखण्डिनः श्रमणान्-साधून् उद्दिश्य दुर्भिक्षापगमादौ यद्भिक्षावितरणं तदौद्देशिकमुद्दिष्टम्। *प्रश्न० १५३*। उद्दिष्टम्-स्वार्थमेव निष्पन्नमशनादिकं भिक्षाचराणां दानाय यत् पृथक्कल्पितं तत्। *पिण्ड० ७७*। उद्दिट्ठसरूवेण ओभासंति। *निशी० १६३* अ। भासति। *निशी० १६३* आ। वस्त्रैषणायाः प्रथमो भेदः। *आचा०२७७*। उद्दिष्टा-अमावास्या। *भग० १३५*।

उद्दिट्ठआदेसं– समणा निग्गंथ सक्क तावसा गेरुय आजीव एतेसु उद्दिट्ठआदेसं भण्णति। *निशी० २३०* आ।

उद्दिट्ठभत्तं– उद्दिष्टभक्तं-दानाय परिकल्पितं यद्भक्तपानादिकं तत्। *सूत्र० ३९१*।

उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए– उद्दिष्टं-तमेव श्रावकमुद्दिश्य कृतं भक्तं-ओदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्टभक्तप-रिज्ञातः, श्रमणोपासकस्य दशमी प्रतिमा। *सम० १९*।

उद्दिट्ठवज्जए– उद्दिष्टवर्जकः, श्रावकस्य दशमी प्रतिज्ञा। *आव० ६४६*।

उद्दिट्ठसमादेसं– णिग्गंथा-साहू। *निशी० २३०* आ।

उद्दिट्ठा– उद्दिष्टा-यस्याः स्थापनायाः उत्कृष्टा आरोपना ज्ञातुमिष्टा सा ईप्सिता। *व्यव० ७५* आ। अमावास्या। *जीवा० ३०५*। *स्था० २३७*। *राज० १२३*। उपदिष्टा। *औप० १००*। *विपा०९३*। कथिताः। *उत्त०२२९*।

उद्दिट्ठाओ– उद्दिष्टाः-सामान्यतोऽभिहिताः। *स्था० ३०८*।

उद्दिट्ठो– उद्दिष्टः-प्रतिपादितः। *सूत्र० १७६*।

उद्दित्ता– प्रज्वालितः। *बृह० ६१* आ।

उद्दिसति– उवसंपज्जते इत्यर्थः। *निशी० २९१* आ।

उद्दिसियवत्थं– गुरुसमक्षं उद्दिष्टं-प्रतिज्ञातं वस्त्रं उद्दिष्टवस्त्रम्। *बृह० ९७* आ।

उद्दिस्स– उदिश्य, उद्दिशति। *आचा० ३२५*।

उद्दिस्सपविभत्तगती– उद्दिश्यप्रविभक्तगतिः-प्रविभक्तं प्रतिनियतमाचार्यादिकमुद्दिश्य यत्तत्पार्श्वे गच्छति सा। विहायोगतेस्त्रयोदशो भेदः। *प्रज्ञा० ३२७*।

उद्दूढं– मुषितम्, (देशी०)। *बृह० १०५* अ। *निशी० २२७* अ।

उद्दूढसेस– जं लुंटागेहिं अप्पणट्ठा बाहिं णिणीतं तं भोत्तुं सेसं छड्डियं। *निशी० २०* आ।

उद्देस– उद्देशः-अध्ययनैकदेशभूतम्। *दशवै० ७*। वाचनासूत्र-प्रदानम्। *व्यव० २६* अ। उद्दिश्यते इति उपदेशः, सदस-त्कर्त्तव्यादेशः। नारकादिव्यपदेशः उच्चावचगोत्रादिव्यपदेशो वा। *आचा० १२४*। गुरुवचनविशेषः। *अनुयो० ४*। यावदर्थि-कादिप्रणिधानम् । *पिण्ड० ३५*। उद्देशनमुद्देशः-सामान्या-भिधानरूपः। *अनुयो० २५७*। उद्देशकः-द्वीपसमुद्रोद्देशकावय-वविशेषः। *भग० ७६९*। अध्ययनार्थदेशाभिधायी अध्यय-नविभागः। *भग० ५*। सामान्याभिधानमध्ययनम्। *आव० १०४*। गुरोः सामान्याभिधायि वचनम्। *उत्त० ७३*। उद्देसो अभिनवस्स। *निशी० २२३* आ। अविसेसिओ उद्देसो। *निशी० १०८* अ। क्षेत्रकालविभागः। *बृह० २६९*।

उद्देसग– उद्देशकः-त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३२*।

उद्देसणंतेवासी– उद्देशनान्तेवासी। *स्था० २४०*।

उद्देसणकाला– उद्देशनकालाः-उद्देशावसराः श्रुतोपचार-रूपाः। *सम० ४६*।

उद्देसणायरिय– उद्देशनाचार्यः, आचार्यविशेषः। *दशवै० ३१*।

उद्देसणायरिए– उद्देशनम्-अङ्गादेः पठनेऽधिकारित्वकरणं तत्र तेन वाऽऽचार्यः-गुरुः उद्देशनाचार्यः। *स्था० २४०*।

उद्देसिअ– उद्दिश्य कृतम् औदेशिकम्-उद्दिष्ट-कृतकर्मा-दिभेदम्। *दशवै० १७४*।

उद्देसिअचरिमतिग– उद्देशचरमत्रितयम्, औद्देशिकस्य पाख-ण्डश्रमणनिर्ग्रन्थविषयम्। *दशवै० १६२*।

उद्देसियं– उद्दिस्सं कज्जइ तं उद्देसियं, साधुनिमित्तं आरंभो। *दशवै० ५०*। इह यावन्तः केचन भिक्षाचराः समागच्छन्ति तावतः सर्वान् उद्दिश्य यत् क्रियते तत्।

*बृह० ८३*अ। औद्देशिकं-विभागौद्देशिकप्रथमो भेदः। इह यत् उद्दिष्टं कृतं कर्म वा यावन्तः केऽपि भिक्षाचराः समागमिष्यन्ति पाख-ण्डिनो गृहस्था वा तेभ्यः सर्वेभ्योऽपि दातव्यमिति सङ्कल्पितं भवति तदा तत्। *पिण्ड० ७९*। शबलस्य षष्ठो भेदः। *सम० ३९*। औद्देशिकं-यावदर्थिकादिप्रणिधानेन निर्वृत्तं, द्वितीय उद् गमदोषः। *पिण्ड० ३४*। औद्देशिकं-अर्थिनः पाखण्डिनः श्रमणान्निर्ग्रन्थान् वोद्दिश्य दुर्भिक्षात्ययादौ यद्भक्तं वितीर्यते तत्। *स्था० ४६६*। साध्वकल्प्यमशनादि। *दशवै० २०३*। उद्दिष्टंप्राक् सङ्कल्पितम्। *आचा० ३९७*।

उद्देसुद्देसं– उद्देशः-अध्ययनविषयः-तस्य उद्देशः उद्देशोद्देशः *आव० १०६*।

उद्देहगणे– गणविशेषः। *स्था० ४५१*।

उद्देहलिका– भूमिस्फोटकविशेषः। *आचा० ५७*।

उद्देहिका– काष्ठनिश्रितो जीवविशेषः। *आचा० ५५*।

उद्देहिगा– उद्देहिकाकृतवल्मीकमृत्तिका। *पिण्ड० २०*।

उद्देहिया– उद्देहिकाः, जन्तुविशेषः। *ओघ० १२६*। त्रीन्द्रियजीवविशेषः। *उत्त० ६९७*। त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३२*। *प्रज्ञा० ४२*।

उद्दोहक– उद्दोहकः-घातकः। उद्दहको वा-अटव्यादिदाहकः। *प्रश्न० ४६*।

उद्धंसणं– निर्भर्त्सनम्। *बृह० ९०*अ।

उद्धंसणा– उद्धंसना, उद्धुलना-आक्रोशः। *ओघ० ४५*। प्रवचनविषया हीला। *बृह० १८०*आ। दुष्कुलीनेत्यादिः कुलाद्यभिमानपातनार्थः। *ज्ञाता० २००*।

उद्धंसणाओ– अवहेलनाः। *आव० ६५*।

उद्धंसणाहिं– दुष्कुलीनेत्यादिभिः कुलाद्यभिमानपातनार्थै-र्वचनैः। *भग० ६८३*।

उद्धंसणो– वधः। *ओघ० २१५*।

उद्धंसिया– खरंटियाणि। *निशी० २१२*आ। उद्धर्षि-ता-खरंटिता। *बृह० २१७*अ। ओभासिया। *निशी० १९५*अ।

उद्ध– ऊर्ध्वं। *जम्बू० ४६२*। *नन्दी० १५४*।

उद्धघणभवण– ऊर्ध्वघनभवनानि-उच्चाविरलगेहानि। *जम्बू० १४४*।

उद्धट्टा– उवउट्टा-ध्राताः। *निशी० १५२*अ।

उद्धट्टु– उद्धृत्य। *आचा० ३७७*।

उद्धट्टाणं– कायोत्सर्गम्। *निशी० ११३*आ।

उद्धड– उद्धृता, स्थालादौ स्वयोगेन भोजनजातमुद्धृतम्। तृतीया पिण्डैषणा। *आव० ५७२*। जत्थ उवक्खडियं भायणे ताओ उद्धरियं छप्पगादिसु एस उद्धडा। *निशी० १२*।

उद्धतरेणुयं– उद्धतरेणुकं-ऊर्ध्वगतरजस्कम्। जं*०१४५*।

उद्धत्त– औद्धत्यम्-अहङ्कारः। *उत्त० ५२६*।

उद्धत्तमणहारिणो– औद्धत्यं-अहङ्कारस्तत्प्रधानं मन औद्धत्यमनस्तद्धरणशीलाः औद्धत्यमनोहारिणः-अत्यन्त शान्तचित्तवृत्तयः, यतय इत्यर्थः। *उत्त० ५२६*।

उद्धपुरीया– ऊर्ध्वपुरीततः-ऊर्ध्वंगतान्त्राः। *प्रश्न० ५६*।

उद्धपूरित– ऊर्ध्वपूरितः-श्वासपूरितोद्र्ध्वकायः ऊर्ध्वो वा स्थितो धूल्या पूरितः। *प्रश्न० ५६*।

उद्धमंताणं– यथायोगमुद्ध्मायमानादिषु। *राज० ४६*।

उद्धमुइंगागार– ऊर्ध्वमृदङ्गाकारः-मल्लकसम्पुटाकारः। *भग० २४९*।

उद्धम्ममाणं– उत्पाट्यमानम्। *प्रश्न० ५०*। उत्पाद्यमानम् । *प्रश्न० ६२*।

उद्धरंति– उत्पाटयन्ति। *ओघ० २२७*।

उद्धरणं– उद्ध्रियते-उत्तरपरिकर्म क्रियते। *आव० ७६४*।

उद्धरुट्ठो– तीव्ररोषः रोषकाले। *आव० ६३२*।

उद्धरेणू– स्वतः परतो वा ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्चलनधर्मो जाल-प्रविष्टसूर्यप्रभाभिव्यङ्ग्यो रेणुरूर्ध्वरेणुः। *जम्बू० ९४*।

उद्धलोगवत्थव्वा– ऊर्ध्वलोकवासित्वं-समभूतलात् पञ्चशत-योजनोच्चनन्दनवनगतपञ्चशतिकाष्टकूटनिवासित्वम् । *जम्बू० ३८८*।

उद्धसियरोमकूवो– उद्धूषितरोमकूपः। *आव० ५१३*।

उद्धाइओ– उद्धावितः। *आव० २०६*, *१९२*। अवधावितः। *आव० ५१३*।

उद्धाइया– उद्धाविताः। *उत्त० १००*। वेगेन प्रसृताः। *उत्त० ३६४*।

उद्धाईया– उद्धाविताः सन्नह्यगताः। *उत्त० १७९*।

उद्धायमाणो– उत्तिष्ठन्। *प्रश्न० ६२*। उद्धावमाणः-प्रवर्द्धमानः। *ज्ञाता० ७०*।

उद्धारपलिओवमे– तत्र वक्ष्यमाणस्वरुपवालाग्राणां तत्खण्डानां वा तद्द्वारेण द्वीपसमुद्राणां वा

प्रतिसमयमुद्धरणं-अपोद्धरण-मपहरणमुद्धारः तद्विषयं तत्प्रधानं वा पल्योपममुद्धारपल्यो-पमम्। *अनुयो० १८०*।

उद्धावणं– कार्यस्य निष्पादनम्। *व्यव० १७२* अ।

उद्धिअ– उद्धृतः-देशान्निर्वासितः। *जम्बू० २७७*।

उद्धिय– उद्धृता-निष्काशनम्। *स्था० ४६३*।

उद्धी– उद्धिः। *जम्बू० ४५४*। 'मेलित्तु पण्हियाओ चलणे वित्थारिऊण बाहिरओ। ठाउस्सग्गं एसो बाहिरउद्धी मुणे-यव्वो। अंगुट्ठे मेलविउं वित्थारिय पण्हियाओ बाहिं तु। ठाउ-स्सग्गं एसो भणिओ अब्भिंतरुद्धिति। *आव० ७९८*।

उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठिता– ऊर्ध्वमुखकलम्बुकपुष्पसं-स्थिता-ऊर्ध्वमुखस्य कलम्बुकापुष्पस्येव-नालिका पुष्प-स्येव संस्थितं-संस्थानां यस्याः सा। *सूर्य० ६७*।

उद्धुअ– इतस्ततो विप्रसृतः। *जम्बू० ५१*। *जीवा० १६०, २०६*।

उद्धुताए– उद्धुतया-दर्प्पातिशयेन। *भग० ५२७*।

उद्धुम्ममाणं– उत्पाद्यमानम्। *औप० ४७*।

उद्धुय- उद्धुतः-उद्धूतः। *औप० ५*। इतस्ततो विप्रसृतः। *सूर्य० २९३*। उद्धूतः। *भग० ५४०*। उद्धूता-वायुना। *ज्ञाता० ८०*।

उद्धुयाए– उद्धूतया-वस्त्रादीनामुद्धूतत्वेन, उद्धतया वा। सदर्प्पया। *भग० १६७*।

उद्धुव्वमाणं– उत्पाद्यमानम्। *औप० ४७*।

उद्धुसियं– रोमाञ्चितम्। उद्धुषितम्। *निशी० ३१५* आ।

उद्धूय– उद्धूतः। *आव० ५२०*।

उद्धूलिता– सरक्खा। *निशी० ३२४* आ।

उद्भिज्जत्वं– सम्मूर्च्छजत्वम्। *स्था० ११४*।

उद्भ्रामक– उद्यतविहारी। *व्यव० १६८* अ।

उद्भ्रामकभिक्षाचर्या– बहिर्ग्रामेषु भिक्षार्थं पर्यटनम्। *बृह० २०६* आ।

उद्यतकं– उच्छिन्नम्। *प्रश्न० १५४*। पामिच्चं, भिक्षादोषः। *आचा० ३२९*।

उद्यतविहारेण– मासकल्पादिना। *उत्त० ५८७*।

उद्यानि– प्रतिश्रोतोगामिनी सा। *व्यव० २५* आ।

उद्युक्तः– परायणः। *आव० ५८७*।

उद्राः– सिन्धुविषये मत्स्यास्तत्सूक्ष्मचर्मनिष्पन्नानि। *आचा० ३९४*।

उद्वर्त्तनं– निष्क्रमणम्। *आचा० ६९*।

स्थित्यादेर्वृद्धिकरणस्व-रूपम्। *भग० २५*।

उद्वर्त्तनकरणं– करणविशेषः। *भग० २४, ९०*।

उद्वर्त्त्य– निष्क्रम्य। *आव० १७७*।

उद्वसं– शून्यम्। *उत्त० १०९*।

उद्वसितगृहं– शून्यागारम्। *उत्त० ६६५*।

उद्वालयन्– आलोडयन्। *दशवै० १८*।

उन्न– और्णिकः। *स्था० ३३८*।

उन्नए– उन्नतः। *सम० ७१*।

उन्नतमणे– उन्नतमणाः-प्रकृत्या औदार्यादियुक्तमनाः। *स्था० १८३*।

उन्नतरूवे– संस्थानावयवादिसौन्दर्याद् उन्नतरूपः। *स्था० १८३*।

उन्नतावत्ते– उन्नतः-उच्छ्रितः स चासावावर्त्तश्चेति उन्नतावर्त्तः। *स्था० २८८*।

उन्नय– उन्नतं-अङ्गुलिपर्वाणि। *ओघ० १७१*। गुणवन्ति, उच्चानि च। *ज्ञाता० ३*।

उन्नयनं– शृङ्गारविशेषः। *जम्बू० ११६*।

उन्नयमाणे– उन्नतमानः, उन्नतो मानोऽस्येत्युन्नतमानः, उन्नतं वाऽऽत्मानं मन्यत इति। *आचा० २१५*।

उन्नाडीओ– *निशी० ११२* अ।

उन्नात– महाविदेहे नगरविशेषः। *निर० ४२*।

उन्नामओ– ऊर्णामयः। *आव० ४१८*।

उन्नामिज्जंते– उन्नाम्यते ऊर्ध्वमुत्क्षिप्यते। *जीवा० ३०७*।

उन्नामिज्जइ(ए)– उन्नामितः-उत्क्षिप्तः, प्रसिद्धिं गत इति यावत्। *अनुयो० १४३*।

उन्निद्रीकृतं– बोधितम्। *जीवा० २७१*।

उन्निय– और्णिकम्। *स्था० ३३०*।

उन्मग्नजला– नदीविशेषः। *स्था० ७१*।

उपकारिका– राजधानीस्वामिसत्कप्रासादावतंसकादीनां पीठिका। *जीवा० २२२*।

उपकार्योपकारिका– राज्ञामुपकार्योपकारिका। *जम्बू० ३२१*। *जीवा० २२२*।

उपगतश्लाघं– उपग्रतश्लाघत्वं-उक्तगुणयोगात्प्राप्तश्लाघता। चतुर्विंशतितमो वचनातिशयः। *सम० ६३*।

उपगूहनं– परिष्वजनम्। *निशी० २५६* आ।
उपघसरं– निर्द्धमनम्। *ओघ० १६२*।
उपचयद्रव्यमन्दः– यः परिस्थूस्तरशरीरतया गमनादिव्यापारं कर्तुं न शक्नोति। *बृह० ११३* अ।
उपचयभावमन्दः– यो बुद्धेरुपचयेन यतस्ततः कार्यं कर्तुं नोत्सहते। *बृह० ११३* अ।
उपचारोपेतं– उपचारोपेतत्वं-अग्राम्यता। तृतीयो वचनातिशयः। *सम० ६३*।
उपचियमंसो– बल्लियसरीरो। *निशी० २६६* आ।
उपदर्शना– जम्बूद्वीपनीलवर्षधरपर्वते नवमकूटः। *स्था० ७२*।
उपदिष्टा– महाकल्याणकसम्बन्धितया पुण्यतिथित्वेन प्रख्याता, तथा पौर्णमासीषु च तिसृष्वपि चतुर्मासकतिथिष्वित्यर्थः। *सूत्र० ४०८*।
उपधानकं– द्रव्योपधानम्। *आव० ६६८*। बिब्बोयणा। विव्वोयणा, तपनीयमय्यो गण्डोपधानकाः। *जीवा०२३१*।
उपनीतरागं– उपनीतरागत्वं-मालकोशादिग्रामरागयुक्ता। सप्तमो वचनातिशयः। *सम० ६२*।
उपबृंहयन्– अनुमोदयन्। *ज्ञाता० १८*।
उपमानं– दृष्टान्तः। *ओघ० १७*। श्रुतातिदेशवाक्यस्य समानार्थोपलम्भने संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानमुपमानम्। *स्था० २६२*।
उपयुक्तद्रव्यसम्यक्– यदुपयुक्तं-अभ्यवहृतं द्रव्यं मनः-समा-धानाय प्रभवति तत्। *आचा० १७६*।
उपरतकायिकी– अप्रमत्तसंयतस्योपरतस्य सावद्ययोगेभ्यो निवृत्तस्य क्रिया। कायिकीक्रियायास्तृतीयो भेदः। *आव० ६११*।
उपरितनक्षुल्लकप्रतराः– तत्र तिर्यग्लोकमध्यवर्त्तिनः सर्वलघुरज्जुप्रमाणात् क्षुल्लकप्रतरादारभ्य यावदधो नव योजनशतानि तावदस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां ये प्रतराः ते उपरितनक्षुल्लकप्रतराः। *नन्दी० ११०*।
उपरिमाण– उपरितना। *आव० ६४७*।
उपलिंपंति– घटकमुखस्य तत्पिधानकस्य च गोमयादिना रन्ध्रं भञ्जन्ति। *ज्ञाता० ११९*।
उपवस्तुं– उपवासन् कर्त्तुम्। *पिण्ड० १६७*।
उपवेंतो– उपागच्छन्, आगच्छन्। *आव० ४३४*।
उपशमनिष्पन्नः– उपशान्तक्रोध इत्यादि उदयाभावफलरूप आत्मपरिणाम इति भावना। *स्था० ३७८*।
उपशान्ता– प्रदेशतोऽप्यवेद्यमानाः कषायाः। *स्था० ५*।
उपश्रा– द्वेषः। *व्यव० ७* अ।
उपसंप– उपसम्पत्-उपसम्पत्तिः-प्राप्तिः। *भग० ९०४*।
उपसंपदालोचना– आलोचनाया द्वितीयो भेदः। *व्यव० ४८* आ।
उपसङ्घात– अनिष्टरूपस्तूपसङ्घातः। *नन्दी० १७१*।
उपस्थं– उपस्थितम्। *व्यव० २२२* आ।
उपस्थापयितुं– उत्स्थापनाकरणतः। *व्यव० २१५* अ।
उपस्पृशति– वस्त्राणि प्रक्षालयति। *आव० ४३४*।
उपहितं– भोजनस्थाने ढौकितं भक्तमिति भावः। *स्था० १४८*।
उपादानकारणं– मृदादि। *स्था० ४९*।
उपाधिः– उपाधानमुपाधिः-सन्निधिः। *भग० ४*।
उपाया– व्याख्याङ्गानि। *आचा० ८२*।
उपायोपेयभावलक्षण– वचनरूपांपन्नं प्रकरणमुपायः तत्परिज्ञानं चोपेयम्। *प्रज्ञा० २*।
उपार्द्धभाग– पोषचतुर्थभागः। *आचा० ३२६*।
उपालंभ– उपालम्भः विनेयस्याविहितविधायिनः। *ज्ञाता० ७७*।
उपालक– निर्व्यूहः, गवाक्षः। *व्यव० १३३* अ।
उपैति– करोति। *आचा० २१७*।
उपोद्घातनिर्युक्तिः– निर्युक्तिभेदः। *स्था० ६*।
उप्पइयं– उत्पत्तिकं-उद्भूतम्। *उत्त० ११९*।
उप्पज्जंते– उत्पद्यन्ते, एतत्प्रभावात् स्फातिमद्भवन्ति। *जम्बू० २५८*।
उप्पज्जमाणकालं– उत्पद्यमानकालं-आद्यसमयादारभ्यो-त्पत्त्यन्तसमयं यावदुत्पद्यमानत्वस्येष्टत्वाद् वर्तमान-भविष्यत्कालविषयं द्रव्यम्। *भग० १८*।
उप्पडा– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा० ४२*।
उप्पण– उत्पन्नं-विधिना प्राप्तम्। *दशवै० १८१*।
उप्पण्णमिस्सिया– उत्पन्नमिश्रिता-उत्पन्ना मिश्रिता अनुत्पन्नैः सह सङ्ख्या पूरणार्थं यत्र सा। सत्याभृषाभाषायाः प्रथमो भेदः। *प्रज्ञा० २५६*।
उप्पत्ति– उत्पत्तिः-निदानम्। *व्यव० ९१* अ।

उप्पत्तिअं– पर्वतिथिमन्तरेणाकस्मिकं भोज्यम्। *बृह० १९२अ*।

उप्पत्तिआ– उत्पत्तिरेव न शास्त्राभ्यासकर्मपरिशीलनादिकं प्रयोजनं-कारण यस्याः सा औत्पत्तिकी। *नन्दी० १४४*।

उप्पत्तिकसाय– द्रव्यादेर्बाह्यात् कषायप्रभवः तदेव कषाय-निमित्तत्वात् उत्पत्तिकषायः। *आव० ३९*। शरीरोपधिक्षे-त्रवास्तुस्थाण्वादयो यदाश्रित्य तेषामुत्पत्तिः। *आचा०९१*।

उप्पत्तिया– औत्पत्तिकी-उत्पत्तिरेव प्रयोजनं यस्याः सा, बुद्धिविशेषः। *आव० ४१४*। उत्पत्तिकी-अदृष्टाश्रुतानन्-भूतविषयाकस्माद्भवनशीला। *राज० ११६*।

उप्पत्ती– उत्पत्तिकरः स्वकल्पनाशिल्पनिर्मितः शतरूपकादिः। *आव० ४९९*। आरम्भमात्रम्। *स्था० २८५*। सामान्यतो या च विशेषतः। *स्था० ४४९*।

उप्पन्न– उत्पन्नविषया-सत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै०२०९*।

उप्पन्नमीसते– उत्पन्नविषयं मिश्रं-सत्यामृषा उत्पन्न-मिश्रं तदेवोत्पन्नमिश्रकम्। *स्था० ४८९*।

उप्पयंते– भूतलादुत्पततः। *ज्ञाता० ४६*।

उप्पयनिवयं– उत्पातः-आकाशे उल्ललनं निपातः-तस्मा-दवपतनं उत्पातपूर्वो निपातो यस्मिन् तदुत्पातनिपातम् । दिव्यनाट्यविधिः। *जम्बू० ४१२*।

उप्पराउ– उपरितः-उपरिष्टात्। *दशवै० ३८*।

उप्परामुहो– उपरिमुखः। *आव० १८१*।

उप्पराहुत्तो– उपरिभूतः। *आव० ५०२*।

उप्पलं– उत्पलं-नीलोत्पलादि। *आचा० ३४८*। चतुरशी-तिरुत्पलाङ्गशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५*। गर्दभकम्। *राज० ८*। *जीवा० १७७*। उत्पलकुष्ठं, नीलोत्पलं वा। *जीवा० २७७*। उत्पलं। *प्रज्ञा० ३७*। जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा० २३*। कालविशेषः। *भग० २७५*। उत्पलं-चतुरशीत्या लक्षै-रुत्पलाङ्गैः। *अनुयो० १००*। उत्पलार्थः एकादशशते प्रथम उद्देशकः। *भग० ५११*। कालविशेषः। *भग० ८८८*। *भग० २१०*। कालविशेषः। *सूर्य० ९१*। नीलोत्पलमुत्पलकुष्ठं वा। *सम० ६१*। *औप० १६*। आरणकल्पे विमानविशेषः। *सम० ३८*। उत्पलकुष्ठं-गन्धद्रव्यविशेषः। *ज्ञाता० १२९*। उत्पलं-नीलोत्पलादि। *दशवै० १८५*। उत्पलं-कुष्ठम्। *जम्बू० ११७*।

उप्पलंग– उत्पलाङ्गं-चतुरशीतिर्हूहुकशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५*। कालविशेषः। *स्था० ८६*। उत्पलाङ्गः, कालविशेषः। *सूर्य० ९१*। *भग० ८८८*। उत्पलाङ्गं चतुरशीत्या लक्षैर्हू-हुकैः। *अनुयो० १००*।

उप्पलगुम्मा– उत्पलगुल्मा, पुष्करिणीनाम। *जम्बू० ३३५, ३६०*।

उप्पलनालं– उत्पलनालं-उत्पलं-नीलोत्पलादि नालंत-स्यैवाधारः। *आचा० ३४८*।

उप्पलपउमोपसोभिता– उत्पलपद्मोपशोभिता। *आव०८१९*।

उप्पलबेंटिया– उत्पलवृन्तानि नियमविशेषात् ग्राह्यतया भैक्षत्वेन येषां सन्ति ते उत्पलवृन्तिकाः। *औप० १०६*।

उप्पलयं– उत्पलकं-गर्दभकम्। *जीवा० १८२*।

उप्पलहत्थगा– उत्पलाख्यजलजकुसुमसमूहविशेषाः। *जम्बू० ४४*। उत्पलाख्यजलजकुसुमसङ्घातविशेषाः। *राज० ८*।

उप्पलहत्थय– उत्पलहस्तकः-उत्पलाख्यजलजकुसुमस-मूहविशेषः। *जीवा० १९९*।

उप्पला– पिशाचेन्द्रकालस्य तृतीयाग्रमहिषी। *स्था० २०४*। पुष्करिणीविशेषः। *जम्बू० ३६०*।

उप्पलाइं– गर्द्दभकानि ईषन्नीलानि वा। *जम्बू० २६*।

उप्पलावए– उत्प्लावयति। *दशवै० २०५*।

उप्पलुज्जला– उत्पलोज्ज्वला, पुष्करिणीनाम। *जम्बू० ३३५, ३६०*।

उप्पलुद्देसए– उत्पलोद्देशकः-एकादशशते प्रथमः। *भग० ९६६*।

उप्पह– उत्पथः-उन्मार्गः। *उत्त० ५४८*। परसमयः। *स्था० २४१*।

उप्पा– उत्पादः। *स्था० ११*।

उप्पाइओ– उत्पातः। *आव० २९८*।

उप्पाइत्ता– उत्पादयितुं-सम्पादनाय, अथवाऽनुत्पन्नानां भोगानामुत्पादयिता-उत्पादकः। *स्था० २६४*। सम्पाद-नशीलः। *स्था० ३८६*।

उप्पाइया– उत्पाताः-अनिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्त-द्धेतुका येऽनर्थास्ते औत्पातिकाः। *सम० ६२*।

उप्पाए– उत्पातं-सहजरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफल-

निरूपकं निमित्तशास्त्रम्। *सम० ४९*। उत्पादः। *आव० ६६२*।

उप्पाएति– उत्-प्राबल्येन पावयति। *निशी० २५२* आ।

उप्पाएमाणे– व्युत्पादयन्। *उत्त० १५७*।

उप्पाते– उत्पादः-सहजरुधिरवृष्ट्यादि। *स्था० ४२७*।

उप्पाय– उत्पातपूर्वं-प्रथमपूर्वनाम। *स्था० ४८४*। उत्पातः-प्रकृतिविकारो रक्तवृष्ट्यादिः। *प्रश्न० १०९*। उल्कापात-दिग्दाहादिकम्। *अनुयो० २१६*। उत्पादः-यतो नानुत्पन्नं वस्तु लक्ष्यते अतोऽयमपि वस्तुलक्षणम्। *आव० २८२*। उत्पातं-सहजरुधिरवृष्ट्यादिकम्। *आव० ६६०*। उत्पातं-कपि हसितादि। *सूत्र० ३१८*। प्रथमपूर्वम्। *नन्दी० ५२*। *स्था० १९९*।

उप्पायग– उत्पादकः-ये भूमि भित्त्वा समुत्तिष्ठन्ति ते। *व्यव० २८८* आ।

उप्पायण– उत्पादना-सम्पादनं, गृहस्थात्पिण्डादिरुपार्ज-नमित्यर्थः। *स्था० १५९*।

उप्पायणा– उत्पादना-धात्र्यादिका षोडशविधा। *प्रश्न० १५५*। धात्र्यादिलक्षणदोषविशेषः। *आव० ५७६*।

उप्पायणोवघाते– उत्पादनया-उत्पादनादोषैः, उपघातः-अशुद्धता उत्पादनोपघातः। *स्था० ३२०*।

उप्पायपव्वए– उत्पातपर्वतः। *सम० ३३*। तिर्यग् लोकगमनाय यत्रागत्योत्पतति सः। *भग० १४४*।

उप्पायपव्वयगा– उत्पातपर्वताः-यत्रागत्य बहवः सूर्याभवि-मानवासिनो वैमानिका देवा देव्यश्च विचित्रक्रीडानिमित्तं वैक्रियशरीरमारचयन्ति। *राज० ७९*।

उप्पायपव्वया– यत्रागत्य बहवो व्यन्तरदेवा देव्यश्च विचित्रक्रीडानिमित्तं वैक्रियशरीरमारचयन्ति। *जम्बू० ४४*। *जीवा० १९९*।

उप्पायपुव्वं– उत्पादपूर्वम्, तत्थ सव्वदव्वाणं पज्जवाण य उप्पायमंगीकाउं पण्णवणा कया। *नन्दी० २४१*। यत्रोत्पाद-माश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणा कृता तद्। *सम० २६*।

उप्पाया– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा० ४२*।

उप्पाल– प्रहरणकोशविशेषः। *जीवा० २३२*। प्रहरणकोशः प्रहरणस्थानम्। *राज० ९३*। मत्तवारणम्। *जीवा० २७९*।

उप्पालसंठिओ– उत्पालसंस्थितः-मत्तवारणसंस्थितः। *जीवा० २७९*।

उप्पासितो– उत्प्रासितः-असूयितः। *आव० १०१*।

उप्पासिया– हसिताः। *निशी० ६९* अ।

उप्पिं– उपरि। *भग० ८२*। *स्था० ४३२*।

उप्पिंजल– उप्पिञ्जलं-आकुलकम्। *राज० ५२*।

उप्पिच्छ– श्वाससंयुक्तम्। *जम्बू० ४०*। श्वासयुक्तं, त्वरितम्। *स्था० ३९६*। *अनुयो० १३२*। आकुलं रोषभृतं वोच्यते। श्वासयुक्तं वा। *जीवा० १९४*। भीतौ। *ज्ञाता० १६१*।

उप्पिट्टणयं– उत्पिट्टनकं-कुट्टनोत्पिट्टना। *उत्त० ८*।

उप्पिट्टणा– उत्-प्राबल्येन पिट्टना उत्पिट्टना। *उत्त०८*।

उप्पिबंत– उत्पिबन्तः-आसादयन्तः। *प्रश्न० ६३*।

उप्पियंतं– मुहुर्मुहुः श्वसन्तम्। *व्यव० ५३* आ।

उप्पियणं– मुहुः श्वसनम्। *व्यव० ५३* अ।

उप्पिलणा– उत्पीडनं-प्राणादीनां प्लावनम्। *व्यव० १०*।

उप्पील– उत्पीलः-समूहः। *प्रश्न० ५०*।

उप्पीलइ– उत्पीडयति-प्राबल्येन बाधते। *जीवा० ३२६*।

उप्पीलिय– उत्पीडिता प्रत्यञ्चारोपणेन, बाहौ बद्धा। *भग० १९३*। गाढीकृता। *राज० ११८*। *भग० ३१७*। *ज्ञाता० २२१*। *जीवा० २५९*। उत्पीडितः-गाढं बद्धः। *प्रश्न० ४७*। उत्पीडिता-गुणसारणेन कृतावपीडा, बाहौ बद्धा वा। *भग० ३१८*। कृतप्रत्यञ्चारोपणा। *विपा०४७*। आरोपितप्रत्यञ्चा। *औप० ७१*। आक्रान्ता गुणेन। *ज्ञाता० ८५*।

उप्पुया– उत्प्लुताः-उत्सुकाः। *प्रश्न० ५२*।

उप्पूर– उत्पूरं-प्राचुर्यम्। *प्रश्न० ४३*। जलप्लवः। *प्रश्न० ७६*।

उप्पेक्खेज्ज– उपेक्ष्यते। *आव० ६४०*।

उप्फंदति– उत्स्पन्दते-प्रविशति। *उत्त० ३५५*।

उप्फणिंसु– साध्वर्थं वाताय दत्तवन्तः। *आचा० ३४३*।

उप्फसणा– अप्कायस्पर्शनं यत्सहचरितं लवणोत्तारणम्। *बृह० ६१* आ।

उप्फालग– उत्प्रासकम्। *उत्त० ६५६*।

उप्फिडइ– मण्डूकवत्प्लवते। *उत्त० ५५१*।

उप्फुल्लं– विगसिएहिं इत्थीसारीरं रयणादि वा न निज्झाइयव्वं। *दशवै० ७७*। उत्फुल्लं-विकसितलोचनम् । *दशवै० १६८* निष्पुष्पः। *निशी० २०१* अ।

उप्फेणओफेणीयं– सकोपोष्मवचनं यथा भवति। *विपा० ८३*।

उप्फेस– मुकुटम्। *औप० २५*। शिरोवेष्टनम्। *आचा० ३८०*। *प्रज्ञा० ८७*।

उप्फेसि– शिरोवेष्टनं, शेखरक इत्यर्थः। *स्था० ३०४*।

उप्फोसं– उत्स्पर्शनं छंटनम्। *बृह० २८५अ*।

उप्फोसणं– क्रियाविशेषः। *निशी० १६६अ*।

उप्फोसणा– जलच्छटा। *निशी० ६३अ*।

उप्फोसेज्ज– रुष्येत्। *निशी० १८६आ*।

उफुल्लो– निष्पुष्पः। *ओघ० ९७*।

उबद्धो– अवबद्धः। *आव० २११*।

उबबद्धओ– उद्बद्धः। *आव० ४५२*।

उब्बुडा– उद्याता। *आव० ६७७*।

उब्बुड्ड– अन्तःप्रवेशितम्। *अनुत्त० ७*।

उब्बुड्डनिबुड्डयं– उन्मग्ननिमग्नत्वम्। *प्रश्न० ६३*।

उब्भं– तव। *उत्त० १४७*।

उब्भंडो– असंवृतपरिधानादि। *बृह० २२५अ*।

उब्भज्जिय– उद्भिद्य। *उत्त० ११२*।

उब्भट्ठ– अभ्यर्थितम्। *पिण्ड० ९०*।

उब्भड– उद्भटं-विकरालम्। *जम्बू० १७०*। *अनुत्त० ७*। *भग० ३०८*। स्पष्टम्। *भग० ३०८*।

उब्भमा– उत्-प्राबल्येन भ्रमयन्ति उद्भ्रमाः-भिक्षाचराः। *व्यव० १५३आ*।

उब्भमे– उद्भ्रमेत्-यायात्। *आचा० २९१*।

उब्भव– उद्भवः-सम्भवः। *ज्ञाता० ५०*। सम्भूतिः। *भग० ४७०*।

उब्भवणं– निव्वावणं। *निशी० ५२आ*।

उब्भवेति– उच्छ्रयति। *आव० ३४२*।

उब्भातो– निसण्णो। *निशी० ३५आ*।

उब्भाम– भिक्षाचरग्रामः। *व्यव० २५०अ*।

उब्भामइला– उद्भ्रामिला-स्वैरिणी। *व्यव० ३१आ*।

उब्भामओ– उद्भ्रामकः, जारः। *पिण्ड० १२३*। पारदारिकः। *ओघ० ९२*। *बृह० ४८अ*।

उब्भामगं– भिक्खायरिया। *निशी० ७७आ*। *निशी० ३६आ*। पारदारिकाः। *ओघ० ७५*। *बृह० २६अ*। पारदारिगो। *निशी० १०७अ*। संघाडगो। *निशी० ९४आ*।

उब्भामनितोय– उद्भ्रामकनियोगः-ग्रामः। *व्यव० १५३*।

उब्भामिगा– उद्भ्रामिका-कुलटा। *व्यव० १५०आ*। उद्भ्रामिका-मनोगुप्तिदृष्टान्ते श्रेष्ठिसुतश्रावकजिनदास-भार्या। *आव० ५७८*। असती। *दशवै० ५७*।

उब्भामिज्जेंति– अपभ्राज्यन्ते। *बृह० १३७आ*।

उब्भामिया– कुशीला। *बृह० २६४आ*। उद्भ्रामिकास्वै-रिणी। *आव० ४२१*।

उब्भामे– भिक्खायरियं गच्छति। *निशी० ११३आ*। भिक्षाभ्रमणम्। *स्था० २६६*।

उब्भावण– उद्भावनं-महर्द्धिकतासम्पादनं कृतवान्। *बृह० ९३अ*। परिभवः। *ओघ० १४८*।

उब्भावणा– उद्भावना-उत्प्रेक्षणा। *भग० ४८९*। उत्क्षेपणानि। *ज्ञाता० १७७*। उद्भावना। दस० ४४। प्रकाशनम्। *नन्दी० ५३*। अपभ्राजना। *उत्त० १६९*।

उब्भि– उद्भिदो-भूमिभेदाज्जाता उद्भिज्जाः-खञ्जनकादयः। *स्था० ३८६*।

उब्भिज– *निशी० ३३५आ*।

उब्भिज्ज– उद्भेद्याः-वस्तुलप्रभृतिशाकभर्जिका। *पिण्ड० १६८*। उद्भिद्य भुवं जाता उद्भिज्जा खञ्जनकादिः *प्रश्न० ९०*।

उब्भिज्जमाण– उद्भिद्यमानं-उद्घाट्यमानम्। *जीवा० १९१*।

उब्भिन्न– उद्भेदनं उद्भिन्नं साधुभ्यो घृतादिदाननिमित्तं कुतु-पादेर्मुखस्य गोमयादिस्थगितस्योद्घाटनं तद्योगाद्देयमपि घृतादि उद्भिन्नम्। द्वादश उद् गमदोषः। *पिण्ड० ३४*।

उब्भिय– उद्भेदनमुद्भित् उद्भिज्जन्म येषां ते उद्भिज्जाः-पत्तङ्गखञ्जरीटपारिप्लवादयः। *दशवै० १४१*। उद्भिज्जंल-वणाकरादयुत्पन्नम्। *आचा० ३५५*।

उब्भुतिया– आभ्युदयिकी, देवतापरिगृहीता गोशीर्षचन्द-नमयी भेरी। *आव० ९७*।

उब्भेंति– उच्छ्रयन्ति। *आव० ३४२*। ऊर्ध्वयन्ति। *उत्त० १४७*।

उब्भेइम– उद्भेद्यं-सामुद्रादि। अप्रासुकम्। *दशवै० १९८*।

उभओ– उभयतः-उभौ-शिरोऽन्तपादान्तावाश्रित्य। *ज्ञाता० १५*।

उभयं– उभयं-संयमासंयमस्वरूपं श्रावकोपयोगि। *दशवै० १५८*। संघायसाडण, संङ्गातशातनकरणं, यस्य

शकटोदा-हरणम्। *आव० ४६२*।

उभयंभागा– उभयभागा-चन्द्रेणोभयतः-उभयभागाभ्यां पूर्वतः पश्चाच्चेत्यर्थो भज्यन्ते-भुज्यन्ते यानि तानि उभयभागानि, चन्द्रस्य पूर्वतः पृष्ठतश्च भोगमुपगच्छन्तीत्यर्थः। *स्था० ३६८*। उभयभागानि-उभयं-दिवस-रात्री तस्य दिवसस्य रात्रेश्चैत्यर्थः, चन्द्रयोगस्यादिमधिकृत्य भागो येषां तानि। *सूर्य० १०४*।

उभयओ– उभयतः, उभयोः-पार्श्वयोः। *सूर्य० २९३*।

उभयकप्पिय– उभयकल्पिकः-यो द्वावपि सूत्रार्थो युगपद् ग्रहीतुं समर्थः। *बृह० ६३* अ।

उभयकाला– दिया रातो य। *निशी० २१* आ।

उभयकिडकम्मं– उभयकृतिकर्म-वन्दनम्। *ओघ० २२*।

उभयजं– गुणनिष्पन्नं, समयप्रसिद्धश्च। *पिण्ड० ४*।

उभयतरो– तं च तवं करेंतो आयरियाइवेयावच्चंपि करेति सलद्धित्तणओ एस उभयतरो। *निशी० १२३* अ।

उभयनिसेहो– उभयनिषेधः, सङ्घातपरिशातशून्यं, यस्य स्थूणोदाहरणम्। *आव० ४६२*।

उभयपंता– उभयप्रान्ता-अभद्रिका, अशोभनेत्यर्थः। *ओघ० १५*।

उभयपइट्ठिते– उभयप्रतिष्ठितः-आत्मपरविषयः। *स्था० १९३*।

उभयपदव्याहतं– गत्यागतिलक्षणे भेदः। *आव० २८१*।

उभयभविए– उभयभविकं-इहपरलक्षणयोर्भवयोः यदनुगामि-तया वर्त्तते तदुभयभविकम्। *भग० ३३*।

उभयाज्ञया– पञ्चविधाचारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादे-रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनीकद्रव्यलिङ्गधार्यनेक-श्रमणवत् सूत्रार्थोभयैर्विराध्येत्यर्थः। *सम० १३३*।

उमंथण– अवमंथमधोमुखम्। *व्यव० ३२३* आ।

उमज्जायणसगोत्ते– पुष्यनक्षत्रस्य गोत्रम्। *सूर्य० १५०*।

उमा– प्रद्योतराजधान्यामुज्जयिन्यां गणिका। *आव० ६८६*। द्विपृष्ठवासुदेवमाता। *आव० १६२*। *सम० १५२*।

उमाए– अवमितः परिच्छिन्नो वा। *सूर्य० ९५*।

उमाणं– प्रवेशः स्वपक्षपरपक्षयोर्येषु तानि तथा। *आचा० ३२६*।

उमाव्यतिकर– *आचा० १४६*।

उम्मग्गं– विवरं उन्मज्यतेऽनेनेति वोन्मज्यम्, ऊद्र्ध्वं वा मार्गमुन्मार्गं, सर्वथा अरन्ध्रमित्यर्थः। *आचा० २३४*। अकार्याचरणम्। *आचा० २०३*। उन्मार्गः। *आव० ७७८*। मार्गादूर्ध्वं, क्षायोपशमिकभावत्यागेनौदयिकभावसङ्क्रमः *आव० ५७१*।

उम्मग्गगो– अडविपहेण गच्छति अहवा अपंथेण चेव। *निशी० ३१९*।

उम्मग्गजला– उन्मग्नं जलं यस्यां सा उन्मग्नजला। *जम्बू० २३०*।

उम्मग्गदेसणाए– उन्मार्गदेशनया-सम्यग्दर्शनादिरूपभा-वमार्गातिक्रान्तधर्म्मप्रथनेन। *स्था० २७५*।

उम्मग्गनिम्मग्गो– उन्मग्ननिमग्नं-ऊद् ध्वाधोजलगमनम्। *प्रश्न० ६३*।

उम्मज्जगा– उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति। तापसविशेषाः। *निर० २५*। *भग० ५१९*।

उम्मज्जगो– उन्मज्जकः-उन्मज्जनमात्रेण यः स्नाति। *औप० ९०*।

उम्मज्जणिमज्जिय– उन्मग्ननिमग्निका-उत्पतनिपता। *स्था० १६१*।

उम्मज्जति– स्पृशति। *निशी० ११५* अ।

उम्मज्जा– उन्मज्जनमुन्मज्जा-नरकतिर्यग्गतिनिर्गमना-त्मिका। *उत्त० २८०*।

उम्मत्तजला– रम्यक्विजये महानदी। *जम्बू० ३५२*। नदीविशेषः। *स्था० ८०*।

उम्मत्ता– मन्मथोन्मादयुक्ताः, विटाः। *बृह० १३८* आ।

उम्मत्तिगा– उन्मत्ताः। *आव० ४००*।

उम्मत्तो– उत्-प्राबल्येन मत्ते उन्मत्ते, दरमत्तो वा उन्मत्तो। *निशी० २७६* आ।

उम्मरीय– उम्बरीयः-प्रत्युदुम्बरं रूपको दातव्य इत्येवं लक्षणः। *बृह० ५१* अ।

उम्माओ– उन्मादः-क्षिप्तचित्तादिकः। *आव० ७५९*।

उम्माणं– उन्मानं-तुलारोपितस्यार्द्धभारप्रमाणता। *प्रश्न० ७४*। *जम्बू० २५२*। *स्था० ४६१*। खण्डगुडादि धरिमम्। *स्था० ४४९*। तुलाकर्षादि तद्विषयम्। *स्था० ४४९*। नाराचादिः। *आचा० ४१३*। तुलाकर्षादि। *स्था० १९८*। तुलारूपम्। *भग० ५४४*। कर्षपलादि खण्डगुडादिद्रव्यमान-हेतुः। *जम्बू० २२७*।

अर्द्धभारमानता। *भग० ११९*। अर्द्धभारप्रमाणता। *ज्ञाता० ११*।

उम्माणजुत्तो– जइ तुलाए आरोविओ अद्धभारं तुलति तो उम्माणजुत्तो। *निशी० ६१* अ। पुरिसो तुलारोवितो अद्धभारं तुलेमाणो उम्माणजुत्तो। *निशी०८५* आ।

उम्माणा– उन्मानानि-तुलायाः कर्षादीनि। *स्था० ८६*।

उम्माद– चतुर्दशशते द्वितीय उद्देशः। उन्मादार्थाभिधाय-कत्वादुन्मादो द्वितीयः। *भग० ६३०*।

उम्माय– उन्मादः-नष्टचित्ततया आलजालभाषणम्। असंप्राप्तकामभेदः। *दशवै० १९४*। चित्तविभ्रमः। *स्था० १५०*। महामिथ्यात्वलक्षणः तीर्थंकरादीनामवर्णं वदतो भवत्येव तीर्थंकराद्यवर्णवदनकुपितप्रवचनदेवतातो वा यत्। *स्था० ३६०*। सग्रहत्वम्। *स्था० ३६०*। ग्रहो बुद्धिवि-प्लवः। *स्था० ४७*।

उम्मिमालिणीओ– नदीविशेषः। *स्था० ८०*।

उम्मिल्लिज्जंते– उन्मील्यमाने। *आव० ६३*।

उम्मी– ऊर्म्मयः-महाकल्लोलाः। *भग० ७११*। ऊर्मिः-संबाधः। *औप० ५७*। विचिः, तरङ्गः। *आव० ६०१*। ऊर्म्मिः-संबाधः। *भग० ४६३*। कल्लोलः। *स्था० ५०२*। सम्बाधः, तरङ्गः, कल्लोलाकारो वा जनसमुदायः। *भग० ११५*।

उम्मीलिआ– उन्मिषितलोचनाः। *जम्बू० ५४, २९८*। बहिष्कृता। *जम्बू० २९७, ५४*।

उम्मीलिय– उन्मीलितं-बहिष्कृतम्। *सूर्य० २६४*। *प्रज्ञा० ९९*। *जीवा० २०९*।

उम्मीसं– उन्मिश्रं-शबलीभूतम्। *आचा० ३२१*। आगामु-कसत्त्वसंवलितं सक्तुकादि। *आचा० ३२२*। एकीकृत्य। *ओघ० १६९*। पुष्पादिसम्मिश्रम्, सप्तम एषणादोषः। *पिण्ड० १४७*।

उम्मुक्को– उन्मुक्तः-प्राबल्येन मुक्तः, पृथग्भूतः। *आव० ५०८*।

उम्मुग्गा– उन्मग्ना-नदीविशेषः। *आव० १५०*।

उम्मुय– औल्मुकः। *प्रश्न० ७३*।

उम्मूलणा सरीराओ– उन्मूलना शरीरात्, निष्काशनं जीवस्य देहादिति। प्राणवधस्य द्वितीयः पर्यायः। *प्रश्न०५*।

उम्ह– उष्मा-परितापः। *बृह० १९४* अ।

उयट्टी– कट्टी, जङ्घा। *उत्त० ११८*।

उयत्ति– तेयस्सिणो। *निशी० ३०१* आ।

उयत्तिया– अपवृत्य। *आचा० ३४६*।

उयरं– जलोयरं। *निशी० ५८* आ।

उयल्ला– मृता। *आव० २७२*।

उयविय– विशिष्टं परिकर्मितम्। *राज० ९३*।

उयवेंति– एतद्ग्रहे तत्र समुद्देशाप्यते इत्यर्थः। *व्यव० ४५२* अ।

उयारं– उपकारः। (*महाप्र०*)।

उयाहरे– उदाहरेत्-उद्घट्टयेत्। *उत्त० ३४५*।

उयाहु– उदाहु-उदाहृतवान्। *उत्त० २७०*।

उरं– उरः-वक्षः। *आचा० ३८*।

उरंमुहो– अर्वाङ्मुखः। *आव० ४२७*।

उरकंठसिरविसुद्धं– उरःकण्ठशिरोविशुद्धम्-यद्युरसि स्वरो विशालस्तर्ह्युरोविशुद्धं, कण्ठे यदि स्वरो वर्तितोऽतिस्फुटि-तश्च तदा कण्ठविशुद्धं, शिरसि प्राप्तो यदि नानुनासिकस्ततः शिरोविशुद्धम्, अथवा उरःकण्ठशिरस्सु श्लेष्मणाऽव्याकुलेषु विशुद्धेषु प्रशस्तेषु यद् गीयते तत्। *अनुयो० १३२*।

उरक्खंधगेवेज्जय– उरस्खन्धग्रैवेयकं-भूषणविधिविशेषः। *जीवा० २६८*।

उरगपरिसप्पा– उरो-वक्षस्तेन परिसर्पन्तीति उरःपरिसर्पाः। *उत्त० ६९९*।

उरगविही– शुक्रस्य महाग्रहस्य षष्ठी विथीः। *स्था० ४६८*।

उरत्थ– उरस्थः, वक्षोभूषणविशेषः। *जम्बू० २१३*। *आचा० ४२३*। हृदयाभरणविशेषः। *जम्बू० १०५*।

उरपरिसप्पा– उरसा-वक्षसा परिसर्प्पन्तीति उरःपरिसर्प्पाः-सर्प्पादयः। *स्था० ११४*। *सम० १३५*। उरसा परिसर्प्पन्तीति उरःपरिसर्पाः। *प्रज्ञा० ४५*।

उरब्भ– उरभ्रः-ऊरणः। *जम्बू० ३१*। *जीवा० १८९*।

उरब्भरुहिरं– उरभ्ररुधिरम्। *प्रज्ञा० ३६१*।

उरब्भिज्जं– उत्तराध्ययनस्य सप्तममध्ययनम्। *उत्त० २७१*। *सम० ६४*।

उरलं– विरलप्रदेशम्। *प्रज्ञा० २६९*। अल्पप्रदेशोपचितत्वाद् बृहत्त्वाच्च। *स्था० २९५*।

उरविसुद्ध– यद्युरसि स्वरो विशालस्तर्हि उरोविशुद्धम्। *अनुयो० १३२*।

उरसे– उपगतो-जातो रसः-पुत्रस्नेहलक्षणो यस्मिन् पितृ-स्नेहलक्षणो वा यस्यासावुपरसः, उरसि वा-हृदये स्नेहाद्वर्तते यः स ओरसः। पुत्रस्य पञ्चमो भेदः। उरसा वर्त्तत इति ओरसो-बलवान्। *स्था० ५१६*।

उरःशुद्धं– यद्युरसि स्वरो विशालस्तर्हि उरोविशुद्धम्। *जम्बू० ४०*।

उरस्ताडं– वक्षस्ताडम्। *नन्दी० १५७*।

उरस्सं– उरसि भवं उरस्यम्। *जीवा० १२२*। उरसि भवं उरस्यं-आन्तरोत्साहः। *जम्बू० ३८७*।

उरस्सबल– अन्तरोत्साहवीर्यम्। *उपा० ४७*।

उरस्सबलसमण्णागए– औरस्यबलसमन्वागतः-आन्तरोत्साहवीर्ययुक्तः। *अनुयो० १७७*।

उरस्सबलसमन्नागए– औरस्यबलसमन्वागतः-आन्तरोत्साहवीर्ययुक्तः। *जीवा० १२२*।

उराल– विस्तरालं, विशालम्। *स्था० २९५*। उदारं-स्थूलम्। *सूत्र० ५१*। स्वल्पप्रदेशोपचितत्वात् बृहत्त्वाच्च, मांसास्थि-पूयबद्धं यच्छरीरं तत्समयपरिभाषया उरालम्। *सम० १४२*। घडियं आभरणादि। *निशी० ८२* आ। प्रधानः। *सूर्य० ५*। *स्था० ५०३*। *आव० २८७*। वनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। शोभतो मनोज्ञो वा। *सूत्र० १८४*। अत्यन्तोद्भटः, समग्रसामग्रीकः, मधु-मद्यमांसाद्युपेतः। *सूत्र० ३२५*।

उराला– उदाराः-बादराः। *स्था० १६१*।

उरितिय– उरसि त्रिकम्। *औप० ५५*।

उरुंभेइ– अवतारयति। *आव० ४०८*।

उरोहओ– अंतेपुरं। *निशी० ४१* अ।

उर्व्वशी– अरणिः। *नन्दी० १९*।

उलग्गंति– अवलगन्ति। *आव० ३९६*।

उलजायगं– वीरल्लो। *निशी० १५५* अ।

उलूक– ऊर्ध्वकर्णः। *अनुयो० १५०*। मतविशेषः। *आव० ३७६*।

उलूगि– उलूकी, तत्प्रधाना विद्या। *आव० ३१९*।

उलूयपणीयं– उलूकप्रणीतं-वैशेषिकप्रणीतम्। *आव०३२१*।

उलोट्टए– अपवर्त्तन्ते। *प्रश्न० ८६*।

उल्मुकं– अलातम्। *ओघ० १७*। *प्रज्ञा० २९*। *दशवै० १५४*। उल्कादि। *आव० ५८८*।

उल्लं– आर्द्र-प्रचुरव्यञ्जनम्। *दशवै० १८१*।

उल्लंघणं– उर्ध्वंउलङ्घनम्। *भग० ९२५*। उल्लङ्घनं-कर्दमादी-नामतिक्रमणम्। *औप० ४२*। सहजात् पादविक्षेपान्मनाग-धिकतरः पादविक्षेपः उल्लङ्घनम्। *प्रज्ञा० ६०६*। उल्लङ्घनः-बालादीनामुचितप्रतिपत्त्यकरणतोऽधःकर्त्ता। वत्स-डिम्भा-दीनां चण्डश्चारभटवृत्त्याश्रयणतः। *उत्त० ४३४*। तथावि-धनिमित्तत ऊर्ध्वभूमिकाद्युत्क्रमणे गर्तादयतिक्रमणे वा। *उत्त० ५१९*।

उल्लंछेइ– विगतलाञ्छनं करोति। *ज्ञाता० ८८*।

उल्लंठं– उच्छृङ्खलः। *आव० ३४४*।

उल्लंडगा– मृद्गोलकाः। *निशी० ३५६* आ।

उल्लंडणा– उल्लंघणा। *दशवै० ७७*।

उल्लंडा– मृद्गोलकाः। *बृह० २७१* आ।

उल्लंबण– उल्लम्बनं-वृक्षशाखादावुद्बन्धनम्। *सम०१२६*।

उल्लंबियगा– अवलम्बितकाः-रज्ज्वा बद्धा गर्त्तादाववतारिताः। *औप० ८७*।

उल्ल– आर्द्रः। *ओघ० १८८*। *उत्त० ५३०*। *भग० २३२*। आर्द्रा स्तिमितसकलचीवरेतियावत्। *उत्त० ४९३*।

उल्लग– आर्द्रः। *आव० ६२१*।

उल्लगजाति– वीरल्लगसउणो। *निशी० २०४* आ।

उल्लच्छणा– अपवर्त्तना, अपप्रेरणा। *प्रश्न० ५६*।

उल्लण– येनौदनमार्द्रीकृत्योपयुज्यते उल्लणम्। *पिण्ड० १६८*। *ओघ० १४६*।

उल्लणिया– स्नानजलार्द्रशरीरस्य जललूषणवस्त्रम्। *उपा० ४*।

उल्लदेत्ता– अवलाद्य-उत्तार्य। *आव० २९१*।

उल्लपडसाडओ– आर्द्रपटशाटकः। *आव० २११*।

उल्लपडसाडगो– आर्द्रशाटिकापटः। *आव० ६८७*।

उल्लपडसाडया– स्नानेनार्द्रे पटशाटिके-उत्तरीयपरिधान-वस्त्रे। *ज्ञाता० ८४*।

उल्लल्लिया– चलिता। *बृह० १४९* आ।

उल्लवइ– उत्-प्राबल्येनासम्बद्धभाषितादिरूपेण लपति-वक्ति उल्लपति। *उत्त० ३४४*।

उल्लवितं– उल्लप्तम्। *आव० ३४३*।

उल्लविय– उल्लपितम्-मन्मनभाषितादि। *उत्त० ४२८*।

उल्लवेंत– उल्लापयन्। *आव० ६९२*।

उल्लवेंति– आलापयन्ति। (*गणि०*)।
उल्लवेइ– उल्लपति। *आव० २१६*।
उल्लवेयव्वो– विद्यापयितव्यः। *आव० ३८४*।
उल्लहिज्जंति– उल्लिख्यमाना। *आव० २००*।
उल्ला– तिंता। *निशी० ४६* अ। आर्द्रः। *आव० ६२२*।
उल्लाट्टा– प्रत्यावर्त्तः। *व्यव० १६७* आ।
उल्लालेमाणे– उल्लालयन्-ताडयन्। *जम्बू० ३९७*।
उल्लाव– उल्लापः-वचनम्। *उत्त० ३३४*। काक्कावर्णनम्। *स्था० ४०७*। काक्कावर्णनम्। *ज्ञाता० ५७*। *भग० ४७८*। प्रतिवचनम्। *ओघ० ५२*। उल्लापम्। *आव० २२३*। काक्कावर्णनम्। *औप० ५७*।
उल्लाविंतो– उल्लापयन्। *उत्त० ८५*।
उल्लिंचइ– उल्लिञ्चति-आकर्षति। *पिण्ड० ११८*।
उल्लिंचण– उदकनिष्काशनम्। *निशी० २०७* आ।
उल्लिउ– उल्लिखितः। *उत्त० ४६०*।
उल्लिय– आर्द्रः। *आव० ६२१*।
उल्लिहावेइ– चुम्बयति-आस्वादयति। *आव० ६८०*।
उल्ली– पनकः। *स्था० ४६०*। पणगो। *निशी० २५५* आ। पणओ। *दशवै० ८०*।
उल्लीण– अपह्रासः। (*मरण०*)।
उल्लीना– उपलीना-प्रच्छन्ना। *आचा० ३७१*।
उल्लुगं– अवरुग्णम्-भग्नम्। *प्रश्न० २२*।
उल्लुगतीरं– उल्लुकतीरं-उल्लुकानद्यास्तीरे नगरविशेषः। *उत्त० १६५*।
उल्लुगा– उल्लुका-नदीविशेषः। *उत्त० १६५*। *आव० ३१७*।
उल्लुगातीरं– उल्लुकातीरम्। पश्र्चमनिह्नवोत्पत्तिस्थानम्। *आव० ३१२, ३१७*।
उल्लुग्गंगी– म्लानाङ्गी। *आव० ३९४*।
उल्लुण्हि– शिम्बीः। *निशी० १४४* आ।
उल्लुयतीरे– उल्लुकतीरं-उल्लुकानद्यास्तीरे नगरविशेषः। *भग० ७०५*।
उल्लेति– आर्द्रयति। *आव० १०१*।
उल्लोअ– उल्लोकः-अपरिभागः। *जम्बू० ३२१*।
उल्लोइआ– उल्लोइयमिव उल्लोइअं च सेटिकादिना कुड्यादिषु धवलनम्। *जम्बू० ७६*।
उल्लोइयं– सेटिकादिना कुड्यानां धवलनम्। *भग०५८२*। कुड्यानां मालस्य च सेटिकादिभिः संमृष्टीकरणम्। *जीवा० १६०*। *राज० ३६*। *सम० १३८*। कुड्यमालानां सेटिकादिभिः संमृष्टीकरणम्। *औप० ५*। कुड्यानां मालस्य च सेटिकादिभिः संमृष्टिकरणम्। *जीवा० २२७*। *प्रज्ञा० ८६*।
उल्लोए– उल्लोकः, उल्लोचः। *भग० ६४५*। उपरिभागः। *जम्बू० ४९, ४००*। *जीवा० २०५*। उल्लोचः-चन्द्रोदयः। *सूर्य० २९३*। उल्लोकः-उपरितनभागः। *जीवा० २०९, ३६०*।
उल्लोय– उल्लोकः-उपरिभागः। *भग० ५४०*। उद्देशः। *भग० ६५९*। लेशोद्देशः। *बृह० २५०* आ।
उल्लोयगं– उल्लोचम्। *आव० १२४*।
उल्लोलिया– मलगुटिका। गुटिका। *आव० ६८०*।
उल्लोलेइ– उल्लोडयत्। *आचा० ४२३*।
उल्हविज्जंतो– विद्यापितः। *आव० ३८४*।
उवंगा– उपाङ्गानि-शिक्षादिषडङ्गार्थप्रपञ्चनपराः प्रबन्धाः। *भग० ११४*। शिक्षादिषडङ्गव्याख्यानरूपाणि। *अनुयो० ३६*।
उवंगाइं– उपाङ्गानि-अङ्गावयवभूतान्यङ्गुल्यादीनि। *प्रज्ञा० ४६९*।
उव– उप-सामीप्यार्थः। *प्रज्ञा० ४*। *दशवै० १४५*। *भग० ३७*। उपमेतिवत्साद्दश्येऽपि दृश्यते। *उत्त० २३५*। सकृदर्थे, अन्तर्वचनः। *आव० ८२८*। अभ्यधिकं पुनः पुनः। *उत्त० ६४४*।
उवइअ– उपचित्तौ, उन्नतौ, औपयिकौ, उचितौ, अवपतितौ, क्रमेण हीयमानोपचयौ। *जम्बू० ११२*।
उवइगं– उद्देहिका। *निशी० ५७* आ।
उवइज्जा– अवपतेत, आगच्छेत्। *आचा० ३६५*।
उवइस्सइ– उपदिश्यते-श्रोतृभावापेक्षया सामीप्येन कथ्यत। *दशवै० ११०*।
उवउग्गहकरो– किरियापरो। *निशी० २६६* अ।
उवउत्त– उपयुक्तः-अनन्यचित्तः। *दशवै० १०६*। अवहितः। *भग० ८९*। णमोक्कारपरायणो। *निशी० ४७* अ। उपयुक्तः-अभिष्वङ्गवान्। *भग० ९०४*। अभ्यवहृतम्। *आचा० १७६*।
उवएस– उपदेशः-आदेशः। *व्यव० १०* आ। गुरुणाऽनुज्ञातः। *ओघ० १५१*। हिताहितप्रवृत्तिनिवृत्त्युपदेशनादुपदेशः। *अनुयो० ३८*। अन्यतरक्रियायां प्रवर्त्तनेच्छोत्पादनं उपदेशः।

वचनविभक्तेर्द्वितीयो भेदः। *अनुयो० १३४*। यथा आत्मा न वध्यत इत्यादिविषयः। *दशवै० १२०*। उपदेशः-गुर्वादिना वस्तुतत्त्वकथनम्। *प्रज्ञा० ५८*। श्रुतस्य पर्यायः। विशे० *४२३*। कथनम्। *आव० ६०४, २६५*।

उवएसदव्वमूलं– उपदेशद्रव्यमूल-यच्चिकित्सको रोगप्र-तिघातसमर्थं मूलमुपदिशत्यातुरायेति। *आचा० ८८*।

उवएसरुई– उपदेशो-गुर्वादिना वस्तुतत्त्वकथनं तेन रुचिः –जिनप्रणीततत्त्वाभिलाषरूपा यस्य स उपदेशरुचिः। *प्रज्ञा० ५८*।

उवएसिया– उप-सामीप्येन देशिता उपदेशिता। *आव० ६२*।

उवओग– उपयोगः-स्वस्वविषये लब्ध्यनुसारेणात्मनः परिच्छेदव्यापारः। *जीवा० १६*। उपयोजनमुपयोगः-विव-क्षितकर्म्मणि मनसोऽभिनिवेशः। *नन्दी० १६४*। साकाराना-कारभेदं चैतन्यम्। *स्था० ३३४*। जीवस्य बोधरूपो व्या-पारः। *अनुयो० १६*। अवहितत्वम्। *उत्त० ५६१*। भावेन्द्रियस्य द्वितीयो भेदः। *भग० ८७*। मतिः। *ओघ० ११६*। उपयोगः-लब्धिनिमित्त आत्मनो मनस्साचिव्याद् अर्थग्रहणं प्रति व्यापारः। *आचा० १०४*। चेतनाविशेषः। *भग०१४९*। चैतन्यं साकारानाकारभेदम्। *भग० १४८*। उपयोजनमुपयोगः-विवक्षिते कर्मणि मनसोऽमिनिवेशः। *आव० ४२६*। विपा-कानुभवनम्। *दशवै० ८६*। श्रोतुस्तदभिमुखता। *आव० ३४१*। सावधानता। *औप० ४८*। स्वाध्यायाद्युपयुक्तता। *उत्त० १४५*। स्वस्वविषये लब्ध्यनुसारेणात्मनो व्यापारः प्रणिधानम्। *प्रज्ञा० २९४*। प्रज्ञापनाया एकोनत्रिंशत्तमं पदम्। *प्रज्ञा० ६*। उपयोजनं उपयोगः भावे घञ्, यद्वा उपयुज्यते-वस्तुप-रिच्छेदं प्रति व्यापार्यते जीवोऽनेनेत्युपयोगः, 'पुंनाम्नि घ' इति करणे घप्रत्ययो बोधरूपो जीवस्य तत्त्वभूतो व्यापारः। *प्रज्ञा० ५२६*। *दशवै० १०८*।

उवकप्पिया– उपकल्पिता। *उत्त० २८७*।

उवकरण– उपकरणं-अङ्गादानाख्यः। *बृह० ९८ अ*। उप-करणं-ग्लानाद्यवस्थायामन्येनोपकारकरणम्। *प्रश्न० १२९*। उपधिः। परिग्रहस्य पञ्चदश नाम। *प्रश्न० ९२*। अङ्गम्। *भग० २२४*।

उवकरणपणिधाणे– उपकरणस्य लौकिकलोकोत्तररूपस्य वस्त्रपात्रादेः संयमासंयमोपकाराय प्रणिधानं-प्रयोगः उपकरणप्रणिधानम्। *स्था० १९६*।

उवकरणसंवरे– उपकरणसंवरः-अप्रतिनियताकल्पनीयवस्त्रा-द्यग्रहणरूपोऽथवा विप्रकीर्णस्य वस्त्राद्युपकरणस्य संवरणम्। *स्था० ४७३*।

उवकरिंसु– अवकीर्णवन्तः। *आचा० ३११*।

उवकरिज्ज– उपकुर्यात्-ढौकयेत्। *आचा० ३५१*।

उवकरेउ– उपकरोतु। *उपा० १५*।

उवकरणे– उपकरणे। *बृह० २८१ अ*।

उवकुलं– कुलस्य समीपं उपकुलम्। *जम्बू० ५०६*।

उवकुला– उपकुलानि। *सूर्य० १११*।

उवकोसा– कोशाया लघ्वी भगिनी उपकोशा। *आव० ६९५*। *आव० ४२५*।

उवक्कम– उपक्रमणं-आयुःपुद्गलानां संवर्त्तनं समुपस्थितं तत्। *आचा० २९१*। उपक्रमणमुपक्रमः, उपक्रम्यतेऽनेना-स्मादस्मिन्निति वोपक्रमः-व्याचिख्यासितशास्त्रस्य समी-पानयनम्। *आचा० ३*। उपक्रमणं उपक्रमः-दीर्घकालभा-विन्याः स्थितेः स्वल्पकालताऽऽपादनम्। *उत्त० ३२१*। उपेति-सामीप्येन क्रमणं उपक्रमः-दूरस्थस्य समीपापादनम्। *ओघ० १*। उपायेन परिज्ञानम्। *स्था० १५५*। उपायपूर्वक आरम्भः। *स्था० १५४*। प्रकृत्यादित्वेन पुद्गलानां परिण-मनसमर्थं जीववीर्यम्। *स्था० २२१*। अभिप्रेतार्थसामी-प्यानयनलक्षणः। *आव० २५७*। कालगमनम्। *बृह० २३० अ*। नाशः। (*आतु०*)। कर्मवेदनोपायः। *भग० ६५*। स्वयमेव समीपे भवनमुदीरणाकरणेन वा समीपानयनम्। *प्रज्ञा० ५५७*। उपक्रमः-दूरस्थस्य वस्तुनस्तैस्तैः प्रति-पादनप्रकारैः समीपमानीय निक्षेपयोग्यताकरणं, उपक्रम्यते-निक्षेपयोग्यं क्रियतेऽनेन गुरुवाग्योगेनेति, उपक्रम्यतेऽस्मिन् शिष्यश्रवणभावे सतीति, उपक्रम्यतेऽस्माद्विनीतविनेयवि-नयादिति वा। *अनुयो० ४५*। उपक्रमणमुपक्रम इति भावसाधनः व्याचिख्यासितशास्त्रस्य समीपानयनेन निक्षेपावसरप्रापणं, उपक्रम्यते वाऽनेन गुरुवाग्योगेनेत्युपक्रम इति करणसाधनः, उपक्रम्यतेऽस्मिन्निति वा शिष्यश्रवणभावे

सतीत्युपक्रम इत्यधिकरणसाधनः, उपक्रम्यतेऽस्मादिति वा विनेयविनया-दित्युपक्रम इत्यपादानसाधन इति। *जम्बू० ५*। उपक्रम्यते-क्रियतेऽनेनेत्युपक्रमः- कर्मणो बद्धत्वोदीरितत्वादिना परिण-मनहेतुर्जीवस्य शक्तिविशेषो योऽन्यत्र करणमिति रूढः, बन्धनादीनामारम्भः। *स्था० २२१*। वस्तुपरिकर्म्मरूपः। *स्था० २२१*। अप्राप्तकालस्य निर्जरणम्। *भग० ७१५*। आनुपूर्व्यादिः। *सम० ११५*। निरुक्तिस्तु उपक्रमणं उपक्रमः इति भावसाधनः, शास्त्रस्य न्यासदेशसमीपीकरणलक्षणः, उपक्रम्यते वाऽनेन गुरुवाग्योगेनेत्युपक्रम इति करणसाधनः, उपक्रम्यतेऽस्मिन्निति वा शिष्यश्रवणभावे सतीत्युपक्रम इत्यधिकरणसाधनः, उपक्रम्यतेऽस्मादिति वा विनीतविने-यादित्युपक्रम इत्यादान इति। *स्था० ४*। कर्मोदीरणकारणम्। *स्था० ८९*।

उवक्कमकाल– उपक्रमकालः- अभिप्रेतार्थसामीप्यानयन-लक्षणः सामाचार्यायुष्कभेदभिन्नः। *दशवै० ९*।

उवक्कमिओ– औपक्रमिकः- दण्डकशशास्त्रादिनाऽसातवेद-नीयोदयापादकः। *सूत्र० ७८*।

उवक्कमिया– उपक्रमणमुपक्रमः-स्वयमेव समीपे भवनमुदी-रणाकरणेन वा समीपानयनं तेन निर्वृता औपक्रामिकी। *प्रज्ञा० ५५७*। औपक्रमिकी। *सम० १४६*। *प्रज्ञा० ५५४*। उपक्रमेण-कर्मोदीरणकारणेन निर्वृत्ता तत्र वा भवा औप-क्रमिकी-ज्वरातीसारादिजन्या। *स्था० ८९*। कर्मवेदनो-पायस्तत्र भवा औपक्रमिकी स्वयमुदीर्णस्योदीरणाकरणेन चोदयमुपनीतस्य कर्मणोऽनुभवः। *भग० ६५*। स्वयमुदीर्ण-स्योदीरणाकरणेन चोदयमुपनीतस्य वेद्यस्यानुभवात् औपक्र-मिकी। *भग० ४९७*।

उवक्कम्म– उपक्रम्य-आगत्य। *सूत्र० ३५६*।

उवक्कयं– उपस्कृतं-नियुक्तम्। *जीवा० २६८*।

उवक्केस– उपक्लेशाः- कृषिपाशुपाल्यवाणिज्याद्यनुष्ठाना-नुगताः पण्डितजनगर्हिताः शीतोष्णश्रमादयो घृतलव-णचिन्तादयश्च। *दशवै० २७३*। उपक्लेशः-स्वगतशो-कादिः। *भग० १२५*।

उवक्खड– उपस्कृतं-उपस्कर्त्तुमारब्धम्। *पिण्ड० ६५*। उपस्करणमुपस्कृतं-पाकः। *स्था० २२०*। लवणवेसवा-रादिसंस्कृतम्। *उत्त० ३६०*।

उवक्खडणसाला– महाणसो। *निशी० २७२* आ।

उवक्खडामं– जहा चणयादीण उवक्खडियाण जेण सिज्झंति ते कंकडुया तं उवक्खडियामं भण्णति। *निशी० १२५*।

उवक्खडेंति– उपस्कुर्वन्ति। *आव० २९१*।

उवक्खडे– उपस्कृतानि। नियुक्तानि। *जम्बू० १०५*।

उवक्खडेउ– उपस्करोतु-राध्यतु। *उपा० १५*।

उवक्खडेज्जा– तदशनादि पचेत्। *आचा० ३५१*।

उवक्खरो– सर्प्पादिकः। *निशी० ३५६* अ। उपकरणम्। (*मरण०*)। उपस्क्रियतेऽनेनेति उपस्करः-हिङ्ग्वादिः। *स्था० २२०*।

उवग– गर्त्ता। *बृह० ३१* अ।

उवगओ– उपगतः। *आव० ४००*। सामीप्येन कर्मविगमल-क्षणेन प्राप्तः। *आव० ३८६*।

उवगच्छया– कक्खा। *निशी० २५५* अ।

उवगत– उपगतः। *आव० ३०८*। उपगतः-आश्रितः। *उत्त० १७८*।

उवगमं– उपगच्छति-सादृश्येन प्राप्नोति। *उत्त० २३५*।

उवगमण– उपगमनं-अवस्थानम्। *सम० ३५*। अस्पन्द-तयाऽवस्थानम्। *भग० १२०*।

उवगयं– उपगतं-सामीप्येनात्मनि शब्दादिज्ञानं परिणतम् । *नन्दी० १८०*। मृतम्। *पिण्ड० १३४*। उपगतं-ज्ञातम्। *आव० ८१२*।

उवगरण– चोलपट्टको रजोहरणं नैषद्याद्वयोपेतं मुखवस्त्रिका उपलक्षणत्वादौर्णिकसौत्रिकौ च कल्पौ। *बृह० २१५* अ। दंडकं रजोहरणं च। *बृह० ७१* आ। उपकरणं-औप-ग्रहिकम्। *प्रश्न०१५६*। उपकरणं-उपधिरेव। *आव० ५६८*। आवरणप्रहरणादिकम्। *भग० ९४*। लौही-कडुच्छुकादि। *भग० २३८*। कङ्कटादिकम्। *भग० ३२२*। व्यजनकटक-कवलकार्गलादि। *आचा० ६०*। उपकरोतीति उपकरणम्। *ओघ० २०७*। वस्त्रादि। *भग० ७५०*। धर्म्मशरीरोपष्टम्भहेतुः। *उत्त० ३५८*। अनेकविधं कटपिटकशूर्पादिकम्। *अनुयो० १५९*।

रजोहरणदण्डकादि। *ओघ० १२५*। द्रव्येन्द्रियस्य द्वितीयो भेदः। *भग० ८७*। *प्रज्ञा० २३*। खड्गस्थानीयाया बाह्यनिर्वृत्तेर्या खड्गधारास्थानीया स्वच्छतरपुद् गलसमूहा-त्मिकाऽभ्यन्तरानिर्वृत्तिस्तस्याः शक्तिविशेषः। *जीवा० १६*। हस्त्यश्र्वरथासनमञ्चकादि। *आचा० १००*। औपग्रहिकम्। *उत्त० ३५८*।

उवगरणपडिया– उपकरणप्रतिज्ञा-उपकरणार्थिनः समागच्छेयुः। *आचा० ३८४*।

उवगरणसंजमे– उपकरणसंयमः-महामूल्यवस्त्रादिपरिहारः, पुस्तकवस्त्रतृणचर्म्मपञ्चकपरिहारो वा। *स्था० २३३*।

उवगरयं (वरए)– अपवरकम्। *आव० ६६६*।

उवगसित्ताणं– उपसंश्लिष्य, समीपमागत्य। *सूत्र० १०७*।

उवगहिओ– उपगृहीतः-उपकृतः। *आव० ७६८*। उपग्रहितः। *आव० ७९३*।

उवगा– उपगाः-प्राप्ताः। *प्रज्ञा० ७०*। उपगच्छन्ति–तदेकचित्ततया तत्परायणो वर्तन्ते। *जीवा० २६०*।

उवगारग्ग– उपकाराग्रं-यत्पूर्वोक्तस्य विस्तरतोऽनुक्तस्य च प्रतिपादनादुपकारे वर्त्तते तद्। *आचा० ३१८*।

उवगारियलेणाइ– औपकारिकलयनानि-प्रासादादिपीठकल्पानि। *भग० ६१७*।

उवगारिया– राजधानीस्वामिसत्कप्रासादावतंसकादीन् उपकरोति-उपष्टभ्नातीति उपकारिका-राजधानी-स्वामि-सत्कप्रासादावतंसकादीनां पीठिका। *जीवा० २२२*। पीठिका। *राज० ८१*।

उवगिण्हह– उपगृह्णीत-उपष्टम्भं कुरुत। *भग० २१९*।

उवगूहिअ– उपगूहितं-परिष्वक्तम्। सम्प्राप्तकामस्य षष्ठो भेदः। *दशवै० १९४*।

उवगो– अन्यगच्छीयः साधुः। *बृह० २१० अ*। खुड्डा कुमारो वा। *निशी० ८८ अ*।

उवग्गं– उपाग्रं-समीपभूतम्। *आव० ४०७*।

उवग्गछाया– छायाभेदः। *सूर्य० ९५*।

उवग्गह– उपग्रहः-शिष्याणामेव ज्ञानादिषु सीदकामुपष्टंभ-करणम्। *व्यव० १७२ अ*। उपष्टम्भः। *पिण्ड० २७*। उप-गृह्णातीति उपग्रहः। *ओघ० २०७*। शिष्याणां भक्तश्रुतादिदा-नेनोपष्टम्भनम्। *प्रश्न० १२६*। अनाचार्याणामन्यगणसत्कानां दिग्बन्धं कृत्वा धरणम्। *व्यव० २३५ अ*। ग्रहणम्। *ओघ० १४७*। वस्त्रादिभिरुपष्टम्भः। *स्था० ३३२*। अवष्टम्भम्। *ओघ० १५४*। उपगृह्णातीति उपग्रहः-भक्तादिः। *ओघ० १८३*।

उवग्गहितो– उवउज्जति उवग्गहितो। *निशी० १११ आ*।

उवग्गहिय– औपग्रहिकम्। *ओघ० २१७*। उपधिः। *उत्त० ५१७*।

उवग्गहोवही– औत्पत्तिकं कारणमपेक्ष्य संजमोपकरण इति गृह्यते। *निशी० १७९ अ*। उपग्रहोपधिः-उपधेर्द्वितीयो भेदः। उपग्रहोपधिः यः कारणे आपन्ने संयमार्थं गृह्यते सः। *ओघ० २०८*।

उवग्गाहियं– औपग्रहिकं, सामुदानिकम्। *उत्त० १०८*।

उवग्गे– उपाग्रे प्राप्ते। (*महाप्र०*)

उवग्घाय– उपोद्घातः-उपोद्घननं-व्याख्येयस्य सूत्रस्य व्याख्यानविधिसमीपीकरणम्। *अनुयो० २५८*।

उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमे– उपोद्घननं-व्याख्येयस्य सूत्रस्य व्याख्याविधिसमीपीकरणमुपोद्घातस्तस्य तद्विषया वा निर्युक्तिस्तद्रूपस्तस्या वा अनुगमः उपोद्घातनिर्युक्त्यनुगमः। *अनुयो० २५८*। उपोद् घातनिर्युक्त्यनुगमः, निर्युक्त्यनुगमभेदः। *आचा० ३*।

उवघाइयणिस्सिया– उपघातनिःसृता चौरस्त्वमित्याद्यभ्या-ख्यानम्। *प्रज्ञा० २५६*।

उवघाइयाआरोवणा– सार्द्धदिनद्वयस्य पक्षस्य चोपघातनेन लघूनां मासादीनां प्राचीनप्रायश्चित्ते आरोपणा उपघातिका-रोपणा। *सम० ४७*।

उवघात– उपघातो-पीडा व्यापादनं वा। *निशी० १३७ आ*। अशुद्धता। *स्था० ३२०*। सत्त्वघातादिः। सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे द्वितीयः। *अनुयो० २६१*। बाधा। *ओघ० १३७*।

उवघातनिस्सिते– उपघाते-प्राणिवधे निश्रितं-आश्रितं उपघातनिश्रितं, दशमं मृषा। *स्था० ४८९*।

उवघाय– उपघातः-प्रतिसेवणादि। *ओघ० २२५*। सर्वतो घातनम्। *प्रश्न० १३७*। संयमात्मप्रवचनबाधात्मकः। *उत्त० ५१८*। पिण्डादेरकल्पनीयताकरणं, चरणस्य वा शबली-करणं, आधाकर्म्मत्वादिर्भिदुष्टता। *स्था० १५१*।

उवघायजणयं– उपघातजनकं-सत्त्वोपघातजनकम्। सूत्र-दोषविशेषः। *आव० ३७५*।

उवघायणामे– यदुदयात् स्वशरीरावयवैरेव शरीरान्तः परिव-र्द्धमानैः

प्रतिजिह्वागलवृन्दलम्बकचोरदन्ताद्भिरुपहन्यते, यद्वा स्वयंकृतोद्बन्धनभैरवप्रपातादिभिरुपघातनाम। *प्रज्ञा० ४७३*।

उवघायनिस्सिय– उपघातनिसृता-मृषाभाषा भेदः। *दशवै० २०९*।

उवघेत्तुं– उपग्रहीतुं, संस्थापयितुं, निर्वापयितुं वा। *बृह० २१०* अ।

उवचए– उपचीयते-उपचयं नीयतेऽनेनेति उपचयः-पुद्गल-सङ्ग्रहणसम्पत् पर्याप्तिरिति। *प्रज्ञा० ३०९*। प्राभूत्येन चयः। *प्रज्ञा० ४३२*। स्वस्याबाधाकालस्योपरि ज्ञानावरणीयादि-कर्मपुद्गलानां वेदनार्थं निषेकः। *प्रज्ञा० २९२*।

उवचओ– उपचयः-प्रभूततरा बुद्धिः। *पिण्ड० ४१*। परिग्र-हस्य चतुर्थं नाम। *प्रश्न० ९२*।

उवचयति– उपचीयते-विशेषत उपचयमायाति। *प्रज्ञा० २२८*।

उवचरंति– उपचरन्ति-उपसर्गयन्ति। उप-सामीप्येन मांसा-दिकमश्नन्ति अथवा श्मशानादौ पक्षिणौ गृध्रादय उपचरन्ति इति। *आचा० ३०८*।

उवचरए– उपचरकः-चरः। *आचा० ३७७*। उपचारकः। *आचा० ३६५*।

उवचरगो– राजछिद्रान्वेषी। *निशी० ३३५* अ।

उवचरित्तु– गृहीत्वा। *निशी० २१* अ।

उवचार– उवचरति-पडिजागरति, उवचरति पुच्छति, लोगो-पचारमात्रेणागच्छति, साधूणं मज्जाया चेव जं गिलाणस्स वट्टियव्वं एस, ज्ञानादिकं तस्समीपादीहतीत्यर्थः, पच्छित्तं मा मे भविस्सतितित्ति निर्जरार्थः एस उपचारः। *निशी० ३१९* अ। ग्रहणं अधिगमेत्यर्थः। *निशी० २०* आ।

उवचारमेत्तं– कल्पनामात्रं। *निशी० २१* अ।

उवचिअं– उपचितं-साधितम्। *आव० १७६*। परिकर्मितम्। *औप० १७*।

उवचिए– उपशोभितं-भृतं। *जम्बू० २९२*। उपचितं-समृद्धः। *ज्ञाता० ९८*।

उवचिओ– उपचितः-निवेशितः। *प्रज्ञा० ८६*। *जीवा० २२७, १६०*।

उवचिज्जंति– निषेकरचनतः निकाचनतो वा उपचीयन्ते। *भग० २५३*।

उवचिट्ठइज्जा– उपतिष्ठेत्-विनयेन सेवेत। *दशवै० २४५*।

उवचिण– उपचितवन्तः-परिपोषणतः। *स्था० १७९*। उपचयनं-चितस्याबाधाकालं मुक्त्वा ज्ञानावरणीयादितया निषेकः। *स्था० १९५*। परिपोषणम्। *स्था०४१७*।

उवचिणाइ– प्रदेशबन्धापेक्षया निकाचनापेक्षया वेति। *भग० १०२*।

उवचिणिंसु– उपचितवन्तः। *स्था० २८९*।

उवचिय– उपचिंत-तेजितम्। *प्रज्ञा० ९१*। उपचितं-परिक-र्मितम्। *राज० ३७*। *जीवा० २१०*। युक्तम्। *जीवा०२०४*। मांसलम्। *जीवा० २७१*। समानजातीयप्रकृत्यन्तरदलि-कसङ्क्रमेणोपचयं नीतः। *प्रज्ञा० ४५९*। भृतः। *जम्बू० ४२*। परिकर्मितम्। *भग० ५४०*। विशिष्टं परिकर्मितम्। *राज० ९३*। उपचयः-पौनःपुन्येन प्रदेशानुभागादेर्वर्धनम्। *भग० ५३* औपचयिकः-उपचयनिर्वृत्तः औपयिको वा-उचितः। *प्रश्न० ८१*। निवेशितः। *औप० ५*। बहुशः-प्रदेशसामीप्येन शरीरे चिता एवेति। *भग० २४*। युक्तः *जम्बू० ४८*।

उवचीयइ– उपचीयते-उपचयमायाति। *जीवा० ३२२, ३०६*। उपचयमुपगच्छति। *जीवा० ४००*।

उवच्छगो– कक्खो। *निशी० २११* अ।

उवजाइय– उपयाचिते-देवताराधने भवः औपयाचितकः। *स्था० ५१६*।

उपजीवइ– उपजीवति-अनुभवति। *भग० ११२*।

उपजीवति– उपजीवति-जीवनार्थमाश्रयते। *व्यव० १६३*।

उवजीविओ– उपजीवितः। *स्था० ३७२*।

उवजेमणा– रसवती। *निशी० ३४९* आ।

उवजोइया– ज्योतिषः समीपे ये त उपज्योतिषस्त एवोपज्यो-तिष्काः-अग्निसमीपवर्तिनो महानसिका ऋत्विजो वा। *उत्त० ३६४*।

उवज्झाए– उपाध्यायः। *प्रज्ञा० ३२७*। अध्यापकः। *आव० ३५३*।

उवज्झाओ– उपयोगपूर्वकं पापपरिवर्जनतो ध्यानारोहणेन कर्माण्यपनयतीति उपाध्यायः। *आव० ४४९*।

उवज्झाय– उपाध्यायः-उप-समीपमागत्य अधीयते-पठ्यते यस्य सः, उप अधि-आधिक्येन गम्यते सः, उप अधि-आधिक्येन स्मर्यते सूत्रतो जिनप्रवचनं यस्मात्

सः, उपाधिः-सन्निधिस्तेन तत्र वा आयः-लाभः श्रुतस्य यस्य, उपाधीनां-विशेषणानां आयो-लाभः यस्मात् सः, उपाधि-रेवसन्निधिरेव आयं-इष्टफलं दैवजनितत्वेन आयानां-इष्टफ-लानां समूहस्तदेकहेतुत्वाद् यस्य, आधीनां-मनःपीडानां आयो-लाभ आध्यायः, अधियां-कुबुद्धीनां आयोऽध्यायः, दुर्ध्यानं वाऽध्यायः, उपहत आध्यायो वा अध्यायो येन सः। *भग० ३*। सूत्रदाता। *स्था० २९१*। सूत्रार्थतदुभयविदः ज्ञानदर्शनचारित्रेषूद्युक्ता-उपयुक्तास्तथा शिष्याणां सूत्रवाच-नाप्रदानादिनिष्पादका एतादृशा भवन्ति। *व्यव० १७१* आ।

उवट्टणं– सकृत् उवट्टणं। *निशी० १९०* आ।

उवट्टित्ता– उद्वृत्य-तत्परित्यागेनान्यत्र गत्वा। *उत्त० २९६*।

उवट्टिय– उपस्थापितः। *आव० २८८*।

उवट्ठवेति– उपस्थापयति, उपढौकयति, प्राभृतीकरोति। *जम्बू० २४४*।

उवट्ठाइ– उत्तिष्ठते। *आव० ३१८*।

उवट्ठाएज्जा– उपतिष्ठेत् उपस्थानम्-परलोकक्रियास्वभ्युपगमं कुर्यादित्यर्थः। *भग० ६४*।

उवट्ठाणं– गोसादिठाणं। *निशी० ७०* अ। उपस्थानेन धर्म्मचरणाभासोद्यमेन वर्त्तते इति उपस्थानः। *आचा० २२७*।

उवट्ठाणगिह– उपस्थानगृहं-आस्थानमण्डपः। *स्था० २९४*। *भग० २००*।

उवट्ठाणसाला– उपस्थानशाला-आस्थानसभा। *औप० २३*। अस्थानशाला। *आव० ३००*। उपवेशनमण्डपः। *निर० ८*। आस्थानमण्डपः। *निर० १०*। *जम्बू० १८७*।

उवट्ठाणा– मासद्वयं चतुर्मासद्वयं चावर्जयित्वा पुनस्तत्रैव वस-तामुपस्थानेति। *स्था० ३२१*।

उवट्ठावणा– उपस्थापना-महाव्रतारोपणरूपा। *उत्त०५६८*। उप-सामीप्येन सर्वदावस्थानलक्षणेन तिष्ठन्त्यस्यामिति उपस्थापना-शय्या। *व्यव० १०४* अ।

उवट्ठावणाए गहणं– तत्रोपस्थापनायां विधीयमानायां हस्तिद-न्तोन्नताकारहस्तादिभिर्यद् रजोहरणादि गृह्यते तद् उपस्था-पनाग्रहणम्। *बृह० २५६* अ।

उवट्ठावणायरिते– उत्थापनयाचार्यः। *स्था० २३९*।

उवट्ठाविए गहणं– उपस्थापितस्य-छेदोपस्थापनीयचारित्रं प्रापितस्य यद् उपधेर्धारणं परिभोगो वा तद् उपस्थापित-ग्रहणम्। *बृह० २८६* अ।

उवट्ठावित्तए– उत्थापयितुं-महाव्रतेषु व्यवस्थापयितुम्। *स्था० ५७*।

उवट्ठिअ– उपस्थितं-उद्यतम्। *ओघ० १७६*।

उवट्ठिए– उपस्थितं-प्रत्युद्यतम्। *आव० ५४१*। दीक्षितः। *बृह० २६४* अ। अत्यन्तावस्थायि। *भग० १००*।

उवट्ठिता– दूरीकृता। *निशी० ९४* आ।

उवट्ठिताओ– गोलोपलखनिः। *निशी० ४०* आ।

उवट्ठिय– उपस्थापितः। *आव० ५५९*। उपस्थितः-उद्यतः। *उत्त० ६३७*। प्रत्यासन्नीभूतम्। *उत्त० ६६८*।

उवणयं– उपनयनं-कलाग्रहणार्थं नयनं धर्मश्रवणनिमित्तं वा साधुसकाशं नयनम्। *आव० १२९*।

उवणयणं– कलाग्रहणम्। *भग० ५४५*। उपनयनं-बालानां कलाग्रहणम्। *प्रश्न० ३९*।

उवणिक्खिविउं– उपनिक्षिप्य। *आव० ५५५*।

उवणिवाय– उपनिपातः-जनमीलकः। *स्था० ४२*।

उवणिविट्ठं– उपविष्टं-सामीप्येन स्थितम्। *जीवा० १९९*।

उवणिहि– उप-सामीप्येन निधिः उपनिधिः-एकस्मिन् विवक्षितेऽर्थे पूर्वं व्यवस्थापिते तत्समीप एवापरापरस्य वक्ष्यमाणपूर्वानुपूर्व्यादिक्रमेण यन्निक्षेपणं सः। *अनुयो० ५२*।

उवणीअ– उपनीतः-नियोजितः। *स्था० २५९*। उपसंहा-रोपनययुक्तमुपनीतम्। *अनुयो० १३३*। उपनयोपसंहृतमुप-नीतम्। *अनुयो० २६२*। उपसंहारयुक्तम्। *स्था० ३९७*। प्रापितम्। *स्था० ४९४*। निगतिमं, योजितम्। *स्था० २५९*।

उवणीए– उपनीतं-योजितम्। *जम्बू० १०५*।

उवणीते– उपनीतं-प्रापितं, दशमो विशेषः। *स्था० ४९२*।

उवणीय– उपनीतं-योजितम्। *जीवा० २६८*। उपनयोपसं-हृतम्। *आव० ३७६*। विनीतं, ढौकितं, दायकेन वर्णितगुणं वा। *औप० ३९*। प्रापितः। *आचा० ७८*।

उवणीयअवनीयवचनं– उपनीतापनीतवचनं-कश्चिद् गुणः प्रशस्यः कश्चिन्निद्यः। *आचा० ३८७*।

उवणीयवयणं– उपनीतवचनं-प्रशंसावचनम्। *आचा०*

३८७। प्रज्ञा० २६७। गुणोपनयनरूपम्। प्रश्न० १९८।
उवणीयावणीयवयणं– उपनीतापनीतवचनं-यत्प्रशस्य निन्दति। प्रज्ञा० २६७। यत्रैकं गुणमुपनीय गुणान्तरमपनीयते तत्। प्रश्न० ११८।
उवणेइ– उपनयति, प्राभृतीकरोति। जम्बू० २०४।
उवण्णं– प्रोज्झितं। निशी० २७४ आ।
उवण्णत्थ– उपन्यस्तं-उपकल्पितम्। दशवै० १७१।
उवण्हाणयं– माषचूर्णादिसिणाणं। निशी० ११६ आ।
उवतत्तो– उपतप्तः-आपन्नसंतापः। प्रश्न० १९।
उवतेसणे– उपदिश्यत इति उपदेशनं-उपदेशक्रियाया व्याप्यमुपलक्षणत्वादस्य क्रियाया यद् व्याप्यं तत् कर्म्मेत्यर्थः। द्वितीया वचनविभक्तिः। स्था० ४२८।
उवतेसरुई– उपदेशः-गुर्वादिना कथनं तेन रुचिर्यस्येत्यु-पदेशरुचिः। स्था० ५०३। उत्त० ५६३।
उवत्तावलिए– चतत्रावलितः। सूत्र० ३८७।
उवत्तिया– अपवर्त्तिता। ज्ञाता० ४८।
उवत्थड– उपस्तीर्णः-उपच्छादितः। भग० ३७, १५३।
उवत्थमं– अस्तं। निशी० ६० अ।
उवत्थाण– उपस्थानं-प्रत्यासक्तिगमनम्। निर० ३३।
उवत्थाणियं– उपस्थानं-प्रत्यासक्तिगमनं तत्र प्रेक्षणककरणाय यदा विधत्ते। निर० ३३।
उवत्थाणीअं– उपस्थानिकं-प्राभृतम्। जम्बू० २०३, २५२।
उवत्थिए– अभ्युपगतः। ज्ञाता० २२०।
उवत्थिया– उपस्थिता-उपनता। सम० १८।
उवदंसं– उपदर्शनम्। आव० ७२६।
उवदंसणकूड– उपदर्शनकूटं, उपदर्शननामकं कूटम्। जम्बू० ३७७।
उवदंसिज्जंति– उपदर्श्यन्ते-निगमनेन शिष्यबुद्धौ निःशङ्कं व्यवस्थाप्यन्ते। नन्दी० २१२। उपदर्श्यन्ते उपनयनिगम-नाभ्यां सकलनयाभिप्रायतो वा। सम० १०९।
उवदंसिया– उप-सामीप्येन यथा श्रोतृणां झटिति यथा-वस्थितवस्तुतत्त्वावबोधो भवति तथा स्फुटवचनैरित्यर्थः, दर्शिताः-श्रवणगोचरं नीता उपदिष्टाः। प्रज्ञा० ४।
उवदंसेइ– सकलनययुक्तिभिः उपदर्शयति। भग० ७११। स्था० ५०३। उपदर्शयति-प्रकाशयति। भग० १४९।
उवदिट्ठाभावमूलं– उपदेष्टुभावमूलं-उपदेष्टा-यैः कर्मभिः प्राणिनो मूलत्वेनोत्पद्यन्ते। आचा० ८८।
उवद्दवा– उपद्रवाः-राजचौर्यादिकृताः। भग० ४६९।
उवद्दवेइ– उपद्रवयति-उपद्रवं करोति। स्था० ३०५।
उवद्दवेह– उपद्रवयथ-मारयथ। भग० ३१८।
उवधाणं– उपदधातीत्युपधानं-तपः। दशवै० १०४।
उवधायपंडगो– पंडगस्स बीयो भेओ। निशी० ३१ अ।
उवधारणया– धार्यतेऽनेनेति धारणं, उपसामीप्येन धारणं उपधारणं-व्यञ्जनावग्रहेऽपि द्वितीयादिसमयेषु प्रतिसमयपूर्वा-पूर्वशब्दादिपुद्गलादानपुरस्सरं प्राक्तनप्राक्तनसमयगृहीत-शब्दादिपुद् गलधारणपरिणामः तद्भाव उपधारणता। नन्दी० १७४। उपधारणता-अविच्युतिस्मृतिवासनाविषयीकरणम्। स्था० ४४१।
उवधारियं– उपधारितं-अवधारितम्। भग० १०१।
उवनंद– उपनन्दः। आव० २०१।
उवनगरगामं– उपनगरग्रामः। आव० ३०१।
उवनिक्खित्ते– उपनिक्षिप्तः-व्यवस्थापितः। आचा० ३४४।
उवनिग्गय– उपविनिर्गतः-निरन्तरविनिर्गतः। राज० ६।
उवनिहिते– उपनिधीयत इति उपनिधिः-प्रत्यासन्न यद्यथा-कथञ्चिदानीतं तेन चरति तद्ग्रहणायेत्यर्थः इत्यौपनिधिकः, उपनिहितमेव वा यस्य ग्रहणविषय-तयाऽस्ति स प्रज्ञादेरा-कृतिगणत्वेन मत्वर्थीयाण्प्रत्यये औपनिहित इति। स्था० २९८।
उवनिहिय– उपनिधिना-प्रत्यासत्त्या चरति-प्रत्यासन्नमेव गृह्णाति यः स औपनिधिकः। प्रश्न० १०६।
उवनिही– उपनिधिः-प्रत्यासत्तिः। प्रश्न० १०६।
उवन्नास– उपन्यसनं उपन्यासः। दशवै० ३५।
उवन्नासोवणए– वादिना अभिमतार्थसाधनाय कृते वस्तूपन्यासे तद्विघटनाय यः प्रतिवादिना विरुद्धार्थोपनयः क्रियते पर्यनुयोगोपन्यासे वा य उत्तरोपनयः स उपन्यासोपनयः। स्था० २५४।
उवप्पयाण– उपप्रदानं-अभिमतार्थदानम्। विपा० ६५। उपप्रदानम्। दशवै० १०९।
उवब्बूहियं– उपबृंहितं-समर्थितं, अनुमतं वा। आव० ५३९।

उवभोग– उपभुज्यत इति उपभोगः-सकृद्भोगोऽशनपानादि, अन्तर्भोगः, आहारादि वा। *आव० ८२८*। सकृद्भोगः। *भग० २९७*। *आव० ८३०*। पुनःपुनर्भुज्यत इति उपभोगः-वस्त्रालङ्कारादि। *प्रज्ञा० ४७५*। ण्हाणवत्थाभरणगंधमल्लाणु-लेवणधूवणवासतंबोलादि। *निशी० १*आ। धारणमुप-भोगः। *आव० ३२५*। उपभोगः-पौनः पुन्येन चोपभोजन-मुपभोगः। *भग० ३५०*।

उवभोगंतराए– उपभोगान्तरायः-यदुदयवशात् सत्यपि विशि-ष्टवस्त्रालङ्कारादिसम्भवेऽसति च प्रत्याख्यानपरिणामे वैराग्ये वा केवलकार्पण्यान्नोत्सहते भोक्तुं तत्। *प्रज्ञा० ४७५*।

उवम– उपमीयतेऽनेन दार्ष्टान्तिकोऽर्थ इत्युपमानम्। *दशवै० ३४*।

उवमा– उपमा-सादृश्यम्। *उत्त० २७९*। दृष्टान्ताः। *बृह० १६८*आ। सादृश्योपदर्शनरूपा। *उत्त० २७२*। उपमादोषः-हीनाधिकोपमानाभिधानं, अष्टाविंशतितमः सूत्रदोषः। *आव० ३७४*। उपमा। *प्रज्ञा० ३६४*। खाद्यविशेषः। *जीवा० २७८*। उपेत्युपयोगपूर्वकं मेति ज्ञानं, उपमा-सम्प्रधारणा। *उत्त० २२४*।

उवमाणं– उपमानं-दृष्टान्तः। *ओघ० १७*।

उवमादोसो– उपमादोषः-यत्र हीनोपमा क्रियते। सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषेऽष्टाविंशतितमो दोषः। *अनुयो० २६२*।

उवयंति– अवपतन्ति-अवतरन्ति। *आचा० २६६*।

उवयरयं– अपवरकम्। *आव० ७२२*।

उवयातिते– उपयाचिते-देवताराधने भवः औपयाचितकः। *स्था० ५१६*।

उवयार– उपचारः। *आव० ५६, २१३*। पूजा। *राज० ३६*। *प्रज्ञा० ८६*। *जीवा० २२७, २५५*। *जम्बू० ७७*। *औप० ५*। आराधनाप्रकारः। *दशवै० २५०*। लोकव्यवहारः। *औप० १३*। देवतापूजा। *प्रश्न० ५१*। पूजा। उपकारः। *प्रश्न० ११७*। *दशवै० ७९*। पूजा। *भग० ५४०*। व्यवहारः। *स्था० ४०९*। व्यवहारः, पूजा वा। *भग० ९२५*।

उवयारियलेणं– गृहस्य पीठबन्धकल्पम्। *भग० १४६*।

उवयारिया– उपकरोति-उपष्टभ्नाति प्रासादावतंसकानि-त्युपकारिका-राजधानीप्रभुसत्कप्रासादावतंसकादीनां पीठिका। *जम्बू० ३२१*।

उवयालि– अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमवर्गस्य तृतीयमध्य-यनम्। *अनुत्त० १७२*।

उवयाली– अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य तृतीयमध्ययनम्। *अन्त० १४*।

उवयिगा– उद्देहिया। *निशी० ५३*आ।

उवयिया– त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३२*।

उवयोगपदं– प्रज्ञापनायामेकोनत्रिंशत्तमं पदम्। *भग० ७१३*।

उवरए– उपरतः-सङ्कुचितगात्रः। *आचा० २०४*। उपरतः-कालगतः। *व्यव० ३४*आ।

उवरति– उपरतिः-विरतिः। *स्था० ३*।

उवरतो– उपरतः-रावः। *उत्त० २१८*।

उवरय– उद्वलको-वियोजकः। *सम० ४७*। उपरताः। *आचा० ३५०*।

उवराग– उपरागः-ग्रहणम्। *भग० १४७*। उपरञ्जनं ग्रहणमि-त्यर्थः। *प्रश्न० ३९*।

उवराते– उपरागः-राहुविमानतेजसोपरञ्जनम्। *स्था० ४७६*।

उवरिं– उपरि-कुड्यस्थाने। *ओघ० १७५*। नीव्रादौ। *ओघ० १६२*। अग्रे। *स्था० २२५*।

उवरिएणं– जत्थ गामे संखडी तत्थेव गंतुकामा जे वा तस्स गामस्स उवरिएणंति मज्झेण गंतुकामा। *निशी० ३१६*अ। उपरितनः। *आव० २६२*।

उवरिचरे– उपरिचरः सत्यवादी वसू राजा। *जीवा० १२१*।

उवरिभासा– उपरिभाषा-उत्तरकालं तदेव किलाधिकं यद् भाषते सा। *आव० ७९२*।

उवरिमागारो– उपरिमाकारः-उपरितन आकारः-उत्तरङ्गा-दिरूपः। *जीवा० २१६*।

उवरियलेणं– उपरितलम्। *भग० १९५*।

उवरिल्लए– उपरितनं, उपरिभवम्। *दशवै० २११*।

उवरिल्ले– उपरितनम्। *अनुयो० १७७*।

उवरिल्ले माणसे– उपरितनमध्यमाधस्तनानां मानसानां सद्भावात् तदन्यव्यवच्छेदायोपरितने, माणसे-गंगादिप्ररूपणतः प्रागुक्तस्वरूपे सरसि सरःप्रमाणायुष्कयुक्ते इत्यर्थः। *भग० ६७४*।

उवरिल्ले माणसुत्तर– उपरितनमानसोत्तरे। *भग० ६७४*।

उवरुद्द– उपरौद्रः-नरके षष्ठः परमाधार्मिकः। *आव०६५०*।

यस्तु तेषामङ्गोपाङ्गानि भनक्ति सोऽत्यन्तरौद्रत्वादुपरौद्रः, नरके षष्ठः परमाधार्मिकः। *सम० २८*। उपरुद्रः-षष्ठः पर-माधार्मिकः। *सूत्र० १२८*।

उवरुवरि– उपर्युपरि-निरन्तरम्। *प्रश्न० ५१*।

उवरेगं– उपरेकं-एकान्तं, निर्व्यापारता वा। *उत्त० १९३*।

उवरोह– उपरोधः-निषेधः। दस० १०८। सङ्घट्टनादि-लक्षणः। *आव० ५९३*।

उवल– उपलः-गण्डशैलादिः। *उत्त० ६८९*। टङ्कादयुपकर-णपरिकर्मणा योग्यः पाषाणः। *जीवा० २३*। *प्रज्ञा० २७*। पृथिवीभेदः। *आचा० २१*। दग्धपाषाणः। *भग० २९३*। छिन्नपासाणा। *निशी० ८०* अ। छिन्नपाषाणाः। *बृह० १६२* आ।

उवलद्धिमंति– उपलब्धिमन्ति-द्रष्टृणि। *दशवै० १२९*।

उवलद्धी– उपलब्धिः, उपलब्धये-उपलब्धिनिमित्तम्। *आव० २८०*।

उवलभसि– उपलम्भयसि, दर्शयसि। *भग० ६८३*।

उवलभेज्जा– उपलभेत-प्राप्नुयात्। *जीवा० १२३*।

उवलिंपिज्ज– उपलिम्पनम्। *आचा० १३५*।

उवलित्ता– जातिजुंगिताभेओ। *निशी० ४२* आ।

उवलेद्दा– संतुष्ठा। *उत्त० १९२*।

उवलेवण– उपलेपनं छगणादिना। *अनुयो० २६*। छगलमट्टियाए लिंवणं। *निशी० २३१* अ।

उवलेवणकओवयारो– कृतोपलेपनोपचारः। *आव० ४१६*।

उवल्लियंती– उपलीयन्ते-आश्रयन्ति। *व्यव० २७८*आ।

उवल्लिसामि– उपालयिष्ये-वत्स्यामि। *आचा० ४०६*।

उववज्जति– उत्पद्यते। *जीवा० ११०*।

उववज्जिऊण– उपयुज्य-उपयोगं दत्त्वा। *ओघ० ११६*।

उववज्झा– उपवाह्याः-राजादिवल्लभाः। औपवाह्याः-राजा-दिवल्लभानां कर्मकरा इति। *दशवै० २४८*।

उववण्णो– उपपन्नः। *जीवा० ९७*।

उववत्तारो– वचनव्यत्ययादुपपत्ता भवति इति। *स्था० ४२०*।

उववन्नो– उपपन्नः-आश्रितः। *सूर्य० २८१*।

उववाइए– उपपातः-प्रादुर्भावो जन्मान्तरसंक्रान्तिः, उपपाते भवः औपपातिकः। *आचा० १६*। उपपादुकः– भवान्तरस-ङ्क्रान्तिभाक्। *आचा० २०*।

उववाइय– उपपातेन निर्वृत्तः औपपातिकः-भवाद्भवान्तर-गामीति। *सूत्र० २०*। उपयाच्यते-मृग्यते स्म यत्तत् उपयाचितं-ईप्सितं वस्तु। *ज्ञाता० ८४*।

उववाइया– उपपाताज्जाताः उपपातजाः अथवा उपपाते भवाः औपपातिकाः-देवाः नारकाश्च। *दशवै० १४१*।

उववाए– उपपातः-उपपाताभिमुख्येनापान्तरालगतिवृत्त्ये-त्यर्थः। *भग० ९६३*। देवजन्म। *स्था० ४१९*। नारकादयुप-पातार्थः, द्वादशशते षष्ठोद्देशकः। *भग० ५९६*। उपपातः-प्रादुर्भावः। *प्रज्ञा० ३२८*।

उववाएणं– उपपतनमुपपातः, बादरपृथ्वीकायिकानां पर्याप्तानां यदनन्तरमुक्तं स्थानं तत्प्राप्त्याभिमुख्यमिति भावः तेनोपपा-तेन, उपपातमङ्गीकृत्य। *प्रज्ञा० ७३*।

उववात– उपपातं-नारकदेवानां जन्म। *स्था० ४६६*। उपपातः-गमनमात्रम्। *स्था० ३७६*।

उववातसभा– उपपातसभा-यस्यामुत्पद्यते सा। *स्था० ३५२*।

उववातो– उवसंपज्जणं। *निशी० २४१* अ।

उववायं– उपपातं-जन्म। *आचा० १६३*। भवनपतिस्व-स्थानप्राप्त्याभिमुख्यम्। *भग० १४३*। उत्पातेन निर्वृत्तं औत्पातिकम्। *आव० ७३१*। उप-समीपे पतनं-स्थानं उपपातः दृग्वचनविषयदेशावस्थानं। *उत्त० ४४*। उपपातः- सेवा। *भग० १६८*।

उववायगई– उपपाताय-उत्पादाय गमनं सा उपपातगतिः। *भग० ३८१*।

उववायगती– उपपात एव गतिः उपपातगतिः। गतिप्रपातस्य चतुर्थो भेदः। *प्रज्ञा० ३२६*।

उववायसभा– सिद्धायतनस्योत्तरपूर्वस्यां सभा उपपातसभा। *जीवा० २३६*।

उववास– उपवासः, अभक्तार्थकरणम्। *स्था० १२६*।

उववूह– उपबृंहणं-समानधार्मिकाणां सद्गुणप्रशंसनेन तद्वृद्धि-करणम्। *दशवै० १०२*। उपबृंहणमुपबृंहा-दर्शनादिगुणान्वि-तानां सुलब्धजन्मानो यूयं युक्तं च भवादृशामिदमित्यादि-वचोभिस्तत्तद्गुणपरिवर्द्धनं सा। *उत्त० ५६७*। समानधार्मि-काणां सद्गुणप्रशंसनेन तद्वृद्धिकरणम्। *प्रज्ञा० ५६*।

उववूहइ– उपबृंहते-समर्थयति। *दशवै० ४४*।

उववेओ– उपपेतं इति लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेतः। *स्था० ४६१*।

उववेय– उपपेतः-युक्तः। *जीवा० २७४*। *भग० ११९*। उप अप इतइति शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादुपपेतः-युक्तः। *ज्ञाता० ११*।

उवसंकमित्ता– उपसङ्क्रम्य। *सूर्य० ११*।

उवसंकमित्तुं– उपसङ्क्रम्य, आसन्नीभूय। *आचा० ३३१*। उपसङ्क्रम्य-उपेत्य। *आचा० २७१*।

उवसंखा– उपसंख्या-सम्यग्यथावस्थितार्थपरिज्ञानम्। *सूत्र० २१४*।

उवसंत– उपशान्तं-अनाकुलम्। *ओघ० १७६*। किञ्चि-न्मिथ्यात्वरूपतामपनीय सम्यक्त्वरूपतया परिणतं किञ्चि-न्मिथ्यात्वरूपमेव। *बृह० २१* आ। रागद्वेषपावकोपशमाद् उपशान्तः। *आचा०१५०*। रूपालो-कानाद्यौत्सुक्यत्यागतः। *अनुयो० १४०*। अन्तर्वृत्त्या उप-शान्तः। *भग० ४९०*। विष्कम्भितोदयमपनीतमिथ्यास्वभावं च। विष्कम्भितोदय-मित्यर्थः। *स्था० ४८*। उपशान्तं-न सर्वथाऽभावमापन्नं, निकाचितादयवस्थोद्रेकरहितं वा। *प्रज्ञा०४०३*। *औप० ३५*। *जम्बू० १४६*। *जम्बू० ३८९*। जम्बूद्वीपैरवते तीर्थंकर-नाम। *सम० १५३*। पवज्जापरिणतं। *निशी० २८* अ। उपशान्तः-उपरतः। *दशवै० २०६*। *सूत्र० ४१७*। अपगत-सन्देहः संवृत्त इति। *सूत्र० ४०९*। अनुदयावस्थः। *प्रज्ञा० २९१*।

उवसंतकसातो– उपशान्तकषायः। *उत्त० २५७*।

उवसंतजीवी– अन्तर्वृत्त्यपेक्षया उपशान्तजीवी। *प्रश्न० १०६*।

उवसंतमोह– उपशान्तमोहः-अनुत्कटवेदमोहनीयः। *भग० २२३*। श्रेणिपरिसमाप्तावन्तर्मुहूर्तं यावदुपशांतवीतरागः। भूतग्रामस्यैकादशं गुणस्थानम्। *आव० ६५०*।

उवसंतमोहणिज्जो– उपशान्तमोहनीयः-उपशान्तं-अनुदयं प्राप्तं मोहनीयं दर्शनमोहनीयं यस्यासौ। *उत्त० ३०६*।

उवसंपजहण– उवसंपदनं उवसम्पद्-अन्यरूपप्रतिपत्तिः, सा च हानं च स्वरूपपरित्याग उपसम्पद्धानम्। *उत्त० ४७०*।

उवसंपज्जइ– उवसम्पद्यते। *आव० ८२५*।

उवसंपज्जणा– उपसम्पदः। *दशवै० १०५*।

उवसंपज्जमाणगति– उपसंपद्यमानगतिः-यदन्यमुपसम्प-द्यआश्रित्य तदवष्टम्भेन गमनम्। विहायोगतेस्तृतीयो भेदः। *प्रज्ञा० ३२७*।

उवसंपज्जसेणियपरिकम्मे– पञ्चमं परिकर्म। *सम० १२८*।

उवसंपज्जित्ता– उपसम्पद्य-सामीप्येनाङ्गीकृत्य। *दशवै० १५०*।

उवसंपन्नं– उपसम्पन्नं-नियमायोत्थितम्। *सूत्र० ४१०*।

उवसंपया– उपसंपत्-सामीप्येनाङ्गीकरणं यदेतदुत्प्रव्रजनम्। *दशवै० २७३*। सामाचार्या दशमो भेदः। उपसम्पत्-इतो भव-दीयोऽहमित्यभ्युपगमः। *स्था० ४९९*। उपसम्पत्। *आव० २५९*। सामाचार्या दशमो भेदः। उपसम्पत्-ज्ञानादिनिमित्त-माचार्यान्तराश्रयणम्। *भग०९२०*। उपसंपत्तिरूपसंपत्-ज्ञानाद्यर्थ भवदीयोऽहमित्यभ्युपगमः। *स्था० १४०*। त्वदी-योऽहमित्येवं श्रुताद्यर्थमन्यदीयसत्ता-भ्युपगमः। *अनुयो० १०३*। उवसंपदनं उपसम्पत्-अन्यरूप-प्रतिपत्तिः। *उत्त० ४७०*।

उवसंहार– उपसंहारः-उपनयः। *दशवै० ६२*। *बृह० १३६*।

उवसग्ग– उपसृज्यते-धातुसमीपे नियुज्यते इति उपसर्गः। *प्रश्न० ११७*। बाधाविशेषाः। *स्था० २८०*। राजादिजनितः। *ओघ० १९०*। उप-सामीप्येन सर्जनम्, उपसृज्यतेऽनेनेति वा करणसाधनः, उपसृज्यतेऽसाविति वा कर्मसाधनः। *आव० ४०४*। प्रव्रज्याग्रहणे निवारणम्। *पिण्ड० १३९*। देवादिकृतोपद्रवाः। *स्था० ५२३*। राजस्वजनादिकृतो देव-मनुष्यतिर्यञ्चकृतो वा। *पिण्ड० १७०*। उप-सामीप्येन सृज्यते तिर्यग्मनुष्यामरैः कर्मवशगेनात्मना क्रियत इति उपसर्गः। *उत्त० १०९*। उपसर्गः-उपसर्जनं, धर्मभ्रंशनम्। दिव्यादयः। *भग०१०१*।

उवसग्गपरिण्णा– उपसर्गपरिज्ञा, सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे तृतीयमध्ययनम्। *आव० ६५१*। *उत्त० ६१४*।

उवसग्गपरिन्ना– सूत्रकृताङ्गे तृतीयमध्ययनम्। *सम० ३१*।

उवसग्गसहो– उपसर्गसहः। *आव० ६४८*।

उवसत्तो– उपसक्तः-गाढमासक्तः। *उत्त० ६३२*।

उवसमंति– उपशाम्यन्ति-संवर्त्तकवायुविकुर्वण्णान्निवर्त्तन्ते, संवर्त्तकवातविकुर्वणमुपसंहरन्तीति भावः। *राज० २३*।

उवसम– उपशममिति औपशमिकम्। विपाकोदयविष्कम्भणलक्षणः। *दशवै० ४३*। उपशमः-विपाकोदयविष्कम्भलक्षणः। *नन्दी० ७७*। क्रोधाद्युदयाभावे भवति। *आचा० १५०*। शान्तिरूपः। *दशवै० २३४*। पञ्चदशदिवसनाम। *जम्बू० ४९०*। *सूर्य० १४७*। क्षायोपशमिकः। *सूत्र० ६*। विंशतितमो मुहूर्तनाम। *जम्बू० ४९१*। मध्यस्थपरिणामः। *आव० ८५१*। उदीर्णस्य क्षयः अनुदीर्णस्य च विपाकतः प्रदेशतश्चाननुभवनम्। सर्वथैव विष्कम्भितोदयत्वमित्यर्थः। *भग० ५९*। खमा। *दशवै० १२४*। उदयनिरोधोदयप्रा-प्ताफलीकरणम्। *दशवै० २३४*।

उवसमणा– उपशमना-उदयोदीरणानिधत्तनिकाचनाकरणानामयोग्यत्वेन कर्म्मणोऽवस्थापनम्। *स्था० २२१*।

उवसमविवेयसंवरं– उपशमविवेकसंवरम्, चिलातस्योपदेशः। *आव० ३७१*।

उवसमिए– उपशमः-उदीर्णस्य कर्म्मणःक्षयोऽनुदीर्णस्य विष्कम्भितोदयत्वं स एवौपशमिकः-क्रियामात्रं, उपशमेन वा निर्वृत्तः औपशमिकः-सम्यग्दर्शनादि। *भग० ६४९*। औप-शमिकः-उपशमनमुपशमः-कर्मणोऽनुदया क्षीणावस्था भस्मपटलावच्छन्नाग्निवत् स एव, तेन वा निर्वृतः। *अनुयो० ११४*।

उवसामिअं– उपशमितं-भस्मछन्नाग्निकल्पतां प्रापितम्। *आव० ७९*।

उवसामेमाण– क्षुद्रव्यन्तराधिष्ठितं समयप्रसिद्धविधिनोपशम-यन्त इति। *स्था० ३५३*।

उवसाहिज्जउत्ति– पच्यताम्। *निशी० ३४९* आ।

उवसित– उपाश्रितः-अङ्गीकृतः। वैयावृत्त्यकरत्वादिना प्रत्या-सन्नतरः। द्वेषः। शिष्यप्रतीच्छककुलाद्यपेक्षा। *भग० ३८५*।

उवस्सए– उपाश्रयः। *प्रश्न० १२७*।

उवस्सओ– उपाश्रयः-वसतिः। *ओघ० १२७*।

उवस्सग– उपाश्रयः-वसतिः। *ओघ० १७३*।

उवस्सगा– उपाश्रयाः। *बृह० १८३* अ।

उवस्सते– उपाश्रयः-निलयः। *प्रश्न० १२८*।

उवस्सय– उपाश्रयः-वसतिः। *ओघ० ६५, १७३*। *दशवै० २१८*। *जम्बू० १२१*। उपाश्रयः-गृहपतिगृहादिकम्। *स्था० ३१५*। वसतेर्वृत्तिपरिक्षिप्तः, परेषामनालोकवत इत्यर्थः। *ज्ञाता० २०५*। उपाश्रयाः-उपाश्रीयन्ते-भज्यन्ते शीतादि-त्राणार्थं ये ते उपाश्रयाः-वसतयः। *स्था०१५७*। पडिस्सयो। सव्वगं वा आसणं। *दशवै० १११*।

उवस्सयसंकिलेसे– द्वितीयः संक्लेशः। उपाश्रयोवसतिस्तद्विषयः सङ्क्लेशः-असमाधिः उपाश्रयसङ्क्लेशः। *स्था० ४८९*।

उवस्सित– उपाश्रितः-द्वेषः। शिष्यकुलाद्यपेक्षा। *स्था० ४४१*। द्वेषः, शिष्यप्रतीच्छककुलाद्यपेक्षा। *स्था० ३१९*।

उवहडे– उपहृतं-भोजनस्थाने ढौकितं भक्तमिति भावः। *स्था० १४८*।

उवहतो– अविसुद्धो। *निशी० ११६* अ।

उवहय– उपहतिः। *उत्त० १४५*। सदोसं। *निशी० ८१* आ।

उवहयपरिणामो– उपहतपरिणामः। *आव० ५१३*।

उवहरइ– उपहरति-विनाशयति। *ज्ञाता० १९२*।

उवहाणं– उपधानं-तपः। *सूत्र० ६५, ६९, ७५*। तपश्चरणम्। *सूत्र० २५१*। अनशनादिकं तपः। *सूत्र० ५८*। आगमोपचा-ररूपमाचाम्लादि। *उत्त० १२८*। गुणोपष्टम्भकारि। *प्रश्न० १५७*। उच्छीर्षकम्। *बृह० २२०* अ। उपधानं-करणम्। *व्यव० ५०* आ। स्थगनम्। *व्यव० ५* आ। प्रायश्चित्तम्। *व्यव० १९५* अ। विहितशास्त्रोपचारः। *उत्त० ६५६*। तपः। *स्था० ४४५*। उपधानं-तपः। *सम० ५७*। *स्था० ६५, १९५*। उपधीयते-उपष्टभ्यते श्रुतमनेनेति उपधानं-श्रुतविषयस्तपउपचारः। *स्था० १८१*। विधानम्। *सम० १२७*। उपदधातीत्युपधानं-उपकरोतीत्यर्थः। *ओघ० ११३*। अङ्गानङ्गाध्ययनादौ यथायोगमाचाम्लादितपो-विशेषः। *उत्त० ३४७*।

उवहाणगं– पूयादिपुन्नं सिरोवहाणं। *निशी० ६१* अ। उपधानम्। *स्था० २३४*। उपधानकं-अप्रतिलेखित-दूष्यपञ्चके द्वितीयो भेदः। *आव० ६५२*।

उवहाणपडिमा– उपधानं-तपस्तत्प्रतिमोपधानप्रतिमा, द्वादश भिक्षुप्रतिमा एकादशोपासकप्रतिमाश्चेत्येवंरुपा। *स्था० ६५*। *सम०*

९६।

उवहाणवीरिए– उपधानं-तपस्तत्र वीर्यं यस्य स उपधान-वीर्यः-तपस्यनिगूहितबलवीर्यः। *सूत्र० ६५*।

उवहाणसुयं– उपधानश्रुतं-आचाराङ्गस्याष्टममध्ययनम्। *उत्त० ६१६*। *सम० ४४*। उपधानश्रुतं, आचारप्रकल्पे प्रथमश्रुत-स्कन्धस्याष्टममध्ययनम्। *आव० ६६०*। *प्रश्न० १४५*।

उवहारं– उपहारः। *आव० १९०*। बलिः। *आव० ६९८*।

उवहारा– बलिमादिया। *निशी० २६१* अ।

उवहारियं– अवधारितं-निर्णीतम्। *आव० ६३५*।

उवहि– उपदधातीति उपधिः-उप-सामीप्येन संयमं धारयति पोषयति चेत्यर्थः। स च पात्रादिरूपः। *ओघ० १२*। उपकरणम्। *उत्त० ५८८*। वर्षाकल्पादिः। *उत्त० ३५८*। उपकरणमाभरणादिद्रव्यतो, भावतस्तु छद्मादि येनात्मा नरक उपधीयते। *उत्त० ४६३*। उपधिः-संस्तारकादिः। *ओघ० ८०*। रजोहरणादिः। *स्था० ३१७*। उपधीयते-सङ्गृह्यत इति उपधिः। *आचा० १८०*। आगमोक्तं वस्त्रादिः। *दशवै० १९९*। पात्रनियोगादिः। *व्यव० २३७* अ। उपधिः-वस्त्रादिः। *प्रश्न० १२४*। उपधीयते-ढौक्यते दुर्गतिं प्रत्यात्मा येनासा-वुपधिः-माया, अष्ट-प्रकारं वा कर्म। *सूत्र० ६८*। उपकरणम्। *आव० ५६८*। *प्रज्ञा० २९१*। *प्रश्न० ३९*। उपदधातीति उपधिः। *ओघ० २०७*। माया। *प्रश्न० २८*। औधिकः। *प्रश्न० १५६*। माया। *सूत्र० १०३*। उपदधातीति उपधिः-उप-सामीप्येन संयमं धारयति पोषयति चेति पात्रादिरूपः। *ओघ० १२*। *आव० ६६१*। उपधीयते येनासावुपधिः-वञ्चनीय-समीपगमनहेतुर्भावः। *भग० ५७२*। उपधिः-उपकरणम्। *पिण्ड० १२*। कषायः। *दशवै० ७६*। उवकरणं। *निशी० ६४* आ।

उवहिअसुद्धं– उपधिना-मायया अशुद्धं-सावद्यं उपध्यशुद्धं, अधर्मद्वारस्यैकोनत्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० २६*।

उवहिए– उपधिकः-मायित्वेन प्रच्छन्नचारी। *ज्ञाता०८१*। उपहितः-प्रक्षिप्तः-प्राप्तः। *भग० १००*।

उवहिओ– अधिकज्ञानाद्यर्थकः सन् गुरुषु बहुमानपरः। *व्यव० २३६* अ।

उवहिय– औपधिकः-मायाचारी। *प्रश्न० ३०*।

उवहिसंकिलेसे– प्रथमसङ्क्लेशः। उपधीयते-उपष्टभ्यते संयमः संयमशरीरं वा येन स उपधिः-वस्त्रादिस्तद्विषयः सङ्क्लेशः-असमाधिः। *स्था० ४८९*।

उवहिसंभोग– उपधेः संभोगः उपधिसंभोगः। *व्यव० ११९*।

उवही– उवधिः-परवंचनाभिप्रायः। *बृह० ४६* आ। *निशी० २८९* आ।

उवाइक्कम्म– उपातिक्रम्य-सम्यक् परिहृत्य। *आचा० ३५६*।

उवाइणावित्तए– उपानाययितुं, संप्रापयितुम्। *बृह० ११४* आ। उपादापयितुं ग्राहयितुमित्यर्थः। *ज्ञाता०१७७*।

उवाइणावित्ता– उपादापय्य-प्रापय्य। *भग० २९२*।

उवाइणित्ता– उपनीय-अतिवाहय। *आचा० ३६५*।

उवाइति– उपयाचते। *आव० ४०४*।

उवाईय– उपादितं-उपभुक्तम्। *आचा० १०८*।

उवाईयसेसेण– उपादितं-उपभुक्तम्, तस्य शेषमुपभुक्तशेषम्। *आचा० १०८*।

उवाए– उपायः-अप्रतिहतलाभकारणम्। *ज्ञाता० ३४*।

उवाओ– अवपातः। गर्त्तः। *आचा० ३३८*। उपायः। *आव० ४१४*।

उवागच्छति– पविसति। *निशी० २३०* अ।

उवागच्छिज्जा– उपागच्छेयुः-अतिथयो भवेयुः। *आचा० ४०३*।

उवागमण– उपागमनं-स्थानम्। *आचा० ३७५*।

उवात– अवपातः। सेवा। *स्था० १२९, ५१६*। *ज्ञाता० ४*।

उवातिणा– नयति। *निशी० २२* आ।

उवातिया– उपयाचितम्। *निशी० ३५१* आ।

उवाते– उपायः-उपेयं प्रति पुरुषव्यापारादिका साधनसामग्री स यत्र द्रव्यादावुपेये अस्तीत्यभिधीयते यथैतेषु द्रव्यादिवि-शेषेषु साधनीयेष्वस्त्युपायः, उपादेयता वाऽस्य यत्राभिधीयते तदाहरणमुपायः। आहरणस्य द्वितीयो भेदः। *स्था० २५३*।

उवातो– आणानिद्देसो। *दशवै० १३९*।

उवादिणावेत्ता– उपादाय-गृहीत्वा, आक्रम्य। *सूत्र० २३४*।

उवादीयमाणा– उपादीयन्ते-कर्मणा बध्यन्ते। *आचा० ७८*।

उवाय– खड्डा। *दशवै० ७४*। एकान्तमृदुभणनादिलक्षणः। *दशवै० २४७*। उपसामीप्येन(आयः) विवक्षितवस्तुनोऽवि-कललाभहेतुत्वाद्वस्तुनो लाभ एवोपायः-अभिलषितवस्त्व-वाप्तये व्यापारविशेषः। *दशवै० ४०*।

उपार्जनहेतुः। *उत्त० ६३१*।

उवायकारी– उपायकारी-सूत्रोपदेशप्रवर्त्तकः। *सूत्र० २३४*।

उवायकिरिया– उपायक्रिया-यद्द्रव्यं येनोपायेन क्रियते सा। *सूत्र० ३०४*।

उवायणं– अवपातयतो-भ्रंशतोऽकुर्वतः। *व्यव० २९ अ*।

उवायवं– अवपातवान्-वन्दनशीलः, निकटवर्त्ती वा। *दशवै० २५३*।

उवारियालेणे– चमरचञ्चाबलीचञ्चाभिधानराजधान्योर्मध्यभागे तद् भवनयोर्मध्योन्नताऽवतरत् पार्श्वपीठरूपे अवतारिकलयने। *सम० ३१*।

उवालंभ– उपालम्भनं उपालम्भो-भङ्ग्यन्तरेणानुशासनमेव स यत्राभिधीयते सः। आहरणतद्देशे द्वितीयो भेदः। *स्था० २५३*। उपालम्भः-इयमेवानौचित्यप्रवृत्ति-प्रतिपादनगर्भा। *स्था० १५५*। सपिपासशिक्षारूप उपालम्भः। *बृह० १५० आ*। सानुनयोपदेशप्रदानम्। *व्यव० ११७ अ*। उपालम्भनं उपालम्भः-भंग्यैव विचित्रं भणनम्। *दशवै० ४६*।

उवाल्लियइ– उपलीयते। *आचा० ३६५*।

उवासंतर– अवकाशान्तरं-आकाशविशेषः, अवकाशरूपा-न्तरालं वा। *भग० ७७*। *स्था० ८६*।

उवासंतरे– द्वयोरन्तरमवकाशान्तरम्। *भग० २७२*। *स्था० ४३२*।

उवासग– उपासकः-श्रावकः। *आव० ६४६*। *निशी० २५ अ*। *सम० ११९*। साधू चेइए वा पोसहं उवासतो उवा-सगो भवति। *निशी० १२१ आ*। उपासते-सेवन्ते यतीनित्युपासकाः-श्रावकाः। *उत्त० ६१३*।

उवासगदसा– उपासकानां-श्रमणोपासकानां सम्बन्धिनो-ऽनुष्ठानस्य प्रतिपादिका दशाः-दशाध्ययनरूपा उपासक-दशाः। *उपा० १*। *दशवै० ४७*।

उवासणा– उपासना-नापितकर्म। *आव० १२९*।

उवासमाणा– रात्रिजागरणात्तदुपासनां विदधानाः। *स्था० ३५३*।

उवासय– उपासकः। *दशवै० ४७*।

उवाहणं– उपानत्। *आव० ३०५, ३४१*।

उवाही– उपाधीयते-व्यपदिश्यते येनेत्युपाधिः-विशेषणं स उपाधिः। *आचा० १५६*।

उविच्च– उपेत्य स्वप्रवृत्त्या। *उत्त० ३९१*।

उविद्धो– अवबद्धः। *आव० ३५१*।

उविय– परिकर्मितम्। *ज्ञाता० २३*।

उवीलगो– आलोययं गूहंतं जो महुरादिवयणपओगेहिं तहा भणइ जहा सम्मं आलोएति सो उवीलगो। *निशी० १२८ आ*।

उवीलणं– निश्चयम्। *निशी० १४२ अ*। अवपीडना, बन्धनविशेषः। *ज्ञाता० २३२*।

उवीलेमाणे– अवीपलयन्-बाधयन्। *विपा० ३९*।

उवेक्खेज्जा– उपेक्षेत-अवधीरयेत्। *उत्त० ११२*।

उवेक्खेयव्वो– उपेक्षितव्यः। *आव० ६४१*।

उवेच्च– उपेत्य, आकुट्टिकया। *बृह० १३९ आ*।

उवेहमाण– उपेक्षमाणः-अकुर्वन्। *आचा० १५६*। परीष-होपसर्गान् सहमान इष्टानिष्टविषयेषु वोपेक्षमाणो माध्यस्थ्य-मवलम्बमानः। *आचा० ४३०*। उत्प्रेक्षमाणः-अवगच्छन्। *आचा० २१२*। पर्यालोचयन्। *आचा०२२४*।

उवेहा– उपेक्षा-उप-सामीप्येनेक्षा, अवधीरणायां वर्त्तते। *ओघ० ११४*।

उवेहे– उपेक्षेत-औदासीन्येन पश्येत्। *उत्त० ९१*।

उव्वंतो– अवपतन्। *आव० २०३*।

उव्वट्टइ– उद्वर्त्तयति-म्रक्षिततैलापनयनं करोति। *जम्बू० ३९४*।

उव्वट्टण– उद्वर्त्तनं-तत्प्रथमतया वामपार्श्वेन सुप्तस्य दक्षिणपार्श्वेन वर्तनम्। *आव० ५७४*। उद्वर्त्तना-नारकति-र्यगेकेन्द्रियेभ्यो निर्गमः। *आव० ५३३*। उद्वर्त्तनं-लोठनम्। *पिण्ड० १६४*। पङ्कापनयनलक्षणम्। *दशवै० ११७*।

उव्वट्टणट्ठ– उद्वर्त्तनार्थं-उद्वर्त्तननिमित्तम्। *दशवै० २०६*।

उव्वट्टयं– उद्वर्त्तकं-चूर्णपिण्डम्। *जम्बू० ३९४*।

उव्वट्टा– उद्वृताः। *प्रज्ञा० ३९७*।

उव्वट्टिताणि– उद्वर्त्तिता-च्याविता। *पिण्ड० १२३*।

उव्वट्टेति– एक्कसिं उव्वट्टेति। *निशी० ११६ आ*।

उव्वट्टो– उद्वृत्तः। *आव० १७३*।

उव्वणवेसो– उत्बणवैषः। *ओघ० १४६*।

उव्वण्णो– उत्कंठितः। *व्यव० २०३ आ*।

उव्वत्ततो– उद्वर्तयन्। *आव० ३१३*। *ओघ० ८४*।

उव्वत्तणं– उद्वर्तनम्-मार्गपरावर्त्तनं। *बृह० १२९* आ। उत्ताणयस्स पासल्लियकरणं। *निशी० २११* अ। उद्वर्ततेयतो व्रजस्ततो याति। *ओघ० ४७*।

उव्वत्तणा– परावत्तणागुंचणपसारणा कायव्वा। *निशी० ६०* अ।

उव्वत्तमाणे– अपवर्तयन्। *आचा० ३४३*।

उव्वत्ता– जं पाडिहारियणिद्देज्जं तं। नि० २२५आ।

उव्वत्तिया– तेणेव अगणिनिक्खित्तं ओयत्तेऊण एगपासेन देति। *दशवै० ८०*।

उव्वत्तेहि– उद्वर्त्तय। *आव० ३५८*।

उव्वरं– अतिप्रशस्यम्। *व्यव० ४२१* आ।

उव्वरग– अपवरकम्। *आव० ६२२*। *निशी० १७४*अ।

उव्वरति– उद्धरति। *आव० ८५९*।

उव्वरयं– अपवरकम्। *आव० ५६१*।

उव्वरिअ– उद्वरितं। यदधिकं जातम्। *ओघ० १८८*। अतिरिक्तम्। *ओघ० १८६*।

उव्वरियं– उद्धरितम्। *पिण्ड० ७९*। अशनादेः शेषभागः। *आव० ८५९*।

उव्वरो– उद्वरः-घर्मोपतापः। *बृह० २९३* अ।

उव्वलणं– उद्वलनं, अभ्यङ्गनम्। *बृह० २१९* अ।

उव्वलणेहि– उद्वेलनानि-देहोपलेपनविशेषाः। *ज्ञाता० १८३*।

उव्वसिए– उद्वसितः-उत्थितः। *ओघ० ४९*।

उव्वसिय– उद्वस्य (उदुष्य)। *आव० ७१*।

उव्वाओ– श्रान्तः। *निशी० १६०* अ।

उव्वाण– उद्वानं-किञ्चित्सस्निग्धं। *ओघ० १७१*।

उव्वाता– परिश्रान्तः। *बृह० ८०* आ। *व्यव० १५७*आ।

उव्वाया– उद्वाताः-अतीवपरिश्रान्ताः। *बृह० २४३* आ। परिश्रान्ताः। *व्यव० २०२* आ।

उव्वालना– उद्वालना, निष्काशना। *बृह० २५०* अ।

उव्वासिअ– उद्वासितः-शोषितः। *ओघ० १७४*।

उव्वासेइ– उपहसति। *आव० ६६९*।

उव्विग्ग– उद्विग्नं-खिन्नम्। *भग० १६६*। संजातभयः। *विपा० ४३*। उद्विग्नाः-अथ पुनर्मानेन सार्द्धं युद्ध्यामहे इत्यपुनः-करणाशयवन्तः। *जम्बू० २३९*। उद्वेगवान्। *प्रश्न० ५२*।

उव्विद्ध– उद्विद्धं-ऊद्र्ध्वम्। *औप० ३*। उद्विद्धं-उण्डम्। *ज्ञाता० २*। ऊर्ध्वंगतः। *जम्बू० १४४*। उच्चा। *आव० १८४*। उन्मिताः, उच्चैस्त्वेन वा। *अनुयो० १५८*। उद्विद्धः-अत्यर्थमुच्चः। *औप० ९*। उच्चः। *राज० ५*।

उव्विहंताइं– उत्पतन्ति। *ज्ञाता० २३२*।

उव्विहइ– ऊर्ध्वं विजहाति, ऊर्ध्वं क्षिपति। *भग० २३०*। उद्विजहाति-ऊद्र्ध्वं क्षिपति। *ज्ञाता० १६८*।

उव्विहति– उप्पाडेति। *निशी० २५६* आ।

उव्विहामि– नयामि। *ज्ञाता० १३९*।

उव्विहिय– उद्वूह्य-उत्प्रेर्य्य। *भग० ६२८*।

उव्वीलए– अपव्रीडकः-लज्जापनोदको यथा परः सुखमा-लोचयतीति। *स्था० ४८६*।

उव्वीहामि– उच्चेष्यामि। *निशी० २०१* अ।

उव्वेयग– उद्वेगकः-इष्टवियोगादिजन्यः उद्वेगः, उद्वेजको वा लोकोद्वेगकारी चौरादिर्वा। *भग० १९८*।

उव्वेयण– उद्वेजनं-चलनम्। *भग० ४७१*।

उव्वेयणओ– उद्वेजनकः-चित्तविप्लवकारी, उद्वेगकरः। *प्रश्न० ५*।

उव्वेयणयं– उद्वेगकृत्। *महाप्र०*।

उव्वेला– उद्वेला। *आव० ५१४*।

उव्वेलियं– उद्वेलितं, उत्सारितम्। *बृह० २५५*आ।

उव्वेलेंति– उद्वेलयन्ति। *आव० १८९*।

उव्वेलेउं– उद्वेलयितुं, उद्वेष्टयितुम्। *बृह० २५७* अ।

उव्वेह– उद्वेधः। *अनुयो० १७१*। *जीवा० ३२२*। उण्डत्वम्। *३२५, ३४३, २२७*। *राज० ९१*। *जम्बू० २८४*। *सम० ९७*। *स्था० ५२५*। बाहल्यम्। *जम्बू० ३२७*। भुवि प्रवेशः। *स्था० ६९*। भूगतत्वम्। *जम्बू० २८२*। भूमा-वगाहः। *स्था० ४७९*। भूमिप्रवेशः। *जम्बू० ७२*।

उव्वेहलिया– वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०४*।

उष्णः– स्पर्शस्याष्टमो भेदः। *प्रज्ञा० ४७३*।

उष्णरूपा– योनिभेदः। *आचा० २४*।

उसक्कण– रंधियपुव्वस्स उसक्कणं करेज्ज। *निशी० १४२* आ।

उसक्कावेउ– उत्ष्वष्क्य, अधःप्राप्य। *आव० ६२१*।

उसक्को– उत्कण्ठुलः। *निशी० ३६* अ।

उसगार– मत्स्यविशेषः। *प्रज्ञा० ४४*।

उसडा– उत्सृता-उच्चाः। *जम्बू० ४४*।

उसण– उष्णः-प्रतिकूलः। *स्था० ४४४*।

उसण्णं– लोअगपरिभोगं उसण्णं भण्णइ। *निशी० १५९*।

उसण्हसण्हिआओ– अतिशयेन प्राबल्येन च श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उश्लक्ष्णश्लक्ष्णिका। *अनुयो० १६३*।

उसभ– ऋषभः, पञ्चदश कुलकरनाम। *जम्बू० १३२*। भरतचक्रिपिता। *आव० १६२*। *सम० १५२*। वृषभः-भूषणविधिविशेषः। *जीवा० २६९*। ब्रह्मदत्तपत्न्याः शिलायाः पिता। *उत्त० ३७९*। समग्रसंयमभारोद्वहनाद् वृषभः। आदिजिनः। *आव० ५०२*। सम्प्रदायगम्यं द्रविडवंग- *जम्बू० १०७*। पट्टः। *सम० १४९*। परिवेष्टनपट्टः। *स्था० ३५९*। *प्रज्ञा० ४७२*।

उसभकण्ठो– वृषभकण्ठः-वृषभकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः। *जीवा० २३४*।

उसभकूड– ऋषभकूटः, जम्बूद्वीपे उत्तरार्द्धभरते पर्वतः। *जम्बू० ८७*। *आव० १५१*।

उसभज्झया– वृषभध्वजाः-वृषभचिह्नोपेता ध्वजाः। *जीवा० २१५*।

उसभनाराय– ऋषभनाराचं-यत्पुनः कीलिकारहितं संहननं तत्। *प्रज्ञा० ४७२*।

उसभदत्त– नामविशेषः। *भग० ६२०, ५३३, ५४९, ५५६, ५५७*। *आचा० ४२९*। नवमशते त्रयत्रिंशत्तमोद्देशकेऽ–भिहितः। *भग० ४७५*। ऋषभदत्तः-इषुकारनगरे गाथापतिः। *विपा० ९५*। जम्बूस्वामिनः पिता। *निशी० २९* आ।

उसभपुरं– ऋषभपुरं, धनावहराजधानी। *विपा० ९४*। राजगृहस्यापरनाम। *आव० ३१५*। नगरविशेषः। *उत्त० १०४*। राजगृहम्। *स्था० ४१४*। जीवप्रदेशप्ररूपकनिह्नवो-त्पत्तिस्थानम्। *आव० ३१२*।

उसभसिरि– श्रीऋषभः। *सम० १०६*।

उसभसेण– मुनिसुव्रतजिनस्य भिक्षादाता। *सम० १५१*। ऋषभस्वामिनः प्रथमगणधरः। *सम० १५२*। *बृह० २५४* अ। ऋषभसेनः-भरतपुत्रः। *आव० १४९*।

उसभा– ऋषभा-शाश्र्वतप्रथमप्रतिमानाम। *जीवा० २२८*।

उसवियं– उवसामियं। *निशी० २९४* अ।

उसह– ऋषभः, संयमभारोद्वहनादृषभ इव ऋषभः, वृषभो वा इति संस्कारः, तत्र वृषभ इव वृषभ इति वा, वृषेण भातीति वा वृषभः। *जम्बू० १३५*।

उसहकूडप्पभाइं– ऋषभकूटप्रभाणि, ऋषभकूटाकाराणि। *जम्बू० ८८*।

उसहकूडे– ऋषभकूटः। *जम्बू० २५०*।

उसहछाया– वृषभच्छाया-छायायाः सप्तमो भेदः। *प्रज्ञा० ३२७*।

उसहपुरं– ऋषभपुरं-नगरविशेषः। *उत्त० १०५*।

उसा– त्रेहो। *निशी० ८३* अ।

उसिण– तावितं तं चेव ववगयजीवं, एक्कसि धोवणं। *निशी० ११८* आ। निदाधादितापात्मकम्। *उत्त० ८२*। उष्णः-धर्मः। *स्था० २८७*। आहारपाकादिकारणं वह्नयाद्यनुगतः। *अनुयो० ११०*। उष्णो मार्द्दवपाककृत्। *स्था० २६*। उष्णः-अप्रासुकम्। दस० २०६।

उसिणपरितावे– उष्णपरितापः-उष्णं-उष्णस्पर्शवद् भूशि-लादि तेन परितापः। *उत्त० ८९*।

उसिणब्भूए– अस्वाभाविकमौष्ण्यं प्राप्तः। *भग० १७५*।

उसिणोदए– उष्णोदकं-स्वभावत एव क्वचिन्निर्झरादावुष्ण-परिणामम्। बादराप्कायभेदः। *प्रज्ञा० २८*।

उसिणोदगं– उष्णोदकं-क्वथितोदकम्। *दशवै० २२८*। उद्-वृत्तत्रिदण्डम्। *पिण्ड० १७*।

उसिणोदगवियडेण– उष्णोदकविकटेन-उष्णोदकेनाप्रासु-केनात्रिदण्डोद्वृत्तेन पश्र्चाद्वा सचितीभूतेन। *आचा०३४२*।

उसिय– उत्सृतानि-लम्बमानानि। *राज० ६४*।

उसीर– उशीरं-वीरणीमूलम्। *ज्ञाता० २३२*। *जीवा० १९१*। *राज० ३४*। मूलविशेषः। *जीवा० १३६*। ओशीरं-वीरणी-मूलम्। *प्रश्न० १६२*।

उसीसद्दवणं– सीसस्स समीवं उवसीसं, सीसस्स वा उक्खंभणं उसीसं द्दवणं-णिक्खेवो। *निशी० २४७* अ।

उसु– इषुः-बाणः। *भग० ९३, २३०*। शरपत्रफलादिसमु-दायः। *भग० २३०*।

उसुअ– इषुकः-इषुकाकारमाभरणं, तिलकं वा। *पिण्ड० १२४*।

उसुआर– इषुकारः-राजपुत्रविशेषः। *उत्त० ३९४*।

उसुआरपुरं– इषुकारपुरं-नगरविशेषः। *उत्त० ३७५*।

उसुकारिज्जं– इषुकारीयं-उत्तराध्ययने चतुर्दशमध्ययनम्। *उत्त० ३९३*।

उसुकाल– उक्खलं, उदूखलं। *निशी० ८३* आ।

उसुगारपव्वय– पर्वतविशेषः। *स्था० ८०*।
उसुत्तियल्लयं– जेण वा कड्डाइ संचालेति तं सविसं उसुत्तियल्लयं। *निशी० ११६* आ।
उसुद्धसरीरो– मलपंकियसरीरो उसुद्धसरीरो भन्नति। *निशी० ६५* अ।
उसुमट्टिता– कुट्टिया पुणो मट्टियाए सह कुट्टिज्जंति एस। *निशी० ६४* अ।
उसुयार– इषुकारः-नगरविशेषः, ऋषभदत्तगाथापतिस्थानम्। *विपा० ९५*। इषुकारपुरनृपतिः। *उत्त० ३९५*।
उसुयारपुरं– इषुकारपुरं, कुरुजनपदे नगरं, इषुकारराजधानी। *उत्त० ३९५*।
उसुयारिज्जं– उत्तराध्ययने चतुर्दशमध्ययनम्। *सम०६४*।
उसू– इषुः-शरः। सिद्धिगमने दृष्टान्तः। *आव० ४४२*। तिलगो। *निशी० ९५* अ।
उसूयालं– उदूखलम्। *आचा० ३९७*।
उसे– ऊषः-पांशुक्षारः। *दशवै० १७०*।
उस्सओ– उच्छ्रयः भावोन्नतत्वम्। अहिंसायाः पञ्चचत्वारिं-शत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९*।
उस्सक्कइ– उत्ष्वष्कते-तदाकारभावमात्रधारणतस्तत्प्रति-बिम्ब-मात्रधारणतो वोत्सर्पतीत्यर्थः, कृष्णलेश्यातो हि नीललेश्या विशुद्धा ततस्तदाकारभावं तत्प्रतिबिम्ब-मात्रं वा दधाना सती मनाक् विशुद्धा भवतीत्युत्सर्प्पतीति। *प्रज्ञा० ३७२*।
उस्सक्कण– उत्ष्वष्कणं-परतः करणम्। *पिण्ड० ९१*।
उस्सग्गनिवाइयाण– उत्सर्गपातिनामुत्सर्गेण संयममनुपालेयतां यासाम्। *व्यव० ४२९* अ।
उस्सग्गो– उत्सर्गः-उपयोगः। *ओघ० १५५*। परिष्ठापनम्। *ओघ० १३८*। कायोत्सर्गः। *आव० ७८२*। उवओगं, काउसग्गो। *निशी० १६४* अ। पइण्णकहा। *निशी० २४०* अ। कारणनिरपेक्षं सामान्यस्वरुपम्। *बृह० ९७* आ।
उस्सण्णं– लोअगपरिभोगं उस्सण्णं भण्णइ। *निशी० १५९* अ। उस्सण्णं एकान्तेनैव अलक्षणयुक्ता बोंदि सरीरमित्यर्थः। *निशी० ८५* आ। उत्सन्नं-बाहुल्यतः। *औप० ८६*। उत्सन्नं-अनुपरतम्। *आव० ५९०*।
उस्सण्णदोस– उत्सन्नदोषः-अनुपरतं बाहल्येन प्रवर्त्तते इति। *आव० ५९०*।
उस्सण्णपए– उत्सन्नपदे-प्रभूतपदे। *व्यव० ९३* अ।
उस्सण्णा– अवसन्नाः-पङ्क इव निमग्नाः। *प्रश्न० ६९*।
उस्सण्णो– बहुतरगुणावराही। *निशी० ९०* आ।
उस्सण्हसण्हिआ– उत्तरप्रामाणापेक्षया उत्-प्राबल्येन श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उच्छलक्ष्णश्लक्ष्णिका। *जम्बू० ९४*।
उस्सण्हसण्हिया– व्यावहारिकपरमाणुपुद्गलानां समुदायाः-द्वयादिसमुदायास्तेषां समितयो-मीलनानि तासां समागमः-परिणामवशादेकीभवनं समुदयसमितिसमागमस्तेन या परिणाममात्रेति गम्यते, सा एकाऽत्यन्तं श्लक्ष्णा श्लक्ष्णश्लक्ष्णा सैव श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उत्-प्राबल्येन श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उत् श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका। *भग० २७५*।
उस्सन्नं– प्रायशः। *आव० ५६८*। अविरुद्धं। नि० *७०*।
उस्सन्नकयाहारो– प्रायशोऽकृताहारः। *आव० ५६८*।
उस्सप्पिअ– उत्सर्प्पितावत्त्युत्सर्पणेन। *जम्बू० १०२*।
उस्सप्पिणी– सागरोपमाणां दशकोटीकोट्य एव दुष्षम-दुष्षमाद्यरकक्रमेणैकोत्सर्प्पिणी। *जीवा० ३४५*। उत्सर्प-तिवर्धते आरकापेक्षया वर्धयति (वा) क्रमेणायुरादीन् भावा-नित्युत्सर्पिणी। *जम्बू० ८९*। उत्सर्पिणी-दशसागरोपमको-टाकोटिमाना। *अनुयो० १००*। *स्था० ८६*। उत्सर्प्पतिव-र्द्धतेऽरकापेक्षया उत्सर्प्पयति वा भावानायुष्कादीन् वर्द्धय-तीति। *स्था० २७*।
उस्सय– यस्मिंश्च सत्यूर्ध्वं श्रयति जात्यादिना दर्पाध्मातः पुरुष उत्तानीभवति सः उच्छ्रायः-मानः। *सूत्र० १८०*।
उस्सरति– उत्सर्पति। *आव० ३०३*।
उस्सवित्ता– उड्ढहुत्ताणि काऊण। *दशवै० ८०*।
उस्सविया– संस्थाप्योच्चावच्चैर्विश्रम्भजनकैरालापैर्विश्रम्भे-पातयित्वा। *सूत्र० १०६*।
उस्सा– अवश्यायः-त्रेहः। अप्कायभेदः। *प्रज्ञा० २८*। रजन्यां यस्त्रेहः पतति *आचा० ४०*।
उस्साबिन्दूथिबुगो– अवश्यायबिन्दुः। *आव० ८४५*।
उस्सारिता– उत्सारिता-समीपमागता। *आव० ८४१*।
उस्सासनाम– उच्छवासनाम-यदुदयवशादात्मन उच्छवा-सनिःश्वासलब्धिरूपजायते तत्। उच्छवासनिःश्वासयोग्यपुद्गलग्रहणमोक्षविषया

लब्धिरूपजायते तत्। *प्रज्ञा० ४७३।*

उस्सासविसा– उच्छवासे विषं येषां ते उच्छवासविषाः। *प्रज्ञा० ४६।*

उस्सासा– उच्छवासः-मुखादिना वायुग्रहणम्। *भग० ४७०।*

उस्सासो– उच्छवासः। *आव० ८४५।*

उस्साहे– उत्साहः-श्रवणविषये मनस उत्कलिकाविशेषः। *सूर्य० २९६।*

उस्सिंघइ– उज्जिघ्रति, जिघ्रति। *आव० ६७४।*

उस्सिंघणा– उदघ्राणम्। *आव० ४२४।*

उस्सिंचण– उद्र्ध्वं सेचनं उत्सेचनं-कूपादेः कोशादिनोत्क्षेप-णम्। *आचा० ४२।* दृतौ वातस्य प्राबल्येन पूरणम्। *आचा० ७४, ३७९।*

उस्सिचणाए– उत्सेचनेन-अरघट्टघट्टीनिवहादिभिरुदञ्चनेन। *उत्त० ५९९।*

उस्सिंचमाणे– उत्सिञ्चन्-आक्षिपन्। *आचा० ३४३।*

उस्सिंचिया– उत्सिच्य-अतिभृतादुज्झभयेन ततो वा दानार्थं तीमनादीनि दद्यात्। *दशवै० १७५।*

उस्सिउस्सिओ– उच्छ्रितोच्छ्रितः *आव० ७७९।*

उस्सिओदए– उच्छ्रितोदकः-ऊद्र्ध्ववृद्धिगतजलः। *भग० २८१।*

उस्सिट्ठा– उत्सृष्टा-प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता। *प्रज्ञा० ९९।*

उस्सित्तं– उत्सिक्तं-अत्यर्थं जलाभिषेचनम्। *प्रश्न० १२७।*

उस्सिन्न– अस्विन्नम्-वह्न्युदकयोगेनानापादितविकारान्तरम्। *दशवै० १८५।* उत्स्विन्नम्-मुण्डेरकादि। *बृह० २६७।*

उस्सियं– उच्छ्तं-प्रख्यातम्। *सूत्र० ४०८।* उच्छ्रितं-उत्कटम्। *सूर्य० २६२।* उत्सृतां, उच्छ्रित्येवोच्छ्रित्य-उत्तरोत्तरसंयमस्थानावाप्त्या तामुच्छ्रितामिव कृत्वा वा। *उत्त० ३४१।* उत्सृतः-अपगतः। *ज्ञाता० १०९।*

उस्सियनिसन्नओ– उत्सृतनिषण्णः। *आव० ७७२।*

उस्सियपडागं– उच्छ्रितपताकम्। *आव० ७०३।*

उस्सियफलिह– उच्छ्रितं स्फटिकमिव स्फटिकं-अन्तः-करणं यस्य सः। *ज्ञाता० १०९।*

उस्सीवेत्ता– उत्सीव्य। *आव० ४२१।*

उत्सुक्क– उच्छुल्का-अविद्यमानशुल्कग्रहणम्। *विपा० ६३।* उच्छुल्का-मुक्तशुल्का। *भग० ५४४।* *ज्ञाता० ४०।*

उस्सुगो– उत्सुकः। *आव० ३०१।*

उस्सुत्तं– सुत्तादवेतं। *निशी० २३ आ।* ऊर्ध्वं सूत्रा-दुत्सूत्रः, सूत्रानुक्तः। *आव० ५७१।* *आव० ७७८।*

उस्सुय– उत्सुकः। *ज्ञाता० १६१।*

उस्सूरं– अकालं। *निशी० १३६ आ।* *ओघ० ९८।*

उस्सूरलंभो– उत्सूरलाभः। *आव० ८४३।*

उस्सूरीभूतं– उत्सूर्यीभूतम्। *आव० ८५२।*

उस्सूलय– खातिका परबलपातार्थमुपरिच्छादितगर्त्ता वा। *उत्त० ३११।*

उस्सेइमं– पिष्टोत्स्वेदनार्थमुदकम्। *आचा० ३४६।* मरह-ट्ठविसए उस्सइया दीवगा सीओदगे बुज्झंति, अहवा पिट्ठस्स उस्सेज्जमाणस्स हेट्ठा जं पाणियं तं। *निशी० ६० आ।*

उस्सेतिमामं– जहा पिट्ठं पुढविकायभायणं आउक्कायस्स भरेत्ता मीसए अद्दहिज्जति मुहं से वत्थेण उहाडिज्जति, ताहे पिट्ठपयणयं रोट्टस्स भरेत्ता ताहे तीसे थालीए जलभरियाए उवरिं ठविज्जति ताहे अहोछिड्डेण तं पि ओसिज्जति हेट्ठाहुत्तं वा ठविज्जति तत्थ जं आमं तं उस्सेतिमामं भण्णति। *निशी० १२५ अ।*

उस्सेतिमे– उत्स्वेदेन निर्वृत्तं उत्स्वेदिमं-येन व्रीहयादि-पिष्टं सुराद्यर्थं उत्स्वेद्यते तत्। *स्था० १४७।*

उस्सेहंगुल– उच्छ्रयाङ्गुलं-अङ्गुलस्य द्वितीयो भेदः। *प्रज्ञा० २९९।* अनन्तानां सूक्ष्मपरमाणुपुद्गलानामित्यादिक्रमेणो-च्छ्रयो वृद्धिनयनं तस्माज्जातं तत्। उत्सेधो-नारकादिशरी-राणामुच्चैस्त्वं तत्स्वरूपनिर्णयार्थमङ्गुलमुत्सेधाङ्गुलम्। *अनुयो० १५३, १६०।*

उस्सेह– उत्सेधः-उच्चत्वम्। *सम० ११४।* उत्सेधः-शिखरम्। *जीवा० २०४, ३६०।* सर्वाग्रम्। *जीवा० २२५।* उच्छ्रयः-शिखरम्। *राज० ६२।*

उस्सेहपरिवुड्ढी– उत्सेधपरिवृद्धिः-सर्वाग्रपरिवृद्धिः। *जीवा० ३२३।*

उस्सोढुं– उत्सोह्य-असोढ्वा। *व्यव० १६४ अ।*

उहरिय– पेढियमादिसु आरुभिउं ओआरेति, अथवा कायं उच्चं करेज्जा उक्कज्जियडंडायतं तद्वद् गृह्णाति, कायं उड्ढं कृत्वा गृह्णाति उण्णमिय इत्यर्थः। *निशी०*

५९ अ।

उहसेइ– अपहसति। *आव॰ २१९*।

- x- x - x - x -

(ऊ)

ऊखा– कुम्भी। *प्रश्न॰ १७*।

ऊणं– ऊनम्-वर्णादिभिर्हीनम्। सूत्रदोषविशेषः। *आव॰ ३७४*। यद् व्यञ्जनाभिलापावश्यकैरसम्पूर्णं वन्दते, कृतकर्मणि अष्टा-विंशतितमो दोषः। *आव॰ ५४४*।

ऊणगसयभागो– ऊनशतभागः-शतभागोऽपि न पूर्यत इत्यर्थः। *आव॰ ५२२*।

ऊणोअरिआ– ऊनोदरस्य भाव ऊनोदरता। दशा॰ २७।

ऊणोयरिया– अवमस्य-ऊनस्योदरस्य करणमवमोदरिका। *भग॰ ९२१*।

ऊनं– अक्षरपदादिभिरेव हीनमूनम्। हेतुदृष्टान्ताभ्यामेव हीन-मूनम्। *अनुयो॰ २६१*।

ऊरणय– ऊरणिक। *आव॰ ६२३*।

ऊरणिया– ऊर्णिका। *आव॰ ६२३*।

ऊरणि– अविला। *पिण्ड॰ ७१*।

ऊरुगं– ऊरुः। *ओघ॰ १२५*।

ऊरुघंटा– जङ्घाघण्टा। *ज्ञाता॰ २३९*।

ऊरुयाल– ऊरुदारः-ऊर्व्योः-जङ्घयोर्दारो-दारणं ज्वालो वा ज्वालनं यः सः। *प्रश्न॰ ५७*।

ऊरुयावल– ऊरुकयोरावलनं ऊरुकावलः। *प्रश्न॰ ५७*।

ऊर्ध्वलोकः– शुभलोकः। *जम्बू॰ २४९*।

ऊर्ध्ववेदिका– यत्र जानुनोरुपरि हस्तौ कृत्वा प्रत्युपेक्षते। वेदिकायाः प्रथमभेदः। *स्था॰ ३६२*।

ऊस– उषो-यद्वशादूषरं क्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ २७*। ऊषरादिक्षेत्रो-द्भवो लवणिमसम्मिश्रो रजोविशेषः। *पिण्ड॰ ८*। क्षारमृ-त्तिका। *उत्त॰ ६८९*। ओषः-क्षारमृतिका। *आचा॰ ३४२*। अवश्यायः। *ओघ॰ १३०*।

ऊसड– उत्सृतः, उच्चः। *जीवा॰ २००*।

ऊसढं– उच्छ्रितं वर्णादिगुणोपेतं। *आचा॰ ३३९*। उत्सृतं-ऋद्धिमत्कुलम्। *दशवै॰ १८६*। वर्णगन्धरसस्पर्शोपपेतम्। *आव॰ ७२६*। उच्छ्रितं वर्णगन्धाद्युपेतम्। *आचा॰ ३९०*। उत्कृष्टम्। *व्यव॰ १८९ अ*। उच्चं। *दशवै॰ ८७*।

ऊसत्त– उत्सक्तः-उपरिलग्नः। *जम्बू॰ ७६*। ऊर्ध्वं सक्त उत्सक्तः-उल्लोचतले उपरिसंबद्धः। *प्रज्ञा॰ ८६*। *जीवा॰ १६०, २२७*।

ऊसभूमी– सिंधुविषये भूमिः। *निशी॰ १६१ अ*।

ऊसरदेस– ऊषरदेशः। *आव॰ ८३९*।

ऊसविए– उत्सर्प्य-ऊसिक्किऊणेत्यर्थः, ऊद्र्ध्वीकृत्य वा। *भग॰ ९३*।

ऊसविय– उच्छ्रितानि। *भग॰ ५४१*। उच्छृतं-ऊद्र्ध्वी-कृतम् । *ज्ञाता॰ १३९*।

ऊसवेइ– उच्छ्रतं करोति। *भग॰ १७५*।

ऊसवो– जत्थ सामण्णभत्तविसेसो कज्जइ सो ऊसवो। *निशी॰ १६२ अ*। जत्थ तं च उवसाहिज्जति जणो य अलंकिय विभूसितो उज्जाणादिसु मित्तादिजणपरिवुडो खज्जपेज्जादिणा उवललति। *निशी॰ १४ आ*। उत्सवः-शक्रोत्सवादिः। *आव॰ १२९*।

ऊससंति– उच्छवसन्ति-बाह्यक्रियां कुर्वन्ति। *प्रज्ञा॰२१९*।

ऊससिअं– उच्छवसितं-उत्-ऊर्ध्वं प्रबलं वा श्र्वसितम्। *आव॰ ७७९*।

ऊससिय– उच्छवसिता-उद्भिन्नाः। *उत्त॰ ४८१*।

ऊससियरोमकूवो– उच्छवसितरोमकूपः-उच्छवसिता इवोच्छव-सिताः-उद्भिन्ना रोमकूपा-रोमरन्ध्राणि यस्यासौ। *उत्त॰ ४८१*।

ऊसासनीसासे– उच्छवासेन युक्तो निःश्र्वास उच्छवसनिः-श्र्वासः-प्राणः। *जम्बू॰ ९०*।

ऊसासपए– उच्छवासपदं, प्रज्ञापनायाः सप्तमं पदम्। *भग॰ ११*।

ऊसासा– यावद्भिः समयैः पादो वृत्तस्य नीयते तावत्समया उच्छवासाः। *स्था॰ ३९३*। उच्छवासाः। *प्रज्ञा॰ २४६*। सङ्ख्येया आवलिका उच्छवासः। *जीवा॰ ३४४*। प्रज्ञा-पनायाः सप्तमं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६*। सङ्ख्येया आवलिका उच्छवासः-अन्तर्मुखः पवनः। *जम्बू॰ ९०*।

ऊसासेहि– उच्छवासय-मारय। *आव॰ ८१९*।

ऊसिअ– उच्छ्रितानि-लम्बमानानि। *जम्बू॰ ५०*। प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता उत्सृता। *जम्बू॰ ५३*। *जीवा॰ १७५*। उच्छ्रितं-उत्कटम्। *जम्बू॰ ५२२*।

ऊसिए– उच्छ्रितं-लम्बमानम्। *जीवा॰ ३६१*।

ऊसिओदयं– उच्छृत-ऊर्ध्वं उदय-आयामो यत्र गमने तदुच्छ्रितोदयं, ऊर्ध्वपताकमित्यर्थः। *भग॰ १८७*।

ऊसिता– उत्सृता-प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता। *जीवा॰ ३७९*। *सूर्य॰ २६३*।

ऊसितोदग– उच्छ्रितोदकः-उच्छ्रितमुदकं यस्मिन् सः। *जीवा० ३२१*।

ऊसित्तो– उपसिक्तः, अपत्योत्पादनसामर्थ्यविकलः, निर्बीजः। *बृह० ९७* आ। णो जस्स अवच्चं उप्पज्जति निब्बीओ सो। *निशी० ३१* अ।

ऊसिय– उच्छ्रितं-ऊद्र्ध्वीकृतम्। *भग० ५४१*। उच्छ्रितः-ऊर्ध्वीकृतः, उत्सृतो वा-अपगतः। *राज० १२३*। उच्छ्रितं –ऊर्ध्वं नीतम्। *ज्ञाता० १६*। उत्सृता-प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता। *सम० १३९*। उच्छ्रतः-ऊर्ध्वीकृतः। *जीवा० २४६*। उत्सृतः। *आव० ७७२*। उत्सृतं-लम्बमानम्। *जीवा० २०५*। उच्छ्रितम्-उन्नतम्। ऊर्ध्वीकृतं, अपगतः, अपनीतः। *भग० १३५*। *नन्दी० ४६*। उच्छ्रतं-ऊद्र्ध्वम्। *भग० १८७*।

ऊसियपडागं– उच्छ्रितपताकम्। *आव० ३००*।

ऊसियफलिह– उच्छ्रितस्फटिकाः-उच्छ्रितमुन्नतं स्फटि-कमिव स्फटिकं चित्तं येषां ते। मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परि-तुष्टमानसा इत्यर्थः। उच्छ्रितः-अर्गलास्थानादपनीयोद्र्ध्वीकृतो न तिरश्चीनः कपाटपश्चाद्भागादपनीत इत्यर्थः परिघः-अर्गला येषां ते उच्छ्रितपरिघः। *भग० १३५*। उच्छ्रितं स्फाटिकमिव स्फाटिकं-अन्तःकरणं यस्य सः। *राज० १२३*।

ऊसिरं– जीवाश्रयस्थानमित्यर्थः। *निशी० ६०* आ।

ऊसीसयं– उच्छीर्षकम्। *आव० १२४*।

ऊसूरं– वेलातिक्रमः। *ओघ० १४२*।

ऊसूरओ– ऊत्सूरः। *आव० १०३*।

ऊह– सम्भवत्पदार्थविशेषास्तित्वाध्यवसाय ऊहस्तर्क्कः-एवमेवं चैतत्स्यात्। *आचा० २३०*।

ऊहा– बुद्धिः। *दशवै० १२५*। स्वतर्कबुद्धिः। *आव० ३२४*। स्ववितर्कात्मिका। *उत्त० १८१*।

ऊहिय– ऊहितः-ज्ञातः। *आव० ७२१*।

- x - x - x -

(ऋ)

ऋक्षाः– अच्छाः। *जीवा० ३८*।

ऋजुप्रज्ञत्वं– मध्यमजिनयतीनां विशेषणम्। *आव० ७९*।

ऋजुश्रेणिप्रतिपन्नः– यो भवोपग्राहिकर्मजालं क्षपयित्वाऽस्पृशद्गत्या सिद्ध्यतीति। *आव० ४४१*।

ऋज्वी– यस्यामेकां दिशमभिगृह्योपाश्रयाद् निर्गतः प्राञ्जलेनैव पथा समश्रेणिव्यवस्थितगृहपङ्क्तौ भिक्षां परिभ्रमन् तावद् याति यावत्पङ्क्तौ चरमगृहं, ततो भिक्षामगृह्णन्नेवापर्याप्तेऽपि प्राञ्जलयैव गत्या प्रतिनिवर्तते सा ऋज्वी। *बृह० २५७*।

ऋणं– पापम्। *प्रश्न० ७*।

ऋणघ्ना– ऋणं-कर्म तद्घ्ना। *आव० ५९५*।

ऋतं– दुःखं, पीडितम्। *स्था० १८८*। दुःखम्। *आव० ५८४*। पीडितः। *भग० ५६०*। दुःखपर्यायवाची। *उत्त० ६०९*।

ऋतुबद्धावग्रहः– अवग्रहस्य द्वितीयो भेदः। *सम० २३*।

ऋतुमासः– कर्म्ममासः, स त्रिंशद्दिवसप्रमाणः। *बृह० १८६*।

ऋतुसंवत्सरः– सावनसंवत्सरः। *स्था० ३४५*।

ऋद्धा– भवनादिभिर्वृद्धिमुपगता। *ज्ञाता० १*।

ऋषभः– प्रथमतीर्थंकरः। *ज्ञाता० १२९*।

ऋषभमण्डलप्रविभक्तिः– एकादशो नाट्यविधिः। *जीवा० २४६*।

ऋषभदत्तः– कोडालसगोत्रब्राह्मणविशेषः। *आव० १७८*।

ऋषभस्वामी– प्रथमतीर्थंकरः। *व्यव० २* आ।

ऋषितः– नोपशमं नीतः। *व्यव० २२४* आ।

ऋषिवादिकाः– गन्धर्वभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ७०*।

- x - x - x -

(ए)

एंती– आगच्छन्ती। *बृह० १६७* आ।

एंतो– आगच्छन्। *आव० ४२०*।

एंतओ– आगच्छन्। *आव० १९६*।

ए– वाक्यालंकारे। *अनुयो० १७६*। अलङ्कारे। *भग० ७०५*। वाक्यालङ्कारे। *भग० ८२*। आमन्त्रणार्थः, अलङ्कारार्थोऽवा। *भग० ३७*।

एइंसु– ज्ञातवन्तोऽनुभूतवन्तः। *भग० ७२६*।

एइणा– अनेन। *बृह० ११०* अ।

एई– इयती। *आव० ५१३*।

एकका– अध्ययनविशेषः। *स्था० ३८७*।

एकखुर– अश्र्वगोहस्तिसिंहादयः। *सम० १३५*।

एकतश्चक्रवालं– एकस्यां दिशि नटानां मण्डलाकारेण नर्त्तनम्। *जम्बू० ४१५*।

एकतोवक्रद्विधातोवक्रएकतश्चक्रवालद्विधातश्चक्रवाल चक्रा-र्द्धचक्रवालाभिनयात्मकः– चतुर्थी नाट्यविधिः। *जीवा० २४६*। *जम्बू० ४१५*।

एकतोवक्र– एकतोवक्रं नाम नटानां एकस्यां दिशि धनुराकार-श्रेण्या नर्त्तनम्। *जम्बू० ४१५*।

एकतोवेदिका– एकं जानु बाह्योरन्तरे कृत्वेति। *स्था० ३६२*।

एकत्तवियक्कं– एकत्ववितर्कम्। *आव० ३२७*।

एकत्ववितर्कमविचारं– शुक्लध्यानद्वितीयभेदः। *आव० ६०३*।

एकधारं– शस्त्रविशेषः। *दशवै० २०१*।

एकभविक– तत्र एकस्मिन् भवे तस्मिन्नेवातिक्रान्ते भावी। एकभविकः-योऽन्तर एव भवे इन्द्रतयोत्पस्यत इति। *स्था० १०३*।

एकभावं– एकत्वम्। *उत्त० ५८०*।

एकल्लओ– एकाकी। *आव० ३०६*।

एकल्लशाटक– एकवस्त्रकः। *ओघ० ४३*।

एकविहारप्रतिमा– पञ्चमी प्रतिमा। *सम० ९६*।

एकस्थीकृतं– न एकस्थमनेकस्थं अनेकस्थमेकस्थमिव कृतमेकस्थीकृतम्। *आचा० ६३*।

एका– एकाः-श्रेष्ठाः संज्ञाशब्दत्वान्न सर्वादित्वम्। *जम्बू० १३१*।

एकाए– एकः। *व्यव० ४१७ अ*।

एकात– एक एवाहमित्यन्तो-निश्चयः। *उत्त० ३०७*।

एकान्तरः– अनन्तरसमयः। *आव० १४*।

एकान्तवित्– एकान्तेन विदितसंसारस्वभावतया मौनीन्द्रमेव शासनं तथ्यं नान्यदित्येवं वेत्तीति। *सूत्र०२६५*।

एकायतनं– एकं-अद्वितीयं आयतनं-ज्ञानादित्रयम्। *आचा० २०७*।

एकावलिः– भूषणविधिविशेषः। *जीवा० २६८*।

एकावली– विचित्रमणिककृता एकसरिका। *जम्बू०१०५*। विचित्रमणिका। *ज्ञाता० ४३*। कनकावल्यभिलापेनेत्यर्थः। *औप० ३०*।

एकिका– प्रश्रवणम्। *आचा० ४०९*।

एक्कई– एकीकृत्य-यौगपद्येन। *ओघ० १११*।

एक्कगमा– एकगमाः-तुल्याभिलापाः। *स्था० ५८*।

एक्कगमे– एकगमः-षड्भ्योऽप्यन्तेऽङ्क एव पाठः। *अन्त० ४*।

एक्कडे– पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

एक्कमुहा– जेसिं एक्कओ णालाण मूहा ते एक्कतोमूहा। *निशी० १६१ अ*।

एक्कल्लओ– एकाकी। *आव० १९३*।

एक्कसंकलितबद्धा– एकशृंखलाबद्धाः। *आव० ६३*।

एक्कसरा– सहैव। *आव० ३६७*।

एक्कसिं– एकशः। *आव० ८१३*।

एक्कसेल– एकशैलः-वक्षस्कारपर्वतः। *जम्बू० ३४७*।

एक्काणिया– एकाकिनी। *आव० ५६०*।

एक्कारसी– एकादशी तिथिः। *ज्ञाता० १५३*।

एक्काहिज्जा– व्यन्तरीविशेषा। *निशी० ३०४ आ*।

एगंगिओ– संघातिमासंघातिमो एगंगिओ भवति। *निशी० ७९ अ*।

एगंगियं– एकांगिकं तज्जातदसिकं सदसिकाकम्बलीखण्डनिष्पादितम्। *ओघ० २१४*। य एकेन फलकादिना कृतः। *बृह० १६२ अ*। एकाङ्गिकं-तज्जातदशिकं न वा द्व्या-दिखण्डनिष्पन्नम्। *बृह० २३९ अ*।

एगंत– एकान्तं-विजनम्। *ज्ञाता० ८८*। नियमः। *उत्त० २४१*। एकः-अद्वितीयः, कर्मणामन्तो यस्मिन्निति, मोक्षः। *उत्त० ३०७*। एकनिश्चयः। *भग० २९०*। एकान्तं-अनुपघातकं स्थानम्। *दशवै० १५६*। निश्चयः। *उत्त० ५८७*। इतरव्यासङ्गपरिहारात्मकम्। *उत्त० ६२२*। मोक्षः। *दशवै० १६५*। विजनम्। *भग० ३२३*। योजनमण्डलादन्यत्र। *जम्बू० ३८८*।

एगंतचरिया– एकान्तचर्या-द्रव्यक्षेत्रकालभावेष्वसम्बद्धता। *दशवै० १५*।

एगंतदिट्ठी– एकान्तदृष्टिः-एकोऽन्तो-निश्चयो यस्याः सा तथा, सा चासौ दृष्टिः, अनन्याक्षिप्ता। *उत्त० ५४७*। एकान्तदृष्टिः-एकान्तेन तत्त्वेषु-जीवादिषु पदार्थेषु दृष्टि-र्यस्यासौ। *सूत्र० २३४*। एकोऽन्तो-निश्चयो यस्याः सा एकान्ता सा दृष्टिः-बुद्धिर्यस्मिन् एकान्तदृष्टिः। *ज्ञाता० ५१*। एकान्ताग्राह्यमेवेदं मयेत्येवमेव निश्चया दृष्टिर्यस्य सः। *ज्ञाता० ८०*। एकान्तेन निश्चला जीवादितत्त्वेषुदृष्टिः –सम्यग्दर्शनं यस्य स एकान्तदृष्टिः-निष्प्रकम्पसम्य-क्त्वः। *सूत्र० १४१*।

एगंतदिट्ठीए– एकोऽन्तो-निश्चयो सा एकान्ता सा दृष्टिः –बुद्धिर्यस्मिन्निर्ग्रन्थे प्रवचने-चारित्रपालनं प्रति तदेका-न्तदृष्टिकम्। एकान्ता-एकनिश्चया दृष्टिः-दृक् यस्य स एकान्तदृष्टिकः। *ज्ञाता० ५१*।

एगंतधारा– एकत्रान्ते-वस्तुभागेपहर्तव्यलक्षणे धारा-परो-

पतापप्रधानवृत्तिलक्षणा यस्य स एकधारः। *ज्ञाता० ८०*। एकान्तधारा-तीक्ष्णधारा। *उत्त० ३२७*। एकान्ता-एकवि-भागाश्रया धारा यस्य स एकान्तधारा। *ज्ञाता० ५१*।

एगंतपंडिए– एकान्तपण्डितः-साधुः। *भग० ९१*।

एगंतबाले– एकान्तबालः-मिथ्यादृष्टिः अविरतो वा। *भग० ९०*।

एगंतमंतं– एक इत्येवमन्तो-निश्चयः यत्रासावेकान्त एक इत्यर्थः अतस्तमन्तं भूभागम्। *भग० २९०*।

एगंतमोणेण– एकान्तमौनेन-संयमेन करणभूतेन। *सूत्र० २३९*।

एगंतरं– एकान्तरं-एकेन चतुर्थलक्षणेन तपसाऽन्तरं-व्यवधानं यस्मिंस्तत् *उत्त० ७०६*।

एग– एकः-असहायो रागद्वेषादिसहभावविरहितो गौतमा-दिरित्यर्थः। *उत्त० २४१*। तथाविधतीर्थंकरनामकर्मोदया-दनुत्तरावाप्तविभूतिरद्वितीयः, तीर्थंकरः। घातिकर्मसाहि-त्यरहितः। *उत्त० २४१*। एकत्र। *ओघ० ३३*। असहायः। *स्था० ३५*। तत्र प्रदेशार्थतया असंख्यातप्रदेशोऽपि जीवो द्रव्यार्थतया एकः, अथवा प्रतिक्षणं पूर्वस्वभावक्षयापरस्व-रूपोत्पादयोगेनानन्तभेदोऽपि कालत्रयानुगामिचैतन्यमात्रा-पेक्षया एकः, अथवा प्रतिसन्तानं चैतन्यभेदेनानन्तत्वेऽप्या-त्मनां संग्रहनयाश्रितसामान्यरूपापेक्षयैकत्वम् इति। *सम० ५*। मोक्षोऽशेषमलकलङ्करहित्वात् संयमो वा रागद्वेषरहितत्वात्। *आचा० २१२*। पूर्वपूर्वरूपः उत्तरोत्तररूपः, आद्यः पर्यव-सानो वा। *प्रज्ञा० २६५*। धर्मसहायविप्रभुक्तः अल्पसागा-रिकस्थितो वा। *दशवै० १८८*। उद्रेकावस्थावर्त्तिनैकेन गुणेन स्पर्शाख्येनोपलक्षितः इति एकः-वायुः। *आचा० ७५*। एकाकी, असहायः। *स्था० १९०*। आन्तरव्यक्तरागादि-सहायवियोगात् अद्वितीयः तथाविधपदात्यादिसहायविरहात्। *ज्ञाता० ३४*। सदृशः। *ज्ञाता० ५७*। एकः-रागद्वेषरहिततया ओजाः, यदिवाऽस्मिन् संसारचक्रवाले पर्यटन्नसुमान् स्वकृ-तसुखदुःखफलभाक्त्वेनैकस्यैव परलोकगमनतया सहैकक एव भवति। *सूत्र० २६५*। समानः। *राज० ४९*। मोक्षः संयमो वा। *सूत्र० २३५*।

एगइओ– एकदा कदाचिद् एकचरो वा। *आचा० ३३०*।

एगइया– एकका:, एके केचनेत्यर्थः। *भग० ३२*।

एगइयाणं– एकेषां, न तु सर्वेषाम्। *भग० १२९*।

एगईओ– एकः कश्चिदेकाकी वा। *आचा० ३३०*।

एगउ– एकस्मिन् देशे। *ज्ञाता० ९३*।

एगओ– एकतः। *ज्ञाता० ७०*। एकः स एक एककः, एको वा प्रतिमाप्रतिपत्त्यादौ गच्छतीत्येकगः। एकं वा कर्मसाहित्य-विगमतो मोक्षं गच्छति-तत्प्राप्तियोगानुष्ठानप्रवृतेर्यायीत्येकगः। *उत्त० १०८*।

एगओखहा– एकस्यां दिश्यङ्कुशाकारा। *स्था० ४०७*। यया जीवः पुद्गलो वा नाड्या वामपार्श्वादेस्तां प्रविष्टस्तयैव गत्वा पुनस्तद्वामपार्श्वादावुत्पद्यते सा एकतः खा, एकस्यां दिशि वामादिपार्श्वलक्षणायां खस्य-आकाशस्य लोकनाडीव्यति-रिक्तलक्षणस्य भावादिति। *भग० ८६६*।

एगओवंका– एकतः-एकस्यां दिशि वङ्का-वक्रा एकतोवक्रा। *भग० ८६६*।

एगओवत्ता– द्वीन्द्रियजीवविशेषाः। *प्रज्ञा० ४१*।

एगखम्भ– एकस्तम्भः-एकः स्तम्भो यस्मिन् सः प्रासादः। *दशवै० ४१*।

एगखुर– प्रतिपदमेकः खुरो येषां ते एकखुराः-अश्वादयः। *जीवा० ३८*। प्रतिपदमेकः खुरः-शफो येषां ते एकखुराः-अश्वादयः। *प्रज्ञा० ४५*। एकः खुरः चरणे येषामधोव-र्त्यस्थिविशेषो येषां ते एकखुरा-हयादयः। *उत्त० ६९९*।

एगगयं– एगांगिकं-तक्रम्। *व्यव० ८१* आ।

एगगुण– एकगुणः एकेन गुणो-गुणनं-ताडनं यस्य स एक-गुणः। *स्था० ३५*।

एगगुणकालए– एकः-सर्वजघन्यो गुणः-अंशस्तेन कालकः परमाण्वादिरेकगुणकालकः-सर्वजघन्यकृष्णः। *अनुयो० १११*।

एगग्ग– एकाग्रस्य-एकालम्बनस्यार्थाच्चेतसो भावः एकाग्रंध्यानम्। *उत्त० ६२१*।

एगग्गचित्त– एकाग्रचित्तः-एकाग्रालंबनः। *दशवै० ५७*।

एगग्गमणो– एकाग्रमनाः-अवहितचित्तः। *उत्त० ५९९*।

एगग्गहण– एकग्रहणेन-एकश ब्देन। *भग० १४९*।

एगग्गहणगहिया– एकग्रहणगृहीता-एकग्रहणेन-एकशब्देन-धर्मास्तिकाय इत्येवंलक्षणेन गृहीता ये ते

तथा, एकशब्दा-भिधेया इत्यर्थः। *भग० १४९*।

एगचरा– एकचराः-एकाकिनः। *आचा० ३०८*।

एगचक्खू– अतिशयवत् श्रुतज्ञानादिवर्जितो विवक्षित इति एकचक्षुः चक्षुरिन्द्रियापेक्षया। एकं चक्षुरस्येति। *स्था० १७१*।

एगचक्खूविणिहय– एकचक्षुर्विनिहतः-एकं चक्षुर्विनिहतं यस्य सः। *प्रश्न० २५*।

एगचरिया– एकचर्या-एकाकिविहारप्रतिमाऽभ्युपगमः। *आचा० २४३*।

एगचोरो– एकचौरः-य एकाकी सन् हरति सः। *प्रश्न०४६*।

एगच्चा– एकार्च्या-अद्वितीयपूज्याः संयमानुष्ठाने वा असदृशी अर्चा-शरीरं येषां ते एकार्चाः। *उपा० २१*।

एगच्छत्त– एकछत्रा एकं छत्रं-नृपतिचिह्नमस्यामिति, अविद्यमानद्वितीयनृपतिः। *उत्त० ४४८*।

एगजंबूए– उल्लुकतीरे चैत्यविशेषः। *भग० ७०५*।

एगजडी– एकजटी-एकाशीतितमो ग्रहः। *जम्बू० ५३५*। त्र्यशीतितमो ग्रहः। *स्था० ७९*।

एगज्जं– एकद्यम्-एकवाक्यतया संप्रधार्य। *आचा० ३३०*।

एगट्ठ– एकस्थः-एकत्र। *आव० ७१०*। एकार्थं-अनन्यविषयं एकप्रयोजनं वा। *भग० १७*।

एगट्ठभागमुहुत्तेहिं– मुहूर्तैकषष्टिभागाभ्याम्। *सूर्य० १२*।

एगट्ठाणं– एकस्थानकं-यथा अङ्गोपाङ्गस्थापितं तेन तथावस्थितेनैव समुद्देष्टव्यम्। *आव० ८५३*।

एगट्ठि– एगबीयं। *निशी० ५६* आ।

एगट्ठिआणुओगे– एकश्चासावर्थश्च-अभिधेयो जीवादिः स येषामस्ति त एकर्थिकाः-शब्दास्तैरनुयोगस्तत्कथनमि-त्यर्थः। *स्था० ४८१*।

एगट्ठिए– एकश्चासावर्थश्च-अभिधेयः एकार्थः स यस्यास्ति स एकार्थिकः, एकार्थवाचक इत्यर्थः। *स्था० ४९२*।

एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं– मुहूर्तैकषष्टिभागाभ्याम्। *सूर्य० १२*।

एगट्ठिभागे– एकषष्ठिभागान्। *सूर्य० २५*।

एगट्ठिया– एकमस्थिकं फलमध्ये येषां ते। *भग०८०४*। एकमस्थिकं-फलमध्ये बीजं येषां ते एकास्थिकाः। *भग० ३६४*। एकास्थिका-नौः। *विपा० ८०*। *ज्ञाता० २२७*। फलं फलं प्रति एकमस्थि येषां ते एकास्थिकाः। *प्रज्ञा० ३१*।

एगठाणं– एकस्थानम्। *आव० ८५२*। एकः सङ्घाटकः। *ओघ० ९९*।

एगणासा– एकनाशा पश्चिमरुचकवास्तव्या पञ्चमी दिक्कुमारी-महत्तरिका। *जम्बू० ३९१*।

एगणिसेज्जाए– एकेनासनपरिग्रहेण। *सम० ७२*।

एगतियाओ– एकका:-काश्चन। *जीवा० १९८*।

एगतो– एकतः-एकस्मिन् स्थाने। *व्यव० १७४* अ।

एगतोनिसहसंठिया– एकतो-रथस्य एकस्मिन् पार्श्वे यो नितरां सहते स्कन्धपृष्ठे वा समारोपितं भारमिति निषधो-बलीवर्द्द-स्तस्येव संस्थितं-संस्थानं यस्याः सा एकतोनिषधसं-स्थिता। *सूर्य० ७१*।

एगतोवंका– एकओवंका-एकस्यां दिशि वक्रा। *स्था० ४०७*।

एगतोवत्ता– एकतोवर्ताः-द्वीन्द्रियजीवविशेषाः। *जीवा०३१*।

एगतोवेति– एगखीला। *निशी० १२७* अ।

एगत्त– एकता, यैकता-निरालम्बनत्वम्। *भग० ९२४*। एकत्वं-अभेदः। *स्था० १९१*।

एगत्तवियक्के– एकत्वेन-अभेदेनोत्पादादिपर्यायाणामन्य-तमैकपर्यायालम्बनतयेत्यर्थो वितर्क्कः-पूर्वगतश्रुताश्रयो व्यञ्जनरूपोऽर्थरूपो वा यस्य तदेकत्ववितर्क्कम्। *स्था० १९१*।

एगत्तीकरण– एकत्वकरणं-एकाग्रत्वविधानम्। *ज्ञाता० ४६*।

एगत्था– एकार्थाः एके च ते अर्थाश्चेति एकार्थाः ऐकेषां-चित् न सर्वेषां निखिलानां वक्तुमशक्यत्वादर्थाः-जीवादयः। *सम० ११३*।

एगदिसिं– एकया दिशा पूर्वोत्तरलक्षणया। *ज्ञाता० ४५*।

एगदुवारा– एकद्वारा-एकप्रवेशनिर्गममार्गा। *ज्ञाता० २३८*।

एगदिट्ठी– एकदृष्टिः-बद्धलक्षः। *प्रश्न० १५८*।

एगन्तुच्छेय– सर्वथा उत्-प्राबल्येन छेदो-विनाशः एका-न्तोच्छेदः-निरन्वयो नाश इत्यर्थः। *दशवै० ४०*।

एगपक्खं– एकपक्षः, एकः पक्षो ब्राह्मणलक्षणो यस्य तत् । *उत्त० ३६०*।

एगपक्खी– एकपक्षिकः-एकवाचनः, एककुलवर्त्ती। *व्यव० २१२* अ। एकपक्षिकः-अल्पश्रुतः। *व्यव० २१३* अ। गुरुभ्राता भ्राता गुरुगुरुर्गुरुनप्ता समानकुलश्च

समानश्रुतो वा। *बृह० १३६* आ।

एगपत्ती– एकपत्नी। *आव० ९५*।

एगपयेसोगाढं– एकप्रदेशावगाढम्-जीवापेक्षया कर्मद्रव्या-पेक्षया च ये एके प्रदेशास्तेष्ववगाढम्। *भग० ५३*।

एगभविय– एकभविकः-नोआगमतः द्रव्यद्रुमस्यप्रथमः प्रकारः, य एकेन भवेनानन्तरं द्रुमेषूत्पस्यते। *दशवै०१७*।

एगभायणो– समपंक्तिः। *निशी० ४७* अ।

एगभाव– एको भावः-सांसारिकसुखविपर्ययतात् स्वाभाविक-सुखरूपो यस्यासावेकभावः। *भग० ६४०*। मध्यस्थता। *ओघ० ११३*।

एगभूए– एकभूतः एक एव-आत्मोपमः। *स्था० २१*। एकत्वं प्राप्तः। *भग० ६४०*।

एगमंडवे– एकमडम्बं नाम यस्य निवेशस्य सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च नास्ति कोऽप्यन्यो ग्रामो नगरं वा तस्मिन्नेकमडम्बे। *व्यव० २१६* अ।

एगमणा– एकं-दर्शनान्तरोक्तजीवाजीवविभक्तावगतत्वेन मनःचित्तं येषां ते एकमनसः-श्रद्धानवन्तः। *उत्त० ६७१*।

एगमणो– एकमनाः-एकाग्रचित्तः। *आव० ७८०*।

एगमना– एकम्-एकत्र प्रस्तुते वस्तुन्यभिनिविष्टत्वेन मनो यस्यासौ एकमनाः। *उत्त० ५९९*।

एगमेगं– एकैकम्। *सूर्य० ३३*।

एगयओ– एकतः एकस्कन्धतया। *भग० १०४*। एकतः-एकीभूय, संयुज्येत्यर्थः। *भग० ७७४*। एकत्र। *स्था० ३१४*।

एगयर– एकतरं, अन्यतमत्। *आव० ७३*। एकतरः-अनुकूलः। *आचा० २४२*।

एगराइंदियाए– द्वादशी एकरात्रमानेति। *ज्ञाता० ७३*।

एगराइया– एकरात्रिकः-अपान्तराले वसामि तत्र गोकुलादौ प्रचुरगोरसादिलाभेऽपि प्रतिबन्धमकुर्वता कारणमन्तरेण मयैकरात्रमेव वस्तव्यं नाधिकमित्येवंरूपेणाभिग्रहेण। *व्यव० १३६* आ। एकरात्रिकी। *उत्त० ५३१*। *आव० २१६*।

एगराइयाभिक्खुपडिमा– रात्रिप्रमाणा द्वादशी भिक्षुप्रतिमा। *सम० २१*।

एगराई– एकरात्रिकी। *आव० ६४८*।

एगरायं– एका रात्रिर्यत्र तत् एकरात्रं। एकां रात्रिं यावत् तत् । *उत्त० ११०*।

एगलंभिए– य एकं प्रधानं शिष्यमात्मना लभते गृह्णाति शेषास्त्वाचार्यस्य समर्पयति, स एकलाभेन चरतीति एकलाभिकः। *व्यव० २३२* आ।

एगल्ल– एकाकिनः। *स्था० ४१६*।

एगल्लविहार– एकाकिविहारः। *आव० ३६५*।

एगवंद– एकवृन्द एकाकी। *व्यव० २०१* अ।

एगविऊ– एकमेवात्मानं परलोकगामिनं वेत्तीति एकवित् , न मे कश्चिद् दुःखपरित्राणकारी सहायोऽस्तीत्येवमेकवित्। एका-न्तविद् वा-एकान्तेन विदितसंसारस्वभावतया मौनीन्द्रमेव शासनं तथ्यं नान्यदित्येवं वेत्तीत्येकान्तवित्, एकः-मोक्षः संयमो वा तं वेत्तीति। *सूत्र० २६५*।

एगविहिविहाणा– एकेन विधिना प्रकारेण चक्रवाललक्षणेन विधानं स्वरूपस्य करणं येषां ते एकविधिविधानाः। *भग० २८२*।

एगसरा– विचित्तेहिं एगसरा एगावली। *निशी० २५४* आ। जहा संजतीण पयालणी कसासिव्वणी णिब्भंगे वा दिज्जति। *निशी० १२७* अ।

एगसाडियउत्तरासंगकरण– एका शाटिका यस्मिंस्तत्तथा, तच्च तदुत्तरासङ्गकरणं च-उत्तरीयस्य न्यासविशेषः। *ज्ञाता० ४६*।

एगसालयं– एकशालकम्। *जीवा० २६९*।

एगसित्थ– एकसिक्थु-यत्रैकमेव सिक्थु भुज्यते तत्। *उत्त० ६०४*।

एगसेलकूडे– एकशैलकूटं, एकशैलवक्षस्कारकूटनाम। *जम्बू० ३४७*।

एगसेले– एकशैलो धातकीखण्डपश्चिमार्धस्थमन्दरपर्वतस्थे स्वनामख्याते वक्षस्कारपर्वते। *स्था० ८०*। एकशैलो जम्बू-द्वीपस्थमन्दरपर्वतसमीपस्थे स्वनामख्याते वक्षस्कारपर्वते। *स्था० ३२६*।

एगा– एका-अद्वितीया। *आव० ४६५*।

एगागारो– एकाकारः-एकस्वरूपः। *जीवा० १४३*।

एगागिसमुद्दिसगा– ये न मण्डल्युपजीविनः। *ओघ०८७*।

एगाणिओ– एकाकी। *आव० ५५८*।

एगाणुप्पेहा– एकस्य-एकाकिनो असहायस्यानुप्रेक्षा-भावना एकानुप्रेक्षा। *स्था० १९०*।

एगाभिमुहा– एकं भगवन्तं अभिमुखं येषां ते एकाभिमुखाः। *ज्ञाता० ४५*।

एगाभोगो– एगा भोगो भण्णति। *निशी० ४७* अ।

एगामोसा– त्रिभिरंगुलीभिर्वा यद्गृहीतव्यं तदेकायै गृह्णाति सा, मध्ये गृहीत्वा हस्ताभ्यां वस्त्रं घृषन् त्रिभागावशेषं यावन्नयति द्वाभ्यां वा पार्श्वाभ्यां यावद् ग्रहणा। *ओघ० ११०*। एकामर्शनं एकामर्शा। *उत्त० ५४१*।

एगाय– एकाकिनः। *सूत्र० १४०*।

एगालंभी– एकलाभी-यः प्रधानः शिष्यः, तमेकं यो न ददाति अवशेषांस्तु सर्वानपि प्रव्रजितान् गुरूणां प्रयच्छति। येषामेक एव लाभो-यथा यदि भक्तं लभन्ते ततो वस्त्रादीनि न, यथा वस्त्रादिनि लभन्ते तर्हि न भक्तमपि, एकमेव लभन्ते इत्येवंशीला एकलाभिनः। *व्यव० २३२* आ।

एगावलि– तपविशेषः। *आचा० ४२३*। एकावलीनानामणिक-मयी माला। *औप० ५५*। विचित्रमणिका। *ज्ञाता० ४३*। विचित्रमणिकमयी। *भग० ४७७*।

एगावलिसंठिते– एकावलिसंस्थितः-अनुराधानक्षत्रसंस्थानम्। *सूर्य० १३०*।

एगावली– एकावलिका-जघन्ययुक्तासङ्ख्यातकसमयानां समुदायः। *जीवा० ३४४*। विचित्रमणिकमयी। *भग० ४५९*।

एगावाती– एकवादी-तत्रैक एवात्मादिरर्थ इत्येवं वदतीति। *स्था० ४२५*।

एगासणं– एकाशनं नाम सकृदुपविष्टपुताचालनेन भोजनम्। *आव० ८५३*।

एगाहं– एकाहं एकमहर्यावत्। *जीवा० १०९*। दिने दिने गत्वा नोदयति, एकान्तरितं वा। *बृह० १४२* आ। एकाहं-अभक्तार्थम्। *व्यव० ३८६* अ।

एगाहच्चं– एका हत्या-हननं-प्रहारो यत्र जीवितव्यपरोपणे तदेकाहत्यम्। *भग० ३२३*। एका एव आहत्या-आहननं प्रहारो यत्र भस्मीकरणे तदेकाहत्यम्। *भग० ६७०*। एकं घातं, एकेन घातेनेति भावः। *राज० १३४*।

एगाहजातगा– एकाहर्जाता एकदिवसोत्पन्नाः। *आव० ११६*।

एगाहिगारिगा– एकस्मिन् शय्यातरं पिण्डादावधिकृत-दोषेऽ-नालोचिते एव यानि शेषदोषसमुत्थितानि प्रायश्चित्तानि तानि एकाधिकारिकाणि, एकाधिकारे भवानि एकाधिकारिकाणि। *व्यव० ३०* अ।

एगाहिय– ज्वरविशेषः। *भग० १९७*।

एगुरूया– एकोरुकः-अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा० १४४*।

एगूरूयदीवे– अन्तरद्वीपे प्रथमः। *स्था० २२५*।

एगेभवं– एको भवान्। *ज्ञाता० ११०*।

एगोदगं– एकोदकं, सर्वात्मनोदकप्लावितम्। *जीवा० ३२६*।

एगोरुया– अन्तरद्वीपविशेषः। *प्रज्ञा० ५०*।

एच्चिरेण– इयता। *ओघ० ६५*।

एज– एजतीति एजः-वायुः कम्पनशीलत्वात्। *आचा० ७५*।

एज्जंत– आयान्तमागच्छन्तम्। *उत्त० ३५८*। आयान्तम्। *आव० २८७*।

एज्ज– एयातां-समागच्छताम्। *बृह० १४१* अ।

एज्जमाणं– इयत् आगच्छत्। *जम्बू० २३३*। प्रत्यागच्छत्। *ज्ञाता० १३९*। एज्यमानं-कम्प्यमानम्। *जीवा० १८१*।

एज्जा– आगच्छेत्। *बृह० १८७* अ।

एडगारूढो– एडकारूढः। *आव० ४१७*।

एडेंति– एडयन्ति-अपनयन्ति। *जम्बू० ३८८*।

एडेइ– छर्द्दयति, नीरे प्रक्षिपति। *जम्बू० २३०*।

एडेति– अपनयति। *भग० ६६५*।

एडेसि– छर्द्दयसि। *ज्ञाता० ६९*।

एणी– स्नायुः। *प्रश्न० ८०*। हरिणी। *जम्बू० ११०*। *जीवा० २७०*। एण्यः-स्नायवः। *जम्बू० ११०*।

एणीयारा– एणी-हरिणी मृगग्रहणार्थं चारयन्ति-पोषयन्ति ये ते। *प्रश्न० १४*।

एणेज्जग– गोशालपरावर्त्तिस्थानम्। *भग० ६७४*।

एतं– एनम्-एकम्। *प्रश्न० १९*।

एतमट्ठं– एतं-पुद्गलानामपरापरपरिणामलक्षणमर्थम्। *ज्ञाता० १७७*।

एतेवं– एतदेवमित्यर्थः। *भग० ४५५*।

एत्ताहे– अधुना। *आव० ३५९*।

एत्तिओ– एतावान्। *आव० ४२२*।

एत्तिल्लयं– एतावत्। *आव० ५५५*।

एत्तियपरिक्खओ– ईयत्परीक्षकः। *आव० ८२६*।

एत्तो– एषु। *उत्त० १४२*। इतः-अहिकडेवरादिगन्धात् सकाशात्। *ज्ञाता० १३०*।

एत्थं– अत्र, इह। *दशवै० ९९*।

एत्थ– अशोकवरपादपस्य यदधोऽत्रेत्येवं संबन्धनीयः। *ज्ञाता० ६*।

एत्थोवरए– अस्मिन् संयमे भगवद्वचसि वा उपसामीप्येन रतः व्यवस्थितः। *आचा० १६२*।

एद्दहो– एतावान्। *आव० ३४१*।

एमेए– एवं अनेन प्रकारेण एते-येऽधिकृताः प्रत्यक्षेण वा परिभ्रमन्तो दृश्यन्ते। *दशवै० ६८*।

एयं– एतत्, एतावत्प्रमाणम्, *सूर्य० ११३*।

एयंतं– एजमानं, कम्पमानम्। *स्था० ३८५*।

एयंतगं– आगच्छत्। *आव० २९१*।

एयइ– एजते-कम्पते। *भग० १८३*।

एयकम्मे– एतद्व्यापारः, एतदेव वा काम्यं-कमनीयं यस्य स। *विपा० ४०*।

एयग्गो– एकाग्रः-एकचितः। *आव० ७७३*।

एयणुद्देसए– एजनोद्देशकः-भगवतीसूत्रस्य पञ्चमशतकस्य सप्तमोद्देशः। *भग० २४६*।

एयविज्जे– एषैव विद्या-विज्ञानं यस्य स एतद्विद्यः। *विपा० ४०*।

एयसामायारो– एतत्सामाचारः-एतज्जीतकल्पः। *विपा० ४०*।

एयारूव– एतद्रूपं-वक्ष्यमाणरूपम्। *भग० ३२२*। एतद्रूपः-एतदेव रूपं-स्वरूपं यस्य सः। *जम्बू० २२*।

एयावंति– एतावन्तः। *आचा० २३*।

एरंड– हडक्कितः। *बृह० २१९* अ। तृणविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। हरण्डः। *आचा० १९७*।

एरंडइए– हडक्कियितः। *बृह० १०६* आ।

एरंडकट्ठसगडिया– एरण्डशकटिका-एरण्डकाष्ठमयी। *ज्ञाता० ७६*।

एरंडबीयाण– उत्कटिकाभेदः। *प्रज्ञा० २६६*।

एरंडमिंजिया– एरंडमञ्जिका-एरंडफलम्। *भग० २९०*।

एरगा– एरका-गुन्द्रा भद्रमुस्तक इत्यर्थः। *बृह०२०२अ*।

एरवए– ऐरवतः-क्षेत्रविशेषः। *स्था० ६८*। ऐरावतः। *सूर्य० २२*। ऐरवतः-कर्मभूमिविशेषः। *प्रज्ञा० ५५*।

एरवतीणदी– नदीविशेषः। *निशी० ७९* अ।

एरावण– ऐरावणः-शक्रगजः। *प्रश्न० १३५*। इन्द्रहस्ती। *स्था० ३०२*। *आव० ३५९*। गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

एरावणदहे– द्रहविशेषः। *स्था० ३२६*।

एरावती– नदीविशेषः। *स्था० ४७७*। कुणालानगर्याः समीपे नदी। *बृह० १६१* आ।

एरावय– ऐरावतं-उत्तरपार्श्ववर्तिभरतक्षेत्रप्रतिरूपकक्षेत्रवि-शेषः। *जम्बू० ३३०*।

एरिंड– वृक्षविशेषः। *भग० ८०२*।

एलए– एलकः-उरभ्रः। *प्रश्न० ३७*।

एलक– ऊरणकः। *अनुयो० १२९*।

एलकच्छं– एडकाक्षं-योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते पुरं, यत्पूर्वं दशार्णपुरं नाम नगरमासीत्, यत्र गजाग्रपदाभिधः पर्वतस्तत्। *आव० ६६८*।

एलगच्छा– एडकाक्षः-कायोत्सर्गे दृष्टान्तः। *आव० ८००*। एलकाक्षः-ग्रामविशेषः। *उत्त० ८७*।

एलगमूओ– भाषमाण एडक इव बूबुयते एडकमूकः। *आव० ६२८*।

एलगा– एडकाः-द्विखुरचतुष्पदविशेषाः। *जीवा० ३८*।

एलते– एडकः-और्णकः। *प्रज्ञा० २५२*।

एलमूअय– एलमूकता-अजाभाषानुकारित्वम्। *दशवै०१९०*।

एलमूओ– एलमूगो भासइ एलगो जहा बुडबुडति एवं एलमूगो भासति। *निशी० ३६* आ।

एलयं– एलकं-ऊरणकम्। *उत्त० २७२*।

एलवालु– चिर्भटविशेषरूपम्। *प्रज्ञा० ३७*।

एला– फलविशेषः। *जम्बू० ३५*। *जीवा० १३६, १९१*।

एलापाडल– एलापाटला-पाटलाविशेषः। *ज्ञाता० २३१*।

एलापुडाण– गन्धद्रव्यविशेषः। *ज्ञाता० २३२*।

एलारस– एलारसः-सुगन्धिफलविशेषरसः। *प्रश्न० १६२*।

एलालुकी– वल्लीविशेषः। *आचा० ५७*।

एलावच्चसगोत्तं– इलापतेरपत्यं एलापत्यः, एलापत्येन सह गोत्रेण वर्त्तते यः स एलापत्यसगोत्रः। *नन्दी० ४९*।

एलावच्चा– गोत्रविशेषः। *स्था० ३९०*। एलापत्यारात्रेः तृतीयं नाम। *सूर्य० १४७*।

एलावालुंकी– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

एलासमुग्गयं– एलासमुद्गकम्। *जीवा० २३४*।

एलिका– तृणपत्रनिश्रितो जीवविशेषः। *आचा० ५५*।

एलिक्खं– ईदृशोऽभिहितार्थाभिज्ञः। *उत्त० २८२*।

एलिया– एडका। *आव० ८५४*।
एलिसय– ईदृशं-एतादृशम्। *बृह० २८७* अ।
एलुए– एलुकः-देहली। *जम्बू० ४८*।
एलुकावालुङ्कं– तिल्लकम्। *दशवै० १८०*।
एलुकः– उदम्बरः, देहली। *बृह० २५७* आ।
एलुगं– देहली। *आचा० २२२*।
एलुगा– एलुकाः-देहल्यः। *राज० ६१*। *जीवा० २०४, ३५९*।
एवं– एवं प्रकारवचनशब्दः। *दशवै० १३६*। प्रकारवाचकः। *ओघ० ५*। उपमार्थे। *उत्त० २२४*। प्रकारार्थः। *प्रज्ञा० २५५*। इत्थंकरणाय। *ज्ञाता० ११३*।
एवं आया– एवमात्मा-एवंरूपः। *नन्दी० २१२*।
एवं चतुर्षु– पूर्वापरविदेहदेवकुरूत्तरकुरुरूपेषु क्षेत्रविशेषेषु। चतुर्विधस्य पर्यायः। *जम्बू० ३१२*।
एवं भागा– एवं भागानि-वक्ष्यमाणप्रकारभागानि। *सूर्य० १०४*।
एवंभूओ– एवम्भूतः, यथाभूतो नयः विशेषयति। *आव० २८४*। यः शब्देनोच्यते चेष्टाक्रियादिकः प्रकारस्तमेव-भूतं प्राप्तं यत्क्रियाविशिष्टं शब्देनोच्यते तामेव क्रियां कुर्वद्वस्तु एवंभूतम्। *अनुयो० २६६*।
एवंभूत– एवमिति तथाभूतः सत्यो घटादिरर्थो नान्यथेत्येवम-भ्युपगमपर एवंभूतो नयः। *स्था० १५३*। शब्दनयस्य तृतीयो भेदः। *उत्त० ७७*। यः शब्देनोच्यते चेष्टाक्रियादिकः प्रकार-स्तद्विशिष्टस्यैव वस्तुनोऽभ्युपगमात्तमेवं भूतः-प्राप्तः एवंभूतः। *अनुयो० २६६*। यथाशब्दार्थ एवं पदार्थो भूतः सन्नित्यर्थोऽन्यथा भूतोऽसन्निति प्रतिपत्तिपर एवंभूतः। *स्था० ३९०*।
एवंभूय– दृष्टिवादे सूत्रस्य भेदः। *सम० १२८*। एवंभूतः नयविशेषः। *प्रज्ञा० ३२७*।
एवं महालियं– इति महतीम्। *ज्ञाता० ६२*।
एवं महालिया– एतावन्ति महान्ति। *जीवा० ३९९*।
एव– एवकारः-क्रमप्रदर्शनार्थः। *आव० १०*। समुच्चये। *स्था० ५०४*। एवः-अवधारणे भिन्नक्रमश्च। *उत्त० २९४* पूरणार्थे। *आव० ११०*। एवम्-अनन्तरोक्तप्रकारेण। *उत्त० २८५*। क्रमनियमप्रतिपादनार्थः। *ओघ० २*। एवकारः-परिमाणे। *प्रज्ञा० ५५९*। एवशब्दः-अपिशब्दार्थः। *व्यव० २१३* आ।
एवड्डे– एतावन्। *आव० ४३०*।
एवमेयं– एवमेवैतत् यद्भवद्भिः प्रतिपादितं तत्तथैवेत्यर्थः। *ज्ञाता० ४७*।
एवमेवं– बिन्दोरलाक्षणिकत्वादेवमेव। *उत्त० ४०९*।
एवमेव– उपनयवचनमिति। *ज्ञाता० ९६*।
एषः– एषः-एषणमेषो-गवेषणम्। *उत्त० ५१४*।
एषणायामसमतित्वं– विंशतितममसमाधिस्थानम्। *प्रश्न० १४४*।
एषणीय– प्रासुकम्। *भग० १११*।
एसणा– एषणा-अभिलाषः। *पिण्ड० २*। एषणमेषो-गवेषणं तं करोतीति णिक् ततः स्त्रीलिङ्गे भावे युटि एषणा। *उत्त० ५१४*। गृहिणा दीयमानपिण्डादेर्ग्रहणं एषणा। *स्था० १५९*। शङ्कितादिलक्षणा। *आव०५७६*। गवेषणा। *प्रश्न० १०८*। *अनुत्त० ३*। पिण्डविशुद्धिः। *भग० २९४*।
एसणासमिइए– एषणा-गवेषणादिभेदा शङ्कादिलक्षणा वा तस्यां समितिः एषणासमितिः, गोचरगतेन मुनिना सम्यगुपयुक्तेन नवकोटीपरिशुद्धं ग्राहयम्। *आव० ६१६*।
एषणाऽसमिए– एषणाऽसमितः, योऽनेषणां न परिहरति। विंशतितममसमाधिस्थानम्। *आव० ६५३*।
एसणासमिति– सुत्तानुसारेण रयहरणवत्थपादासणपाण-तिलओसहऽणेसणं। *निशी० १७* अ।
एसणाऽसमिते– अनेषणां न परिहरति। विंशतितममस-माधिस्थानम्। *सम० ३७*।
एसणिज्जं– एष्यते-गवेष्यते उद्गमादिदोषविकलतया साधुभिर्यत्तद् एषणीयं-कल्प्यम्। *स्था० १०८, २१३*, एष्यत इत्येषणीयं-कल्प्यम्। *भग० २२६*।
एसणोवघाते– एषणया-तद्दोषैर्दशभिः शङ्कितादिभिः तस्योपघातः-अकल्प्यता। *स्था० ३२०*।
एसिं– एषणीयं-शुद्धम्। *पिण्ड० १४८*।
एसिआ– गोष्ठाः। *आचा० ३२७*।
एसिज्जा– एषयेत्-पर्यवसितवृत्त्या कुर्यात्। *उत्त० ४६*।
एसियं– एषणीयं-आधाकर्मादिदोषरहितम्। *आचा० ३३१*। एषणीयं-गवेषणाविशुद्धया गवेषितम्। *भग० २९३*।
एसिया– एषितुं शीलमेषामिति एषिका-मृगलुब्धका हस्तितापसाश्च मांसहेतोर्मृगान् हस्तिनश्च एषन्ति, ये चान्ये पाखण्डिका नानाविधैरुपायैर्भैक्ष्यमेषन्त्यन्यानि वा विषय-साधनानि ते। *सूत्र० १७७*।
एसु– एष्यामः। *ओघ० ७०*।

एसुहुम– एतावत्सूक्ष्मः। *प्रज्ञा० ६०१*। *जीवा० ३७५*।

एसे– एष्यति-आगमिष्यति। *पिण्ड० १६७*।

एस्सा– एष्याः-भविष्यन्तः। *आव० ६८७*।

एस्सुहुमो– एतत्सूक्ष्मः। *औप० १०१*।

एहंता– एधयन्तः-अनुभवन्तः। *दशवै० २४८*।

एहति– एधते-प्राप्नोति। *उत्त० ३१४*।

एहा– एधाः-समिधो यकाभिरग्निः प्रज्वाल्यते। *उत्त० ३७२*। एधाः-समिधः, काष्ठानि। *आचा० ३०१*।

एहामो– एष्यामः। *ओघ० ६५*।

एहिं– अर्वाक्कालिकः। इदानीम्। *निशी० १०१* अ।

एहिअगुणा– ऐहिकगुणाः-इहलोकगुणा भक्तपानादयः। *ओघ० ३१*।

एहिइ– एष्यति। *उपा० ४०*।

- x - x - x - x -

(ऐ)

ऐर्यापथिकं– केवलयोगप्रत्ययः कर्मबन्धः। *प्रश्न० १४३*।

ऐरावती– शिखरिणि वर्षधरे दशमः कूटः। *स्था० ७२*।

ऐरावतीया– स्त्रीविशेषः। *जीवा० ६०*।

- x - x - x - x -

(ओ)

ओअं– ओजः-मानसोऽवष्टम्भः। *औप० ३३*।

ओअंसी– ओजस्वी-आत्मना वीर्याधिकः। *जम्बू० २११*।

ओअट्टणं– उद्वर्त्तनम्। गाढतरमुद्वर्त्तयति। *बृह० ७१अ*।

ओअविअ– परिकर्मितम्। *जम्बू० ५५*।

ओअविआ– आरोपितानि। *जम्बू० २१२*।

ओअवेहि– साधय-अस्मदाज्ञाप्रवर्तनेनास्मद्वशान् कुरु। *जम्बू० २१८*।

ओआलितं– द्रावितम्। *आव० ३५०*।

ओइण्णेसुं– उत्तिण्णेसु-अवतीर्णेषु कियत्स्वपि गृहिषु मध्ये स्थितः प्रयाति। *ओघ० ३२*।

ओए– ओजः-तैजसम्। *सूत्र० ३४३*। एकः-असहायः। *सूत्र० १०८*। विषमः, प्रथमतृतीयपञ्चमसप्तमाः। *पिण्ड० १६१*। एको रागादिविरहात्। *आचा० २५६*। एकोऽशेषमलकल-ङ्काङ्करहितः। *आचा० २३१*।

ओओ– ओजः-आरोहादिकयुक्तता। *बृह० ३०१* आ।

ओकसणं– पंकपनकयोः परिल्हसणम्। *बृह० २२१आ*।

ओकुरुडो– उत्कुरुटः-कुणालानगर्यां दोषोर्त्तेतर उपाध्याय-विशेषः। *आव० ४६५*।

ओगसणं– नाशनम्। *महाप्र०*

ओगाढं– अवतीर्णा अवगाढां वा प्रकर्षप्राप्ताम्। *स्था० ३११*। आत्मप्रदेशेन सह एकक्षेत्रावस्थायि अवगाढम्। *प्रज्ञा० ५०२*। *भग० २१*। लोलीभावं गतः। *भग० ८३*। अड्डीभूतं। *निशी० ३२७* आ। साधुप्रत्यासन्नीभूतः। *स्था० १९०*।

ओगाढरुइ– अवगाढनमवगाढं-द्वादशाङ्गावगाहो विस्ताराधिग-मस्तेन रुचिः, अथवा ओगाढ-साधुप्रत्यासन्नीभूतस्तस्य साधूपदेशाद् रुचिरवगाढरूचिः। *भग० ९२६*।

ओगाढरुती– अवगाहनमवगाढं-द्वादशांगावगाहो विस्तरा-धिगम इति सम्भाव्यते तेन रुचिः, अथवा ओगाढत्ति-साधुप्रत्यासन्नीभूतस्तस्य साधूपदेशाद् रुचिः, *स्था० १९०*।

ओगाढा– प्रविष्टा। *ज्ञाता० १३७*।

ओगालीफलगं– आर्यक (प्रायक) प्रभृतीनामावल्या समागतं चंपकपट्टादिफलगं। *व्यव० १०७* आ।

ओगास– पडिस्सगस्सेगदेसो। *निशी० ८३* अ। अवकाशः-स्थानम्। *आव० ५३५*। मार्गः। *आव० ६७८*।

ओगाहंती– अवगाहन्ती-आगच्छन्ती। *आव० २३२*।

ओगाहणग्गं– यद्यस्य द्रव्यस्याधस्तादवगाढं तदवगाहनाग्रम्। *आचा० ३१८*।

ओगाहणनामनिहत्ताउए– अवगाहनानामनिधत्तायुः-अवगाहते यस्यां जीवः साऽवगाहना-शरीरमौदारिकादिः तस्य-नाम औदारिकशरीरनामकर्म तेन सह निधत्तमायुः। *प्रज्ञा० २१७*।

ओगाहणवग्गणाओ– अवगाहनाः एकैकस्य भाषाद्रव्य-स्याधारभूता असङ्ख्येयप्रदेशात्मकक्षेत्रविभागरूपास्ता-सामवगाहनानां वर्गणाः-समुदायाः अवगाहनावर्गणाः। *प्रज्ञा० २६५*।

ओगाहणसंठाण– प्रज्ञापनायामेकविंशतितमं पदम्। *भग० ३९६, ४९५, ८४२*। अवगाहनास्थानम्। प्रज्ञापनाया एकविंशतितमं पदम्। *प्रज्ञा० ६*।

ओगाहणसेणियापरिकम्मे– परिकर्म चतुर्थोभेदः। *सम० १२८*।

ओगाहणा– अवगाहना-तनुः, तदाधारभूतं वा क्षेत्रम्। *भग०*

७१। नियतपरिमाणक्षेत्रावगाहित्वम्। *भग०२३६*। षड् जीवनिकायानां पादसङ्घट्टनम्। *पिण्ड० १६१*। अव-गाहन्तेऽस्यामवस्थायामिति अवगाहना-स्वावस्थैव। *आव० ४४४*। *प्रज्ञा० १०८*। अवग्रहणं-परिच्छेदः। *प्रज्ञा० ३०९*। अवगाहन्ते क्षेत्रं यस्यां स्थिता जन्तवः सावगाहनातनु-रित्यर्थः। *नन्दी० ९१*। अवगाहते यस्यां जीवः सा अवगाह-नाशरीरं औदारिकादिः। *प्रज्ञा० २१८*। *ज्ञाता० २५०*।

ओगाहिमं– आदिमे जे तिण्णि घाणा पयतिते चलवलेत्ति, तेण ते चलवल ओगाहिमं भण्णति। *निशी० १९७* अ।

ओगाहिमगं– पक्वान्नम्। *बृह० ३१२* आ। अवगाहिमम्। *आव० ८५४*।

ओगाहिमतो– अवगाहकः। *उत्त० १९८*।

ओगाहिमाइ– अवगाहिमादि-पक्वान्नमण्डकप्रभृति। *पिण्ड० १५२*।

ओगाहे– आगच्छति। *ओघ० १०४*। अवगाहः-शरीरो-च्छ्रयः। *प्रज्ञा० ९८१*।

ओगाहेज्जा– अवगाहेत-आश्रयेत। *भग० २३३*।

ओगाहेत्ता– प्रविश्य। *सम० ८८*।

ओगाहो– पत्तद्ग्रहः। *बृह० २५०* आ।

ओगिज्झिय– अवगृह्य-आश्रित्य। *आचा० ४०३*।

ओगिण्हणयाते– अवग्रहणतायैमनोविषयीकरणाय। *स्था० ४४१*।

ओगुंडिया– मलदिग्धदेहाः। *बृह० २७८* आ।

ओगेण्हणया– अवगृह्यतेऽनेनेति अवग्रहणं, करणेऽनट्, प्रथमसमयप्रविष्टशब्दादिपुद्गलादानपरिणामः, तद्भावो-ऽवग्रहणता। *नन्दी० १७४*।

ओग्गह– अवधारणं अवग्रहः। *आव० ३४१*।

ओघ– औघिकः, अशुभकर्मप्रकृतिजनितो भावोपसर्गः। *सूत्र० ७८* ओघः-सामान्यम्। *आव० २५८, ४५८, ४८०*।

ओघजीवितं– नारकाद्यविशेषितायुर्द्रव्यमात्रं सामान्यं जीवितम्। *स्था० ७*।

ओघनिष्पन्नः– ओघः-सामान्यमध्ययनादिकं श्रुताभिधानं तेन निष्पन्नः। *अनुयो० २५१*। सामान्यशास्त्रनिष्पन्नः। *आव० ५८*।

ओघरूपा– सामाचारीविशेषः। *उत्त० ५४७*।

ओघसामाचारी– सामाचार्याः प्रथमभेदः। *व्यव० १९* आ। ओघनिर्युक्तिः। *ओघ० १*।

ओघसामाचार्युपक्रमकालः– सामाचार्युपक्रमकालस्य प्रथमो भेदः। *ओघ० १*।

ओघा– उन्मुखा निरीक्षमाणाः। *व्यव० १३०* अ।

ओघाडिज्जइ– उद्घाट्यते-बाहयः क्रियते। *आव० ६९७*।

ओघादेसेणं– सामान्यतः। *भग० ८६३*।

ओघाययण– ओघायतनानि यानि प्रवाहत एव पूज्यस्थानानि तडागजलप्रवेशौघमार्गो वा। आवा० *४११*।

ओचार– अपचारि-दीर्घतरधान्यकोष्ठाकारविशेषः। *अनुयो० १५१*।

ओचिया– आरोपिता। *जीवा० १९९*।

ओचूल– अवचूलाः-प्रलम्बगुच्छाः। *जम्बू० २६५*। प्रलम्बमानगुच्छः। *औप० ७०*। *भग० ४८०*। *जम्बू० ५३०*।

ओचूलग– अवचूलकं-अधोमुखाञ्चलं, मुत्कलाञ्चलम्। *जम्बू० २४७*।

ओच्छगं– वस्त्रं, आलिङ्गनम्। *आव० ६८२*।

ओच्छन्नपरिच्छन्न– अवच्छन्नपरिच्छन्नः-अत्यन्तमा-च्छादितः। *जीवा० १८८*।

ओच्छवियं– अवच्छादितम्। *ज्ञाता० २८*।

ओच्छाइय– आच्छादितः-निरुद्धः। *प्रश्न० १३४*। अवच्छा-दितः। *ज्ञाता० २८*।

ओच्छाहिओ– उत्साहितः-उत्कर्षितः। *पिण्ड० १३४*।

ओज– ओजः-बलम्। *प्रश्न० ११६*। आहारादि। *भग० २०*।

ओजःप्रदेशं घनचतुरस्रं– सप्तविंशतिपरमाण्वात्मकं सप्तविंश-तिप्रदेशावगाढं च, तत्र नवप्रदेशात्मकस्यैव पूर्वोक्तस्य प्रतर-स्याध उपरि च नव नव प्रदेशाः स्थाप्यन्ते, ततः सप्तविंश-तिप्रदेशात्मकमोजःप्रदेशं घनचतुरस्रं भवति। *प्रज्ञा० ११*।

ओजःप्रदेशं घनत्र्यस्रं– पञ्चत्रिंशत्परमाणुनिष्पन्नं पञ्चत्रिंशत्प्रदेशावगाढं च, तच्चैवं-तिर्यग् निरन्तराः पञ्च परमाणवः स्थाप्यन्ते, तेषां चाधोऽधः क्रमेण तिर्यगेव चत्वारस्त्रयो द्वावेकश्चेति पञ्चदशात्मकः प्रतरो जातः, अस्यैव च प्रतरस्योपरि सर्वपङ्क्तिष्वन्त्यान्त्यपरित्यागेन दश, तथैव तदुपर्युपरि षट् त्रय एकश्चेति क्रमेणाणवः स्थाप्यन्ते,

एते मिलिताः पञ्चत्रिंशद्भवंति। *प्रज्ञा० ११*।

ओजःप्रदेशं घनवृत्तं– सप्तप्रदेशं सप्तप्रदेशावगाढं च, तच्चैवं-तत्रैव पञ्चप्रदेशे प्रतरवृत्ते मध्यस्थितस्य परमाणोरुपरिष्टा-दधस्ताच्च एकैकोऽणुरवस्थाप्यते, तत एवं सप्तप्रदेशं भवति। *प्रज्ञा० ११*।

ओजःप्रदेशं प्रतरचतुरस्रं– नवपरमाण्वात्मकं नवप्रदेशावगाढं च, तत्र तिर्यग् निरन्तरं त्रिप्रदेशास्तिस्रः पङ्क्त्यः स्थाप्यन्ते। *प्रज्ञा० १२*।

ओजःप्रदेशं प्रतरचतुरस्रं– त्रिप्रदेशं त्रिप्रदेशावगाढं च तच्चैवं-पूर्वतिर्यगणुद्वयं न्यस्यते, तत आद्यस्याध एकोऽणुः। *प्रज्ञा० ११*।

ओजःप्रदेशं प्रतरायतं– पञ्चदशपरमाण्वात्मकं पञ्चदश-प्रदेशावगाढं च, तत्र पञ्चप्रदेशात्मिकास्मिस्तिस्रः पङ्क्त-यस्तिर्यक् स्थाप्यन्ते। *प्रज्ञा० १२*।

ओजःप्रदेशं श्रेण्यायतं– त्रिपरमाणु त्रिप्रदेशावगाढं च, तत्र तिर्यग् निरन्तरं त्रयः स्थाप्यन्ते। *प्रज्ञा० १२*।

ओजःप्रदेशप्रतरवृतं– पञ्चपरमाणुनिष्पन्नं पञ्चाकाशप्रदेशावगाढं च, तद्यथा-एकः परमाणुर्मध्ये स्थाप्यते, चत्वारः क्रमेण पूर्वादिषु चतसृषु दिक्षु। *प्रज्ञा० ११*।

ओज्झा– उपाध्यायः। *दशवै० २४२*।

ओझा– तुलादंडवद्द्वयोरपि मध्ये वर्तते सः। *बृह० पृ० १६०*।

ओट्टियं– औष्ट्रिकम्। *आव० ४२५*।

ओणए– अवनतं, उत्तमाङ्गप्रधानं, प्रणमनमित्यर्थः। *सम० २४*। आसन्नम्। *भग० ३५*।

ओणता– अवनता। *आव० २३७*।

ओणमओ– अवनमतः। *ओघ० १७८*।

ओणमित्ता– अवनम्य। *आव० २३७*।

ओणयं– उत्तमांगप्रधानं प्रणमनम्। *बृह० १०अ*। अवनतिः अवनतं-उत्तमाङ्गप्रधानं प्रणमनम्। *आव० ५४२*। अवनतः। *आव० २७७*।

ओणामिणी– अवनामिनी-विद्याविशेषः। *दशवै० ४१*।

ओतपोतं– (देशी०) आकीर्णम्। *बृह० १३९अ*।

ओतपोयं– (देशी०) मालयन्ति,। *बृह० ७०अ*।

ओतप्रोतः– तद्रूपः। *भग० ६५*।

ओतारो– अवतारः। *आव० ३८४*।

ओतिन्नो– अवतीर्णः-गन्तुमुपक्रान्तः। *उत्त० २४७*।

ओदइ– पश्यति। *नन्दी० ९९*।

ओदइए– कर्मणामुदयेन निर्वृत्तः औदायिकः कर्मोदयापादितो गत्याद्यनुभावलक्षणः। *सूत्र० २३०*।

ओदइयभावमूल– औदयिकभावमूलं-वनस्पतिकायमूल-त्वमनुभवन्नामगोत्रकर्म्मोदयात् मूलजीव एव। *आचा० ८८*।

ओदग्गे– उत्कट उदग्रवयः स्थिततत्वेन वा उदग्रः। *उत्त० ३४९*।

ओदण– ओदनं। *ओघ० २१५*। कूरो। *निशी० ५८आ*।

ओदनं– हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृत ओदनादिः। *स्था० २२०*। भक्तम्। *उत्त० २७२*।

ओदरिअ– औदरिकाः-भट्टपुत्राः। *ओघ० ९५*।

ओदारं– प्रधानं तीर्थकरादिशरीराणि प्रतीत्य। *सम०१४२*।

ओदूढो– आशातितः, थूत्कृतः। *उत्त० ३५६*।

ओद्देसिकं– यावन्तः केचन भिक्षाचरा समागच्छन्ति तावन्तः सर्वानुद्दिश्य यत् क्रियते तत्। *बृह० ८३अ*।

ओधाइओ– अवधावितः। *आव० ४२४*।

ओधूणण– अवधूननम्-अपूर्वकरणेन कर्म्मग्रन्थेर्भेदापादनम्। *आचा० २९७*।

ओपल्ला– अपदीर्णा, कुण्ठीभूता। *ज्ञाता० १९२*।

ओबद्धओ– विद्यादायकादिप्रतिजागरकः। *स्था० १६५*।

ओबद्धपिंडितो– अवबद्धपिण्डिकः। *उत्त० २१५*।

ओबारं– अवद्वारम्। *आव० ३४९*।

ओबोलेउं– उद्बुडयितुम्। *आव० १९७*।

ओभावणा– उवहावणा-परिभवः। *ओघ० १३१*। अपभावना –लाघवम्। *बृह० १७९अ*।

ओभासंति– अवभासयन्ति-सप्रकाशा भवन्ति। *भग० ३२७*। अवभासयन्ति। *सूर्य० ६३*।

ओभासंतो– अवभासयन्। ईषदुद्द्योतयन्। *जम्बू० ४६१*।

ओभास– अवभासः-प्रभा। *ज्ञाता० ४*। अवभासः, प्रभा-विनिर्गमः। *प्रज्ञा० ८०*। प्रतिभाविनिर्गमः। *जीवा०१०७*। पञ्चषष्टितमो ग्रहः। *जम्बू० ५३५*। सप्तषष्ठितमो महाग्रह-विशेषः। *स्था० ७९*।

ओभासइ– अवभासते। आविर्भवति, प्राप्यते इति। *सूत्र० २१४*। अवभासयति-प्रकाशयति। *सूर्य० ६*।

ओभासिज्ज– अवभाषेत-दातारं याचेत्। *आचा० ३४०*।

ओमासिज्जा– अवभावेत-याचेत। *आचा० ३५२*।

ओभासितं– अवभाषितं-याचितं याचनं वा। *बृह० १४२*।

ओभासी– अवभासते-प्रतिभाति, अवभाषते-याचत इत्येवंशीलोऽवभासी। *स्था० २०७*।

ओभासेई– अवभासयति-ईषत् प्रकाशयति। *भग० ७८*।

ओभुग्ग– अवभुग्नं-वक्रम्। *ज्ञाता० १३८*।

ओमंघ– पात्रमवाङ्मुखम्। *बृह० १०७* आ।

ओमंथियं– अधोमुखीकृतम्। *विपा० ४१*। *निर० ६*। *ज्ञाता० ३३*। अवाङ्मुखम्। *बृह० १९८* आ। *स्था० २९९*।

ओम– बालः। *ओघ० १५१*। लघुपर्यायः। *ओघ० १८५*। अवं-दुर्भिक्षम्। *ओघ० ११, १८, ६३*। *पिण्ड० ७७*। *आव० ५३६*। न्यूनम्। *आव० १३०*। दुर्भिक्षम्। *निशी० १८३* आ। *निशी० ५४* आ। अवमानि-असाराणि। *उत्त० ३५९*। अवमरात्निकः। *बृह० १९३* अ। दुर्भिक्षम्। *व्यव० १९८* आ। अवमं-हीनम्। *आचा० १६४*। ऊणं। *दशवै० १६२*। ऊनम्। *उत्त० ६०४*। अवमान्यूना। *उत्त० ५३७*। पर्यायलघुः। *ओघ० १५०*। अवमम्। न्यूनम्। *दशवै० २७२*।

ओमचरओ– ओमत्ति-अवममुपलक्षणत्वादवमौदार्यं चरति-आसेवते अवमचरकः-न्यूनत्वासेवकः। *उत्त० ६०६*।

ओमचेलिए– अवमचेलिकः, असारवस्त्रधारी। *आचा० ३९७*।

ओमच्छगरयहरणं– उन्मस्तकरजोहरणम्। *आव० ६३८*।

ओमज्जायणं– अवमज्जायनं, पुष्यगोत्रविशेषः। *जम्बू० ५००*।

ओमत्तं– अवमत्वं-ऊनता। *भग० ७४२*। अवमता-हीनत्वम्। *प्रज्ञा० ३०३*।

ओमत्थिअ– उद्घाटमस्तकः, प्रच्छन्न इति। *ओघ०१५*।

ओमत्थिय– ओमस्थितः, अधोमुखीकृतः। *ओघ० १४३*।

ओमद्दिया– उन्मर्दिका-बहुमर्दनकारिका। *भग० ५४८*।

ओमया– पराजयः, पश्चाद्भवनम्। *बृह० ७१* अ।

ओमरत्तं– अहोरात्रम्। *ओघ० ११६*। अवमा-हीना रात्रिरवमरात्रो-दिनक्षयः। *स्था० ३६९*।

ओमराइणिओ– अवमरात्निकः। *ओघ० १५०*।

ओमराइणिय– अवमरात्निकः। *आव० ७९३*।

ओमरायणिको– अवमरात्निकः। *ओघ० १५२*।

ओमाणं– प्रवेशः। *उत्त० ५५२*। अपमानम्। *बृह० १२०* अ। ससवत्तियं। *निशी० २०५* आ। अवमानानि-क्षेत्रादिनां प्रमाणानि हस्तादीनि। *स्था० ८६*। अवमानं – स्वपक्षपरपक्षप्राभृत्यजं लोकाबहुमानादि। *दशवै० २८०*।

ओमानं– अवमानं-अवमम्। *बृह० २९०* आ।

ओमुयं– उल्मुकम्। *ओघ० ११२*।

ओमोअं– अवमोचकः, आभरणम्। *जम्बू० १८८*। अव-मुच्यते-परिधीयते यस्सोऽवमोचकः-आभरणम्। *जम्बू० १८८*।

ओमोअर– अवमं-न्यूनमुदरं-जठरमस्यासाववमोदरस्त-द्भावः। अवमौदर्यं-न्यूनोदरता। *उत्त० ६०४*। अल्पाहा-राख्यम्। *उत्त० ६०४*।

ओमोदरिता– दुब्भिक्खं। *निशी० ७५* अ।

ओमोद्दरिए– अवमोदरिका, धर्म्मधर्म्मिणोरभेदाद् वा अवमो-दरिकः-साधुः। *भग० २९३*।

ओमोयं– अवमुच्यते-परिधीयते यः सोऽवमोकः-आभरणम्। *भग० ५४३*।

ओमोयरण– अवमं च तदुदरं चावमोदरं तस्मात्करोत्यर्थे णिचि ल्युटि चावमोदरणं, अवमोदरकरणम्। *उत्त० ६०४*।

ओमोयरिय– अवमौदर्यं-दुर्भिक्षम्। *आव० ६२६*। अवमं-न्यूनमुदरं-जठरमस्यासाववमोदरस्तद्भावः अवमौदर्यं-न्यूनोदरता। *उत्त० ६०४*।

ओमोयरिया– अवमं-ऊनमुदरं-जठरं अवमोदरं तस्य करण-मवमोदरिका। *स्था० ३६४*। अवमं-ऊनमुदरं-जठरं यस्य सः, अवमं चोदरं अवमोदरं तद्भावोऽवमोदरता, अवमोदर-स्य वा करणमवमोदरिका। *स्था० १४८*।

ओम्मिमालिणी– और्मिमालिनी-नदीविशेषः। *जम्बू० ३५७*।

ओयं– रसम्। (*तन्दु०*)

ओयंसी– ओजस्विनः-मानसावष्टम्भयुक्ताः। *भग० १३६*। ओजः-मानसोऽवष्टम्भस्तद्वान् ओजस्वी। *राज० ११८*। *निर० २*। *ज्ञाता० ७*। ओजस्विनः-मानसबलोपेतत्वात्। *सम० १५६*।

ओय– ओजः-आहारग्रहणे प्रथमो भेदः। *स्था० ९३*। ओजः-आर्तवम्। *स्था० १४५*। ओजः-प्रकाशः। *सूर्य० ७*। विषमः। *सूर्य० १५६*। उत्पत्तिदेशे आहारयोग्यपुद्-गलसमूहः।

प्रज्ञा० ५१०।

ओयणं– ओदनं। *सूर्य०२९३।* कूरः। *प्रश्न० १५३।* कूरादि। *ओघ० १३३।* ओदनं-कोद्रवौदनादि। *आचा० ३१३।*

ओयत्तण– व्याघातः। *पिण्ड० १६२।*

ओयत्तति– परावर्त्तते। *दशवै० १०८।*

ओयन्ने– ज्ञातायां सप्तदशमध्ययनम्। *आव० ६५३।*

ओयपएस– विषमसंख्यप्रदेशः। *भग० ८६१।*

ओयरह– अवतरत। *आव० ३५२।*

ओयरिआ– औदरिकानाम-यत्र गताः तत्र रूपकादिकं प्रक्षिप्य समुद्दिशन्ति, समुद्देशनानन्तरं भूयोऽप्यग्रतो गच्छन्ति। *बृह० १२५अ।*

ओयरिया– औदरिका-उदरभरणैकचित्ताः। *ओघ० ७१।*

ओयवणं– साधनम्। *जम्बू० २४८।*

ओयविअं– अल्पसागारिकः-श्रावकः, खेदज्ञम्। *ओघ० ५१।*

ओयविए– प्रसाधिते। *व्यव० १७६आ।*

ओयवियं– सुपरिकर्मितम्। *सूर्य० २९३।* तेजितम्। *जीवा० १६४।* विशिष्टं परिकर्मितम्। *जीवा० २३२।* परिकर्मितम्। *जीवा० २७२।* परिकर्मितम्। *प्रश्न० ८१।*

ओयविया– कुशलाः। *बृह० ५८अ।*

ओयवेइ– उपैति। *आव० १५०।*

ओयसंठिती– ओजसः-प्रकाशस्य संस्थितिः-अवस्थानम्। *सूर्य० ७९।*

ओया– ओजः-प्रकाशः। सूर्य *७९।*

ओयाए– उपायातः-उपागतः। *भग० ३१९।* सम्प्राप्तः। *निर० ६।* उपायातः-उपागतः। *ज्ञाता० १६७।* ओजसा-दाहापनयनादिस्वकायकरणशक्त्या। *ज्ञाता० १७।*

ओयाणेत्ति– अनुश्रोतोगामिनी, पानीयानुगामिनी। *निशी० ४४आ।*

ओयारिया– अवतारिता। *आव० ६८५।* अवतारिका। *आव० ३५०।*

ओयारो– अवतारः-जलमध्यप्रवेशनम्। *जीवा० १९७।*

ओयाहारे– ओजः-उत्पत्तिदेशे आहारयोग्यपुद्गलसमूहः, ओज आहारो येषां ते ओजआहाराः। *प्रज्ञा० ५१०।* तैजसेन कार्मणेन च शरीरेणौदारिकादिशरीरानिष्पत्तेर्मिश्रेण च य आहारः सः सर्वोऽपि ओजाहारः, औदारिकादिशरीरपर्याप्त्या पर्याप्तकोऽपीन्द्रियानपानभाषामनःपर्याप्तिभिरपर्याप्तकः शरीरे-णाहारयन् ओजाहारः। *सूत्र०३४३।*

ओयो– संजमो। *निशी० २१७अ।*

ओरब्भं– औरभ्रं-उत्तराध्ययनेषु सप्तममध्ययनम्। *उत्त०९।*

ओरस– आन्तरः। *भग० ६३१।*

ओरस्स– उरसि भवं-औरस्यं-शरीरबलम्। *सूत्र० १६६।*

ओरस्सबली– महापराक्रमाः। *बृह० १७४आ।*

ओरालं– विस्तरवत्, समयपरिभाषया मांसास्थिस्नाय्वा-द्यवबद्धम्। *प्रज्ञा० २६९।* मांसास्थिस्नाय्वाद्यवबद्धम्। *स्था० २९५।* उदारं-अत्यद्भुतम्। *सूर्य० २९४।* उदारः-प्रधानः। भीमः। *औप० ८४।* ओरालं-आशंसारहिततया प्रधानम्। *भग० १२५।* उदारः-प्रधानः। *भग० १२।* भीमः-भयानकः। *ज्ञाता० ७।* स्फाराकारः। *राज० ११९।* भीष्मः, उग्रादिविशेषणविशिष्टतपःकरणतः पार्श्वस्थानामल्पसत्त्वानां भयानकः। *जम्बू० १६।* *भग० १२।* *सूर्य० ५।* उदारः। *जीवा० ३२२।* एकेन्द्रियापेक्षया प्रायः स्थूला द्वीन्द्रियादय इति। *उत्त० ६९३।*

ओरालतसा– त्रसत्वं तेजोवायुष्वपि प्रसिद्धं अतस्तद्व्य-वच्छेदेन द्वीन्द्रियादिप्रतिपत्त्यर्थमोरालग्रहणम्। *स्था० ३३५।*

ओरालातसा– औदारिकत्रसाः-स्थूरत्रसाः। *जीवा० २८।*

ओरालवण्णकित्तिसद्दा– उदारवर्णकीर्तिशब्दाः। *आव० २९३।*

ओरालसरीरे– उदारशरीरः। *उत्त० ३२५।*

ओरालइं– मनोहराणि। *स्था० २९४।* उदाराणि-आशंसा-दोषरहिततयोदारचित्तयुक्तानि। *स्था० २४७।*

ओरालिए– उदारं-प्रधानं, विस्तरवत्, उरलं-विरलप्रदेशं न तु घनं, ओरालं-समयपरिभाषया मांसास्थिस्नाय्वाद्यवबद्धं तदेव शरीरं, उदारमेव औदारिकम्। *प्रज्ञा० २६८।*

ओरालिय– औदारिकम्। *प्रज्ञा० ४६९।* उदारमेव-प्रधानमेव बृहदेव वा औदारिकम्। *जीवा० १४।* उदारं-प्रधानं उदारमेव औदारिकम्। *स्था० २९५।*

ओरालियसरीरणाम– यदुदयादौदारिकशरीरप्रागोग्यान् पुद्गलानादाय औदारिकशरीररूपतया परिणमयति परिणमय्य च जीवप्रदेशैः सह परस्परानुगमरूपतया सम्बन्धयति तदौदारिकशरीरनाम। *प्रज्ञा० ४६९।*

ओरालियशरीरा– औदारिकशरीराः। *आव० ७९१*।
ओरुहइ– अवतरति। *आव० १८६*।
ओरोहं– अवरोधं, अन्तःपुरम्। *उत्त० ३०७*। अंतेपुरं। *निशी० ८०* अ। *विपा० ८२*। अवरोधः-प्रतोलि-द्वारेष्ववान्तप्राकारः। *औप० ३*। प्रतोलीद्वारेष्वन्तःप्राकारः। *राज० ३*। अवरोधः अन्तःपुरम्। *उत्त० १२०* अवरोधः। *आव० ३५१*। प्रतोलीद्वारेष्ववान्तरप्राकारः। *ज्ञाता० २*।
ओलंडेंति– उल्लङ्घयन्ति। *ज्ञाता० ६२*।
ओलंडेह– उल्लङ्घयत। *दशवै० ९१*। *आव० ३५०*।
ओलंब– अवलम्बं-अवलम्बनस्थानम्। *जम्बू० ५२१*।
ओलंबणदीव– श्रृङ्खलाबद्धद्वीपः। *भग० ५४७*।
ओलंबितो– अवलम्बितः। *उत्त० १२५*।
ओलइओ– अवलगितः। *आव० २९७*।
ओलइयं– अवलगितं-गोपितम्। *उत्त० ११६*।
ओलएइ– उपलगयति। *आव० २१७*।
ओलगिउं– अवलगितुम्। *उत्त० ३००*।
ओलग्गए– अवलगकः। *आव० १७६*।
ओलग्गति– अवलगति-अनुसरति। *उत्त० ८७*।
ओलग्गयमणूसो– अवलगकमनुष्यः। *आव० ९२*।
ओलग्गा– सेवा। परिचर्या। *दशवै० ९७*। जीर्णा। *ज्ञाता० २८*।
ओलग्गाए– अवलगनया। *आव० ९०*।
ओलग्गिउं– अवलगितुम्। *आव० ७१६*।
ओलग्गिऊं– अवलगितुम्। *दशवै० ९७*।
ओलग्गिज्जामि– अवलगामि। *आव० ३५६*।
ओलग्गिता– सेवितुमारब्धा। *आव० ८१८*।
ओलग्गिय– अवलगितः। *आव० ४०१*।
ओलित्त– अवलिप्तः। *भग० २७४*। *आव० ५५१*।
ओलित्ता– द्वारदेशे पिधानेन सह गोमयादिना अवलिप्ताः। *स्था० १२४*।
ओलुग्गसरीरा– भग्नदेहाः। *विपा० ४९*। *निर० ९*। अवरुग्णमिव-जीर्णमिव शरीरं यस्याः सा, अवरुग्णा वा चेतसा अवरुग्णशरीरा। *ज्ञाता० २८*।
ओलुग्गा– अवरुग्णा-भग्नमनोवृत्तिः। *विपा० ४९*। *निर० ९*। क्षीणा। *आव० ७१६*। जीर्णा। *ज्ञाता० ३३*।
ओलुहति– अवरोहति। *आव० १८१*।
ओलेंति– परिभ्रमन्ति। *आव० २७४*।
ओलेत्ता– आर्द्रयित्वा। *आव० २०९*।
ओलोयणं– अवलोकनम्। *आव० २२४, ३७८*।
ओलोयणगए– अवलोकनगतम्। *उत्त० ९१*।
ओलोयणड्डिओ– अवलोकनस्थितः। *आव० १४५*।
ओल्यां– पनके वा आगन्तुकप्रतनुद्रवरूपे कर्द्दम एव ओल्याम्। *स्था० ३२८*।
ओल्लं– वासं। *निशी० ६७* आ।
ओवइया– त्रीन्द्रियजीवविशेषः। *प्रज्ञा० ४२*।
ओवक्कमियं– उपक्रम्यतेऽनेनायुरित्युपक्रमो ज्वरातीसारादि-स्तत्र भवा या सा औपक्रमिकी। *स्था० २७*।
ओवक्खडितं– उपस्कृतम्। *आव० ३५३*।
ओवग्गहिओ– औपग्रहिकः। उवग्गहितः-गच्छसाहारणो। *ओघ० ९२*।
ओवज्झणं– प्रवाहे वहनं। *बृह० २२९* अ।
ओवट्टणा– वालना पश्चादानयनम्। *बृह० ८५* आ।
ओवणिहिए– उपनिहितं यथा कथञ्चित् प्रत्यासन्नीभूतं तेन चरति यः सः औपनिहितिकः, उपनिधिना वा चरतीति स औपनिधिकः। *औप० ३९*।
ओवतिउं– अवपतितुं-जेतुम्। *दशवै० ५०*।
ओवत्तिया– अपवर्त्य-अग्निनिक्षिप्तेन भाजनेनान्येन वा दद्यात्। *दशवै० १७५*।
ओवमिए– उपमया निर्वृत्तमौपमिकं, उपमामन्तरेण यत्कालप्र-माणमनतिशायिना ग्रहीतुं न शक्यते तदौपमिकम्। *जम्बू० ९२*। उपमया निर्वृत्तमौपमिकं, उपमानमन्तरेण यत्कालप्र-माणमनतिशायिना ग्रहीतुं न शक्यते तदौपमिकम्। *अनुयो० १८१*।
ओवमिय– उपमया निर्वृत्तं औपमिकम्, उपमामन्तरेण यत् कालप्रमाणमनतिशयिना ग्रहीतुं न शक्यते तदौपमिकम्। *भग० २७६*।
ओवम्मं– औपम्यं-उपमा। *उत्त० ३२१*। उपमानमुपमा सैवौपम्यं-सदृशः। *स्था० २६२*।
ओवमसच्चा– औपम्यसत्या-पर्याप्तिकसत्याभाषाया दशमो भेदः। *प्रज्ञा० २५६*। उपमैवौपम्यं तेन सत्यं औपम्यसत्यम्। सत्याभाषाया दशमो भेदः। *स्था० ४८९*। औपम्यसत्यं नाम समुद्रवत्तडागः। सत्याभाषया दशमो

भेदः। *दशवै० २०९*। उपमीयते-सदृशतया गृह्यते वस्त्वनयेत्युपमा सैव औपम्यम्। *भग० २२२*। उपमानमुपमा सैवौपम्यं अनेन गवयेन सदृशोऽसौ गौरिति सादृश्यप्रतिपत्तिरूपम्। *स्था० २५४*।

ओवयइ– उत्पतति-ऊर्ध्वं गच्छति। *भग० १७९*।

ओवयण– अवपदनं-प्रोङ्खनकम्। *ज्ञाता० ४३*।

ओवयमाण– अवपततो-व्योमाङ्गणादवतरतः। *ज्ञाता० ४६*। अवपतन्। *ज्ञाता० १६६*।

ओवयारिअविणय– औपचारिकविनयः-विनयस्य द्वितीयो भेदः। *दशवै० ३१*।

ओवरणं– अपवरकम्। *आव० ५६०*।

ओवरिऊण– अवतीर्य। *उत्त० ११९*।

ओवसमिए– कर्मोपशमेन निर्वृत्त औपशमिकः कर्मानुदय-लक्षणः। *सूत्र० २३०*।

ओवहिए– औपधिकः-उपधिना-छद्मना चरतीत्यौपदिकः। *उत्त० ६५६*।

ओवहिया– औपधिका-मायाप्रयोजना-कषायप्रत्ययाः, उपकरणप्रयोजना वा। *औप० १०७*।

ओवाइणित्तए– उपादातुं-ग्रहीतुं, प्रवेष्टुम्। *स्था० १५७*।

ओवाइयं– उपयाचितम्। *विपा० ७७*। याचितस्य-प्रार्थितस्य प्राप्तेरुपरि देवेभ्यो देयम्। *उत्त० १३८*। उपयाचितम्। *आव० ७०९*।

ओवाई– ओलावयप्रधाना विद्या। *आव० ३१९*।

ओवाय– उपाये-मृदुपरुषभाषणादौ भवं औपायं, उपपतनमुपपातः-समीपभवनं तत्र भवं औपपातं-गुरुसंस्तारास्तरण-विश्रामणादिकृत्यम्। *उत्त० ५८*। विघ्नम्। (*मरण०*) अवपातः-निर्देशः। *सूत्र० २४२*। अवपानः-प्रपातस्थानं, यत्र चलन् जनः सप्रकाशेपि पतति। *जम्बू० १२४*। अवपातः-गर्त्तादिरुपम्। *दशवै० १६४*। अवपातः –गर्त्ताविशेषः। *प्रश्न० २२*।

ओवायकारी– उपपातकारी-आचार्यनिर्देशकारी, यथोपदेशं क्रियासु प्रवृत्तः, सूत्रोपदेशप्रवर्तकः। *सूत्र० २३४*। अवपातो-निर्देशस्तत्कार्यवपातकारी-वचननिर्देशकारी सदा आज्ञा-विधायी। *सूत्र० २४२*।

ओवासो– अवकाशः। *दशवै० ५८*।

ओवाही– विशेषेण उपाधीयत इति वोपाधिः। *आचा० १७४*।

ओविअ– ओपितं-परिकर्मितम्। *गच्छा० ४७८*। ओपितः-उज्ज्वालितः। *जम्बू० २००, ४६*।

ओविय– परिकर्मितम्। *औप० २४, ६६*। *राज० ४८*। उज्ज्वलितः। *ज्ञाता० २२२*। ओपितः-परिकर्मितम्। *प्रश्न० ७६*। *ज्ञाता० १९*।

ओविया– आरोपिताः। *जम्बू० ४३*।

ओवीलं– अवीपडं-शेखरं, उपपीडा वा वेदना। *विपा०७२*।

ओवीलए– अपव्रीडयति विलज्जीकरोति यो लज्जया सम्यगनालोचयन्तं सर्वं यथा सम्यगालोचयति तथा करोतीत्यपव्रीडकः। *स्था० ४०४*।

ओव्वत्तिऊण– अपवर्त्त्य। *ओघ० २१*।

ओव्विग्गमणो– उद्विग्नमनाः। *आव० २२०*।

ओष्ठः– दन्तच्छदः। *आचा० ३०*।

ओस– अवश्यायः, शरत्कालभावी श्लक्ष्णवर्षः। *उत्त० ३३४*। क्षपाजलम्। *स्था० २८७*। अवश्यायः-त्रेहः। *दशवै० १५३*। अवश्यायः-शरदादिषु प्रभातिकसूक्ष्मवर्षः। *उत्त० ६९१*।

ओसक्कइत्ता– उत्ष्वष्क्य-उत्सृत्य लब्धावसरतयोत्सुकी-भूय। अवष्वष्क्य-अपसृत्यावसरलाभाय कालहरणं कृत्वा यो विधीयते स तथा। *स्था० ३६५*। अवसर्प्य, प्राप्य वा। *आव० १९*।

ओसक्कणं– रन्धनवेला। *ओघ० १४८*। अवष्वष्कणम्, विवक्षितविध्वंसनादिकालस्य ह्रासकरणम्, अर्वाक् करणम्। *बृह० २६१* आ। अवष्वष्कणं-स्वयोगप्रवृत्तनियतका-लावधेरर्वाक्करणम्। *पिण्ड० ९१*।

ओसक्किय– प्रज्वाल्य। *आचा० ३४५*।

ओसक्किया– अवसर्प्य, अतिदाहभयादुल्मुकान्युत्सार्येत्यर्थः। *दशवै० १७५*।

ओसढ– उत्सृतः-उपघातेभ्यो निर्गतः। *दशवै० २१९*। एगंगितं। *निशी० १८* आ।

ओसण्ण– चिरायणं अपरिभोगद्वाणं। *निशी० १९३* अ। ओसन्नं-बाहुल्यम्। *प्रज्ञा० ५०३*। बाहुल्येन। *भग० ३०८*। अवसन्ना-श्रान्ता। *भग० ५०२*। ओ यो वा संजमो तंमि सण्णो ओसण्णो। *निशी० २१७* अ।

ओसण्णद्धो– अपसन्नद्धः। उत्सन्नद्धः। *आव० ७१२*।

ओसत्तमल्लदामा– *आचा० ४२३*।

ओसत्तो– उत्सक्तः-उपरिसंबद्धः। *औप० ५*। *ज्ञाता० ४*।

ओसधी– वण्णाइफला अंबादिया। *निशी० १५७* अ।

ओसन्न– अवसन्नः-विवक्षितानुष्ठानालसः, आवश्यकस्वाध्यायप्रत्युपेक्षणाध्यानादीनामसम्यक्कारीत्यर्थः। *ज्ञाता० ११३*। बाहुल्य-लक्षणम्। *भग० २१*। प्रायः। *भग० ३०९*। प्रवृत्तेः। प्राचुर्यं बाहुल्यं, बाहुल्येनानुपरतत्वेन। *स्था० १८९*। प्रायसः। *आव० २८५*। उस्सण्णं-प्राचुर्येण। *प्रश्न० २२*। अवसन्नः-सामाचार्यासेवनेऽवसन्नवत् अवसन्नः। *आव० ५७*। एकान्तः। *बृह० ११* आ।

ओसन्नकारणं– बाहुल्यं, बाह्यकारणम्। *प्रज्ञा० २२३*। बाहुल्यकारणम्। *प्रज्ञा० ५०३*।

ओसन्नदोसे– बाहुल्येनानुपरतत्वेन दोषो हिंसादीनां चतुर्णामन्यतर ओसन्नदोषः। *स्था० १८९*।

ओसन्नविहारी– अवसन्नानां विहारो-बहूनि दिनानि यावत्तथा वर्त्तनं अस्यास्तीति अवसन्नविहारी। *ज्ञाता० १११*।

ओसप्पिणि– अवसर्पन्ति हीयमानारकतयाऽवसर्पयति वा क्रमेणायुः शरीरादिभावान् हापयतीत्यवसर्पिणी। *जम्बू० ८९*। दशकोटीकोट्यः सागरोपमाणां सुषमसुषमाद्यरकक्रमेण अवसर्पिणी। *जीवा० ३८५*।

ओसप्पिणी– अवसर्पन्ति-प्रतिसमयं कालप्रमाणं जन्तूनां वा शरीरायुःप्रमाणादिकमपेक्ष्य ह्रासमनुभवन्त्यवश्यमिति अवस-र्पिण्यः, दश सागरोपमकोटिकोटीपरिमाणाः। *उत्त० ६५७*। अवसर्पिणी-अवसर्प्पति हीयमानारकतया अवसर्प्पयति वाऽऽयुष्कशरीरादिभावान् हापयतीति, सागरोपमकोटीको-टीदशकप्रमाणः कालविशेषः। *स्था० २७*। अवसर्प्पिणी-दशसागरोपमकोटाकोटिमाना। *अनुयो० ९१*। कालविशेषः। *आव० १२०, भग० ८८८*। दशसागरो-पमकोटीकोट्यः प्रमाणाः। *स्था० ८६*।

ओसमणं– व्यवशनम्। *बृह० ७७* अ।

ओसरइ– अपसर्पति। *उत्त० ५३*। अपसरति। *उत्त० ३०२*। *आव० ६४०, ६५९*।

ओसरणं– बहूनां साधूनामेकत्रमीलनम्। *बृह० २१८* आ। समवसरणम्। *बृह० २७७* आ। *चतु०*। व्याख्यान-श्रवणादि। *बृह० २५२* आ। अवसरणं-साधुसमुदायः। *पिण्ड० ९२*।

ओसरणा– आर्यिकाणामुपकरणविशेषः। *ओघ० २०९*।

ओसरिऊण– अपसृत्य। *आव० २९२*।

ओसरिओ– अपसृतः। *आव० ४०५*।

ओसरित्ता– अपसृत्य। *आव० २१३*। व्युत्सृज्य। *आतु०*।

ओसरे– अवसर्पन्ति। *आव० ६१८*।

ओसवणं– प्रशमनम्। *निशी० २०७* अ।

ओसह– औषधः। अन्तरुपयुज्यते। *ओघ० १३४*। एकाङ्गम्। *प्रश्न० १५३*। महातिक्तकघृतादि। *भग० ३२६*। केवलह-रीतक्यादि, अन्तरुपयोगि वा। *पिण्ड० १९*। एकद्रव्यरूपम्। *विपा० ४१*। *ज्ञाता० १८१*। त्रिकटुकादि। *ज्ञाता० १३६*। *आव० ११५*। *उत्त० १४२*। हरितक्यादि। *ओघ० ६८*। एलाद्यचूर्णगादि। *निशी० ७६* अ। बहुद्रव्यसमुदायः। *निशी० १४४* आ। एकद्रव्याश्रयं, त्रिफलादि। *औप० १००*।

ओसहङ्गं– औषधाङ्गम्। औषधकारणम्। *उत्त० १४२*।

ओसहजुत्ती– ओषधयुक्तिः-ओषधादीनां-अगुरुकुंकुमादीनां सज्जिकाराजिकादीनां च युक्तिः-योजनं समविषमविभाग-नीतिर्वा। *उत्त० ३०*।

ओसहाइ– औषधादि-अगुरुकुंकुमादि सज्जिकाराजिकादि च। *उत्त० ३०*।

ओसहि– औषधयः, फलपाकान्ताः, ते च शाल्यादयः। *प्रज्ञा० ३०*। औषधिः-शाल्यादिः। *भग० ३०६*। *आचा० ३०*।

ओसहिपत्ता– सर्वरोगापहारित्वात्तपश्चरणप्रभवो लब्धि-विशेषः। *प्रश्न० १०५*।

ओसही– औषधिः-जयाविजयर्द्धिवृद्ध्यादयः। *उत्त० ४९०*। फलपाकान्ताः। *उत्त० ६९२*। औषधी राजधानीनाम। *जम्बू० ३४७*। औषधिः-फलपाकान्ताः, शाल्यादिः। *जीवा० २६*।

ओसहीओ– औषधयः, शाल्यादिका। *जम्बू० १६८*। सालिमातियाओ। *निशी० १९५* आ।

ओसहीतिणा– औषधितृणानि-शाल्यादीनि। *उत्त० ६९२*।

ओसा– अवश्यायः-जलविशेषः। *आव० ५७३*। त्रेहः। *जीवा० २५*। स्थानविशेषः। *उत्त० ३७९*। रात्रिजलम्। *भग० ६९४*।

ओसारिय– अवसारितं-अवलंबितम्। *भग० ३१८*। *ज्ञाता० २२१*। प्रलम्बीकृता। *ज्ञाता० २३९*।

ओसारेज्जा– अपसारयेत्-पाटयेत्। *अनुयो० १७६*।

ओसारेयव्वो– परित्यागः। *निशी० ३४२* अ।

ओसासिअ– आवश्यकी। *बृह० २१७* आ।
ओसित्तं– अवसिक्तं, आर्द्रीकृतम्। *आचा० ३२१*।
ओसीरं– ओशीरं-वीरणीमूलम्। *प्रश्न० १६३*। चन्दनम्। *उत्त० १४२*। उशीरं-वीरणं मूलम्। *जम्बू० ३५*। वीरणीमूलम्। *ज्ञाता० २३२*।
ओसीरपुड– पुष्पजातिविशेषः। *ज्ञाता० २३२*।
ओसीसं– उच्छीर्षम्। *आव० ४५३*।
ओसीसओ– उच्छीर्षकः। *आव० ३५४*।
ओसीसा– सीसस्स समीवं उवसीसं। *निशी० २४७*अ।
ओसूरो– उत्सूर्यः। *आव० ४१६*।
ओसोवणि– अवस्वापिनीम्। *आव० ३७१*।
ओस्सट्टो– उत्साहः। *निशी० २८४* आ।
ओस्सन्नं– बाहुल्येन-अनुपरतत्वेन। *भग० ९२६*।
ओस्सारेह– उत्सारयत-पारयत। *उत्त० १७८*।
ओहंजलिया– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३२*। *प्रज्ञा० ४२*।
ओह– ओघोपधिः-उपधेः प्रथमो भेदः यो नित्यमेव गृह्यते। *ओघ० २०८*। संक्षेपः। *निशी० १७९* अ। ओघः-प्रवाहः। *जीवा० २०७*। सामान्यं, स्वपरपृथग्विभागकरणा-भावरूपः। *पिण्ड० ७७*। प्रवाहः। *उत्त० २४१*। *जम्बू० ५३, ११७*। ओघः-सामान्यं श्रुताभिधानम्। *दशवै० ९५*। भवौघः, संसारः, अष्टप्रकारं कर्म वा। *सूत्र० २९*। अवि-च्छेदः, अवत्रुटितत्वम्। *प्रश्न० ८२*। संसार-समुद्रः। *सूत्र० १४५*। प्रवाहेणाविच्छिन्नम्। *प्रश्न० ७४*। सामान्यम्। *पिण्ड० १४७*। सामान्यः। *आव० ३३६*। प्रवाही। *जीवा० २७७*। सामान्यम्। *जम्बू० ७*। उस्सग्गोतत्थ सव्वं कालियसुत्तं ओयरति तं सव्वं ओहो भण्णति। पेढिया निसीहपेढिया। *निशी० ९७* आ। सुत्ते सुत्ते जं उस्सग्गदरिसणं तं ओहो, जो पुण अविसिट्ठा आवत्ती सो ओहो। *निशी० १४५* आ। सामान्यमध्ययनादि नाम। *स्था० ५*। ओघः- प्रत्य-क्षोपलभ्यमानं संसारसमुद्रः। *दशवै० २५६*। संक्षिप्तः। *ओघ० ८८*।
ओहजीव– ओघजीवः, भावजीवस्य प्रथमो भेदः। *दशवै० १२*।
ओहडं– प्रार्थितम्। *ओघ० ६७*। याचितः। *निशी० १६५*अ।
ओहनिप्फण्ण– ओघनिष्पन्नः। निक्षेपभेदः। *दशवै० १५*। अङ्गाध्ययनादिसामान्याभिधानन्यासः। *आचा० ३*।
ओहबले– ओघबलः। अव्यवच्छिन्नबलः। *औप० ७८*।
ओहय– उपहतः-विनाशितः। *जम्बू० २७७*। राज्याप-हारादुपहताः। *स्था० ४६३*। विनाशनेनोपहताः। *ज्ञाता० ५६*।
ओहयमणसंकप्प– उपहतः-ध्वस्तो मनसः संकल्पोदर्प-हर्षादिप्रभवो विकल्पो यस्य सः। *भग० १८०*। *ज्ञाता० २९*। उपहतमनः सङ्कल्पः। *आव० ६८२*।
ओहयहय– उपहतहतः। *आव० ६५०*।
ओहरति– उपहरति-विनाशयति। *ज्ञाता० १९२*।
ओहरिए– विनाशयति। *ज्ञाता० १९०*।
ओहरितभारो– उत्तारितभारः। *ओघ० २२७*।
ओहरिय– अग्निकायोपरि व्यवस्थितं पिठरकादिकमाहा-रभाजनमपवृत्त्य। *आचा० ३४५*। तिरश्चीनो भूत्वा। *आचा० ३४४*।
ओहसंभोग– ओघसंभोगः, उपध्यादिद्वादशप्रकारः। *व्यव० ११९* आ।
ओहसण्णा– मतिज्ञानाद्यावरणक्षयोपशमाच्छब्दाद्यर्थगोचरा सामान्यावबोधक्रियैव संज्ञायतेऽनयेत्योघसंज्ञा। *स्था० ५०५*।
ओहसन्ना– ओघसञ्ज्ञा-मतिज्ञानावरणकर्मक्षयोपशमना-च्छब्दाद्यर्थगोचरा सामान्यावबोधक्रिया, दर्शनोपयोग इति, सामान्यप्रवृत्तिर्यथा वल्ल्या वृत्त्यारोहणं वा। *प्रज्ञा० २२२*। मतिज्ञानावरणक्षयोपशमाच्छब्दाद्यर्थगोचरा सामान्यावबो-धक्रियैव सञ्ज्ञायते वस्त्वनयेति ओघसञ्ज्ञा। दर्शनोपयोगः। सामान्यप्रवृत्तिरोघसञ्ज्ञा। *भग० ३१४*।
ओहसियं– अवघर्षणमवघर्षितं भूत्यादिना निमज्जनम्। *जीवा० २१३*।
ओहस्सरा– ओघस्वरा-चमरेन्द्रस्य घण्टा। *जम्बू०४०७*।
ओघेन– प्रवाहेण स्वरो याषां ता ओघस्वरा। *जीवा० २०७*।
ओहा– अपभ्राजना। *बृह० ९९* आ।
ओहाइया– उद्धाविताः। *आव० ६६*।
ओहाडणी– अवघाटिनी-आच्छादनहेतुकम्बोपरिस्थाप्य-मानमहाप्रमाणकिलिश्चस्थानीया। *जीवा० १८०*। *जम्बू०*

२३।

ओहाडिअ– अवघाटितः-आच्छादितः। *जम्बू० ७३*।

ओहाडिओ– आघाटीः। *आव० २०५*। निष्कासितः। *आव० ३५८*।

ओहाडियं– स्थगितम्। *आव० ८८८*। स्फेटितम्। *आव० २०५*।

ओहाडिया– जड्डायिता। *आव० ५१४*। अपस्फेटिता। *आव० ३६८*।

ओहाडेइ– आच्छादयति। *आव० ३७०*।

ओहाण– उवयोगो। *निशी० ५८* आ। विहारो, धावणेण लिंगो धावणेण वा। *निशी० ३५* अ। अवधानम्-अपसरणम्। *दशवै० २७१*। अवधावमानाः। *ओघ० ६१*। अवधानम्। *स्था० २११*।

ओहाणपेही– छिद्दं अलभमाणो रातो समाहिपरिड्डवणलक्खेण ओहावेज्जा। *निशी० १९४* अ।

ओहाणुप्पेही– अवधावनानुप्रेक्षी। *दशवै० ९४*।

ओहातेज्जा– उपहन्यात्। *स्था० ३२८*।

ओहामिए– अपभ्राजितः। *आव० ६६५*।

ओहामिओ– अपभ्राजितः, हीलितः। *आव० ६९४*। अप-भ्राजितः, तिरस्कृतः। *ओघ० ५३*।

ओहामिज्जइ– अवधाव्यते। *आव० २९५*।

ओहार– अधो जले नावो नेता मत्स्यविशेषः। *बृह० १६१* आ। जलजन्तुविशेषः। *प्रश्न० ५१*। कच्छपः। *पिण्ड० १०२*। मच्छो। *निशी० ७८* आ।

ओहारयित्ता– अवधारयिता-शङ्कितस्याप्यर्थस्य निःशङ्कित-स्यैवमेवायमित्येवं वक्ता, अवहारयिता-परगुणानामपहा-रकारी। *सम० ३८*।

ओहारिणी– अवधारणी-अवधारणात्मिका। *उत्त० ५६*।

अवधार्यते– अवगम्यतेऽर्थोऽनयेति अवधारणी-अवबोध-बीजभूता। *प्रज्ञा० २४६-२४७*। संकिया। *दशवै० १४०*। अवधारणी-अवबोधबीजभूता। *भग० १४२*।

ओहारितं– अवहृतं-गृहीतम्। *आव० ८५९*।

ओहारेमाणीओ– वीजयन्त्यः। *जीवा० २३३*।

ओहावंत– अवधावन्ते, अवसर्पन्ति, *ओघ० ६२*।

ओहावइ– अवधावति। *उत्त० १३३*।

ओहावणं– अपभ्राजनं, अपमानं, निन्दा वा। *पिण्ड० १४०*। अवधावनं-पार्श्वस्थादिविहारश्रयणम्। *बृह० १६३* आ। लिंगविवेकबुद्ध्या गमनम्। *व्यव० २४९* अ। अपभ्राजनालाञ्छना। *आव० ५३७*। अपभ्राजना। *आव० ३१९, ६६५*। मलना। *ओघ० ९३*। गृहस्थीभवनम्। *बृह० १४४* अ। अपभ्राजना। *उत्त० १९२*। परिभवः। *ओघ० १४८*। हीलना। *ओघ० ७४*।

ओहाविअ– अवधावितः-अपसृतः। *दशवै० २४७*।

ओहाविउकामो– अवधावितुकामः। उन्निष्क्रमितुकामः। *उत्त० १३३*।

ओहावेज्जा– अवधावेत्। *व्यव० १६६* आ।

ओहासणं– समयपरिभाषया विशिष्टद्रव्ययाचनम्। *आव० ५७६*।

ओहासणभिक्खा– ओहासणभिक्षा-विशिष्टद्रव्ययाचनं समयपरिभाषया ओहासणं तत्प्रधाना या भिक्षा। *आव० ५७६*।

ओहासिअ– ओभासिअ-पार्थितः। *ओघ० ७०*। *सूत्र०३८६*।

ओहिंजलिया– चतुरिन्द्रियजीवभेदः। *उत्त० ६९६*।

ओहि– अवधिः-अवधीयतेऽनेनास्मादस्मिन्वेति। *स्था० ३४७*। रूपिमर्यादा, करणनिरपेक्षो बोधरूपः। *स्था० ४४८*। अवधीयतेऽनेनेति, अवधीयत इति, अधोऽधो-विस्तृतं परिच्छिद्यत मर्यादया वेति, अवधीयतेऽस्माद् अस्मिन् वा, अवधानं वा विषयपरिच्छेदनम्। *आव०८*। मध्ये। *ओघ० २०८*। अधोऽधो विस्तृतविषयवेदकम्। परिच्छेदः। मर्यादा। *उत्त० ५५७*। अवअधोऽधो विस्तृतं वस्तु धीयते-परिच्छि-द्यतेऽनेनेत्यवधिः, अथवा अवधिर्मर्यादा रूपिष्वेव द्रव्येषु परिच्छेदकतया प्रवृत्तिरूपा तदुपलक्षितं ज्ञानमप्यवधिः, यद्वा अवधानं-आत्मनोऽर्थसाक्षात्करणव्यापारोऽवधिः। *नन्दी० ६५*। अवधिः- अवशब्दोऽधःशब्दार्थः, ततश्चाध इत्यध-स्ताद्धावति अधोऽधो विस्तृतविषयवेदकतयेत्यवधिः, औणादिको ङिः, यद्वा 'अवे'त्यध एव धानं धातुनाममेका-र्थत्वात् परिच्छेदोऽवधिः, 'उपसर्गे घोः कि'रिति (पा. *३-३-८२*) किः, अथवाऽवधिः-मर्यादा रूपिष्वेव द्रव्येषु परि-च्छेदकतया प्रवृत्तिरित्येवंरूपा तदुपलक्षितं ज्ञानमप्यवधिः। तृतीयं ज्ञानम्। *उत्त० ५५७*। औघिकः-विशेषणरहितः। *प्रज्ञा० ३४२*।

ओहिदंसणं– अवधिदर्शनं-अवधिरेव दर्शनं-रूपिसामान्य-ग्रहणम्। *जीवा० १८*।

ओहिमरणं– अवधिमरणं-सप्तदशमरणभेदे द्वितीयः। *उत्त० २३०*। पञ्चविधमरणे द्वितीयः। *भग० ६२४*। अवधिः-मर्यादा तेन मरणं अवधिमरणं, यानि हि नारकादिभवननिबन्धन-तयाऽऽयुःकर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदा तत्। *सम० ३३*।

ओहियं– औघिकम्। *ओघ० २१७, १९१*। औघिकम्-निर्विशेषणं नरकम्। *भग० ४५*।

ओहियमत्तगं– प्रश्रवणमात्रकम्। *निशी० १३२* आ।

ओहिया– औघिकी-तिर्यक्स्त्रि। *जीवा० ५१*।

ओही– अवधिः-प्रज्ञापनायास्त्रस्त्रिंशत्तमं पदम्। *प्रज्ञा० ६*। अव-अधो विस्तृतं वस्तु धीयते परिच्छिद्यतेऽनेनेति अवधिः मर्यादा वा रूपिष्वेव द्रव्येषु परिच्छेदकतया प्रवृत्तिरूपा तदुपलक्षितं ज्ञानमप्यवधिः। *प्रज्ञा० ५२७*।

ओहिपदं– प्रज्ञापनायाः त्रयत्रिंशत्तमं पदम्। *भग० ७११*।

ओहीरमाणी– प्रचलायमाना। *भग० ५४०*। वारंवारं ईषन्निद्रां गच्छन्तीत्यर्थः। *ज्ञाता० १५*।

ओहुए– अवधुत उल्लंघितः। *बृह० ६१* अ।

ओहे– ओघमरणं सामान्यतः सर्वप्राणिनां प्राणपरित्या-गात्मकम्। *उत्त० ३२०*।

ओहेणं– ओघेणं-संक्षेपेण। *ओघ० ८८*।

ओहोवधी– ओहः-संक्षेपः, स्तोकः, लिङ्कारकः, अवश्यं-ग्राह्यः। उपधेर्भेदः। *निशी० १७९* अ।

ओहोवही– ओघोपधिः-उपधेर्भेदः। *उत्त० ५३७*। ओघो-पधिः नित्यमेव यो गृह्यते ओघोपधिः। *ओघ० २०८*।

- x - x - x -

(औ)

औदारिकं– चङ्गिकम्। *ओघ० ९०*।

औदारिकबन्धनं– यदुदयवशाद् औदारिकपुद्गलानां गृहीताना गृह्यमाणानां च परस्परं तैजसादिपुद्गलैश्च सह सम्बन्ध उपजायते तत्। *प्रज्ञा० ४७०*।

औदारिकसङ्घातनाम– यदुदयवशादौदारिकशरीररचना-ऽनुकारिसङ्घातरूपा जायते तत्। *प्रज्ञा० ४७०*।

औदारिकाङ्गोपाङ्गनाम– यदुदयवशादौदारिकशरीरत्वेन परिण-तानां पुद्
गलानामङ्गोपाङ्गविभागपरिणतिरुपजायते तत्। *प्रज्ञा० ४७०*।

औदार्यं– दाक्षिण्यम्। *जम्बू० १८४*।

औद्देशिक– शबलस्य षष्ठो भेदः। *प्रश्न० १४४*। आधाकम। *सूत्र० १९१*।

औपसर्गिकं– पदस्य तृतीयो भेदः। *आव० ३७९*। परीति औपसर्गिकम्। *अनुयो० ११३*।

औलूक्यं– मतविशेषः। *उत्त० ३३७*। s

- x - x - x - x -

। इति प्रथमो विभागः समाप्तः ।

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो नमः

आगम-सागर-कोषः १

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज]

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष–रचयिता

मुनिश्रीदीपरत्नसागरजी महाराज

[M.com._M.Ed._Ph.D._श्रुतमहर्षि]